

شہزاد ہفتیہ

—دانش و ادب

چین ۱۶۹۸ء

6. 10. 1941. 1941. 1941.

ایک وقت آسمان

1000

میچون، مانی، وای، وای

11. 11.11.11

بسم الله الرحمن الرحيم

—پیش از آنکه

የገንዘብ ምንጭ

... 6 ...

742-22

کتابخانه کمال چر سوسائٹی، ایلہا ہاباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai

Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, AL-LAHABAD-3.

نیا ہند

پبلیشرز انڈیا پرائیویٹ لمیٹڈ دہلی

نمبر 1 نمبر جلد 20 جلد 20
5 AUG 1955

جولائی 1955

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

145 مڈل گنج، ایلاہ آباد

145 مڈل گنج، ایلاہ آباد

جولائی 1955 جولائی

کس سے	صفحہ	کیا کس سے
ہاں بٹکے ؟		1. کہاں بٹکے ؟
—ڈاکٹر بھگوانداس	1	—ڈاکٹر بھگوانداس
بین کا بھیم سوار آندولن		2. چین کا بھومی سدھار آندولن
—شری ہریشللمہ پریک	6	—شری ہری ولیہ پریک
ایڈورٹ آئینسٹائن		3. ایڈورٹ آئینسٹائن
—مہاتما بھگواندین	16	—مہاتما بھگواندین
ہری ماں بولی کا رپ		4. میری ماں بولی کا رپ
—شری مہن گوپال	21	—شری مہن گوپال
ہمبے کا ایک دھبہ نازارا		5. ہمبے کا ایک دھبہ نازارا
—پنڈت سندرلال	27	—پنڈت سندرلال
اچھ جیون		6. اچھ جیون
—لکھک—سب ڈا۔ ہریشاساد دےسائی		—لیکھک—سورگیہ ڈاکٹر ہری پرساد دیسانی
—انوادک—شری گنونت مہتا	32	—انوادک—شری گنونت مہتا
پرم، بیوگ اور ورشا		7. پرم، بیوگ اور ورشا
—ویشو مہر ناٹھ پانڈے	37	—ویشو مہر ناٹھ پانڈے
ہماری راتے	45	8. ہماری راتے
ایٹمی جنگ کے خلاف سائنس دانوں کی اپیل—		ایٹمی جنگ کے خلاف سائنس دانوں کی
گوشا کا سत्याگرہ اور اس سے سبق—		اپیل— گوشا کا سत्याگرہ اور اس سے سبق—
بی. سی. جی. کا ٹیکا—کانپور کے مزدوروں کی		بی. سی. جی. کا ٹیکا—کانپور کے مزدوروں کی
—سندرلال		—سندرلال

کہاں بٹکے ؟

کہاں بٹکے ؟

ڈاکٹر بھگوان داس

ڈاکٹر بھگوان داس

ہم دو छोटी और सुन्दर कहानियाँ नीचे देते हैं, एक हिन्दू धर्म की किताबों से और दूसरी इसलामी किताबों से. हैं अबे एक ऐसी जगह पहुंचे जहाँ एक हाथी खड़ा हुआ था. वह हाथी के रूप के बारे में एक दूसरे से मगड़ने लगे. एक ने हाथी की दुम को टटोलकर कहा कि हाथी एक झाड़ू की तरह है. दूसरे ने हाथी की सूँड़ को टटोलकर कहा कि हाथी एक बड़े अजगर की तरह है. तीसरे का हाथ हाथी के कान पर पड़ा. वह कहने लगा कि हाथी एक बड़े छाज की तरह है. चौथे ने हाथी के पेट को टटोलकर कहा कि हाथी एक बड़े ढोल की तरह है. पाँचवें ने हाथी की टांग को थपथपा कर देखा और कहा कि हाथी एक मोटे खंभे की तरह है. छठे ने हाथी के एक दाँत को छूकर कहा कि हाथी एक बड़े सोटे की तरह है. सबको अपनी अपनी बात का पक्का विश्वास था. हर एक दूसरे की बात को गलत मान रहा था. हठ और मगड़ा बढ़ने लगा. इतने में एक सातवाँ आदमी उधर से निकला. उसके आँखें थीं. वह देख और समझ सकता था. उसने उनमें से हरेक को समझाया कि हाथी उन सबके अलग अलग खयालों का मेल है. उसने उन्हें यह भी बतलाया कि हाथी कोई बेजान मिट्टी या लकड़ी की चीज नहीं है. वह एक प्राणी है जो अपने इन सब अंगों से काम लेता है.

इसी तरह हमारी सब अलग अलग माही साइसेंस इस माही (भौतिक) दुनिया के किसी एक पहलू से वास्ता रखती हैं. दुनिया का हरम ज़हब आत्मा या परमात्मा की किसी एक सिफ़त या एक पहलू पर जोर देता है. लेकिन वह चीज़ जिसे हम तसवुफ़, वेदान्त और ज़िन्दगी की असली फिलोसोफी कहते हैं और जिसे मजहबी साइन्स या साइन्सी मजहब भी कहा जा सकता है वह इन सब धर्मों के अलग अलग पहलुओं को मिलाकर उनका संगम या समन्वय करती है.

दूसरी कहानी यह है—चार मुसाफ़िर, एक रूमी, एक अरब, एक ईरानी और एक तुर्क ज़िन्दगी की सड़क पर साथ साथ चले जा रहे थे. रेतीली, पथरीली, कंटीली, कहीं बरफ़ की तरह ठंडी और कहीं जलती हुई राहों पर चलते चलते उन चारों को भूख और प्यास सताने लगी. उन्हें किसी ऐसे जगह की ज़रूरत थी जिससे उन्हें शांति और

हम دو چوبی اور سند کہانیاں نیچے دیتے ہیں، ایک ہندو دھرم کی کتابوں سے اور دوسری اسلامی کتابوں سے . چہ اندھے ایک ایسی جگہ پہونچے جہاں ایک ہانی کھڑا ہوا تھا . وہ ہانہ کے روپ کے بارے میں ایک دوسرے سے چکڑنے لگے . ایک نے ہانہ کی دم کو ٹٹول کر کہا کہ ہانہ ایک جھارو کی طرح ہے . دوسرے نے ہانہ کی سونڑ کو ٹٹول کر کہا کہ ہانہ ایک بڑے اجگر کی طرح ہے . تیسرے کا ہاتھ ہانہ کے کان پر پڑا . وہ کہنے لگا کہ ہانہ ایک بڑے چھاج کی طرح ہے . چوتھے نے ہانہ کے پیٹ کو ٹٹول کر کہا کہ ہانہ ایک بڑے ڈھول کی طرح ہے . پانچویں نے ہانہ کی ٹانگ کر تھپ تھپ کر دیکھا اور کہا کہ ہانہ ایک موٹے کھنڈے کی طرح ہے . چٹھے نے ہانہ کے ایک دانت کو چھو کر کہا کہ ہانہ ایک بڑے سوٹے طرح ہے . سب کو اپنی اپنی بات کا پکا وشواس تھا . ہر ایک دوسرے کی بات کو غلط مان رہا تھا . ہٹ اور چکڑا بڑھنے لگا . انے میں ایک ساتواں آدمی ادھر سے نکلا . اُسکے آنکھیں تھیں . وہ دیکھ اور سمجھ سکتا تھا . اُسنے ان میں سے ہر ایک کو سمجھایا کہ ہانہ ان سب کے الگ الگ خیالوں کا میل ہے . اُسنے انہیں یہ بھی بتایا کہ ہانہ کوئی بیجان مٹی یا لکڑی کی چیز نہیں ہے . وہ ایک پرانی ہے جو اپنے ان سب انگوں سے کام لیتا ہے .

ایسی طرح ہماری سب الگ الگ مادی سائنسیں اس مادی (پھونک) دنیا کے کسی ایک پہلو سے واسطہ رکھتی ہیں . دنیا کا ہر مذهب انما یا پرماما کی کسی ایک صفت یا ایک پہلو پر زور دیتا ہے . لیکن وہ چیز جسے ہم تصوف، ویدانت اور زندگی کی اصلی فلاسفی کہتے ہیں اور جسے مذہبی سائنس یا سائنسی مذہب بھی کہا جا سکتا ہے وہ ان سب دھرموں کے الگ الگ پہلوؤں کو ملاکر اُنکا سنگم یا سمنوے کرنی ہے .

دوسری کہانی یہ ہے—چار مسافر، ایک رومی، ایک عرب، ایک ایرانی اور ایک ترک زندگی کی سڑک پر ساتھ ساتھ چلے جا رہے تھے . ریتیلی، پتھریلی، کٹیلی، کھین برف کی طرح ٹھنڈی اور کھین جلتی ہوئی راہوں پر چلتے چلتے ان چاروں کو بھوک اور پیاس ستانے لگی . انہیں کسی ایسے کھانے کی ضرورت تھی جس سے انہیں شانتی اور

शाकि मिले. वह एक दूसरे की बोली नहीं समझते थे. उंगलियों से इशारा करके उन्होंने अपने चारों के पास के सब दाम विरम जमा किए, इसलिए कि उससे कुछ खाना खरीदें. पर सबाल हुआ कि क्या चीज खरीदी जाय. अरब ने कहा कि 'अनब' खरीदा जाय. तुर्क ने गुर्गकर कहा 'उजम' खरीदो. ईरानी ने कहा 'अंगूर' खरीदना चाहिए. रूमी ने कड़क कर कहा 'अस्ताकील' लिये जायें. वे फगड़ने लगे. आँखें लाल हो गईं. मुट्टियाँ मिचने लगीं. हाथापाई की नौबत आ गई. इतने में एक फेरी लगाकर फल बेचने वाला पास से निकला. इस तरह के फेरी लगाने वाले आम तौर पर बहुत सी जगहों के खास खास शब्दों से वाकिफ होते हैं. उन्हें तरह तरह के गाइकों से बास्ता पड़ता है. उन चारों के बीच में जाकर उसने अपना टोकरा जिसमें जीवन का मेवा भरा हुआ था उनके सामने खोलकर रख दिया. मुट्टियाँ ढीली पड़ गईं. आँखें नरमा गईं. आवाज में मिठास आ गई, चेहरे मुस्कुराने लगे. चारों को उस टोकरे के अंदर अपनी दिल चाही चीज दिखाई दे गई. अरबी अनब, तुर्की उजम, ईरानी अंगूर, रूमी अस्ताकील, पहलवी दाख, संस्कृत द्राक्ष और अंग्रेजी ग्रेप सबके एक ही मानी हैं, सब एक ही मीठे फल को जाहिर करते हैं.

हम में से हरेक ने दूसरों को बाहर रखने के लिए अपने चारों तरफ एक दायरा खींच लिया है. हमारे अपने दायरे से बाहर सब हमें नास्तिक, काफिर, मलेच्छ और गौर दिखाई देते हैं. प्रेम ने ज्ञान के साथ मिलकर एक बड़ा दायरा खींचा जिसके अंदर सब छोटे दायरे समा गए. सूफी कहता है कि :—

फ़क़त तफ़ावत है नाम ही का,
दर अस्त सब एक ही हैं, यारो !
जो आबे साफ़ी कि मौज में है,
उसी का जलवा हवाब में है !

यानी केवल नामों का फ़रक़ है. ऐ यारो ! हकीक़त में सब एक हैं. जो साफ़ पानी दरिया की लहर में चमक रहा है उसी की चमक बुलबुले के अंदर भी है.

प्यारे भाइयो और बहनो ! कहाँ कहाँ से, कोई दूर से और कोई नज़दीक से आकर हम यहाँ ज़िन्दगी की राह पर मिल गए हैं. हम सब भूखे और प्यासे हैं. सबको उस खाने और उस पानी की ज़रूरत है जो हमें सच्ची ज़िन्दगी दे सके. वह खाना और पानी 'प्रेम' है. यह प्रेम आदमी के अपने अंदर डबलता है, पर उस समय डबलता है जब आदमी इस बात को महसूस करने लगे कि एक ही जान, एक ही परमात्मा सब जगह और घट घट के अंदर मौजूद है. पर हममें से बहुत सों के अंदर अभी सच्ची प्यास की कमी है.

शुकी मले. वह एक दूसरे की बोली नहीं समझते थे. अंगुलियों से इशारा कर के अन्हों ने अपने चारों के पास के सब दाम जम के. अस लै के अस से कच्चे काना खरीदें. पर सवाल हवा के कच्चे खरीदी जाँ. एरबने कहा के 'अनब' खरीदा जाँ. तुर्क ने गुराकर कहा 'उजम' खरीदो. ईरानी ने कहा 'अंगूर' खरीदना चाहिए. रूमी ने कड़क कर कहा 'अस्ताकील' लिये जायें. वे फगड़ने लगे. आँखें लाल हो गईं. मुट्टियाँ मिचने लगीं. हाथापाई की नौबत आ गई. इतने में एक फेरी लगाकर फल बेचने वाला पास से निकला. इस तरह के फेरी लगाने वाले आम तौर पर बहुत सी जगहों के खास खास शब्दों से वाकिफ होते हैं. उन्हें तरह तरह के गाइकों से बास्ता पड़ता है. उन चारों के बीच में जाकर उसने अपना टोकरा जिसमें जीवन का मेवा भरा हुआ था उनके सामने खोलकर रख दिया. मुट्टियाँ ढीली पड़ गईं. आँखें नरमा गईं. आवाज में मिठास आ गई, चेहरे मुस्कुराने लगे. चारों को उस टोकरे के अंदर अपनी दिल चाही चीज दिखाई दे गई. अरबी अनब, तुर्की उजम, ईरानी अंगूर, रूमी अस्ताकील, पहलवी दाख, संस्कृत द्राक्ष और अंग्रेजी ग्रेप सबके एक ही मानी हैं, सब एक ही मीठे फल को जाहिर करते हैं.

हम में से हर एक ने दूसरों को बाहर रखने के लिये अपने चारों तरफ एक دائरे केवले लिये है. हमारे अपने दानरे से बाहर सब हमें नास्तिक, काफिर, मलेच्छ और गौर दिखाई देते हैं. प्रेम ने ज्ञान के साथ मिलकर एक बड़ा दायरा खींचा जिसके अंदर सब छोटे दायरे समा गये.

सुनी कहा है के:—

नقطا تفاوت है نام ہی کا
در اصل سب ایک ہیں، یارو !
جو آب صافی کے موج میں ہے،
اُسی کا جلوہ حباب میں ہے !

یعنی کیوں ناموں کا فرق ہے. اے یارو ! حقیقت میں سب ایک ہیں. جو صاف پانی دریا کی لہر میں چمک رہا ہے اُسی کی چمک ہلے کے اندر بھی ہے.

پیارے بھائیو اور بہنو ! کہاں کہاں سے، کوئی دور سے اور کوئی نزدیک سے آکر ہم یہاں زندگی کی راہ پر مل گئے ہیں. ہم سب بھوکے اور پیاسے ہیں. سب کو اُس کھانے اور اُس پانی کی ضرورت ہے جو ہمیں سچی زندگی دے سکے. وہ کھانا اور پانی 'پريم' ہے. یہ پريم آدمی کے اپنے اندر اُبلتا ہے، پر اُس سے اُبلتا ہے جب آدمی اس بات کو محسوس کرے کہ ایک ہی پرماٲما سب جگہ اور گھٹ گھٹ کے اندر موجود ہے. پر ہم میں سے بہت سوں کے اندر ابھی سچی پیاس کی کمی ہے.

میلانا روم نے کہا ہے :—

“پانی मत دूँद, पहले अपने अंदर प्यास पैदा कर. जब सच्ची प्यास पैदा होगी तो पानी अपने आप तेरे आगे और पीछे, ऊपर और नीचे फव्वारों की तरह फूटने लगेगा.”

बड़े लोग जिनके दिल दया और प्रेम से लबालब भरे थे, जिनके लिए कोई शर न था, बड़े बड़े धर्मों की पाक किताबों को लिखने और तरतीब देनेवाले, जो अब भी हमेशा प्रेम के साथ मनुष्य जाति पर उसी तरह निगाह रखते हैं जिस तरह माएं अपने छोटे बच्चों पर निगाह रखती हैं, वे बड़े लोग हमारे लिए जीवन के अच्छे से अच्छे मेवों और मीठे से मीठे फलों के बाग लगाकर छोड़ गए हैं, उनकी लगाई हुई अंगूरों की बेलें बारहमासी बेलें हैं. उनके अंगूर जितने अधिक ताड़े जावें उतने ही फलते और बढ़ते रहते हैं. उनकी इन सदा-बहार बेलों से हमने कुछ गुच्छे चुनकर जमा कर दिए हैं, ताकि सब उनमें बराबर का हिस्सा बटा सकें, सब उनका आनन्द ले सकें. और जब कभी हम बाहर परदेस जावें या अपने अपने घरों को लौटें तो इन फलों की मिठास हमारी जबानों और हमारे हाठों पर बनी रहे. हम जहाँ जावें इस एकता और प्रेम के सुन्दर बीज हमारे साथ हों और हम यहाँ वहाँ और सब जगह इन बीजों को बिखेरते रहें.

एक हिन्दुस्तानी संत ने कहा है :—

“अब हौं कासों बैर करौं,
“कहत पुकारत प्रभु निज मुखते
“घट घट हौं विहरौं,
“आप समान सबै जग लेख्यौं,
“भक्तन अधिक डरौं,
“अब हौं कासों बैर करौं”

कबीर साहब ने कहा है :—

“घट घट रमता राम रमैया

“कटुक बचन मत बोल ! तोहे राम मिलेंगे.”

एक अंग्रेज कवि ने कहा है :—

“So many castes, so many creeds,
“So many paths that wind and wind,
“when all, the sad world needs,
“Is the art of being kind !”

यानी बहुत सी जात पात हैं, बहुत से अलग अलग धर्म हैं, बहुत से रास्ते हैं जिन पर लोग चक्कर खाते रहते हैं. पर इस दुखी दुनिया को जिस एक चीज की जरूरत है वह है सब के साथ प्रेम का बरताव !

सब के साथ प्रेम का बरताव करना तभी आ सकता है जब हम मेहनत के साथ इस बड़ी सच्चाई को अपने दिलों

मिलाना रूम ने कहा है :—

पानी मत ڈھونڈتہ پہلے اپنے اندر پیاس پیدا کر. جب سچی پیاس پیدا ہوگی تو پانی اپنے آپ تہرے آگے اور پیچھے اُپر اور نیچے فواروں کی طرح پھوٹنے لگے گا.

بڑے لوگ جنکے دل دیا اور پریم سے لبالب بھرے تھے جن کے لئے کوئی غیر نہ تھا، بڑے بڑے دھرموں کی پاک کتابوں کو لکھنے اور ترتیب دینے والے، جواب بھی ہمیشہ پریم کے ساتھ منشیہ جاتی پر اُسی طرح نگاہ رکھتے تھے جس طرح ماںیں اپنے چھوٹے بچوں پر نگاہ رکھتی ہیں، وہ بڑے لوگ ہمارے لئے جیوں کے اچھے سے اچھے میوے اور میٹھے سے میٹھے پھلوں کے باغ لگا کر چھوڑ گئے ہیں. اُن کی لگائی ہوئی انکوروں کی بیلیں بارہ ماہی بیلیں ہیں. اُن کے انکور جتنے ادھک توڑے جاویں اُنہی ہی پھلتے اور بڑھتے رہتے ہیں. اُن کی اِن سدا بہار بیلوں سے ہم نے کچھ گچھے چن کر جمع کر دیئے ہیں، تاکہ سب اُن میں برابر کا حصہ بٹا سکیں، سب اُن کا آئندہ لے سکیں. اور جب کبھی ہم باہر پردیس جاویں یا اپنے اپنے گھروں کو لوٹیں تو اِن پھلوں کی مٹھاس ہماری زبانوں اور ہمارے ہونٹوں پر بنی رہے. ہم جہاں جاویں اِس ایکتا اور پریم کے سندھ بیج ہمارے ساتھ ہوں اور ہم یہاں وہاں اور سب جگہ اِن بیجوں کو بکھیرتے رہیں.

ایک ہندستانی سنت نے کہا ہے :—

“اب ہوں کاسوں بئیر کروں
“کہت پکارت پرہو نیج مکہ تے
“گھٹ گھٹ ہوں وھروں
“آپ سمان سبے جک لیکھئوں
“بھکتن ادھک ڈروں
“اب ہوں کاسوں بئیر کروں.”

کبیر صاحب نے کہا ہے :—

“گھٹ گھٹ رمتا رام رمتا.

“کک بچن مت بول ! تو ہے رام ملیں گے.”

ایک انگریز کوی نے کہا ہے :—

“So many castes, so many creeds,
“So many paths that wind and wind,
“When all, the sad world needs,
“Is the art of being kind !”

یعنی بہت سی جات پات ہیں، بہت سے الگ الگ دھرم ہیں، بہت سے راستے ہیں جن پر لوگ چکر کھاتے رہتے ہیں. پر اُس دکھی دنیا کو جس ایک چیز کی ضرورت ہے وہ ہے سب کے ساتھ پریم کا برتاؤ !

سب کے ساتھ پریم کا برتاؤ کرنا تبھی آسکتا ہے جب ہم محنت کے ساتھ اُس بڑی سچائی کو اپنے دلوں

اور دماغ میں جمالیں کہ ایک ہی ہے انت، انت اور واپاک
 آتما ہمارے اپنے اور سب کے اندر رمی ہوئی ہے۔ جیوں کا ایک
 سمبیز ہے چو لگانا بہ رہا ہے۔ وہی پریم ہے، وہی ایشور ہے، پریم
 ہی ایشور ہے، ایشور پریم ہے، کیوں کہ ایشور سب کے اندر موجود
 ہے۔ اس ایکٹا کو انورہو کرنا ہی ایشور بہکئی یا عشق حقیقی
 ہے۔

اُپنشد میں لکھا ہے :—

’ایدا چرم و آو کشم . ویشٹ ایشیفتی مانواہ

”ندا دیوم آو گیائے دھسیہ اُنتو پھرشہائی“

یعنی جس دن لوگ مارے آکلیش کو ایک چٹائی کی طرح لپٹ کر اپنے ہاں میں لے لیئے گئے اُس دن یہی بڑا سب کے اندر ایک ایسور کو دیکھے دنیا کے دکھ کا انت ہو سکیگا ۔

صوفی کہتا ہے :-

”شاد باش! اے عشق! خوش سوداے ما!

”اے دو آنے جسدہ علیہا اے ما ا

”آءِ عَليّ نَخوت و ناموس ما ا

”آءے تو اطلالوں و جالہنوس ما !

”وید اوستا“ القرآن“ انجیل“ نیز“

”لعبه“ و ”بتخانه“ و ”آتشکده“

”فلمن“ مقبول کردہ جملہ چیز‘

”چوں مراجز عشق نے دیگر خدا!“

یعنی اے میرے پیارے باگن پن ! اے پریم ! خوش رہو۔
تم ہی میری ساری بیماریوں کی دوا ہو ! تم ہی میرے گہمند
اور میری خوبی کا علاج ہو ! میرے اندر کے روگوں کے لئے تم
افلاطون فلاسفر ہو اور تم ہی میری باہر کی بیماریوں کے لئے
جالینوس حکیم ہو ! وید، زند اوستا، قرآن، انجیل، کعبہ،
ہت خانہ اور آتشکدہ، میرے دل نے ان سب کو اپنا لیا ہے،
چونکہ میرے لئے اب سوا 'پریم' کے اور کوئی مذہب ہی
نہیں رہا۔

شیخ سعدی نے اپنی مشہور کتاب 'مناقیب' میں لکھا ہے: —

”قابہ امروختیم اہجد عشق

”رقم غیری ازین نمی دانیم

”کہ یہ جسامتوں کی مہیں جز دوست

”بحرحہ پدنی، بدان کہ مظهر اوست !

”جی، کہ واقف شدیم زبردہ راز

پیش رو
ایں قرآنہ میگوئیم

”یہ ہے جیسا کہ میں نے پہلے ہی عرض کیا تھا۔

”میرے ہاتھ بندھ جائیں گے اور میں اس کے مظاہر اوست!“

یعنی جب تم ہم نے پریم کی 'اف' ہے، 'تے' پڑتی ہے تب سے سوا اسی ایک بات کے اور کوئی بات ہم جانتے ہی نہیں کہ دل کی آنکھوں سے کسی کو بھی سوائے درست کے

اور کچھ نہیں دیکھا چاہئے۔ جو کچھ تو دیکھتا ہے سمجھ لے کہ سب اسی ایک ایشور کا جلوہ ہے۔ جب سے ہم بھوکے پردے سے واقف ہوئے ہیں تب سے ہر دم ہم یہی راگ گڑھے ہیں کہ دل کی آنکھوں سے کسی کو بھی سوائے دوست کے اور کچھ نہیں دیکھا چاہئے۔ جو کچھ تو دیکھتا ہے سمجھ لے کہ سب اسی ایک ایشور کا جلوہ ہے۔

’ورلڈ فیلوشپ آف فیتھس‘ میں جو کچھ سب دھرموں کی طرف سے لایا گیا تھا اوسکا مطلب یہ ہے :—

”دنیا کے سب رہنے والے भाई भाई ہیں !

”سب کے بھلے میں ہرے کا بھلا ہے۔

”سب کا نیکاس ایک سے ہے، ایک ईश्वर سب کا ईश्वर ہے۔

”ایک کائنات سب کے ऊपर ہے۔

”ایک مंजیل سب کے سامنے ہے۔

”ایک جیون سب کو لپٹے ہے۔

”سب کا راستا پرہم ہے۔

”لوہ، لالچ، ڈر، غمناک اور نافرست

”انہوں نے بہت دنوں ہمیں ویران کئے رکھا،

”ان کا راج اب ختم ہوا۔

”نسل، رنگ، سंप्रदाय और जात पात،

”سب ایک ہی تھے وہ بڑے سونے کی طرح مرجھا گئے۔

”آدمی نے آخر جاگ کر یہ سیکھ لیا

”کہ سب کے اندر ایک ہی جان ہے !“

اس جیسے میں سب کی طرف سے نیچے لکھی پڑتھنا کی گئی تھی :—

”امن اور خوشحالی لوگوں میں پھر سے واپس آ جائیں !

”سب مل کر کام کریں، ایک پریم سب کو دے دے ہو !

”ایک بھائی چارہ سب کو لے ہو، سب کو دھیرج ہو !

”سب میں انہ ستم کا ہل ہو !

”سب ایک دوسرے کی پیچھلی ہانوں کو بھول جائیں !

”سب سب کے بھینس کو بنانا اپنا پاک فرض سمجھیں !

”امن اور خوشحالی سب میں لوٹ آویں !“

فرمان میں ایشور سے پڑتھنا دی گئی ہے :—

”اندرنا الصراط المستقیم !“

یعنی ہے ایشور ! ہم سب کو سیدھی راہ دکھا !

وید میں لکھا ہے :—

”اگنے ! نئے سپتھا !“

یعنی ہے ایشور ! ہمیں سیدھے راستے پر لے چل !

مہابھارت میں لکھا ہے :—

”سروسترو درگامی، سروہدرانی پشیتو !

”سروہ سدیدہم اپنو تو، سروہ سرونند تو !“

یعنی سب اپنی اپنی تھمائیوں کو پار کر سکیں، سب کو بھلائی ہی بھلائی دہانی دے، سب کو نیک سمجھ ہو، اور سب

سب جگہ خوش رہیں ! یہی سیدھا راستہ ہے۔

آرم ! آمین ! آمین !

شری ہرولڈ ہریک

شری ہرولڈ ہریک

[لیکھک سیتمبر 1954 میں شومہچھو منڈل کے
سبب کی ہئسیات سے چین گئے تھے۔ اس لیکھ میں ان کا
آنکھوں دیکھا ورنن ہے۔ آئیڈر]

[لیکھک سیتمبر 1954 میں شومہچھو منڈل کے
سبب کی ہئسیات سے چین گئے تھے۔ اس لیکھ میں ان کا
آنکھوں دیکھا ورنن ہے۔ آئیڈر]

آپ کے پاس کتنی جزمین ہے ؟ 2.6 ماو کے ہسابل سے 15 ماو جزمین ہے۔ مسکراتے ہوئے دکن چین کے ایک ہونہ مٹھا
دھیش نے کہا۔ چین میں آپ کہیں بھی چلے جائے پورب سے
پچھم تک اور اتر سے دکن تک زمین کے بارے میں آپ چاہے
کسلی سے پوچھیں، زمیندار سے پوچھیں، سنت یا مہنت سے
پوچھیں، ایک ہی جواب ملے گا—2.6 ماو۔ اس 2.6 ماو
میں کیا کمال ہے، یہ ہمیں وستار سے سمجھنا ہوگا۔

آپ کے پاس کتنی جزمین ہے ؟ 2.6 ماو کے ہسابل سے 15
ماو زمین ہے مسکراتے ہوئے دکن چین کے ایک ہونہ مٹھا
دھیش نے کہا۔ چین میں آپ کہیں بھی چلے جائے پورب سے
پچھم تک اور اتر سے دکن تک زمین کے بارے میں آپ چاہے
کسلی سے پوچھیں، زمیندار سے پوچھیں، سنت یا مہنت سے
پوچھیں، ایک ہی جواب ملے گا—2.6 ماو۔ اس 2.6 ماو
میں کیا کمال ہے، یہ ہمیں وستار سے سمجھنا ہوگا۔

چین کے بھومی سدھار آندولن کو ہمیں دو ہسٹوں میں
بانڈنا ہوگا—ایک جزمین کا فیر سے سمان بڈبارا
اور دوسرا جیادا پڈبارا۔ اب ہم ان دونوں سبالوں پر
سلسلسلے وار بچار کریں۔

چین کے بھومی سدھار آندولن کو ہمیں دو حصوں میں
بانڈنا ہوگا—ایک زمین کا پور سے سمان بڈبارا اور دوسرا زیادہ
پڈبارا۔ اب ہم ان دونوں سبالوں پر سلسلسلے وار بچار کریں۔

چین بھارت کی طرح کھیتی پردھان دیس ہے۔ چین کی
60-70 فیصدی جنتا کھیتی پر ہی گزارہ کرتی ہے۔ سواہادک
روپ سے چین کے فیتاؤں نے زمین کے سوال کو سب سے پہلے
ہاتھ میں لیا۔ ان کا ایسا کرنا مناسب اور ضروری تھا۔ کسی
بھی لوک شاہی سرکار کے اپنے بھوجن سمودایہ کی ماتنگوں کو
ان کے سک دکن کو سمجھنے و ساجھانے کی کوشش سب سے پہلے
کرنی ہی چاہئے۔

چین بھارت کی طرح کھیتی پردھان دیس ہے۔ چین کی
60-70 فیصدی جنتا کھیتی پر ہی گزارہ کرتی ہے۔ سواہادک
روپ سے چین کے فیتاؤں نے زمین کے سوال کو سب سے پہلے
ہاتھ میں لیا۔ ان کا ایسا کرنا مناسب اور ضروری تھا۔ کسی
بھی لوک شاہی سرکار کے اپنے بھوجن سمودایہ کی ماتنگوں کو
ان کے سک دکن کو سمجھنے و ساجھانے کی کوشش سب سے پہلے
کرنی ہی چاہئے۔

جنتا کا جیون جزمین کے ساٹھ جڑا ہوا تھا۔ زمین اھک
تر زمینداروں کے ہاتھ میں تھی۔ زمین پر مزدوری کرنے والے
کسانوں کو تباہ کرنے و شوشن کرنے کے انیک ادھیکار بھی
زمینداروں کو حاصل تھے۔ غرض یہ کہ سادھن، سمپتی اور
حکومت پر زمینداروں کا قبضہ تھا۔ یہی ذریعہ تھا جس سے
وہ چین کی محنتکش جنتا کا پروک ٹوک شوشن
کرسکتے تھے۔

جنتا کا جیون جزمین کے ساٹھ جڑا ہوا تھا۔ زمین اھک
تر زمینداروں کے ہاتھ میں تھی۔ زمین پر مزدوری کرنے والے
کسانوں کو تباہ کرنے و شوشن کرنے کے انیک ادھیکار بھی
زمینداروں کو حاصل تھے۔ غرض یہ کہ سادھن، سمپتی اور
حکومت پر زمینداروں کا قبضہ تھا۔ یہی ذریعہ تھا جس سے
وہ چین کی محنتکش جنتا کا پروک ٹوک شوشن
کرسکتے تھے۔

1949 میں لوکراج کرایم ہڈا۔ اسنے اپنی جزمین
سمبندھی نہتی صاف کی۔ زمینداروں کی سدیوں سے چلی
آتی طاقت کو یہ سب سے بڑی چنوتی تھی۔ سیاسی
طاقت لوگوں کے ہاتھ میں آچکی تھی۔ حکومت
پر جنتا نے ادھیکار پا لیا تھا۔ اب سوال سادھن اور دولت

1949 میں لوک راج قائم ہوا۔ اس نے اپنی زمین
سمبندھی نہتی صاف کی۔ زمینداروں کی صدیوں سے
چلی آتی طاقت کو یہ سب سے بڑی چنوتی تھی۔ سیاسی
طاقت لوگوں کے ہاتھ میں آچکی تھی۔ حکومت
پر جنتا نے ادھیکار پا لیا تھا۔ اب سوال سادھن اور دولت

کو जनता के हाथ में पहुंचाने का था. 1949 से ही चीनी अगुवाओं ने ज़मीन के प्रश्न पर जनमत तैयार करना शुरू कर दिया था. 1950 में ज़मीन सुधार कानून बना दिया. इस कानून में ज़मीन सम्बन्धी सारे प्रश्नों पर क्रान्तिकारी तरीके से विचार किया गया. ज़मीन पर जोतने वाले का अधिकार, समान रूप से माना गया. आज तक के ज़मीन सम्बन्धी पुरतैनी अधिकारों को इससे जबरदस्त चोट पहुंची. यहां एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा होता है. 1950 में इसे कानून का रूप देने में चीनी अगुवाओं ने जल्दबाजी से काम लिया है क्योंकि एक वर्ष में जनमत तैयार होना संभव नहीं माना जाता. यह प्रश्न सब को सूझेगा. हमने भी इस सवाल की सफाई मांगी. इसकी सफाई मैं आपको चीन के महान किसान नेता और मौजूदा लोकराज के कृषि मंत्री के मुख से सुनाऊंगा. कृषि मंत्री श्री लियाओ-डू-मेन ने बताया :--

“लोगों का मन बदले बिना कोई कानून कारगर साबित नहीं हो सकता, और इस ज़मीन सम्बन्धी कानून को तो उन सदियों पुरानी परम्परा का विरोध करना था जो अबाधित रूप से आज तक सत्ता पर आसीन थी. इसका मुकाबला जन जाग्रति के बिना असंभव था. सिरफ़ कानून बनाकर हम इस सवाल का हल नहीं पा सकते थे. मैं यहां एक चीज साफ़ करना चाहूंगा. ज़मीन सुधार कानून के लिये लोकमत अनुकूल था काफ़ी से ज्यादा. मैं आगे चलकर यह भी कहना चाहूंगा कि लोक या जनता का अर्थ जिस देश के राष्ट्रकोश में आम जनता, करोड़ों मेहनतकश किसान मजदूर होता हो, उन सब देशों में जीवन के इस बुनियादी हक़ को हासिल करने के लिये जनमत एकदम अनुकूल है. यह दूसरा सवाल है कि कहीं इसे हल करने वाला नेतृत्व शोरदार रहा हो, कहीं कमज़ोर, कहीं इस अधिकार में हकाबट डालने वाले सत्ताधारी हैं, कहीं इनकी सत्ता टूटती जा रही है. प्यासों की जमात को यह पूछना कि आपका मत पानी पीने का हो तो आपको पानी दिया जायेगा, इसमें जितनी अक्लमन्दी है, उतनी ही अक्लमन्दी इस दलील में है कि जनमत तैयार होने पर जोतने वाले मेहनतकश मजदूरों को ज़मीन दिलाने का क़दम उठाया जायेगा. रोटी जन साधारण की बुनियादी ज़रूरत है. इसे पूरा करने के लिये ज़मीन का जातने वाले के पास होना भी उतना ही ज़रूरी है. जब उसे ज़मीन मिलती है तो जनता का खुश होना और उसके उत्साह में बढ़ती होना स्वाभाविक ही है. इसीलिये हमने एक वर्ष में ही कानून बनाया. इसका इतिहास बहुत पुराना है. जन आन्दोलन के इतिहास के साथ साथ इसका इतिहास चला है. इस प्रश्न पर हमारा तज़रिया बरसों पहले तय हो चुका था. जनता के

को जितने हाथों में पहुंचाने का था. 1949 से ही चीनी अगुवाओं ने ज़मीन के प्रश्न पर जनमत तैयार करना शुरू कर दिया था. 1950 में ज़मीन सुधार कानून बना दिया. इस कानून में ज़मीन सम्बन्धी सारे प्रश्नों पर क्रान्तिकारी तरीके से विचार किया गया. ज़मीन पर जोतने वाले का अधिकार, समान रूप से माना गया. आज तक के ज़मीन सम्बन्धी पुरतैनी अधिकारों को इससे जबरदस्त चोट पहुंची. यहां एक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा होता है. 1950 में इसे कानून का रूप देने में चीनी अगुवाओं ने जल्दबाजी से काम लिया है क्योंकि एक वर्ष में जनमत तैयार होना संभव नहीं माना जाता. यह प्रश्न सब को सूझेगा. हमने भी इस सवाल की सफाई मांगी. इसकी सफाई मैं आपको चीन के महान किसान नेता और मौजूदा लोकराज के कृषि मंत्री के मुख से सुनाऊंगा. कृषि मंत्री श्री लियाओ-डू-मेन ने बताया :--

“लोगों का मन बदले बिना कोई कानून कारगर साबित नहीं हो सकता, और इस ज़मीन सम्बन्धी कानून को तो उन सदियों पुरानी परम्परा का विरोध करना था जो अबाधित रूप से आज तक सत्ता पर आसीन थी. इसका मुकाबला जन जाग्रति के बिना असंभव था. सिरफ़ कानून बनाकर हम इस सवाल का हल नहीं पा सकते थे. मैं यहां एक चीज साफ़ करना चाहूंगा. ज़मीन सुधार कानून के लिये लोकमत अनुकूल था काफ़ी से ज्यादा. मैं आगे चलकर यह भी कहना चाहूंगा कि लोक या जनता का अर्थ जिस देश के राष्ट्रकोश में आम जनता, करोड़ों मेहनतकश किसान मजदूर होता हो, उन सब देशों में जीवन के इस बुनियादी हक़ को हासिल करने के लिये जनमत एकदम अनुकूल है. यह दूसरा सवाल है कि कहीं इसे हल करने वाला नेतृत्व शोरदार रहा हो, कहीं कमज़ोर, कहीं इस अधिकार में हकाबट डालने वाले सत्ताधारी हैं, कहीं इनकी सत्ता टूटती जा रही है. प्यासों की जमात को यह पूछना कि आपका मत पानी पीने का हो तो आपको पानी दिया जायेगा, इसमें जितनी अक्लमन्दी है, उतनी ही अक्लमन्दी इस दलील में है कि जनमत तैयार होने पर जोतने वाले मेहनतकश मजदूरों को ज़मीन दिलाने का क़दम उठाया जायेगा. रोटी जन साधारण की बुनियादी ज़रूरत है. इसे पूरा करने के लिये ज़मीन का जातने वाले के पास होना भी उतना ही ज़रूरी है. जब उसे ज़मीन मिलती है तो जनता का खुश होना और उसके उत्साह में बढ़ती होना स्वाभाविक ही है. इसीलिये हमने एक वर्ष में ही कानून बनाया. इसका इतिहास बहुत पुराना है. जन आन्दोलन के इतिहास के साथ साथ इसका इतिहास चला है. इस प्रश्न पर हमारा तज़रिया बरसों पहले तय हो चुका था. जनता के

سامنے ساکھ تھا۔ اسی لئے زمین ہمارے کا قانون اتنا سہل ہو سکا اور لوگ پریم بنا۔ جنت ہمارے ساتھ ہے، یہی اس کا سب سے بڑا پرمان ہے۔“

اس چکر لوگ نایک کی بات سے ہمیں چین کی بھومی کو آنگی کی یورو بھومکا مل جاتی ہے۔ اب ہم اس بھومکا کی روشنی میں ان ساری باتوں کی جانچ پڑتال کر سکیں گے جو اس اندولن کے کارن آپستہت ہوئیں؛ مشق زمینداروں کے آکر کیا پروکھریا ہوئی؟ دعویٰ کسانوں نے کسکا ساتھ دیا؟ غریب کسانوں، مزدوروں و ادیبوں کے لئے کس طرح سنگتہت ہوکر کرشمہ کی؟ شہر کی بدھ جیویوں نے دیہاتی شرم جیویوں کے اس اندولن کو کسے اپنایا؟ 11 کروڑ 50 لاکھ ایکڑ زمین کس طرح بے زمین و کم زمین کسانوں میں بانٹی گئی؟

سب سے پہلے چین کے آگواواؤں نے ملک کے سامنے ایک بات پیش کی۔ اس میں انہوں نے صاف بتایا کہ جب تک غلہ کی پیداوار دیہی میں بڑھے گی نہیں تب تک دیہی میں اودیوگی کرن کبھی سہل نہیں ہو سکے گا۔ دیہی کی خوشحالی کا پورا دارومدار غلہ کی پیداوار پر ہے۔ ان اتہاؤں نے بڑھے تو ہی دیہی کا جیون مان بڑھے گا۔ جیون مان کے بڑھنے سے جنتا کی مانگیں بڑھیں گی اور انہیں پورا کرنے کے لئے اودیوگی کرن ضروری ہوگا اور سہل بھی۔ اس لئے زمین سدھار آندولن کو سہل بنانے میں ہمیں جی جان سے جت جانا چاہئے اس اپیل کا چینی جنتا نے سواکت کیا اور ہر دئے سے اس کام کو پورا کرنے میں سب کدھے سے کدھا ملا کر چٹ گئے۔ پانچ پچیس نہیں، سو ہزار نہیں، 30-30 لاکھ مرد عورتوں نے جن میں مل مزدور سے لگا کر مل کے منیجر بھی شامل تھے، ویدولن تھے، پروفیسر تھے، پردھان اور پردھان کی پتنیاں بھی تھیں، ہر ایک طبقے کے بدھجیوی لوگ تھے، اس طرح سب کوئی زمانے کی مانگ کو پورا کرنے کے لئے میدان میں آ کھڑے ہوئے۔ ان 30 لاکھ سینکڑوں کو کوریا کے لڑائی کے مڑچے پر نہیں بھیجا گیا۔ اس مہا فوج کو دھاتوں کی اور کوچ کروایا گیا۔ اس فوج کا نام دیا گیا ”بھومی سدھار دل“۔ ان دلوں کو انیک لکڑیوں میں بانٹا گیا۔ صوبہ، ضلع، تحصیل و دیہات تک کی یوجنا بنالی گئی۔ ہر ٹولی کو یوجنا پروک حصہ سونپ دیا گیا۔ بھومی سدھار دلوں کام مکھیہ کا تھا دھاتوں میں کسان سپھاؤں کی رچنا کرنا۔ ان کسان سپھاؤں کو اپنے اندھکار و فرض کا پھل کروانا۔ برسوں سے دیے، کچلے دھاتوں میں ہست پیدا کر کے انہیں آگے بڑھانا اور زمینداروں کے دانوں بیج سے بچانا۔

بہت بڑے زمیندار چانگ-کائی-شیک کے ساتھ بھاگ چکے

ہے۔ جو بچے بے گھر تھے انہوں نے شروع شروع میں اپنی شعلی ہر زمین سدھار آندالان کو ناکامیاب بنانے کی کوشش کی۔ طرح طرح کے پرینچ رچے۔ کہیں کہیں کسان سیبا کے کاربہ کرتاں کو پدے اور استریوں دوارا خرید لیا۔ یہ سب بارہ کی تیز دھار کو لائی سے روکے جیسا مورک پرینٹ ٹامپ ہوا۔ وہاں کی جلتا جاگ آئی تھی۔ اسے یوگہ پتہ مل چکا تھا۔ پرانی سماج وپستہ کو ختم کرنے کے لئے 30 لاکھ سماج سہروں کا دل بادل کی طرح گرج کر ٹوٹ پڑا تھا۔ پریم اور شکتی کا مانوتا درمی مہاسگر آج آشا کے آکاش پر سے اُتر پڑا تھا۔ آج تک کی نربل جنتا 30 لاکھ ساتھیوں کے سہارے چلنے کے لئے سیل ہو آئی تھی۔

زمین سدھار دل کے سینک تون تین مہینے تک دوہاتوں میں باری باری سے ٹھہرتے تھے۔ انیک کھٹ جھلنے تھے۔ جلتا جیٹ ٹوچاگرتی پھیلاتے تھے۔ سرکار کے ہومی سدھار نیٹی کا پورا ساتھ دیتے تھے ملک کس راہ پر جا رہا ہے، جانا چاہتا ہے، اس کی پوری تصویر جنتا کے سامنے پیش کرتے تھے۔

شروع کے دنوں کی کچھ گزری کو چھوڑ کر امداد زمینداروں نے زمانے کی مانگ کو سمجھ لیا۔ ہوا کے ٹوکول اپنے ٹو بنانے کی کوشش کرنے لگے۔ کچھ زمیندار اب بھی ایسے باقی تھے جن کا استیقا کسانوں کو اکھر رہا تھا۔ جن کو دیکھ کر انسانوں کے دل آگ بکولا ہو اٹھتے تھے۔ یہ وہ زمیندار تھے جنہوں نے کسانوں کی بہن بیٹیوں کی عزت لٹی تھی۔ آج بھی ایسی نیک بیٹیاں ان لوگوں کے گھر میں داس کنھاؤں کے روپ میں سرکار کٹ رہی تھیں، ان میں سے کچھ زمینداروں نے انیک بانوں سے ان کے پتر چھین لئے تھے۔ انیک سدھواؤں کو بدھوا بنایا تھا؛ دو دو چار چار سال کے معصوم بچوں سے ان کے ماں باپ چھین لئے تھے۔ بچوں کو سدا کے لئے اناٹہ بنا دیا تھا۔ ایسے کچھ زمینداروں کا استیتو مکتی کے بعد لوگوں کو حد سے یادہ کھٹنے لگا۔ انہوں نے نئے لوکراج کے سامنے دھول اڑانے ! درسلس کر کے اپنے سرورقش کو ٹیوتا دیا۔ جنتا اور بیتاؤں نے محسوس کیا کہ جام وکس کے مارگ میں یہ بہت سی آچن کھڑی کر رہے ہیں۔ آگے بڑھنے سے پہلے جنتا کے لوں سے درد اور تر کو نکال پھٹا ہوا۔ چھٹی نیتاؤں نے ایسے چھ ظالم زمینداروں کو عام سیبا کے سامنے پیش کیا۔ کسانوں و کہا کہ نذر ہو کر اپنی باتیں پیش کرو۔

ایک استری نے زمیندار کی طرف اُنکی آٹھا کر ہا۔ ”بتاؤ۔ تم نے ہی میری پانچ مار زمین چھین لی ہی نہ؟ جب میرا پتی بسترے پر بھار پڑا تھا، تم نے ہی جاپانیوں کو اسے مہارگی بتا کر زندہ چلا دیا ! بولو

جمنی زمیندار کی طرف بنگولی اٹھا کر کہا—
”بتاؤ تو مجھے ہی میری پانچ مار زمین چھین لی تھی نہ؟ جب میرا پتی بسترے پر بھار پڑا تھا، تم نے ہی جاپانیوں کو اسے مہارگی بتا کر زندہ چلا دیا ! بولو

ایک استری نے زمیندار کی طرف اُنکی آٹھا کر ہا۔ ”بتاؤ۔ تم نے ہی میری پانچ مار زمین چھین لی تھی نہ؟ جب میرا پتی بسترے پر بھار پڑا تھا، تم نے ہی جاپانیوں کو اسے مہارگی بتا کر زندہ چلا دیا ! بولو

ایک استری نے زمیندار کی طرف اُنکی آٹھا کر ہا۔ ”بتاؤ۔ تم نے ہی میری پانچ مار زمین چھین لی تھی نہ؟ جب میرا پتی بسترے پر بھار پڑا تھا، تم نے ہی جاپانیوں کو اسے مہارگی بتا کر زندہ چلا دیا ! بولو

ایک استری نے زمیندار کی طرف اُنکی آٹھا کر ہا۔ ”بتاؤ۔ تم نے ہی میری پانچ مار زمین چھین لی تھی نہ؟ جب میرا پتی بسترے پر بھار پڑا تھا، تم نے ہی جاپانیوں کو اسے مہارگی بتا کر زندہ چلا دیا ! بولو

یہ سچ ہے یا نہیں؟“ ایسے کچھ رشیدی اٹھ چاروں کو موت کے گھاٹ اتارا گیا۔ زیادہ تر زمینداروں کو سنبھرنے کا موقع دیا گیا۔ ان کو بھی 2.6 ماہ کے حساب سے زمین دہی گئی تاکہ وہ بھی محنت کر کے گزارہ کر سکیں۔ مسجدار اور اچھے زمینداروں کا گرام وکس ہو جانا میں اہم کر لیا گیا۔

زمینداروں کی ادھکتر جائداد کو بے زمین کسانوں میں بانٹا گیا۔ ضرورت سے زیادہ جو سادھن سہتی تھی وہ بھی ضرورت مندوں کے پاس پہنچائی گئی۔ بتوارے میں مسجدار کسانوں کو نہ بہت لایا ہوا اور نہ نقصان۔ غریب کسان اور بے زمین مزدوروں کو جن کی تعداد کافی تھی، کافی لایا پہنچا۔ اس پرکار 11 کروڑ 55 لاکھ ایکڑ زمین 30 کروڑ کسانوں میں بانٹی گئی۔ بیکاری و بے روزگاری کی ایک بہت بڑی سمسیا اس سے حل ہو گئی۔ لین دین و بھومی سمبندھی جو بھی کٹنی دستاویز موجود تھے ان سب کی عام چمک پر ہولی جلائی گئی۔

پورے چین میں کسان سبھاؤں کی رचना نے نیا उत्साह و साहस पैदा किया, जनता को अपनी शक्ति का क्याल हुआ और यह विश्वास भी पैदा हुआ कि हम भी कुछ कर सकते हैं. अब इन किसान सभाओं का सब से पहला काम था गांव में वर्गीकरण करने का. गांव को मोटे तौर पर पांच वर्गों में बांटा गया. जमीन की समस्या हल करने के लिये वर्गीकरण आवश्यक था:—

1. जमीनदार:—वह जो खुद काशत न करता हो, किंतु ज्यादा जमीन का मालिक हो.
2. धनी किसान:—वह जो खुद काशत करता हो, किन्तु अधिक जमीन दूसरों को उठवाता हो.
3. मझोला किसान:—जिसके पास जमीन अपनी हो, और किली तरह गुजारा कर लेता हो.
4. गरीब किसान:—नाम मात्र की जमीन हां, काशत करने पर भी जो भूखा रहता हो.
5. जो दूसरों की जमीन पर मजदूरी करते हों और पूरी मेहनत करने पर भी जिन्हें भर पेट रोटी न मिलती हो.

इसके आधार पर ग्राम सभाओं ने 1950 में बने जमीन सुधार कानून के अनुसार बंटवारे का कार्य शुरू किया. यह 1953 तक चलता रहा. आज पूरे चीन में जमीन का समान रूप से बंटवारा हो गया है. 2.6 माह जमीन हर व्यक्ति का मिली जो बंटवारे के दिन तक ज़िन्दा था या पैदा हो चुका था. इस 2.6 माह ने जादू का काम किया. यही वह जादू है जिसने चीन की जनता के सुरमाये हुये चेहरों में फिर से जान भर दी. इस क्रान्ति ने जनता में उत्साह पैदा किया. उत्पादन काफी से ज्यादा बढ़ने लगा. 1949 से 1952 में 45 फीसदी उत्पादन बढ़ा. लड़ाई से

1. زمیندار:—وہ جو خود کاشت نہ کرنا ہو، کنتو زیادہ زمین کا مالک ہو.

2. دھنی کسان:—وہ جو خود کاشت کرنا ہو، کنتو ادھک زمین دوسروں کو اٹھوانا ہو.

3. مچھولا کسان:—جس کے پاس زمین اپنی ہو، اور کسی طرح گزارہ کر لیتا ہو.

4. غریب کسان:—نام मात्र کی زمین کی زمین ہو، کاشت کرنے پر بھی جو بھوکا رہتا ہو.

5. جو دوسروں کی زمین پر مزدوری کرتے ہوں اور پوری محنت کرنے پر بھی جنہیں بھر پوت روٹی نہ ملتی ہو.

اس کے آدھار پر گرام سبھاؤں نے 1950 میں بڑے زمین سدھار قانون کے انوسار بتوارے کا کاریہ شروع کیا. یہ 1953 تک چلتا رہا. آج پورے چین میں زمین کا سمان روپ سے بتوارہ ہو گیا ہے. 2.6 ماہ زمین ہر دیکتی کو ملی جو بتوارے کے دن تک زندہ تھا یا پیدا ہو چکا تھا. اس 2.6 ماہ نے جادو کا کام کیا. یہی وہ جادو ہے جس نے چین کی جنتا کے مرجھائے ہوئے چہروں میں پھر سے جان بھری. اس کرانتی نے جنتا میں اُتساہ پیدا کیا. اُتپادن کافی سے زیادہ بڑھنے لگا. 1949 سے 1952 میں 45 فیصدی اُتپادن بڑھا. لڑائی سے

पहले के 1937 के जकों को लें तो भी 1962 में 9 फीसदी उत्पादन बढ़ा. इससे किसानों की खरीद करने की शक्ति में 76 फीसदी की बढ़ोतरी हुई. जिन दुकानों पर सिवा जमीनदारों के कोई नशर नहीं आता था वहां आज किसानों के मुंह के मुंह जाते हैं.

अब आन्दोलन का दूसरा हिस्सा शुरू होता है जिसे हम भूमि सुधार व उत्पादन बढ़ाने वाला हिस्सा कहेंगे। हां, तो ज़मीन का बंटवारा हो जाने से ज़मीन के बहुत छोटे छोटे टुकड़े हो गये। भारत में भूदान आन्दोलन के कारण ज़मीन के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे, और फलस्वरूप देश के उत्पादन को नुक़सान पहुँचेगा, यह वलील हमारे भारत के अर्थ शास्त्रियों ने की थी और बड़ा शोर मचा दिया था। चीन के बंटवारे ने यह साबित कर दिया कि बड़े पैमाने पर भी छोटे टुकड़े होने से उत्पादन घटता नहीं बढ़ता है। भारत के भूमि आन्दोलन का भी यही अनुभव हो रहा है।

समाजवाद का आधार योजना है। वह योजनापूर्वक आगे बढ़ता है। ज़मीन के बंटवारे के मौक़े पर उसने समाज को पांच वर्गों में बांटा, ठीक वैसे ही उत्पादन बढ़ाने के लिये भी उसने किसानों को चार विभागों में बांट दिया।

व्यक्तिगत स्वेती :—जिनके पास पूरे साधन हों, जो खुद काश्त करते हों, इसमें धनी किसानों का क़रीब क़रीब सारा वर्ग शामिल हुआ. उसके लिये यह अनुकूल योजना थी.

सहयोगी दल खेती :— इसे मिथ्युअल एंड टीम्स के नाम से प्रचारित किया. पुराने छोटे किसान व मजदूरों के पांच पांच दस दस कुटुम्बों को इकट्ठा करके उनकी सहयोगी टोलियां बनाई गईं. क्योंकि बंटवारे में सब को सब प्रकार के साधन व जानवर नहीं मिल सके थे इन टोलियों द्वारा वह कमी पूरी की गई. शुरु में गांव में ऐसी एक दो टोलियां मुश्किल से बनी थीं. मगर इसकी शान देखकर गांव गांव में टोलियों की धूम सी मच गई. कहीं कहीं तो ऐसी 15-20 टोलियां एक ही देहात में बन गई हैं. ज़मीन और साधनों पर का अधिकार इन दोनों क्रिसम की खेती में किसान का ही रहता है. चीन में 60 फीसदी किसान आज इन सहयोगी दलों की खेती में शामिल हैं. व्यक्तिगत खेती से इस सहयोगी दल खेती में 20 फीसदी उत्पादन अधिक बढ़ा है.

खेती उत्पादक सहकारी मंडलियां :— इसमें ममोले किसान व पुराने जमींदार ज्यादा शरीक हुए. जो आज के पहले खुद काशत नहीं करते थे उनके लिये इसमें शरीक होना लाभदायक था. 10, 15 और कहीं कहीं अधिक कुटुम्बों की ऐसी मंडलियां हैं. खाद बीज आदि सारी खेती संबंधी बातों का क्याल मंडली का व्यवस्थापक मंडल करता है. शामिल खेती होती है. उत्पादन को तीन हिस्सों में बांटा जाता है. (1) रिज़र्व फंड, जो नये मशीन साधन व खरीदने के काम

اے کے 1937 کے انکوں کو لیں تو یہی 19۶2 میں 9 فیصدی
 پادن بڑھا۔ اس سے کسانوں کی خرید کرنے کی شکی میں 76
 صدی کی بڑھوتری ہوئی۔ جن دوکانوں پر سوا زمینداروں کے
 بنی نظر نہیں آتا تھا، وہاں آج کسانوں کے جھلکے کے جھلکے
 جاتے ہیں۔

اب آندولن کا دوسرا حصہ شروع ہوتا ہے جسے ہم بھومی مدعا و آندولن بڑھانے والا حصہ کہیں گے۔ ہاں، تو زمین کا منقارہ ہوجانے سے زمین کے بہت چھوٹے چھوٹے ٹکڑے ہو گئے۔ بارت میں بھودان آندولن کے کلرن زمین کے ٹکڑے ٹکڑے ہو جائیں گے، اور ہل سووہ دیہی کے آندولن کو نقصان پہونچے گا، یہ دلیل ہمارے بھارت کے آرٹو شاسٹروں نے کی تھی اور ہوا نور مچا دیا تھا۔ چین کے منقارے نے یہ ثابت کر دکھایا کہ بڑے بڑے پور بھی چھوٹے ٹکڑے ہونے سے آندولن بڑھتا نہیں گھٹتا ہے۔ بارت کے بھومی آندولن کا بھی یہی اثر ہو رہا ہے۔

* سماج واد کا ادھار یوجنا ہے۔ وہ یوجنا پرووک آگے بڑھتا ہے۔
میں نے ہنترارے کے موقع پر اسے سماج کو پانچ درجوں میں
انقا۔ ٹھیک ویسے ہی اُنہاد بڑھانے کے لئے بھی اسے کسانوں
و چار وہیاگوں میں بانٹ دیا۔

وہمکنی گت کریتی :—جن کے پاس پورے سادھن ہوں،
جو خود کلاشت کرتے ہوں، اسمیں دھنی کسانوں کا قریب قریب
مارا درگ شامل ہوا۔ اُسکے لئے یہ انوکھول یوجنا تھی۔

سہیوگی دل کھیتی :- اے موچوٹیل ایڈ ٹیمس کے نام سے ریپچارت کیا . پرالے چھوٹے کسان و مزدوروں کے پانچ پانچ دس س گتھوں کو اکٹھا کر کے اُنکی سہیوگی ٹولیاں بڈنی گئیں . لیوننگہ بنٹوارے میں سب کے سب پرکر کے سادھن و جانور نہیں مل سکے تھے اِن ٹولائیوں درارا وہ کمی پوری کی گئی . شروع میں گاؤں میں ایسی ایک دو ٹولیاں مشکل سے بنی تھیں . مگر اُسکی شان دیکھر گاؤں گاؤں میں ٹولائیوں کی دھوم سی مچ گئی . کہیں کہیں تو ایسی 15-20 ٹولیاں ایک ہی دیہات میں بن گئی تھیں . زمین اور سادھنوں پر کا ادھکار اِن دنوں قسم کی کھیتی میں کسان کا ہی رہتا ہے . چین میں 60 فیصدی کسان آج اِن سہیوگی دلوں کی کھیتی میں شامل ہیں . ویکنی گت کھیتی سے اِس سہیوگی دل کھیتی میں 20 فیصدی اُتھان اُدھک پڑتا ہے .

کھیتی اُتھادک سہکاری منڈلیاں :- اسمیں مجبورے کسان و پرانے زمیندار زیادہ شریک ہونے جو آج کے پہلے خود کاشت نہیں کرتے تھے اُنکے لئے اسمیں شریک ہونا لہذا ایک تھا۔ 15-10 اور کہیں کہیں ادھک کٹمبوں کی ایسی منڈلیاں ہیں۔ 'کھاد' بھیج آدمی ساری کھیتی سمبندھی باتوں کا خیال منڈلی کا ویسٹہاپک منڈل کرنا ہے۔ شامل کھیتی ہوتی ہے۔ اُتھادن کو تین حصوں میں بانٹا جاتا ہے۔ (1) 'زرور فند' جو نئے مشین سادھن و خریدنے کے کام

زمین پر ایک ہی प्रकार کا टेक्स लिया जाता है. यह टेक्स अनाज के रूप में इकट्ठा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के रूप में इकट्ठा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के 7 से 10 कीसदी तक होता है.

चीनी गाँव की मॉडेली:—किसी भी चीज की सच्ची कलौटी उसके परिणामों पर से ही हो सकती है. चीन के मूमि सुधार आन्दोलन का क्या नतीजा हुआ, इसे समझने के लिये हमें चीन के देशों की जांच करनी होगी. जेनचेन गाँव में 332 कुटुम्ब हैं. गाँव की कुल आबादी 1542 व्यक्तियों की है. कुल जमीन 4300 माउ यानी 715 एकड़ है. 20 जमीनदार 22 माझदार किसान, 60 मझोले किसान, 110 गरीब किसान और 120 खेत मजदूर हैं. बंटवारे से पहले 95 कीसदी जमीन 45 कुटुम्बों के पास थी. बाकी के 290 कुटुम्ब सिर्फ 5 कीसदी जमीन पर गुजारा करते थे. 50 कीसदी मकान और 10 कीसदी खेती के साधन भी 42 कुटुम्बों के पास ही थे. बंटवारे के बाद सारा नक्शा बदल गया. सब को 2.6 माउ के हिसाब से फी व्यक्ति जमीन मिली. अधिक मकान व साधनों का बंटवारा भी बेजामीन किसानों के बीच किया गया. बंटवारे का सारा काम ग्राम सभा ने ही पूरा किया.

मुक्ति से पहले यहाँ 1 माउ जमीन में 200 केटी: 1 1/4 रबल अनाज पैदा होता था. बंटवारे के बाद 1952 में एक माउ जमीन में 340 केटी अनाज हुआ. 1953 में 489 केटी. 1951 में 7 सहकारी दल थे. 1952 में 18 बने. 1943 में खेती उत्पादक मन्डली की स्थापना की गयी. इसमें 34 कुटुम्ब शरीक हुए. मन्डली ने 7 मकान पशुओं के लिये बनाये. 12 मकान रास्ला जमा करने के गोदाम के लिये बनाये. मुक्ति से पहले गाँव में 7 कमरे थे, मुक्ति के बाद आज 22 कमरे हैं. 7 वर्ष से उपर के बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं. रात्री वर्ग में जवान और बूढ़े भी. एक गाँव सभा है जो हर साल निश्चित सदस्यों द्वारा गाँव का कारोबार चलाती है. गाँव का सारा कारोबार गाँव सभा ही कर लेती है. जमीनदारों को ग्रामसभा में बोट देने का अधिकार नहीं है. किन्तु गाँव सभा ऐसा अधिकार दे सकती है, जब उसे यह महसूस हो कियह व्यक्ति समाज के हित में ही काम करेगा. जेनचेन गाँव सभा ने 24 में से 10 जमीनदारों को ऐसा अधिकार दे रखा है.

सहकारी उत्पादन खेती मन्डली के पास 1400 माउ जमीन है! सहकारी दलों के पास 180 माउ जमीन है. 2720 घाउ व्यक्तिगत किसानों के पास है.

गाँव में एक ली मंडल है. वह मंडल गाँव की ली सुधार आन्दोलन को संचालन करता है. निरक्षर स्त्रियों को पढ़ाने का काम मंडल करता है. छोटे छोटे घरेलू उद्योगों की वालीम भी यही मंडल देता है. सेना में जिन के पति गये हुए हैं, या जिनके बेटे सेना में गये हैं

में से एक ही प्रकार का टेक्स लिया जाता है. यह टेक्स अनाज के रूप में इकट्ठा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के रूप में इकट्ठा किया जाता है. यह टेक्स उत्पादन के 7 से 10 कीसदी तक होता है.

चीनी गाँव की मॉडेली:—किसी भी चीज की सच्ची कलौटी उसके परिणामों पर से ही हो सकती है. चीन के मूमि सुधार आन्दोलन का क्या नतीजा हुआ, इसे समझने के लिये हमें चीन के देशों की जांच करनी होगी. जेनचेन गाँव में 332 कुटुम्ब हैं. गाँव की कुल आबादी 1542 व्यक्तियों की है. कुल जमीन 4300 माउ यानी 715 एकड़ है. 20 जमीनदार 22 माझदार किसान, 60 मझोले किसान, 110 गरीब किसान और 120 खेत मजदूर हैं. बंटवारे से पहले 95 कीसदी जमीन 45 कुटुम्बों के पास थी. बाकी के 290 कुटुम्ब सिर्फ 5 कीसदी जमीन पर गुजारा करते थे. 50 कीसदी मकान और 10 कीसदी खेती के साधन भी 42 कुटुम्बों के पास ही थे. बंटवारे के बाद सारा नक्शा बदल गया. सब को 2.6 माउ के हिसाब से फी व्यक्ति जमीन मिली. अधिक मकान व साधनों का बंटवारा भी बेजामीन किसानों के बीच किया गया. बंटवारे का सारा काम ग्राम सभा ने ही पूरा किया.

मुक्ति से पहले यहाँ 1 माउ जमीन में 200 केटी: 1 1/4 रबल अनाज पैदा होता था. बंटवारे के बाद 1952 में एक माउ जमीन में 340 केटी अनाज हुआ. 1953 में 489 केटी. 1951 में 7 सहकारी दल थे. 1952 में 18 बने. 1943 में खेती उत्पादक मन्डली की स्थापना की गयी. इसमें 34 कुटुम्ब शरीक हुए. मन्डली ने 7 मकान पशुओं के लिये बनाये. 12 मकान रास्ला जमा करने के गोदाम के लिये बनाये. मुक्ति से पहले गाँव में 7 कमरे थे, मुक्ति के बाद आज 22 कमरे हैं. 7 वर्ष से उपर के बच्चे स्कूल में पढ़ते हैं. रात्री वर्ग में जवान और बूढ़े भी. एक गाँव सभा है जो हर साल निश्चित सदस्यों द्वारा गाँव का कारोबार चलाती है. गाँव का सारा कारोबार गाँव सभा ही कर लेती है. जमीनदारों को ग्रामसभा में बोट देने का अधिकार नहीं है. किन्तु गाँव सभा ऐसा अधिकार दे सकती है, जब उसे यह महसूस हो कियह व्यक्ति समाज के हित में ही काम करेगा. जेनचेन गाँव सभा ने 24 में से 10 जमीनदारों को ऐसा अधिकार दे रखा है.

सहकारी उत्पादन खेती मन्डली के पास 1400 माउ जमीन है! सहकारी दलों के पास 180 माउ जमीन है. 2720 घाउ व्यक्तिगत किसानों के पास है.

गाँव में एक ली मंडल है. वह मंडल गाँव की ली सुधार आन्दोलन को संचालन करता है. निरक्षर स्त्रियों को पढ़ाने का काम मंडल करता है. छोटे छोटे घरेलू उद्योगों की वालीम भी यही मंडल देता है. सेना में जिन के पति गये हुए हैं, या जिनके बेटे सेना में गये हैं

یہی پستوں اور ماتوں کا بوجھ ہلکا کرنے کی کوششیں بھی اس سلسلہ کی رہی ہیں۔

زمین کے بارے میں اب کوئی جھگڑا نہیں ہے، اور نہ اب سرکل انسپکٹر یا پٹواری کی ہی ضرورت ہے۔ سارا کام پٹواری کرتی ہے۔ کر بھی پٹواری کی سرکاری گوداموں پر پہنچاتی ہے۔ گز کے 100 چوڑے چوڑے گراموں میں ٹھہرتے ہیں۔ پٹواری کے بارے میں پوچھتے ہی لوگ ہنستے ہیں کہ اب پولس کیوں آئے لی۔ اب تو چانگ کی سرکار بھاگ چکی ہے۔

زمینداروں کو شروع شروع میں کچھ پرچہ دیا گیا تھا۔ اب وہ بھی آئندہ سے منسوخ ہو کر رہے گا۔ زمینداروں کی محنت پر کٹے گئے ہیں۔ اب انہیں یہ شواہد مل رہے ہیں کہ ہم بھی اپنے پیسوں پر کڑے ہو سکتے ہیں۔ سب سے بڑی بات یہ ہے کہ اب جہاں وہ ہیں، وہاں سے انہیں کوئی سرکار نہیں پہنچ سکتی۔ اب وہ دفاتر پر ہیں جہاں سے وہ کہیں نہیں کر سکتے۔ محنت کی روٹی آئندہ کی پریرک ہوتی ہے، اسلئے اب چھین کے زمینداروں میں ایک نیا انسان اور آتم شواہد دیکھنے کو ملتا ہے۔ زمیندار، سادھان کسان، دھلی کسان، کھیت مزدور سب آئندہ پرورک اپنے دن بتا رہے ہیں۔ ملک کس راہ پر جا رہا ہے، جتنا چلتا ہے، اسکا سب کو گمان ہے۔ یہ بہت بڑی بات ہے، جو ہم نے چھین کے سبھی دیہاتوں و کاشتکاروں میں دیکھی۔ چین کی خوشحالی کا مکھیاکارن ایک ہی ہے، اور وہ ہے، ایک دھلی، ایک سوارتھ، سوارتھ کی وہلنتا ہی سنگم دشوں کو جنم دیتی ہے۔ جہاں سوارتھ سناں ہوتا ہے، ایک ہوتا ہے، وہاں سب کوئی ایک ہی دشمن پورے زور سے کوشش کرتے ہیں۔ سماج کے سک کی یہ گرو چاہی ہے۔

بھومی سمدھار آندولن کا فلیٹارٹھ یہ آیا کہ 30 کروڑ لوگوں کو کام ملا۔ 11 کروڑ 50 لاکھ ایکڑ زمین کا سامان بنوڑا ہوا جو چھین کی قابل کاشت زمین کا آدھا حصہ ہے۔

14 کروڑ من غلہ جو کٹی طرح کے لگانوں کے روپ میں زمینداروں کو دئے گئے، یہ کسانوں کے گھر میں بچا۔

کسانوں کو محنت کرنے کے سادھن ملے۔ اناج اگلے لائق زمین ملی، رہنے کے لئے گھر ملے۔

غلے کے دام ملے کرنے کے کام سٹے باجوں کے ہاتھ سے نکل کر کسان پٹواریوں کے ہاتھ میں آیا، یہ بھی ایک بہت بڑی بات ہے جس نے انہیں کے بڑھانے میں یوگ دیا ہے۔

فالتو سے زمین چلنے والے گراموں میں دھندوں و گرو آدیوگوں کے لئے بازار ملے کر دیا۔ اسے مل آدیوگ کے ساتھ ہوز لینے کی ضرورت ہے اور نہ لاجوں سے اپنا

بھومی سمدھار آندولن کا پہلی تارٹھ یہ آیا کہ 30 کروڑ لوگوں کو کام ملا۔ 11 کروڑ 50 لاکھ ایکڑ زمین کا سامان بنوڑا ہوا جو چھین کی قابل کاشت زمین کا آدھا حصہ ہے۔

14 کروڑ من غلہ جو کٹی طرح کے لگانوں کے روپ میں زمینداروں کو دئے گئے، یہ کسانوں کے گھر میں بچا۔

کسانوں کو محنت کرنے کے سادھن ملے۔ اناج اگلے لائق زمین ملی، رہنے کے لئے گھر ملے۔

غلے کے دام ملے کرنے کے کام سٹے باجوں کے ہاتھ سے نکل کر کسان پٹواریوں کے ہاتھ میں آیا، یہ بھی ایک بہت بڑی بات ہے جس نے انہیں کے بڑھانے میں یوگ دیا ہے۔

فالتو سے زمین چلنے والے گراموں میں دھندوں و گرو آدیوگوں کے لئے بازار ملے کر دیا۔ اسے مل آدیوگ کے ساتھ ہوز لینے کی ضرورت ہے اور نہ لاجوں سے اپنا

مال بچانے کی۔ بس وہ ہلکا چلا جائے۔ سرکار و ساج اُسے دیکھ قیمتوں پر خرید لینے کے لئے ہادھیہ ہے، اس چیز نے اُنک غریب بے کار کاریروں میں جان فٹک دی۔ جسے ہمیشہ اپنی ظاہر کے لئے در در گھومنا پڑتا تھا اور آخر میں سستی قیمتوں پر بچانے کے لئے مجبور ہونا پڑتا تھا، ہات ہلک ختم ہوگئی۔ اس سے گرامین دھندوں میں ہونری ہوئی۔

یہ سب چیزیں ہیں جو کسی بھی ساج کے سبکی و دھبی ہونے کی بات بتاتی ہیں۔ یہ سب چیز ہوتے ہوئے بھی جان ہوگ نہیں بنا ہے۔ اُسے ایسی بگنی لہا سفر طہ کرنا ہے۔ اُننا کی ہم کہہ سکتے ہیں کہ وہ آج ٹھیک دشا میں تیزی سے چلا جا رہا ہے۔

یہ سب چیزیں ہیں جو کسی بھی ساج کے سبکی و دھبی ہونے کی بات بتاتی ہیں۔ یہ سب چیز ہوتے ہوئے بھی جان ہوگ نہیں بنا ہے۔ اُسے ایسی بگنی لہا سفر طہ کرنا ہے۔ اُننا کی ہم کہہ سکتے ہیں کہ وہ آج ٹھیک دشا میں تیزی سے چلا جا رہا ہے۔

یہ سب چیزیں ہیں جو کسی بھی ساج کے سبکی و دھبی ہونے کی بات بتاتی ہیں۔ یہ سب چیز ہوتے ہوئے بھی جان ہوگ نہیں بنا ہے۔ اُسے ایسی بگنی لہا سفر طہ کرنا ہے۔ اُننا کی ہم کہہ سکتے ہیں کہ وہ آج ٹھیک دشا میں تیزی سے چلا جا رہا ہے۔

700 PAGES,
32 ILLUSTRATIONS
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE

Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language...the most objective in approach and comprehensive in treatment.
—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known
—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.
—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happening in New China can do no better than to study it.
—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.
—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter... brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.
—Vigil, Delhi.

مہارما بگواندین

مہارما بگواندین

کچھ اُپنیوں میں ایلبرٹ آئنسٹائن شانتی کے ہونے پر جتنی بھی جتنی بھارت کے مہاتما گاندھی جی سے یہ کہہ سکتا کہ وہ کبھی کوئی ایسی بات کہیں نہ کہیں جس سے کوئی آدمی آنت میں بڑ جائے، ویسے ہی آئنسٹائن مہاتما سے ایسی آشا نہیں کی جا سکتی۔ گاندھی جی دنیا کو آنت میں ڈالیں، کیا دنیا کا کوئی بھی آدمی ایسا سوچ سکتا ہے؟ آئنسٹائن کے بارے میں بھی ایسا نہیں سوچا جا سکتا۔ پر، سیدھے نا سیدھے آئنسٹائن کے ساپیکسٹ سیدھانت نے امریکا کو پدم بوم بنانے کے لیے پھرتی کیا۔ لیکن پدم بوم کے بن جانے پر آئنسٹائن نے کوشش کی کہ اسکا استعمال نہ ہو، پر وہ روک نہ پائے۔

ان شانتی کے دیوتا آئنسٹائن کا ساپیکسٹ سیدھانت بہت بڑی چیز ہے۔ اُس پر کتابوں پر کتابیں لکھی جا چکی ہیں۔ اُس سیدھانت کے ٹھیک ٹھیک جانکا، اُنے گئے ہیں۔ پھر بھی گنہگار کے ایک سمیٹوں میں اُنکے سیدھانت کا جو نیچوڑ ہے، وہ ایسا ضرور ہے جو معمولی آدمی کی سمجھ میں آجائے۔ یہی وہ نیچوڑ ہے جسے ایتم بوم کو جنم دیا۔ اسی نے شانتی کے دیوتا ایلبرٹ آئنسٹائن کی شانتی کی سفید چادر پر ایک دھبہ ڈال دیا۔

اس سمیٹوں کا خلاصہ یہ ہے:—

جتنی مائرا ہے یعنی جتنی کوئی چیز ہے، اگر اسکو پرکاش کی چال کے ورگ سے گنا کیا جائے تو جو گزرن پھل ہوگا، اتنی ہی شکتی اُس چیز سے پیدا ہوگی۔ دوسرے شبدوں میں اِسے یوں سمجھئے، ایک گرام مائرا میں نو کھرب ورگ کی شکتی چھپی رہتی ہے۔ یعنی ایک گرام پدارت، جو بجلی پیدا کرے گا وہ تھائی کروڑ کلوات گھنٹوں کے برابر ہوگی۔ کلوات کو صاف صاف سمجھنے کے لیے اتنا کہنا کافی ہے کہ لکھنؤ کا ریڈیو اسٹیشن پچاس کلوات طاقت سے چلتا ہے۔ اسی سے آپ اندازہ لگا سکتے ہیں کہ آئنسٹائن نے دنیا کے لوگوں کے ہاتھ شکتی کے کلمے بڑے خزانے کی کوٹھری کے قلم کی کنبی سونپ دی۔

اُس سمیٹوں کا خلاصہ یہ ہے:—

امریکہ نے اِس کنبی سے تالا کھولا اور جاپان پر ایتم بوم گرا کر اُس لڑائی کا آنت کر دیا جو اُن لڑائیوں میں سب سے بڑی تھی چنکا انہیں میں ذکر آتا ہے۔

امریکا نے اسی کُنْجی سے تالا کھولا اور جاپان پر پدم بوم گرا کر اُس لڑائی کا آنت کر دیا جو اُن لڑائیوں میں سب سے بڑی تھی چنکا انہیں میں ذکر آتا ہے۔

بहुत سے لوگوں نے لڑائی کی Vijay का आनन्द माना होगा, पर अमरीकी आइन्सटाइन का दिल तो धक रह गया होगा.

आइन्सटाइन जैसे आदिमियों को किसी देश का निवासी कहना भला नहीं मालूम होता. वे दुनिया भर को प्यार करते थे और सारी दुनिया उनका आदर करती है. आइन्सटाइन थे तो जर्मनी निवासी, पर न जाने क्यों हिटलर को मालूम हुआ कि वह उनकी आँख का काँटा है. दूसरी लड़ाई छिड़ने पर उनका जर्मनी से देश निकाला हो गया और वह अमरीका पहुँच गये. कुछ वर्षों से वह अमरीका वासी बन गये थे. इसलिये उन्हें अमरीकी कहना पड़ता है.

आइन्सटाइन ने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया कि विज्ञान की सड़क की आखिरी मंजिल वही है जो धर्म की सड़क की. विज्ञान सत्य की खोज में लगता है. यही हाल धर्म का है. गाँधी जी के शब्दों में यदि सत्य परमात्मा है, तब यह कहा जा सकता है कि हर विज्ञानी परमात्मा की खोज में लगा हुआ है.

अपने को हिम्मत के साथ महात्मा कहने वाले बर्नार्डशा का तो यह कहना है कि 'जिन लोगों ने जगत का भेद खोला, आइन्सटाइन उनमें से एक थे' और शा ने ऐसे कुल तीन आदिमी गिनाये हैं—एक पाइथागोरस, दूसरे न्यूटन, तीसरे आइन्सटाइन. (हमारे लिये इनके प्यारे नाम ये हो सकते हैं—बाबा पीथागोरस, महात्मा नवतन, महर्षि अंशतनु.) एशिया आम तौर से और भारत खास तौर से अपने नायकों को भगवान कहने लगता है, अवतार कहने लगता है. अगर कहीं आइन्सटाइन ने हमारे यहाँ जन्म लिया होता तो क्या उनकी गिनती अवतारों में नहीं हुई होती ?

आइन्सटाइन अपने समय के ऐसे प्रकाश थे जो उन आँखों में चकाचौंध डाल देते थे जो उल्टी राह चल रही होती थीं. तभी तो वह जर्मनी से निकाले गये और अमरीका में बंदी रहे, सीधे अर्थों में वह बंदी भले ही न हों. जितनी स्वाधीनता उन्हें मिलनी चाहिये, उतनी तो अमरीका उन्हें दे ही नहीं सकता था, क्योंकि अमरीका के पास उतनी स्वाधीनता है ही नहीं. पर दुख तो यह है कि उनको उतनी भी स्वाधीनता प्राप्त नहीं थी जितनी कि एक मामूली अमरीकी को है या जितनी हमें-तुम्हें भारत में हासिल है.

अमरीका में ऊँचे दर्जे का विज्ञानी होना और पराधीनता की कोठरी का बंदी होना एकार्थ वाची है. हो सकता है अमरीका वाले अपने देश के विज्ञानियों को सबसे बड़ा सम्मान दें और उन्हें आदिमियों में हीरा मानते हों, पर इससे क्या ? हीरा बनना कौन अच्छी बात है ? हमारे देश के संत कबीर का कहना है :—

हीरा पाय गांठ गठयायो,
बार-बार वाय खोले क्यों ?

बहुत से लोगों ने लڑائی کی وجہ سے اپنے دل کا درد محسوس کیا ہوگا۔
امریکی آئنسٹائن کا دل تو دھک رہا ہوگا۔

آئنسٹائن جیسے آدمیوں کو کسی دیس کا نوآسی کہنا یہ نہیں معلوم ہوتا۔ وہ دنیا بھر کو پیار کرتے تھے اور ساری دنیا انکا آدم کرتی ہے۔ آئنسٹائن تھے تو جرمنی نوآسی پر نہ جانے کیوں ہنر کو معلوم ہوا کہ وہ انکی آنکھ کا کاٹا ہے۔ دوسری لڑائی چھڑنے پر انکا جرمنی سے دیس نکالا ہوگیا اور وہ امریکہ پہونچ گئے۔ کچھ ورشوں سے وہ امریکہ واسی بن گئے تھے۔ اِس لئے انہیں امریکی کہنا پڑتا ہے۔

آئنسٹائن نے اپنے جیون سے یہ سدھ کر دیا کہ دگیان کی سڑک کی آخری منزل وہی ہے جو دھرم کی سڑک کی۔ دگیان ستیہ کی کھوج میں لگتا ہے۔ یہی حال دھرم کا ہے۔ گاندھی جی کے شبدوں میں ہدی ستیہ پرمانما ہے، تب یہ کہا جا سکتا ہے کہ ہر دگیانی پرمانما کی کھوج میں لگا ہوا ہے۔

اپنے کو ہمت کے ساتھ مہاتما کہنے والے ہرنرت شا کا تو یہ کہنا ہے کہ 'جین لوگوں نے جگت کا بھید کھولا' آئنسٹائن اُن میں سے ایک تھے؛ اور شالے ایسے کل تھیں آدمی گنائے ہیں—ایک پائوٹا گورس، دوسرے نیوٹن، تیسرے آئنسٹائن۔ (ہمارے لئے انکے پیارے نام یہ ہو سکتے ہیں—بابا پیٹھا گورس، مہاتما نیوٹن، مہرشی انشتنو۔) ایشیا عام طور سے اور بھارت خاص طور سے اپنے نایکوں کو بھگوان کہتے لگتا ہے، اوتار کہتے لگتا ہے۔ اگر کہیں آئنسٹائن نے ہمارے یہاں جنم لیا ہوتا تو کیا انکی گنتی اوتاروں میں نہیں ہوئی ہوتی ؟

آئنسٹائن اپنے سمئے کے ایسے پرکاش تھے جو اُن آنکھوں میں چکاچوندھ ڈال دیتے تھے جو اُلٹی راہ چل رہی ہوتی تھیں۔ تبھی تو وہ جرمنی سے نکالے گئے اور امریکہ میں بندی رہے، سیدھے اُنہیں وہاں وہ بندی بھلے ہی تھیں۔ جتنی سوادھینتا اُنہیں ملنی چاہئے، اُننی نو امریکہ اُنہیں دے ہی نہیں سکتا تھا، کیونکہ امریکہ کے پاس اُننی سوادھینتا ہی نہیں۔ پر دکھ تو یہ ہے کہ اُنکو اتنی بھی سوادھینتا پراپت نہیں تھی جتنی کہ ایک معمولی امریکی کو ہے یا جتنی ہمیں تھیں بھارت میں حاصل ہے۔

امریکہ میں اونچے درجے کا دگیانی ہونا اور پرادھینتا کی کوٹھری کا بندی ہونا ایکارتھ واچی ہے۔ ہو سکتا ہے امریکہ والے اپنے دیس کے دگیانیوں کو سب سے بڑا سمجھتے ہوں اور انہیں آدمیوں میں ہیرو مانتے ہوں، پر اِس سے کیا ؟ ہیرو بننا کون اچھی بات ہے ؟ ہمارے دیس کے سنت کبیر کا کہنا ہے—

ہیرو پائے گائے گھبایو،
بار بار رائے کولے کیوں ؟

تھک اسی طرح امریکہ والے اپنے دیکھائیوں کو قائم رکھتے رہتے ہیں۔

21 مئی کی واشنگٹن کی خبر ہے کہ ایڈمرٹ انسٹائن ایک ہل یعنی وصیت کر کے چھوڑ گئے ہیں۔ اُس دن کا ایکریڈیوٹر یعنی عامل انہوں نے مسٹر اوٹونیتھن کو بتایا ہے۔ اوٹونیتھن نیویارک یونیورسٹی میں پروفیسر ہیں۔ دن کو پورا کرنے کے لئے اوٹونیتھن کو ایک باز یورپ جانا ضروری ہے۔ اوٹونیتھن نے یہ سب باتوں لکھ کر امریکہ کی سرکار کو یورپ کے پاسپورٹ کے لئے لکھا۔ امریکہ کی اسٹیٹ ڈیپارٹمنٹ نے پاسپورٹ دینے سے اِس بنا پر انکار کر دیا کہ اوٹونیتھن کسی زمانے میں جرمن کمیونسٹ پارٹی کے ممبر رہ چکے ہیں اور اب بھی وہ کمیونسٹ وچاروں سے سہاٹی ہوئی رکھتے ہیں۔

پروفیسر اوڈونیتھن نے کہا ہے کہ اس انکار کے کارن وہ سرگیتھ
 آئسٹائن کی وصیت کو پورا نہوں کر سکتے۔ (21 مئی کے فری
 پریس جرنل سے)

امریکہ خاص طور سے 'دنیا کے اور دیس عام طور سے اپنے اونچے درجے کے وگھانیوں کے ساتھ یا گھانیوں کے ساتھ کیسا ہرناؤ کرتے ہیں، اسے ہمارے پائیک اچھی طرح سمجھ لیں۔ یہ آزاد کہلانے والے ملک کتنے آزاد ہیں اور آزادی کے کتنے گہرے پانی میں ہیں، اس سے پتہ لگ سکتا ہے۔

آئسٹمائن کی وصیت کے ساتھ جب یہ ویوہار ہو رہا ہے تو آئسٹمائن کے ساتھ امریکہ کا کیا ویوہار رہا ہوگا، اِس سے انوسمان کہا جا سکتا ہے ۔

گھرنا اور ہنسنا کی نیو پر کھڑا شکتی کا محل ہماری رائے میں سدا کاہتا ہوا ملیگا۔ اسکے وپریت پر ہم یا اہنسا کی نیو پر کھڑا شکتی کا محل استہر اور اٹل ملیگا، پروپکار میں لگا ملیگا، جھکو شرن دیتا ملیگا۔ ہنسک شہر پے حد قریبک ہونا ہے؛ پتہ کی کھڑ کھڑاٹ سے بھاگتا ہے۔ جیسے وہ شکار کی ناک میں رہتا ہے، ویسے ہی وہ یہ بھی سمجھتا ہے کہ کوئی اسکی ناک میں ہے۔ اِسلمے وہ قزنا ہے اور سترک رہتا ہے۔ اسکے وپریت اہنسک پرانی کم قریبک ہوتے ہیں۔ جتنے اشوں میں وہ دوسروں کو ستاتے ہیں، اُنلے انشوں میں وہ بھی قریبک ملینگے ہمنے حال ہی میں کسی پتر میں پڑتا ہے کہ ایک آدمی کا یہ انوبہو ہے کہ کیسا ہی جنگلی جانور کیوں نہ ہو، اگر کوئی اُسکے پاس نذر ہو کر پریم بھاڑ سے جانیگا تو وہ جانور اُسے کبھی نہیں ستانے گا، اٹنا ہار کرنے لگیگا۔ امریکہ، جو اٹنا قزنا ہوا ہے (اگر ایسا نہیں ہوتا تو کیا اپنے دکھانوں کے ساتھ ایسا دبوہار کرتا ؟) تبھی تو اُسے اپنے دیش میں قز

دکھائی دے رہا ہے اور دوسرے دیکھیں سے تڑکی فوجیں آتی
دکھائی دے رہی ہیں۔

مہرشی انشکو ! آپ دہلیہ ہیں ! آپ امریکہ میں تھے؟
 پر اپنی مرضی سے نہیں۔ شہر کا رش چلتا تو کیا وہ پنجرے
 میں رہتا ؟ آپ امریکہ میں بندی تھے؟ اپنی مرضی سے نہیں۔
 پرکاش کا بل چلتا تو کیا وہ چمکی کے اندر بند رہتا اور رنگ
 ہرنکی چمکیوں کا شکار بنتا ؟ آپ جن انشوں میں آزاد تھے؟
 ان انشوں میں دنیا کے لئے آپ آدرش ہیں۔ اسرائیل نے
 آپکے سامنے پریسٹیجیاتی بھیڑ کی۔ آپ نے اسے چھو کر ٹوٹا دیا اور
 کہہ دیا کہ ”میں پریسٹیجیاتی کے لئے پیدا نہیں ہوا ہوں، میں
 جس کام کے لئے پیدا ہوا ہوں، اُس میں خوش ہوں۔“ آپ
 قیام کے لئے آزاد تھے۔ قیام آپکا سوہاؤ بن گیا تھا۔ قیام
 کرنے کے لئے آپکو تنک بھی زور نہیں لگانا پڑتا تھا۔ پارسل پر
 لپٹے ہوئے بکس کو اُتارنے میں کسی کو پریاس بھی کیوں کرنا
 پڑے ؟ وہ گوند سے چپکا ہوا ہوتا ہی نہیں۔ یہی حال آپکا تھا۔
 آپ میں ممتا مودہ نام کے لٹھے تھے۔ جو کچھ آپکے پاس تھا یا
 دیوہار کے ماتے آپکا سمجھا جا سکتا تھا، وہ سب یریکرہ تو تھا، پر
 اُسکے پیچھے نہ مودہ تھا نہ ممتا تھی۔ تو پھر اُسکے الگ ہوتے ہوئے
 آپکو دیکھ سکھ بھی کیا ہوتا ؟

دبہہ چھوڑتے سمئے ہم آپکے پاس نہیں تھے، پر وشواس کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ آپلے دبہہ ایسے ہی چھڑی ہوگی جیسے کبیر نے ”داس کبیر جتن سے اڑھی“ جیوں کی تقوں دھر دینی چدربا۔ اِس دنیا کو چھوڑتے سمئے اگر کوئی بھاریہ آپ کے پاس ہوتا تو وہ اِس پہلو پر نظر ڈالنا، بھلا امریکی کیوں اِس پہلو کو دیکھنے لگے ؟

مہرشی انشنو ! آپ اس دنیا میں اسے اُنک پھر کر گئے، جو جہاں ایک اور بڑے بڑے دُرانوں کے پڑے ہیں، وہاں دوسری اور ایسے ہی ہیں، جو ہر چلتے پھرتے نئی سمجھ میں آسکتے ہیں۔ آپ نے یہ کہہ کر کتنی بڑی بات کہہ دی کہ شکتی اور پدارتھ ایک ہی چیز ہے، یعنی میٹر اور انرجی ایک ہی چیز کے دو پہلو ہیں، ایک دروہ کی دو بریائے ہیں۔ اتنی بڑی ہمت کون کر سکتا تھا ؟ اور یہ سب سمجھایا آپ کو آپ کی پدنی نگاہ نے۔ اب تک لوگ یہی سمجھتے ہوئے تھے کہ سیر پھر پانی سیر پھر بھاپ بنتا ہے، یہ آپ ہی کو پتہ چلا کہ نہیں، کچھ کم سیر بھاپ بنتا ہے۔ وہ کبھی کتنی ہی کم کیوں نہ ہو، وہی شکتی ہے۔ تبھی تو آپ کہہ سکے کہ اتنا پانی بھاپ بنا کر کیوں نشست کرتے ہو ؟ جتنی ملاقات بس بھاپ میں ہے، اتنی طاقت تو ایک ہوند پانی کے لاکھوں حصہ میں موجود ہے۔

یہ سب وچار کرائی نہیں تو کیا ہے ؟ اس کے لئے ہم آپکو جتنا بڑا سمجھیں، اتنا توہرا ۔

آکاش اور کال، ایک دوسری کی دو پرہیز ہیں، ایک سے دوسرے کے دو پہلو ہیں، دونوں ایک ہیں۔ اس بات کو آپ نے ایسے کہہ ڈالا، جیسے کوئی کہہ بیٹھا ہے کہ ایک اور ایک دو ہوتے ہیں۔ پر یہ کتنی بڑی بات ہے ! بڑے بڑے وکیٹوں کے گلے اترنے میں اتنی تھی ! پر آج ہے کہ اُسے ہمارا سمجھ لیتا ہے ۔ اس کے بارے میں آپکا کہنا ہے کہ کال کے بنا آکاش کی بات ہی نہیں کی جا سکتی ۔ اکیلے کال کو کہیں جگہ ہی نہیں ہے ۔ ”اُنہ گھنٹے میں“ کہہ کر ہمیں یہ کہنا ہی پڑیگا ”اُننی دور گئے۔“ کال کی بات کہی کہ آکاش آیا ۔ اب تو دوری بھی گھنٹوں میں نہیں ناپی جانے لگی !

یہ وچار کرائی نہیں تو کیا ہے ؟ آپ کے یہ افسانہ کبھی بھلائے جاسکتے ہیں ؟

18 اپریل سن 1955 کو آپ ہمیں چھوڑ کر چل گئے ۔ اب آپ ہم میں نہیں ہیں ۔ میں وچاروں سے آپ ساری دنیا میں موجود ہیں ۔ اب ہم میں سے کچھ آپکے گیت گاسکتے ہیں ۔ آپکی یادگار گیتیں گاسکتے ہیں ۔ اُن گیت آپکے جیون کا انوکھ کر سکتے ہیں، اُس سے بھی کم اُس راہ لگ سکتے ہیں، جس راہ آپ چلے تھے ۔ دے سکتے ہیں اور کچھ ۔ قدم بڑھ سکتے ہیں اور دنیا کو اُس اور لے جاسکتے ہیں ۔

آپ کے لئے ہم کیا پراہتہنا کریں، یہ ہم کچھ نہیں جانتے ۔ اس بارے میں آپ ہمیں کچھ نہیں بتا گئے ۔ ہاں، اپنی چدریا کا ایک کونا یعنی اپنا سر آپ ڈاکڑوں کے سپرد کر گئے ہیں، اُسے ادھیں کر کے، دیکھیں ڈاکڑ لوگ کیا کہتے ہیں ؟

امن یا جنگ

”اگر دنیا کی جنیتا امن کاایم رکھنے اور آخر تک امن کی رکھا کرنے کا کام خود اپنے ہاتھ میں لے لے تو امن کاایم رہےگا اور مچھوٹی پکڑےگا۔ لیکن اگر جنگ کی باتیں فیلانے والے دنیا کی امن جنیتا کو مڑی باتوں کے جال میں فسانے، وندھ دھوکا دینے اور ایک ایک بڑی جنگ میں گھسوت لائے میں کامیاب ہو گئے تو ممکن ہے جنگ نہ ٹل سکے۔“

—سٹالین

امن یا جنگ

”اگر دنیا کی جنیتا امن قائم رکھنے اور آخر تک امن کی رکھا کرنے کا کام خود اپنے ہاتھ میں لے لے تو امن قائم رہےگا اور مضبوطی پکڑےگا۔ لیکن اگر جنگ کی باتیں پھیلانے والے دنیا کی امن جنیتا کو جھوٹی باتوں کے جال میں پھنسانے، انہیں دھوکا دینے اور ایک نئی بڑی جنگ میں گھسوت لائے میں کامیاب ہو گئے تو ممکن ہے جنگ نہ ٹل سکے۔“

—اسٹالین

मेरी मां बोली का रूप

میری ماں بولی کا روپ

श्री मदन गोपाल

شری مدن گوپال

मेरी मां मुजफ्फरनगर के जिले की थी. उसकी बोली मुजफ्फरनगर के जिले में ही नहीं आस पास के कुछ जिलों में लगभग सब लोग बोलते हैं. कुछ तिजारी, कुछ तबारीखी और बहुत कुछ जुगुराई फारनों से यह बोली धीरे धीरे, चुपके चुपके देस में ऐसी फैली कि सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में समझी जाने लगी और उस पुल की वजह से अब यह मुमकिन हो गया कि एक आम अनपढ़ आदमी इस देस के किसी कोने में जाकर गुजारा कर सकता है. इसलिये गो उसे देस की आम बोली हम कह सकते हैं, उसे कौमी बोली या राष्ट्रभाषा कहना ठीक नहीं. कौमी बोली तो बह ही हो सकती है जो सारे देस के कम से कम सत्तर फीसदी अपने घरों में बोलते हों. यहां उल्टा हिसाब है. यहां सत्तर से भी ज्यादा फीसदी अपने कुनबों में अपनी अपनी और बोली बोलते हैं. इसलिये अगरचे यह देस की आप बोली है, उसे देस बोली कहना ठीक नहीं.

उस बोली के नाम के बारे में कुछ मतभेद है. चूंकि मैं यहां नाम के झगड़े में नहीं पड़ना चाहता इसलिये इस लेख में उसे मेरी मां-बोली या मेरी बोली कहूंगा. और बोलियों की तरह मेरी बोली भी गिन्ती की कुछ खास आवाजों के जोड़ से बनी हुई है, इसलिये उसका रूप परखने के लिये उसकी खास आवाजों और उनके जोड़-तोड़ का इल्म जरूरी है. मेरी बोली में कहने को तो दस लेकिन असल में कुल छै स्वर हैं. कहने को तो अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ और ओ, औ दस स्वर हैं लेकिन सिवाय छोटे और बड़े अ के जोड़े के बाक़ी के चारों जोड़े आपस में भेदरू नहीं हैं. भेदरू उन आवाजों को कहते हैं जिनके आपस में बदल जाने से सैकड़ों लफ़्ज़ों के माने कुछ के कुछ हो जाते हैं, मसलन कल काल, खल खाल ऐसे बहुत से जोड़े लफ़्ज़ों के मेरी बोली में हैं जिनके माने सिर्फ़ छोटे और बड़े अ के हेरफेर से बदल जाते हैं. बाक़ी चार जोड़ों में यह भेद बहुत कम पाया जाता है. मैं जानता हूँ कि कुछ जोड़े मेरी बोली में ऐसे आ गये हैं जिनके छोटी बड़ी इ, उ वगैरा के हेरफेर से माने बदल जाते हैं, लेकिन यह जोड़े बहुत कम ही नहीं उनमें से अकसर ऐसे हैं जो हम पढ़े हुए लोगों की राफ़लत से या शोखी से हमारे पढ़े हुआ की बोली में आ गये हैं, लेकिन जो बहुत दिन मेरी बोली में टिक नहीं सकते. वजह

मेरी मां मज़फ़रनगर के ضلع की تھی۔ اسکی بولی مظفرنگر کے ضلع میں ہی نہیں اُس پاس کے کچھ ضلعوں میں لگ بگ سب لوگ بولتے ہیں۔ کچھ تجارتی، کچھ تواریتی اور بہت کچھ جغرافیائی کارنوں سے یہ بولی دھیرے دھیرے چپکے چپکے بس میں ایسی پھیلی کہ سارے ہندستان اور پاکستان میں سمجھی جانے لگی اور اُس پُل کی وجہ سے اب یہ ممکن ہو گیا کہ ایک عام انپڑھ آدمی اُس دیس کے کسی کوٹے میں جا کر اُذارہ کر سکتا ہے۔ اسلئے گو اسے دیس کی عام بولی ہم کہہ سکتے ہیں، اسے قومی بولی یا راشٹر بھاشا کہنا ٹھیک نہیں۔ وہی بولی تو وہی ہو سکتی ہے جو سارے دیس کے کم سے کم ستر فیصدی اپنے گھروں میں بولتے ہوں۔ یہاں اُلٹا حساب ہے۔ یہاں ستر سے بھی زیادہ فیصدی اپنے گھروں میں اپنی اپنی اور بولی بولتے ہیں۔ اسلئے اگرچہ یہ دیس کی عام بولی ہے، سے دیس بولی کہنا ٹھیک نہیں۔

اُس بولی کے نام کے بارے میں کچھ متبہد ہے۔ چونکہ میں یہاں نام کے جھگڑے میں نہیں پڑنا چاہتا اسلئے اس لکھ میں اسے میری ماں بولی یا میری بولی کہوں گا۔ اور بولیوں کی طرح میری بولی بھی گنتی کی کچھ خاص آوازوں کے جوڑ سے بنی ہوئی ہے، اسلئے اسکا روپ پرکھنے کے لئے اسکی خاص آوازوں اور انکے جوڑ توڑ کا علم ضروری ہے۔ میری بولی میں کہنے کو تو دس لیکن اصل میں کل چھ سوزیں ہیں۔ کہنے کو تو ا، آ، ای، اُ، او، اے، ائے اور او، او دس سوزیں ہیں لیکن سوائے چھوٹے اور بڑے ا کے جوڑے کے باقی کے چاروں جوڑے آپس میں بھیدر نہیں ہیں۔ بھیدر ان آوازوں کو کہتے ہیں جنکے آپس میں بدل جانے سے سینکڑوں لفظوں کے معنے کچھ کے کچھ ہو جاتے ہیں، مثلاً کل کال، کل کھال ایسے بہت سے جوڑے لفظوں کے میری بولی میں ہیں جنکے معنے صرف چھوٹے اور بڑے ا کے ہیر پھیر سے بدلتے ہیں۔ بانی چار جوڑوں میں یہ بھید بہت کم پایا جاتا ہے۔ میں جانتا ہوں کہ کچھ جوڑے میری بولی میں ایسے آگئے ہیں جنکے چھوٹی پڑی ای، او وغیرہ کے ہیر پھیر سے معنی بدلتے ہیں لیکن یہ جوڑے بہت کم ہی نہیں انہیں سے اثر ایسے ہیں جو ہم پڑھے ہوئے لوگوں کی غفلت سے یا شیخی سے ہمارے پڑھے ہوئے کی بولی میں آگئے ہیں، لیکن جو بہت دن میری بولی میں ٹک نہیں سکتے۔ وجہ

ساک ہے۔ مہری بولی اتنی سہل سہل گئی ہے کہ اسکی آوازیں کم ہوتے ہوئے گنتی کی رہ گئی ہیں۔ سہل سہل ہے!

یہ ایک عجیب لیکن اگر ذرا سوچو تو ایک قدرتی قانون یا نظم علم بولی کا ہے کہ جتنی کسی دیس کی سہل پرائی ہے اتنی ہی اس دیس کی عام بولی کی آوازیں گنتی میں کم اور اس کے لفظ اور اسکی گرامر گھس گھس کر چھوٹے ہو جاتے ہیں۔ اسوقت دنیا میں سب سے پرائی سہل چین کی ہے اور اسلئے جتنی بولی لسی نکہری، دنیا کی کوئی اور بولی نہیں نکہری۔ گرامر تو اس میں کم کو بھی نہیں۔ لفظ ایک کڑی کے چھوٹے ہو اسکی آوازیں گنتی کی۔ شروع شروع میں جبکہ علم بولی پچھم میں ابھی پیدا ہی ہوا تھا، پچھم و دونوں کی یہ رائے تھی کہ چینی ایک بگڑی ہوئی بولی ہے۔ لیکن جب علم بولی پلا پھلا اور ہزاروں بولیوں کے آگے، بڑھنے، پھلنے کی خوب جانچ پڑتال کی گئی تو انہوں نے چینی کو 'لؤل' فارسی کو دوسرے اور مہری بولی کو تیسرے نمبر پر ٹھہرایا۔ سو چو تو سہی، پچھم و دونوں مہری بولی کو خوبصورتی میں دنیا بھر کی ہزاروں بولیوں میں سے تیسرا درجہ دیتے ہیں۔ سب سے بڑی تعریف جو انہوں نے کی ہے وہ یہ ہے کہ اسکی گرامر ایک پوسٹکارڈ پر لکھی جا سکتی ہے اور یہ کہ اس میں دنیا بھر کی سامانجک، دھارمک اور ادبی کتابیں—قرآن، انجیل، ناک اور کہانیاں بلا کسی اور زبان کی مدد کے آسانی سے پڑھنی ادا ہو سکتی ہیں۔ ایسی بولی پر جتنا آدمی گہمزد کرے تھوڑا ہے۔ لیکن چونکہ ہمارے اسکولوں میں انکا پڑھایا جاتا ہے، ہمارے انجان پنڈت اور لہذا اسے بگاڑنے پر تلم ہوتے ہیں۔ کہیں نہ ہوں، انکی انکھوں پر سنسکرت اور انگریزی جیسی بھدی زبانوں کا چشمہ چڑھا ہوا ہے۔ یہاں سنسکرت کو اسبھیہ کہنا تو الگ، یہ سچ بھی کہنا کہ سنسکرت نہ کبھی بولی ہوئی اور نہ ہو سکتی ہے ہزاروں کے چہتے میں ہاتھ ڈالنا ہے۔ سنسکرت کی کپیا سے ہمارے پنڈت بولی کا ارنہ بھی نہیں جانتے۔ بولی صرف اس زبان کو کہہ سکتے ہیں جسکے ذریعہ دنیا کے کسی حصہ کے لوگ نہیں تو اسی فیصدی آدمی اپنا کام دھندا چلاتے ہوں۔ ورنہ وہ زبان چاہے اے پنڈت آپس میں بولتے ہوں یا پڑیس، اسکی حیثیت چور بولی سے زیادہ نہیں۔ ایسی بولی کو انگریزی میں سلینگ (Slang) کہتے ہیں چاہے اس میں لائق کتابیں لکھی گئی ہوں۔ یہی وجہ ہے کہ اگرچہ ہماری یونیورسٹیوں میں بہت سی بولیں سکھائی جاتی ہیں کسی میں علم بولی نہیں سکھایا جاتا، اور نہ جب تک سنسکرت کا بھوت ہمارے سرو سروار ہے یہ مضمون کبھی سکھایا جائیگا، کیونکہ اسکے سکھانے سے سنسکرت کی پول کھل جاتی ہے۔

صاف ہے۔ مہری بولی اتنی سہل سہل گئی ہے کہ اسکی آوازیں کم ہوتے ہوئے گنتی کی رہ گئی ہیں۔ سہل سہل ہے!

یہ ایک عجیب لیکن اگر ذرا سوچو تو ایک قدرتی قانون یا نظم علم بولی کا ہے کہ جتنی کسی دیس کی سہل پرائی ہے اتنی ہی اس دیس کی عام بولی کی آوازیں گنتی میں کم اور اس کے لفظ اور اسکی گرامر گھس گھس کر چھوٹے ہو جاتے ہیں۔ اسوقت دنیا میں سب سے پرائی سہل چین کی ہے اور اسلئے جتنی بولی لسی نکہری، دنیا کی کوئی اور بولی نہیں نکہری۔ گرامر تو اس میں کم کو بھی نہیں۔ لفظ ایک کڑی کے چھوٹے ہو اسکی آوازیں گنتی کی۔ شروع شروع میں جبکہ علم بولی پچھم میں ابھی پیدا ہی ہوا تھا، پچھم و دونوں کی یہ رائے تھی کہ چینی ایک بگڑی ہوئی بولی ہے۔ لیکن جب علم بولی پلا پھلا اور ہزاروں بولیوں کے آگے، بڑھنے، پھلنے کی خوب جانچ پڑتال کی گئی تو انہوں نے چینی کو 'لؤل' فارسی کو دوسرے اور مہری بولی کو تیسرے نمبر پر ٹھہرایا۔ سو چو تو سہی، پچھم و دونوں مہری بولی کو خوبصورتی میں دنیا بھر کی ہزاروں بولیوں میں سے تیسرا درجہ دیتے ہیں۔ سب سے بڑی تعریف جو انہوں نے کی ہے وہ یہ ہے کہ اسکی گرامر ایک پوسٹکارڈ پر لکھی جا سکتی ہے اور یہ کہ اس میں دنیا بھر کی سامانجک، دھارمک اور ادبی کتابیں—قرآن، انجیل، ناک اور کہانیاں بلا کسی اور زبان کی مدد کے آسانی سے پڑھنی ادا ہو سکتی ہیں۔ ایسی بولی پر جتنا آدمی گہمزد کرے تھوڑا ہے۔ لیکن چونکہ ہمارے اسکولوں میں انکا پڑھایا جاتا ہے، ہمارے انجان پنڈت اور لہذا اسے بگاڑنے پر تلم ہوتے ہیں۔ کہیں نہ ہوں، انکی انکھوں پر سنسکرت اور انگریزی جیسی بھدی زبانوں کا چشمہ چڑھا ہوا ہے۔ یہاں سنسکرت کو اسبھیہ کہنا تو الگ، یہ سچ بھی کہنا کہ سنسکرت نہ کبھی بولی ہوئی اور نہ ہو سکتی ہے ہزاروں کے چہتے میں ہاتھ ڈالنا ہے۔ سنسکرت کی کپیا سے ہمارے پنڈت بولی کا ارنہ بھی نہیں جانتے۔ بولی صرف اس زبان کو کہہ سکتے ہیں جسکے ذریعہ دنیا کے کسی حصہ کے لوگ نہیں تو اسی فیصدی آدمی اپنا کام دھندا چلاتے ہوں۔ ورنہ وہ زبان چاہے اے پنڈت آپس میں بولتے ہوں یا پڑیس، اسکی حیثیت چور بولی سے زیادہ نہیں۔ ایسی بولی کو انگریزی میں سلینگ (Slang) کہتے ہیں چاہے اس میں لائق کتابیں لکھی گئی ہوں۔ یہی وجہ ہے کہ اگرچہ ہماری یونیورسٹیوں میں بہت سی بولیں سکھائی جاتی ہیں کسی میں علم بولی نہیں سکھایا جاتا، اور نہ جب تک سنسکرت کا بھوت ہمارے سرو سروار ہے یہ مضمون کبھی سکھایا جائیگا، کیونکہ اسکے سکھانے سے سنسکرت کی پول کھل جاتی ہے۔

मैं पहले जिस आशय हैं कि आवाजों का आदिस्ता आदिस्ता कम होना लक्ष्यों और ग्रामर का छोटा होना हर सभ्य देस की बोली का कुदरती स्वभाव है, बोली बनती है सिर्फ़ मतलब अदा करने के लिये, अगर किसी वजह से बोली वह अपना फ़र्ज अच्छी तरह से अदा न कर सके तो हर सभ्य समाज की कोशिश होती है कि वह उस वजह को दूर करे, मसलान जहां दो आवाजें कुछ आपस में मिलती जुलती हों तो यह मुमकिन ही नहीं, अगलब है कि अगर जरा भी नुक्स जवान (इलक़) या कान में हो जाये तो उस आवाजों में तमीज़ करनी मुश्किल हो जाये, इसलिये हर सभ्यकदर की यही कोशिश होती है कि वह ऐसे लक्ष्य न इस्तेमाल करे जिनकी आवाजों में तमीज़ ठीक न होने की वजह से मतलब ख़न्त होने का डर हो, मसलान फ और फ़, और क और ज़ आपस में मिलती जुलती आवाजें हैं इसलिये किसी सभ्य बोली में दोनों नहीं होतीं, जिस बोली में फ है वहां फ नहीं रहती और जहां क है वहां ज़ नहीं रहती, इन्सान ही नहीं हर जीव फ़िज़ूल की मेहनत और तकलीफ़ से जी चुराता है, हमारे व्याकरणियों ने सुख आवरण की चाहे कितनी निन्दा की हो ईश्वर की ऐसी रचना है कि आदमी कष्ट से बचता है, सच पूछो तो आदमी की सारी सभ्यता की जड़ है उसकी यह रुचि, उसे बुरा कहना बेबक़री है.

मेरी बोली में बाप को बाप कहते हैं न कि पित्र, पिदर, फादर. लड़की को बेटी कहते हैं न कि दोहत्तर, दुस्तर, डाटर. मां को मां कहते हैं न कि मात्र, मादर, मदर. ऐसे निजी रिश्तों के नाम से जाहिर है कि आर्यभाषा का संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी पर ज्यादा असर पड़ा है, मेरी बोली पर कम. मेरी बोली ने बहुत सी बोलियों के लफ्ज लिये, आर्य भाषा के भी लिये, लेकिन उसकी जमीन रही हमेशा देसी बोली की यानी उस देसी बोली की जो आर्यों के यहां आने से पहले बोली जाती थी. अगरचे जमीन संस्कृत की भी देसी बोली की है लेकिन चूंकि उसमें कुछ आर्य भाषा के ज्यादा लफ्ज लिये गये और खास कर इस वजह से कि देसी बोली के भी जो लफ्ज उसमें लिये गये उन्हें संस्कृत बनानेवालों ने बिगाड़ कर आर्य शकल दी. इसलिये हमारे देस में यह गलत ख्याल आम फैला हुआ है कि संस्कृत एक शुद्ध आर्य भाषा है. जमीन दोनों की द्रावड़ी होने की वजह से संस्कृत के बहुत लफ्ज मेरी बोली के लफ्जों जैसे हैं, इसलिये बहुत लोग गलती से मेरी बोली को एक आर्य भाषा कहते हैं. असल में मेरी बोली द्रावड़ी है. कहने को मद्रास की बोलियों का द्रावड़ी कहा जाता है, लेकिन उनमें से कोई भी इतनी द्रावड़ी नहीं जितनी मेरी बोली. लिपि बनने से पहले आर्य भाषा में क्या आवाजें शामिल थीं बल्कि कौन कौन सी उसमें शामिल न थीं कहना मुश्किल

میں پہلے ہم آیا ہوں کہ آوازوں کا آہستہ آہستہ کم ہونا
لفظوں اور گرامر کا چھوٹا ہونا ہر سبب سے دیس کی بولی کا
قدرتی سہاؤ ہے ۔ بولی بنتی ہے صرف مطلب ادا کرنے کے لئے ۔
اگر کسی وجہ سے بولی یہ اپنا فرض اچھی طرح سے ادا نہ کر
سکے تو ہر سبب سے سماج کی کوشش ہوتی ہے کہ وہ اس وجہ کو دور
کرے ۔ مثلاً جہاں دو آوازیں سمجھ آپس میں ملتی جلتی ہوں تو
یہ ممکن ہی نہیں اُٹھتا ہے کہ اگر ذرا ہی نقص زبان (حلق)
یا گلے میں ہو جائے تو ان آوازوں میں تمیز کرنی مشکل
ہو جائے ۔ اسلئے ہر سمجھدار کی یہی کوشش ہوتی ہے کہ وہ ایسے
لفظ نہ استعمال کرے جنکی آوازوں میں تمیز ٹھیک نہ ہونے کی
وجہ سے مطلب خبطا ہونے کا قہر ہو ۔ مثلاً پ اور ف اور چ اور ز
آپس میں ملی جلتی آوازیں ہیں اسلئے کسی سبب سے بولی میں
دونوں نہیں ہوتیں ۔ جس بولی میں پ ہے وہاں ف نہیں
رہتی اور جہاں چ ہے وہاں ز نہیں رہتی ۔ انسان ہی نہیں
ہر جانور فنی محنت اور تکلیف سے جی چراتا ہے ۔ ہمارے
ویا کرتے ہیں نے سب آچارن کی چائے کتنی نندا کی ہو ایشور کی
ایسی رچنا ہے کہ آدمی کشت سے بچتا ہے ۔ سچ پوچھو تو
آدمی کی ساری سہیبتا کی جڑ اسکی یہ رچی ۔ اسے برا کہنا
بیوقوفی ہے ۔

میری بولی میں باپ کو باپ کہتے ہیں نہ کہ پتر، پندر، فادر۔ لڑکی کو بیٹی کہتے ہیں نہ کہ دوہتر، دختر، دائر۔ مان کو ماں کہتے ہیں نہ کہ ماتر، مادر، مدر۔ ایسے نجی رشتوں کے نام سے ظاہر ہے کہ آریہ بھاشا کا سنسکرت، فارسی اور انگریزی پر زیادہ اثر پڑا ہے، میری بولی پر کم میری بولی نے بہت سی بولوں کے لفظ لئے، آریہ بھاشا کے بھی لئے، لیکن اسکی زمین دھی ہمیشہ دیسی بولی کی یعنی اس دیسی بولی کی جو آریوں کے یہاں آنے سے پہلے بولی جاتی تھی۔ اگرچہ زمین سنسکرت کی بھی دیسی بولی کی ہے لیکن چونکہ اسمیں کچھ آریہ بھاشا کے زیادہ لفظ لئے گئے اور خاص کر اسمجہ سے کہ دیسی بولی کے بھی جو لفظ اسمیں لئے گئے انہیں سنسکرت بنانے والوں نے بگاڑ کر آریہ شکل دی۔ اسلئے ہمارے دیس میں یہ غلط خیال عام پھلا ہوا ہے کہ سنسکرت ایک شدہ آریہ بھاشا ہے۔ زمین دونوں کی دراڑی ہونے کی وجہ سے سنسکرت کے بہت لفظ میری بولی کے لفظوں جیسے ہیں، اسلئے بہت لوگ غلطی سے میری بولی کو ایک آریہ بھاشا کہتے ہیں۔ اصل میں میری بولی دراڑی ہے۔ کہنے کو مدر اس کی بولوں کو دراڑی کہا جاتا ہے، لیکن انہیں سے کوئی بھی اتنی دراڑی نہیں جتنی میری بولی۔ لہی بننے سے پہلے آریہ بھاشا میں کیا آوازیں شامل تھیں بلکہ کون کون سی اسمیں شامل تھیں کہنا مشکل

व्यंजन भी मेरी बोली में गिन्ती के हैं. क, ख, ग, घ,

وہیچن بھی میڈری بولی میں گنتی کے ہیں۔ ک، کم، گ، کم،

کی۔ فرائیج کی 350 کھینچاں آسٹریا میں بولی جاتی ہیں، جاپانی کی 310، جرمنی کی 250 اور انگریزی کی صرف 220۔ میرا خیال ہے کہ سلسلہ میں اس کی نقلی ہندی کی 150 بھی نہیں۔ شائد میری بولی فرائیج کو بھی مات کرتی ہے، لیکن اس طرف کون دیکھتا ہے؟ کیا رکھا ہے ان باتوں میں؟ صحت کی بات ہے ہاتھ کھینچتا ہے ہمارا علم کا شوق!

میری بولی کے रूप میں ہے 21 व्यंजन, सब शुद्ध, उनमें कोई मिलावट या जोड़ नहीं, और इसलिये वह एक भीठी, सुरیلی, بھتی मौसीकी है. खूबसूरती में सारी दुनिया की बोलियों में उसे तीसरा दर्जा दिया गया है. अगर उसमें जिन्स (लिंग) की बीमारी न होती तो दूसरी गिनी जाती. भ्रामर न होने के बराबर, सीधी सादी सुन्दरी जिसे गहने पाते से नफ़रत, बोलने में आसान, समझने में आसान, सीखने में आसान. उसकी इस आसानी ने उसे फैलने में बहुत कुछ मदद दी. बड़ी खराबी उसमें है तो यह कि वसमें एक आदमी दूसरे का आसानी से धोका नहीं दे सकता, और हमारे लीडर चाहते हैं ऐसी ज़बान जिसमें वह धोका दे सकें या कम से कम लारे लपे लगा सकें. यही लीडर कहते हैं यहां है जनता का राज! सब धोका, कहने की बात! जिस देस में इस देस की आम बोली या उसकी राजधानी की बोली, सरकारी बोली नहीं है, वहां कोई चीज जनता की नहीं हो सकती.

میری بولی کے (دہا) میں 21 سہریں، سب شدد، انہیں کوئی ملاوٹ یا جوڑ نہیں اور اسلئے وہ ایک مٹی کی سریلی، بھتی، موسیقی ہے۔ خوبصورتی میں ساری دنیا کی بولیوں میں اسے تیسرا درجہ دیا گیا ہے۔ اگر اس میں جنس (لنگ) کی بیماری نہ ہوتی تو دوسری گنی جاتی۔ گرامر نہ ہونیکے برابر، سیدھی سادی سادری جسے گنہ پاتے سے نفرت، ہولہ میں آسان، سمجھنے میں آسان، سیکھنے میں آسان۔ اس کی آسانی نے اسے پھیلنے میں بہت کچھ مدد دی۔ بڑی خرابی اس میں ہے تو یہ کہ اس میں ایک آدمی دوسرے کو آسانی سے دھوکا نہیں دے سکتا، اور ہمارے لیڈر چاہتے ہیں ایسی زبان جس میں وہ دھوکا دے سکیں یا کم سے کم لارے لگا سکیں۔ یہی لیڈر کہتے ہیں یہاں ہے جنتا کا راج! سب دھوکا، کہنے کی بات! جس دیس میں اس دیس کی عام بولی یا اس کی راجدھانی کی بولی، سرکاری بولی نہیں ہے وہاں کوئی چیز جنتا کی نہیں ہو سکتی۔

एक खास भिषाद के अन्दर हर सूबे की अदालतों और असेम्बलियों का काम काज उसी सूबे की भाषा में जारी होना चाहिये. अपील की आखिरी अदालत की ज़बान हिन्दुस्तानी करार दी जाय, लिखावट चाहे देवनागरी हो या फ़ारसी. सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट और असेम्बलियों की भाषा भी हिन्दुस्तानी ही हो. अन्तर्राष्ट्रीय राज ब्योहार की भाषा अंगरेज़ी रहे. मुझे भरोसा है कि अगर आपको यह तजवीज़ अपने विचार के मुताबिक़ नज़र न आई और आपने यह खयाल किया कि मैं स्वराज की इच्छा में हद से बाहर चला गया हूँ तो भी आप छूटते ही इसकी हंसी न उड़ाने लगेंगे.

—महात्मा गांधी

ایک خاص مہیاد کے اندر ہر صوبے کی عدالتوں اور اسمبلیوں کا کام کاج اسی صوبے کی بھاشا میں جاری ہونا چاہیئے۔ اپیل کی آخری عدالت کی زبان ہندستانی قرار دی جائے، لکھارت چاہے دیوناگری ہو یا فارسی۔ سینٹرل گورنمنٹ اور اسمبلیوں کی بھاشا بھی ہندستانی ہی ہو۔ انٹراڈیشی راج بیوہار کی بھاشا انگریزی رہے۔ مجھے یوروسہ ہے کہ اگر آپ کو یہ تجویز اپنے وچار کے مطابق نظر نہ آئی اور آپ نے یہ خیال کیا کہ میں سراج کی اچھا میں حد سے باہر چلا گیا ہوں تو بھی آپ چوتھے ہی اس کی ہلسی فہ اڑانے لگیں گے۔

—مہاتما گاندھی

بمبئی کا ایک دکھ بھرا نظارہ

بمبئی کا ایک دکھ بھرا نظارہ

شری سندر لال

شری سندر لال

شری بی. جی. خیر کئی سال تک بمبئی کے چیف منسٹر رہ چکے ہیں۔ اسکے بعد وہ انگلینڈ میں بھارت کے ہائی کمشنر تھے۔ ہم انہیں ایک زمانے سے اچھی طرح جانتے ہیں۔ ہمارے دل میں ان کا بڑا اثر ہے۔

شری بی. جی. خیر کو ان کے ساتھی 'بالا صاحب' کہتے ہیں۔ بمبئی کے پچھلے دورے میں ہمیں بالا صاحب سے کئی بار ملنے کا سوبھاگینہ پڑا ہے۔ پہلی بار ہم ان سے ان کے مکان پر ملے۔ قیصر گھنٹے تک وہ ہمیں بڑے شوق کے ساتھ یہ بتاتے رہے کہ آجکل وہ اپنا سمسٹہ کس کام میں خرچ کرتے ہیں۔ ان کی سہوا کا میدان آجکل بمبئی کے اندر غریب لوگوں کی کچے بستیاں ہیں۔ اگلے دن صبح ہم نے ان کے ساتھ جاکر ان بستیوں کی حالت اور بالا صاحب اور ان کے ساتھیوں کے کام کو دیکھا۔ اس میں تین گھنٹے سے اوپر خرچ ہوئے۔ شام کو پھر انہیں نے ہمیں اپنے کام کی بابت اور ادھک جانکاری کرائی۔

بمبئی کی میونسپلٹی آجکل ایک بڑی میونسپلٹی ہے جسے گریٹر بامبے یعنی بڑی بمبئی کہتے ہیں۔ اس بڑی بمبئی کے اندر باندرا کے ہوچرخانے سے ملا ہوا دور تک پھیلا ہوا ایک علاقہ ہے جس میں لگ بھگ بیس ہزار مرد عورت اور بچے بستے ہیں۔ اس میں الگ الگ کئی بستیاں ہیں۔ ان لوگوں کی غریبی، ان کی مصیبتوں اور ان کے رہن سہن کو دیکھ کر ہمیں بالکل یہ خیال آیا کہ سچ سچ اگر ترک کہیں دھرتی پر ہو سکتا ہے تو یہیں ہے۔

یہ لگ بھگ سارا علاقہ نچان میں ہے۔ وہاں کی ادھک تر دھرتی پانی اور کیچڑ سے بھری ہوئی ہے۔ بیس ہزار کی آبادی میں کہیں کہیں تھوڑی اونچائی پر سو پچاس مکان ایسے ہیں جو آدمیوں کے رہنے کے مکان کہلا سکتے ہیں۔ یہ عام طور پر ان لوگوں کے ہیں جو پاس کے ہوچرخانے میں ٹھیکے داری وغیرہ کا کام کرتے ہیں یا ریل کے ملازم ہیں جن میں سے کچھ کے لئے ریلوے نے کوارٹر بنوا دیئے ہیں۔ یہ لوگ خوش حال یا کم سے کم کھاتے پیتے کپے جاسکتے ہیں۔ باقی ہزاروں جھونپڑوں اور ان کی حالت کو دیکھ کر یہ معلوم ہی نہیں ہوتا کہ ان میں انسان

بمبئی کی میونسپلٹی آجکل ایک بڑی میونسپلٹی ہے جسے گریٹر بامبے یعنی بڑی بمبئی کہتے ہیں۔ اس بڑی بمبئی کے اندر باندرا کے ہوچرخانے سے ملا ہوا دور تک پھیلا ہوا ایک علاقہ ہے جس میں لگ بھگ بیس ہزار مرد عورت اور بچے بستے ہیں۔ اس میں الگ الگ کئی بستیاں ہیں۔ ان لوگوں کی غریبی، ان کی مصیبتوں اور ان کے رہن سہن کو دیکھ کر ہمیں بالکل یہ خیال آیا کہ سچ سچ اگر ترک کہیں دھرتی پر ہو سکتا ہے تو یہیں ہے۔

یہ لگ بھگ سارا علاقہ نچان میں ہے۔ وہاں کی ادھک تر دھرتی پانی اور کیچڑ سے بھری ہوئی ہے۔ بیس ہزار کی آبادی میں کہیں کہیں تھوڑی اونچائی پر سو پچاس مکان ایسے ہیں جو آدمیوں کے رہنے کے مکان کہلا سکتے ہیں۔ یہ عام طور پر ان لوگوں کے ہیں جو پاس کے ہوچرخانے میں ٹھیکے داری وغیرہ کا کام کرتے ہیں یا ریل کے ملازم ہیں جن میں سے کچھ کے لئے ریلوے نے کوارٹر بنوا دیئے ہیں۔ یہ لوگ خوش حال یا کم سے کم کھاتے پیتے کپے جاسکتے ہیں۔ باقی ہزاروں جھونپڑوں اور ان کی حالت کو دیکھ کر یہ معلوم ہی نہیں ہوتا کہ ان میں انسان

765 240

ہرے پورے دن لگ سکتا ہے۔ جن آغواؤں کے لیے شایبہ دنیا کی یہ سہولتیں ہیں ہی نہیں۔ کہیں کہیں اُن تک پہنچنے کے لیے بمبئی وائر درکس کے موٹے موٹے بمبوں (میلنس) پر سے کود کود کر جانا پڑتا ہے۔

اس پر کہا جاتا ہے کہ بمبئی میونسپلٹی ان لوگوں سے اسی حساب سے ٹیکس وصول کرتی ہے جس طرح سڑک کے دوسری طرف کے اتاری والوں سے ہالا صاحب اور اُن کے ساتھیوں نے ہمیں بتایا کہ اُس علاقے سے قریب ایک لاکھ ٹیکس وصول ہوتا ہے اور اُن پر خرچ صرف قریب دو ہزار روپیہ سالانہ۔ یہی ایک ٹیکس جمع کرنے والا ہے جس کو قریب سو روپیہ مہینہ دیا جاتا ہے۔ ممکن ہے ان آنکڑوں میں تھوڑی بہت غلطی ہو۔ یہ ہمیں رہائی کھول یاد سے بتاتے گئے تھے۔ ایسی حالت میں قدرتی طور پر ہالا صاحب کے شہدوں میں ”چوری اور رشوت خوری“ بھی وہاں خوب چلتی ہے۔ کچھ غذا قسم کے انسان بھی وہاں اسی غرض کے لیے رہتے دکھائے۔ ہمیں بتایا گیا کہ اُس بستی کے ایک حصے سے کوئی ایک آدمی خلف قانون ان غریبوں سے لگ بھگ چودہ سو روپیہ مہینہ وصول کر لیتا ہے۔ حال میں سنا ہے اس پر مقدمہ بھی قائم ہو گیا ہے۔ نتیجہ جو کچھ ہو۔ بڑے آدمیوں کے جرم بڑے جرم ہوتے ہیں۔ اُن کے پاپ اونچے اتاریوں اور مضمحل کے گدوں میں چھو رہے ہیں۔ غریبوں، ناداروں اور بدستوں کے چھوٹے چھوٹے گناہ اور گندے جرم اُن کی غریبی کے ساتھ لپکتے چمکتے ہیں۔ کئی دکھ بھری گھٹائیں اُس بستی کے رہنے والوں کی ہم نے اُن تین گھنٹوں کے اندر ہلاچی اور اُن کے ساتھیوں سے سنی ہیں۔ ہمارا دل برداشت نہیں کرتا کہ ہم انہیں یہاں دھراویں۔

اُن لوگوں کی تندرستی کی یہ حالت ہے کہ اور بیماریوں کو چھوڑ دیجئے حال میں ہالا جی اور اُن کے ساتھیوں نے جو اُن بستیوں کی سروے کرائی اُس میں معلوم ہوا کہ قریب ایک ہزار بیمار اُن بستیوں میں ایسے ہیں جن پر کروز کا شک ہے۔ جانکروں کی رائے ہے کہ اگر اسے روکا نہ گیا تو تھوڑے دنوں میں یہ سارا علاقہ ایک بڑا کروز خانہ ہو جائیگا۔ جن حالتوں میں وہ رہ رہے ہیں اُن کا اور کچھ نتیجہ ہو بھی کیسے سکتا ہے۔ شری بی۔ جی۔ ٹھہر نے اس بارے میں بمبئی سرکار کے ڈاکٹری کے انسپروں سے پتروپتھر شروع کر رکھا ہے۔ اس کا جب اور جو کچھ نتیجہ نکل سکے۔

اُن لوگوں کی تندرستی کی یہ حالت ہے کہ اور بیماریوں کو چھوڑ دیجئے حال میں ہالا جی اور اُن کے ساتھیوں نے جو اُن بستیوں کی سروے کرائی اُس میں معلوم ہوا کہ قریب ایک ہزار بیمار اُن بستیوں میں ایسے ہیں جن پر کروز کا شک ہے۔ جانکروں کی رائے ہے کہ اگر اسے روکا نہ گیا تو تھوڑے دنوں میں یہ سارا علاقہ ایک بڑا کروز خانہ ہو جائیگا۔ جن حالتوں میں وہ رہ رہے ہیں اُن کا اور کچھ نتیجہ ہو بھی کیسے سکتا ہے۔ شری بی۔ جی۔ ٹھہر نے اس بارے میں بمبئی سرکار کے ڈاکٹری کے انسپروں سے پتروپتھر شروع کر رکھا ہے۔ اس کا جب اور جو کچھ نتیجہ نکل سکے۔

انگلینڈ سے لوٹنے کے کچھ دنوں بعد ہالا صاحب کا دھیان ان بستیوں کی طرف گیا۔ انہوں نے اُن کی حالت کو جا کر اچھی طرح دیکھا۔ اُس علاقے کا تین سنسٹھاؤں سے سمبندھ ہے—ایک بمبئی میونسپلٹی، دوسرے بمبئی سرکار اور تیسرے ریلوے۔ ہالا صاحب نے انہیں کے ساتھ

ان لوگوں کی تندرستی کی یہ حالت ہے کہ اور بیماریوں کو چھوڑ دیجئے حال میں ہالا جی اور اُن کے ساتھیوں نے جو اُن بستیوں کی سروے کرائی اُس میں معلوم ہوا کہ قریب ایک ہزار بیمار اُن بستیوں میں ایسے ہیں جن پر کروز کا شک ہے۔ جانکروں کی رائے ہے کہ اگر اسے روکا نہ گیا تو تھوڑے دنوں میں یہ سارا علاقہ ایک بڑا کروز خانہ ہو جائیگا۔ جن حالتوں میں وہ رہ رہے ہیں اُن کا اور کچھ نتیجہ ہو بھی کیسے سکتا ہے۔ شری بی۔ جی۔ ٹھہر نے اس بارے میں بمبئی سرکار کے ڈاکٹری کے انسپروں سے پتروپتھر شروع کر رکھا ہے۔ اس کا جب اور جو کچھ نتیجہ نکل سکے۔

انگلینڈ سے لوٹنے کے کچھ دنوں بعد ہالا صاحب کا دھیان ان بستیوں کی طرف گیا۔ انہوں نے اُن کی حالت کو جا کر اچھی طرح دیکھا۔ اُس علاقے کا تین سنسٹھاؤں سے سمبندھ ہے—ایک بمبئی میونسپلٹی، دوسرے بمبئی سرکار اور تیسرے ریلوے۔ ہالا صاحب نے انہیں کے ساتھ

हमने बाला साहब से पूछा कि वह बिना काफ़ी धन के या सरकारी मदद के इस इतने बड़े काम को कैसे पूरा कर सकेंगे ? उन्होंने बड़ी हिम्मत के साथ जवाब दिया कि— 'जब मेरे अपने पास का पैसा ख़तम हो जायगा तब मैं

ہم نے ہالا صاحب سے پوچھا کہ وہ بنا گئی دھن کے یا سرکاری مدد کے اُس آنٹنہ بڑے کام کو کیسے پورا کر سکیں گے؟ انہوں نے بڑی ہمت کے ساتھ جواب دیا کہ ”جب مجھ سے اپنے پاس گا۔ دیسہ ختم ہو جائے گا تب میں

سرکار سے بھی مانگوں گا اور لوگوں سے بھی مانگوں گا اور مجھے
بیمبئی کے لیے کہ تب دونوں مجھے مدد دیں گے۔“

بالا صاحب چھپا ہوا ہنس پڑے کر چمکے۔ انہیں دل کی
ہماری ہے جسے ڈاکٹر تھامبوسس آف دی ہارٹ کہتے ہیں۔
وہ ادھک چلتے چلتے تھکنے لگتے ہیں۔ اُس دن صبح
کو بھی وہ تھکنے لگے۔ انہوں نے سادے سیاہ ہمارے کندھے
پر ہاتھ رکھ لیا۔ کچھ دور چلتے کے بعد ہم نے اُنہی سے سادے
سیاہ اُن سے کہا کہ—”بالا صاحب! آپ کو اب چلتے میں لکڑی
کے استعمال کرنی چاہئے، اس سے بڑی مدد ملتی ہے۔“ انہوں نے
ملنے ہی ایک دم اپنا ہاتھ ہمارے کندھے پر سے ہٹا لیا اور کہے
کہ—”میں نے لگ بھگ تیس برس جوانی کے دنوں میں
بوقت چھٹی ہاتھ میں رکھی ہے۔ اب میں طے کر چکا ہوں کہ
اسی چیز کا سہارا لے کر نہ چلوں گا۔“ سچ سچ اُن دکھوں کی
دیوا کرتے میں بالا صاحب اپنے تھامبوسس کو بھول جاتے ہیں۔

بات بات میں بالا صاحب نے ہم سے یہ بھی کہا—
”سندھ لال جی! میں اب یہ محسوس کرتا ہوں کہ جتنے
مال میں نے چیف منسٹری کی وہ سال میں لے گئے۔ ہم لوگوں
کے لئے کام تو یہ ہے۔“ ہم نے سنا ہے کہ پچھلے دنوں بالا صاحب
و سرکار کی طرف سے کسی پردیش کی گورنری آفر کی گئی
ہی، انہوں نے اس کام کو ہاتھ میں لے لینے کے کارن اُس سے
نکار کر دیا۔ کانگریس سبکدوش کی ذمہ داری بھی اُن پر ڈالنے
کی کوشش کی گئی تھی۔ انہوں نے اُس سے بھی انکار کر دیا۔ حال
میں ہندی کمیشن کی صدارت انہوں نے اپنے پوائے ساتھیوں کے
بہت مدد کرنے پر اور اُس طرح کی صاف شرطوں پر منظور
کر لی ہے کہ جن سے اُن کے اس سہوا کام میں فرق نہ پڑے۔

بالا صاحب بمبئی کے اپنے اس سارے پروگرام کو ایک
طرح کا ”پریشرمالہ“ قائم کرنا کہتے ہیں۔ ”پریشرمالہ“ نام
انہیں دنوں باجی نے سجھایا ہے۔ پریشرمالہ کا اُتر ہے ”مشقت
خانہ“۔

اتلہ آباد کے ایک سچین جو لگ بھگ پینتیس برس سے
بمبئی میں وہ کمزوروں اور غریبوں کی سہوا کر رہے ہیں ہم سے
کہتے تھے کہ کم یا ادھک اس طرح کی بستی بمبئی میں یہ
ایک ہی نہیں ہے۔ بالا صاحب اور اُن کے ساتھی اس بات کو
بھی جانتے ہیں کہ اس طرح کے پریشرمالوں کی بھارت بھر
میں جگہ جگہ ضرورت ہے۔ اُن کی پرچنا بہت بڑی ہے۔ وہ
اس طرح کے ستر ہزار پریشرمالہ بھارت بھر میں کھول دینا چاہتے
ہیں، یعنی ہر دس گلوں پیچھے ایک ناکہ دیش سے بے روز
گاری اور بیک منکابن مٹ سکے۔ بمبئی کے اُس پانس کی کچھ
جگہوں سے لوگوں نے اُنہیں بلانا بھی شروع کر دیا ہے۔ بہتوں
نے مدد کا وعدہ بھی کیا ہے ہماری دل سے اچھا ہے کہ بالا صاحب
کی یہ سہوا کاشا پوری ہو۔

بات بات میں بالا صاحب نے ہم سے یہ بھی کہا—
”سندھ لال جی! میں اب یہ محسوس کرتا ہوں کہ جتنے
مال میں نے چیف منسٹری کی وہ سال میں لے گئے۔ ہم لوگوں
کے لئے کام تو یہ ہے۔“ ہم نے سنا ہے کہ پچھلے دنوں بالا صاحب
و سرکار کی طرف سے کسی پردیش کی گورنری آفر کی گئی
ہی، انہوں نے اس کام کو ہاتھ میں لے لینے کے کارن اُس سے
نکار کر دیا۔ کانگریس سبکدوش کی ذمہ داری بھی اُن پر ڈالنے
کی کوشش کی گئی تھی۔ انہوں نے اُس سے بھی انکار کر دیا۔ حال
میں ہندی کمیشن کی صدارت انہوں نے اپنے پوائے ساتھیوں کے
بہت مدد کرنے پر اور اُس طرح کی صاف شرطوں پر منظور
کر لی ہے کہ جن سے اُن کے اس سہوا کام میں فرق نہ پڑے۔

بالا صاحب چھپا ہوا ہنس پڑے کر چمکے۔ انہیں دل کی
ہماری ہے جسے ڈاکٹر تھامبوسس آف دی ہارٹ کہتے ہیں۔
وہ ادھک چلتے چلتے تھکنے لگتے ہیں۔ اُس دن صبح
کو بھی وہ تھکنے لگے۔ انہوں نے سادے سیاہ ہمارے کندھے
پر ہاتھ رکھ لیا۔ کچھ دور چلتے کے بعد ہم نے اُنہی سے سادے
سیاہ اُن سے کہا کہ—”بالا صاحب! آپ کو اب چلتے میں لکڑی
کے استعمال کرنی چاہئے، اس سے بڑی مدد ملتی ہے۔“ انہوں نے
ملنے ہی ایک دم اپنا ہاتھ ہمارے کندھے پر سے ہٹا لیا اور کہے
کہ—”میں نے لگ بھگ تیس برس جوانی کے دنوں میں
بوقت چھٹی ہاتھ میں رکھی ہے۔ اب میں طے کر چکا ہوں کہ
اسی چیز کا سہارا لے کر نہ چلوں گا۔“ سچ سچ اُن دکھوں کی
دیوا کرتے میں بالا صاحب اپنے تھامبوسس کو بھول جاتے ہیں۔

بات بات میں بالا صاحب نے ہم سے یہ بھی کہا—
”سندھ لال جی! میں اب یہ محسوس کرتا ہوں کہ جتنے
مال میں نے چیف منسٹری کی وہ سال میں لے گئے۔ ہم لوگوں
کے لئے کام تو یہ ہے۔“ ہم نے سنا ہے کہ پچھلے دنوں بالا صاحب
و سرکار کی طرف سے کسی پردیش کی گورنری آفر کی گئی
ہی، انہوں نے اس کام کو ہاتھ میں لے لینے کے کارن اُس سے
نکار کر دیا۔ کانگریس سبکدوش کی ذمہ داری بھی اُن پر ڈالنے
کی کوشش کی گئی تھی۔ انہوں نے اُس سے بھی انکار کر دیا۔ حال
میں ہندی کمیشن کی صدارت انہوں نے اپنے پوائے ساتھیوں کے
بہت مدد کرنے پر اور اُس طرح کی صاف شرطوں پر منظور
کر لی ہے کہ جن سے اُن کے اس سہوا کام میں فرق نہ پڑے۔

اتلہ آباد کے ایک سچین جو لگ بھگ پینتیس برس سے
بمبئی میں وہ کمزوروں اور غریبوں کی سہوا کر رہے ہیں ہم سے
کہتے تھے کہ کم یا ادھک اس طرح کی بستی بمبئی میں یہ
ایک ہی نہیں ہے۔ بالا صاحب اور اُن کے ساتھی اس بات کو
بھی جانتے ہیں کہ اس طرح کے پریشرمالوں کی بھارت بھر
میں جگہ جگہ ضرورت ہے۔ اُن کی پرچنا بہت بڑی ہے۔ وہ
اس طرح کے ستر ہزار پریشرمالہ بھارت بھر میں کھول دینا چاہتے
ہیں، یعنی ہر دس گلوں پیچھے ایک ناکہ دیش سے بے روز
گاری اور بیک منکابن مٹ سکے۔ بمبئی کے اُس پانس کی کچھ
جگہوں سے لوگوں نے اُنہیں بلانا بھی شروع کر دیا ہے۔ بہتوں
نے مدد کا وعدہ بھی کیا ہے ہماری دل سے اچھا ہے کہ بالا صاحب
کی یہ سہوا کاشا پوری ہو۔

उच्च जीवन

اوج جیون

लेखक—स्व. डा. हरि प्रसाद देसाई

अनुवादक—श्री गुनवंत मेहता

لکھک—سرورگیزہ ڈاکٹر ہری پرساد دیشائی

انواندک—شری گونونت مہتا

پہلا دن

विस्तर में आधी जागृति और आधी नींद में आलसी अवस्था में पड़े रहने से कुछ फायदा नहीं; जागते ही कौरव छठ बैठो! हमारा सबसे बड़ा जिस्मानी दुश्मन आलस्य (काहिली) है।

तब-दिल से इस्तजा करो कि 'सब इन्सानों की तरफ़री हो! सचवाई के राहगीरों को हे भगवान! ताक़त दो कि वे क्यादा हिम्मत और मेहनत से कार्य करते रहें और वे इन्द्रियों के विकारों के गुलाम न बनकर साबित क़दक रहें!'

फिर अपने इष्ट देवता का सुमिरन करो, ध्यान धरो, सच्चे भक्ति भाव से भगवान से प्रार्थना करो कि, 'हे भगवान! आज के दिन तक क़स्ने के क़ाबिल काम न करके और न करने के काम करके मैंने जो जो पाप किये हैं, उन सबको माफ़ करो!' [इस अवसर पर ऐसे कामों की जाँच-पड़ताल भी करो और जितने याद आयें उन सबको भगवान के सामने निवेदन करो.]

इतना करने से मन की एकाग्रता बढ़ेगी, आत्म परीक्षा करना आएगा, हृदय पवित्र होगा और उच्च जीवन के लिये आग्रह बँधेगा. इसका मतलब यह नहीं कि तुम सारे दिन गंभीर और भारी बने हुए फिरा करो. मासूम हँसी-विस्मयी में बरक़ गुज़ारना तो जीवन विकास में निहायत जरूरी है.

सिर्फ़ इवान के माफ़िक़ न रहकर मानव जीवन का शुक्रमिल विकास करके, उच्च जीवन हासिल करने का आज से ही पूरा इरादा करलो. इस बात को गाँठ में बांध लेने की खास जरूरत है.

दातुन करते वक़ और नहाते समय भी पाक-साफ़ विचार बराबर जारी रहने दो. पक्का इरादा करो कि, 'मेरी जिस्मानी गंदगी के साथ-साथ मेरी दिली गंदगी भी दूर हो!'

भोजन करते समय भी यह बात ध्यान में रहे कि खुराक केवल जिस्म की परवरिश के लिये और सेहत के लिये है, सिर्फ़ ख़ानी ख़ाद के लिये नहीं है. भूख़द बनकर

پہلا دن

بستر میں آدھی جاگرتی اور آدھی نیند میں آلسی اوستھا میں پڑے رہنے سے کچھ فائدہ نہیں؛ جاگتے ہی فوراً اٹھ بیٹھو! ہمارا سب سے بڑا جسمانی دشمن آلسیہ (کاہلی) ہے.

تہ دل سے التجا کرو کہ 'سب انسانوں کی ترقی ہو! سچائی کے راہیگروں کو ہے بھوکاں! طاقت دو کہ وہ زیادہ محنت اور ہمت سے کاریہ کرتے رہوں اور وہ اندریوں کے دکاروں کے ظلم نہ بنکر ثابت قدم رہیں!'

پھر اپنے ایشٹ دیوتا کا سمرن کرو، دھیان دھرو، سچے بھکتی بھاؤ سے بھوکاں سے پراپنا کرو کہ، 'ہے بھوکاں! آج کے دن تک کرنے کے قابل کام نہ کرے اور نہ کرنے کے کام کرے میںہ جو جو پاپ کئے ہیں، ان سبکو معاف کرو!' [اس اوسریز ایسے کاموں کی جانچ پڑتال بھی کرو اور جتنہ یاد آئیں ان سب کو بھوکاں کے سامنے نویدن کرو.]

اتنا کرنے سے من کی ایکاگرتا بڑھیکے، آتم پریکشا کرنا آئیگا، ہر دے پرتہ ہوگا اور اوج جیون کے لئے آکرہ بندھے گا. اسکا مطلب یہ نہیں کہ تم سارے دن گمبھیر اور بھاری بنے ہوئے پھرا کرو. معصوم ہنسی والگی میں وقت گزرتا تو جیون کے وکس میں نہایت ضروری ہے.

صرف جیون کے موافق نہ رہ کر مانو جیون کا مکمل وکس کرے، اوج جیون حاصل کرنے کا آج سے ہی پورا ارادہ کرلو. اس بات کو گائتم میں باندھ لینے کی خاص ضرورت ہے.

دانین کرتے وقت اور نہاتے سمئے بھی پاک صاف وچار برابری جانی رہنے دو. پکا ارادہ کرو کہ، 'مہری جسمانی گندگی کے ساتھ ساتھ مہری دلی گندگی بھی دور ہو!'

بوجن کرتے سمئے بھی یہ بات دھیان میں رہے کہ خوراک کھول جسم کی پرورش کے لئے اور صحت کے لئے ہے، صرف زبانی سروان کے لئے نہیں ہے. بھکر بھکر

کبھی مت کھانا. پेट میں جیتنی بھوک لگی ہو اس سے کھانا کم کھانا. کھانے کے بعد اچھتیں سا بن جانا کہ جس سے ترنت کام نہ ہو سکے; ایسی स्थिति لज्जास्पद है.

भगवान का उपकार मानना कि, जब हजाराँ इन्सान के पूरे पेट भी नहीं पलते तब उन्हें भोजन मिलता है. भोजन के समय इरादा करना कि, 'खुराक बराबर हजम हो जाओ और जिस्म अपने फर्ज अदा करो और रुहानी नीयतों के रास आओ! बुरे विकार या मनहूस विचार पैदा न हो!'

खाने के बाद फिर आत्म परीक्षा करो, चारित्र में बसे हुए ऐबों का खयाल करो. ऐब कितना मनहूस करने वाले है, यह सोचते रहो. उनमें से मिलता हुआ सुख कितना क्षणिक है, इस बात का चिंतन करो!

आईदा ऐसे ऐबों के मातहत न हाने का मजबूत इरादा करो.

ऐसे आत्म निरीक्षण से भगवान, जो कि तुम्हारे ही अंतर में न्यायाधीश की सूरत में बैठा है, उनसे अपनी चाल-ढाल का न्याय कराने से तुम्हारी कल्पना से भी ज्यादा रुहानी तरक्की होने लगेगी.

सारे दिन चलते-फिरते, काम करते करते, जब समय मिले तब आज के बारे में विचार शुद्धि की क्रिया जारी रखो.

शाम के वक्त सैर या मर्दानगी भरे खेल कूद में रहो. पाबंदी और व्यायाम से बदन को चंगा और हट्टाकट्टा करो. तमाम धम अदा किये जा सकने के बल पर पहिले-पहल बदन तो तंदुरुस्त होना ही चाहिये.

दुनिया भर के तमाम मंदिरों में देह जैसा चमत्कारक व आलीशान मंदिर दूसरा एक भी नहीं है.

सो जाने से पहले प्रातःकाल के माफिक फिर प्रार्थना करो. सारे दिन में तुमने जो कुछ किया हो, उन सबकी अंतर्दामी की गवाही में तीन दफा तलाश करो. विचारों में किये गये कुछ पापों को ढूँढ़ निकालो. क्रोध, राग, द्वेष, ईर्ष्या, असत्य, व्यभिचार, लोभ या मोह का गोया अनजाने में संग हुवा हो, समय का दुरुपयोग किया हो इत्यादि को खबरदार पहरेगीर की तरह जाँचो, बार बार तलाश करो या तो डायरी में सविस्तार लिख डालो. वह पढ़ जाओ. क्रसूर और गुनाहों के लिये पश्चाताप करो [तोबा करो] भगवान से क्षमा माँगो और 'फिर ऐसे विचारों से या कर्मों से दोष नहीं करूँगा' ऐसा मन में ठानो.

'कल से ही मैं आज से ज्यादा नेक बनूँगा' ऐसा इरादा करने के बाद सो जाओ.

कभी मत कھانا. پیٹ میں جتنی بھوک لگی ہو اس سے ذرا کم کھانا. کھانے کے بعد اچھتیں سا بن جانا کہ جس سے ترنت کام نہ ہو سکے; ایسی استھیتی لاججاسپد ہے.

بھگوان کا آپکار ماننا کہ، جب ہزاروں انسان کے پورے پیٹ بھی نہیں پلٹے تب تمہیں بھوجن ملتا ہے. بھوجن کے لئے ارادہ کرنا کہ، 'خوراک بڑا بہر ہضم ہو جاؤ اور جسم اپنے فرض ادا کرو اور روحانی نیتوں کے راس آؤ! برے وکار یا مانحوس وچار پیدا نہ ہو!'

کھانے کے بعد پھر آتم پریشا کرو، چرتہ میں بسے ہوئے عیبوں کا خیال کرو. 'عیب کتنا مانحوس کرنے والے ہیں' یہ سوچتے رہو. اُن میں سے ملتا ہوا سکھ کتنا چھلک ہے! اس بات کا چنتن کرو!

آئندہ ایسے عیبوں کے ماتحت نہ ہونے کا مضبوط ارادہ کرو.

ایسے آتم نریکچھن سے بھگوان، جو تمہارے ہی اंतर میں نیائے دھویش کی صورت میں بیٹھا ہے! اُن سے اپنی چال قتال کا نیائے کوالے سے تمہاری کلہنا سے بھی زیادہ روحانی ترقی ہونے لگیگی.

سارے دن چلتے پھرتے، کام کرتے کرتے، جب سے ملے تب آج کے بارے میں وچار شدہی کی کریا جاری رکھو.

شام کے وقت سیر یا مردانگی پھرے کھیل کود میں رہو. پابندی اور دیابامی سے بدن کو چنگا اور ہٹا کٹا کرو. تمام دھرم ادا کئے جا سکے کے بل پر پہلے پہل بدن تو تندرست ہونا ہی چاہیے.

دنیا بھر کے تمام مندروں میں دیہہ جیسا چمٹکارک و عالیشان مندر دوسرا ایک بھی نہیں ہے.

سو جانے سے پہلے پرائے کال کے موافق پھر پرائے کرنا کرو. سارے دن میں تپے جو کچھ کیا ہو، اُن سبکی انتربامی کی گواہی میں تین دفعہ تلاش کرو. وچاروں میں کیئے گئے کچھ پاپوں کو تھونڈھ نکالو. کرودھ، راگ، دوہیش، ایرشا، استیہ، وبھچار، لوبھ یا مومہ کا گویا آنجانے میں سنگ ہوا ہو، سنگے کا دیرپیوگ کیا ہو آنیا دی کو خبردار پھرے کھر کی طرح جانچو! بار بار تلاش کرو یا تو ڈایری میں سووستر لکھ ڈالو. وہ پڑھ جاؤ. قصور اور گناہوں کے لئے پکتنچا تاپ کرو (توبہ کرو) بھگوان سے چھما مانگو اور 'پھر سے ایسے وچاروں سے یا کرموں سے دوہ نہیں کرنا' ایسا من میں تھانو.

'کل سے ہی میں آج سے زیادہ نیک بنوں گا' ایسا ارادہ کرنے کے بعد سو جاؤ.

آتم پریکھا، آتم سمان اور آتم وشواس جنہوں نے پائے ہیں، وہ سب دیہہ روپی راجیہ کے بادشاہ ہیں۔ پرتھم اپنے آپ پر سوراجیہ حاصل کرو۔

آتم پریکھا، آتم سمان اور آتم وشواس جنہوں نے پائے ہیں، وہ سب دیہہ روپی راجیہ کے بادشاہ ہیں۔ پرتھم اپنے آپ پر سوراجیہ حاصل کرو۔



دوسرا دن

دوسرا دن

‘ٹائم-ٹیبول’ یا توئی سمی-پٹریک تیار کرو اور با-پارہندی اسکا پالان کرو۔ ویاہام، پدائی، کرتویہ-کرم، آرام اور نید کے لیے سمی کو ہر ایک کر مقرر کرو۔ اس یگ کے اعلیٰ و عمدہ ورت نیم ٹائم ٹیبول کے انوسار چلنے میں ہیں۔

ٹائم ٹیبول یعنی سمی پٹریک تیار کرو اور با پابندی اسکا پالان کرو۔ ویاہام، پڑھائی، کرتویہ کرم، آرام اور نید کے لیے سمی کو ہر ایک کر مقرر کرو۔ اس یگ کے اعلیٰ و عمدہ ورت نیم ٹائم ٹیبول کے انوسار چلنے میں ہیں۔

شری کو صاف رکھو۔ ہر روز دانت منجن کے ساتھ داتون کرو۔ خوب فلی کرو۔ دو دفعہ اسنان کرو۔ دستر بہت ہی صاف ستھرے رکھو۔

شری کو صاف رکھو۔ ہر روز دانت منجن کے ساتھ داتون کرو۔ خوب فلی کرو۔ دو دفعہ اسنان کرو۔ دستر بہت ہی صاف ستھرے رکھو۔

اپنا کمرہ صاف اور سنڈر بنائو۔ سا! گھر بھکوان کے مندر جیسا صاف، سرشوبہت اور سنڈر رہنا چاہیئے۔ پادانہ میں بدبو نہ رہے، نا لیاں صاف رہیں اور گھر آنکھیں دھوئیں صاف و آکرشک (دلکش) بنانا چاہیئے۔ گندگی کی وجہ سے مانو بھکوان آجکل ہم سے روٹھ گئے ہیں۔ جب سوچتے، شوہے، سوئندریہ، پھول و پھیر اور دھوپ دیپ سے ہمارے گھر آنکھیں پوتر بن گئے تب روٹھے ہوئے بھکوان من جائنیکے۔ پھر جہاں چوبیس گھنٹوں تک خود بھکوان وراجمان ہونے والے ہیں تب تو یہاں ہمیں اپنی گلیاں، آنکھیں، گھر کا ہر ایک کمرہ صاف، سنڈر اور دلکش بنانا چاہیئے۔ مہاپرشوں کی دیوں کی اور سرشت سوئندریہ کے نظاروں کی پریک تصویریں گھر کے ہر کمرے میں لگادو۔ اپنی شکتی کے انوسار پستکالیہ رکھو۔ چلی ہوئی ہڑھیا پستکوں کی پڑھائی۔ اس یگ میں گڑبہ کی رہنمائی کے برابر ہے۔ اچھے اخبار، ماسوری پرچے اور سامک پڑھتے رہو۔ ستروں کے ساتھ کا سمہ گیان چوچا میں بتاؤ۔ ہماری آتمونتی ہو، ایسی ایک آدہ گمبھیر پستک بھی ملن پروردگ پڑھتے رہو۔

اپنا کمرہ صاف اور سنڈر بنائو۔ سا! گھر بھکوان کے مندر جیسا صاف، سرشوبہت اور سنڈر رہنا چاہیئے۔ پادانہ میں بدبو نہ رہے، نا لیاں صاف رہیں اور گھر آنکھیں دھوئیں صاف و آکرشک (دلکش) بنانا چاہیئے۔ گندگی کی وجہ سے مانو بھکوان آجکل ہم سے روٹھ گئے ہیں۔ جب سوچتے، شوہے، سوئندریہ، پھول و پھیر اور دھوپ دیپ سے ہمارے گھر آنکھیں پوتر بن گئے تب روٹھے ہوئے بھکوان من جائنیکے۔ پھر جہاں چوبیس گھنٹوں تک خود بھکوان وراجمان ہونے والے ہیں تب تو یہاں ہمیں اپنی گلیاں، آنکھیں، گھر کا ہر ایک کمرہ صاف، سنڈر اور دلکش بنانا چاہیئے۔ مہاپرشوں کی دیوں کی اور سرشت سوئندریہ کے نظاروں کی پریک تصویریں گھر کے ہر کمرے میں لگادو۔ اپنی شکتی کے انوسار پستکالیہ رکھو۔ چلی ہوئی ہڑھیا پستکوں کی پڑھائی۔ اس یگ میں گڑبہ کی رہنمائی کے برابر ہے۔ اچھے اخبار، ماسوری پرچے اور سامک پڑھتے رہو۔ ستروں کے ساتھ کا سمہ گیان چوچا میں بتاؤ۔ ہماری آتمونتی ہو، ایسی ایک آدہ گمبھیر پستک بھی ملن پروردگ پڑھتے رہو۔

آپنا کمرہ صاف اور سنڈر بنائو۔ سا! گھر بھکوان کے مندر جیسا صاف، سرشوبہت اور سنڈر رہنا چاہیئے۔ پادانہ میں بدبو نہ رہے، نا لیاں صاف رہیں اور گھر آنکھیں دھوئیں صاف و آکرشک (دلکش) بنانا چاہیئے۔ گندگی کی وجہ سے مانو بھکوان آجکل ہم سے روٹھ گئے ہیں۔ جب سوچتے، شوہے، سوئندریہ، پھول و پھیر اور دھوپ دیپ سے ہمارے گھر آنکھیں پوتر بن گئے تب روٹھے ہوئے بھکوان من جائنیکے۔ پھر جہاں چوبیس گھنٹوں تک خود بھکوان وراجمان ہونے والے ہیں تب تو یہاں ہمیں اپنی گلیاں، آنکھیں، گھر کا ہر ایک کمرہ صاف، سنڈر اور دلکش بنانا چاہیئے۔ مہاپرشوں کی دیوں کی اور سرشت سوئندریہ کے نظاروں کی پریک تصویریں گھر کے ہر کمرے میں لگادو۔ اپنی شکتی کے انوسار پستکالیہ رکھو۔ چلی ہوئی ہڑھیا پستکوں کی پڑھائی۔ اس یگ میں گڑبہ کی رہنمائی کے برابر ہے۔ اچھے اخبار، ماسوری پرچے اور سامک پڑھتے رہو۔ ستروں کے ساتھ کا سمہ گیان چوچا میں بتاؤ۔ ہماری آتمونتی ہو، ایسی ایک آدہ گمبھیر پستک بھی ملن پروردگ پڑھتے رہو۔

آپنا کمرہ صاف اور سنڈر بنائو۔ سا! گھر بھکوان کے مندر جیسا صاف، سرشوبہت اور سنڈر رہنا چاہیئے۔ پادانہ میں بدبو نہ رہے، نا لیاں صاف رہیں اور گھر آنکھیں دھوئیں صاف و آکرشک (دلکش) بنانا چاہیئے۔ گندگی کی وجہ سے مانو بھکوان آجکل ہم سے روٹھ گئے ہیں۔ جب سوچتے، شوہے، سوئندریہ، پھول و پھیر اور دھوپ دیپ سے ہمارے گھر آنکھیں پوتر بن گئے تب روٹھے ہوئے بھکوان من جائنیکے۔ پھر جہاں چوبیس گھنٹوں تک خود بھکوان وراجمان ہونے والے ہیں تب تو یہاں ہمیں اپنی گلیاں، آنکھیں، گھر کا ہر ایک کمرہ صاف، سنڈر اور دلکش بنانا چاہیئے۔ مہاپرشوں کی دیوں کی اور سرشت سوئندریہ کے نظاروں کی پریک تصویریں گھر کے ہر کمرے میں لگادو۔ اپنی شکتی کے انوسار پستکالیہ رکھو۔ چلی ہوئی ہڑھیا پستکوں کی پڑھائی۔ اس یگ میں گڑبہ کی رہنمائی کے برابر ہے۔ اچھے اخبار، ماسوری پرچے اور سامک پڑھتے رہو۔ ستروں کے ساتھ کا سمہ گیان چوچا میں بتاؤ۔ ہماری آتمونتی ہو، ایسی ایک آدہ گمبھیر پستک بھی ملن پروردگ پڑھتے رہو۔

एकान्त में अपने मन के साथ अकेला रहने की आवृत्त बालो. तुम्हारे सिवा तुम्हारा अपना उद्धार और कोई नहीं कर सकेगा, इस भावना को हृदय में कायम करो. राहु या शनि की ग्रहदशा तुम्हारी राह का रोड़ा नहीं बनती. अपना मित्र या दुश्मन तुम अपने आप ही हो. जैसे विचार तुम करोगे वैसे बनोगे. कामनाएँ नेक करोगे तो नेक बनोगे और जैसे कर्म करोगे वैसे फल पाओगे. क्रिस्मत के हामी न बनो, पुरुषार्थ के हामी बनो. स्वार्थ के लिये नहीं, बल्कि ज्ञान की खातिर आत्मज्ञान हासिल करना चाहिये. ज्ञान के लिये प्रीति होनी चाहिये. सच्चा ज्ञान दिखावे के लिये नहीं बरन् हमारे अपने विकास के लिये है. ज्ञान से हम में लियाक़त तो आती है पर जो जो कर्म संसार में करने का है, हर एक को आला तरीक़े से कर सकते हैं, लेकिन सच्चा फल आत्मोन्नति है. इससे विवेक वृत्ति बढ़ती है, तसल्ली होती है और आत्मा-परमात्मा के दर्शन होते हैं.

ज्ञानी या भक्त संसार के लिये ना-क्राबिल हो जाता है, यह बात ग़लत है. सच्चा ज्ञानी या सच्चा भक्त तो संसार के लिये ज़्यादा शक्तिवान और ज़्यादा क्राबिल बनता है.

हमारे अन्दर बसे हुए हमारे अंतर्धामी प्रभु ही प्रेम, सत्य, न्याय, दया, और शक्ति का स्वरूप हैं. उस पर ही हमें हर वृम अपना प्रेम रखना चाहिये, उस पर पहाड़ की नाई अविचल श्रद्धा होनी चाहिये. सच्चा विश्वास भी हम उसका ही रख सकेंगे. जब जगत हमारा त्याग करेगा तब उसकी ही शरण हमारे काम आनेवाली है. वह हमारे हाथ-पैरों से और श्वासोच्छ्वास से भी नज़दीक है और हमेशा हम को सन्मार्ग पर चलने की हिदायत करता है. उसकी धीमी कोमल आवाज़ को पहचानो.

हमेशा वह हमारे साथ बोलता रहता है, लेकिन खास तौर पर जब हम कुछ ख़ोटा काम करने को पाप के मार्ग की ओर अग्रसर होने के लिये आमादा होते हैं तब तो वह हमको अवश्य रोकता है. जब बुद्धि सारासार वस्तु नहीं समझ सकती, तब अंतर्धामी के हुक्म के मुताबिक चलना श्रेयस्कर है.

एक ही बार तुम उस आवाज़ को अगर इच्छत करोगे तो बार बार वह तुम्हारी मदद के लिये दौड़कर खड़ी रहेगी और अधिक से अधिक स्पष्ट बनती जायेगी. लेकिन सुनते हुए भी अगर तुमने अनसुनी कर दी, एक, दो, या तीन बार उस मधुर नाद को ठुकरा कर तुम पाप-मार्ग पर जाओगे तो फिर न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी. फिर वह कल्याणकारी आवाज़ तुम को नहीं सुनाई देगी. कान हांते हुए भी तुम बहरे हो जाओगे और आहिस्ता आहिस्ता पतन

अकालत में अपने मन के साथ अकेला रहने की आवृत्त. तुम्हारे सिवा तुम्हारा अपना उद्धार और कोई नहीं कर सकेगा, इस भावना को हृदय में कायम करो. राहु या शनि की ग्रहदशा तुम्हारी राह का रोड़ा नहीं बनती. अपना मित्र या दुश्मन तुम अपने आप ही हो. जैसे विचार तुम करोगे वैसे बनोगे. कामनाएँ नेक करोगे तो नेक बनोगे और जैसे कर्म करोगे वैसे फल पाओगे. क्रिस्मत के हामी न बनो, पुरुषार्थ के हामी बनो. स्वार्थ के लिये नहीं, बल्कि ज्ञान की खातिर आत्मज्ञान हासिल करना चाहिये. ज्ञान के लिये प्रीति होनी चाहिये. सच्चा ज्ञान दिखावे के लिये नहीं बरन् हमारे अपने विकास के लिये है. ज्ञान से हम में लियाक़त तो आती है पर जो जो कर्म संसार में करने का है, हर एक को आला तरीक़े से कर सकते हैं, लेकिन सच्चा फल आत्मोन्नति है. इससे विवेक वृत्ति बढ़ती है, तसल्ली होती है और आत्मा-परमात्मा के दर्शन होते हैं.

ग़ैर-ज्ञानी या भक्त संसार के लिये ना-क्राबिल हो जाता है, यह बात ग़लत है. सच्चा ज्ञानी या सच्चा भक्त तो संसार के लिये ज़्यादा शक्तिवान और ज़्यादा क्राबिल बनता है.

हमारे अन्दर बसे हुए हमारे अंतर्धामी प्रभु ही प्रेम, सत्य, न्याय, दया, और शक्ति का स्वरूप हैं. उस पर ही हमें हर वृम अपना प्रेम रखना चाहिये, उस पर पहाड़ की नाई अविचल श्रद्धा होनी चाहिये. सच्चा विश्वास भी हम उसका ही रख सकेंगे. जब जगत हमारा त्याग करेगा तब उसकी ही शरण हमारे काम आनेवाली है. वह हमारे हाथ-पैरों से और श्वासोच्छ्वास से भी नज़दीक है और हमेशा हम को सन्मार्ग पर चलने की हिदायत करता है. उसकी धीमी कोमल आवाज़ को पहचानो.

हमेशा वह हमारे साथ बोलता रहता है, लेकिन खास तौर पर जब हम कुछ ख़ोटा काम करने को पाप के मार्ग की ओर अग्रसर होने के लिये आमादा होते हैं तब तो वह हमको अवश्य रोकता है. जब बुद्धि सारासार वस्तु नहीं समझ सकती, तब अंतर्धामी के हुक्म के मुताबिक चलना श्रेयस्कर है.

एक ही बार तुम उस आवाज़ को अगर इच्छत करोगे तो बार बार वह तुम्हारी मदद के लिये दौड़कर खड़ी रहेगी और अधिक से अधिक स्पष्ट बनती जायेगी. लेकिन सुनते हुए भी अगर तुमने अनसुनी कर दी, एक, दो, या तीन बार उस मधुर नाद को ठुकरा कर तुम पाप-मार्ग पर जाओगे तो फिर न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी. फिर वह कल्याणकारी आवाज़ तुम को नहीं सुनाई देगी. कान हांते हुए भी तुम बहरे हो जाओगे और आहिस्ता आहिस्ता पतन

کی راہ میں پھسل جاؤ گے ! پاپ کے آباویں بنے ہوئے کلمے ہی آدمیوں نے انٹر یامی کے اس ناد کو ٹھکرا دیا ہے ۔ ویسی دردناک تمہاری نہ ہو !

جنت اور جہنم دونوں اس پرتھوی پر ہی ہیں ۔ جہنم نے انٹر یامی کے ناد کو ٹھکرا دیا ہے اور جو سوچنا چاہی جہنم گزارتے ہیں وہ جیتے جی جہنم میں ہیں ۔ وہ کسی نہ کسی دن ضرور پچھتاؤنگے اور اس پچھتاوے کی آگ ان کی نس میں سما جائیگی ۔ ” اوہ ! ” سوچو زہر لے سانبوں نے کس لیا ! ” ایسا انکو محسوس ہوگا ۔ آخر کار وہ پچھتاوے کی آگ سے شدہ ہو کر اس انٹر یامی کی شرر ڈنڈنڈنڈے تو ضرور تو دیں دیالو ہے ، کرونا ساگر ہے ، پت پان ہے ۔ وہ پھر تمہیں سنگارگ ہو چڑھا دیگا اور پہلے کی بیانی کی آواز سنائے گا ۔

جہنم اور جہنم دونوں اس پرتھوی پر ہی ہیں ۔ جہنم نے انٹر یامی کے ناد کو ٹھکرا دیا ہے اور جو سوچنا چاہی جہنم گزارتے ہیں وہ جیتے جی جہنم میں ہیں ۔ وہ کسی نہ کسی دن ضرور پچھتاؤنگے اور اس پچھتاوے کی آگ ان کی نس میں سما جائیگی ۔ ” اوہ ! ” سوچو زہر لے سانبوں نے کس لیا ! ” ایسا انکو محسوس ہوگا ۔ آخر کار وہ پچھتاوے کی آگ سے شدہ ہو کر اس انٹر یامی کی شرر ڈنڈنڈنڈے تو ضرور تو دیں دیالو ہے ، کرونا ساگر ہے ، پت پان ہے ۔ وہ پھر تمہیں سنگارگ ہو چڑھا دیگا اور پہلے کی بیانی کی آواز سنائے گا ۔

جو انٹر یامی کا ناد سنتے ہیں اور اُسے انو سار چلتے ہیں وہ جیتے جی جنت میں ہیں ۔ جیسا کہ گویوں کو شری کرشن کی مدھو ہنسی سنکر ہونا تھا ویسا ہی سکھ ہمیشہ انکو ملتا ہے ۔

” یمونا پر بچ رہی ہانسویا ” وہ صبر سنتوش نہرالا ہے ۔

جو انٹر یامی کا ناد سناتے ہیں اور اُسے انو سار چلتے ہیں وہ جیتے جی جنت میں ہیں ۔ جیسا کہ گویوں کو شری کرشن کی مدھو ہنسی سنکر ہونا تھا ویسا ہی سکھ ہمیشہ انکو ملتا ہے ۔

’ یمونا پر بچ رہی ہانسویا ’ وہ صبر سنتوش نہرالا ہے ۔

میں یہ ماننا ہوں کہ اگو کوئی یوجنا اس طرح بنائی جائے جس میں کسی دیش کے کچے مال کو تو خوب کام میں لایا جائے اور وہاں کی زبردست آبادی کی رتی بڑی پرواہ نہ کی جائے تو وہ یوجنا نہیں ہے مذاق ہے ۔۔۔۔۔۔ ہندوستان کے لئے وہی یوجنا بندی ٹھیک ہو سکتی ہے جو یہاں کی کل کی کل آبادی سے اچھے سے اچھا کام لے اور یہاں کے کچے مال کو یہاں کے لائوں گلوں میں تقسیم کر دے ۔ ایسی ہی یوجنا سے ہندوستان کا سچا شہر ہو سکتا ہے ۔

میں یہ ماننا ہوں کہ اگو کوئی یوجنا اس طرح بنائی جائے جس میں کسی دیش کے کچے مال کو تو خوب کام میں لایا جائے اور وہاں کی زبردست آبادی کی رتی بڑی پرواہ نہ کی جائے تو وہ یوجنا نہیں ہے مذاق ہے ۔۔۔۔۔۔ ہندوستان کے لئے وہی یوجنا بندی ٹھیک ہو سکتی ہے جو یہاں کی کل کی کل آبادی سے اچھے سے اچھا کام لے اور یہاں کے کچے مال کو یہاں کے لائوں گلوں میں تقسیم کر دے ۔ ایسی ہی یوجنا سے ہندوستان کا سچا شہر ہو سکتا ہے ۔

—مہاتما گاندھی

—مہاتما گاندھی

پُریم، ویوگ اور ودشا

وشو مبهر ناتو پانڈے

ورشا رت آتی ہے اور جلی قہی دھرتی کو نئی زندگی میں
 شراہور کر جاتی ہے۔ انسان ہی نہیں پشو، پکٹی پیر اور ہردھ،
 تھن کے سائے ہوئے سبھی ہر سات کی پھوہاروں میں چین کی
 سانس لینے لگتے ہیں۔ ہمارے دیش میں ورشا رت کو 'ورشا
 منزل' کا نام دیا گیا ہے۔ مہا کوئی والیک، کوئی گرو کانہداس،
 کوئی بھکت تلسی داس اور کوئی سمرات رویندر ناتھ سب نے ورشا کو
 اپنی کویتاؤں کے تالے ہانے میں بٹھا ہے۔ کھڑی ہولی کے ادنی کوئی
 بہارتیندر باہو، ہریشچندر 'سارن من بہارن' میں اپنے آپ کو
 بھولنے کا اُپدیش دیتے ہیں۔ ہندی اور اُردو کوویوں اور شاعروں
 کی کویتائیں اور نظامیں ورشا کی مدھر پھوہاروں میں رس سے
 دگی ہوئی لگتی ہیں۔

بھارتیندو باپو ہریش چندر سارن کے مہینہ کی یادگاہ کا
ورنن کرتے ہوئے کہتے ہیں۔

یہ ساروں ماس سوغاویں تھیں، من بہاویں یا میں نہ شوک کرو،
جمونا پہ چلو جو سے مل کے، آگئے بجائے کے شوک ہرو۔
اور دے صرف یہیں تک نہیں رکے، مریدانہ کے بندن
لانگہ کر وہ نو بیوناؤں سے بنتی کرتے تھیں۔

ہریشچند کی تم سوں یہی ہفتی
یہی پاکیزہ پتی ورت ناکھیں دھرو۔

تدکا کار اور آلوچک شاید کہیں کہ یہاں کوئی کی پتی روت سے مراد اُنم سنڈم سے ہے، نس کشی سے ہے؛ مگر کیا ہونڈ نہیں کے تار سب کچھ ہلا دینے والے نہیں ہوتے؟ سارن کی جڑی سے ایک سماں بندہ جا نا ہے اور شاعر پہنچ کر کلپنا کی دنیا میں سپر کوئے لکنا ہے۔

گرو دیو روپندر خاتہ نے سارن بھادوں کی اندھیری گھٹا ٹوپ
راتوں کا ذکر کرتے ہوئے پوچھا ہے—

ششی تارا هیئا آندہ قامسی یامنی

کہاں آج وسمرت و شول پڑتی سہاوی پور کمانی ؟
چمکے دیوت دامن

شوہرہ پر ہیں ساری شیا، کہاں گئیں پور کامنی ؟
یعنی — اندھیری گپلی رات جس میں نہ چاند ہے نہ تارے،
ایسی اس رات میں کہوئی ہوئی سی دیا کل گاؤں کی
بالائیں کہاں پھر پھر ؟

बिजली प्रकाश के साथ बमक रही है,
सेजें सूनी पड़ी हैं, और यह प्राम बधुयें गईं कहीं ?
संस्कृत के कवियों ने ऐसी भयंकर बरसाती रात में इन
पुर कामिनियों को कड़कती हुई बिजलियों, गरजते हुए
बादलों और बरसती हुई मूसलाधारों के बीच भी अपने
प्रियतमों से अभिसार के लिये घरों से निकाला है.

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ अपनी एक कविता में कहते हैं—
बर्षा आई है, नई बर्षा !
बर्षा क्या है ? रस में पगी हुई मोहब्बत है.
बन और बारां में सन-सन पवन बह रहा है.
आज पेड़ और लताएँ सबने हरियाली की चादरें ओढ़ ली हैं.
हे कवि ! यह बादल हज्जारों-हज्जारों युगों से आकाश में
इसी तरह आते हैं और छाते हैं.
हवाएँ नशे में झूम-झूम कर गुल-शोर कर रही हैं.
बर्षा क्या है ? हज्जारों हज्जारों युग का स्नेह से सना हुआ
प्रेम का एक गीत है.

बर्षा अगर वियोगी और वियोगिनों की सुषुप्त हरती
है तो दूसरी ओर बर्षा का राजा सावन बहनों और बेटियों
को मैके की याद में बिलखाता है. सुसराल में बैठी हुई बहन
अपने मैके में नीम की डाल पर पड़े हुए झूलों की पेंग को
याद करती है. रह-रह कर उसका मन सलूनो के लिये
मचलता है और वह आहें भर कर कहती है—

बिरन ! मेरो सावन बीतो जाय !

दूसरी ओर एक साजन-बिहीना बर्षा को नये संदेशों
का साधन समझ कर अपने साजन को निमंत्रण देते हुए
कहती है—

आ, मिल गाएँ गीत !

नीली-नीली बदली छाई,
ठन्डी-ठन्डी वायु आई,
हल्की-हल्की बूँदें बरसें,
नैन तेरे दर्शन को तरसें,

आ, मिल गाएँ गीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत.

आ, हिल-मिल कर झूला झूलें,
जग के सारे संकट झूलें,
सैर करें हम प्रेमनगर की,
आजा, बरखा की यह रितु भी,

जाय न यों ही बीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत.

और जब इस बिनती पर भी साजन नहीं आता तो
वियोगन दुख से भर कर कहती है—

किस विध बीतेगी, उन बिन काली रात !

बिजली पल-पल छिन-छिन तड़पे,
बादल कड़-कड़, कड़-कड़, कड़के,
पानी रिमझिम-रिमझिम बरसे,
आई यौवन पर बरसात !

बजली प्रकाश के साथ चमक रही है,

संस्कृत की पुरानी हैं, और ये ग्राम बधुयें गंधी कहीं ?
संस्कृत के कवियों ने ऐसी भयंकर बरसाती रात में इन
पुर कामिनियों को कड़कती हुई बिजलियों, गरजते हुए
बादलों और बरसती हुई मूसलाधारों के बीच भी अपने
प्रियतमों से अभिसार के लिये घरों से निकाला है.

गुरु देव रवीन्द्र नाथ अपनी एक कविता में कहते हैं—
वर्षा आनी है नई वर्षा !

वर्षा क्या है ? रस में पगी हुयी मोहब्बत है .

बन और बारां में सन-सन पवन बह रहा है .

आज पेड़ और लताएँ सबने हरियाली की चादरें ओढ़ ली हैं .
हे कवी ! ये बादल हजारों हजारों युगों से आकाश में
इसी तरह आते हैं और छाते हैं .

हवाएँ नशे में झूम-झूम कर गुल-शोर कर रही हैं .

वर्षा क्या है ? हजारों हजारों युग का स्नेह से सना हुआ
प्रेम का एक गीत है .

वर्षा अगर वियोगी और वियोगिनों की सुषुप्त हरती है तो
दूसरी ओर वर्षा का राजा सावन बहनों और बेटियों को मैके की
याद में बिलखाता है . सुसराल में बैठी हुई बहन अपने मैके में
नीम की डाल पर पड़े हुए झूलों की पेंग को याद करती है . रह-रह
कर उसका मन सलूनो के लिये मचलता है और वह आहें भर कर
कहती है—

बिरन ! मेरो सावन बीतो जाँ !

दूसरी ओर एक साजन-बिहीना वर्षा को नये संदेशों का
साधन समझ कर अपने साजन को निमंत्रण देते हुए कहती है—

‘आ, मिल गाँव गीत !

नीली-नीली बदली छाई,
ठन्डी-ठन्डी वायु आई,
हल्की-हल्की बूँदें बरसें,
नैन तेरे दर्शन को तरसें,

‘आ, मिल गाँव गीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत .

‘आ, हिल-मिल कर झूला झूलें,
जग के सारे संकट झूलें,
सैर करें हम प्रेमनगर की,
आजा, बरखा की यह रीत भी,

जाँ न यों ही बीत, साजन ! प्रीत हमारी रीत .

और जब इस बिनती पर भी साजन नहीं आता तो
वियोगन दुख से भर कर कहती है—

किस विध बीतेगी, उन बिन काली रात !

बिजली पल-पल छिन-छिन तड़पे,
बादल कड़-कड़, कड़-कड़, कड़के,
पानी रिमझिम-रिमझिम बरसे,
आई यौवन पर बरसात !

आई यौवन पर बरसात !

کھانا جانے کھانا گھوڑے منہ پر،
جی بھرا تا ہے رہ رہ کر،
ایسا سونا ہے ان بن گھر،
جیسے کوئی روک نہ پات !

ایک دوسری نایکا کا پریتم پردیس میں تو نہیں ہے،
لیکن پھر بھی اتنا نردئی ہے کہ بھری ہرسات میں اپنی پریتما
کو چھوڑ کر جانا چاہتا ہے اور وہ دم کی ماری اس سے ملت
کرتی ہے۔

پریتم ! رہ جا آج کی رات !
آج کی رات جیسا بھراوے،
آج کی رات گھر آئے،
سنا جا من کی بات، پریتم ! رہ جا آج کی رات !
بجلی کر کے بادل برسے،
آج کی رات نکل نہیں گھر سے،
دیکھ بھری ہرسات، پریتم ! رہ جا آج کی رات !
آج کی رات دھڑکا مورا بھڑکے،
آج کی رات آؤں موری بھڑکے،
جوڑ رہی ہوں ہات، پریتم ! رہ جا آج کی رات !

اور اس کے پریتم کا دل بھی کھل رہا ہے کہ وہ منتھن کرے
پر بھی نہیں رکتا اور چلا جاتا ہے۔ رہ جاتی ہے دیو گن جسم
تسلی دینے والا اور کوئی نہیں سوانہ پیہرے کے، جسکی کوک
سن کر آہیں بھرتی ہوتی وہ کہتی ہے۔

کوک پیہرے کوک !
بادل گرے رین آؤں،
سُنی-سُنی دُنیا مَری،
جینا مَرا ہوا گیا دُہر،
آؤں لگے نا بھوک، کوک پیہرے کوک !

تو بن باسی خول کر روئے،
مَرا رونا مُکے ڈبوئے،
تَری تَرح سے نہ لگاوا،
چُک گئی مَیں چُک، کوک پیہرے کوک !
مَیں بھی اکیلی تُو بھی اکیلا،
مَوہ کا ساگر دُخ کا رَلا،
تَری گالے مَیں پی کا فندا،
مَری من مَیں دُک، کوک پیہرے کوک !

اور تب وہ برہ میں بھر کر اپنے پریتم کو پانی لکھتی
ہے۔

ہم گھڑی جی مَیں بٹ رہی ہے،
بٹاؤں بَری-بَری کے بٹا رہی ہے،
پڑوسین بھولنے کو بھولا،
بَری-بَری بَری کو جا رہی ہے۔

کھا جائے کھا گھرے مجھ پر،
جی بھرا تا ہے رہ رہ کر،
ایسا سونا ہے ان بن گھر،
جیسے کوئی روک نہ پات !

ایک دوسری نایکا کا پریتم پردیس میں تو نہیں ہے،
لیکن پھر بھی اتنا نردئی ہے کہ بھری ہرسات میں اپنی پریتما
کو چھوڑ کر جانا چاہتا ہے اور وہ دم کی ماری اس سے ملت
کرتی ہے۔

پریتم ! رہ جا آج کی رات !
آج کی رات جیسا بھراؤں،
آج کی رات گئی کب آئے،
سن جا من کی بات، پریتم ! رہ جا آج کی رات !
بجلی کر کے بادل بر سے،
آج کی رات نکل نہیں گھر سے،
دیکھ بھری ہرسات، پریتم ! رہ جا آج کی رات !
آج کی رات دھڑکا مورا دھڑکے،
آج کی رات آؤں موری بھڑکے،
جوڑ رہی ہوں ہات، پریتم ! رہ جا آج کی رات !

اور اس کے پریتم کا دل بھی کھل رہا ہے کہ وہ منتھن کرے
پر بھی نہیں رکتا اور چلا جاتا ہے۔ رہ جاتی ہے دیو گن جسم
تسلی دینے والا اور کوئی نہیں سوانہ پیہرے کے، جسکی کوک
سن کر آہیں بھرتی ہوتی وہ کہتی ہے۔

کوک پیہرے کوک !
بادل گرے رین آؤں،
سُنی-سُنی دُنیا مَری،
جینا مَرا ہوا گیا دُہر،
آؤں لگے نا بھوک، کوک پیہرے کوک !

تو بن باسی خول کر روئے،
مَرا رونا مُکے ڈبوئے،
تَری تَرح سے نہ لگاوا،
چُک گئی مَیں چُک، کوک پیہرے کوک !
مَیں بھی اکیلی تُو بھی اکیلا،
مَوہ کا ساگر دُخ کا رَلا،
تَری گالے مَیں پی کا فندا،
مَری من مَیں دُک، کوک پیہرے کوک !

اور تب وہ برہ میں بھر کر اپنے پریتم کو پانی لکھتی
ہے۔

اُمک ایک جی مَیں آؤں رہی ہے،
گرتاؤں گھر گھر کے چھا رہی ہیں،
پڑوسین جھولنے کو جھولا،
گھلے گھلے بن کو جا رہی ہیں۔

کہیں پہ با دل برس رہے ہیں،
کہیں پہ بجلی چمک رہی ہے،
ہری-ہری ڈالیاں پہ چڑیاں،
کھڑک رہی ہیں، چھک رہی ہیں۔

لگا ہے ساون دھیرا ہے بادل،
پکا ہے مولا لگی ہیں لڑیاں،
بڑے بڑے پتنگ چل رہے ہیں،
پڑوسلیں گیت گا رہی ہیں۔

اُدھر پپیہ کی پی-کھاؤں،
بھڑکتی ہے بڑے بیٹھے سبھو،
اُدھر نیگوڑی یہ کوئلے،
اور مہرا جی چل رہی ہیں۔

جہاں جہاں پڑ چکا ہے پانی،
بھری ہوئی ہیں وہاں کی جھیلیں،
اور اُسوں جا کر سہاگنیں سب،
مل چھپا چھپ نہا رہی ہیں۔

ہمیں نہیں چن بیلن تھارے،
اکیلے دھرم میں اُلجھ رہی ہوں،
پہاڑ سے دین سنا رہے ہیں،
سہائی راتیں رلا رہی ہیں۔

ہو توں توں پر دس میں اے ساجن،
میں کسے کاٹوں گی ان دینوں کو،
اے میرے پیارے تھاری باتوں،
بھڑک کھڑا دھوا رہی ہیں۔

اور جب اس پانی پانی کے بعد بھی ساجن نہیں آنا
اور ساون بیٹا جاتا ہے تب وہ دکھی اور کانڈ ویوگن اپنی
سہیلی سے کہتی ہے—

ساون بیٹا جاتا ہے سجنی، پریتم دھرم نہیں آئے،
کسے کاٹوں رات بیلن کی ناگین بن-بن کھاؤں،
ٹنڈی ٹنڈی پوروا سنے کے بادل دھیر-دھیر کھاؤں،
نہیں نہں بڈے دھوکے اور بیلن لہراؤں،

یا دھ پیا کی میرے دل کو رہ-رہ کر تڑپاؤں،
ساون بیٹا جاتا ہے سجنی پریتم دھرم نہیں آئے۔

مور، پپیہ، کھیگور، سارس مل کر شور مچاؤں،
ناچیں، کودیں، کریں کھولیں، پھولے نہیں سہاگنیں،
کنج کنج میں پڑے ہیں چھوٹے مل کر سہیلیں چھوٹیں،
پتنگ پڑھائیں، تان اڑائیں اپنے من میں پھولیں،

ہلسی خوشی کی بات یہ میرے من کو اور چلائے،
ساون بیٹا جاتا ہے سجنی، پریتم دھرم نہیں آئے۔

ورشا کے تار دھرتی کو جل مکن بنا رہے ہیں۔ ہسودا
کی تین تو مس چکی مگر ویوگن کی تین کون

بھوکا ہے؟ وہ اپنے کو کوستی ہوئی کہتی ہے—

آگ لگے اس من کو آگ !
لو فیر رات بھر کی آگ،
چاروں آسروں کی آگ،
جان میری تن میں بھرا ہے،
اپنی قسمت اپنے بھاگ !

کالی اور ہر سائی رین،
اس بن نیند کو ترسے نین،
جس کے ساتھ گیا سوخ چن،
اس کی یاد کدے اب جاگ !

جس دن سے وہ پاس نہیں ہے،
کوئی خوشی کی آس نہیں ہے،
جینے تک کی آس نہیں ہے،
جان کو ہے اب تن سے لاگ !

کون جیتے اور کس کے سہارے،
میتے میتے بول سہارے،
گیت کھائی وہ پھارے-پھارے،
اب وہ تان نہ اب وہ راگ !

اور تب پھر اپنے کو ملامت کرتی ہوئی کہتی ہے—

درس دیکھا کر جو جھپ جائے،
کون ایسے سے پریت لگائے،
کیوں اپنی کوئی دشا سنائے،
چھوڑ موہو بھوت کا خدراگ !
آگ لگے اس من کو آگ !

مگر طعنہ دیکر کہا کہی دیوگن کے من کو شانتی ملتی ہے؟
سونا گھر اور آداس راتیں اُسے کھائے جانی ہیں . وہ کہتی ہے—

گھر ہے سونا رات آداس !
دیرگم دن اندھیری راتیں،
کیسے گزریں گی بربادیں،
بھڑکیاں سب ان کی باتیں،
رہتا ہے اب یہ رشواس !

میں دھیری پریت کی ماری،
پڑ گئی سوکھ پے ویدا باری،
من میں سلگ رہی چنگاری،
کون بھانے دل کی پھاس !

چھائی ہیں گھنہور گھنائیں،
چلتی ہیں پرشر ہوائیں،
من کا مہت اگر آجائے،
تو پوری ہو من کی آس—گھر ہے سونا رات آداس !

کالی اور ہر سائی رین،
اس بن نیند کو ترسے نین،
جس کے ساتھ گیا سوخ چن،
اس کی یاد کدے اب جاگ !
جس دن سے وہ پاس نہیں ہے،
کوئی خوشی کی آس نہیں ہے،
جینے تک کی آس نہیں ہے،
جان کو ہے اب تن سے لاگ !
کون جیتے اور کس کے سہارے،
میتے میتے بول سہارے،
گیت کھائی وہ پھارے-پھارے،
اب وہ تان نہ اب وہ راگ !

اور تب پھر اپنے کو ملامت کرتی ہوئی کہتی ہے—

درس دیکھا کر جو جھپ جائے،
کون ایسے سے پریت لگائے،
کیوں اپنی کوئی دشا سنائے،
چھوڑ موہو بھوت کا خدراگ !
آگ لگے اس من کو آگ !

مگر طعنہ دیکر کہا کہی دیوگن کے من کو شانتی ملتی ہے؟
سونا گھر اور آداس راتیں اُسے کھائے جانی ہیں . وہ کہتی ہے—

گھر ہے سونا رات آداس !
دیرگم دن اندھیری راتیں،
کیسے گزریں گی بربادیں،
بھڑکیاں سب ان کی باتیں،
رہتا ہے اب یہ رشواس !

میں دھیری پریت کی ماری،
پڑ گئی سوکھ پے ویدا باری،
من میں سلگ رہی چنگاری،
کون بھانے دل کی پھاس !

چھائی ہیں گھنہور گھنائیں،
چلتی ہیں پرشر ہوائیں،
من کا مہت اگر آجائے،
تو پوری ہو من کی آس—گھر ہے سونا رات آداس !

اور اسکا پریم بھی کیسا بے درد ہے جو سدھ ہی نہیں لیتا ! دیدنا کی لمبی راتیں اُسے بے چین کر دیتی ہیں ۔ وہ تراہی ہو کر کہتی ہے—

سب سے نوا کر چرنا رونے،
چھوڑ کے اُتم دیس ۔
اُس کی چنتا رام ہی جالے،
جسکا پی پر دیس ۔
ساون اور پھر کالی بدلی،
ہفتدھوں کے تار ۔
دیت جکت کی پریت سے خالی،
سہنا ہے سنسار !

ویوگن کے من میں ایک پرتیکریا پیدا ہوئی ہے ۔ وہ مادی محبت کا کھراگ چھوڑ کر اور سہنے کے سنسار کی مایا توڑ کر گو کل اور بندرا بن گئی ہے ۔ وہ کنج ہوں اور کنج گلوں میں گھومتی ہے ۔ وہ کنہیا کی ہلسی دھن سننا چاہتی ہے ۔ وہ اب منشیہ نہیں، بھگوان سے پریت کا رشتہ چرنا چاہتی ہے ۔ مگر کنہیا کیا سہج ملے والا ہے ؟ اُسے تو برج کی گوبیوں کو دلا کر ملائیں کر ڈالا ۔ ویوگ کے اِس امتحان میں اب یہ نئی گوبی بھی اُتری ہے ۔ صبح ہوئی ہے، سورج نکلتا ہے ۔ شام ہوئی ہے، دن ڈھلتا ہے ۔ مگر اِس نئی گوبی کو بھی کنہیا کا پیغام نہیں ملتا—

بویوگن کے من میں ایک پرتیکریا پیدا ہوئی ہے ۔ وہ مادی محبت کا کھراگ چھوڑ کر اور سہنے کے سنسار کی مایا توڑ کر گو کل اور بندرا بن گئی ہے ۔ وہ کنج ہوں اور کنج گلوں میں گھومتی ہے ۔ وہ کنہیا کی ہلسی دھن سننا چاہتی ہے ۔ وہ اب منشیہ نہیں، بھگوان سے پریت کا رشتہ چرنا چاہتی ہے ۔ مگر کنہیا کیا سہج ملے والا ہے ؟ اُسے تو برج کی گوبیوں کو دلا کر ملائیں کر ڈالا ۔ ویوگ کے اِس امتحان میں اب یہ نئی گوبی بھی اُتری ہے ۔ صبح ہوئی ہے، سورج نکلتا ہے ۔ شام ہوئی ہے، دن ڈھلتا ہے ۔ مگر اِس نئی گوبی کو بھی کنہیا کا پیغام نہیں ملتا—

تڑپ تڑپ کر پھر ہوئی،
پر نا آیا پیغام، کنہیا اُچر چلا من گرام !
بادل گرजे بیجلی چمکے،
اُٹھی غٹاویں شام، کنہیا اُچر چلا من گرام !
آؤں میں آؤں، کسک ہر دھم میں،
بھر آئی ہے شام، کنہیا اُچر چلا من گرام !
برسات کا موسم ہے ۔ کجراے بادل چاروں اُرد چھائے ہوئے ہیں ۔ اُنہیں آنکھ بھر کر دیکھتی ہوئی ویوگن کہتی ہے—

تڑپ تڑپ کر پھر ہوئی،
پر نا آیا پیغام، کنہیا اُچر چلا من گرام !
بادل گرजे بیجلی چمکے،
اُٹھی غٹاویں شام، کنہیا اُچر چلا من گرام !
آؤں میں آؤں، کسک ہر دھم میں،
بھر آئی ہے شام، کنہیا اُچر چلا من گرام !
برسات کا موسم ہے ۔ کجراے بادل چاروں اُرد چھائے ہوئے ہیں ۔ اُنہیں آنکھ بھر کر دیکھتی ہوئی ویوگن کہتی ہے—

غٹاویں پیر آئی، غنچور،
ہواویں چلتی ہیں پورشور۔
مست پپیہا، بسوڈھ کوہل،
اور پاگل ہے موہر، غٹاویں پیر آئی غنچور !
بیجلی چمکے بادل برسے،
آمان ملو چیتچور، غٹاویں پیر آئی غنچور !
آخر میں اِس نئی گوبی کی تھسپا اپنا پل لاتی ہے اور بندرا بن کر کنج بن سے، بیوگا کے قہ سے، کدھم کے بٹ سے بویوگن کے کانوں میں چت چور کنہیا کی بانسری کی دھن سنائی پڑتی ہے—

گھٹائیں گھر اُنہیں گھنکھور،
ہوائیں چلتی ہیں پورشور۔
مست پپیہا، بے سدھ کوہل،
اور پاگل ہے موہر، گھٹائیں گھر اُنہیں گھنکھور !
بیجلی چمکے بادل برسے،
ان ملو چت چور، گھٹائیں گھر اُنہیں گھنکھور !
آخر میں اِس نئی گوبی کی تھسپا اپنا پل لاتی ہے اور بندرا بن کر کنج بن سے، بیوگا کے قہ سے، کدھم کے بٹ سے ویوگن کے کانوں میں چت چور کنہیا کی بانسری کی دھن سنائی پڑتی ہے—

برسات کا یہ موسم، یہ نیلگوں غٹاویں،
یہ بارو بن کا آلالہ، یہ گولفیشاں فیشاں،

برسات کا یہ موسم، یہ نھلکوں گھٹائیں،
یہ باغ د بن کا عالم، یہ گلشن فشاں

یہ رستمی ہوا ہے۔

یہ رنگ و بو کے طوفان، یہ برج کے نظارے،
یہ جلنتی خیابان، جس کے یہ کنارے،
یہ سو پن پیارے پیارے۔

یہ کویلوں کی کو کو، یہ مور کی صدائیں،
یہ نازنین آہو، اور یہ غریب گلیں،
یہ نشہ گریں فضا میں۔

سب سے نکھر رہا ہے، وادی مہک رہی ہے،
نشہ بکھر رہا ہے، ہابل چہک رہی ہے،
فطرت بھک رہی ہے۔

یہ کون اس سٹے میں، ہنسی بھجا رہا ہے،
اس درجہ مست لے میں، الفت لٹا رہا ہے،
نفس بہا رہا ہے۔

شاید کوئی رشی ہے، سنہاس کی لگن میں،
شاید کوئی مونی ہے، مسرور کیرتن میں،
توحید کے بھجن میں۔

ہاں، آؤ پلس چل کر، پوچھیں کہ نام کیا ہے،
تلوں سے آنکھیں مل کر، پوچھیں کہ کلم کیا ہے،
اُسکا پیام کیا ہے۔

تھہرو ذرا نگاہیں، پہچانتی ہیں اُسکو،
فطرت کی جلوہ گلیں، سب جانتی ہیں اُسکو،
اور مانتی ہیں اُسکو۔

ہاں ہاں پے ہنسی والا، چوکی نظر ہماری،
یہ برج کا گروا، ہے نند کا مراری،
اور آرزو ہماری۔

ہنسی میں سے پریشان، نفسہ مچل رہے ہیں،
یا سینکڑوں گلستاں، کووت بدل رہے ہیں،
اور پھول اگل رہے ہیں۔

ساوین اور درشا جس طرح سے پریتما اور ویوگنوں کو ویوگ
میں ویاتل کر دیتی ہیں اسی طرح وہ نو وواہتا بدھ کو اپنے مہم
اور اپنے مل باپ کی یاد میں پھر دیتی ہیں۔ غریبوں کی اس
دنیا میں چکی کی صدا پر گاؤں کی ایک دلہن ویوگ کا
گیت گاتی ہے۔ اُس کسک بھرے ترانے کو سن کر شاعر
کہتا ہے—

سنو یہ کہی آواز آرہی ہے،
کوئی گلوں کی لڑکی گا رہی ہے۔

سحر کے دھندلے دھندلے منظروں کو،
شراب نیمہ پلا رہی ہے۔

اُنہی ہے شاید آٹا پیسے کو،
کہ چکی کی صدا بھی آرہی ہے۔

غموں سے چور اپنے نئے دل کو،
ترانہ چھیڑ کر بہلا رہی ہے۔

سنو یہ کہی آواز آرہی ہے،
کوئی گلوں کی لڑکی گا رہی ہے۔

سحر کے دھندلے دھندلے منظروں کو،
شراب نیمہ پلا رہی ہے۔

اُنہی ہے شاید آٹا پیسے کو،
کہ چکی کی صدا بھی آرہی ہے۔

غموں سے چور اپنے نئے دل کو،
ترانہ چھیڑ کر بہلا رہی ہے۔

کھیتا پر، بستیوں پر، جنگلوں پر،
 ڈھونڈتا ہوا ایک بدلتی آ رہی ہے۔
 جہاں مہم کی ہونے لگی ہے۔
 کہ ساون کی پری کچھ گامی ہے۔
 یہ بادل ہیں کہ ہیں ساون کے سہنے؟
 ہوا جن کو آزا کر رہی ہے۔
 یہ بجلی ہے کہ اک مرمر کی ناکیں؟
 دعوتیں کے جھیل پر لہرا رہی ہے۔
 یہ ہونے ہیں کہ بجلی آسمان سے؟
 ستارے توڑ کر برس رہی ہے۔
 مگر وہ غمزدہ معصوم لڑکی،
 برابر گھٹ گائے جا رہی ہے۔
 یہ گھر سسرال ہوگا شاید اُسکا،
 جبھی ماں باپ کی سہرا آ رہی ہے۔
 جبھی مصروف ہے آہ و فغاں میں،
 جبھی غمگین لے میں گامی ہے۔
 اور وہ گلوں کی دلہن کیا گامی ہے؟ —
 یہ ہو گیا رت بھی بیٹی چارہ ہے!
 ہوا جو گلوں کو مہکا رہی ہے،
 مرے میٹھے سے شاید آ رہی ہے۔
 گھٹا کی آردی آردی چڑیوں سے،
 مہری سکڑیوں کی بو باس آ رہی ہے۔
 مجھے لینے نہ آئے اچھے بادل،
 تمہاری یاد آنت دہا رہی ہے۔
 مہری آسان کو ہو اسکی خبر کیا،
 کہ 'چمپا' اس جگہ ٹھہرا رہی ہے۔
 نہ لی بھینا نے ہو سہہ ہنسی،
 جہاں سے چاہا اُٹھتی جا رہی ہے۔
 پہلا کیونکر تھمیں آنسو، جی پر،
 آداسی کی بدیا چھا رہی ہے۔
 گھا پینگیں بڑھانے کا زمانہ،
 وہ امریں پر کوئل گامی ہے۔
 یونہی وہ اپنی غمگین راگنی سے،
 در و دیوار کو تپتا رہی ہے۔

ساون اسی طرح آتا ہے اور آتا رہے گا۔ ساون کی
 بھینا اور مائی-بھینا بھینا کو وہ یوں سے اسی پرکار تپتا رہا ہے اور
 تپتا رہے گا۔ کالیڈاس سے لے کر تلسی داس تک اور حنیف
 جالندھری سے لے کر اندرجیت تک نئے اور پرانے شاعروں کے من
 کو وہ اسی طرح غم اور ویوگ کے ہندو آئے میں جھلکا رہا ہے۔
 سیتا کے ویوگ پر رامچندر جی کی دیتھا کا درنن تلسی داس
 نے بھری ہرسات کے پٹ پر کتنی مارکتا سے کیا ہے۔
 ہرسات کوہیں اور شاعروں کو لہانی رہی ہے اور ہمیشہ لہانی

ساون اسی طرح آتا ہے اور آتا رہے گا۔ ساون کی
 بھینا اور مائی-بھینا بھینا کو وہ یوں سے اسی پرکار تپتا رہا ہے اور
 تپتا رہے گا۔ کالیڈاس سے لے کر تلسی داس تک اور حنیف
 جالندھری سے لے کر اندرجیت تک نئے اور پرانے شاعروں کے من
 کو وہ اسی طرح غم اور ویوگ کے ہندو آئے میں جھلکا رہا ہے۔
 سیتا کے ویوگ پر رامچندر جی کی دیتھا کا درنن تلسی داس
 نے بھری ہرسات کے پٹ پر کتنی مارکتا سے کیا ہے۔
 ہرسات کوہیں اور شاعروں کو لہانی رہی ہے اور ہمیشہ لہانی



ایٹمی جنگ کے खिलाف سائنسدانوں کی اپیل.

9 جولائی سن 55 کو جنرل اور اخباروں کے پڑتی ندھیوں سے کھنچا کھنچ بھرے ہوئے لندن کے ایک حال میں انگلینڈ کے ہیاسی بس کی عمر کے مشہور فلاسفر شری برٹریڈ رسل نے اپنی اور دنیا کے بڑے سے بڑے سائنسدانوں کی طرف سے دنیا کی سب سے شہرتی شالی سواروں کے نام ایک اعلان پڑھ کر سنایا۔ جن سائنسدانوں کے اس اعلان پر دستخط تھے ان میں سب سے ہوا نام پروفیسر آئنسٹائن کا ہے۔ پروفیسر آئنسٹائن نے 18 اپریل سن 1955 کو اپنی موت سے ٹھیک پہلے اس اعلان پر دستخط کئے تھے۔ اعلان کے خاص خاص وائیہ یہ ہیں:—

”ہم آپ سے اس کٹیم یا اس کٹیم، اس مہادیپ یا اس مہادیپ، یا اس مہادیپ یا اس مہادیپ کے آدمیوں کی حیثیت سے بات نہیں کر رہے ہیں۔ ہم سائنس کے سیکر ہیں اور کھول منشیوں کی حیثیت سے، اس انسانی نسل کے لوگوں کی حیثیت سے جس کا رہنا نہ رہنا اس سے خطرے میں ہے، آپ سے بات کر رہے ہیں۔“

”اس میں کوئی شک نہیں کہ ہائڈروجن بموں کی لڑائی میں بڑے بڑے شہر بالکل مٹ چارینگے۔ پر یہ نہ تو ایک بہت چھوٹی سی دگرگھٹا ہوگی جس کا ہمیں سامنا کرنا پڑے گا۔ اگر لندن، نیویارک اور ماسکو کے سب لوگ ختم ہو جائیں تب بھی یہ سب کچھ صدیوں کے اندر دنیا پر اس صدمہ سے پھپھ چارے۔“

”پر خاص کر ہیکینی کے تجربہ کے بعد ہمیں یہ معلوم ہے کہ اس طرح کے بموں سے جتنی دور تک ہم نے سوچ رکھا تھا اس سے اب کہیں زیادہ دور تک فہاشی پھیل سکتی ہے۔“

”سب جاننے والوں کی رای ہے اور سب ایک آواز سے کہتے ہیں کہ ہائڈروجن بموں کی لڑائی سے بہت ممکن ہے کہ انسانی نسل ہی ہمیشہ کے لئے ختم ہو جائے۔“

ایٹمی جنگ کے खिलाف سائنس دانوں کی اپیل

9 جولائی سن 55 کو جنرل اور اخباروں کے پڑتی ندھیوں سے کھنچا کھنچ بھرے ہوئے لندن کے ایک حال میں انگلینڈ کے ہیاسی بس کی عمر کے مشہور فلاسفر شری برٹریڈ رسل نے اپنی اور دنیا کے بڑے سے بڑے سائنسدانوں کی طرف سے دنیا کی سب سے شہرتی شالی سواروں کے نام ایک اعلان پڑھ کر سنایا۔ جن سائنسدانوں کے اس اعلان پر دستخط تھے ان میں سب سے ہوا نام پروفیسر آئنسٹائن کا ہے۔ پروفیسر آئنسٹائن نے 18 اپریل سن 1955 کو اپنی موت سے ٹھیک پہلے اس اعلان پر دستخط کئے تھے۔ اعلان کے خاص خاص وائیہ یہ ہیں:—

”ہم آپ سے اس قوم یا اس قوم، اس مہادیپ یا اس مہادیپ، یا اس مہادیپ یا اس مہادیپ کے آدمیوں کی حیثیت سے بات نہیں کر رہے ہیں۔ ہم سائنس کے سیکر ہیں اور کھول منشیوں کی حیثیت سے، اس انسانی نسل کے لوگوں کی حیثیت سے جس کا رہنا نہ رہنا اس سے خطرے میں ہے، آپ سے بات کر رہے ہیں۔“

”اس میں کوئی شک نہیں کہ ہائڈروجن بموں کی لڑائی میں بڑے بڑے شہر بالکل مٹ چارینگے۔ پر یہ نہ تو ایک بہت چھوٹی سی دگرگھٹا ہوگی جس کا ہمیں سامنا کرنا پڑے گا۔ اگر لندن، نیویارک اور ماسکو کے سب لوگ ختم ہو جائیں تب بھی یہ سب کچھ صدیوں کے اندر دنیا پر اس صدمہ سے پھپھ چارے۔“

”پر خاص کر ہیکینی کے تجربہ کے بعد ہمیں یہ معلوم ہے کہ اس طرح کے بموں سے جتنی دور تک ہم نے سوچ رکھا تھا اس سے اب کہیں زیادہ دور تک فہاشی پھیل سکتی ہے۔“

”سب جاننے والوں کی رائے ہے اور سب ایک آواز سے کہتے ہیں کہ ہائڈروجن بموں کی لڑائی سے بہت ممکن ہے کہ انسانی نسل ہی ہمیشہ کے لئے ختم ہو جائے۔“

اس بات کا تر ہے کہ اگر بہت سے ہائڈروجن بم استعمال کئے گئے تو سب آدمی مر جائیں گے۔ ان میں سے تھوڑے سے تھوڑے سے نوراً مر کر چھوٹ جائیں گے اور باقی ادھک تر طرح طرح کی بیماریوں سے گل گل کر دھوڑے دھوڑے بڑی تکلیفوں کے ساتھ مر جائیں گے۔ اس بارے میں جو لوگ سب سے ادھک جانکار ہیں وہی سب سے ادھک دکھی اور نراش ہیں۔

”دنیا کے عام لوگ اس بات کو پوری طرح سمجھ ہی نہیں سکتے کہ وہ خود اور ان کے سب سگہ سمبندھی جنہیں وہ بھار کرتے ہیں اس خطرے میں ہیں کہ وہ سب کے سب رت رت کر بڑی تکلیفوں کے ساتھ مریں اور یہ خطرہ ان کی بالکل آنکھوں کے سامنے ہے۔“

”ہم دنیا کو آگاہ کرنا چاہتے ہیں کہ یہ آشا کرنا کہ جنگ میں اگر ایٹم بم اور ہائڈروجن بم جیسے نئے ہتھیاروں پر بندش لگادی گئی تو سمجھو کہ دنیا باقی رہ جائے، بہت بڑا دھوکا ہے۔ یہی کسی طرح بھی ایک بار جنگ شروع ہو گئی تو اس طرح کی بندش کسی کو بھی نہیں روک سگے گی اور جنگ کے چھڑنے ہی دونوں طرف کے لوگ ہائڈروجن بم تیار کرنا شروع کر دیں گے۔“

”ہم بہت اچھی سند کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ جس طرح کے بم نے ہیروشیما کے پورے شہر کو مٹا دیا تھا اس سے اب دعائی ہزار گنا ادھک شکتی والا بم تیار کیا جا سکتا ہے۔“

”اس طرح کا بم اگر کہیں بھی زمین کے اوپر یا پانی کے اندر پھٹا تو ساری زمین کے اوپر کی ہوا میں اس سے ریڈیو ایکٹیو پرمانو بھر جائیں گے۔ وہاں سے پھر وہ دھوڑے دھوڑے ایک ایسی گرد یا بارش کے روپ میں زمین پر اتریں گے جو سب کو مار کر ختم کر دیں گی، یہی گرد تھی جس نے جاپانی مجتہاروں اور ان کی پکڑی ہوئی مجتہادوں کو سزا کر ختم کر دیا تھا۔“

”اس بات کو دھیان میں رکھتے ہوئے کہ بیوشیہ کی کسی بھی جنگ میں ایٹم بم اور ہائڈروجن بم جیسے ہتھیار ضرور کام میں لائے جائیں گے اور اس بات کو بھی جاننے بوجھتے ہوئے کہ اس طرح کے ہتھیاروں سے ساری انسانی نسل کے ختم ہو جانے کا تر ہے، ہم دنیا کی سرکاروں پر زور دیتے ہیں کہ وہ اس بات کو سمجھیں اور کہیں کہ کسی بھی عالم گیر جنگ سے ان کا کوئی مطلب یا ان کی کوئی غرض پوری نہیں ہو سکتی۔ اسی لئے ہم دنیا کی سرکاروں پر زور دیتے ہیں کہ ان کے ایک دوسرے کے ساتھ جو بھی جھگڑے باقی ہیں ان سب کو حل کرنے کے لئے وہ شانتی کے طریقے ہی کام میں لائیں۔“

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

”ہم انسانوں کی حیثیت سے سب انسانوں سے اپیل کرتے ہیں کہ آپ اپنی انسانیت کو یاد رکھیں اور

ہاتھی سب باتیں بھول جائیے۔ اگر آپ ایسا کر سکیں تو ایک نئے سورگ کے لئے دروازہ آپ کے سامنے کھلا ہوا ہے۔ اگر آپ یہ نہیں کر سکتے تو ساری انسانی نسل کی موت کا حق آپ کے سامنے ہے۔

”بہی صاف اور دھڑلے سے سب باتیں ہم آپ کے سامنے رکھ رہے ہیں۔ دنیا اس سب بات سے بے خبر نہیں ہو سکتی۔ سب بات یہ ہے کہ ہم انسانی نسل کو ختم کر دیں گے یا ہم مل جل کر جگہ کو ہماریا کے لیے بڑھائیں گے؟“

پروفیسر رسل نے 9 جولائی کو لندن کے اس جلسے میں کہا کہ وہ اسی دن اوپر کے اس اعلان کی کاپیاں روس، امریکہ، چین، کینیڈا، فرانس اور انگلینڈ کی حکومتوں کے سربراہوں کے پاس بھیج چکے تھے۔

اعلان کے ساتھ ایک ایک چٹھی تھی جس میں ان سربراہوں کے مکہوں سے اور بھی زوردار شدوں میں اپیل کی گئی تھی کہ وہ اپنے اعلان کا جواب دیں کیونکہ ”اس سے زیادہ گہرا سوال آج تک کوئی انسانی نسل کے سامنے نہیں آیا۔“

اعلان کی کاپیاں ایشیا اور یورپ سب جگہ کے بڑے بڑے سائنس دانوں کے پاس بھیجی گئی تھیں۔

پروفیسر آئنسٹائن اور پروفیسر ڈائمن اور شری ہرنسٹ رسل کے علاوہ دنیا کے جن اور بڑے بڑے سائنسدانوں کے اس اعلان پر دستخط تھے وہ یہ تھے:—

(1) پروفیسر پی. ڈبلیو. بریجمن، امریکا کی ہارورڈ یونیورسٹی کے پروفیسر جنہیں فزیکس میں نوبل پرائز ملا تھا۔

(2) پروفیسر ایل. اینکلف، بارسا یونیورسٹی کے پروفیسر، جنہوں نے پروفیسر آئنسٹائن کے ساتھ مل کر ”دی ایوولوشن آف موشن“ نام کی مشہور کتاب لکھی تھی۔

(3) پروفیسر جے. مائلر، جو ماسکو اور ہارت میں دونوں جگہ پروفیسر رہ چکے تھے اور اب امریکا کی انڈیانا یونیورسٹی میں پروفیسر تھے۔ انہوں نے فزیکس اور میتھس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(4) پروفیسر سی. ایف. پاول، برٹش یونیورسٹی کے پروفیسر، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(5) پروفیسر سی. ایف. پاول، برٹش یونیورسٹی کے پروفیسر، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(6) پروفیسر ڈی. کیو. جاپان کی کیوٹو یونیورسٹی میں پروفیسر تھے، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(7) پروفیسر ڈی. کیو. جاپان کی کیوٹو یونیورسٹی میں پروفیسر تھے، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

پروفیسر آئنسٹائن اور شری ہرنسٹ رسل کے علاوہ دنیا کے جن اور بڑے بڑے سائنسدانوں کے اس اعلان پر دستخط تھے وہ یہ تھے:—

(1) پروفیسر پی. ڈبلیو. بریجمن، امریکا کی ہارورڈ یونیورسٹی کے پروفیسر جنہیں فزیکس میں نوبل پرائز ملا تھا۔

(2) پروفیسر ایل. اینکلف، بارسا یونیورسٹی کے پروفیسر، جنہوں نے پروفیسر آئنسٹائن کے ساتھ مل کر ”دی ایوولوشن آف موشن“ نام کی مشہور کتاب لکھی تھی۔

(3) پروفیسر جے. مائلر، جو ماسکو اور ہارت میں دونوں جگہ پروفیسر رہ چکے تھے اور اب امریکا کی انڈیانا یونیورسٹی میں پروفیسر تھے۔ انہوں نے فزیکس اور میتھس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(4) پروفیسر سی. ایف. پاول، برٹش یونیورسٹی کے پروفیسر، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(5) پروفیسر سی. ایف. پاول، برٹش یونیورسٹی کے پروفیسر، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(6) پروفیسر ڈی. کیو. جاپان کی کیوٹو یونیورسٹی میں پروفیسر تھے، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(7) پروفیسر ڈی. کیو. جاپان کی کیوٹو یونیورسٹی میں پروفیسر تھے، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(8) پروفیسر ڈی. کیو. جاپان کی کیوٹو یونیورسٹی میں پروفیسر تھے، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

(9) پروفیسر ڈی. کیو. جاپان کی کیوٹو یونیورسٹی میں پروفیسر تھے، جنہوں نے فزیکس میں نوبل پرائز مل چکا تھا۔

شری برٹریڈ رسل نے کہا کہ "پروفیسر فریڈرک جولیو کیوری کے دستخطوں سے مجھے خاص طور پر خوشی ہوئی کیونکہ وہ ایک مشہور کمیونسٹ ہیں۔" پروفیسر فریڈرک جولیو کیوری ورلڈ پیس کو نسل کے یعنی دنیا بھر کی شانتی پریشد کے صدر ہیں اور دنیا سے جنگ کو ختم کرنے اور شانتی قائم کرنے کے سب سے بڑے کوشش کرنے والوں میں سے ہیں۔

پروفیسر آئنسٹائن کے دستخطوں پر بھی خاص خوشی ظاہر کرتے ہوئے شری برٹریڈ رسل نے کہا کہ اس اعلان پر دستخط کرنا پروفیسر آئنسٹائن کی زندگی کا سب سے آخری کام تھا اور انہوں نے مجھے لکھا کہ "وہ اس اعلان کے ایک ایک شبد سے سہمت ہیں۔"

پروفیسر آئنسٹائن کے دستخطوں پر بھی خاص خوشی ظاہر کرتے ہوئے شری برٹریڈ رسل نے کہا کہ اس اعلان پر دستخط کرنا پروفیسر آئنسٹائن کی زندگی کا سب سے آخری کام تھا اور انہوں نے مجھے لکھا کہ "وہ اس اعلان کے ایک ایک شبد سے سہمت ہیں۔"

شری برٹریڈ رسل نے یہ بھی کہا کہ یہ اعلان سائنس دانوں کی طرف سے کھول پہلا قدم ہے۔ ان کا ارادہ ہے کہ اس کے بعد سب دیشوں اور سب قوموں کے سائنس دانوں کی ایک کانفرنس کی جاوے جس میں دستخط کرنے والوں کی طرف سے اس طرح کا پرستار پیش کیا جاوے۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ "اب ایک بہت بڑے پیمانے پر عام جنگتا میں اس کے لئے آندولن کرنا اوشیک ہے۔" پر اس طرح کے آندولن کا شری گنیش وہ سائنس دانوں سے ہی کرانا چاہتے ہیں۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ: "دنیا کی جنگتا کی رائے کا اثر امریکہ کی سرکار پر بھی پڑا ہے اور وہ سمجھداری کی بات کرنے لگی ہے۔ منہرا خیال ہے کہ اگر امریکہ کی عام جنگتا پر اپنا اچھا اثر نہ ہوتا تو پوری ایشیا کی سمسیاؤں کو حل کرنے میں امریکہ کی سرکار اب تک کچھ ایسی غلطیاں کر بیٹھی ہوتی جو برباد کن ہو تیں۔"

شری برٹریڈ رسل نے یہ بھی کہا کہ یہ اعلان سائنس دانوں کی طرف سے کھول پہلا قدم ہے۔ ان کا ارادہ ہے کہ اس کے بعد سب دیشوں اور سب قوموں کے سائنس دانوں کی ایک کانفرنس کی جاوے جس میں دستخط کرنے والوں کی طرف سے اس طرح کا پرستار پیش کیا جاوے۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ "اب ایک بہت بڑے پیمانے پر عام جنگتا میں اس کے لئے آندولن کرنا اوشیک ہے۔" پر اس طرح کے آندولن کا شری گنیش وہ سائنس دانوں سے ہی کرانا چاہتے ہیں۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ: "دنیا کی جنگتا کی رائے کا اثر امریکہ کی سرکار پر بھی پڑا ہے اور وہ سمجھداری کی بات کرنے لگی ہے۔ منہرا خیال ہے کہ اگر امریکہ کی عام جنگتا پر اپنا اچھا اثر نہ ہوتا تو پوری ایشیا کی سمسیاؤں کو حل کرنے میں امریکہ کی سرکار اب تک کچھ ایسی غلطیاں کر بیٹھی ہوتی جو برباد کن ہو تیں۔"

ساری دنیا کے ان پسند لوگوں کے ساتھ ملکر ہم سائنس دانوں کے اس اعلان اور اس اپیل کا دل سے स्वागत کرتے ہیں۔ ایٹم بموں اور ہائڈروجن بموں کی ایجاد اور دنیا کے بڑے لکھ اور سمجھدار سمجھے جانے والے لوگوں کا انہیں دنیا کی جنگتا پر استعمال کرنے کی سوچنا اور بار بار دھمکی دینا اس بات کو دکھا رہا ہے کہ ہماری آجکل کی سہیتا نہتک یعنی اخلاقی نگاہ سے کتنی نیچے گر چکی ہے۔ ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کی عام جنگتا کے اندر جس آندولن کی شری برٹریڈ رسل نے چڑھا کی ہے اسے جب بھی دنیا کے سائنس دان شروع کریں گے دنیا کی جنگتا اور ہمارے دیش کی جنگتا اس میں پورا پورا سہیوگ دے گی۔ دنیا کے سائنس دانوں کا یہ اعلان سائنس کے لوہر سے سب سے بڑے کلنک کو دھو دینے والا اور سائنس اور سائنس دانوں کی عزت اور ان کی کیرتی کو سہیوگوں کا پڑھا دینے والا ہے۔ دنیا کی آجکل کی سب سے بڑی مصہیت میں یہ اعلان

شری برٹریڈ رسل نے کہا کہ "پروفیسر فریڈرک جولیو کیوری کے دستخطوں سے مجھے خاص طور پر خوشی ہوئی کیونکہ وہ ایک مشہور کمیونسٹ ہیں۔" پروفیسر فریڈرک جولیو کیوری ورلڈ پیس کو نسل کے یعنی دنیا بھر کی شانتی پریشد کے صدر ہیں اور دنیا سے جنگ کو ختم کرنے اور شانتی قائم کرنے کے سب سے بڑے کوشش کرنے والوں میں سے ہیں۔

پروفیسر آئنسٹائن کے دستخطوں پر بھی خاص خوشی ظاہر کرتے ہوئے شری برٹریڈ رسل نے کہا کہ اس اعلان پر دستخط کرنا پروفیسر آئنسٹائن کی زندگی کا سب سے آخری کام تھا اور انہوں نے مجھے لکھا کہ "وہ اس اعلان کے ایک ایک شبد سے سہمت ہیں۔"

شری برٹریڈ رسل نے یہ بھی کہا کہ یہ اعلان سائنس دانوں کی طرف سے کھول پہلا قدم ہے۔ ان کا ارادہ ہے کہ اس کے بعد سب دیشوں اور سب قوموں کے سائنس دانوں کی ایک کانفرنس کی جاوے جس میں دستخط کرنے والوں کی طرف سے اس طرح کا پرستار پیش کیا جاوے۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ "اب ایک بہت بڑے پیمانے پر عام جنگتا میں اس کے لئے آندولن کرنا اوشیک ہے۔" پر اس طرح کے آندولن کا شری گنیش وہ سائنس دانوں سے ہی کرانا چاہتے ہیں۔ انہوں نے یہ بھی کہا کہ: "دنیا کی جنگتا کی رائے کا اثر امریکہ کی سرکار پر بھی پڑا ہے اور وہ سمجھداری کی بات کرنے لگی ہے۔ منہرا خیال ہے کہ اگر امریکہ کی عام جنگتا پر اپنا اچھا اثر نہ ہوتا تو پوری ایشیا کی سمسیاؤں کو حل کرنے میں امریکہ کی سرکار اب تک کچھ ایسی غلطیاں کر بیٹھی ہوتی جو برباد کن ہو تیں۔"

ساری دنیا کے ان پسند لوگوں کے ساتھ ملکر ہم سائنس دانوں کے اس اعلان اور اس اپیل کا دل سے स्वागत کرتے ہیں۔ ایٹم بموں اور ہائڈروجن بموں کی ایجاد اور دنیا کے بڑے لکھ اور سمجھدار سمجھے جانے والے لوگوں کا انہیں دنیا کی جنگتا پر استعمال کرنے کی سوچنا اور بار بار دھمکی دینا اس بات کو دکھا رہا ہے کہ ہماری آجکل کی سہیتا نہتک یعنی اخلاقی نگاہ سے کتنی نیچے گر چکی ہے۔ ہمیں وشواس ہے کہ دنیا کی عام جنگتا کے اندر جس آندولن کی شری برٹریڈ رسل نے چڑھا کی ہے اسے جب بھی دنیا کے سائنس دان شروع کریں گے دنیا کی جنگتا اور ہمارے دیش کی جنگتا اس میں پورا پورا سہیوگ دے گی۔ دنیا کے سائنس دانوں کا یہ اعلان سائنس کے لوہر سے سب سے بڑے کلنک کو دھو دینے والا اور سائنس اور سائنس دانوں کی عزت اور ان کی کیرتی کو سہیوگوں کا پڑھا دینے والا ہے۔ دنیا کی آجکل کی سب سے بڑی مصہیت میں یہ اعلان

پ্রেम और अहिंसा के उन उपदेशों की गूँज मालूम होता है जो महात्मा बुद्ध से लेकर गाँधी जी तक संसार के अनेक सच्चे मार्ग दर्शक दुनिया को देते रहे हैं। हम आशा करते हैं कि दुनिया की सरकारें साइन्सदानों की इस अपील पर पूरा पूरा ध्यान देंगी। इनसानी नसल के भले और उसकी सलामती के नाम पर हम चाहते हैं कि यह अपील पूरी तरह सफल हो।

13-7-55

—सुन्दरलाल

गोआ का सत्याग्रह और उससे सबक

आज भी दुनिया में इस तरह के लोग मौजूद हैं जो दूसरों की राजकाजी या कौमी आजादी के हक को स्वीकार नहीं करते ! कौमों की आजादी के हक के खिलाफ लड़ना आज ऐसा ही है जैसा क्रुदरत के अटल कानूनों से लड़ना या आंधी से भिड़ना। पर तुच्छ और तात्कालिक स्वार्थ हमें अन्धा कर देता है। छोटा सा पुर्तगाल शायद इस मामले में लड़ने की हिम्मत न करता लेकिन दुनिया के साम्राजवादियों यानी दूसरों को गुलाम रखने की इच्छा रखने वालों का गुट अभी टूटा नहीं है। क्रुदरत के कानूनों या इतिहास की शक्तियों को कोई उलट नहीं सकता। पर पुर्तगाल के इस रुख का यह मतलब जरूर है कि अपनी अपनी और दुनिया की आजादी चाहने वालों को अभी कुछ और कुरबानियां करनी होंगी।

जाहिर है कोई भारतवासी ऐसा नहीं हो सकता जिसे गोआ के सत्याग्रह के साथ पूरी हमदर्दी न हो। उन वीरों को जो गोआ के पवित्र और शानदार सत्याग्रह में शरीक हुए हैं और हो रहे हैं, जिनमें से कुछ शहीद भी हो चुके और सैकड़ों ने अकथनीय शारीरिक और मानसिक कष्ट भेले, हम आदर के साथ नमस्कार करते हैं। पुर्तगाली शासकों ने जिस तरह के अमानुषिक अत्याचारों को इन निहत्थे और अहिंसात्मक सत्याग्रहियों पर रवा रक्खा है उनके लिये हमें पुर्तगालियों से कुछ नहीं कहना। हमें विश्वास है कि हमारे देशवासी, पुर्तगाली समझे जाने वाले इलाक़े के अन्दर के हों या उससे बाहर के, इन अत्याचारों के कारन अपने संकल्प में और भी पक्के साबित होंगे रहेंगे।

गोआ के सत्याग्रह में सबसे अधिक खुशी की बात यह हुई कि देश की सब पोलिटिकल पार्टियों के लोग कम्युनिस्ट, जनसंघी, प्रजा सोशलिस्ट और कांग्रेसी उसमें कंधे से कंधा मिला कर भाग लेने के लिये बेचैन हैं और ले रहे हैं। यह सुन्दर घटना दो बातें साबित करती है। एक यह कि विचारों और आदर्शों के बांधे बहुत फरक के होते हुए भी सब पार्टियों के लोग सच्चे, त्यागी और देश भक्त हैं।

پریم اور اہنسا کے اُن اُپدیشوں کی گونج معلوم ہوتا ہے جو مہاتما بدھ سے لے کر گاندھی جی تک سنسار کے انہک سچے مارگ درشک دنیا کو دیتے رہے ہیں۔ ہم آشا کرتے ہیں کہ دنیا کی سرکاری سائنس دانوں کی اس اپیل پر پورا پورا دھیان دینگی۔ انسانی نسل کے بھلے اور اُس کی سلامتی کے نام پر ہم چاہتے ہیں کہ یہ اپیل پوری طرح سہیل ہو۔

—سندرل

13.7.55

گووا کا ستیاگرہ اور اُس سے سبق

آج بھی دنیا میں اِس طرح کے لوگ موجود ہیں جو دوسروں کی راج کاجی یا قومی آزادی کے حق کو سوچا نہیں کرتے! قوموں کی آزادی کے حق کے خلاف لڑنا آج ایسا ہی ہے جیسا قدرت کے اٹل قانونوں سے لڑنا یا آندھی سے بھڑنا۔ پر تھجہ اور تات کاک سوارتہ ہمیں اندھا کر دیتا ہے۔ چھوٹا سا پرتگال شاید اِس معاملے میں لڑنے کی ہمت نہ کرنا لیکن دنیا کے سامراج وادیوں یعنی دوسروں کو غلام رکھنے کی اچھا رکھنے والوں کا گت ابھی توٹا نہیں ہے۔ قدرت کے قانونوں یا انہاس کی شکستوں کو کوئی اُست نہیں سکتا۔ پر پرتگال کے اِس رخ کا یہ مطلب ضرور ہے کہ اپنی اپنی اور دنیا کی آزادی چاہنے والوں کو ابھی کچھ اور قربانیاں کرنی ہونگی۔

ظاہر ہے کوئی بھارت و اسی ایسا نہیں ہو سکتا جسے گووا کے ستیاگرہ کے ساتھ پوری ہمدردی نہ ہو۔ اُن دوسروں کو جو گووا کے پوتر اور شاندار ستیاگرہ میں شریک ہوئے ہیں اور ہو رہے ہیں، جن میں سے کچھ شہید بھی ہو چکے اور سینکڑوں نے اکتھلیہ شاربک اور مانسک کشت جھلے، ہم اُن کے ساتھ نمسکار کرتے ہیں۔ پرتگالی شاسکوں نے جس طرح کے امانشک انتہاچاروں کو اُن نہتے اور افسانمک ستیاگرھیوں پر روا رکھا ہے اُن کے لئے ہمیں پرتگالیوں سے کچھ نہیں کہنا۔ ہمیں وشواس ہے کہ ہمارے دیس و اسی پرتگالی سمجھے جانے والے علانے کے اندر کے عوں یا اُس سے باہر کے، اُن انتہاچاروں کے کارن اپنے سنگلپ میں اور بھی پکے ثابت ہوتے دھینکے۔

گووا کے ستیاگرہ میں سب سے ادھک خوشی کی بات یہ ہوئی کہ دیس کی سب پولیٹکل پارٹیں نے لوگ کمیونسٹ، جن سنکھی، پرچا، سوشلسٹ اور کانگریسی اُس میں کدھے سے کدھا ملا کر بھاگ لینے کے لئے بے چین ہیں اور لے رہے ہیں۔ یہ سندر گھٹنا دو باتیں ثابت کرتی ہے۔ ایک یہ کہ وچاروں اور آدرشوں کے تھڑے بہت فرق کے ہوتے ہوئے بھی سب پارٹیوں کے لوگ سچے، تھائی اور دیس بہت ہیں۔

دوسری یہ کہ کسی بھی کام میں اگر ہم مل جاویں اور ملکر کام کریں تو ہم دیش کو بہت ادھک اونچا اٹھا سکتے ہیں۔

پہلوی شروع سے یہ رائے ہے کہ یہ الگ الگ پارٹیاں دیش کے لئے ضروری نہیں ہیں۔ کم سے کم راج نینک چٹاؤ ان پارٹیوں کے ادھار پر لونا ایک ہماری ہے جو ہمیں یورپ سے لگی ہے۔ انگریزی پڑھے بھارت واسطوں نے انکم بند کر کے اسے حالانکہ جیسے دیشوں سے نقل کر لیا ہے۔ ہمیں اس سے کافی نقصان پہنچتا ہے اور پہنچ رہا ہے۔ ہمیں اس بات کا بھی پورا وشواس ہے کہ ان پارٹیوں کے ایک درجے تک رھتے ہوئے بھی ہم میں اگر ہمت اور سمجھ ہو تو ہم اپنی ودھان سہاؤں کے لئے اس طرح کے آدمی سب کی ملی ہوئی رائے سے چن سکتے ہیں جن کے لئے ہمیں چٹاؤ لڑنے، کروڑوں روپے برباد کرنے اور دیش کے اندر کوہاں بڑھانے کی ضرورت نہ ہو۔ سینٹر میں اور پارٹیوں میں ہم اس طرح کی سرکاریں بھی بنا سکتے ہیں جن میں سب پارٹیوں کے اچھے سے اچھے اور اونچے سے اونچے مسجددار اور چتروان لوگ شامل ہیں۔ اس طرح کی گورنمنٹوں کے سامنے ہم دیش کے پہلے کے اس طرح کے پروگرام بھی آسانی سے رکھ سکتے ہیں جن پر سب سمجھتے ہیں اور ہم جنہیں ملکر پورا کر سکیں۔ گورنمنٹ چلانے کے لئے ایک سرکار پکش اور ایک وردھی پکش ضروری ہیں یہ ایک اندھ وشواس، ایک پاگل پن ہے جو ہم نے دوسروں سے سیکھ لیا ہے۔ نئے چین میں ہمیں سب سے اچھی بات یہی لگی کہ نیا چین لگ بھگ اسی راستہ پر چلا ہے۔ روس کے پچھلے عام چٹاؤ میں وہاں کی کمیونسٹ پارٹی نے جن لوگوں کو نامزد کیا اور وقت دینے دلائے ان میں ساٹھ فی صدی غیر کمیونسٹ تھے۔ ہم اس معاملے میں چین یا روس سے کہیں بڑھکر چل سکتے ہیں بشرطیکہ ہمیں اتنی سمجھ ہو کہ بھلائی اور برائی سب کے اندر ایک برابر ہے، اچھے اور برے سب میں ہیں، ایک بھوکا سب کے اندر ہے۔ جو لوگ متبہدوں سے شروع کرتے ہیں انہیں متبہد ہی دکھائی دیتے ہیں۔ جو ایکٹا دیکھنا چاہتے ہیں ان کی آنکھیں ایکٹا کی ہی سامگری تھوٹتے نکالتی ہیں۔ ہماری بھارت کے لئے ہمیں یہی سب سے اچھا راستہ دکھائی دیتا ہے۔

2-7-55

—سندھرلال

—سندھرلال

2. 7. 55

بی. سی. جی. کا ٹیکا

ہم اس سے انکار نہیں کرتے کہ ہماری آجکل کی سرکار نے جو بے حد سوائے برسر کے ویشی راج کے بعد ہماری پہلی ویشی سرکار ہے کئی اچھے کام کیے ہیں اور کر رہی ہے۔ آساکر اپنے प्रधान منتری پنڈت جواہر لال

بی. سی. جی. کا ٹیکا

ہم اس سے انکار نہیں کرتے کہ ہماری آجکل کی سرکار نے جو تیز سو برس کے ویشی راج کے بعد ہماری پہلی ویشی سرکار ہے کئی اچھے کام کئے ہیں اور کر رہی ہے۔ خاص کر اپنے پردھان منتری پنڈت جواہر لال

نہرو کی ان کوششوں کو جو، وہ دیہی کے اندر امن بلانے رکھتے، تنگ سامہودانک پرور نہیں، جات پات، چھو چھوٹ غلط قسم کی پرائیویٹا آدمی کو ختم کرنے، ایک سچے سکولر یعنی مذہب کے معاملے میں غیر جانب دار راج کی جڑوں کو مضبوط کرنے، دنیا کے دوسرے دیہیوں کے ساتھ پریم سمبندھ قائم کرنے اور ساری انسانی قوم کے لئے جنگ کے خطروں کو کم کرنے اور دھیرے دھیرے ختم کرنے کی ہر رہے ہیں، ہماری زبان اور لیکھنی کبھی بھی سرائے نہیں تھکتی۔ ان سب باتوں میں انہوں نے پچھلے سات برس کے اندر ہماری دیہی کو اونچا اٹھایا ہے اور ایک بڑے درجے تک گاندھی جی کے بتائے آدرشوں کو قائم رکھا ہے۔ لیکن کئی باتوں میں ہماری اچکل کے شامک غلط بھی گئے ہیں اور جا رہے ہیں۔ دیہی کی جنگا کے ہلے کے لئے ہمارا یہ فرض ہے کہ ہم سچائی اور پریم کے ساتھ ان باتوں کے بارے میں بھی اپنے وچار پرکٹ کرتے رہیں۔

اس طرح کی غلطیوں کی ایک مثال ہمارے صحت دہاک کے کچھ کام ہیں۔ گاندھی جی ہمیشہ کہا کرتے تھے کہ ہمارے دیہی کو انگریزی راج سے اتنا خطرہ نہیں ہے جتنا انگریزیت یعنی پچیم کے آنوکوں سے۔ گاندھی جی اپنے ان وچاروں کو تنصہل کے ساتھ بار بار بیان کر چکے ہیں۔ ہم ان دیہی پھکتوں کی جو ہمارے صحت دہاک کے چارچ میں ہیں تھت پر شک نہیں کرتے پر پچیمی طریقوں کا اچت سے ادھک پریم ان سے کئی کام ایسے کرا رہا ہے جو دیہی کے لئے ہائیکر ہیں۔

دیہی بور کے اندر بی۔ سی۔ جی۔ کا زوروں کے ساتھ پرچار ایسا ہی ایک کام ہے۔ بی۔ سی۔ جی۔ سے آج بھارت کے لوگ کافی پرریخت ہیں۔ یہ کچھ پلے ہونے کیڑے ہیں جو سوئی کے ذریعہ آدمیوں اور بچوں کے خون میں داخل کرانے جاتے ہیں تاکہ اُس خون کے اندر جو خاص خاص بیماریوں کے کیڑے ہوں یا آئندہ کبھی پیدا ہو جائیں انہیں یہ بھار کے کیڑے مار کر ختم کر سکیں اور جس کے سوئی بیونگی گئی ہے اُسے ان بیماریوں سے بچا سکیں۔ بی۔ سی۔ جی۔ کا یہ ٹیکہ لوگوں کو خاص کر تپلق سے بچانے کے لئے لگایا جاتا ہے۔ کروڑوں روپیئے کے یہ ٹیکہ یورپ سے خرید کر لائے جا رہے ہیں اور دیہی کے بچوں پر آزمائے جا رہے ہیں۔

اس طرح کے ٹیکے بہت سی بیماریوں کے لئے لگائے جاتے ہیں۔ ان سے بہت سی صورتوں میں ایک درجے تک لاپ بھی ہوتا ہے۔ ان میں شروع کی ایک مثال چیچک کے ٹیکے کی ہے۔ جب کوئی اس طرح کی بیماری کسی خاص علاقے میں زور کے ساتھ پھیلی ہوئی ہو تو اس طرح کے ٹیکے کئی بار اُسے روکنے میں مدد دیتے ہیں۔ پر دھیرے دھیرے یورپ کے سمجھدار ڈاکٹروں نے ہی یہ پتہ لگایا اور دنیا کو بتانا

نہرو کی ان کوششوں کو جو، وہ دیہی کے اندر امن بلانے رکھتے، تنگ سامہودانک پرور نہیں، جات پات، چھو چھوٹ غلط قسم کی پرائیویٹا آدمی کو ختم کرنے، ایک سچے سکولر یعنی مذہب کے معاملے میں غیر جانب دار راج کی جڑوں کو مضبوط کرنے، دنیا کے دوسرے دیہیوں کے ساتھ پریم سمبندھ قائم کرنے اور ساری انسانی قوم کے لئے جنگ کے خطروں کو کم کرنے اور دھیرے دھیرے ختم کرنے کی ہر رہے ہیں، ہماری زبان اور لیکھنی کبھی بھی سرائے نہیں تھکتی۔ ان سب باتوں میں انہوں نے پچھلے سات برس کے اندر ہماری دیہی کو اونچا اٹھایا ہے اور ایک بڑے درجے تک گاندھی جی کے بتائے آدرشوں کو قائم رکھا ہے۔ لیکن کئی باتوں میں ہماری اچکل کے شامک غلط بھی گئے ہیں اور جا رہے ہیں۔ دیہی کی جنگا کے ہلے کے لئے ہمارا یہ فرض ہے کہ ہم سچائی اور پریم کے ساتھ ان باتوں کے بارے میں بھی اپنے وچار پرکٹ کرتے رہیں۔

اس طرح کی غلطیوں کی ایک مثال ہمارے صحت دہاک کے کچھ کام ہیں۔ گاندھی جی ہمیشہ کہا کرتے تھے کہ ہمارے دیہی کو انگریزی راج سے اتنا خطرہ نہیں ہے جتنا انگریزیت یعنی پچیم کے آنوکوں سے۔ گاندھی جی اپنے ان وچاروں کو تنصہل کے ساتھ بار بار بیان کر چکے ہیں۔ ہم ان دیہی پھکتوں کی جو ہمارے صحت دہاک کے چارچ میں ہیں تھت پر شک نہیں کرتے پر پچیمی طریقوں کا اچت سے ادھک پریم ان سے کئی کام ایسے کرا رہا ہے جو دیہی کے لئے ہائیکر ہیں۔

دیہی بور کے اندر بی۔ سی۔ جی۔ کا زوروں کے ساتھ پرچار ایسا ہی ایک کام ہے۔ بی۔ سی۔ جی۔ سے آج بھارت کے لوگ کافی پرریخت ہیں۔ یہ کچھ پلے ہونے کیڑے ہیں جو سوئی کے ذریعہ آدمیوں اور بچوں کے خون میں داخل کرانے جاتے ہیں تاکہ اُس خون کے اندر جو خاص خاص بیماریوں کے کیڑے ہوں یا آئندہ کبھی پیدا ہو جائیں انہیں یہ بھار کے کیڑے مار کر ختم کر سکیں اور جس کے سوئی بیونگی گئی ہے اُسے ان بیماریوں سے بچا سکیں۔ بی۔ سی۔ جی۔ کا یہ ٹیکہ لوگوں کو خاص کر تپلق سے بچانے کے لئے لگایا جاتا ہے۔ کروڑوں روپیئے کے یہ ٹیکہ یورپ سے خرید کر لائے جا رہے ہیں اور دیہی کے بچوں پر آزمائے جا رہے ہیں۔

اس طرح کے ٹیکے بہت سی بیماریوں کے لئے لگائے جاتے ہیں۔ ان سے بہت سی صورتوں میں ایک درجے تک لاپ بھی ہوتا ہے۔ ان میں شروع کی ایک مثال چیچک کے ٹیکے کی ہے۔ جب کوئی اس طرح کی بیماری کسی خاص علاقے میں زور کے ساتھ پھیلی ہوئی ہو تو اس طرح کے ٹیکے کئی بار اُسے روکنے میں مدد دیتے ہیں۔ پر دھیرے دھیرے یورپ کے سمجھدار ڈاکٹروں نے ہی یہ پتہ لگایا اور دنیا کو بتانا

شروع کیا کہ یہ ضروری نہیں ہے کہ کسی خاص بیماری کے ٹیکے سے وہ بیماری رک ہی جائے اور بہت بار ٹیکہ لگانے کے بعد اگر وہ بیماری ہوتی ہے تو کہیں اُدھک خطرناک ثابت ہوتی ہے۔ چیچک کے ٹیکے کے بارے میں اس کی سیکنڈ مثالیں دیکھنے کو ملی ہیں۔ یورپ ہی کے بہت سے دیشوں میں چلنا کی طرف سے اور خود ڈاکٹروں کی طرف سے اس طرح کے ٹیکوں کے خلاف آندولن بھی ہوئے۔ چیچک کے ٹیکے کے خلاف انگلینڈ میں عرصہ ہوا ایک 'نیشنل اینٹی ویکسینیشن لیگ' قائم ہوئی اور اسے پوری کامیابی ملی۔ وہاں چیچک کا ٹیکہ سب بچوں کے لئے لازمی نہیں رہا۔ کم یا زیادہ اسی طرح کی تحریکیں یورپ کے اور دیشوں میں بھی چیچک کے اور دوسرے اسی طرح کے ٹیکوں کے خلاف شروع ہوئیں اور ایک نہ ایک درجہ تک کامیاب ہوئیں۔

دنیا کے بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کی یہ بھی رائے ہے کہ اس طرح کی بیماریوں کا اصلی کارن ارتھک عونا ہے۔ غریبی سب بیماریوں کی جڑ ہے—یانی خاںہ کی کمی اور خاںہ کر پٹھکر خاںہ کی کمی اور جیون کی موٹی موٹی جھری سہولیتوں کا ن ملنا۔ اسیلئے ڈاکٹروں کی رای ہے کہ ان بیماریوں کا असली इलाज और इनकी रोकथाम का असली तरीका जनता की गरीबी को दूर करना है. सबको अच्छा और काफ़ी मात्रा में खाना मिले और जीवन की मामूली सہولیتوں मिलें तो बीमारियाँ अपने आप भाग जाती हैं. बड़े बड़े साइन्सदानों की رای है कि इस तरह की बीमारियों का असली इलाज कमजोर जिस्म के अन्दर बाहर से बीमारियों के जहरीले कीड़ों का दाखिल करना नहीं है बल्कि खून के अन्दर के कुदरती कीड़ों का ख़राक और आराम के जरिये मजबूत करना है. इस विषय पर अमेरिका, इंग्लैण्ड, जर्मनी आदि देशों में हजारों किताबें छप चुकी हैं जिनमें से काफ़ी भारत के बाजारों में भी मिल सकती हैं. पर हमारी हालत यह है कि कभी कभी एक रूसी विद्वान के शब्दों में जिससे हमारी पीकिंग में मुलाकात हुई थी "तरह तरह के कपड़ों से तजरबे करते करते योरप वाले जिन कपड़ों को ग़लत समझ कर उतार कर फेंक देते हैं उन्हें हमारे पच्छिम प्रेमी भारतवासी बड़े शौक से ओढ़ते हैं और ओढ़े फिरते हैं." पच्छिम के व्यापारी भी इस बारे में बहुत होशियार हैं. जो चीज योरप में पुरानी पड़ जाने के कारन नहीं बिकती उसे हमारे जैसे देशों में खपाकर वह आसानी से करोड़ों बना लेते हैं. लगभग यही मामला आजकल कई तरह की बीमारियों के टीकों का है.

पचास साल से ऊपर हुआ जब हमारे अंगरेज हाकिमों ने जबरदस्ती हर हिन्दुस्तानी के प्लेग का टीका लगाने की

شروع کیا کہ یہ ضروری نہیں ہے کہ کسی خاص بیماری کے ٹیکے سے وہ بیماری رک ہی جائے اور بہت بار ٹیکہ لگانے کے بعد اگر وہ بیماری ہوتی ہے تو کہیں اُدھک خطرناک ثابت ہوتی ہے۔ چیچک کے ٹیکے کے بارے میں اس کی سیکنڈ مثالیں دیکھنے کو ملی ہیں۔ یورپ ہی کے بہت سے دیشوں میں چلنا کی طرف سے اور خود ڈاکٹروں کی طرف سے اس طرح کے ٹیکوں کے خلاف آندولن بھی ہوئے۔ چیچک کے ٹیکے کے خلاف انگلینڈ میں عرصہ ہوا ایک 'نیشنل اینٹی ویکسینیشن لیگ' قائم ہوئی اور اسے پوری کامیابی ملی۔ وہاں چیچک کا ٹیکہ سب بچوں کے لئے لازمی نہیں رہا۔ کم یا زیادہ اسی طرح کی تحریکیں یورپ کے اور دیشوں میں بھی چیچک کے اور دوسرے اسی طرح کے ٹیکوں کے خلاف شروع ہوئیں اور ایک نہ ایک درجہ تک کامیاب ہوئیں۔

دنیا کے بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کی یہ بھی رائے ہے کہ اس طرح کی بیماریوں کا اصلی کارن ارتھک عونا ہے۔ غریبی سب بیماریوں کی جڑ ہے—یعنی پھانے لی اور حاص کر پٹھکر پھانے کی کمی اور جیون کی موٹی موٹی جھری سہولیتوں کا نہ ملنا۔ اسی لئے ڈاکٹروں کی رائے ہے کہ ان بیماریوں کا اصلی علاج اور انکی روک تھام کا اصلی طریقہ جتنا ہی غریبی کو دور کرنا ہے۔ سب کو اچھا اور کافی مائرا میں کھانا ملے اور جیون کی معمولی سہولتیں ملیں تو بیماریاں اپنے آپ بھاگ جانی ہیں۔ بڑے بڑے سائنسدانوں کی رائے ہے کہ اس طرح کی بیماریوں کا اصلی علاج کمزور جسم کے اندر باہر سے بیماریوں کے زہریلے کیڑوں کا داخل کرنا نہیں ہے بلکہ خون کے اسرے کے ذریعے کیڑوں کو خوراک اور آرام کے ذریعہ مضبوط کرنا ہے۔ اس وشہ پر امریکہ انگلینڈ جرمنی آدی دیشوں میں ہزاروں ڈابیں چھپ چکی ہیں جن میں سے کافی بھارت کے بازاروں میں بھی مل سکتی ہیں۔ پر ہماری حالت یہ ہے کہ کبھی کبھی ایک روسی وندولن نے شبدوں میں جس سے ہماری پیکنگ میں ملازمت ہوئی تھی "طرح طرح کے کھڑوں سے تجربے کرتے کرتے یورپ والے جن کھڑوں کو غلط سمجھکر اُتار کر پھینک دیتے ہیں انہیں ہمارے پیچہم پریمی بھارت وائی بڑے شوق سے اڑھتے ہیں اڑھتے پھرتے ہیں۔" پیچہم کے بیا پاری بھی اس بارے میں بہت قوشیار ہیں۔ جو چھڑ یورپ میں پرانی پڑ جانے کے کارن نہیں بکتی اسے ہمارے جیسے دیشوں میں کھپا کر وہ آسانی سے کروڑوں بنا لیتے ہیں۔ لگ بھگ یہی معاملہ آجکل کئی طرح کی بیماریوں کے ٹیکوں کا ہے۔

پچاس سال سے اُپر ہوا جب ہمارے انگریز حاکموں نے زبردستی ہر ہندوستانی کے پلیگ کا ٹیکہ لگانے کی

کاروبار شروع کی تھی۔ لوگ مانیہ تلک کی کوششوں اور کچھ نوجوانوں کی قربانیوں نے دیہ کی جلتا کو شروع ہی میں اُس خطرے سے بچا لیا۔

بی. سی. جی. کا ٹیکا اب پورے شہر کے ساتھ دیہ کے بچوں پر آزمایا جا رہا ہے۔ جن مسجددار دیہ بچوں نے اِس کے خلاف آواز اُٹھائی ہے اُن میں سب سے چمکا نام شری سی. راجا گوبالا چاری کا ہے۔ حال میں مدراس میں لکچر دیتے ہوئے اُنہوں نے کہا کہ—”بی. سی. جی. کا پرچار دیہ کے بچوں کے اوپر بیماری کے کیڑوں کی جنگ کو آزمانا ہے۔“ اُنہوں نے یہ بھی کہا کہ—”بی. سی. جی. کے خلاف میں جو رخ لے رہا ہوں وہ کسی روزگاری دشمنی کے کزن نہیں ہے۔ میرا وردہ کسی بھاولاؤں کے ادھار پر بھی نہیں ہے۔ میرے وردہ کے سائنسی کارن ہیں۔ میں نے اِس رش پر بہت کتابیں دیکھیں ہیں اور اُنیں پڑھ کر اِس نتیجے پر پہنچا ہوں کہ بی. سی. جی. کا پرچار بہت بڑی غلطی ہے اور خطرناک ہے... سرکار نے طے کر لیا ہے کہ اِس کے پرچار کو جلتا میں بڑھارے اور لاکھوں بچوں کے جسم میں ایک جانا بوجھا زہر داخل کرے... اب یہ معاملہ ہماری قانون سبھاؤں سے سمجھ رہا ہے۔ یہ اُن سب لوگوں سے سمجھ رہا ہے جو ہمارے شاسن کے لئے ذمہ دار ہیں۔ اِس کا سمجھنا عام جلتا سے ہے، بچوں کے مِل باپ سے ہے اور سب مسجددار آدمیوں سے ہے... ہمارے اِس غلط کام سے جلتا نقصان ہوتا ہے اتنا انٹر راشیہ بدعاشیوں سے بھی نہیں ہوتا۔ ہم جلتا میں بی. سی. جی. کا پرچار اِس لئے کر رہے ہیں کیونکہ ہم ایک خیال کے پیچھے پائل ہو گئے ہیں۔ ہمیں اگر سچائی کی کھوج ہے تو ہمیں ایک یوگی کی طرح بے لگ ہونا چاہئے۔ ہمیں سوچنا ہے کہ کیا بی. سی. جی. کے ٹیکے لگانا مفید ہے اور کیا اِن ٹیکوں سے کوئی نقصان نہیں ہوتا؟ اِس سے کوئی فائدہ نہیں کہ ہم لاکھوں بچوں کے دھولے پھونٹتے پھریں اِس لئے کہ شاید اُن میں سے کچھ کسی بیماری سے بچ جائیں۔ یہ سوچنا بالکل غلط ہے کہ بی. سی. جی. ہندوستان کے لئے ضروری ہے۔ بڑے بڑے مہر اور سائنس دان یہ رائے ظاہر کر چکے ہیں کہ خاص کر جن دیہوں میں لوگوں کو اچھا اور کافی ماترا میں کھانا نہیں ملتا اُن میں بی. سی. جی. کا استعمال خطرناک ہے...”

شری راجا گوبالا چاری نے کوئمبٹور کے سات بچوں کا حال سنایا جن کے بی. سی. جی. لگایا گیا تھا۔ اُن میں کہا جاتا ہے کہ دو اُسی ٹیکے سے مر گئے۔ مدراس ہی کی طرف سے بی. سی. جی. کے کان کچھ بچوں کے اندھے ہو جانے کی خبر بھی اخباروں میں چھپ چکی ہے۔ اِس پر سرکار نے اپنے ڈاکٹروں کی ایک کمیٹی مقرر کی۔ کمیٹی کی رپورٹ پر سرکار نے ایک پریس نوٹ نکال دیا کہ

جین بھڑوں کو نیکسان پھنکا ہے ان کے اس نیکسان کا بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے کوئی سہارا نہیں۔ شری راجا گوبالاچاری نے کہا کہ—”سرکار کے اس پریس نوٹ سے مجھے بڑی نراشا ہوئی ہے۔ میں اسے نہیں مانتا.....“

شری راجا گوبالاچاری کی اس صاف رائے کے بعد ہمیں اس وجہ پر کچھ ادھک کہنے کی اڑشکتا نہیں ہے۔ حال میں بڑے بڑے ہندوستانی روس جا چکے ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ ایک بڑے ہندوستانی نے روس کے صحت منسٹر سے پوچھا—”کیا آپ امریکہ سے دوائیاں خرید کر اپنے یہاں نہیں منگاتے؟“ انہوں نے جواب دیا—”ہم نہ ان کی دوائیاں منگاتے ہیں اور نہ ان کی بیماریاں۔“ یہ جواب کہل ایک مزاقی ہی کا جواب نہ تھا۔ اس میں کافی سچائی چھپی ہوئی ہے۔ ہم بی۔ سی۔ جی۔ جیسے ٹیکوں کو دیش کی جنتا دیش کے بچوں، آئندہ آنے والی نسلوں اور ان سب کی تندرستی کے لئے بہت برا اور خطرناک مانتے ہیں۔ جنتا کی بیماریوں کا اصلی علاج ان میں گندی اور خطرناک دوائیاں ٹھونسنا اور ملک کا بوسہ برباد کرنا نہیں ہے۔ اصلی علاج ہے ایک ایک جھونپڑے کے اندر کام پہنچانا، روزی پہنچانا اور جھون کی وہ سہولتیں پہنچانا جو تندرستی کا سب سے بڑا بوسہ ہوتی ہیں۔

2-7-55

—سندھلال

2. 7. 55

پنجاب کا میڈیکل پریکٹیشنرس بل اور علاج کے الگ الگ طریقے

پنجاب کا میڈیکل پریکٹیشنرس بل اور علاج کے الگ الگ طریقے

ہمارے صحت دہاگ کی غلطیوں میں سے ایک اور بڑی غلطی یہ ہے کہ وہ ایلوپیتھک علاج کا جسے عام طور پر ڈاکٹروں کہتے ہیں اتنا شہدا ہے کہ اس کے سامنے وہ ویدک، یونانی، ہومیوپیتھی، نیچروپیتھی آدی علجون اور ان کے ویدیوں حکیموں اور ڈاکٹروں کو بس چلے تو نہیں رہنے دینا چاہتا۔ یہ بھی ایک خطرناک خطہ ہے۔ دنیا کی ساری سائنس انڈیکشن یعنی تجربوں پر قائم ہے۔ گاؤں گاؤں اور گلی گلی میں ہمارا اور ہمارے جیسے لاکھوں آدمیوں کا یہ تجربہ ہے کہ پرانے دیسی طریقوں کے علجون سے، ہومیوپیتھک دواؤں سے اور قدرتی علاج کے طریقوں سے دیش کے لاکھوں بیمار اچھے ہوتے ہیں اور آسانی سے اور کم خرچ میں اچھے ہوتے ہیں۔ ہمیں یہ بھی معلوم ہے کہ ایلوپیتھک علاج جبکہ اور سب علجون کی طرح بہتوں کو کچھ فائدہ بھی کرتا ہے لاکھوں کو اس سے کافی نقصان بھی پہنچتا ہے۔ دیش واسیوں کو یہ بھی اچھی طرح معلوم ہے کہ ایلوپیتھک کا علاج عام طور پر اتنا مہنگا پڑتا ہے کہ نہ کہول عام جنتا کے لئے ہی بلکہ لاکھوں بلج کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ

ہمارے صحت دہاگ کی غلطیوں میں سے ایک اور بڑی غلطی یہ ہے کہ وہ ایلوپیتھک علاج کا جسے عام طور پر ڈاکٹروں کہتے ہیں اتنا شہدا ہے کہ اس کے سامنے وہ ویدک، یونانی، ہومیوپیتھی، نیچروپیتھی آدی علجون اور ان کے ویدیوں حکیموں اور ڈاکٹروں کو بس چلے تو نہیں رہنے دینا چاہتا۔ یہ بھی ایک خطرناک خطہ ہے۔ دنیا کی ساری سائنس انڈیکشن یعنی تجربوں پر قائم ہے۔ گاؤں گاؤں اور گلی گلی میں ہمارا اور ہمارے جیسے لاکھوں آدمیوں کا یہ تجربہ ہے کہ پرانے دیسی طریقوں کے علجون سے، ہومیوپیتھک دواؤں سے اور قدرتی علاج کے طریقوں سے دیش کے لاکھوں بیمار اچھے ہوتے ہیں اور آسانی سے اور کم خرچ میں اچھے ہوتے ہیں۔ ہمیں یہ بھی معلوم ہے کہ ایلوپیتھک علاج جبکہ اور سب علجون کی طرح بہتوں کو کچھ فائدہ بھی کرتا ہے لاکھوں کو اس سے کافی نقصان بھی پہنچتا ہے۔ دیش واسیوں کو یہ بھی اچھی طرح معلوم ہے کہ ایلوپیتھک کا علاج عام طور پر اتنا مہنگا پڑتا ہے کہ نہ کہول عام جنتا کے لئے ہی بلکہ لاکھوں بلج کے درجے کے لوگوں کے لئے بھی یہ

ناممکن ہے یا برباد کنی ہے۔ سرکاری اسپتالوں کی ہم ان عام برائوں میں یہاں جانا نہیں چاہتے جن سے دیش کا ایک ایک بچہ لگی گئی میں پریشان ہے۔ اسی لئے نئے چین نے ایلو-پیٹیک طریقہ کو اپنے یہاں زیادہ سے زیادہ ترقی دینے کے ساتھ ساتھ دیش کے پرانے علاج کے طریقوں اور سیکڑوں پرانی دواؤں کو بھی نہ کھل زندہ ہی رکھا ہے بلکہ بڑھنے اور ترقی کرنے کا بھی پورا موقع دیا ہے۔ چین کا پرانا طریقہ بالکل ہمارے دیشی طریقہ سے ملتا ہے۔ وہی نبض دیکھنے کا قہنگ، وہی کف، بات، اور پست اور وہی دیشی جڑی بوٹیوں کے کارے۔ چین کی لٹی سرکار نے ان طریقوں کو خوب بڑھایا ہے اور بڑھنے کا موقع دیا ہے۔ انہیں چینی ہمارے ان پرانے اور سستہ طریقوں سے اچھے ہوتے ہیں۔ ہم نے خود پرانے قہنگ کے چینی ویدیوں سے باتوں کی ہیں اور ان کی دواؤں استعمال کی ہیں۔ روس کی سرکار بھی ایلوپیٹیک کے ساتھ ساتھ ہوموپیٹیک کو ترقی دینے کی پوری کوشش کر رہی ہے اور آریکستان میں اس نے سیکڑوں پرانی دواؤں اور جڑی بوٹیوں وغیرہ کی کوچ اور ان سے تجربہ کر کے بڑی بڑی مہاک بیماریوں کو ان کے ذریعہ قابو میں کر لیا ہے۔

حال میں پنجاہ اسٹیٹ اسمبلی کے اندر 'پنجاہ اسٹیٹ مڈیکل پریکٹیشنرس بیل' نام سے ایک نیا کٹانوں پیرا ہوا جس میں ایلوپیٹیک ڈاکٹروں کے علاوہ دوسری طرح کے علاج کرنے والوں کو بھی پنجاہ کے اسپتالوں میں موقعہ دینے جانے کی بات تجویز کی گئی ہے۔ یونین ہیلتھ منسٹر راج کماری امرت کو نے شاملہ میں اس پر بڑی ناراضگی اور غصہ ظاہر کیا اور یہاں تک کہہ ڈالا کہ اگر اس طرح کے غیر سند یافتہ لوگوں کو اسپتالوں میں موقعہ دینے کی تجویز کی گئی تو وہ یونین پریسیڈنٹ سے سفارش کرنیکی کہ وہ اس قانون کو منظور نہ دیں۔ ہم راج کماری بہن سے اچھی طرح پریشان ہیں۔ ہم دہلی گاندھی جی کے چرنوں میں بیٹھے ہیں۔ ہمیں راج کماری بہن کی دیشی بوکنی یا ٹیک نہی میں شک نہیں۔ پر ہم بڑے دم کے ساتھ یہ کہہ بنا نہیں رہ سکتے کہ وہ غریب جننا کے جھوں سے بہت دور چلی گئی ہیں۔ وہ اس پچھمیتا کی ضرورت سے زیادہ وشواسی ہیں جس سے گاندھی جی ملک کو بچانا چاہتے تھے۔ ایلوپیٹیک علاج کا ایک طریقہ ہے، ایک خاص اصول ہے۔ اسے ترقی کا موقعہ ملنا چاہئے۔ پر ایک طریقہ پر اتنا اٹھک وشواس اور علاج کے دوسرے طریقوں پر اور دوسرے اصولوں سے اتنا پرہیز خون غلط اور خطرناک ہے۔ ہمیں اگر دیش کی عام جننا کے ساتھ پریم ہے اور ان کی حالت کو سمجھ کر پریم ہے تو اس دہن کے اندر ہمیں علاج کے ان سب طریقوں کو زندہ رہنے، ترقی کرنے اور جلتا کی سہوا

ناممکن ہے یا برباد کنی ہے۔ سرکاری اسپتالوں کی ہم ان عام برائوں میں یہاں جانا نہیں چاہتے جن سے دیش کا ایک ایک بچہ لگی گئی میں پریشان ہے۔ اسی لئے نئے چین نے ایلو-پیٹیک طریقہ کو اپنے یہاں زیادہ سے زیادہ ترقی دینے کے ساتھ ساتھ دیش کے پرانے علاج کے طریقوں اور سیکڑوں پرانی دواؤں کو بھی نہ کھل زندہ ہی رکھا ہے بلکہ بڑھنے اور ترقی کرنے کا بھی پورا موقع دیا ہے۔ چین کا پرانا طریقہ بالکل ہمارے دیشی طریقہ سے ملتا ہے۔ وہی نبض دیکھنے کا قہنگ، وہی کف، بات، اور پست اور وہی دیشی جڑی بوٹیوں کے کارے۔ چین کی لٹی سرکار نے ان طریقوں کو خوب بڑھایا ہے اور بڑھنے کا موقع دیا ہے۔ انہیں چینی ہمارے ان پرانے اور سستہ طریقوں سے اچھے ہوتے ہیں۔ ہم نے خود پرانے قہنگ کے چینی ویدیوں سے باتوں کی ہیں اور ان کی دواؤں استعمال کی ہیں۔ روس کی سرکار بھی ایلوپیٹیک کے ساتھ ساتھ ہوموپیٹیک کو ترقی دینے کی پوری کوشش کر رہی ہے اور آریکستان میں اس نے سیکڑوں پرانی دواؤں اور جڑی بوٹیوں وغیرہ کی کوچ اور ان سے تجربہ کر کے بڑی بڑی مہاک بیماریوں کو ان کے ذریعہ قابو میں کر لیا ہے۔

حال میں پنجاہ اسٹیٹ اسمبلی کے اندر 'پنجاہ اسٹیٹ مڈیکل پریکٹیشنرس بیل' نام سے ایک نیا قانون پیش ہوا جس میں ایلوپیٹیک ڈاکٹروں کے علاوہ دوسری طرح کے علاج کرنے والوں کو بھی پنجاہ کے اسپتالوں میں موقعہ دینے جانے کی بات تجویز کی گئی ہے۔ یونین ہیلتھ منسٹر راج کماری امرت کو نے شاملہ میں اس پر بڑی ناراضگی اور غصہ ظاہر کیا اور یہاں تک کہہ ڈالا کہ اگر اس طرح کے غیر سند یافتہ لوگوں کو اسپتالوں میں موقعہ دینے کی تجویز کی گئی تو وہ یونین پریسیڈنٹ سے سفارش کرنیکی کہ وہ اس قانون کو منظور نہ دیں۔ ہم راج کماری بہن سے اچھی طرح پریشان ہیں۔ ہم دہلی گاندھی جی کے چرنوں میں بیٹھے ہیں۔ ہمیں راج کماری بہن کی دیشی بوکنی یا ٹیک نہی میں شک نہیں۔ پر ہم بڑے دم کے ساتھ یہ کہہ بنا نہیں رہ سکتے کہ وہ غریب جننا کے جھوں سے بہت دور چلی گئی ہیں۔ وہ اس پچھمیتا کی ضرورت سے زیادہ وشواسی ہیں جس سے گاندھی جی ملک کو بچانا چاہتے تھے۔ ایلوپیٹیک علاج کا ایک طریقہ ہے، ایک خاص اصول ہے۔ اسے ترقی کا موقعہ ملنا چاہئے۔ پر ایک طریقہ پر اتنا اٹھک وشواس اور علاج کے دوسرے طریقوں پر اور دوسرے اصولوں سے اتنا پرہیز خون غلط اور خطرناک ہے۔ ہمیں اگر دیش کی عام جننا کے ساتھ پریم ہے اور ان کی حالت کو سمجھ کر پریم ہے تو اس دہن کے اندر ہمیں علاج کے ان سب طریقوں کو زندہ رہنے، ترقی کرنے اور جلتا کی سہوا

کرنے کے برابر کے موقعہ دینے ہونگے۔ ان الگ الگ طریقوں کے الگ الگ اصولوں، ان کی بیماریوں اور برائوں پر بحث کی یہ جگہ نہیں ہے۔ یورپ اور امریکہ سے نکلنے والی پراسٹیک ڈاکٹروں کی لکھی ہوئی مصحف کے اوپر ہزاروں کتابوں میں سے جس نے کچھ خاص خاص بھی پڑھی ہیں وہ جانتا ہے کہ جرم تہذیبی یعنی خاص کیڑوں سے خاص بیماریوں کے سببہ کے اصول میں اب کافی فرق پڑ چکا ہے۔ کسی بیماری کو دور کرنے کے لئے اب اس بیماری کے کیڑے کا پتہ لگا کر اس کو مارنے کے لئے ایک خاص زہر جسم میں داخل کرنے کی نسبت یہ کہیں ادھک ٹھیک، مفید اور سائنسی طریقہ مانا جاتا ہے کہ پہلے یہ معلوم کیا جائے کہ وہ خاص کیڑا جسم کے اندر بیٹھ اور پنپ کیسے سکا۔ یعنی جسم کی ضروری چیزوں میں یا جسم کے ہیٹنس یعنی سمٹول میں کیا کسی آئی جس سے وہ کیڑا وہاں اپنا کام کر سکا، اور پھر کیڑے کے پیچھے پڑ جانے کی نسبت جسم کی اس کسی کو دور کرنے کی کوشش کی جائے۔ نہیں تو طرح طرح کے کیڑے ہوا کے اندر اور ہزاروں کے جسموں میں بھرے پڑے ہیں۔ کسولی ریسرچ انسٹیٹیوٹ کے اس سے ڈائریکٹر میجر وائس نے ایک مرتبہ ہم سے کہا تھا کہ اگر ہم رستے چلتے فلدسٹ دکانی دینے والے دس آدمیوں کو پکڑ کر اچانک ان کے تھوک یا خون کا امتحان لے لیں تو ان میں سے ادھک تر میں ہمیں طرح طرح کی بیماریوں کے کیڑے ملینگے، لیکن جب تک خون میں خاص طرح کی کمزوری نہ ہو تب تک کوئی کیڑا اثر نہیں کر سکتا۔ یعنی اصلی سوال کیڑوں کے پیچھے جہاد ہونا نہیں ہے بلکہ خون یعنی جسم کی خاص کسی کو دور کرنا ہے۔ اگر ہم اس نگاہ سے دیکھنے کی کوشش کریں تو ہمارے ویدیک، یونانی، ہومیوپیتھی اور نیچروپیتھی کے طریقے آج کے ایلوپیتھی علاج کے طریقے سے کہیں زیادہ ٹھیک اور کہیں زیادہ سائنٹفک ہیں۔ یہ بحث بھی دور کی بحث ہے۔ یہاں ہم دیہی وادیوں کی غریبی اور لاکھوں بیماریوں کے آنے دن کے تجربوں کی بنا پر کیوں اتنا کہنا چاہتے ہیں کہ سرکار کا فرض ہے کہ بنا پکش بات علاج کے سب خاص خاص طریقوں کے ساتھ برابر کا سلوک کرے، سب کے چھوٹے چھوٹے کورسوں والے کالج قائم کرے، جو اسی خاص طریقہ کے ماہروں کے انتظام میں ہوں اور پرائیویٹ پریکٹس میں اور سرکاری اسپتالوں میں سب جگہ سب کو برابر کا موقعہ دے جس سے لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں کا بچا ہو، ملک کا پوسٹ باہر کی تھمتی دواؤں پر خرچ ہوکر ملک کو اور زیادہ غریب اور ہماری فلدسٹوں کو اور زیادہ خراب نہ کرے، اور سائنس کے معاملے میں شری راجا گوپالاچاری کے شبہوں میں ہم یوگی کی طرح بے لاک ہوکر آگے بڑھ سکیں۔

—سندھلال

2-7-55

—سندھلال

2-7-55

کانپور کے مزدوروں کی ہڑتال

کانپور کے مزدوروں کی ہڑتال

کانپور کی کپڑے کی मिलों کے مزدوروں کی ہڑتال کو آج دو مہینے سے اوپر ہو چکا ہے۔ ہڑتال کا کارن مزدوروں، मिल مالिकों और सरकार तीनों के बीच का एक घरेलू झगडा है۔ ہم घरेلو سے इसलिये कहते हैं क्योंकि अभी कुछ दिनों तक इन तीनों को इस देश के अन्दर मिलकर रहना है۔ हमने आशा की थी कि यह आपसी झगडा जल्दी ही तय हो जायगा۔ इसलिये भी हमने अभी तक उस पर कुछ कहना मुनासिब नहीं समझा था۔ पर हड़ताल ने काफी समय ले लिया और काफी दर्दनाक रूप धारण कर लिया۔ आज दो महीने से हज़ारों मज़दूर और उनके लाखों बाल बच्चे भूखे या आधे पेट सोते हैं۔ कानपुर शहर से हमारा पचास बरस का पुराना सम्बन्ध है۔ इसलिये इस हड़ताल के बारे में अपने विचार प्रकट करना हमने अपना धर्म समझा۔

सबसे पहला सवाल 'रैशनलाइजेशन' यानी उस चीज का है जो इस हड़ताल की जड़ है۔ रैशनलाइजेशन आजकल की मशीनी सभ्यता की एक स्वाभाविक कड़ी है۔ मशीनी सभ्यता का रूप ही यह है कि जो काम बहुत से आदमी मिलकर करते हैं वह मशीन के जरिये कम आदमियों के द्वारा पूरा करा लिया जाय۔ मिलों से कपड़ा बुनाई के धन्दे में रैशनलाइजेशन का मतलब यह है कि जिन मशीनों या पुतलियों पर दो या चार आदमी काम करते थे उन पर दो या चार की जगह एक आदमी सारा काम कर सके। इसमें आवश्यक हो जाता है कि उस एक आदमी की सहूलियत के लिये मशीन में कुछ चलट फेर या सुधार कर दिया जावे। इसके लिये उस एक आदमी को कुछ अधिक मज़दूरी भी कहीं कहीं दे दी जाती है। पर इसका कुदरती नतीजा यह है कि बाक़ी आदमी बेकार हो जाते हैं। इसे 'लेबर सेविंग' कहा जाता है, यानी कम मज़दूरों से अधिक काम निकालना।

इस तरह के रैशनलाइजेशन की ज़रूरत उन मुल्कों को होती है जिनमें आदमियों की कमी है और जो अपनी मिलों की पैदावार इसलिये बढ़ाना चाहते हैं ताकि उस पैदावार को दूसरे पिछड़े हुए देशों में बेच कर वहां से धन चूस सकें। यह व्यवस्था पूँजीवादी व्यवस्था है। यही आर्थिक साम्राजवाद की जड़ है। पर जिस देश के अन्दर आदमियों की कमी न हो और करोड़ों इन्सानों की शक्ति बेकारी के कारन पकी सड़ती हो उसमें रैशनलाइजेशन के कोई मानी ही नहीं होते। यह कहना कि रैशनलाइजेशन लोगों की मेहनत बचाने के लिये किया जाता है बहुत बड़ा फ़रेब और

کانپور کی کپڑے کی ملوں کے مزدوروں کی ہڑتال کو آج دو مہینے سے اوپر ہو چکا ہے۔ ہڑتال کا کارن مزدوروں، مل مالکوں اور سرکار تیلوں کے بیچ کا ایک گھریلو جھگڑا ہے۔ ہم گھریلو سے اس لئے کہتے ہیں کیونکہ ابھی کچھ دنوں تک ان تیلوں کو اس دیہی کے اندر ملکر رہنا ہے۔ ہم نے آشا کی تھی کہ یہ آپسی جھگڑا جلدی ہی طے ہو جائیگا۔ اس لئے بھی ہم نے ابھی تک اس پر کچھ کہنا مناسب نہیں سمجھا تھا۔ پر ہڑتال نے کافی مسئلہ لے لیا اور کافی دردناک روپ دھارن کر لیا۔ آج دو مہینے سے ہزاروں مزدور اور ان کے لاکھوں بال بچے بھوکے یا آدھے پیٹ سوئے ہیں۔ کانپور شہر سے ہمارا پچاس برس کا پرانا سبندھ ہے۔ اس لئے اس ہڑتال کے بارے میں اپنے وچار پرکٹ کرنا ہم نے اپنا دھرم سمجھا۔

سب سے پہلا سوال 'ریشنلائزیشن' یعنی اُس چیز کا ہے جو اس ہڑتال کی جڑ ہے۔ ریشنلائزیشن آجکل کی مشینی سہیتا کی ایک سواہواک کڑی ہے۔ مشینی سہیتا کا روپ ہی یہ ہے کہ جو کام بہت سے آدمی ملکر کرتے ہیں وہ مشین کے ذریعہ کم آدمیوں کے دواار پورا کرا لیا جائے: ملوں سے کپڑا بنائی کے دھندے میں ریشنلائزیشن کا مطلب یہ ہے کہ جن مشینوں یا پتلوں پر دو یا چار آدمی کام کرتے تھے ان پر دو یا چار کی جگہ ایک آدمی سارا کام کر سکے۔ اس میں اوشیک ہو جاتا ہے کہ اُس ایک آدمی کی سہولت کے لئے مشین میں کچھ آلت پیپر یا سدھار کر دیا جاوے۔ اس کے لئے اُس ایک آدمی کو کچھ ادھک مزدوری بھی کہیں کہیں دے دی جاتی ہے۔ پر اس کا قدرتی نتیجہ یہ ہے کہ باقی آدمی بیکار ہو جاتے ہیں۔ اسے 'لیبر سیونگ' کہا جاتا ہے، یعنی کم مزدوروں سے ادھک کام نکالنا۔

اس طرح کے ریشنلائزیشن کی ضرورت ان ملکوں کو ہوتی ہے جن میں آدمیوں کی کمی ہے اور جو اپنی ملوں کی پیداوار اس لئے بڑھانا چاہتے ہیں تاکہ اُس پیداوار کو دوسرے پچھڑے ہوئے دیشوں میں بیچکر وہاں سے دھن چوس سکیں۔ یہ ریوستہا پونجی والی ریوستہا ہے۔ یہی آرتھک سامراجیواد کی جڑ ہے۔ پر جس دیہی کے اندر آدمیوں کی کمی نہ ہو اور کروڑوں انسانوں کی شکتی بیکاری کے کلن پڑی سڑتی ہو اُس میں ریشنلائزیشن کے کوئی معلیٰ ہی نہیں ہوتے۔ یہ کہنا کہ ریشنلائزیشن لوگوں کی محنت بچانے کے لئے کیا جاتا ہے بہت بڑا فریب اور

ہوگا ہے۔ اسی طرح کی کوششوں کے لئے مہاتما گاندھی نے ایک جگہ کہا ہے—”یہ لوگ مزدوری بچانے کی کٹنگ کرکٹ کرتے رہتے ہیں یہاں تک کہ ہزاروں آدمی کھلی گلیوں کے اندر فاقہ سے پرے مرنے لگتے ہیں۔“ صاف بات یہ ہے کہ ریشٹلائزیشن کے ذریعہ پیداوار کی بنیادی قیمت کو کم کیا جاتا ہے اور پونجیپتیوں کے منافع کو اور بڑھایا جاتا ہے۔ یہ ریشٹلائزیشن جتنا یا مزدوروں کے ہٹلے کی چیز نہیں ہے۔ ریشٹلائزیشن اُن میں ہولائی کو بڑھانے والی ہے سوائے اُس کے کہ پیداوار کو بڑھانے اور ادھک سے ادھک منافع کمانے کی دھن میں ہم دوسرے غریب دیہیوں پر اپنا آرتھک اور تجارتی پریہتو جمانے کی فکر میں ہوں۔ ہمیں بڑے دھم کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ ہمارے دیہی کے مل مالکوں، پونجیپتیوں اور کچھ سرکاری لوگوں کا رخ ادھر ہی کو مڑا ہوا دکھائی دیتا ہے۔

بمبئی اور احمدآباد کی کچھ ملوں میں یہ ریشٹلائزیشن شروع ہو گیا ہے۔ کانپور میں بھی اُس کو شروع کرنے کی کوشش کی گئی۔ لکھنؤ سوکار کے لوگ اور کانپور کے پونجیپتی اسی کوشش میں شامل تھے۔ کانپور کے کچھ مزدور پریسی اور چننا پریسی دیہی ہیکٹوں نے اُس کا وردہ کیا۔ شری شونرائین ٹنڈن کانپور کے بہت پرشتہت ہواباری اور کانگریس کے سچے سیوک ہیں۔ کانگریس کی طرف سے وہ پارلیمنٹ کے ممبر بھی چلے گئے۔ شری شونرائین ٹنڈن نے ریشٹلائزیشن کا وردہ کیا۔ اُن کے وردہ کی پرواہ نہیں کی گئی۔ یہاں تک کہ اُس وردہ کے کلن ہی اُنہیں کانگریس سے اور پارلیمنٹ کی ممبری سے استعفیٰ دینا پڑا۔ کانپور کی ملوں میں ریشٹلائزیشن زبردستی لانے کی کوشش کی گئی۔ اُس کا قدرتی نتیجہ ہے یہ زبردست ہڑتال۔

جنتا یا مزدور جب کسی چیز کو اپنے اوپر اُتائے سمجھتے ہوں تو اُنہیں شانت اور اہستاتک رہ کر ہڑتال یعنی سٹیاگرہ کرنے اور اپنی سچائی کو ثابت کرنے کے لئے اپنے اوپر کشت جھیلنے کا پورا حق ہے۔ اُس میں شرط قبول ایک ہے اور وہ ہے اُن کا پوری طرح اہستاتک رہنا۔ ہم کانپور کی سوتی مل مزدور سبھا کے نہتا شری راجارام شاستری اور اُن کے ساتھ کے کلم کرنے والوں کو بدھائی دیتے ہیں کہ اُنہوں نے اُس لمبی ہڑتال کو پوری شانتی اور اہستہ کے ساتھ نبھایا۔ دوسری اور سرکار اور مل ملکوں کی طرف سے ہڑتالیوں اور اُنہے نہتاؤں کی گرفتاریوں اور مزدوروں پر زیادتیوں کی خبریں بھی اخباروں میں آتی رہی ہیں۔ کانپور کی جنتا نے جس پریم اور اُدارتا کے ساتھ ہڑتالوں کا ساتھ

دیا ہے اور ان کی مصیبتوں میں ہاتھ بٹایا ہے وہ بھی کانپور کے لئے بڑے گورو کی چیز ہے۔ ہمارا دل اس معاملہ میں کانپور کے مزدوروں اور وہاں کی جنتا کے ساتھ ہے۔

کانپور کے مزدور کافی کھٹ بھگ چکے۔ وہ اپنی سچائی ثابت کر چکے۔ سرکار اور میل مالیکوں کے لئے اب تین ہی راستے ہیں۔ سب سے اچھا انصاف کا اور نیکی کا راستا یہ ہے کہ وہ اپنی ریشیائیوں کی توجہ کو واپس لے لیں، مزدوروں کی مصیبتوں کو ختم کریں اور بالکل پہلے کی طرح پریم کے ساتھ ملکر رہیں اور کام کریں۔ دوسرا راستہ یہ ہے کہ وہ گرفتار نہتوں اور مزدوروں کو رہا کر کے شری راجارام شاستری اور ان کے ساتھیوں کے ساتھ برابری کے ڈھنگ سے ملکر بیٹھیں اور ناکالک صلح کا کوئی راستہ نکالیں۔ تیسرا راستہ یہ ہے کہ وہ اپنی جہدیں ان کو چھوڑ دے اور اپنی شکتی اور پیسہ کے بل مزدوروں اور ان کے نہتوں کو بچا دہانے کی کوشش کرتے رہیں۔

بڑے دھم کی بات ہے کہ ہمارے کچھ شاکس اور پونجی پتوں نے یہ جھوٹی آن انگریز سرکار سے سیکم لی ہے۔ دیہی کی سرکاروں اور دیہی کے پونجی پتوں کو اس سے اوپر اٹھنا چاہئے تاکہ شاکس اور شاست پونجی پتی اور مزدور سب ملکر اس دیہی میں پریم کے ساتھ رہ سکیں۔ ہماری بھگوان سے یہی پرارتنہا ہے کہ وہ ہم سب کو ٹھیک راستہ پر چلنے کی ہمت دے۔ آج کے اخباروں میں خبر چھپی ہے کہ شری راجارام شاستری چیف منسٹر شری سمپورناند سے ملنے نیلی نال جا رہے ہیں۔ ہمیں بڑی خوشی ہوگی اگر ہمارے اس نوٹ کے چھپنے سے پہلے کانپور کا یہ گھریلو جھگڑا انصاف اور پریم کے ساتھ طے ہو چکا ہوگا۔

2-7-55

—سندرلال

سندرلال

2. 7. 55

فیر—اس نوٹ کے چھپنے چھپتے آج یہ خبر ملی کہ ہوتا ہے سمپت ہو گئی۔

پھر—اس نوٹ کے چھپنے چھپتے آج یہ خبر ملی کہ ہوتا ہے سمپت ہو گئی۔

ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

نوٹ:—یہ کتابیں صرف علمی مہم میں

نوٹ:—یہ کتابیں صرف علمی مہم میں

نام کتاب	لکھک	قیمت	نمبر	نام کتاب	لکھک	قیمت	نمبر
1. شہر و شاعری	شری ابودھیہ پرساد گرتیہ	8 0 0	1	2. شہر و شاعری	شری ابودھیہ پرساد گرتیہ	8 0 0	2
3. گھرے پانی پتہ	شری ہندارس داس	2 8 0	3	4. ہمارے آراہیہ	شری ہندارس داس	3 0 0	4
5. سنسکرت	شری جگدیش چندر جین	3 0 0	5	6. دو ہزار دھن پرانی کہانیاں	شری جگدیش چندر جین	3 0 0	6
7. جہان گنگا	شری نارائن پرساد جین	6 0 0	7	8. پتہ چلہ	شری شانتی پریہدویسی	2 0 0	8
9. پنج پردیپ	شری شانتی ایم . اے	2 0 0	9	10. آکھ کے تارے	شری کلہلال مشر پرہار	2 0 0	10
11. مکتی دوت	شری ویرندر کمار جین ایم . اے	0 0 0	11	12. ملن پامنی	شری بچن	4 0 0	12
13. راجت ریشم	ڈاکٹر رامکمار ورمہ	2 8 0	13	14. مہرے ہاپو	شری تلہ بھاریا	2 8 0	14
15. ویرب سچ کی آہ	پنڈت سندھو لال بھگوان داس کھلا	3 0 0	15	16. بھارتیہ ارتہ شاستر	شری بھگوان داس کھلا	0 0 0	16
17. بھارتیہ شاسن	شری بھگوان داس کھلا	3 0 0	17	18. ناگرک شاستر	شری بھگوان داس کھلا	2 4 0	18
19. سامراج اور ان کا پتن	شری بھگوان داس کھلا	2 8 0	19	20. بھارتیہ سوادھیلتا	شری بھگوان داس کھلا	1 4 0	20
21. ساریا بھارتیہ	شری بھگوان داس کھلا	1 8 0	21	22. ہمارے آدم جاتھان	شری بھگوان داس کھلا	3 8 0	22
23. بھارتیہ شاستر	شری بھگوان داس کھلا	2 0 0	23	24. ناگرک شاستر	شری بھگوان داس کھلا	1 8 0	24
25. راجت مڈل شاسن	شری بھگوان داس کھلا	1 8 0	25	26. جوانو	شری بھگوان داس کھلا	3 0 0	26
27. مارنے کی ہمت !	شری بھگوان داس کھلا	1 0 0	27	28. صلونا سچ	شری بھگوان داس کھلا	0 8 0	28
29. مہرے سانی	شری بھگوان داس کھلا	1 0 0	29				

میلنے کا پتہ—

میلنے کا پتہ—

145، جلیانوالہ آباد، لاہور

145، جلیانوالہ آباد، لاہور

सांस्कृतिक साहित्य

सानسकृतिक साहित्य

हजरत मोहम्मद और इस्लाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस्लाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, कीमत—डेढ़ रुपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय किराऊ, कीमत—तीन रुपया

मिलने का पता

मल्ले का पते

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

14 मुट्टीगंज, इलाहाबाद

145 मंथी कंस, अलाहाबाद

हजरत मोहम्मद और इस्लाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस्लाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, कीमत—डेढ़ रुपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय किराऊ, कीमत—तीन रुपया

हिन्दी घर

کتاب خانہ ہندی گھر

کलچر پر ہر तरह کی کتابیں ملنے کا ایک بڑی کےन्द्र—पाठक हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी की अपनी मन-पसन्द किताबों के लिये हमें लिखें।

हमारी नई किताबें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)

लेखक—गान्धीवाद के माने जाने

विद्वान : श्री मंगल अली मोहता

सफे 225, कीमत दो रुपया

—:0:—

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)

लेखिका—क्रुमिया जैदी

भूमिका—पंडित जवाहरलाल नेहरू

मोटा काराण, मोटा टाइप, बहुत-सी रंगीन तस्वीरें

दाम दो रुपया

—:0:—

पंडित सुन्दरलाल जी की लिखी किताबें

गीता और कुरान

275 सफे, दाम ढाई रुपया

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सफे, दाम बाग्रह आन

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक

कीमत बाग्रह आन

पंजाब हमें क्या सिखाता है

कीमत चार आन

बंगाल और उससे सबक

कीमत दो आन

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुटुगेज ईलाहाबाद

اپر ہر طرح کی کتابیں ملنے ایک بڑا کیندر۔ ہاتھک ہندی و انگریزی کی من پسند کتابوں کے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

لیکھک—گاندھی واں کے مانے جانے

ویدوان : شری منگل علی موختہ

صفحہ 225، قیمت دو روپیہ

—:0:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)

لیکھک—کرمیا جیدی

بھومکا—پندت جواہر لال نہرو

موٹا کتاب، موٹا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویروں

دوام دو روپیہ

—:0:—

پندت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور قران

275 صفحہ، دایم تفتانی روپیہ

ہندو مسلم ایکتا

100 صفحہ دایم بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

145، مٹی کنگ آباد

نیا حمنہ

اس نمبر کے खास लेख
वासीम का बीया 'भार'

—डाक्टर भगवानदास

भीयों के बाद ब्राह्मणों का जमाना

—डाक्टर भूपेन्द्रनाथ दत्त

हमारी खुराक में तरकारियों की जगह

—श्रीमती शांता पांडे

उन्नीसवीं सदी के एक कत्तीर की डायरी

—पंडित सुन्दरलाल

जल कन्या के आंसू

—विरबम्बर नाथ पांडे

اس نمبر کے خاص لیکچر
تعلیم کا چوتھا 'آر'

—ڈاکٹر بھگوان داس

موریوں کے بعد براہمنوں کا زمانہ

—ڈاکٹر بھوپندر ناتھ دت

ہماری خوراک میں ترکاریوں کی جگہ

—شریمتی شانتا پانڈے

اُنہیسویں صدی کے ایک کتھری ڈائری

—پنڈت سندر لال

جل کھیا کے آنسو

—ویربمبھر ناتھ پانڈے

इसके अलावा
देस बिदेस के मसलों पर हमारी राय में जरूरी सम्पादकी नोट

عيس بدیس کے مسئلوں پر ہماری رائے میں ضروری سंपادکی نوٹ

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai

Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

نمبر 2 " کھار " جلد 20 سیر

سازمان قلمی اسلامیہ دلی

اگست 1955

مدرسہ ملی سیر سوسائٹی کلاں کلاں

145 سیر، دلی 145 سیر، دلی

کتاب کس سے	صفحہ	سفا
1. تعلیم کا چوتھا 'آر'	61	...
2. مورخوں کے بعد براہمنوں کا زمانہ	67	...
3. بھاشا کا سوال	77	...
4. شیواجی کی مجاہدہ کی نیکی	84	...
5. عالمگیر کا بستیاتی نامہ	87	...
6. شری گھان شکر کرپا شکر پندہ	90	...
7. شریتمی شانتا پانتہ	95	...
8. شریتمی شانتا پانتہ	104	...
9. شریتمی شانتا پانتہ	111	...
10. شریتمی شانتا پانتہ	114	...
11. شریتمی شانتا پانتہ	116	...

وینوہا جی اور زمین کی ملکیت، شری
بی. جی. کھر اور سرکار، بھارت کے
بچے اور بی. سی. جی. کا ٹیکہ، ایک آدرش
گورنر—سندر لال؛ اندھ وشواس کا
انترہ—ستہ دیو وبالکر؛ گوا کی آزادی
کا سوال—وی. نا. پانتہ.

سچنا

سوچنا

اس آئک کا صفحہ نمبر 67 سے لیکر 98 تک
فلٹ ہو گیا ہے۔ وہ اصل میں 77 سے لیکر 108 تک
ہونا چاہئے۔ پانک سٹیج فرسٹ کرلیں۔ اس
نظمی کے لہ ہم چھا چاہئے ہیں—ایڈیٹر.

اس آئک کا سفا نمبر 67 سے لیکر 98 تک
فلٹ ہو گیا ہے۔ وہ اصل میں 77 سے لیکر 108
تک ہونا چاہیے۔ پاٹک سمکھر دھست کر لیں۔ اس
نظمی کے لیے ہم کھما چاہتے ہیں—ایڈیٹر.

लखनऊ का चौथा 'आर'

कानून मंत्रालय

पहले के एक लेख में हम आजकल की पच्छिमी सभ्यता की गिरावट की चर्चा कर चुके हैं। हम दिखा चुके हैं कि धन, राजनीति, संघर्षात्मक, घरेलू जीवन, तालीम, कला और मनोरंजन सब में आज हम ऐसी के साथ बरबादी के गढ़ों की तरह बढ़ते जा रहे हैं। जो बातें हमारे लिए सब से आवश्यक और हमारे भले की हैं उन्हें हम व्यावहारिक यानी घोर अमली समझ बैठे हैं और जो हमें मिटाने वाली हैं उन्हें हम व्यावहारिक यानी अमली समझते हैं।

इस हालत की सबसे बड़ी बिम्बेबारी हमारे साइंसदानों और अभ्यापकों पर है। इस जमाने के वे ब्रान्दण अपने कर्तव्य को भूलकर दुनिया की हालत को ठीक करने की कोशिश करने के बजाय उसे और बिगाड़ने में मग्न देखे हैं। उन्होंने अपने आप को शैतान और शैतान के एजेंटों के हाथ बेच रक्खा है। नतीजा यह है कि हमारा यह उसूल बन गया है कि आज तो स्लाभो पीभो और गुलछरें उड़ाओ, यानी जो थोड़े से लोग भी ऐसा कर सकें, और कल की कल देखी जायगी ! आज की पीढ़ी कल की पीढ़ी के लिये अपने सुख चैन में कमी क्यों करे ? अगली पीढ़ी के लिए धन संपत्ति की जगह हम भारी भारी क्रॉर्जे क्यों न छोड़ जाँय ! यही आजकल के जीवन का फलसफा है। यही हमारे चारों तरफ की नैतिक हवा है। हमारी राजनीति, अर्थनीति और घरेलू जीवन सब इसी के रंग में रंगे हुए हैं। इस पाप और पातालपन का नाम ही हमने सभ्यता यानी तहसीब रख रखा है। इसी को हम उन्नति कहते हैं। कम से कम वे लोगों की उन्नति इसी में समझते हैं जिनके हाथों में आज दुनिया की सत्ता है, यानी जिनके हाथों में धन की बैली और तलवार है।

इसमें भी शक नहीं कि जहाँ तहाँ और सब जगह इसकी प्रतिक्रिया यानी नतीजे दिखाई देने लगे हैं और यह प्रतिक्रिया भी देखी से बढ़ती जा रही है इस प्रतिक्रिया ने सारी दुनिया को हिला बिचा है. सारी दुनिया बेचैन है. इस में बहुत बड़ा इनकलाब हो चुका है. वह इनकलाब हर तरह भले के लिए ही है या हर तरह बुरे के लिए या कुछ जे के लिए और कुछ बुरे के लिए, यह कह सकना भी हर किसी के लिए अप्रत्यान नहीं है. अग्नि यानी आगही हर चीज की इनेशा बलाया असर लाती है. लेकिन

تعلیم کا چوتھا 'آر'

ڈاکٹر بھگوان داس

پہلے کے ایک لاکھ میں ہم آج کل کی پچھلی سہولت کی
گولڈ کی چرچا کرچکے ہیں۔ ہم دیکھا چکے ہیں کہ نئی
'رائٹی'، 'آئیڈل شاسٹر'، 'گھریلو جھوٹ'، 'تعلیم'، 'کلا' اور 'ملوثانہ'
سب میں آج ہم تیزی کے ساتھ پروانسی کے گڑھے کی طرف بڑھ
چکے جارہے ہیں۔ جو باتیں ہمارے لئے سب سے آرشک اور
ہمارے لئے کی ہیں انہیں ہم آریوہارک یعنی غیر علی مستحب
دیکھتے ہیں اور جو ہمیں ملتاے والی ہیں انہیں ہم دیوہارک
یعنی علی مستحب دیکھتے ہیں۔

اس حالت کی سب سے بڑی ذمہ داری ہمارے سائنسدانوں اور ادیبوں پر ہے۔ اس زمانے کے یہ براہمن اپنے کرتوبہ کو بھول کر دنیا کی حالت کو ٹھیک کرنے کی کوشش کرنے کے بجائے اُسے اور بگاڑنے میں مدد دیتے ہیں۔ انہوں نے اپنے آپ کو شیطان اور شیطان کے ایجنٹوں کے ہاتھ بیچ رکھا ہے۔ نتیجہ یہ ہے کہ ہمارا یہ اصول بن گیا ہے کہ آج تو کھلاؤ پیو اور گلچہرے اڑاؤ، یعنی جو تھوڑے سے لوگ بھی ایسا کر سکیں کریں، اور کل کی کل دیہی جائیداد آج کی پیڑھی کل کی پیڑھی کے لئے اپنے سکہ چین میں کسی کہیں کرے؟ اگلی پیڑھی کے لئے دھن سمیٹی کی جگہ ہم بھاری بھاری قرضے کہیں نہ چھوڑ جائیں! یہی آجکل کے چین کا فلسفہ ہے۔ یہی ہمارے چاروں طرف کی ٹینک ہوا ہے۔ ہماری راج نہتی، اڑتہ نہتی، اور گھریلو چین سب اسی کے رنگ میں رنگے ہوئے ہیں۔ اس پاپ اور پاگلپن کا نام ہی ہم نے سمیٹا یعنی تہذیب رک رکھا ہے۔ اسی کو ہم اُنٹی کہتے ہیں۔ کم سے کم وہ لوگ اپنی اُنٹی میں سمیٹے ہیں جن کے ہاتھوں میں آج دنیا کی ستا ہے، یعنی جن کے ہاتھوں میں دھن کی تھیلی اور تلوار ہے۔

اس میں بھی شک نہیں کہ جہاں تہاں اور سب جگہ اسی کی
پرتی کرنا یعنی نتیجہ دہانگی دینے لگے ہیں اور یہ پرتی کرنا بھی توڑی
سے پڑھتی جا رہی ہے۔ اس پرتی کرنا نے ساری دنیا کو ہلا دیا ہے۔
ساری دنیا پر چین ہے، روس میں بھی بڑا انقلاب ہو چکا ہے۔ وہ
انقلاب ہر طرح ہلنے کے لئے ہی ہے یا ہر طرح برے کے لئے یا کچھ
ہلنے کے لئے اور کچھ برے کے لئے، یہ کم سہل نہیں ہے کسی کے لئے کبھی
نہیں ہے۔ اتنی بدلی زیادتی ہر چیز کی ہمشہہ آگیا کرتی ہے لیکن

انسانی سماج کی یہ प्रतिक्रिया बड़ी और फैली जा रही है। यह जरूरी हो सकता है कि इस प्रतिक्रिया के साथ साथ मानव समाज एक सुसीकत से निकलकर दूसरी सुसीकत में आ सके। राजाओं और बादशाहों की तानाशाही और उनके कुत्सों से निकलकर हम सरदारों, सामंतों और कीजी नेताओं के शासन में आए। वहाँ से निकलकर दुनिया पूँजीवाद, पूँजीपतियों और धनलोभी स्वार्थी लोगों के हाथों में गई। इसकी कुदरती प्रतिक्रिया हुई खोरालिफ्म यानी समाजवाद और कम्युनिफ्म यानी साम्यवाद। यह समाजवाद यदि सच्चा समाजवाद न हुआ तो डर है कि हम फिर से सबसे बालाक और सब से चलते हुए लोगों या नेताओं के चक्कर में पड़कर जिसकी लाठी उसकी भैंस के वक़्त में फँस जावें और इतिहास का पुराना रौतानी चक्कर फिरसे शुरू हो जावे।

कोई नहीं चाहता कि ऐसा हो। पर इसके लिए हमें सावधान रहने की जरूरत है। हम इस खतरे से आसानी से बच सकते हैं अगर हमारे साइंसदां और हमारे बच्चों को तालीम देने वाले ईमानदारी के साथ अपने कर्ष का पूरा करें। उनमें साइंस यानी विमारी जानकारी और दीन धर्म यानी नेकी और सबके भले की इच्छा दोनों साथ साथ होनी चाहिए।

इसरी बरस पहले मानव जाति एक तरह के कुदरती कम्युनिफ्म यानी साम्यवाद का जीवन बिताती थी। आदमी मिटोहों में रहते थे। सब संपत्ति सब की होती थी। किसी की कोई अलग संपत्ति न थी। यह हालत हमारी सभ्यता से पहले की हालत थी। इससे निकलकर हम दूजे बड़जे आजकल के हू दूजे के व्यक्तिवाद यानी नफ्सा नफ्सी में पहुँचे। सब अलग अलग, सबमें एक दूसरे के साथ होड़, एक दूसरे से मुकाबला और टक्करें, हरेक में खुदी का बोझाला, फिर वह खुदी चाहे व्यक्तिगत रुप ले चाहे राष्ट्रीय। इस हालत से निकलकर हमें सोच समझ कर पूरी कांशिश के साथ एक ऊँचे इंगकी मिली जुली ज़िंदगी, एक अच्छे सहयोग और समाजवाद की तरफ बढ़ना है। हमारा यह नया समाजवाद एक साइसी योजना के साथ बनना चाहिए। यह बिल्गाक कुदरत जाबरदस्ती का और मशीनी तौर टिकाने साम्यवाद न हो जो हम पर बाहर से लाद दिया गया हो। हमारा यह समाजवाद मानव प्रकृति के अटल नियमों और मानव जीवन के टिकाक आदर्शों के अनुसार होना चाहिए। हम पहले भी इसकी चर्चा कर चुके हैं। यह ठीक है कि आदमी आदमी सब बराबर हैं। यह भी ठीक है कि सब को बराबर के मौके मिलने चाहिए। पर यह भी ठीक है कि आदमियों के अलग अलग स्वभाव,

बहुत सी हैं। ये प्रती किया प्रकृति और पैलती जारी है। ये प्रती किया है कि इस प्रती किया के साथ साथ मानव समाज एक मصلहत से निकलकर दूसरी मصلहत में आ सके। राजाओं और बादशाहों की तानाशाही और उनके कुत्सों से निकलकर हम सरदारों, सामंतों और कीजी नेताओं के शासन में आए। वहाँ से निकलकर दुनिया पूँजीवाद, पूँजीपतियों और धनलोभी स्वार्थी लोगों के हाथों में गई। इसकी कुदरती प्रतिक्रिया हुई खोरालिफ्म यानी समाजवाद और कम्युनिफ्म यानी साम्यवाद। यह समाजवाद यदि सच्चा समाजवाद न हुआ तो डर है कि हम फिर से सबसे बालाक और सब से चलते हुए लोगों या नेताओं के चक्कर में पड़कर जिसकी लाठी उसकी भैंस के वक़्त में फँस जावें और इतिहास का पुराना रौतानी चक्कर फिरसे शुरू हो जावे।

कोई नहीं चाहता कि ऐसा हो। पर इसके लिए हमें सावधान रहने की जरूरत है। हम इस खतरे से आसानी से बच सकते हैं अगर हमारे साइंसदां और हमारे बच्चों को तालीम देने वाले ईमानदारी के साथ अपने कर्ष का पूरा करें। उनमें साइंस यानी विमारी जानकारी और दीन धर्म यानी नेकी और सबके भले की इच्छा दोनों साथ साथ होनी चाहिए।

हजारों बरस पहले मानव जाति एक तरह के कुदरती कम्युनिफ्म यानी साम्यवाद का जीवन बिताती थी। आदमी मिटोहों में रहते थे। सब संपत्ति सब की होती थी। किसी की कोई अलग संपत्ति न थी। यह हालत हमारी सभ्यता से पहले की हालत थी। इससे निकलकर हम दूजे बड़जे आजकल के हू दूजे के व्यक्तिवाद यानी नफ्सा नफ्सी में पहुँचे। सब अलग अलग, सबमें एक दूसरे के साथ होड़, एक दूसरे से मुकाबला और टक्करें, हरेक में खुदी का बोझाला, फिर वह खुदी चाहे व्यक्तिगत रुप ले चाहे राष्ट्रीय। इस हालत से निकलकर हमें सोच समझ कर पूरी कांशिश के साथ एक ऊँचे इंगकी मिली जुली ज़िंदगी, एक अच्छे सहयोग और समाजवाद की तरफ बढ़ना है। हमारा यह नया समाजवाद एक साइसी योजना के साथ बनना चाहिए। यह बिल्गाक कुदरत जाबरदस्ती का और मशीनी तौर टिकाने साम्यवाद न हो जो हम पर बाहर से लाद दिया गया हो। हमारा यह समाजवाद मानव प्रकृति के अटल नियमों और मानव जीवन के टिकाक आदर्शों के अनुसार होना चाहिए। हम पहले भी इसकी चर्चा कर चुके हैं। यह ठीक है कि आदमी आदमी सब बराबर हैं। यह भी ठीक है कि सब को बराबर के मौके मिलने चाहिए। पर यह भी ठीक है कि आदमियों के अलग अलग स्वभाव,

मानवता की इसारी, यानी दुनिया के अधिकतर सभ्य-
जनों ने बाईं देशों की, सारी तालीम बनावटी, वे असर,
मिशनरी, बहिक साक मुक्रसान करने वाली, और हव दर्जे
कामीनी और मैहनी है. हमारे बच्चों के अंदर यह गलत
आदर्श, गलत बिचार और जीवन के गलत मकसद भर
देती है. हम बीचों के बोक के नीचे जो जीवन के केवल
आनन हैं यह जीवन के असली मकसद को ही दबाकर
अनन कर देती है. विस्वावटी और बिलकुल तुच्छ बातों के
बोक से यह जीवन के असली उसूलों को दम घोटकर मार
झटाती है. इसे बड़ी बड़ी लागत की इमारतें चाहिए, बड़ी
बड़ी वनछाहें चाहिए, बेहद मैहगा और तरह तरह का
साज सामान और औजार चाहिए, वह बीचें चाहियें जो
कम से कम एशियाई देशों की बिसाल से कोई सम्बन्ध ही
नहीं रखती. इन सब बातों के होते हुए आजकल की यह
तालीम प्रकृति यानी क्रुदरत से हमें बिलकुल दूर फेंक देती है,
बहाँ तक कि क्रुदरत के अध्ययन यानी मुताले में भी इसने
एक दुर्वनाक बनावटीपन पैदा कर रखा है. इससे अधिकतर
केवल वे लोग पैदा होते हैं जो 'लरनेड प्रोफैशन्स' यानी
बिद्या सम्बन्धी पेशों के लोग कहलाते हैं. यह तालीम न
बच्चों की अलग अलग तबियतों और अलग अलग क्वाब-
लियतों का पता लगा सकती है, न उसे परख सकती है और
न उसे बढ़ने का मौका दे सकती है. इस तालीम में सब
जान बाईस पसेरी के निर्दयी उसूल पर बच्चों की आत्माएँ
कुचल डाली जाती हैं. इस बात की सक्त जरूरत है कि
आजकल की इस तालीम की जगह एक अधिक क्रुदरती,
अधिक काम की और अधिक सस्ती तालीम बच्चों को दी
जावे जो हर लड़के और लड़की को उसके लिए सब से
अच्छे और सब से दिल पसंद काम के क्वाबिल बना दे. वह
तालीम जो बच्चों को जीवन के ठीक ठीक आदर्श बतावे
और हमारी सारी मानव सभ्यता के इजलाक़ी और रुहानी
बावावरण को बदल दे, इससे पहले कि हम बरबाद हों.

اچانک کی باتوں، یعنی دنیا کے ادھکتر سببہ کہلاتے رہتے
 دیہاتوں کی تعلیم بنانوالی، بے اثر، نکمی، بلکہ صاف نقصان
 کربہ والی اور حد درجہ خردچیلی اور مہنگی ہے۔ ہمارے بچوں
 کے لئے یہ غلط آدھی، غلط رچار اور جہون کے غلط مقصد پر
 دینی ہے۔ ان چیزوں کے ہوجے کے لئے بچے جو جہون کے کہل
 سادھن میں یہ جہون کے اصلی مقصد کو ہی دبا کر ختم کر
 دیتی ہے۔ بنانوالی اور بالکل تچہ باتوں کے ہوجے سے یہ جہون
 کے اصلی اصولوں کو دم گھونٹ کر مٹا ڈالتی ہے۔ اسے بڑی بڑی
 لاکھ کی عبارتیں چلے، بڑی بڑی تنخواہیں چاہئے
 پڑھ سہا، اور طرح طرح کا سامان اور اوزار چاہئے، وہ چیزیں
 چاہئیں جو کم سے کم ایشیائی دیہاتوں کی بساط سے کوئی
 سہلہ ہی نہیں رکھتیں۔ ان سب باتوں کے ہوتے ہوئے آجکل
 کی یہ تعلیم پوکری یعنی قدرت سے ہمیں بالکل دور پھینک دیتی
 ہے، پہلی تک کہ قدرت کے اندھوں یعنی مطالعہ میں بھی اس
 نے ایک دردناک بناؤٹی پن پیدا کر رکھا ہے۔ اس سے ادھکتر
 کہل رہے لوگ پیدا ہوتے ہیں جو "لرنڈ پروفیشنز" یعنی ودیا
 سہلہ پڑھوں کے لوگ کہلاتے ہیں۔ یہ تعلیم نہ بچوں کی
 الگ الگ طبیعتوں اور الگ الگ قابلیتوں کا پتہ لگا سکتی ہے
 نہ اسے پرکھ سکتی ہے اور نہ اسے بڑھانے کا موقع دے سکتی ہے۔
 اس تعلیم میں سب دھان بانیس پسیری کے نردئی اصول پر
 بچوں کی آبنائیں کچھ ڈالی جاتی ہیں۔ اس بات کی سخت
 ضرورت ہے کہ آجکل کی اس تہہ کی جگہ ایک ادھک قدرتی
 ادھک کم کی اور ادھک سستی تعلیم بچوں کو دیجئے جو ہر لڑکے
 اور لڑکی کو اس کے لئے سب سے اچھے اور سب سے دل پسند
 کام کے قابل بنادے۔ وہ تعلیم جو بچوں کو جہون کے ٹھیک
 ٹھیک آدھی بتا دے اور ہماری ساری مٹو سہیٹا کے اخلاقی اور
 روحانی روتاروں کو بدل دے، اس سے پہلے نہ ہم برباد ہیں۔
 پچھم کے بڑے بڑے ودوانوں کا دھان ان باتوں کی طرف
 جالے گا ہے۔ ایک بہت بڑے ودوان ایدورہ سیگنٹ، جنکا
 سارا جہون تعلیم کے کسوں میں ہی بیتا لکھا ہے۔ "اگر
 ہم اپنی روزمرہ کی زندگی کی معمولی چیزوں کا اپنے ہاتھوں
 سے ٹھیک ٹھیک اچھک کر سکیں تو ہماری تعلیم پر اس کا بہت
 بڑا اثر پڑ سکتا ہے۔ ان معاملوں میں ہم تعلیم کے ذریعوں اور
 سادھنوں کو تو بہت اچھی طرح یاد رکھتے ہیں لیکن جن
 اصولوں پر ان ذریعوں اور سادھنوں سے کام لینا چاہئے ان
 اصولوں کو بھول جاتے ہیں۔ اصالت یہ ہے کہ وہ اصول ہی
 سب سے زیادہ ضروری ہیں۔ ان اصولوں کو بھول جانا یا ان
 کی طرف سے بے پرواہی کرنا ساری تعلیم کو بگاڑ دیتا ہے۔ یہ
 اصل ہی تعلیم کا فلسفہ ہے۔"

मानवता के पालन के निमित्त प्रेरित है। इन बच्चों को या इस ब्रह्मण्ड को इसलिए अपनी निगाह से अलग कर देते हैं कि या तो उन्हें समझने की वनमें दिमागी क्राय-लियत नहीं होती और या क्रायलियत होते हुए भी सुखभरपी उन्हें बंधा कर देती है। इसी लेखक ने आगे चलकर लिखा है :—“सबसे बड़ी शक्ति जो बच्चों को समाज के अच्छे और कल के अंग बना सकती है प्रेम है। जिस तरह हम बच्चों की देखने सुनने आदि की शक्तियों को बढ़ाते हैं उसी तरह हमें उनके अंदर प्रेम की शक्ति बढ़ानी चाहिए। इसके लिए नए औजारों या नए अध्यापकों की जरूरत नहीं है, जरूरत केवल इसकी है कि हम बच्चों के दिलों पर ठीक असर डालना और उन्हें खिलने का ठीक मौका देना सीखें। बच्चे के दिल में यह बात बैठ जानी चाहिए कि दूसरे मुझसे प्यार करते हैं और इसके बदले में बच्चे में यह उमंग जागनी चाहिए कि वह दूसरों से प्यार करे। यही हमारे तालीम की शुभभाव भी और यही उसका आखिरी मकसद है। साइंस, साहित्य, डाक्टरों, फिलोसोफी सब हमारे बच्चों को कुछ न कुछ फायदा पहुँचा सकती हैं, लेकिन उन्हें मानव समाज का उपयोगी अंग केवल प्रेम ही बना सकता है। इसलिए बच्चों के सच्चे रक्षक और सच्चे बचाने वाले वही हैं जो बच्चों से प्यार करते हैं।” यह प्रेम और इसके साथ मनुष्य स्वभाव के कुछ उसूल ही सच्चे सोशलिज्म यानी समाजवाद की बुनियाद हो सकते हैं। इसलिए दुनिया के सब से बड़े अध्यापक वही हैं जो मनुष्य जाति से सब से अधिक प्रेम करते हैं, यानी उन बड़े बड़े धर्मों के क्रायम करने वाले जो धर्म लोगों को एक दूसरे के साथ और सब को एक ईश्वर अस्ताइ के साथ बाँधते हैं और जिन्होंने अपने अपने समय में नई नई सभ्यताओं को जन्म दिया।

انجیل کے معلم دھرم والے تعلیم کے لیے انھیں کو روکے اس
فلسفہ کو پس لے اپنی نگاہ سے انجیل کو دیکھتے ہیں کہ یا تو
انہیں سمجھنے کی ان میں دماغی قابلیت نہیں ہوتی اور
یا قابلیت ہوتے ہوئے بھی خود غرضی انہیں اندھا کر دیتی
ہے۔ اس لیے کہ لے آئے چل کر کہا ہے:—”یہ سب سے بڑی
شکلی جو بچوں کو سناچ کے اچھے اور کام کے انگ بنا سکتی
ہے پریم ہے۔ جس طرح ہم بچوں کی دیکھنے والی آنکھ کی
شکلیوں کو بڑھاتے ہیں اسی طرح ہمیں ان کے اندر پریم کی
شکلی بڑھانی چاہئے۔ اس کے لئے نئے اور آوازوں یا نئے اندھیانوں
کی ضرورت نہیں ہے۔ ضرورت کیوں انہی ہے کہ ہم بچوں
کے دلوں پر ٹھیک اثر ڈالنا اور انہیں کھلنے کا ٹھیک موقع
دینا سمجھیں۔ بچے کے دل میں یہ بات بیٹھ جانی چاہئے کہ
دوسرے مجھ سے پیار کرتے ہیں اور اس کے بدلے میں مجھ
میں یہ امنگ جاگنی چاہئے کہ وہ درسوں سے پیار کرے۔
یہی ہماری تعلیم کی شروعات تھی اور یہی اس کا آخری مقصد
ہے۔ سائنس، ساہتہ، ڈانسی، فلسفی سب ہمارے بچوں کو
کچھ نہ کچھ فائدہ پہنچا سکتی ہیں، لیکن انہیں مانو سناچ
کا آپہرگی۔ انگ کیوں پریم ہی بنا سکتا ہے۔ اس لئے بچوں
کی سچے رشک اور سچے بچانے والے وہی ہیں جو بچوں سے
پیار کرتے ہیں۔“ یہ پریم اور اس کے ساتھ منہس سہاؤ کے کچھ
اصول ہی سچے سوشائزم یعنی سناچ وان کی بنیاد ہو سکتے ہیں۔
اس لئے دنیا کے سب سے بڑے اندھیانک وہی ہیں جو منہسہ
جاتی سے سب سے ادھک پریم کرتے ہیں، یعنی ان بڑے بڑے
دھرموں کے قائم کرنے والے جو دھرم لوگوں کو ایک دوسرے کے ساتھ
اور سب کو ایک ایشور اللہ کے ساتھ بانڈھتے ہیں اور جنہوں نے
اپنے اپنے سمجھ میں نئی نئی سہیتاؤں کو جنم دیا۔
امرسن نے کہا ہے:—”سب پریم کے حوالے کر دو۔ اس پر
پورا بھروسہ کرو۔ پریم ہی ایشور ہے۔ پریم کے لئے آسمان کے سب
دروازے کھلے ہوئے ہیں۔“

جس طرح کہیں سائنس کا نام لیا جائے گا، سماجवाद اور سماج کے اندر کی باتوں کی ہی مراد سے مراد ہو جائے گی۔

آج کل دنیا میں سماجवाद اور سائنس کا نام لیا جائے گا، سماج کے اندر کی باتوں کی ہی مراد سے مراد ہو جائے گی۔ سماجवाद اور سائنس کا نام لیا جائے گا، سماج کے اندر کی باتوں کی ہی مراد سے مراد ہو جائے گی۔ سماجवाद اور سائنس کا نام لیا جائے گا، سماج کے اندر کی باتوں کی ہی مراد سے مراد ہو جائے گی۔

جو انجیلاپک یہ چاہتا ہے کہ وہ مانو سماج میں اس طرح کی سہولت کے پہلے میں مدد دے سکے اس کے لئے ضروری ہے کہ پہلے وہ اس امکان کو اپنے اندر اٹھائے۔ اسی سے اس کے اندر سب طرح کے سچے وچار اور سچے بہاؤ پیدا ہونگے۔ اسی کے انوسار وہ بچوں کو تعلیم دینا اور بچوں کے دلوں میں آتما کی اس امکان کے بہاؤ کو جگاویگا۔ اس طرح کی تعلیم سے ہی ہماری سہولت سچی سماج وادی سہولت ہو سکتی ہے۔ دھارمک شکشا یعنی مذہبی تعلیم کا یہی مطلب ہے۔ پلندہ پرہتوں اور ملا پادریوں کے سوارتم اور ان کی غلطیوں کے کرن آج بہت سے لوگوں کو دھرم یا مذہب کے نام سے چڑھ ہو گئی ہے۔ اس لئے ہم ایسی تعلیم کو آدھیاتمک یا روحانی تعلیم بھی کہہ سکتے ہیں، انگریزی تعلیم کی ہلکا اکثر لوگ تین آر بتاتے ہیں (لکھنا، پڑھنا اور حساب)۔ اگر ہم انگریزی میں تعلیم کو (R) کہیں تو ریاضی کا آر (R) تعلیم کا چوتھا آر (R) ہونا چاہئے اور باقی تینوں 'آر' سے یہ کہیں زیادہ اہم اور ضروری ہے۔

جو انجیلاپک یہ چاہتا ہے کہ وہ مانو سماج میں اس طرح کی سہولت کے پہلے میں مدد دے سکے اس کے لئے ضروری ہے کہ پہلے وہ اس امکان کو اپنے اندر اٹھائے۔ اسی سے اس کے اندر سب طرح کے سچے وچار اور سچے بہاؤ پیدا ہونگے۔ اسی کے انوسار وہ بچوں کو تعلیم دینا اور بچوں کے دلوں میں آتما کی اس امکان کے بہاؤ کو جگاویگا۔ اس طرح کی تعلیم سے ہی ہماری سہولت سچی سماج وادی سہولت ہو سکتی ہے۔ دھارمک شکشا یعنی مذہبی تعلیم کا یہی مطلب ہے۔ پلندہ پرہتوں اور ملا پادریوں کے سوارتم اور ان کی غلطیوں کے کرن آج بہت سے لوگوں کو دھرم یا مذہب کے نام سے چڑھ ہو گئی ہے۔ اس لئے ہم ایسی تعلیم کو آدھیاتمک یا روحانی تعلیم بھی کہہ سکتے ہیں، انگریزی تعلیم کی ہلکا اکثر لوگ تین آر بتاتے ہیں (لکھنا، پڑھنا اور حساب)۔ اگر ہم انگریزی میں تعلیم کو (R) کہیں تو ریاضی کا آر (R) تعلیم کا چوتھا آر (R) ہونا چاہئے اور باقی تینوں 'آر' سے یہ کہیں زیادہ اہم اور ضروری ہے۔

جو انجیلاپک یہ چاہتا ہے کہ وہ مانو سماج میں اس طرح کی سہولت کے پہلے میں مدد دے سکے اس کے لئے ضروری ہے کہ پہلے وہ اس امکان کو اپنے اندر اٹھائے۔ اسی سے اس کے اندر سب طرح کے سچے وچار اور سچے بہاؤ پیدا ہونگے۔ اسی کے انوسار وہ بچوں کو تعلیم دینا اور بچوں کے دلوں میں آتما کی اس امکان کے بہاؤ کو جگاویگا۔ اس طرح کی تعلیم سے ہی ہماری سہولت سچی سماج وادی سہولت ہو سکتی ہے۔ دھارمک شکشا یعنی مذہبی تعلیم کا یہی مطلب ہے۔ پلندہ پرہتوں اور ملا پادریوں کے سوارتم اور ان کی غلطیوں کے کرن آج بہت سے لوگوں کو دھرم یا مذہب کے نام سے چڑھ ہو گئی ہے۔ اس لئے ہم ایسی تعلیم کو آدھیاتمک یا روحانی تعلیم بھی کہہ سکتے ہیں، انگریزی تعلیم کی ہلکا اکثر لوگ تین آر بتاتے ہیں (لکھنا، پڑھنا اور حساب)۔ اگر ہم انگریزی میں تعلیم کو (R) کہیں تو ریاضی کا آر (R) تعلیم کا چوتھا آر (R) ہونا چاہئے اور باقی تینوں 'آر' سے یہ کہیں زیادہ اہم اور ضروری ہے۔

جو انجیلاپک یہ چاہتا ہے کہ وہ مانو سماج میں اس طرح کی سہولت کے پہلے میں مدد دے سکے اس کے لئے ضروری ہے کہ پہلے وہ اس امکان کو اپنے اندر اٹھائے۔ اسی سے اس کے اندر سب طرح کے سچے وچار اور سچے بہاؤ پیدا ہونگے۔ اسی کے انوسار وہ بچوں کو تعلیم دینا اور بچوں کے دلوں میں آتما کی اس امکان کے بہاؤ کو جگاویگا۔ اس طرح کی تعلیم سے ہی ہماری سہولت سچی سماج وادی سہولت ہو سکتی ہے۔ دھارمک شکشا یعنی مذہبی تعلیم کا یہی مطلب ہے۔ پلندہ پرہتوں اور ملا پادریوں کے سوارتم اور ان کی غلطیوں کے کرن آج بہت سے لوگوں کو دھرم یا مذہب کے نام سے چڑھ ہو گئی ہے۔ اس لئے ہم ایسی تعلیم کو آدھیاتمک یا روحانی تعلیم بھی کہہ سکتے ہیں، انگریزی تعلیم کی ہلکا اکثر لوگ تین آر بتاتے ہیں (لکھنا، پڑھنا اور حساب)۔ اگر ہم انگریزی میں تعلیم کو (R) کہیں تو ریاضی کا آر (R) تعلیم کا چوتھا آر (R) ہونا چاہئے اور باقی تینوں 'آر' سے یہ کہیں زیادہ اہم اور ضروری ہے۔

میریوں کے باء براہمنوں کا زمانا

میریوں کے بعد براہمنوں کا زمانا

ڈاکٹر مہنڈرا ناٹھ دت

ڈاکٹر مہنڈرا ناٹھ دت

184 ع۔ پور میں میریوں کے براہمن سہاپتی پوشہ متر سنگ نے راجا پرہتر کو مارکر میریہ سنگھس پر قبضہ کر لیا۔ پوشہ متر کے سنگھس پر بیٹھے ہی براہمن دہدے کی ایسی پوروشتر پہا براہمن تھا جو کہی کسی راج سنگھس پر بیٹھا اور اس کے بعد سے براہمنوں کی گنتی بھی شاکسورن میں ہونے لگی۔ ایتھاسک ایتھ ملتا ہے کہ اس گنتی کی پانچ میں پوشہ متر نے اشومہدہ بیکہ کا ساروہ کیا۔ اس بیکہ کے آہوجن سے پوشہ متر کا ارادہ شاید ویدک کرم کاٹنے کو پھر سے چالو کرنا رہا ہوگا۔ مناجو شری مول کلپ کا ہودہ لیکھک لکھتا ہے کہ سنگھس پر بیٹھے کے بعد پوشہ متر نے ہودہ میں کو گروا دیا ہودہ اُسمرنی چنہوں کو برہا کر دیا اور بڑے بڑے سچتر ہودہ بیکوں کو قتل کر دیا۔*

اس سبب میں ایتھاسک متبہد ہے کہ پوشہ متر کی ترقی کہاں تک براہمنوں کے دہدے کا نتیجہ تھا۔ اس میں کوئی سلبہ نہیں کہ ہودہ سنگا کے خلف براہمنوں کی پرکھریا اس سے اپنی چرم سہا پر پھونچی جب بلخ کے یونانی راجہ مہاندہ نے بھارت پر چڑھائی کر کے ساکت (اردہ) تک کے پردیشوں پر قبضہ کر لیا۔ اس منوریکھانک موقع سے فائدہ اٹھاکر سارا خیمارہ سمرات اشوک کے اُترادھیکاری کے سر پر ڈال دیا گیا جو اپنے مہاں پوروج کے آدیش کے آنوسار دشمن کو طاقت سے جیتنے کے مقابلے میں پریم سے جیتنے کا قایل تھا۔

سنگ سہاپتی کے ٹہرتو میں براہمنوں کی اس پرکھریا کو سورگہ شری جیسوال نے روزی رانی پرتی کرانتی کے نام سے پکارا ہے۔ اس پرتی کرانتی (Counter Revolution) کی پوری تصدیق اسے 'مانوہ دہرمشااستر' میں ملاتی ہے۔ اسی مانوہ دہرمشااستر کو 'مانوسمیت' کہا جاتا ہے۔ شری جیسوال کے آنوسار یہ دہرم شااستر پوشہ متر کے سے لکھا گیا

*—Jayaswal—"An Imperial History of India". p. 18.

—H. C. Rai Chaudhari—"Political History of Ancient India"

—Jayaswal—"Manu and Jagnyavalkya.", pp. 40-41.

और इस अवस्था की व्यवस्थाओं को देखते हुए पता चलता है कि यथार्थ एक उदरव्यय पुण्यमित्र के विश्वासघात का निमित्त समर्थन भी था.३ 'नारव स्थिति' के अनुसार इसका एकमात्र सुमति भार्गव नामक व्यक्ति था.३ या कम से कम अपने पुरानी 'अनुस्थिति' में इतिहासी नई व्यवस्थाएं स्थापित कर हीं. यही एक कारण हो सकता है जिससे हमें अनुस्थिति के अन्दर अलग अलग व्यवस्थाओं में अवरुद्ध निर्देश का आभास होता है !

जो अन्वदी भी ध्यान से इस 'मानव धर्मशास्त्र' को पढ़ेगा उसे साफ़ साफ़ दिखाई दे जायगा कि इस धर्मशास्त्र में औदिस्य के धर्मशास्त्र और मौर्यों के शासन नियमों का बिलकुल ब्याख्या कर दिया. इसके सफ़ों में नीचे के तीन वर्णों को तरफ़ नकरत भरी हुई है. शूद्रों के प्रति और दूसरे वर्णों के प्रति इसकी नकरत बिलकुल साफ़ है.† जायसवाल इस बात को नज़र करते हैं कि इस मानव धर्मशास्त्र के अन्दर "राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक द्वेषभाव भरा हुआ है." हो सकता है कि इसीलिए इस धर्मशास्त्र को इतना मान और इतनी प्रतिष्ठा मिली. इतनी शीघ्रता के साथ जो यह मान लिया गया उसका सबब यह हो सकता है कि राजा ने इसे अपनी स्वीकृति दी और यह सुंग राज्य का माना हुआ व्यवस्था-शास्त्र हो गया. ४९

मानव धर्मशास्त्र या मनुस्मृति की छानबीन करने पर इसमें आपको इस प्रकार की व्यवस्था मिलेगी कि किन क्षत्रियों में आप किस प्रकार के राजा को नष्ट कर सकते हैं (7-27, 28, 111) शायद पुण्यमित्र के विरवासपात को आपका करार देने के लिये ही यह व्यवस्था हो. फिर यह शास्त्र शूद्रों के खिलाफ खिलाफ है. इसमें ब्राह्मणों को आदेश है कि वे शूद्र राजाओं के राज्य में न रहें (4-61) कोई शूद्र न्यायाधीश नहीं हो सकता (8-20). मौर्य जमाने में शूद्रों के खिलाफ ऐसी कोई रकबाट न थी. इस शास्त्र के अनुसार जिस राज्य में बहुत बड़ी ताबाद में पड़े लिये शूद्र रहते हैं और जहाँ द्विज नहीं रहते वहाँ अकाल और तरह तरह की बीमारियाँ हो जाती हैं और वह राज्य बहुत जल्दी नष्ट हो जाता है (8-22). यह व्यवस्था साफ साफ मौर्य राज्य के विरुद्ध थी. इस शास्त्र के शुरु के श्लोकों में ब्राह्मणों को शूद्र कियों से विवाह की इजाजत थी (3, 12-13). लेकिन बाद के श्लोकों में यह इजाजत वापस ले ली गई (3, 14-10). इसमें लिखा है—“इतिहास और कथाओं में कहीं इस बात का जिक्र नहीं है कि ब्राह्मणों और क्षत्रियों ने आपत् काल

8-Ibid.

~~†~~ Ibid—p. 199.

7—Jayaswal, *of. cit.* pp. 40-41

میں بھی شدر استریوں سے رواہ کیا ہو (8-14)۔" یہ کیتنی
 انیتھادیک بات ہے! پورانے इतिहास में और अर्थशास्त्र में
 असर्वथ विवाह के काफी उल्लेख मिलते हैं (अर्थशास्त्र
 भाग 3, अध्याय 7-164). मानव धर्मशास्त्र में एक जगह
 लिखा है—“दासी के पुत्र उसके स्वामी की सम्पत्ति हैं”
 (9-55). अर्थात् यह धर्मशास्त्र पशुओं, घोड़ों और गुलाम
 मनुष्यों की औलाद में कोई फर्क नहीं करता. इसके विपरीत
 अर्थशास्त्र में साफ लिखा है कि दासी पुत्र भी ‘आर्य’
 है. सम्राट अशोक ने इस बात का ऐलान किया था कि
 कानून की नजर में ब्राह्मण और शूद्र सब बराबर हैं, किन्तु
 मानव धर्मशास्त्र ने सम्राट अशोक की इस व्यवस्था को रद्द
 करके एक ही जुर्म में ब्राह्मणों और शूद्रों के लिये अलग
 अलग सजाओं की व्यवस्था कर दी. मानव धर्मशास्त्र के
 अनुसार यदि कोई द्विज किसी शूद्र के साथ जालिमाना बर्ताव
 करता है तो उसे कम सजा मिलेगी, किन्तु यदि कोई शूद्र
 किसी द्विज के साथ ऐसा बर्ताव करता है तो उसे ज्यादा
 सजा मिलेगी (8-267, 277; 866-376). इसके अनुसार
 ब्राह्मणों का पुराना दबदबा फिर कायम हो गया. किन्तु
 शूद्रों के प्रति बैरभाव की चरम सीमा उस समय पहुंची जब
 यह व्यवस्था दी गई कि—“यदि कोई शूद्र किसी द्विज को
 गाली दे तो उसकी जीभ काट ली जाय, क्योंकि वह नीच है
 (8-270).† इसके विपरीत अर्थशास्त्र कहता है कि—“राजा
 ऐसे पुरोहित को बरखास्त कर दे जो आज्ञा देने पर भी
 किसी अयाज्य को वेद पढ़ाने से इनकार करता है, या जो
 किसी अयाज्य के यज्ञ में शामिल होने से इनकार करता है
 (अर्थशास्त्र भाग 1, अध्याय 10-16). अर्थशास्त्र की इस
 व्यवस्था के अनुसार शूद्रों को वेद पढ़ने और यज्ञ करने
 दोनों का हक् था. मानव धर्मशास्त्र ने इस अधिकार को छीन
 लिया. यही नहीं, आगे चलकर मानव धर्मशास्त्र कहता
 है—“यदि कोई शूद्र किसी द्विज के नाम और जाति की
 चरचा अपमानजनक शब्दों में करता है तो दस अंगुल
 लम्बी लोहे की कील उसके मुंह में घुसेड़ देनी चाहिये”
 (8-271). एक दूसरी जगह लिखा है—“यदि कोई अद्विज
 घमण्ड के साथ किसी ब्राह्मण को उसके कर्तव्य का बोध
 कराये तो राजा को ऐसे अद्विज के मुंह और कान में जलता
 हुआ गरम तेल डलवा देना चाहिये” (8-272). एक और
 जगह लिखा है—“शरीर के जिस अंग से कोई शूद्र ऊंची
 जाति वाले को चोट पहुँचाये उस शूद्र के उस अंग को काट
 डालना चाहिये. यह मनु की शिक्षा है” (8-279). वर्ण
 व्यवस्था का इससे ज्यादा खौफनाक रूप और क्या हो
 सकता है ?

میں بھی شدر استریوں سے رواہ کیا ہو (8-14)۔“ یہ
 کیتی انتھادیک بات ہے! پورے ایتھاس میں اور ارتھ
 شاستر میں اسورن رواہ کے کافی آیتھ ملتھ ہیں (ارتھ
 شاستر بھاگ 3, ادھیائ 7-164). مانو دھرم شاستر میں ایک جگہ
 لکھا ہے—“داسی کے پتر اُس کے سوامی کی سمپتی ہیں”
 (9-55). ارتھات یہ دھرم شاستر یشوؤں، گھوڑوں اور غلم منشیوں
 کی اولاد میں کوئی فرق نہیں کرتا. اِس کے وپریت ارتھ شاستر
 میں صُف لکھا ہے کہ داسی پتر بھی ‘آریہ’ ہے. سمرات اشوک
 نے اِس بات کا اتھن کیا تھا کہ قانون کی نظر میں براھمن اور
 شدر سب برابر ہیں، کتو مانو دھرم شاستر نے سمرات اشوک
 کی اِس ویوستھا کو رد کر کے ایک ہی جرم میں براھمن اور
 شدروں کے لٹھ الگ الگ سزائوں کی ویوستھا کردی. مانو
 دھرم شاستر کے اُنوسار یدی کوئی دونج کسی شدر کے ساتھ
 ظالمانہ برتاؤ کرتا ہے تو اُسے کم سزا ملیگی، کتو یدی کوئی
 شدر کسی دونج کے ساتھ ایسا برتاؤ کرتا ہے تو اُسے زیادہ سزا
 ملیگی (8-267, 277; 866-376). اِس کے اُنوسار براھمنوں
 کا پُرانا دبدبہ پھر قائم ہو گیا. کتو شدروں کے پرنی پتر بھاؤ
 کی جرم سزا اُس سے پہونچی جب یہ ویوستھا دی گئی کہ
 —“یدی کوئی شدر کسی دونج کو گالی دے تو اُس کی
 جیہ کاٹ لی جائے، کیونکہ وہ نیچ ہے.† اِس کے وپریت
 ارتھ شاستر کہتا ہے کہ—“راجہ ایسے پروھت کو برخاست کر دے
 جو آگیاں دیلے پر بھی کسی ایاجیہ کو وید پڑھانے سے انکار کرتا ہے، یا
 جو کسی ایاجیہ کے یکیہ میں شامل ہونے سے انکار کرتا ہے
 (ارتھ شاستر بھاگ 1, ادھیائ 10-16). ارتھ شاستر کی اِس
 ویوستھا کے اُنوسار شدروں کو وید پڑھنے اور یکیہ کرنے دونوں کا
 حق تھا. مانو دھرم شاستر نے اِس ادھیکار کو چھین لیا. یہی
 نہیں، آگے چلکر مانو دھرم شاستر کہتا ہے—“یدی کوئی شدر
 کسی دونج کے نام اور جاتی کی چرچا ایمان چلک شبدوں
 میں کرتا ہے تو دس اُنل لمبی لوہے کی کیل اُس کے منہ
 میں گھسوتر دیلی چاہئے” (8-271). ایک دوسری جگہ لکھا
 ہے—“یدی کوئی ادونج گھمڈ کے ساتھ کسی براھمن کو اُس کے
 کرتویہ کا بودھ کرانے تو راجہ کو ایسے ادونج کے منہ اور کان میں
 جلتا ہوا گرم تیل ڈلوا دینا چاہئے” (8-272). ایک اور جگہ لکھا
 ہے—“شدر کے جس انگ سے کوئی شدر اُونچی جاتی والے
 کو چوٹ پہونچائے اُس شدر کے اُس انگ کو کاٹ ڈالنا
 چاہئے. یہ منو کی شکشا ہے” (8-279). ورن ویوستھا کا اِس
 سے خوفناک روپ اور کیا ہو سکتا ہے ؟

†—‘The Laws of Manu’—translated by Buhler.

اس طرح مانو دھرم شاستر نے مہربوں کی شامیں دہستہ
کے ہواہوں کے اصول کو ایک قلم مٹا دیا اور شوتروں کو سمی
کے ادھنگر سے روک دیا۔ دھرم شاستر کے انوسار—”براہمن
کو داس ہو کر کی سمی فوراً ضبط کر لینی چاہئے، کیونکہ شوترو
کی اپنی کوئی سمی نہیں“ (8-417)۔ اس کے علاوہ ”داس
کو سمی رکھنے کا کوئی ادھنگر نہیں کیونکہ اس کی سمی
اس کے سوامی کی سمی ہے“ (8-416)۔ اس کے وپریت ارتھ
شاستر داس کو سمی کے مالک ہونے کا ادھنگر دیتا تھا (ارتھ
شاستر 3، ادھنگر 182-18)۔ ارتھ شاستر کے انوسار—”داس کی
سمی اس کی موت کے بعد اس کے رشتہداروں کو ملے گی اور
رشتہداروں کے اہل میں اس کے سوامی کو“ (اڈروکٹ-183)۔
ایک اور دھرم شاستر نے شوتروں کے لئے گھور اسویدھائیں کر دیں
اور دوسری اور براہمنوں کے لئے ودھان کیا—”بدی دھن کے
اہل میں راجہ مروتوشیا پر پڑا ہو تب بھی اسے ود پڑے ہوئے
براہمن سے راجہ کر نہیں لینا چاہئے“ (7-133)۔ یہاں بھی
لھوک کے ودھان کو توڑا گیا۔ مانو دھرم شاستر آگے چل کر کہتا
ہے—”داس، دسہ اور چاندال کو گواہ کے روپ میں سونیکار
نہیں کیا جاسکتا“ (8-66)۔ اس کے وپریت ارتھ شاستر شوترو کو
گواہ کے روپ میں سونیکار کرنے میں کوئی اعتراض نہیں کرنا
(ارتھ شاستر 3، الف 11-174)۔ دھرم شاستر کے انوسار شوترو
گواہ کے شہتہ لینے کے بعد بھی اسے جسمانی تکلیف دیکر اس کے
جھوٹ سچ کا پتہ چلا جاتا تھا جبکہ کوٹیلہ کے انوسار کسی بھی
گواہ کی گواہی لکھ کر اس کی سادھارن روپ سے جانچ کرانی
چاہئے، کسی گواہ کو شاربیک یا تانا پہونچالے کی ضرورت نہیں۔
آرتھک دیشی سے بھی دھرم شاستر نے شوتروں کی حالت
ادبیت اسویدھانک رکھی ہے۔ دھرم شاستر کے انوسار—
”سہاجن کو براہمن قرضدار سے دو پانا پرتی شت، چھتریوں سے
تین پانا پرتی شت، ویشیوں سے چار پانا پرتی شت اور شوتروں
سے پانچ پانا پرتی شت بھاج لینی چاہئے“ (8-142) جبکہ
کوٹیلہ کے انوسار ”ہر سیکڑہ ہر مہینے سوا پانا بھاج لینا ہی
جائز ہے“ (ارتھ شاستر 3، A-11-173)۔ بھاج کے سمبندھ
میں ارتھ شاستر نے وودھ جانہوں کے بیچ کوئی تمیز نہیں کی۔
اس طرح مانو دھرم شاستر نے اشوک کے سہ کے وپوکار
سدنا کو بالکل کشت کر دیا۔ براہمنوں کو کسی بھی ابرادہ میں
مروتو دانت دینا ناجائز قرار دیا۔ ”براہمن نے چاہے جو ابرادہ
کیا ہو اس کی ہتھیا کبھی نہ کرنی چاہئے۔ کیوں اسے دیش
سے باہر نکال دینا چاہئے“ اس کی ساری جائیداد اسے دے
دینی چاہئے اور اس کو ذراسی بھی جسمانی تکلیف نہیں
پہونچانی چاہئے“ (8-380)۔ ”براہمن بدھ سے زیادہ برا دنیا میں
دوسرا پاپ نہیں ہے۔ اس لئے راجہ کو دماغ میں

ہی اس بیچارہ کو نہیں لانا چاہئے کہ اسے کسی برہمن کی ہتھکڑی کرنی ہے۔“ (8-381)۔ دوسری اور شودر کے سہیلہ میں لکھا گیا ہے۔ ”بہی کوئی سوامی شودر کو داستا سے مکت بھی کر دے، تب بھی وہ شودر سونکر نہیں ہو سکتا۔ اس کے لئے غلطی سواہلوک ہے، اس لئے کہ اسے غلامی سے مکت کر سکتا ہے؟“ (8,412-114)*۔ اس طرح شودروں کو ارنہ شاستر اور سمرات اشوک نے سماج میں جو برابری کا درجہ دیا تھا، اسے ’مانو دھرم شاستر‘ نے واپس لے لیا۔

مانو دھرم شاستر نے جنم اور उत्तराधिकार کو بھی खास अहमियत دی ہے۔† مانو دھرم شاستر کے मुताबिक—”सब वर्णों में जो बच्चे शास्त्रानुसार विवाहित स्त्रियों से (ऐसी स्त्रियों से जो सजातीय हों और कुमारी के रूप में विवाह में हासिल की गई हों) पैदा हुए हों वे अपने पिता के वर्ण के ही माने जायेंगे।“ इस व्यवस्था के अन्दर शास्त्रानुसार विवाह और सबर्ण विवाह के ऊपर जोर दिया गया है। आगे एक जगह लिखा है—”द्विज पुरुषों को अपने से एक दरजा नीचे की पत्नी से जो सन्तान प्राप्त हों वे भी पिता के ही वर्ण को प्राप्त करती हैं और उनका एकमात्र दोष उनकी मां के कारण है (10-6)।“ इस व्यवस्था के अनुसार असवर्ण विवाह जायज़ है, किन्तु नीची जाति की मां का दारा सन्तान पर रह जाता है। आगे चलकर इसे तफ़्सील से समझाया गया है—”ब्राह्मण की सन्तान क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र स्त्री से, क्षत्रिय की सन्तान वैश्य और शूद्र स्त्री से, वैश्य की सन्तान शूद्र से ये छहों सन्तानें ’अपासद‘ कहलाती हैं। यह व्यवस्था उस पहले की व्यवस्था को काट देती है जिसके मुताबिक अपने से एक दरजा नीची जाति की स्त्री से प्राप्त सन्तति पिता के वर्ण को प्राप्त होती है जो सन्तान अपासद कहलाएंगी वे कैसे पिता के वर्ण को प्राप्त कर सकती हैं? मानव धर्मशास्त्र की एक और व्यवस्था में कहा गया है—”द्विजों की जो सन्तानें एक दरजा नीचे के वर्ण की स्त्री से हों वे अपनी मां की हीनता के कारण ’अनन्तरस‘ कहलाती हैं। इस व्यवस्था से यह जाहिर है कि हीन जाति की मांओं की सन्तानें पिता के वर्ण को प्राप्त नहीं कर सकतीं। पहले की व्यवस्थाओं के मुकाबले में यह एक विरोधी और बाद की व्यवस्था मालूम होती है।

फिर मानव धर्मशास्त्र ’सिचड़ी वर्णों‘ का जिक्र करता है۔ उसके अनुसार—”वर्णों की मिलावट से जिन स्त्रियों के साथ विवाह नहीं होना चाहिये, उनके विवाह से और

بھی اس وچار کو نہیں لانا چاہئے کہ اسے کسی برہمن کی ہتھکڑی کرنی ہے۔“ (8-381)۔ دوسری اور شودر کے سہیلہ میں لکھا گیا ہے۔ ”بہی کوئی سوامی شودر کو داستا سے مکت بھی کر دے، تب بھی وہ شودر سونکر نہیں ہو سکتا۔ اس کے لئے غلطی سواہلوک ہے، اس لئے کہ اسے غلامی سے مکت کر سکتا ہے؟“ (8,412-114)*۔ اس طرح شودروں کو ارنہ شاستر اور سمرات اشوک نے سماج میں جو برابری کا درجہ دیا تھا، اسے ’مانو دھرم شاستر‘ نے واپس لے لیا۔

مانو دھرم شاستر نے جنم اور اُترادھیکار کو بھی خاص اہمیت دی ہے۔† مانو دھرم شاستر کے مطابق—”سب ورّوں میں جو بچے شاستر آنوسار وواہت استریوں سے (ایسی استریوں سے جو سجاتیہ ہوں اور کماری کے روپ میں وواہ میں حاصل کی گئی ہوں) پیدا ہوئے ہوں وہ اپنے پتا کے ورّ کے ہی مانے جائیں گے۔“ اس ویوستھا کے اندر شاستر آنوکول وواہ اور سورن وواہ کے اوپر زور دیا گیا ہے۔ آگے ایک جگہ لکھا ہے—”دونج پرشوں کو اپنے سے ایک درجہ نیچے کی پتنی سے جو سنتان پراپت ہوں وہ بھی پتا کے ہی ورّ کو پراپت کرتی ہیں اور اُنکا ایک ماتر دوش اُن کی ماں کے کارن ہے (10-6)۔“ اس ویوستھا کے آنوسار اسورن وواہ جایز ہے، کنتو نیچگی جانی کی ماں کا داغ سنگان پر رہ جاتا ہے۔ آگے چلکر اسے تفصیل سے سمجھایا گیا ہے—”برہمن کی سنتان چہتریہ، ویشیہ اور شودر استری سے، چہتریہ کی سنتان ویشیہ اور شودر استری سے، ویشیہ کی سنتان شودر سے یہ چہروں سنتانیں ’اپاسد‘ کہلاتی ہیں۔ یہ ویوستھا اُس پہلے کی ویوستھا کو کاٹ دیتی ہے جس کے آنوسار اپنے سے ایک درجہ نیچگی جانی کی استری سے پراپت سنگتی پتا کے ورّ کو پراپت ہوتی ہے۔ جو سنتان آپاسد کہلائیں گی وہ کیسے پتا کے ورّ کو پراپت کر سکتی ہیں؟ مانو دھرم شاستر کی ایک اور ویوستھا میں کہا گیا ہے—”دونجوں کی جو سنتانیں ایک درجہ نیچے کے ورّ کی استری سے ہوں وہ اپنی ماں کی ہیلتا کے کارن ’اننترس‘ کہلاتی ہیں۔ اس ویوستھا سے یہ ظاہر ہے کہ ہین جانی کی ماؤں کی سنتانیں پتا کے ورّ کو پراپت نہیں کر سکتیں۔ پہلے کی ویوستھاؤں کے مقابلے یہ ایک ورودھی اور بعد کی ویوستھا معلوم ہوتی ہے۔

پھر مانو دھرم شاستر ’کھجڑی ورّوں‘ کا ذکر کرتا ہے۔ اُسکے آنوسار—”ورّوں کی ملاوت سے جن استریوں کے ساتھ وواہ نہیں ہونا چاہیئے، اُنکے وواہ سے اور

* Buhlers' translation.

† Ibid—pp. 319-321.

‡ Ibid pp. 403-404.

कर्तव्यभूत होने से अपवित्र जातियां बन गई हैं।” (34-24)। इस तरह अलग अलग जाति के माँ बाप की सन्तानें मनु के मुताबिक वर्णसंकर हैं। इसका साफ मतलब यह है कि इजाजत होते हुए भी मानव ‘धर्मशास्त्र’ असवर्ण विवाहों को प्रोत्साहन नहीं देता। इसका ब्राह्मणों की उस प्रतिक्रान्ति से मेल है जिसका मकसद पैदायशी वर्णाश्रम धर्म के मुताबिक सामाजिक व्यवस्था फिर से कायम करना था।

मानव धर्मशास्त्र में इस बात पर जोर दिया गया है कि ऊँची जाति के लोगों का रक्त नीची जाति के लोगों से अधिक पवित्र होता है। “यदि कोई कुल ब्राह्मण पुरुष और शूद्र स्त्री के संयोग से फले और बढ़े तो इस तरह के कुल की लड़कियों की ब्राह्मणों के साथ शादी होने से वह नीच कुल सातवीं पीढ़ी में उच्चवर्ण ब्राह्मण कुल हो जायगा।” (10-64)। इसके अनुसार ब्राह्मण पिता और अद्विज माता की पुत्री यदि किसी ब्राह्मण से व्याही जाय और इस संयोग से उत्पन्न लड़की फिर किसी ब्राह्मण को व्याही जाय और यह क्रम सातवीं पीढ़ी तक चलता रहे तो उसके बाद की संततियां ब्राह्मण हो जायंगी, क्योंकि मानव धर्मशास्त्र कहता है “अच्छा वीर्य सदा प्रशंसनीय है।” (10-74)। यही नियम सभी जातियों के लिये लागू है। इस संबंध में कहा है—“शूद्र पुत्र इस तरह से ब्राह्मण के पद को प्राप्त होता है और इसी नियम से ब्राह्मण शूद्र की स्थिति को पहुँचता है। यही नियम क्षत्रिय-पुत्र के लिये है और यही नियम वैश्य-पुत्र के लिये है।” (10-65)। इसका अर्थ यह है कि ऊँची जात के पुरुष के संयोग से औलाद का रतबा ऊँचा होता है और नीची जाति के पुरुष के संयोग से औलाद भी नीची जाति की होती है !

अन्त में वंश परम्परा के प्रश्न का इस तरह चिक्र किया गया है—ब्राह्मण पिता और अनार्य माता के संयोग से उत्पन्न संतान श्रेष्ठ है या अनार्य पिता और ब्राह्मण माता के संयोग से उत्पन्न संतान ? धर्मशास्त्र इसका उत्तर देता है कि यदि ब्राह्मण पिता की सन्तान में ‘पाक’ और ‘यज्ञ’ की विशेषता है तो वह अनार्य पिता की सन्तान की अपेक्षा उच्चतर है। (10-66)। इसका साफ मतलब यह है कि

कृत्रिम जटिल करने से औत्तु जातियों में कृति हैं।” (10-24)। इस तरह अलग अलग जाति के माँ बाप की सन्तानें मनु के मुताबिक वर्णसंकर हैं। इसका साफ मतलब यह है कि इजाजत होते हुए भी मानव ‘धर्मशास्त्र’ असवर्ण विवाहों को प्रोत्साहन नहीं देता। इसका ब्राह्मणों की उस प्रतिक्रान्ति से मेल है जिसका मकसद पैदायशी वर्णाश्रम धर्म के मुताबिक सामाजिक व्यवस्था फिर से कायम करना था।

मानव धर्मशास्त्र में इस बात पर जोर दिया गया है कि ऊँची जाति के लोगों का रक्त नीची जाति के लोगों से अधिक पवित्र होता है। “यदि कोई कुल ब्राह्मण पुरुष और शूद्र स्त्री के संयोग से फले और बढ़े तो इस तरह के कुल की लड़कियों की ब्राह्मणों के साथ शादी होने से वह नीच कुल सातवीं पीढ़ी में उच्चवर्ण ब्राह्मण कुल हो जायगा।” (10-64)। इसके अनुसार ब्राह्मण पिता और अद्विज माता की पुत्री यदि किसी ब्राह्मण से व्याही जाय और इस संयोग से उत्पन्न लड़की फिर किसी ब्राह्मण को व्याही जाय और यह क्रम सातवीं पीढ़ी तक चलता रहे तो उसके बाद की संततियां ब्राह्मण हो जायंगी, क्योंकि मानव धर्मशास्त्र कहता है “अच्छा वीर्य सदा प्रशंसनीय है।” (10-74)। यही नियम सभी जातियों के लिये लागू है। इस संबंध में कहा है—“शूद्र पुत्र इस तरह से ब्राह्मण के पद को प्राप्त होता है और इसी नियम से ब्राह्मण शूद्र की स्थिति को पहुँचता है। यही नियम क्षत्रिय-पुत्र के लिये है और यही नियम वैश्य-पुत्र के लिये है।” (10-65)। इसका अर्थ यह है कि ऊँची जात के पुरुष के संयोग से औलाद का रतबा ऊँचा होता है और नीची जाति के पुरुष के संयोग से औलाद भी नीची जाति की होती है !

अन्त में वंश परम्परा के प्रश्न का इस तरह चिक्र किया गया है—ब्राह्मण पिता और अनार्य माता के संयोग से उत्पन्न संतान श्रेष्ठ है या अनार्य पिता और ब्राह्मण माता के संयोग से उत्पन्न संतान ? धर्मशास्त्र इसका उत्तर देता है कि यदि ब्राह्मण पिता की सन्तान में ‘पाक’ और ‘यज्ञ’ की विशेषता है तो वह अनार्य पिता की सन्तान की अपेक्षा उच्चतर है। (10-66)। इसका साफ मतलब यह है कि

§ Jones' translation of "The Ordinances of Manu" p. 343.

मानव धर्मशास्त्र के अन्दर यह विरोधी (युतजाद) भाव इसलिये है कि इसमें दो तरह की व्यवस्थायें हैं। पुरानी व्यवस्था ‘मनुस्मृति’ है और नई सुमति भार्गव की लिखी हुई ‘मानव धर्मशास्त्र’ है। सुमति भार्गव के ऊपर ब्राह्मण-प्रतिक्रिया (reaction) का साफ असर है—लेखक।

मानव धर्मशास्त्र के अन्दर यह विरोधी (युतजाद) भाव इसलिये है कि इसमें दो तरह की व्यवस्थायें हैं। पुरानी व्यवस्था ‘मनुस्मृति’ है और नई सुमति भार्गव की लिखी हुई ‘मानव धर्मशास्त्र’ है। सुमति भार्गव के ऊपर ब्राह्मण-प्रतिक्रिया (reaction) का साफ असर है—लेखक।

वंश क्रम में पिता को महानता है, माता को नहीं. *

मानव धرمशास्त्र میں براہمنوں کے بڑھپن کا نکتہ اسے
 राजनैतिक क्षेत्र में भी मिलता है. एक जगह लिखा है—
 “राजा को चाहे जितना खतरा क्यों न हो तब भी उसे
 ब्राह्मण के क्रोध को न जगाना चाहिये, क्योंकि ब्राह्मण
 खफा होकर क्षण भर में हुकूमत को बरबाद कर सकता
 है.....चाहे विद्वान हो या अपद, ब्राह्मण महा देवता के
 समान है.” (9,313-317). इस वाक्य में हमें ब्राह्मण
 ग्रन्थों और ब्राह्मण सूत्रों की गूँज मिलती है. राजा के
 लिये भी आदेश है कि राजा को खानदानी पुरोहितों के
 परिवार से सात या आठ मन्त्री चुनने चाहियें जो ऊँचे कुल
 के, परखे हुए, साहसी और वेद शास्त्रों में निपुण हों (7-58).
 इस व्यवस्था के अनुसार तो ब्राह्मण यूरोपैसी लाजमी हो
 जाती है क्योंकि वेद शास्त्रों में ब्राह्मणों के अलावा और कौन
 निपुण होगा ? अर्थशास्त्र ने मंत्रियों के चुनाव के लिए इस
 तरह की कोई क्रैद नहीं रखी जिसमें केवल ब्राह्मण ही आ
 सकें. अर्थशास्त्र के अनुसार अमात्य संपत्त (मन्त्री) के पद
 के लिये ये गुण जरूरी हैं कि वह देश का अधिवासी हो,
 ऊँचे खानदान का हो और कलाओं में निपुण हो. (अर्थशास्त्र
 1, आ० 8-14 अ० 9-15). कौटिल्य बहुवन्ति के पुत्र से
 सहमत है कि मन्त्री के लिये आवश्यक गुण यह होना
 चाहिये कि वह “ऊँचे खानदान का हो और विद्वान हो.”
 अन्त में धर्मशास्त्र राजनैतिक क्षेत्र में एक बहुत बड़ी मांग
 पेश करता है. उसके अनुसार—“प्रधान सेनापति का पद,
 प्रधान न्यायाधीश का पद, राज-प्रबन्ध करने वाले राजा का
 पद—ये सब पद स्वीकार करने योग्य वही है जो वेदों का
 पूर्ण ज्ञाता हो” (12-19-100). इसका अर्थ यह है कि
 मानव धर्मशास्त्र साफ इस बात की हिदायत देता है कि
 वेदों के जानकार ही इन पदों पर आसीन हो सकते हैं.
 इससे पहले किसी भी स्मृति में इस तरह की कोई हिदायत
 नहीं मिलती. शायद, जैसा कि श्री जायसवाल कहते हैं,
 ब्राह्मण पुण्यमित्र के राज्य हड़पने की यह नैतिक दलील हो.
 इसी धर्मशास्त्र में हमें “राजा के दैवी अधिकार” की
 दलील मिलती है। इसी मानव धर्मशास्त्र में ही पहली
 मरतबा ‘नर-देव’ के विचार का प्रतिपादन किया जाता है.
 इससे पता चलता है कि भारत में उस समय तक सामन्त-
 शाही बन चुकी थी। इस तरह ब्राह्मणों की सत्ता क्रायम
 होते ही वर्यों की भी नहीं हैसियत हो गई. जातियों की
 सामाजिक जगह बदल गई।

وہی کرم میں پتا کو مہانتا ہے، ماتا کو نہیں. *

मानव धर्मशास्त्र में ब्राह्मणों के बड़पन का नक्शा हमें
 राजनैतिक क्षेत्र में भी मिलता है. एक जगह लिखा है—
 “राजा को चाहे जितना खतरा क्यों न हो तब भी उसे
 ब्राह्मण के क्रोध को न जगाना चाहिये, क्योंकि ब्राह्मण
 खफा होकर क्षण भर में हुकूमत को बरबाद कर सकता
 है.....चाहे विद्वान हो या अपद, ब्राह्मण महा देवता के
 समान है.” (9,313-317). इस वाक्य में हमें ब्राह्मण
 ग्रन्थों और ब्राह्मण सूत्रों की गूँज मिलती है. राजा के
 लिये भी आदेश है कि राजा को खानदानी पुरोहितों के
 परिवार से सात या आठ मन्त्री चुनने चाहियें जो ऊँचे कुल
 के, परखे हुए, साहसी और वेद शास्त्रों में निपुण हों (7-58).
 इस व्यवस्था के अनुसार तो ब्राह्मण यूरोपैसी लाजमी हो
 जाती है क्योंकि वेद शास्त्रों में ब्राह्मणों के अलावा और कौन
 निपुण होगा ? अर्थशास्त्र ने मंत्रियों के चुनाव के लिए इस
 तरह की कोई क्रैद नहीं रखी जिसमें केवल ब्राह्मण ही आ
 सकें. अर्थशास्त्र के अनुसार अमात्य संपत्त (मन्त्री) के पद
 के लिये ये गुण जरूरी हैं कि वह देश का अधिवासी हो,
 ऊँचे खानदान का हो और कलाओं में निपुण हो. (अर्थशास्त्र
 1, आ० 8-14 अ० 9-15). कौटिल्य बहुवन्ति के पुत्र से
 सहमत है कि मन्त्री के लिये आवश्यक गुण यह होना
 चाहिये कि वह “ऊँचे खानदान का हो और विद्वान हो.”
 अन्त में धर्मशास्त्र राजनैतिक क्षेत्र में एक बहुत बड़ी मांग
 पेश करता है. उसके अनुसार—“प्रधान सेनापति का पद,
 प्रधान न्यायाधीश का पद, राज-प्रबन्ध करने वाले राजा का
 पद—ये सब पद स्वीकार करने योग्य वही है जो वेदों का
 पूर्ण ज्ञाता हो” (12-19-100). इसका अर्थ यह है कि
 मानव धर्मशास्त्र साफ इस बात की हिदायत देता है कि
 वेदों के जानकार ही इन पदों पर आसीन हो सकते हैं.
 इससे पहले किसी भी स्मृति में इस तरह की कोई हिदायत
 नहीं मिलती. शायद, जैसा कि श्री जायसवाल कहते हैं,
 ब्राह्मण पुण्यमित्र के राज्य हड़पने की यह नैतिक दलील हो.
 इसी धर्मशास्त्र में हमें “राजा के दैवी अधिकार” की
 दलील मिलती है। इसी मानव धर्मशास्त्र में ही पहली
 मरतबा ‘नर-देव’ के विचार का प्रतिपादन किया जाता है.
 इससे पता चलता है कि भारत में उस समय तक सामन्त-
 शाही बन चुकी थी। इस तरह ब्राह्मणों की सत्ता क्रायम
 होते ही वर्यों की भी नहीं हैसियत हो गई. जातियों की
 सामाजिक जगह बदल गई।

* इस सम्बन्ध में मध्यकालीन यूरोप में गुलामों के संसर्ग से पैदा औलादें और मनुस्मृति का तुलनात्मक अध्ययन दिलचस्प है.

اس سبب سے ہندوؤں میں مذہب کا لہجہ یورپ میں غلاموں کے سلسرگ سے پیدا اولادیں اور مہوسرئی کی تولداتک آدھن بدل چکا ہے.

ایک دوسرا بھرمناج جو براہمنوں کی پرمیٹا کے کال میں لکھا گیا 'وسشٹو' ہے۔ کہن کے انوسار اسکا رچنا کال عیسوی کی پہلی صدی ہے۔ * حالانکہ اس اسمرتی میں ایسے چار ظاہر کئے گئے ہیں جو پرانے معلوم ہوتے ہیں اور اس میں آپستمب کا بھی سمرتھن ہے۔ پھر بھی اسمیں جو براہمنوں کے بڑوں کی وکالت کی گئی ہے اس سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ یہ گرنٹھ اس سمے لکھا گیا جب براہمنوں کی پرمیٹا تھی۔ معلوم ہوتا ہے وسشٹو اسمرتی ایسی جگہ لکھی گئی جہاں انہیں کے سراگت میں گوردھ کا پرانا رواج تب بھی جاری تھا، حالانکہ کبھی کبھی گئے کی جگہ بکرا حلال کرنے کا بھی رواج چل پڑا تھا (ادھیائے-3)۔ اسمیں ایک استھان پر لکھا ہے—”براہمن یا چھتریہ انہیں کے لئے گرهستہ یا تو پریہکو اوستھا کا بول راندھ سکتا ہے یا بکرا۔“ † اس سے صاف انرومان لگایا جا سکتا ہے کہ 'وسشٹو' اسمرتی اتر بھارت میں ہی کہیں لکھی گئی ہے۔

وسشٹو کا آدی ہے کہ تینوں اوج ورنوں کی سہوا کرنا شودر کا دھرم ہے۔ اس لحاظ سے وسشٹو منو سے ہیں نہیں ہے۔ † پھر وہ کہتے ہیں—”بدی کوئی دوتھج شودر کا ان کہا کر مر جائے تو وہ دوسرے جنم میں یا تو گاؤں کا سور ہوتا ہے یا اسی شودر کے گھر پیدا ہوتا ہے۔ † (3 الف) پر وہ پندتوں سے کہتے ہیں—”ملہجہیں کی بھاشا نہ سیکھو † (3 الف) ایک دوسری جگہ لکھا ہے—”کچھ لوگ کہتے ہیں کہ شودر شو کے سمان ہیں اسلئے شودر کے نکٹ ویدوں کا پاتھ نہیں ہونا چاہیے۔“ † (15 الف) ایسے براہمن ہرش کے لئے جنکا براہمن استریوں سے سمبندھ ہے وسشٹو نیچے لکھی سزا کا ردھان کرتے ہیں—”بدی کوئی شودر براہمن استری کے پریچھے میں ہے تو راجا کو اس شودر کو 'ویرن' گھاس میں بندھوا کر زندہ آگ میں ڈال دینا چاہیے۔ بدی کوئی ویشہ براہمن استری کے پریچھے میں ہے تو راجہ کو اس ویشہ کو 'بھت' گھاس میں بندھوا کر آگ میں ڈال دینا چاہیے اور بدی کوئی چھتریہ براہمن استری کے پریچھے میں ہے تو راجہ کو اسے 'سر' گھاس میں بندھوا کر آگ میں ڈال دینا چاہیے۔“ † (19 الف) وسشٹو اسمرتی کے نپائے کا یہ نمونہ ہے۔ ورن کے حساب سے سزا کی ماترا بھی بڑھتی جاتی ہے۔ † (19 الف)

کچھ انھوں میں وسشٹو اسمرتی اور دوسری اسمرتیوں سے ادھک کڑی ہے، کیونکہ وسشٹو اسمرتی میں چھتریوں کو سزا دینے کا جو ردھان ہے وہ اس سے پہلے کبھی کسی اسمرتی نے نہیں دیا۔ اسمیں براہمنوں کا درجہ بہت اونچا کر دیا گیا۔ اس چیز کو ادھک صفائی سے سمجھنے کے

* Kane. p. 58

† 22—वसिष्ठ संहिता—अनु० एम० दत्त. सफा 764, 765, 771, 772, 802, 803, 810.

764, 765, 771, 772, 802, 803, 810 صفحہ 764, 765, 771, 772, 802, 803, 810

लिये वसिष्ठ स्मृति के एक दूसरे विधान पर ध्यान दीजिये उसमें लिखा है—“ब्राह्मणों का धन अपहरण करके अपराधी के रोंगटे बंधे हो जाने चाहियें, उसे भाग कर राजा के पास जाना चाहिये और उससे कहना चाहिये ‘मैं चोर हूँ ! राजन् मुझे सजा दीजिये’ राजा को तब उसे उदम्बर लकड़ी का बना हुआ इधियार देना चाहिये जिससे वह अपने आपको मार डाले, वेदों में लिखा है कि मौत के बाद वह अपराधी पवित्र हो जाता है।” (अ० 18) † जब तक राजा भी ब्राह्मण न हो तब तक इस तरह की व्यवस्था प्रचलित करना सहज नहीं, मनु और वसिष्ठ में ब्राह्मणों के बहपन का आदि से अन्त तक बखान है और यह बहपन उस समय तक बेमतलब है जब तक इसकी पीठ पर राजा का हाथ न हो, इससे यह जाहिर होता है कि ये दोनों स्मृतियाँ ब्राह्मणों के शासन काल में ही लिखी गईं लेकिन श्री जायसवाल के मुताबिक ‘वसिष्ठ संहिता’ को ज्यादा अहमियत नहीं मिली और वह आखरी नजीर के रूप में कभी नहीं कबूल की गई, ‡

अब हम याज्ञवल्क्य स्मृति पर सौर करेंगे,

पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में इस पर बहस की है कि ऊँची बण की जातियों के वर्तनों में यदि कोई खाये तो बेवर्तन अपनी शुद्धता नहीं खोते, पातञ्जलि को पुण्यमित्र का समकालीन माना जाता है इसलिये कि पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में पुण्यमित्र के अश्वमेध यज्ञ की चरचा की है, (महा-भाष्य 3, 2-123.) पाणिनि ने अपने व्याकरण में एक जगह लिखा है—शूद्रानाम् अनिव सितानाम् (2-4-10) अर्थात् ‘ऐसे शूद्र जो अलहदा नहीं किये गये,’ पातञ्जलि इसकी व्याख्या करते हुए लिखता है कि ऐसे शूद्र जो अलग नहीं किये गये अनिर्वासित कहलाते हैं और वह आर्यवर्त की सीमा का भी उल्लेख करता है। किन्तु यह भी लिखता है कि इस सीमा में सक और यवन भी रहते हैं, तब अनिर्वासित से मतलब यह होगा कि आर्य निवास से जो निर्वासित नहीं, और आर्य-निवास क्या है ? आर्य गावों में रहते हैं, घोशों (गोचर भूमि) में रहते हैं, नगरों में रहते हैं और सम्बन्ध (वैश्यपुरी) में रहते हैं, और इन निवासों में चांडाल और डोम भी रहते हैं, * किन्तु इनका शुमार आर्यवर्त में नहीं है, इससे तात्पर्य यह निकला कि अनिर्वासित वे लोग हैं जो यज्ञ में आहुति देने में शामिल हैं किन्तु पातञ्जलि रजक (धोबी) और तन्तुबाई (जुलाहा) को भी अनिर्वासित मानता है, इसका अर्थ यह हुआ कि जिन लोगों के भ्रान्ते के बाद वर्तन धोकर रख लिए जाते

लै वसिष्ठ स्मृति के एक दूसरे विधान पर ध्यान दीजिये उसमें लिखा है—“ब्राह्मणों का धन अपहरण करके अपराधी के रोंगटे बंधे हो जाने चाहियें, उसे भाग कर राजा के पास जाना चाहिये और उससे कहना चाहिये ‘मैं चोर हूँ ! राजन् मुझे सजा दीजिये’ राजा को तब उसे उदम्बर लकड़ी का बना हुआ इधियार देना चाहिये जिससे वह अपने आपको मार डाले, वेदों में लिखा है कि मौत के बाद वह अपराधी पवित्र हो जाता है।” (अ० 18) † जब तक राजा भी ब्राह्मण न हो तब तक इस तरह की व्यवस्था प्रचलित करना सहज नहीं, मनु और वसिष्ठ में ब्राह्मणों के बहपन का आदि से अन्त तक बखान है और यह बहपन उस समय तक बेमतलब है जब तक इसकी पीठ पर राजा का हाथ न हो, इससे यह जाहिर होता है कि ये दोनों स्मृतियाँ ब्राह्मणों के शासन काल में ही लिखी गईं लेकिन श्री जायसवाल के मुताबिक ‘वसिष्ठ संहिता’ को ज्यादा अहमियत नहीं मिली और वह आखरी नजीर के रूप में कभी नहीं कबूल की गई, ‡

पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में इस पर बहस की है कि ऊँची बण की जातियों के वर्तनों में यदि कोई खाये तो बेवर्तन अपनी शुद्धता नहीं खोते, पातञ्जलि को पुण्यमित्र का समकालीन माना जाता है इसलिये कि पातञ्जलि ने अपने महाभाष्य में पुण्यमित्र के अश्वमेध यज्ञ की चरचा की है, (महा-भाष्य 3, 2-123.) पाणिनि ने अपने व्याकरण में एक जगह लिखा है—शूद्रानाम् अनिव सितानाम् (2-4-10) अर्थात् ‘ऐसे शूद्र जो अलहदा नहीं किये गये,’ पातञ्जलि इसकी व्याख्या करते हुए लिखता है कि ऐसे शूद्र जो अलग नहीं किये गये अनिर्वासित कहलाते हैं और वह आर्यवर्त की सीमा का भी उल्लेख करता है। किन्तु यह भी लिखता है कि इस सीमा में सक और यवन भी रहते हैं, तब अनिर्वासित से मतलब यह होगा कि आर्य निवास से जो निर्वासित नहीं, और आर्य-निवास क्या है ? आर्य गावों में रहते हैं, घोशों (गोचर भूमि) में रहते हैं, नगरों में रहते हैं और सम्बन्ध (वैश्यपुरी) में रहते हैं, और इन निवासों में चांडाल और डोम भी रहते हैं, * किन्तु इनका शुमार आर्यवर्त में नहीं है, इससे तात्पर्य यह निकला कि अनिर्वासित वे लोग हैं जो यज्ञ में आहुति देने में शामिल हैं किन्तु पातञ्जलि रजक (धोबी) और तन्तुबाई (जुलाहा) को भी अनिर्वासित मानता है, इसका अर्थ यह हुआ कि जिन लोगों के भ्रान्ते के बाद वर्तन धोकर रख लिए जाते

† वसिष्ठ संहिता, सफा-808 वसिष्ठ संहिता

‡ Jagnavalkya-oq cit 66.

* स्मृतियों के अनुसार चांडाल और डोम नगर की सीमा के बराबर रहते हैं—लेखक.

* स्मृति के अनुसार चाण्डाल और डोम नगर की सीमा के बराबर रहते हैं—लेखक.

हैं वे अनिर्वासित हुए और जिनके जाने के बाद वर्तन अक्षुण्ण होकर फेंक दिये जाते हैं वे निर्वासित समझे जाते थे।

इससे यह बाहिर होता है कि आर्यनिवास में रहने वाले आर्य कहलाते थे, इसलिये शूद्र भी आर्य थे क्योंकि उनके भोजन करने पर आर्य अपने वर्तन फेंक नहीं देते थे, केवल वे लोग जिनकी औलादें आज अन्यज कहलाती हैं आर्य नहीं समझे जाते थे, इसका अर्थ यह हुआ कि शूद्र हालांकि द्विज नहीं थे, फिर भी आर्य थे, कौटिल्य भी इसी विचार का था, मनु ने भी कहीं यह नहीं लिखा कि शूद्र अनार्य हैं, फिर मनु के अनुसार सक और यवन भी शूद्र हैं, पातञ्जलि शूद्रों को ब्रह्म से ऊँचा समझता है, उन्हें 'अनिर्वासित' मानता है, पातञ्जलि ने शूद्रों को वे सुविधाएँ उस समय दीं जब मनु शूद्रा और यवनों के विरुद्ध गरज रहे थे, पातञ्जलि की इस विवेचना से यह पता चलता है कि धोवियों के समान कुछ जातियाँ पहले पवित्र समझी जाती थीं, किन्तु बाद में उन्हें पतित समझा जाने लगा, † अहिन्दू यवन अनिर्वासित हो सकते हैं यह विचार आज ध्यान में भी नहीं लाया जा सकता, इससे इस बात का समर्थन होता है कि जातियों और उपजातियों की भिन्न भिन्न काल में भिन्न भिन्न अवस्था रही है।

हैं वे अनिर्वासित होئے اور چلکے کھائے کے بعد برتن لشده ہو کر پھینک دیئے جاتے ہیں وہ انرواست سمجھے جاتے تھے۔

اس سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ آریہ نولس میں رہنے والے آریہ کہلاتے تھے۔ اس لئے شودر بھی آریہ تھے کیونکہ ان کے بوجھن کرنے پر آریہ اپنے برتن پھینک نہیں دیتے تھے۔ کھول دے لوگ چلکی اولادیں آج انگلیج کہلاتی ہیں آریہ نہیں سمجھے جاتے تھے۔ اسکا ارم یہ ہوا کہ شودر، حالانکہ دوتج نہیں تھے، پھر بھی آریہ تھے۔ کوثلیہ بھی اسی وچار کا تھا۔ مनु نے بھی کہیں یہ نہیں لکھا کہ شودر انارہ ہیں۔ پھر مनु کے انوسار سک اور یون بھی شودر ہیں۔ پاتنجلی شودروں کو قوم سے اونچا سمجھتا ہے۔ انہیں 'انرواست' مانتا ہے۔ پاتنجلی نے شودروں کو یہ سویدھا نہیں اُس سے دیں جب ملو شودروں اور یونوں کے زور دہ گرج رہے تھے۔ پاتنجلی کی اس رویتچنا سے یہ پتہ چلتا ہے کہ دھوبیوں کے سمان کچھ جائیاں پہلے پوتر سمجھی جاتی تھیں، کتو بعد میں انہیں پتت سمجھا جانے لگا۔ † اہندو یون انرواست ہو سکتے ہیں، یہ وچار آج دھیان میں نہیں لایا جا سکتا۔ اس سے اُس ہلت کا سمرتن ہوتا ہے کہ جائیوں اور آپ جائیوں کی یون یون کال میں یون یون اوستا رہی ہے۔

† یہ سلہتا دھوبیوں کو پتت ورن کا سمجھتی ہے۔ لیکھک۔ —یہ سंहिता धोवियों को पतित वर्ण का समझती है—लेखक.

700 PAGES,
32 ILLUSTRATIONS
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE

Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known

—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happening in New China can do no better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter...brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

ماہ ۱۰ شاکر

بھائی. او. شکر

हिन्दी और उर्दू की तरक्की का अपना एक इतिहास है. इसको समझने के लिये हमें हिन्दी और उर्दू के जनम पर विचार करना होगा. आरम्भ में हिन्दी और उर्दू में अन्तर नहीं था. सं० 1902 तक हिन्दी को ही उर्दू के नाम से पुकारा जाता था. 'बली' हिन्दी को ही अपनी भाषा कहते थे. 'मीर' ने अपनी जवान को हिन्दी बताते हुए कहा था—

क्या जानू लोग कहते हैं,
किसको सरुरे - कलब ।

आया नहीं है लफ्ज यह,
हिन्दी जबां के बीच ॥

पर उर्दू भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सैयद ईशा अल्ला खाँ ने कहा है—जमीं दानद कि मुबाए फसाहत न मादने बलायात कि जबाने शाँ मराहूर व उर्दूस्त, सिबाये बादशाह हिन्दुस्तान कि ताजे फसाहत बरहए मी जेबद, चन्द अमीर व मसाहिबे शाँ, व चन्द जने क्राबिल, अज क्रिस्म बेगम व खानम व कस्बी हस्तद—हर लफ्जे कि दरीहां इस्तेमाल याफत जबाने उर्दू शुद, न ई कि, हर कस कि दर शाहजेहानाबाद मी बाराद, इस्व गुफ्तगू कुनद मौतबिर बाराद. अगर चुनीं बाराद साकिनाने मुसालपुरा व तक्रसीर करदा अन्द कि जबाने एशां मायूब व खिलाफ उर्दू शुमुदा शवद, [दरिया-ए-लताफत, दुरे दाना शिक्मे, सफा 64]

अर्थात्—ऐसे सज्जनों को नहीं मालूम कि उस भाषा के जिसे उर्दू कहते हैं, सौन्दर्य लालित्य का उद्गम स्थान स्वयं हिन्दुस्तान के सम्राट हैं, जिनके सिर पर उर्दू भाषा की ओजस्विता का मुकुट शोभा देता है. उनके कतिपय व विशेष सेवक व उनके राज भवन की स्त्रियाँ, जिनमें बेगमें व अन्य घरों की स्त्रियाँ व कस्बियाँ शामिल हैं, जिन शब्दों का इस्तेमाल करती हैं, वही उर्दू भाषा है. शाहजहानाबाद का हर बाशिन्दा जो कुछ कहे वह जवान के लिहाज से मुस्तनद नहीं समझा जा सकता. यदि ऐसा न होता तो मुसालपुरा के निवासियों की भाषा को दूषित व उर्दू के खिलाफ क्यों समझा जाता ?

'दरिया-ए-लताफत' एक प्रसिद्ध किताब है. मौलाना अबदुल हक साहब ने इस किताब के सम्बन्ध में कहा है, "उर्दू जवान के कवायद, मुहाबरात और रोयमरह के मुतास्सिल इससे पहले कोई किताब नहीं लिखी गई थी

हन्दी और उर्दू की तرقی کا اپنا ایک ایتہاس ہے . اس کو سمجھنے کے لئے ہمیں ہندی اور اردو کے جنم پر وچار کرنا ہوگا . آرمیں میں ہندی اور اردو میں اंतर نہیں تھا . سن 1902 تک ہندی کو ہی اردو کے نام سے پکارا جاتا تھا . 'ولی' ہندی کو ہی اپنی بھاشا کہتے تھے . 'میر' نے اپنی زبان کو ہندی بتاتے ہوئے کہا تھا—

کیا جانوں لوگ کہتے ہیں
کس کو سرور قلب .
آیا نہیں ہے لفظ یہ
ہندی زبان کے بیچ .

پر اردو بھاشا کی انتہی کے سمبندہ میں سید انشالله خان نے کہا ہے—زمین داند کہ سوائے فصاحت نہ معدن بلغت، کہ زبان شاں مشہور بہ اردوست، سوائے بادشاہ ہندستان کہ تاج فصاحت بروئے می زبید، چند امیر و مصاحب شاں و چند زن قابل، از قسم بیگم و خاتم و کسبی مستند—هر لفظہ کہ بیلبان استعمال یافت زبان اردو شد . نہ این کہ هر کس کہ درشاهجہاں آباد می باشد، حسب گفتگو کند معتبر باشد . اگر چنہیں باشد ساکنان منل پورہ چہ تقسیر کردہ اند کہ زبان ایشان معیوب و خلف اردو شمرده شود . [دریائے لطافت، در داندہ شکمہ، صفحہ 64]

ارتقاء—ایسے سچوں کو نہیں معلوم کہ اُس بھاشا کے جسے اردو کہتے ہیں، سوندریہ لائیت کا ادگم استھان سوئم ہندستان کے سمراٹ ہیں، جن کے سر پر اردو بھاشا کی اوجسوتا کا مکت شویہا دیتا ہے . اُن کے کتہہ و رشعہ سہوک و اُن کے راج بھوں کی "ستریاں" چنہیں بیگمیں و اندہ گھروں کی استریاں و کسبیاں شامل ہیں، جن شبدوں کا استعمال کرتی ہیں، وہی اردو بھاشا ہے . شاہجہاں آباد کا ہر باشندہ جو کہے وہ زبان کے لحاظ سے مستند نہیں سمجھا جاسکتا . یہی ایسا نہ ہوتا تو منل پورہ کے نواسیوں کی بھاشا کو دوشمت و اردو کے خلف کہیں سمجھا جاتا ؟

'دریائے لطافت' ایک پرسدہ کتاب ہے . مولانا عبدالحق صاحب نے اُس کتاب کے سمبندہ میں کہا ہے "اردو زبان کے قوائد، محاورات اور روزمرہ کے متعلق اس سے پہلے کوئی کتاب نہیں لکھی گئی تھی

پھر اسی بات پر یہ کہ اس کے بعد بھی کوئی کتاب اس بابہ کی نہیں لکھی گئی۔ جو لوگ اردو زبان کا محققانہ مطالعہ کرنا چاہتے ہیں، یا اس کی صرف نکتہ پر کوئی محققانہ تالیف کرنا چاہتے ہیں، ان کے لئے ان کا مطالعہ ضروری ہی نہیں بلکہ ناگزیر ہے۔ ”سید انشالہ خاں سے خلاصہ سر سید احمد خاں نے اپنی پستک ’انوارالاصناف‘ میں کہا ہے۔ ”جب کہ شائع ہوا بادشاہ نے سن 1648 میں شہر شائع ہوا آباد آباد کیا تو ہر ملکوں کے لوگوں کا مجمع ہوا۔ اُس زمانہ میں فارسی زبان اور ہندی بھاشا بہت مل گئی اور بعض فارسی لفظوں میں اور اکثر بھاشا کے لفظوں میں بہت کثرت استعمال کے تغیر و تبدیلی ہو گئی۔ غرض کہ لشکر بادشاہی اور اردوئے معلہ میں ان دونوں زبانوں کی ترکیب سے نئی زبان پیدا ہو گئی اور اسی سبب سے زبان کا اردو نام ہوا۔ پھر کثرت استعمال سے لفظ زبان کا مخدوف ہو کر اسی زبان کو اردو کہلے لگے۔“

ان اوتاروں سے پرکھت ہو جانا ہے کہ اردو کا جنم شائع ہوا کے سہ ہوا ہے، پر اردو بھاشا کا شروع کا نام ہندی ہی تھا۔ ہندی کو ہندو مسلمان دونوں کی دیوتک مانا جاتا تھا۔ امیر خسرو، انیس، انشا، جرئت اتہادی نے اپنی رچناؤں میں اردو کے لئے ہندی شبد کا ہی پریوک کیا ہے۔ اس بات کو سبھی اردو اتہاس لیکھکوں نے بھی سوئیکار کر لیا ہے۔ اردوئے قدیم، تاریخ نسب اردو، اتہادی گزنتوں کے ودوان لیکھکوں نے بہت چہان بین کے بعد یہ ثابت کر دیا ہے کہ اردو کا شروع کا نام ہندی ہے۔

اب دیکھئے، فہنت پدم سنگھ شرما نے اپنی ’ہندی اردو اور ہندوستانی‘ نامک پستک میں لکھا ہے۔ ”اس ہندی نام کی سرشتی ہندوؤں نے نہیں کی، اور نہ انہوں نے پرچار ہی کیا ہے، ہندو لیکھکوں نے تو اُس کے لئے سروتر بھاشا شبد کا ہی پریوک کیا ہے۔ بھاشا کے لئے ہندی شبد کے سرو پرتہم نامکوں کا سارا شریئے مسلمان لیکھکوں اور کوئیوں کو ہی دیا جاسکتا ہے۔ ہندوؤں کا اس میں ذرا بھی ہاتھ نہیں۔“

اتہ یہ ماننا ہوگا کہ بدینی یہاں کے سادھارن لوگوں میں ایک ایسی بھاشا یا زبان موجود تھی جس میں وہ ایک دوسرے کو سمجھ سکتے تھے پر اُس کا ’ہندی‘ نامک ہندوؤں نے نہیں کیا۔ ہندی اور اردو دونوں پر ایہ ایک سی بھاشا کا نام تھا۔ دونوں میں وہیں انتر نہیں تھا۔ اردو کو ہندی کہتے ہی تھے۔ انہی صاحب اردو کے لئے ہندی شبد کا پریوک کیا کرتے تھے اور ان کا پرسدہ شعر ہے۔

مطلب کی مہرے پار،
نہ سمجھتے تو کیا عجب۔

اب دیکھئے، ہرلڈٹ پراسیڈر شرمہ نے اپنی ’ہندی، اردو، اور ہندوستانی‘ نامک پستک میں لکھا ہے۔ ”اس ہندی نام کی سڑٹ ہندوؤں نے نہیں کی، اور نہ انہوں نے پرچار ہی کیا ہے، ہندو لیکھکوں نے تو اس کے لئے سروتر بھاشا شبد کا ہی پریوک کیا ہے۔ بھاشا کے لئے ہندی شبد کے سرو پرتہم نامکوں کا سارا شریئے مسلمان لیکھکوں اور کوئیوں کو ہی دیا جاسکتا ہے۔ ہندوؤں کا اس میں ذرا بھی ہاتھ نہیں۔“

مطلب کی مہرے پار،
نہ سمجھتے تو کیا عجب۔

सम जानते हैं तुर्की की,
हिन्दी जुबां वहीं ॥

यहाँ हिन्दी उर्दू पर्यायवाची शब्द हैं। इस शेर से यह भी साफ हो जाता है कि यह जन-साधारण हिन्दुस्तानी की ज़बान थी पर ज्यादातर तुर्की लोग इसे न समझ पाते थे। इसलिये पहले हिन्दी और उर्दू में कोई भेद हम नहीं पाते। अमीर खुसरो को हिन्दी बाले खड़ी बोली का पहला कवि मानते हैं, और उर्दू कविता का आरम्भ तो उनसे होता ही है। दोनों उन्हें अपना पहला कवि मानते हैं, उनकी एक ही कविता को अपनी अपनी कहते हैं। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने सातवें बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के समापति के पद से भाषण देते हुए कहा था—“हिन्दी और उर्दू, चाहे उनकी उत्पत्ति और विकास जिस क्रम और जिस रीति से हुआ हो, दो भिन्न भाषायें नहीं हैं। इसका अकाट्य प्रमाण जिसे मुसलमान लोग उर्दू भाषा कहते हैं उसका पुराना रूप है। उर्दू के बड़े से बड़े हिमायती यही कह सकते हैं कि उर्दू की पैदाइश हिन्दुस्तान में मुसलमानी बादशाहत कायम होने पर हुई। अब उस समय के लेखक की भाषा पर गौर करें। बहुत पीछे जाने की ज़रूरत नहीं। मुसलमानी राज्य स्थापित होने पर सैकड़ों वर्ष के बाद के मशहूर लेखक अमीर खुसरो की कविताओं को लीजिये और विचार कीजिये कि उनकी भाषा आज की खड़ी बोली से किस प्रकार अलहदा है। अमीर खुसरो ने अनपढ़ चम्पों के लिए यह कविता लिखी थी—

औरों की चौपहरी बाजे,
चम्पों की अठपहरी ।
बाहर के कोई आये नहीं,
आये सारे राहरी ॥

“इसे देखने से पता लगेगा कि आज की हिन्दी और उस समय की उर्दू में बहुत मतभेद नहीं है..... इसलिये यह कह देना कि कुछ अरबी फ़ारसी शब्दों के मिलावट से ही एक नई और स्वतंत्र भाषा पैदा हो गई मुनासिब नहीं है।”

दूसरे देशों के मुसलमानों के साथ सम्पर्क होने के कारण उनकी संस्कृति, सभ्यता, भाषा और उनके साहित्य का प्रभाव हमारी संस्कृति, भाषा और साहित्य पर पड़ने लगा। अरबी, फ़ारसी के अनेक शब्द, रचना-शैलियाँ और वाक्य-विन्यास भी हिन्दी भाषा में रायज हो गये। हिन्दी के आदि प्राप्त ग्रन्थ ‘पृथ्वीराज रासो’ में अरबी फ़ारसी के शब्द हैं। तुलसी और सूर की रचनाओं में भी अरबी और फ़ारसी के शब्द आये हैं। इसी तरह उर्दू में भी संस्कृत तथा प्राकृत के बहुत से शब्दों का समावेश हो गया। उर्दू के प्रसिद्ध कोष ‘फरहंगे आसफिया’ में कुल 54 हजार शब्द हैं, जिनमें 32 हजार हिन्दी के ही शब्द हैं। फरहंग बाले ने अपनी

‘सब जानते हैं तुर्की की’
हिन्दी ज़बान नेहें ।

यहाँ हिन्दी उर्दू पर्यायवाची शब्द हैं। इस शेर से यह भी साफ हो जाता है कि यह जन-साधारण हिन्दुस्तानी की ज़बान थी पर ज्यादातर तुर्की लोग इसे न समझ पाते थे। इसलिये पहले हिन्दी और उर्दू में कोई भेद हम नहीं पाते। अमीर खुसरो को हिन्दी बाले खड़ी बोली का पहला कवि मानते हैं, और उर्दू कविता का आरम्भ तो उनसे होता ही है। दोनों उन्हें अपना पहला कवि मानते हैं, उनकी एक ही कविता को अपनी अपनी कहते हैं। डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने सातवें बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के समापति के पद से भाषण देते हुए कहा था—“हिन्दी और उर्दू, चाहे उनकी उत्पत्ति और विकास जिस क्रम और जिस रीति से हुआ हो, दो भिन्न भाषायें नहीं हैं। इसका अकाट्य प्रमाण जिसे मुसलमान लोग उर्दू भाषा कहते हैं उसका पुराना रूप है। उर्दू के बड़े से बड़े हिमायती यही कह सकते हैं कि उर्दू की पैदाइश हिन्दुस्तान में मुसलमानी बादशाहत कायम होने पर हुई। अब उस समय के लेखक की भाषा पर गौर करें। बहुत पीछे जाने की ज़रूरत नहीं। मुसलमानी राज्य स्थापित होने पर सैकड़ों वर्ष के बाद के मशहूर लेखक अमीर खुसरो की कविताओं को लीजिये और विचार कीजिये कि उनकी भाषा आज की खड़ी बोली से किस प्रकार अलहदा है। अमीर खुसरो ने अनपढ़ चम्पों के लिए यह कविता लिखी थी—

“औरों की चौपहरी बाजे,
चम्पों की अठपहरी ।
बाहर से कौनी आये नहीं,
आये सारे शहरी ।

“इसे देखने से पता लगेगा कि आज की हिन्दी और उस समय की उर्दू में बहुत मतभेद नहीं है..... इसलिये यह कह देना कि कुछ अरबी फ़ारसी शब्दों के मिलावट से ही एक नई और स्वतंत्र भाषा पैदा हो गई मुनासिब नहीं है।”

दूसरे देशों के मुसलमानों के साथ सम्पर्क होने के कारण उनकी संस्कृति, सभ्यता, भाषा और उनके साहित्य का प्रभाव हमारी संस्कृति, भाषा और साहित्य पर पड़ने लगा। अरबी, फ़ारसी के अनेक शब्द, रचना-शैलियाँ और वाक्य-विन्यास भी हिन्दी भाषा में रायज हो गये। हिन्दी के आदि प्राप्त ग्रन्थ ‘पृथ्वीराज रासो’ में अरबी फ़ारसी के शब्द हैं। तुलसी और सूर की रचनाओं में भी अरबी और फ़ारसी के शब्द आये हैं। इसी तरह उर्दू में भी संस्कृत तथा प्राकृत के बहुत से शब्दों का समावेश हो गया। उर्दू के प्रसिद्ध कोष ‘फरहंगे आसफिया’ में कुल 54 हजार शब्द हैं, जिनमें 32 हजार हिन्दी के ही शब्द हैं। फरहंग बाले ने अपनी

مجموعہ میں خوب مان لیا ہے کہ اردو میں 82 ہزار ہندی کے ہی شہد ہیں۔ 22 ہزار کے لگبھگ دسے شہد ہیں جو بدیشی بھاشوں سے نکلے ہوئے مانے جاتے ہیں۔ پروفیسر سندرلال جی نے اپنے 'ہندی' اردو یا ہندوستانی' شہد کے بارے میں کہا ہے کہ انگریزوں کے آنے کے پہلے ہندوؤں کو یہ تر نہیں تھا کہ 'اوشہکتا' کی جگہ 'ضرورت' کہہ دیا گیا تو ہندو سلسکرتی سے جانشینی اور مسلمانوں کو یہ تر نہیں تھا کہ 'ضرورت' کی جگہ 'اوشہکتا' آگیا تو اسلام خطرے میں پڑ جائیگا۔ یہ وہ سہ تھا جب کہ سچ سے آوار ہندو مسلمانوں کو رام اور رحیم میں فرق نظر نہ آتا تھا، جب کہ رحیم نے اپنا 'مدن شک' 'شری گلیش آہ نہ' سے شروع کیا تھا، جب کہ جہانگیر کے زمانہ میں احمد نے سائبرک شاستر پر اپنی کتاب 'شری گلیش آہ نہ' سے شروع کی تھی، جب کہ احمد اللہ دکنی نے نایکے پیر پر اپنی پستک کے سب کے اوپر لکھا تھا 'شری رام جی سپاہی' 'اٹھ سرسوتی جی کی استوتی'، جب کہ یعقوب خاں نے 'رس بھوشن' لکھنے سے پہلے سب سے اوپر 'شری گلیش جی' 'شری سرسوتی جی' 'شری رادھا کرشن جی' 'شری گوری شکر جی' کو منسکارت کیا تھا، جب کہ ظلم نبی اسلم نے اپنی دونوں پستکوں کے شروع میں ہی 'شری گلیش آہ نہ' لکھا تھا..... اس طرح سینکڑوں ہندی ودوان اپنی بچاؤں کو 'بسم اللہ الرحمن الرحیم' سے شروع کرتے تھے۔

انگریزوں کے آنے کے بعد وائاروں میں کافی تبدیلی ہوئی۔ منزل کل میں جو آب و ہوا تھی، بدلی۔ ہماری بھاشا اور ان کی زبان الگ الگ ہوئے لکھیں۔ انگریز راج نہایتکہ یہ سمجھتے ہیں کہ ہماری پھوٹ ان کی روٹی ہے اور اپنی روٹی کے لئے پھوٹ ڈالنی شروع کی۔ اگر ہم کہیں کہ ہم میں پھوٹ ڈالنے کے لئے فورٹ ولیم کالج بنا تو مبالغہ نہیں ہو سکتا۔ سر چارلس آڈ کے شکشا سببندی مسودے سے، جو سن 1854 میں پاس ہوا تھا، بدیشی بھاشا کے مادمیم دوارا شکشا کا پرہندہ اوشہ ہوا، پر اس سے ہم میں پھوٹ بھی پھیلی۔ ہم ایک سے دو ہوئے۔ جان گلکرایسٹ نے دو ہندی کے ودوانوں اور دو اردو کے ودوانوں کو بلاکر آدیش دیا کہ اپنی اپلی بھاشا میں پستکیں لکھیں۔ جان گلکرایسٹ نے یہ آدیش اس سے دیا تھا جب ہندی والے یہ نہیں مانتے تھے کہ اپنی بھید اٹھوا کچھ بدیشی شہد آجائے سے اردو دوسری بھاشا ہو سکتی ہے اور نہ اردو والے اپنی بھید اٹھوا دیشج شہد آجائے سے ہندی کو دوسری بھاشا سمجھتے تھے۔ یہاں تک کہ رانی کیکٹی کی کہانی کو، اس کے فارسی لپی میں لکھی جانے پر بھی، ہندی ساہتیہ میں استہان ملا۔ 'رانی کیکٹی کی کہانی' سے ہی ان دونوں بھاشوں کی کہانی کا وکس ہوتا ہے۔ 'رانی کیکٹی کی کہانی' اُس سے

لکھی گئی تھی جس سے گٹرایسٹ نے ہندی اور اردو میں الگ الگ رچنا کرنے کی آگاہی دی تھی۔ اس کے بعد ہندی کے ودوانوں نے ودیشی شبدوں کا ہشکار کیا، اور اردو کے ودوانوں نے دیشی شبدوں کا۔ ہندی اور اردو الگ الگ بہاشائیں ہو گئیں۔ گٹرایسٹ کی ہی چہتر چھاپا میں ہندی اردو سنکرش کا شری گنیش ہوا۔ انگریزوں نے ہندو اور مسلمانوں میں بہت قائلہ کا پریاس بہاشا کے دوارا ہی کیا۔ وہ جانتے تھے کہ راہیہ انیک روپنا کے ہوتے ہوئے بھی دونوں میں کیسی سماتا ہے۔ یہی سماتا بہارتہ ایکتا کا مولک ادھار تھی۔ یہی کارن تھا کہ انہوں نے ایکتا کی ہرنکھائیں ترز قائلں۔ سنسکرت کے پلذت اور عربی کے عالم بہاشا کا نیرترو کرنے لگے۔ عربی فارسی داں عالموں کی مہربانی سے اردو میں عربی فارسی کے مشکل شبدوں اور سنسکرتوں کی کرہا سے ہندی میں کلشت شبدوں کی بھرمار ہونے لگی۔ تھوڑے ہی دنوں میں دونوں بہاشائیں بہت الگ جا پڑیں۔

شروع میں انگریزوں نے اردو کو پروتساہن دینا آرمیہ کیا۔ اردو کورٹ کی بہاشا تھی اور کورٹ کی بہاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک نفیہن اپیل' مانی جاتی ہے۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹاراہات سا ہوا۔ اس سے ہندی کی سنکٹمہ او سٹھا کا ورین کرنے ہوئے بابو ہال مکند گپت نے دہ کے ساتھ کہا ہے—'جو لوگ ناگری اکثر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکثر سیکھنے پر ورش ہوئے اور ہندی بہاشا ہندی نہ رہ کہ اردو بن گئی۔ ہندی اُس بہاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکثروں میں لکھی جاتی تھی۔'

شروع میں انگریزوں نے اردو کو پروتساہن دینا آرمیہ کیا۔ اردو کورٹ کی بہاشا تھی اور کورٹ کی بہاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک نفیہن اپیل' مانی جاتی ہے۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹاراہات سا ہوا۔ اس سے ہندی کی سنکٹمہ او سٹھا کا ورین کرنے ہوئے بابو ہال مکند گپت نے دہ کے ساتھ کہا ہے—'جو لوگ ناگری اکثر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکثر سیکھنے پر ورش ہوئے اور ہندی بہاشا ہندی نہ رہ کہ اردو بن گئی۔ ہندی اُس بہاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکثروں میں لکھی جاتی تھی۔'

شروع میں انگریزوں نے اردو کو پروتساہن دینا آرمیہ کیا۔ اردو کورٹ کی بہاشا تھی اور کورٹ کی بہاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک نفیہن اپیل' مانی جاتی ہے۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹاراہات سا ہوا۔ اس سے ہندی کی سنکٹمہ او سٹھا کا ورین کرنے ہوئے بابو ہال مکند گپت نے دہ کے ساتھ کہا ہے—'جو لوگ ناگری اکثر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکثر سیکھنے پر ورش ہوئے اور ہندی بہاشا ہندی نہ رہ کہ اردو بن گئی۔ ہندی اُس بہاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکثروں میں لکھی جاتی تھی۔'

شروع میں انگریزوں نے اردو کو پروتساہن دینا آرمیہ کیا۔ اردو کورٹ کی بہاشا تھی اور کورٹ کی بہاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک نفیہن اپیل' مانی جاتی ہے۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹاراہات سا ہوا۔ اس سے ہندی کی سنکٹمہ او سٹھا کا ورین کرنے ہوئے بابو ہال مکند گپت نے دہ کے ساتھ کہا ہے—'جو لوگ ناگری اکثر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکثر سیکھنے پر ورش ہوئے اور ہندی بہاشا ہندی نہ رہ کہ اردو بن گئی۔ ہندی اُس بہاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکثروں میں لکھی جاتی تھی۔'

شروع میں انگریزوں نے اردو کو پروتساہن دینا آرمیہ کیا۔ اردو کورٹ کی بہاشا تھی اور کورٹ کی بہاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک نفیہن اپیل' مانی جاتی ہے۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹاراہات سا ہوا۔ اس سے ہندی کی سنکٹمہ او سٹھا کا ورین کرنے ہوئے بابو ہال مکند گپت نے دہ کے ساتھ کہا ہے—'جو لوگ ناگری اکثر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکثر سیکھنے پر ورش ہوئے اور ہندی بہاشا ہندی نہ رہ کہ اردو بن گئی۔ ہندی اُس بہاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکثروں میں لکھی جاتی تھی۔'

شروع میں انگریزوں نے اردو کو پروتساہن دینا آرمیہ کیا۔ اردو کورٹ کی بہاشا تھی اور کورٹ کی بہاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک نفیہن اپیل' مانی جاتی ہے۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹاراہات سا ہوا۔ اس سے ہندی کی سنکٹمہ او سٹھا کا ورین کرنے ہوئے بابو ہال مکند گپت نے دہ کے ساتھ کہا ہے—'جو لوگ ناگری اکثر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکثر سیکھنے پر ورش ہوئے اور ہندی بہاشا ہندی نہ رہ کہ اردو بن گئی۔ ہندی اُس بہاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکثروں میں لکھی جاتی تھی۔'

شروع میں انگریزوں نے اردو کو پروتساہن دینا آرمیہ کیا۔ اردو کورٹ کی بہاشا تھی اور کورٹ کی بہاشا انکے شبدوں میں 'سب سے ادھک نفیہن اپیل' مانی جاتی ہے۔ انگریزوں کا یہ کام ہندی پر کٹاراہات سا ہوا۔ اس سے ہندی کی سنکٹمہ او سٹھا کا ورین کرنے ہوئے بابو ہال مکند گپت نے دہ کے ساتھ کہا ہے—'جو لوگ ناگری اکثر سیکھتے تھے' وہ فارسی اکثر سیکھنے پر ورش ہوئے اور ہندی بہاشا ہندی نہ رہ کہ اردو بن گئی۔ ہندی اُس بہاشا نام رہا جو ٹوٹی پھوٹی چال پر دیوناگری اکثروں میں لکھی جاتی تھی۔'

में १० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'हिन्दी भाषा और
 फलका साहित्य' शीर्षक लेख में लिखा—“उर्दू कोई भिन्न
 भाषा नहीं, वह भी हिन्दी ही है, उसमें चाहे जितने फारसी
 और अरबी के शब्द भर दें पर जब तक उसकी क्रियायें
 हिन्दी की ही बनी रहती हैं, उसकी रचना हिन्दी ही के
 व्याकरण का अनुसरण करती है, चाहे कोई जो कुछ कहे
 बली और सौदा के काव्यों में जो भाषा है वही तुलसीदास
 और बिहारी के काव्यों में है, 'मेरा बाप' के स्थान पर 'बाप
 मेरा' अथवा 'आपके हुक्म से' के स्थान में 'बहुक्म आपके'
 करने से कहीं भाषा दूसरी हो सकती है ?.....लिखने की
 प्रणाली को बदलने अथवा उसमें किसी अन्य भाषा के
 शब्दों का प्रयोग करने से मुख्य भाषा के अस्तित्व में कदापि
 अन्तर नहीं आ सकता.' पर गिलक्राइस्ट ने जिस फूट का
 'इन्जेक्शन' दिया था उसका जहर, धीरे धीरे हम में से
 बहुतों के नस नस में फैलता गया और अब भी फैल रहा है,
 हाँ, उन विद्वानों और आलिम फ्राण्जिलों को सफलता नहीं
 मिली, पंडित भीमसेन शर्मा ने हिन्दी लेखकों को सलाह
 दी—“संस्कृत भाषा के अग्रभूय भण्डार में शब्दों की न्यूनता
 नहीं है, हमको चाहिये कि अपनी भाषा की पूर्ति संस्कृत के
 सहारे यथोचित करें, जिन लोगों को जिन विशेष प्रचलित
 अन्य भाषान्तर्गत शब्दों के स्थान में उनसे सर्वथा भिन्न
 संस्कृत शब्दों का व्यवहार करने की रुचि नहीं है उन्हें उसी
 से मिलते हुए संस्कृत शब्दों का वहाँ प्रयोग करना चाहिये.”
 नासिक साहब ने उर्दू बालों के लिये कड़ा नियम बनाकर
 कहा—“उसूल इसका यह रक्खा गया है कि फारसी और
 अरबी अल्फाब जहाँ तक मुकीद मिलें, हिन्दी अलफाज न
 बाँधो (तजकिरा जलबये खिज, हिस्सा दोयम सफा 392).

इसका परिणाम यह हुआ कि हिंदी में तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ने लगा। विदेशी शब्दों का बहिष्कार किया गया। शिकायत के स्थान पर 'शिक्षा यत्न' दुश्मन के स्थान पर 'दुःशमन', चश्मा को चक्ष्मा', लालटेन के स्थान पर 'हस्तकाचदीपिका' आदि आदि के प्रयोग होने लगे। इसी तरह, पण्डित पद्मसिंह शर्मा के शब्दों में, "उर्दू वाले नये नये मुअररब और मुसररफ अलफाज तक से गुरेरज करते हैं और उनके बजाय अरबी और फारसी की मुस्तनद लुग़ात से इस्तलाहात नौ बनौ से अपने तर्जे तहरीर में ऐसा तसौना पैदा करते हैं कि उनका एक एक किक़रा ग़ालिब के बाज मुश्किल मिसरे की पेचीदगी पर भी ग़ालिब आ जाता है." ग़िलाक़ाहस्ट ने हमें जिस ज़हर का घूँट पिलाया उसका परिणाम देखकर २० एडविन प्रबिस ने अपने 'हिन्दी और नागरी प्रचारिणी सभा' शीर्षक लेख में लिखा है—“भाषा की समस्या का विचार छोड़कर इतना जरूर मानना पड़ेगा कि बाजारू भाषा की अवस्था चाहे जो हो लेकिन शिक्षित

میں پختہ پہلو پر سودا دہندی نے ہندی بھاشا اور
اسکا سامعیتہ شہر شک لیکم میں لکھا— ”اُردو کوئی
یہن بھاشا نہیں۔ وہ بھی ہندی ہی ہے۔ اسمیں چاہے
جتنے فارسی اور عربی کے شبد بیروہیں پر جب تک
اسکی کوئی نہیں ہندی کی ہی بنی رھتی ہیں“ اسکی رچنا
ہندی ہی کے ویاگون کا انوسرن کرتی ہے۔ چاہے کوئی جو کچھ
کہہ ولی اور سودا کے کاریوں میں جو بھاشا ہے وہی تسلی داس
اور بہاری کے کاریوں میں ہے۔ مہرا باپ کے استھان پر ’باپ میرا‘
اتھوا ’اپنے حکم سے‘ کے استھان میں ’بحکم آدے‘ کرتے سے کہیں
بھاشا دوسری ہو سکتی ہے؟ ... لکھنے کی پر نالی کو بدلنے اتھوا
اسمیں کسی اتھہ بھاشا کے شبدوں کا پڑیوک کرنے سے مکھیہ
بھاشا کے استکو میں کدائی انتر نہیں آسکتا؛ پر گلسکرائسٹ نے
جس بیوت کا ’انجیکشن‘ دیا تھا اسکا زھر دھیرے دھیرے ہم
میں سے بہوتوں کے نس نس میں پھیلتا گیا اور اب بھی
پھیل رہا ہے۔ ہاں، اُن ودانوں اور عالم فاضلوں کو سہلتا نہیں
ملی۔ پختہ بھوشین سرما نے ہندی لیکھوں کو صلاح دی—
”سنسکرت بھاشا کے اکشہ بھندار میں شبدوں کی نہوتنا نہیں
ہے۔ ہمکو چاہئے کہ اپنی بھاشا کی پورتی سنسکرت کے سہارے
یتھوچت کریں۔ جن لوگوں کو جن وشیش پرچلت اتھہ بھاشانترکت
شبدوں کے استھان میں اُن سے سروتھا یہن سنسکرت شبدوں کا
ویوہار کرنے کی رچی نہیں ہے انھیں اُسی سے ملتے ہوئے سنسکرت
شبدوں کا وہاں پڑیوک کرنا چاہئے۔“ ناسک صاحب نے اُردو
والوں کے لئے کرا نہم بنا کر کہا— ”أصول أسکا یہ رکھا گیا ہے
کہ فارسی اور عربی الفاظ جہاں تک مفہد ملیں“ ہندی الفاظ
نہ بانڈھو (تذکرہ چٹوہ خنز، حصہ دوم صفحہ 392)۔

اُسکا پرہیزگار یہ ہوا کہ ہندی میں تقسم شدہوں کا پریوگ بڑھنے لگا۔ ودیشی شبدوں کا دھشکار کیا گیا۔ شکایت کے استہان پر 'شکشا یتن' دشمن کے استہان پر 'دشمن' چشمہ کو 'چکشہ'۔ لائقین کے استہان پر 'ہستکا چندیکا' آدی آدی کے پریوگ ہونے لگے۔ اُسی طرح' بلذت' پدم سنگھ شرما کے شبدوں میں "اردو والے نمٹے نمٹے معرب اور مصرف الفاظ تک سے گریز کرتے ہیں اور انکے بجائے عربی اور فارسی کی مستند لغات سے اصطلاحات نہیں بے اپنے طرز تحریر میں ایسا تو صنع پیدا کرتے ہیں کہ انکا ایک ایک فقرہ غالب کے بعض مشکل مصرعہ کی پہچان کی پر بھی غالب آجاتا ہے۔" گلسکراہٹ نے ہمیں جس زہر کا ٹھونٹ پلایا اُسکا پرہیزگار دیکھ کر رے۔ ایتن گروس نے اپنے 'ہندی اور ناگری پرچارنی سپہا' شورشک لیک میں لکھا ہے۔ "بھاشا کی سمسہا کا وچار چھوڑ کر انکا ضرور ماتنا پڑیکا کہ ہزاروں بھاشا کی استہا جو ہو لیکن شکست

لوگوں کے لیے ہندی اور اردو دونوں الگ الگ भाषायें ہیں۔ اسلئے ناگری لپی میں مدرت ہوئی شدتوں سے یہی بہاشا ہندی کی جگہ نہ پرہائی جا کر ان دونوں بہاشاؤں کی شکشا کا پرتھک پرتھک کرنا چاہئے۔“

اس طرح ہمیں ظلم بنائے رکھنے کے لئے ہندی اور اردو کو پوری طرح الگ کرنے کی کوششیں ہوتی گئیں۔ آزادی پر اپیت کرنے کے بعد اب ہندی اور اردو کو پھر سے ایک جگہ لانا ضروری ہے۔ آئندہ باہری فرق کو ختم کر کے ایکروپٹا لانی ہے۔ ہندی محض ہندیوں کی سہتی نہیں، اردو بھی مسلمانوں کی محض اپنی نہیں۔ پندرہویں بہار پر ادیشک ہندی ساعتیہ سہان کے سو اگتادہیش کی حیثیت سے راجہ راندھیکارمن پرساد سنگ نے کہا تھا—”اب تک ہندی ستیناراین کی کھا کی پنچہری پاتی رہی، آئے اب مولود شریف کی جلیہیاں بھی چکھلی ہوئی۔“ اسی طرح بہار سرگڑ کے بہوت پورو شکشا سچو ڈاکٹر سید محمود صاحب نے پتلہ میں ”انجمن ترقی“ کی نئی عمارت کا سنگ بنیاد رکھتے وقت کہا—”یہ مسلمانوں کی سخت غلطی ہے کہ وہ اردو کو اپنی زبان کہتے ہیں۔ ایسا کرنے سے اردو کو جو سارے ملک کی زبان ہے، نقصان پہونچا رہے ہیں۔“

ہندی اور اردو کو ہمیں پھر کنگا جمن کا سنگ بنانا ہے اور نئی ترویجی کی دھارا بہانا ہے۔ یہ کام ہو کیسے؟ اسکے لئے ہندی اردو کے لیکھوں کو ایک منچ پر جمع ہونا اور ایک دوسرے کو سمجھنا ہے—یعنی ایک بہاشا کا آدرش پیدا کرنا ہے۔ ٹیکسٹ بک کمیٹی کا سہیوگ پر اپیت کر کے اس آدرش کو بچوں تک پہونچانا ہے۔ ہمیں ملوورتی میں پرتھوتن کرنا ہے۔

لوگوں کے لئے ہندی اور اردو دونوں الگ الگ भाषायें ہیں۔ اسلئے ناگری لپی میں مدرت ہوئی شدتوں سے یہی بہاشا ہندی کی جگہ نہ پرہائی جا کر ان دونوں بہاشاؤں کی شکشا کا پرتھک پرتھک کرنا چاہئے۔“

اس طرح ہمیں ظلم بنائے رکھنے کے لئے ہندی اور اردو کو پوری طرح الگ کرنے کی کوششیں ہوتی گئیں۔ آزادی پر اپیت کرنے کے بعد اب ہندی اور اردو کو پھر سے ایک جگہ لانا ضروری ہے۔ آئندہ باہری فرق کو ختم کر کے ایکروپٹا لانی ہے۔ ہندی محض ہندیوں کی سہتی نہیں، اردو بھی مسلمانوں کی محض اپنی نہیں۔ پندرہویں بہار پر ادیشک ہندی ساعتیہ سہان کے سو اگتادہیش کی حیثیت سے راجہ راندھیکارمن پرساد سنگ نے کہا تھا—”اب تک ہندی ستیناراین کی کھا کی پنچہری پاتی رہی، آئے اب مولود شریف کی جلیہیاں بھی چکھلی ہوئی۔“ اسی طرح بہار سرگڑ کے بہوت پورو شکشا سچو ڈاکٹر سید محمود صاحب نے پتلہ میں ”انجمن ترقی“ کی نئی عمارت کا سنگ بنیاد رکھتے وقت کہا—”یہ مسلمانوں کی سخت غلطی ہے کہ وہ اردو کو اپنی زبان کہتے ہیں۔ ایسا کرنے سے اردو کو جو سارے ملک کی زبان ہے، نقصان پہونچا رہے ہیں۔“

ہندی اور اردو کو ہمیں پھر کنگا جمن کا سنگ بنانا ہے اور نئی ترویجی کی دھارا بہانا ہے۔ یہ کام ہو کیسے؟ اسکے لئے ہندی اردو کے لیکھوں کو ایک منچ پر جمع ہونا اور ایک دوسرے کو سمجھنا ہے—یعنی ایک بہاشا کا آدرش پیدا کرنا ہے۔ ٹیکسٹ بک کمیٹی کا سہیوگ پر اپیت کر کے اس آدرش کو بچوں تک پہونچانا ہے۔ ہمیں ملوورتی میں پرتھوتن کرنا ہے۔

پ্রেم کھنڈ نہیں مانگتا۔ بلیک کھنڈ ن کھنڈ دیتا رکھتا ہے۔ پرم دھنڈا ہے کبھی ناراض نہیں ہوتا اور نہ کبھی بدلہ لیتا ہے۔ جہاں پرم ہے، وہاں بھگوان بھی ہے۔

—مہاتما گاندھی

پرم کچھ نہیں مانگتا بلکہ کچھ نہ کچھ دیتا رکھتا ہے۔ پرم دھنڈا ہے کبھی ناراض نہیں ہوتا اور نہ کبھی بدلہ لیتا ہے۔ جہاں پرم ہے، وہاں بھگوان بھی ہے۔

—مہاتما گاندھی

शिवाजी की मराठवी नीति

شواجی کی مذہبی نیستی

स्व० सत्यवद प० एक० एम० अब्दुल बली

سرگندہ سید احمد ایف ایم عبدالعلی

औसत दर्जे के पदे लिखे मुसलमान भाइयों का यह आम खयाल है कि शिवाजी इसलाम का दुरमन था और वह मुसलमानों का नामोनिशान मिटाकर भारत में शुद्ध हिन्दू बादशाहत कायम करना चाहता था। शिवाजी के सम्बन्ध में जो कुछ मैंने जांच पड़ताल की है, उसमें मैं इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि मुसलमान भाइयों की यह राय बिल्कुल गलत है। शिवाजी में मराठवी तरफदारी बिल्कुल नहीं थी और अगर उसे बादशाहत कायम करने में कामयाबी हासिल होती, तो उसकी बादशाहत खालिस हिन्दुस्तानी होती जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों को बकसों अधिकार होते। उसकी बादशाहत मराठा बादशाहत होती जिसके ऊँचे के नीचे सब धर्म वाले अमन और मुहब्बत से रहते और जिसमें हिन्दू मुसलमानों का कोई फर्क न किया जाता।

आम तौर पर इतिहास लेखकों ने शिवाजी के बारे में तरह तरह की गलतफहमियां फैला रखी हैं। स्कूली इतिहास हमें सिखाता है कि शिवाजी हत्यारा और लुटेरा था, उसने दोस्ती का ढोंग रच कर अफजल खां की धोके से हत्या की और वह मुसलमानों का दुरमन था। शिवाजी ने अफजल खां की धोखे से हत्या की या नहीं इस सवाल पर अब भी कई रायें हैं। फर्क कीजिये थोड़ी देर के लिये वह बात मान भी ली जाय कि शिवाजी ने ऐसा किया, तो भी उससे यह कैसे साबित हो सकता है कि शिवाजी मुसलमानों का नामोनिशान मिटा देना चाहता था या शुद्ध हिन्दू बादशाहत कायम करना चाहता था ?

शिवाजी की नीति तथा उसके चरित्र के सम्बन्ध में सब में प्रामाणिक (मुस्तनद) इतिहास लेखक काफी खां समझा जाता है। काफी खां का पिता शिवाजी का समकालीन था। काफी खां खुद शिवाजी की मौत के 13 बरस बाद मुगल बादशाह के कर्मचारी की हैसियत से सूरत, अहमदनगर तथा महाराष्ट्र के कई स्थानों में रहा था। उसने अपनी मराठूर किताब 'शिवाजी की जीवनी' में अफजल खां की हत्या की घोर निन्दा की है, लेकिन शिवाजी के सम्बन्ध में उसने यह भी लिखा है कि—

“शिवाजी ने नये नये किले बनवाये। अगर एक तरफ उसने बीजापुर के राज्य में खूटपाट की तो दूसरी ओर

असल दरजे के बड़े लम्हे मुसलमान भाइयों का ये علم खयाल है कि शवाजी اسلام का دشمن था اور وہ مسلمانوں کا نام و نشان متاثر بھارت میں شدہ ہندو بادشاہت قائم کرنا چاہتا تھا۔ شواجی کے سببندہ میں جو کچھ میں نے جانچ پڑتال کی ہے، اُس سے میں اُس نتیجے پر پہونچا ہوں کہ مسلمان بھائیوں کی یہ رائے بالکل غلط ہے۔ شواجی میں مذہبی طرفداری بالکل نہیں تھی اور اگر اُسے بادشاہت قائم کرنے میں کامیابی حاصل ہوتی، تو اُسکی بادشاہت خالص ہندوستانی ہوتی جس میں ہندو اور مسلمان دونوں کو یکساں ادھیکار ہوتے۔ اُسکی بادشاہت مراثی بادشاہت ہوتی جسکے چھتے کے نیچے سب دھرم والے امن اور محبت سے رہتے اور جس میں ہندو مسلمانوں کا کوئی فرق نہ کیا جاتا۔

عام طور پر ایتھاس لکھکوں نے شواجی کے بارے میں طرح طرح کی غلط فہمیاں پھیلا رکھی ہیں۔ اسکولی ایتھاس ہمیں سکھاتا ہے کہ شواجی ہتھارا اور لٹورا تھا، اُس نے دوستی کا ڈھنگ رچ کر افضل خان کی دھوکے سے ہتھیا کی اور وہ مسلمانوں کا دشمن تھا۔ شواجی نے افضل خان کی دھوکے سے ہتھیا کی یا نہیں اس سوال پر اب بھی کئی رائیں ہیں۔ فرض کیجئے تھوڑی دیر کے لئے یہ بات مان بھی لی جائے کہ شواجی نے ایسا کیا، تو بھی اُس سے یہ کہسے ثابت ہو سکتا ہے کہ شواجی مسلمانوں کا نام و نشان متا دینا چاہتا تھا یا شدہ ہندو بادشاہت قائم کرنا چاہتا تھا ؟

شواجی کی فہمی تھا اُسکے چرنر کے سببندہ میں سب میں پرامتک (مستند) ایتھاس لکھک کافی خاں سمجھا جاتا ہے۔ کافی خاں کا پتا شواجی کا سکالین تھا۔ کافی خاں خود شواجی کی موت کے 13 برس بعد مغل بادشاہ کے کرمچاری کی حیثیت سے صورت، احمد نگر تھا مہاراشٹر کے کئی استھانوں میں رہا تھا۔ اُس نے اپنی مشہور کتاب 'شواجی کی جیوونی' میں افضل خان کی ہتھیا کی گھر نفدا کی ہے، لیکن شواجی کے سببندہ میں اُس نے یہ بھی لکھا ہے کہ—

“شواجی نے قلعہ قلعہ بنوائے۔ اگر ایک طرف اُس نے بیجا پور کے راجہ میں لوٹ پات کی تو دوسری اور

وہ نے اپنے راجہ کو ہمایا بھی۔ یہ صحیح ہے کہ وہ تھوڑی باتوں کو لوٹ لیا کرتا تھا، لیکن ساتھ ہی ساتھ یہ بھی صحیح ہے کہ اس نے اپنے سینکڑوں کے لئے یہ نیم بنا دیا تھا کہ وہ جہاں کہیں بھی لوٹ مار کریں وہاں قرآن شریف کی مسجدوں کی اور کسی کی بھی بیٹھوں کی بے عزتی نہ کریں۔ جب کبھی قرآن شریف کی کوئی پڑتی آسمان ہاتھ میں پوجاتی تو وہ اسے بڑی عزت سے رکھتا تھا اور اپنے کسی مسلمان اہلوائی کو بھونک دیتا تھا۔“

اس نے لکھا ہے—

ایک دوسرے مسلمان ایتھاس لیکھک بشیر الدین احمد نے اپنی پستک ’ہیجاپور کی تاریخ‘ میں کئی خاں کے بیان کی تائید کی ہے۔ اُس نے لکھا ہے—

”شواجی میں بہت سے اچھے کن تھے۔ مسلمان ایتھاس لیکھکوں کا کہنا ہے کہ وہ قرآن شریف کی بڑی عزت کرتا تھا۔ مسجدوں کو وہ پاک سمجھ کر اُنکا سالن کرتا تھا۔ آستریوں اور بچوں کی طرف اُس کا ہرگز بے حد تعریف کے قابل رہا۔ شواجی کا نام ہندوستان کے ایتھاس میں سدا امر رہیگا۔“

بشیر الدین احمد نے اپنی اس پستک میں آگے چل کر لکھا ہے—

”جین لوگوں نے شواجی کے جیون کا اُردھیں (مطالعہ) کیا ہے وہ جانتے ہیں کہ وہ کیسا بدھیمان، بہادر اور محنتی آدمی تھا۔ دوراندیشی، قابلیت، دربا دلی، بہادری، ہمت، محنت اور مردانگی اُس کے قدرتی گن تھے۔ کچھ لوگ اُسے ڈاؤ، تھرا اور دھوکے باز کہتے ہیں؛ لیکن اُسکی زندگی ہمیں کچھ اور ہی بتاتی ہے۔ اُن دنوں لوٹ مار کرنا اور آگ لگا دینا بڑی معمولی سی بات تھی۔ دھوکے بازی، سو جنگ میں کون دشمن کو دھوکا دینا نہیں چاہتا؟ شہت پاشا میں دھوکے بازی کو ہی کوٹ نیکیا کہتے ہیں۔ شواجی کی بہادری کی جتنی بھی تعریف کی جائے کم ہے۔ ایک سادھان دیکتی ہوئے ہوئے اُس نے منل سمراں تھا عادل شاہی سلطان کے ناک میں دم کر دیا تھا۔ کبھی وہ عادل شاہی والوں سے ملکر منلوں کے راجہ میں لوٹ مار کرنے لگتا تھا اور کبھی منلوں کی اور ملکر ہیجاپور کے راجہ میں لوٹ پلٹ مچا دیتا تھا۔ سچ تو یہ ہے کہ وہ جدر جاتا تھا کسی کو اُس سے ٹکر لینے کی ہمت نہ پڑتی تھی۔ 25 برس تک اُسے دونوں سے لہا لیا اور سن 1091 ہجری یعنی 1680 عیسوی میں وہ دہروں کے لوک کو کچھ کر گیا۔“

یہ بات بڑی مشہور ہے کہ شواجی رنکاری طبع میں ہنکوت کے نمک رنہ والے ہانا پاتوت ناسک ایک مسلمان فقور کا پکا بہمت تھا۔ اُس کی سہنا ہی میں

یہ بات بڑی مشہور ہے کہ شواجی رنکاری طبع میں ہنکوت کے نمک رنہ والے ہانا پاتوت ناسک ایک مسلمان فقور کا پکا بہمت تھا۔ اُس کی سہنا ہی میں

نہیں، بلکہ شمس و بہار میں ہیں اچھے اچھے پدوں پر انیک
مستمل کر سجاتے تھے اُس کے منشی کا نام قاضی جہدر تھا۔ شرافی
سمجھا جی کے راجا ہونے پر اس نے سرائیوں کی نوکری چھوڑ کر
منہریں کی نوکری کر لی تھی اور کچھ سمنے بعد وہ میل سامراجہ
کا پردھان قاضی ہو گیا تھا۔

سویرے شری گاشی ناتھ تیلنگ نے اپنے ایک لیکھ میں لکھا تھا کہ "ایسا معلوم ہوتا ہے کہ جہاں شواجی نے مندروں، مٹیوں، آدی کی رکشا کی تھی، وہیں اس نے مسجیدوں، بدھوں آدی کو منہ والی سرکاری سپانٹا بھی بند نہیں کی تھی۔" اپنے اس کتھن کے سمرتھن میں انہوں نے کئی یورپین لیکھروں کا حوالہ دیا ہے۔ اُن نشپکش و دیخی لیکھروں کی بات کو مان لینے میں اتھاس کے و دیارتھروں کو کسی طرح کا سلوک نہ کرنا چاہیئے۔

خود اور نکوئیپ کے شواجی کے نام لکھے ہوئے پانچ پتر
ابھی تک موجود ہیں اور سکڑا کے عجائب گھر میں پارس
نیس کے سنگرہ میں سونگھت ہیں۔ انہیں سے کئی پتر افضل خاں
کے ہدف کے پیشچات لکھے گئے تھے اور ان سب پتر میں اور نکوئیپ
نے شواجی کو 'مطیع الاسلام' اور بہات اسلام کا اکیاں کاری لکھا ہے۔
ان سب پرمائوں کے رتھے ہوئے کیا کوئی یہی مستجدار آدمی اس
نیکے پر پہنچ سکتا ہے کہ شواجی مسلمانوں سے نفرت کرنا
تھا، ان کا نام و نشان مٹا دینا چاہتا تھا اور بھارت میں شدہ
ہندو راجہ کی استہانہ کرنا چاہتا تھا ؟

”.....میں تو رام راج یعنی دنیا میں
 ایشور کے راج کا سہنا دیکھتا ہوں۔ وہی آزادی ہے۔ سرورگ
 میں یہ راج کیسا ہوگا؟ سو میں نہیں جانتا۔ بہت دور
 کی چیز جانتا کی مجھے اچھا بھی نہیں ہے۔ اگر ورمان
 (حال) دل کو کٹی اچھا لگتا ہو، تو بھوشیہ (مستقبل)
 اُس سے بہت اُگ نہیں ہو سکتا۔

”اس لئے راج نیتک، آرہک اور نیتک (اخلاقى) نہیں طرح کی آزادى ہى سچى آزادى ہے.....“

—مہاتما گاندھی

شی جناناااa

شوی کلان شکر کویا شکر پلندیا

سمرات عالمگیر بھارت کے ظالم بادشاہوں میں سے ایک گنا جاتا ہے۔ لیکن جہاں ایک اور اُس نے اپنے پتا شاہجہاں کو قہد میں رکھا اور بھانوں کو قتل کیا، وہاں دوسری اور وہ قربانی 'سداچار اور کتھور چٹوں کی پرتی مورتی سمجھا جاتا ہے۔ یہی ایک اور وہ زبردست سوچھاچاری تھا تو دوسری اور غریبی اور سمرات سے بھرا ہوا۔ پرچا کی گڑھی کھائی کا ایک پیسہ بھی اپنے سوارات کے لئے خرچ کرنے کو وہ پاپ سمجھتا تھا۔ ٹہنی سی کر اور قرآن لکھ کر وہ اپنا پست پالتا تھا۔ دنیا کے بڑے سے بڑے سمراتوں میں اُس کی گنتی تھی۔ اُس کا خزانہ ہیرے جواہرات سے لیا ب تھا۔ لیکن نمک اور ہاجرے کی روٹی ہی پر وہ اپنا جھون کاٹتا تھا۔ وہ اپنی سلطنت کو 'خداداد' مانتا تھا۔ مرنے سے پہلے سمرات عالمگیر نے جو وصیت کی ہے، اُسے دیکھ کر ہم اُس مہان سمرات کے آخری دنوں کی مانسک حالت کو بھلی بھانٹی سمجھ سکتے ہیں۔ وصیت کی دھارائیں یہ ہیں—

(1) بھراہیوں میں ڈوبا دھوا میں گونہگار، بلی ہجرات حسن کی درگاہ پر ایک چادر بڈانا چاہتا ہوں، کیونکہ جو شمس پاپ کی نڈی میں ڈوب گیا ہے، اسے رستم اور کھما کے بڈار کے پاس جا کر کھما کی بھیک مانگنے کے سواہ اور کیا سہارا ہے۔ اس پاک کام کے لیے میں نے اپنی کماہ کا رپیا اپنے بےٹے محمد آجزم کے پاس رکھ دیا ہے۔ اسے لے کر یہ چادر بڈا دی جائے۔

(2) توپیوں کی سلاہ کر کے میں نے چار رپے کو آناہ جما کھے ہیں۔ یہ رستم مہالدار لاہلاہی بےگ کے پاس جما ہے۔ اس رستم سے موم گونہگار پاپی کا کفن ساریا جائے۔

(3) کوران شریف کی نکلل کر کے میں نے تین سو پانچ رپے اکٹھے کھے ہیں۔ میرے مرنے کے بعد وہ رقم فقروں میں بانٹ دی جائے۔ یہ پاک پیسہ ہے، اُس لئے اسے میرے کفن یا کسی بھی دوسری ضروری چیز پر نہ خرچ کیا جائے۔

(4) نیک راہ کو چھوڑ کر گمراہ ہو جانے والے لوگوں کو آغاہ کرنے کے لیے مومے خولی جگاہ پر دفنانا اور میرا سر خولا رکنے دینا، کیونکہ اس مہان شاہنشاہ پروردگار عالم کے دربار میں جب کوئی پاپی نیک سر جاتا ہے تو اُسے ضرور دیا آجاتی ہوگی۔

سمرات عالمگیر بھارت کے ظالم بادشاہوں میں سے ایک گنا جاتا ہے۔ لیکن جہاں ایک اور اُس نے اپنے پتا شاہجہاں کو قہد میں رکھا اور بھانوں کو قتل کیا، وہاں دوسری اور وہ قربانی 'سداچار اور کتھور چٹوں کی پرتی مورتی سمجھا جاتا ہے۔ یہی ایک اور وہ زبردست سوچھاچاری تھا تو دوسری اور غریبی اور سمرات سے بھرا ہوا۔ پرچا کی گڑھی کھائی کا ایک پیسہ بھی اپنے سوارات کے لئے خرچ کرنے کو وہ پاپ سمجھتا تھا۔ ٹہنی سی کر اور قرآن لکھ کر وہ اپنا پست پالتا تھا۔ دنیا کے بڑے سے بڑے سمراتوں میں اُس کی گنتی تھی۔ اُس کا خزانہ ہیرے جواہرات سے لیا ب تھا۔ لیکن نمک اور ہاجرے کی روٹی ہی پر وہ اپنا جھون کاٹتا تھا۔ وہ اپنی سلطنت کو 'خداداد' مانتا تھا۔ مرنے سے پہلے سمرات عالمگیر نے جو وصیت کی ہے، اُسے دیکھ کر ہم اُس مہان سمرات کے آخری دنوں کی مانسک حالت کو بھلی بھانٹی سمجھ سکتے ہیں۔ وصیت کی دھارائیں یہ ہیں—

(1) بھراہیوں میں ڈوبا دھوا میں گونہگار، بلی ہجرات حسن کی درگاہ پر ایک چادر بڈانا چاہتا ہوں، کیونکہ جو شمس پاپ کی نڈی میں ڈوب گیا ہے، اسے رستم اور کھما کے بڈار کے پاس جا کر کھما کی بھیک مانگنے کے سواہ اور کیا سہارا ہے۔ اس پاک کام کے لیے میں نے اپنی کماہ کا رپیا اپنے بےٹے محمد آجزم کے پاس رکھ دیا ہے۔ اسے لے کر یہ چادر بڈا دی جائے۔

(2) توپیوں کی سلاہ کر کے میں نے چار روپے دو آے جمع کئے ہیں۔ یہ رقم مہالدار لاہلی بیگ کے پاس جمع ہے۔ اس رقم سے موم گونہگار پاپی کا کفن خریدا جائے۔

(3) قرآن شریف کی نقل کر کے میں نے تین سو پانچ روپے اکٹھے کئے ہیں۔ میرے مرنے کے بعد وہ رقم فقروں میں بانٹ دی جائے۔ یہ پاک پیسہ ہے، اُس لئے اسے میرے کفن یا کسی بھی دوسری ضروری چیز پر نہ خرچ کیا جائے۔

(4) نیک راہ کو چھوڑ کر گمراہ ہو جانے والے لوگوں کو آغاہ کرنے کے لئے مومے کھلی جگہ پر دفنانا اور میرا سر کھ دینا، کیونکہ اُس مہان شہنشاہ پروردگار عالم کے دربار میں جب کوئی پاپی نیک سر جاتا ہے تو اُسے ضرور دیا آجاتی ہوگی۔

(۵) میری لکھ کو اوروں سے سب سے زیادہ کھانے سے روک دینا۔ چھوٹی بچھری نہیں کھاتی نہ گلچہ باجے کے ستم چلوں نہ کھانا اور نہ مولود کرنا۔

ۛ (6) اپنے کامیابی کی مدد کرنا اور اُن کی عزت کرنا۔ قرآن شریف کی آیت ہے۔ پرانی ماں سے پرہیز کرو۔ مہرے بیٹو! یہی تمہیں مہرے ہدایت ہے۔ یہی پیغمبر کا حکم ہے۔ اِس کا انجام اگر تمہیں اِس زندگی میں نہیں تو اگلی زندگی میں ضرور ملے گا۔

(7) اپنے کلمبوں کے ساتھ محبت کا ہر تاؤ کرنے کے ساتھ ساتھ تمہیں یہ بات بھی دھولن میں رکھنی ہوگی کہ اُن کی طاقت اِکلی زیادہ نہ بڑھ جائے کہ اُس سے حکومت کو خطرہ ہو جائے ۔

(8) مہرے بیٹے ! حکومت کی ہاگڈور منہبجی سے اگر بکڑے رھوگے تو تمام ہندوئوں سے بچ جاؤگے .

(9) بادشاہ کو اپنی حکومت میں چاروں اُردو دورہ کرتے رہنا چاہئے۔ بادشاہ کو کبھی ایک مقام پر نہیں رہنا چاہئے۔ ایک جگہ رہنے سے آرام تو ضرور ملتا ہے، لیکن کئی طرح کی مصیبتوں کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔

(10) اپنے بیٹوں پر کبھی بھول کر بھی اعتبار نہ کرنا، نہ اُن کے ساتھ کبھی نزدیکی تعلق رکھنا۔

(11) حکومت کے اندر ہونے والی تمام باتوں کی تمہیں اطلاع رکھنی چاہئے۔ یہی حکومت کی کنجشی ہے۔

(12) بادشاہ کو حکومت کے کام میں ذرا بھی سستی نہیں کرنی چاہئے۔ ایک لمحہ کی سستی ساری زندگی کی مصیبت کی باعث بن جاتی ہے۔

یہ ہے مختصر میں سمراٹ عالمگیر کا وصیتنامہ۔ اس وصیتنامہ کی دھاراؤں کو دیکھ کر یہ پتہ چلتا ہے کہ سمراٹ کو اپنے اہل خانہ میں اپنے پتا کو قید کرنے، اپنے بھائیوں کو قتل کرنے اور اپنی سونے کی چادر پیر دلی انیسویں اور سولہویں

اسی وصیت نامہ کے مطابق آرونک آباد کے نمک خلد آباد نمک چھوٹے سے گاؤں میں، جو عالمگیر کا مقبرہ بنایا گیا، اس میں اُسے سپردِ سادہ طریقہ سے دفن کیا گیا۔ اُس کی قبر کچھ مٹی کی بنائی گئی، جس پر آسمان کے سوانہ کوئی دوسری چھت نہیں رکھی گئی۔ قبر کے مجاور اُس ہی قبر پر جب شبِ ہروی دُوب لگا دیتے ہیں۔ اُسی کچھ مزار میں بڑا ہوا بھارت کا یہ مہمانِ سمرات، روزِ محشر کے دن نک اپنے اُمّہ سے روہرو ہونے کے انتظار میں ہے۔

اپنے بڑے ہندو مت پروردگار کو اپنے بڑے بڑے کو
سات لکھا، جس میں لکھا—

”بادشاہوں کو کبھی آرام یا پیرودہاروں کی پیندگی
نہیں دینا چاہیے۔ یہ غیر مردانگی کی علامت ہے ملکوں اور
بادشاہوں کی ہر بندی کی وجہ ثابت ہوئی ہے۔ بادشاہوں کو
اپنی حکومت میں نشیبی چیزوں اور شراب پیچلے یا پھل
کی کبھی اجازت نہ دینی چاہئے۔ اس سے رعایا کا چتر لٹ
ہوتا ہے۔ اس میں کی آمدنی کو تمہیں حرام سمجھنا چاہئے۔“

اپنے ہمارے کے صوبہ دار کے نام ایک خط میں عالمگیر
لکھا ہے—

”اپنی ہندو رعایا کے ساتھ ظلم نہ کرنا۔ ان کے ساتھ
دھرمک ادارت ہوتا اور ان کی دھرمک ہوائوں کا لحاظ
کرنا۔“

عالمگیر منشیہ منشیہ کے بیچ کے فرق کو اللہ کی نظروں
میں گناہ سمجھتا تھا۔ شامچان چپ تخت پر تھا تو ایک بار
اس نے عالمگیر سے شکایت کی کہ اُسے شہزادے کی حیثیت سے
چھوٹے بڑے سب سے ایک طرح نہیں ملنا چاہئے۔ اس پر
عالمگیر نے اپنے باپ کی ہر طرح عزت کرتے ہوئے جواب دیا—

”لوگوں کے ساتھ مہر برابر کی ہونا اسلام کے اصولوں کے
مطابق ہے۔ اسلام کے پیغمبر نے کبھی اپنی زندگی میں چھوٹے
بڑے کی تمیز نہیں کی۔ خدا کی نظروں میں سب انسان
برابر ہیں۔ اس لئے میں آپ کی اگلیاں ماننے میں اپنے کو
لاچار ہوتا ہوں۔“

ایسا تھا وہ بادشاہ جس پر ایتھاس نے ایک گالی چادر
ڈال رکھی ہے اور جس کے متعلق عام پڑھے لکھے آدمی کے دل
میں ظلم کی ایک خوفناک تصویر کھینچی ہوئی ہے۔
جیسے جیسے جانچ پڑتال کی تیز آنکھیں ہندو مت کے
پروردگار کو ہٹاتی جاتی ہیں، ویسے ویسے ہمیں سمرات عالمگیر کے
جہوں کے سندر پہلو بھی دکھائی دے رہے ہیں۔

”.....سत्याگرہ ایک ایسی تلوار ہے جس کے
سب طرف ہار ہے۔ اُسے جیسے چاہو ویسے کام
میں لیا جاسکتا ہے۔ کام میں لانے والا اور جس پر وہ کام
میں لائی جاتی ہے، دونوں اُس سے سکھی ہوتے ہیں۔
خون نہ بہا کر بھی وہ بڑی کرکڑ ہوتی ہے۔ اُس پر
نہ تو کبھی رنگ لگتا ہے اور نہ کوئی اُسے چرانی
سکتا ہے.....“

—مہاتما گاندھی

”.....سत्याگرہ ایک ایسی تلوار ہے جس

کے سب طرف دھار ہے۔ اُسے جیسے چاہو ویسے کام
میں لیا جاسکتا ہے۔ کام میں لانے والا اور جس پر وہ کام
میں لائی جاتی ہے، دونوں اُس سے سکھی ہوتے ہیں۔
خون نہ بہا کر بھی وہ بڑی کرکڑ ہوتی ہے۔ اُس پر
نہ تو کبھی رنگ لگتا ہے اور نہ کوئی اُسے چرانی
سکتا ہے.....“

—مہاتما گاندھی

ہماری خوراک میں ترکاریوں کی جگہ

ہماری خوراک میں ترکاریوں کی جگہ

شریمنی شانتا پانڈے

شریمنی شانتا پانڈے

ہم ہندوستانیوں کے رोज کے خانے میں ترکاریوں کی ایک خاص جگہ ہے۔ ہماری گھر دیوایاں طرح طرح کے ساگ سبزیوں سے بوجھن کو زیادہ سے زیادہ لذیذ اور سوادشٹ بنانے کی کوشش کرتی ہیں۔ بڑے لکھے لوگوں کی ہوک تو روچک اور لذیذ ترکاریاں دیکھ کر ہی جاگتی ہے۔ ہم لوگ ترکاریاں سواد کے لحاظ سے ہی کھاتے ہیں اور ہم جانتے ہی نہیں کہ یہ ترکاریاں ہماری پانچون شکتی کو درست رکھنے کی کتنی کوشش کرتی ہیں۔ ادھر کچھ دنوں سے ہم نے بوجھن کے اندر ترکاریوں کی اہمیت کو سمجھنا شروع کیا ہے پر ابھی تک ہمارے روز کے بوجھن میں ترکاریوں کو، انکی اہمیت کے لحاظ سے، ٹھیک جگہ نہیں ملی ہے۔

اب نئے نئے خوجوں کی روشانی میں ترکاریاں ہمارے بوجھن کا مہتمم پورن انگ بنتی جا رہی ہیں۔ لوگ یہ جان گئے ہیں کہ ترکاریوں کے اندر کھنچ درویہ اور وٹمین ہوتے ہیں۔ یہ بھی لوگ جان رہے ہیں کہ ترکاریوں میں اسٹارچ (میداء) شکر اور تھوڑی مقدار میں پروٹین اور سیلولوز بھی ہوتے ہیں۔

اب نئے نئے خوجوں کی روشانی میں ترکاریاں ہمارے بوجھن کا مہتمم پورن انگ بنتی جا رہی ہیں۔ لوگ یہ جان گئے ہیں کہ ترکاریوں کے اندر کھنچ درویہ اور وٹمین ہوتے ہیں۔ یہ بھی لوگ جان رہے ہیں کہ ترکاریوں میں اسٹارچ (میداء) شکر اور تھوڑی مقدار میں پروٹین اور سیلولوز بھی ہوتے ہیں۔

(۱) وہ ترکاریاں جنہیں پانی کا اثر زیادہ ہے اور اسٹارچ کم، جیسے—ٹماٹر، گوہی، کرمکھلا، ساجن، سلاوا، خیرا برہرہ۔
(۲) وہ ترکاریاں جنہیں اسٹارچ اور شکر زیادہ ہیں، جیسے—آلو، شکرکند، گاجر، مٹر، چکنند، کدو، پٹا، لوبی، کھربا، کھلا، برہرہ۔ سواد کے لحاظ سے بھی ترکاریوں کا بگیاکরণ کیا جا سکتا ہے، کھل ترکاریوں میں فاسفورس (گنڈک) زیادہ ہوتا ہے، جسکے سواد کو کھل لوگ پسند کرتے ہیں اور کھل نہیں۔ ترکاریوں کا بگیاکরণ پوٹوں کے جس دھیسے سے بے پراپ ہوتی ہے، اسکے لحاظ سے کیا جا سکتا ہے جیسے—(۱) پھلیاں—ان میں کانی مقدار اسٹارچ، شکر اور چکنائی کی ہوتی ہے۔ بڑے کام کے کھنچ درویہ اور وٹمین بھی ہوتے ہیں اور پروٹین بھی تھوڑی مقدار میں رہتا ہے۔ پھلیوں میں مٹر اور کئی طرح کی سیم، سویا، لوبیا آسی ہیں۔

اب نئی نئی کھجوں کی روشنی میں ترکاریاں ہمارے بوجھن کا مہتمم پورن انگ بنتی جا رہی ہیں۔ لوگ یہ جان گئے ہیں کہ ترکاریوں کے اندر کھنچ درویہ اور وٹمین ہوتے ہیں۔ یہ بھی لوگ جان رہے ہیں کہ ترکاریوں میں اسٹارچ (میداء) شکر اور تھوڑی مقدار میں پروٹین اور سیلولوز بھی ہوتے ہیں۔

اب نئی نئی کھجوں کی روشنی میں ترکاریاں ہمارے بوجھن کا مہتمم پورن انگ بنتی جا رہی ہیں۔ لوگ یہ جان گئے ہیں کہ ترکاریوں کے اندر کھنچ درویہ اور وٹمین ہوتے ہیں۔ یہ بھی لوگ جان رہے ہیں کہ ترکاریوں میں اسٹارچ (میداء) شکر اور تھوڑی مقدار میں پروٹین اور سیلولوز بھی ہوتے ہیں۔

(۱) وہ ترکاریاں جنہیں پانی کا اثر زیادہ ہے اور اسٹارچ کم، جیسے—ٹماٹر، گوہی، کرمکھلا، ساجن، سلاوا، خیرا برہرہ۔

(۲) وہ ترکاریاں جنہیں اسٹارچ اور شکر زیادہ ہیں، جیسے—آلو، شکرکند، گاجر، مٹر، چکنند، کدو، پٹا، لوبی، کھربا، کھلا، برہرہ۔ سواد کے لحاظ سے بھی ترکاریوں کا بگیاکরণ کیا جا سکتا ہے، کھل ترکاریوں میں فاسفورس (گنڈک) زیادہ ہوتا ہے، جسکے سواد کو کھل لوگ پسند کرتے ہیں اور کھل نہیں۔ ترکاریوں کا بگیاکরণ پوٹوں کے جس دھیسے سے بے پراپ ہوتی ہے، اسکے لحاظ سے کیا جا سکتا ہے جیسے—(۱) پھلیاں—ان میں کانی مقدار اسٹارچ، شکر اور چکنائی کی ہوتی ہے۔ بڑے کام کے کھنچ درویہ اور وٹمین بھی ہوتے ہیں اور پروٹین بھی تھوڑی مقدار میں رہتا ہے۔ پھلیوں میں مٹر اور کئی طرح کی سیم، سویا، لوبیا آسی ہیں۔

(۲) مٹل—مٹلوں میں بھی بڑا مقدار، अधिक मित्रवार शकर, उपयोगी खनिज द्रव्य और विटामिन होते हैं. इनमें जर, मूली, शलगम, चुकन्दर मुख्य हैं.

(३) बटल—केवल खनिज द्रव्य क्यादा होने के साथ ही बटल पौष्टिक होते हैं. बटलों में कास अज-यन, सहजन, केला, प्याज आदि के बटल हैं.

(४) पत्ते और फूल—इनमें खनिज द्रव्य और विटामिन याद होते हैं. इनमें हरा बनिया, करमकल्ला, सहजन के ल, सलाद, पीडीना, मेथी का साग, पालक का साग, गोभी फूल, हाथीचक आदि खास हैं.

(५) फल—अधिकतर तरकारियाँ इसी भेदी की हैं. माटर, बैंगन, कुन्दा, लोकी, भिखी, कच्चा केला, मिर्च, म्बी आदि इनमें से कुछ हैं. इनमें प्रोटीन के साथ-साथ तरह तरह के खनिज द्रव्य और विटामिन भी ते हैं.

(६) कन्द—जो जमीन के नीचे होते हैं, जैसे—आलू, करकन्द, प्याज, बटल, रतालू आदि. इनमें भी स्टार्च, फर, कई महत्वपूर्ण खनिज द्रव्य और विटामिन होते हैं.

रकारियों में खनिज द्रव्य

तरकारियों में कई तरह के ऐसे खनिज द्रव्य मिलेंगे जो जों में नहीं होते—जैसे कैल्सियम (चूना), फासफोरस गन्धक), कौलाद आदि. जिस को रोज ही एक खास प्रकार में इन खनिज द्रव्यों की जरूरत होती है, क्योंकि नसे खून बनता है और मज्जा और हड्डियों को ठीक और जवूत रखने के लिये कैल्सियम की सब से अधिक जरूरत शरीर के रसों के बनने में भी कैल्सियम का बहुत बड़ा धान है. कैल्सियम हरी मटर, सेम, भिखी, करमकल्ला, म्बी का साग, अरबी के पत्ते आदि में काफी होता है. दूध भी कैल्सियम होता है और बच्चों का शरीर तरकारियों कैल्सियम को उतनी अच्छी तरह अपने अन्दर नहीं ले कता जितना दूध के कैल्सियम को. लेकिन बड़े आदमियों शरीर तरकारियों के कैल्सियम को बहुत अच्छी तरह जूल करता है. निरामिष भोजियों के लिये तरकारियों का ल्सियम बहुत जरूरी चीज है.

फासफोरस भी शरीर के जीवित अणुओं (सैल्स) ने बनाने और हड्डियों और दाँतों के लिये बहुत मुफीद तन्दुरुस्ती के लिये फासफोरस बेहद जरूरी चीज है. फासफोरस सेम, मटर, नये आलू, करमकल्ला, पालक, पंथाड़ा, गोल लोकी, भिखी और केले के फूल में बहुत ता है.

कौलाद शरीर के हर खिन्दा अणु के अन्दर मौजूद और खून बनने में इसकी बेहद जरूरत है. काफी मित्रवार यदि कौलाद हो तो वह अनीमिया (खून की कमी) के

(2) मूल—मूलों में भी बड़ा स्टार्च, अधिक मित्रवार शकर, उपयोगी खनिज द्रव्य और विटामिन होते हैं. इनमें जर, मूली, शलगम, चुकन्दर मुख्य हैं.

(3) बटल—केवल खनिज द्रव्य क्यादा होने के साथ ही बटल पौष्टिक होते हैं. बटलों में कास अज-यन, सहजन, केला, प्याज आदि के बटल हैं.

(1) पत्ते और फूल—इनमें खनिज द्रव्य और विटामिन याद होते हैं. इनमें हरा बनिया, करमकल्ला, सहजन के ल, सलाद, पीडीना, मेथी का साग, पालक का साग, गोभी फूल, हाथीचक आदि खास हैं.

(5) फल—अधिकतर तरकारियाँ इसी भेदी की हैं. माटर, बैंगन, कुन्दा, लोकी, भिखी, कच्चा केला, मिर्च, म्बी आदि इनमें से कुछ हैं. इनमें प्रोटीन के साथ-साथ तरह तरह के खनिज द्रव्य और विटामिन भी ते हैं.

(6) कन्द—जो जमीन के नीचे होते हैं, जैसे—आलू, करकन्द, प्याज, बटल, रतालू आदि. इनमें भी स्टार्च, फर, कई महत्वपूर्ण खनिज द्रव्य और विटामिन होते हैं.

तरकारियों में खनिज द्रव्य

तरकारियों में कई तरह के ऐसे खनिज द्रव्य मिलेंगे जो जों में नहीं होते—जैसे कैल्सियम (चूना), फासफोरस गन्धक), कौलाद आदि. जिस को रोज ही एक खास प्रकार में इन खनिज द्रव्यों की जरूरत होती है, क्योंकि नसे खून बनता है और मज्जा और हड्डियों को ठीक और जवूत रखने के लिये कैल्सियम की सब से अधिक जरूरत शरीर के रसों के बनने में भी कैल्सियम का बहुत बड़ा धान है. कैल्सियम हरी मटर, सेम, भिखी, करमकल्ला, म्बी का साग, अरबी के पत्ते आदि में काफी होता है. दूध भी कैल्सियम होता है और बच्चों का शरीर तरकारियों कैल्सियम को उतनी अच्छी तरह अपने अन्दर नहीं ले कता जितना दूध के कैल्सियम को. लेकिन बड़े आदमियों शरीर तरकारियों के कैल्सियम को बहुत अच्छी तरह जूल करता है. निरामिष भोजियों के लिये तरकारियों का ल्सियम बहुत जरूरी चीज है.

फासफोरस भी शरीर के जीवित अणुओं (सैल्स) ने बनाने और हड्डियों और दाँतों के लिये बहुत मुफीद तन्दुरुस्ती के लिये फासफोरस बेहद जरूरी चीज है. फासफोरस सेम, मटर, नये आलू, करमकल्ला, पालक, पंथाड़ा, गोल लोकी, भिखी और केले के फूल में बहुत ता है.

कौलाद शरीर के हर खिन्दा अणु के अन्दर मौजूद और खून बनने में इसकी बेहद जरूरत है. काफी मित्रवार यदि कौलाद हो तो वह अनीमिया (खून की कमी) के

خلف ایک کٹلی ہے۔ توکڑیوں میں بہت بڑی مٹوا میں فولاد ہوتا ہے۔ موٹی کا ساگ، پودیلہ، دھلیا کی پٹی، ملا، سوچی کے قتل، چوٹی گول لوکی، ہرے، آم، بھانہ کے قتل آدمی میں فولاد بہت لگی ہوتا ہے۔ یوں تو ہر ہرے ساگ میں فولاد ہوتا ہے لیکن ساگ کا پتہ جتنا ہوا، ملاہم، آرو پکا ہوا اسی اشیات میں آسٹن فولاد اور وٹمن ہی زیادہ ہونگے۔ بدی ہم کئی مقدار میں توکڑیاں کھائیں تو ہمارے شہر میں کپسٹم، فاسفورس اور فولاد کا ابھارہ رہے اور نہ انکے ابھارے میں بڑھ ہونے والی ہماروں کے ہی ہم شکر ہلاں۔

खनिज द्रव्यों की तरह तरकारियों में विटामिन भी बहुत ज़रूरी है। तरकारियों में 'ए' और 'सी' विटामिन काफी मात्रा में होते हैं और कुछ हद तक 'बी' ग्रुप के विटामिन भी होते हैं। विटामिन जिस्म के मुश्तलिक अंगों को ठीक और सुचारु रूप से काम करने लायक रखते हैं।

کھلیج دردیوں کی طرح ترکاریوں میں وٹمن بھی بہت قیمتی چیز ہے۔ ترکاریوں میں 'اے' اور 'سی' وٹمن کافی مائٹرا میں ہوتے ہیں اور کچھ حد تک 'بی' گروپ کے وٹمن بھی ہوتے ہیں۔ وٹمن جسم کے مختلف اُنکوں کو تھوک اور سچارو روپ سے کام کرنے لائق رکھتے ہیں۔

وٹیمن اے—شیر کو زخم پہنچنے کی بیماریوں اور چھینے
 روگ سے بچاتا ہے، شیر کی بوہتی کرتا ہے اور شیر کی مشین کو
 درست رکھتا ہے۔ اچھے دانتوں کے بنانے اور اچھے نتھوں کے لئے
 بھی وہ ضروری ہے۔ یہی ایک اکیلا وٹیمن ہے جو شیر کی
 چربی میں اور جگر میں جمع کر کے رہا جاسکتا ہے۔ اس
 وٹیمن کی کمی نہ ہونے پائے اس لئے کافی مقدار میں سبجین
 ہوا دھنیا، مٹھئی کا ساگ، پودینہ کی پتی، پاک کا ساگ،
 صلا، کرم کاہ اور پیلے اور نارنگی رنگ کی ترکاریاں جیسے گاجر،
 پکا کدو اور دوسری ترکاریاں جیسے چکنر، ہری مٹر، سبم، لوبی،
 رتاوا آدمی کھانے چاہئیں۔ ہری مرچ میں بھی کافی مقدار میں
 یہ وٹیمن ہوتا ہے۔

وٹمن ہی—کئی طرح کے ہوتے ہیں۔ شیر کی اٹنی، کھلی ہڈی بھوک، ٹھیک ہاضمہ اور سوستہ نروس سسٹم کے لئے بے حد ضروری ہیں۔ ترکریوں میں یہ وٹمن ادھک مাত্রاً میں نہیں ہوتے۔ پیر بھی بڑی کئی مقدار میں ترکریاں کھاتی جانیں تو کئی طرح کے ان ہی وٹمنوں کی پورتی ہوسکتی ہے۔ جزر والی ترکریوں میں ہی وٹمن کئی ہوتے ہیں جیسے گاجر، چتندر آدی۔ ان کے علاوہ ٹماٹر، کرم لہ، پالک، گوہی، علاء، میتھی کا ساگ، مٹر اور شلجم میں بھی تھوڑی بہت مাত্রاً میں ہی وٹمن ہوتے ہیں۔

دشمن سے لڑنے والے بچوں کی خوراک میں
 یہ مہیچا دانستوں کے بنائے اور ہیر کی
 برتنی کے لئے ضروری ہے۔ کھال اس سے ملیم اور سوستہ
 رہتی ہے اور یہ رکت و اہلی نسوں کو درست رکھتا ہے۔

تسارو، سمجھن، دھلے کی پتی، شکرانہ کی پتی، پانک، گرم کھانہ اور
 ہری مٹھی مرچ، آدی چیزیں، سی ولیم کی مائو میں، ساٹھویں
 پتلون یعنی ساترہ، موسمی، میٹھا ٹھنڈا آدی کا مقابلہ کرتی
 ہیں۔ سیم، ہری مٹر، لوبیا، تھوڑی لوکی، گرم کھانہ اور حلیم
 آدی میں اور کچھ پیاز میں سی ولیم لگتی ہوتا ہے۔

گاربوہائی قریب اور ترکاڑیاں

کھلیں دروہیں اور وٹمن کے علاوہ کچھ ترکاریوں میں کافی اسٹارچ اور شکر بھی ہوتی ہے۔ ان سے مصلحت کرنے کی طاقت اور چھینٹتا بڑھتی ہے۔ اس طرح کی ترکاریوں میں ہری مٹر، کرپا، کڑی، لٹڈا، پدول، کچا پھٹا، زمیں قند، آرو، بندھا، رتالو، کچے کھلے، گلجر، چتندر، آلو، شکر قند، کدو یا آسی ہیں۔ جن لوگوں کو اپنے بھوجن کی मात्र کم کرنے کی دھن ہے انھوں نے ترکاریاں ادھک سائرا میں نہیں کھائی چاہئیں جن میں کاربوہائی تو بہت ادھک ہے۔ کاربوہائی تو بہت سے جسم کے پتھے ملتے ہیں۔

بیروت میں اور توکاریاں

ماترا، سیم اور جتنی پھلیوں والی توکاریاں ہیں اُن سب میں کافی ماترا میں پروٹین دیتا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ ترکاریں کا پروٹین دودھ اور مائیس اسی کے پروٹین کی طرح پوشاک نہیں ہے۔ اُس میں دے سب ایسڈ نہیں ہوتے جو تغذی کو اچھا رکھتے ہیں۔ اِس کے لئے ترکاریں کے ساتھ دودھ یا دودھ سے بنی چیزیں کھانے سے یہ کمی پوری ہو سکتی ہے۔

سیلولوز اور ترکیاریاں

تزرکاریوں میں سیلولوز یعنی فضلہ بھی ہوتا ہے جو آنتوں کو قبض سے بچاتا ہے؛ کترو پکی ہوئی تزرکاریوں کا فضلہ کچی تزرکاریوں کے فضلے سے زیادہ مفید ہوتا ہے۔ پتے والے ساگوں میں بہت ادھک فضلہ ہوتا ہے۔ دبا ہونے کے لئے ادھک سیلولوز والی تزرکاریاں کھائی چاہئیں کیونکہ اُن میں کاربوہائیڈریٹ کی مقدار زیادہ ہونے سے تسلی جلدی ہو جاتی ہے۔

کچھ خاص ترکاریوں کی شہستانیں

ٹمائٹر ہمیشہ تازگی لتا ہے۔ لذیذ ہونے کے ساتھ ساتھ وہ
ازدیکھتہ دھک بھی ہے۔ اُسے کچا یا پکا چاہے جیسا کھایا جا
سکتا ہے۔ اُس کا رس بچپن کے لئے بڑا ہتھکڑ ہے۔ وٹمن سی
کی پورٹی درد کے ابھار میں ٹمائٹر کے رس سے کر سکتے ہیں۔
وٹمن سی آگ میں پکالنے سے نشہ ہو جاتا ہے۔ کیول ٹمائٹر
ہی ایسی چیز ہے جس کا وٹمن سی ایسڈ کے کاربن پکالنے سے
بھی نشہ نہیں ہوتا۔

گاجر بھی کبھی پوٹیک بھیج ہے۔ اس میں ویتامین ب کی مقدار میں رہتا ہے۔ کرمکھلا، دھری مٹر اور سب سے بھی کبھی کبھار پوٹیک اور پوٹیک ترکاریاں ہیں۔ پتلیوں کے ساگ بھی بڑے پتلیوں کے ہوتے ہیں۔ 'مولی'، 'شلم'، 'چندر' اور 'گتہ' کو بھی کی پتلیاں بھی اچھی ہوتی ہیں۔ یہاں بھی انہیں گتہ کی طرح چھڑے اور ہاضمہ کو درست رکھنے میں بہت مدد دیتی ہے۔ آلو میں 'اسٹارچ'، کھجور، دروہ اور وٹمن گئی ہوتے ہیں۔ پھنسی اور لوکی دھلی کلم کرنے والوں کے کھانے پر کبھی خاص ترکاریاں ہیں۔

ترکاریاں ادھک تر تازی ہی استعمال کرنی چاہئیں۔ ترکاریوں کا وٹمن سی بہت جلدی نہشت ہو جاتا ہے۔ ترکاریاں ہمیشہ ٹھنڈی جگہ میں رکھی جانی چاہئیں۔ کچھ ترکاریاں جیسے کدو آبی رکھنے سے ہی اچھی ہوتی ہیں۔ ترکاریاں چھلکے سمیت ہی اُبالنی چاہئیں۔ جس پانی میں ترکاری اُبالی جائے اسے دے کی طرح کلم میں لے آنا چاہئے۔ ساگوں کو کلم سے کم پکنا چاہئے۔ سوڈا ڈالکر کبھی ترکاری نہ پکائی چاہئے۔ پھنسی پانی کے دودھ یا مٹھے میں ترکاری پکالے سے اس کے پوشک تلو پڑھ جاتے ہیں۔ جہاں تک ہوسکے ترکاریاں چھلنی سے چاہئیں۔ پنی چھلنا ضروری ہی ہو تو کپول خراش لینا گئی ہوگا۔ ترکاریوں میں 'سرج'، 'مسالہ' اور چھلانی جہاں تک ہوسکے کم سے کم ڈالنا چاہئے۔ ہماری گڑے دیوہیاں دیوہیاں کے پوشک اور سواسٹہ وڑھک مہتو کو ٹھیک ٹھیک سمجھ لیں تو پریوار کے سواسٹہ میں 100 فیصدی سدھار لرسکتی ہیں۔

”وہ دھن کو اس کے سنگھاسن سے ہٹا کر عیشر کے لیے بھڑی جگہ خالی کرے۔ میرا خیال ہے کہ امریکا کا بھیشہ اچول ہے۔ لیکن اگر وہ دھن کی ہی پوجا کرنا رہا تو اس کا بھیشہ ادھکار مہ ہے۔ پھر لوگ چاہے جو کہیں دھن آخیر تک کسی کا سگا نہیں رہا۔ وہ ہمیشہ بیہوشا دوست ثابت ہوا ہے۔“

—مہاتما گاندھی

”وہ دھن کو اس کے سنگھاسن سے ہٹا کر عیشر کے لیے بھڑی جگہ خالی کرے۔ میرا خیال ہے کہ امریکا کا بھیشہ اچول ہے۔ لیکن اگر وہ دھن کی ہی پوجا کرنا رہا تو اس کا بھیشہ ادھکار مہ ہے۔ پھر لوگ چاہے جو کہیں دھن آخیر تک کسی کا سگا نہیں رہا۔ وہ ہمیشہ بیہوشا دوست ثابت ہوا ہے۔“

—مہاتما گاندھی

انیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈायری

انیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈायری

परिवर्त सुन्दरलाल

بلتت سلندر لال

غوث علی شاہ اس دہائی کے پچھلی صدی کے ایک بہت بڑے اور مشہور مسلمان فقیر تھے۔ سن 1857ء کے کچھ پہلے سے لے کر آسمے کچھ بعد تک کا زمانہ ان کا خاص زمانہ تھا۔ ہندوستان بھر میں خوب گھومے۔ باہر بھی حج وغیرہ کے سلسلے میں گئے۔ بعد کے دنوں میں انہوں نے اپنی زندگی کے بہت سے حالات اپنے چھاپوں کو سناٹے جو لکھ لکھ گئے۔ ان سے اس زمانے کے ہندو مسلمانوں کے آپسی مہل جول پر خاصی روشنی پڑتی ہے۔ ایک طرح سے یہ غوث علی شاہ کی ڈायری کے کچھ پلنے ہیں، ایسی ڈायری جو دوسروں نے ان سے سن کر لکھ لی تھی۔

[1]

[1]

ایک دن بچپن میں ہمیں ایک سنیاسی نے جڈ تاکی کپالی بچانا سیکھایا۔ اس کپالی میں چاہیرا ہوتا جاتا رہتا ہے اور کھ دیمارا میں آ جاتی ہے۔ جس خیال میں آدمی بیٹھتا ہے اسی میں رہتا ہے۔ جب ہمیں اسکا اہیلس ہو گیا تو ایک دن خیال آیا کہ دیکھیں دوسرے پر بھی اس کا اثر ہوتا ہے یا نہیں۔ ہم نے اپنے سوتیلے بھائی کو کپالی چڑھوائی۔ وہ بالکل بیہوش ہو کر مردے کی طرح زمین پر گر پڑے۔ اٹارنا ہمیں آنا نہیں تھا۔ ہم بڑے گھبرائے کہ اب کیا علاج کریں۔ ہم نے اپنی سوتیلی ماں کو خبر دی۔ وہ گھبرائی ہوئی آئیں اور کہنے لگیں—”ایک تو گیا ہی اب دوسرا بھی چلا۔ لوگ یہی شک کر رہے کہ اس نے سوتیلے بھائی کو مار ڈالا۔“ یہ کہہ کر وہ ایک پتالہ دھڑ کا لائیں اور بیٹے کے سامنے گر ادیا۔ جو آکر پوچھتا اس سے کہتیں—”کہ نہ چالے کیا ہوا دھڑ کہا کر تم کی ہے۔“ میں گھبرا کر اس سنیاسی کے پاس گیا اور سارا حال کہہ سنایا۔ انہوں نے بہت ناراض ہو کر مجھے کہا—”کیا تمکو اس واسطے یہ کرنا سکھائی تھی کہ لوگوں کا تماشہ دیکھو۔ ہم نے تو اسلئے سکھایا تھا کہ ایشور کی یاد میں لکھ رہو گے۔ خبردار پھر ایسا کام نہ کرنا۔“ یہ کہہ کر ہمارے گھر آئے اور بھائی کے سر پر پانی کی مشکیں چھڑوائیں۔ جب تیسری مشک چھڑوی گئی تو آٹھ بیٹھے۔ پھر ہم نے بھائی سے بھڑکی کی حالت کا حال پوچھا۔ اس نے کہا—”میں تو زندہ تھا اور تم سب کو پکار پکار کر کہتا تھا کہ میں زندہ ہوں“

تو اس کا ہاتھ لگا کر، میں نے اسے پکڑ لیا۔ اس نے کہا کہ اسے لے کر چلے۔ میں نے کہا کہ اسے لے کر چلے۔ اس نے کہا کہ اسے لے کر چلے۔

[2]

ایک دن ہم باہری سے ہری دوار کو چلے کہ کہیں کا اسٹار
اور ہم گھٹری کا پائے کریں، کیونکہ ہمارے رضائی باپ * پنڈت رام
سنہی جی نے گھر سے چلتے وقت ہمیں گاہری سنا کر کہ، دیا
تھا کہ ہری دوار میں گنگا کے کنارے اس کا چپ کر لیا۔ جب
کنکھل میں پہنچے تو وہاں دو ہندو پرم سندس دیکھے۔ کسی
نردینی نے انکی جانکوں پر دھکتے ہوئے انگارے رکھ دیئے تھے۔
ایک کی جانک تو جل گئی تھی اور دوسرے پر کچھ اثر نہ
تھا۔ ہم نے جھٹ پٹ انگارے ایک کٹہ اور انکو قبولی میں
سوار کرا کر جولا پور کے تھالے میں لائے۔ تھانیدار سے ہماری جان
پہچان تھی۔ اس نے جلتے ہوئے کی مرہم بقی کروائی۔

کچھ دنوں بعد ایک دن وہ قصہ اپنے کچھ چیلوں کو سنا کر
نوٹ علی شاہ نے اُن سے پوچھا کہ—”اِن دونوں پرم سندس
میں سے کون بڑھکر تھا؟“ ایک چیلے نے جواب دیا کہ—
”جس کی جانک نہیں جلی تھی۔“ آپ نے کہا کہ—”نہیں“
جس کی جانک نہیں جلی تھی وہ ابھی اپنے بدن کی حفاظت
کرنے کی طاقت رکھتا تھا۔ لیکن دوسرے کا انہماک (دھیان)
میں توبہ ہوا ہونا) زیادہ اونچے درجہ کا تھا کہ تن بدن کا بھی
ہوش باقی نہ رہا تھا۔ اگر اُس کے اس کمال انہماک کا اسلام
کے بڑے بڑے لوگوں سے مقابلہ کریں تو لوگ ہرا-انہیں۔ ”الحق
و مرعون“ یعنی سچائی کڑی ہوتی ہے۔ لیکن سچ یہ ہے کہ
ایسا انہماک کروڑوں میں سے کسی ایک کو حاصل ہوتا ہے۔
ہر ایک اِس کے قابل نہیں۔

اسرار محبت را ہر دل نہ ہوں قابل
در نہست بہر دریا ز نہست بہر کانے

یعنی ہر دل پریم کے دھسوں کو سمجھنے کے قابل نہیں
ہوتا۔ نہ ہر دریا میں موتی ہونے میں اور نہ ہر کان میں
سونا ہوتا ہے۔

لیکن مبارک وہ انہماک (تلہنتا) کہ نہ ہم سہوا کرنے والوں
سے خوں اور نہ انگار رکھنے والے سے ناراض جس حالت میں
نہ اُسی میں رہے۔

* ماں کے اُلاوا یا کسی کوئی بچہ کو دھ پلا کر پالے تو اسکا پات بालک کا ’رچاई باپ‘ کہلاتا ہے۔
ماں کے غلبہ پدی کوئی استری بچہ کو دودھ پلا کر پالے تو اسکا پتی بالک کا ’رضائی باپ‘ کہلاتا ہے۔

ایک دن جب ہم جواہر پور سے چل کر مری مولہ پہنچے تو سڑکوں نامہ جی سے پہچان ہوئی۔ بڑا آدمی سٹکر کیا۔ اپنے مکان پر ٹھہرایا۔ دونوں وقت بڑھیا کھانا کھایا۔ جب پوری کا وقت آیا تو ہم دھونی ہاتھ تلک لگا کینڈل ہاتھ میں لے کر کی پھرتی پر جا موجود ہوئے۔ باہری کے ایک براہمن نے ٹھیک اسٹان کے وقت پہچان لیا اور دانتوں کے تلے لٹکی دھنچ چپ رہ گیا۔ ہم نہ کر باہر نکلے تو وہ براہمن ہمیں انگ لے گیا اور کہنے لگا—”یہاں صاحب! یہاں اور وہاں کچھ فرق ہے جو آپ اسٹان کرتے آئے؟ اگر اور کوئی پہچان لیتا تو بڑی خرابی ہوتی۔ خدا تو سب جگہ ایک ہے“ یہ بھی ایک نشانی ہے کہ ہر ایک فرقہ کا مذہب جدا ہے، ہر ایک دوسرے کو جھوٹا کہتا ہے اور اپنے آپ کو سچا بتاتا ہے۔ اگر سچائی کی راہ سے دیکھو تو مقصد دونوں کا ایک ہی ہے۔

پڑا بتھائے* میں ہو یا طواف کعبہ کرتا ہو
یہاں کیا اور وہاں کیا ہے کہیں ہو تیرا جویا* ہو

پڑا جوتھانے* میں ہو یا تباہی-کاباہی کرتا ہو،
یہاں کیا اور وہاں کیا ہے کہیں ہو تیرا جویا* ہو۔

یہ مثال اُس براہمن نے ہمیں سنانی۔ چار مسافر سفر میں ساتھ تھے، مگر بولیاں چاروں کی الگ الگ تھیں۔ چاروں بھوکے تھے۔ چاروں نے اپنی اپنی زبان میں انگریز خریدنے کا ارادہ ظاہر کیا۔ لیکن ”انگریز“ کا نام چاروں زبانوں میں الگ الگ تھا۔ اِس لئے ایک کی بات کو دوسرا نہ سمجھ پایا، آپس میں لڑنے لگے۔ اتفاق سے ایک آدمی جو اُن چاروں کی زبانوں کو جانتا تھا، آگلا۔ اُس نے ایک کا مطلب دوسرے کو سمجھا دیا۔ تب شرمندہ ہوئے کہ کیا فضول کا جھگڑا تھا۔ مطلب تو سب کا ایک ہی تھا۔ یعنی جب تک کوئی اصلیت کا جائزہ والا نہیں ملتا، یہ دوائی نہیں بنتی۔

جب وہ براہمن ہمیں سمجھا چکے تو ہم نے کہا کہ صاحب یہ اسٹان ہم نے اپنے رضائی باپ پنڈت رام سیدی جی کی طرف سے اور اُنکی آگاہی سے دیا۔ پھر ہم نے برہم گائتری کا پاتھ شروع کیا۔ برہم گائتری یہ ہے—

اوم ہور ہور سوہ قنس وتورو ریلہم ہرگو دیوسہ دھمہ
دھمہ نہ پر چودیات! اوم۔

لفظی معنی گائتری کے یہ ہیں—اوم یعنی اللہ۔ یہ اللہ کے ناموں میں سب سے بڑھکر ہے، ہور یعنی پتہ آسمان یعنی اپنے بہکوں کو سب دکھوں سے آزاد کر کے ہمیشہ آند میں رکھنے والا، ہور: دوسرا آسمان جو

جس نے براہمن ہمیں سمجھا چکے تو ہم نے کہا کہ صاحب یہ اسٹان ہم نے اپنے رضائی باپ پنڈت رام سیدی جی کی طرف سے اور اُنکی آگاہی سے دیا۔ پھر ہم نے برہم گائتری کا پاتھ شروع کیا۔ برہم گائتری یہ ہے—

اوم ہور ہور سوہ قنس وتورو ریلہم ہرگو دیوسہ دھمہ
دھمہ نہ پر چودیات! اوم۔

لفظی معنی گائتری کے یہ ہیں—اوم یعنی اللہ۔ یہ اللہ کے ناموں میں سب سے بڑھکر ہے، ہور یعنی پتہ آسمان یعنی اپنے بہکوں کو سب دکھوں سے آزاد کر کے ہمیشہ آند میں رکھنے والا، ہور: دوسرا آسمان جو

*—دعائے
—کلمہ کی پرکھا
†—دھونے والا

دیوالہ
کلمہ کی پرکھا
دھونے والا

بولے۔ ”اچھی ! اسلم علیکم کہو۔“ یہ فقیر نے سن کر ہم چونکے۔ انہوں نے اپنا حال سنایا اور کہنے لگے۔ ”میں سہد ہوں“ میرا نام محمد حسین ہے، پہلے تو میرے شاہ عبدالعزیز صاحب سے گرومنٹر لیا، پھر دہد اور شاستروں کو پڑھنے کا شوق ہوا، بنارس میں جا کر یہ بھی پڑھا۔ خاندان قادریہ کا چچا ہوں۔ انہی نوک کے اٹھ بہان آ رہا ہوں۔ چچے کا م فرے ہیں، میں خدا کی یاد میں لگا ہوں۔“

ہم نے پوچھا کہ—”ہندوں اور مسلمانوں کی فقہی میں آپ نے کیا فرق دیکھا؟“ جواب دیا—”فقہی کی ہلت تو دونوں جگہ ایک سی ہے، صرف کچھ لفظ اور اصطلاحیں (پوہباشتیں) الگ الگ ہیں۔

ہندیوں کا اصلاح ہندو مت
سندھیوں کا اصلاح سندھو مت

یعنی سب کے لئے حمد (استغنی) کرنے کا اپنا اپنا طریقہ ہے، ہندوستانوں کے لئے ہندوستانوں کا طریقہ ٹھیک ہے اور سندھوں کے لئے سندھوں کا طریقہ۔

نه من بر آن گل عارض غزل سرایم و بس
که عندلیب تو از هر طرف هزاران اند

یعنی—تیرے اُس پہل سے چہرے کی حمد (استوتی) کا نہ والا صرف ایک میں ہی نہیں ہوں، ہر طرف سے ہزاروں ہانچیں تیری حمد (استوتی) گا رہی ہیں۔

[5]

ایک دن ہم دھرمیوں کے پہاڑ کی سیر کرتے ہوئے شری نگر میں پہنچے۔ ایک پہاڑ پر ایک بابا جی رہتے تھے۔ اُن سے پھیلت ہوئی۔ بڑی اُڑھکت سے ملے۔ ہمیں ایک الگ مکان دیا۔ چارپائی منگائی۔ ہم نے بہت بڑا انکار کیا کہ آپ زمین پر سوتے ہیں، ہم بھی اسی طرح پر آرام کریں گے۔ لیکن اُنہوں نے نہ مانا اور مد کی کہ نہیں تم کو چارپائی ضرور چاہئے۔ آہستہ آہستہ اُن سے مہل چول بڑھ گیا۔ ایک دن اُن کے کسی چیلے کو پدم ناگ نے، جو ہاتھ پیر کا اور بڑا زہریلا سانپ ہوتا ہے، کاٹ لیا۔ دوسرے چیلے نے سانپ کو پتھر کے کوندے سے تھانک دیا اور اُکر گرجی کہ خیر دی۔ اُنہوں نے کہا کہ چلبی سے بھڑوت یعنی اکسیر لا۔ اِنام میں چیلے کا منہ بند ہو گیا اور گردن کا منکا قفل گیا۔ گرجی نے کہا کہ جس طرح ہوسکے اِس کے گلے سے بھڑوت اُتار دو: بڑی مشکل سے خشخاش کے ایک دانے برابر وہ راکھ سیلک سے اُس کو کھلا دی۔ دوا کا کٹم سے اُترنا ہی تھا کہ چیلہ جھرجھری لیکر سیدھا ہو گیا۔ دوسرے چیلوں کو حکم دیا کہ اب اِسے پھانچو۔ تھوڑی دیر میں اُس نے بھوک ظاہر

میں وہی وہی سر بھی اسے پिला دیا اور پیر لہانا شروع کیا۔ جب اسے
پر خود بھی ہوئی تو پیر بھی پلایا گیا۔ کچھ دیر پیچھے اسے
تینوں کا دست ہوا۔ پیر بھی ہلاکر تھلایا تو کچھ لہو کا دست آیا۔
اس نے بعد معمولی پاخانہ آیا اور پہلا چلکا ہو گیا۔ اب گرجی
نے کہا کہ اس سائب کو لاؤ۔ چیلے پکو لائے۔ ایک سہنگ سے
اس کے منہ میں بھی وہی بھوسہ ڈال دی۔ اسی دم ایٹو کو
ہ کیا اور تھوڑی سی دیر میں پانی پانی ہو کر بہ گیا اور وہ
ہسم پانی پر تھرنے لگی۔ بابا جی نے کہا کہ—”دیکھو اس کا
ہی اس کے لئے تو اکسیر ہے“ لیکن آدمی کے لئے مہلک
کہا تک ہے اور آدمی کی اکسیر اس کے لئے مہلک ہے۔

آپا بکے را مددھ در ہنگے تو ہم،

آپا بکے را شادھ در ہنگے تو ہم۔

پانی—جو ایک کے لیے ستی ہے وہ دوسرے کے لیے
نیندا اور جو ایک کے لیے شادھ ہے وہ دوسرے کے لیے
آہر۔

اس کے بعد بابا جی نے کہا کہ آؤ تم کو ایک اور تماش
دیکھاؤں۔ ایک کڑھی دودھ کی بھری ہوئی منگائی اس میں
سرکہ اور نمک ڈال کر دودھ پہاڑ دیا۔ منجھ سے بولے کہ—”پہلا
اب کوئی چیز اسے درست کر سکتی ہے؟“ میں نے کہا کہ—
”نہیں۔“ پیر بھی ہسم ایک چارل پیر اس میں ڈال کر لکڑی
سے ہلانا شروع کیا۔ فوراً دودھ اصلی حالت پر آ گیا۔ پیر کتنا
ہی سرکہ اور نمک ڈالا اس پر کچھ اثر نہ ہوا، جیسا تھا
ویسا ہی رہا۔ بابا جی نے چیلوں کو حکم دیا کہ گڈھا کھود کر
اس دودھ کو دبا دو۔ ہم نے کہا کہ مہاراج ان چیلوں کو کیوں
نہیں پلا دیتے؟ کہتے تھے کہ یہ پٹن گے تو کلی ہو جائیں گے۔
پیر ہم سے پہاڑ کے ساتھ کہا کہ اگر تم کھائو تو ہم کھالیں۔ سات
پڑھی تک اس کا اثر دھکا۔ میں نے کہا بہت اچھا، لیکن
اس کا آثار بھی تو بتا دیجئے، نہیں تو پانچ سیر بھی روز کہاں سے
لاؤں گے۔ کہتے تھے یہاں خدا مالک ہے۔ ہم نے کہا اچھے رہے۔
دوا کھالے کر تو آپ مالک ہیں اور کھانا کھالے کے لئے خدا
مالک ہے۔ میں ایسی دوا سے باز آیا۔ یہ سنکر بابا جی چپ
ہو رہے۔ ان بابا جی کی عمر چار سو برس کی تھی۔ ہر ستر
برس میں گایا کلب کرتے تھے۔ اس کی ودھی یہ تھی کہ چھ
مہینے تک ایک کوٹھڑی میں بیٹھ کر جہل ہوا نہ پہنچ سکے
ایک دوا کھاتے تھے۔ پہلا جسم پھٹ جاتا تھا اور اس کے اندر
سے ایک دوسرا بارہ برس کے لڑکے کا سا نیا جسم نکل آتا تھا۔
جن دنوں ہم گئے تھے وہ دوا تیار ہو رہی تھی۔ یہ
بابا جی اکسیر کے کھالے میں بڑے استاد تھے۔ کچھ
دنوں کے بعد میرا اعظم علی صاحب ہمیں قہر لکھتے
تھو لکھتے وہاں جا پہنچے۔ انہیں دیکھ کر بابا جی

میں وہی وہی سر بھی اسے پिला دیا اور پیر لہانا شروع کیا۔ جب اسے
پر خود بھی ہوئی تو پیر بھی پلایا گیا۔ کچھ دیر پیچھے اسے
تینوں کا دست ہوا۔ پیر بھی ہلاکر تھلایا تو کچھ لہو کا دست آیا۔
اس نے بعد معمولی پاخانہ آیا اور پہلا چلکا ہو گیا۔ اب گرجی
نے کہا کہ اس سائب کو لاؤ۔ چیلے پکو لائے۔ ایک سہنگ سے
اس کے منہ میں بھی وہی بھوسہ ڈال دی۔ اسی دم ایٹو کو
ہ کیا اور تھوڑی سی دیر میں پانی پانی ہو کر بہ گیا اور وہ
ہسم پانی پر تھرنے لگی۔ بابا جی نے کہا کہ—”دیکھو اس کا
ہی اس کے لئے تو اکسیر ہے“ لیکن آدمی کے لئے مہلک
کہا تک ہے اور آدمی کی اکسیر اس کے لئے مہلک ہے۔

آن بکرا مدح درحق تو زم

آن بکرا را شہد درحق تو سم۔

یعنی—جو ایک کے لئے لستوتی ہے وہ دوسرے کے لئے نندا
اور جو ایک کے لئے شہد ہے وہ دوسرے کے لئے زہر۔

اس کے بعد بابا جی نے کہا کہ آؤ تم کو ایک اور تماش
دیکھاؤں۔ ایک کڑھی دودھ کی بھری ہوئی منگائی اس میں
سرکہ اور نمک ڈال کر دودھ پہاڑ دیا۔ منجھ سے بولے کہ—”پہلا
اب کوئی چیز اسے درست کر سکتی ہے؟“ میں نے کہا کہ—
”نہیں۔“ پیر بھی ہسم ایک چارل پیر اس میں ڈال کر لکڑی
سے ہلانا شروع کیا۔ فوراً دودھ اصلی حالت پر آ گیا۔ پیر کتنا
ہی سرکہ اور نمک ڈالا اس پر کچھ اثر نہ ہوا، جیسا تھا
ویسا ہی رہا۔ بابا جی نے چیلوں کو حکم دیا کہ گڈھا کھود کر
اس دودھ کو دبا دو۔ ہم نے کہا کہ مہاراج ان چیلوں کو کیوں
نہیں پلا دیتے؟ کہتے تھے کہ یہ پٹن گے تو کلی ہو جائیں گے۔
پیر ہم سے پہاڑ کے ساتھ کہا کہ اگر تم کھائو تو ہم کھالیں۔ سات
پڑھی تک اس کا اثر دھکا۔ میں نے کہا بہت اچھا، لیکن
اس کا آثار بھی تو بتا دیجئے، نہیں تو پانچ سیر بھی روز کہاں سے
لاؤں گے۔ کہتے تھے یہاں خدا مالک ہے۔ ہم نے کہا اچھے رہے۔
دوا کھالے کر تو آپ مالک ہیں اور کھانا کھالے کے لئے خدا
مالک ہے۔ میں ایسی دوا سے باز آیا۔ یہ سنکر بابا جی چپ
ہو رہے۔ ان بابا جی کی عمر چار سو برس کی تھی۔ ہر ستر
برس میں گایا کلب کرتے تھے۔ اس کی ودھی یہ تھی کہ چھ
مہینے تک ایک کوٹھڑی میں بیٹھ کر جہل ہوا نہ پہنچ سکے
ایک دوا کھاتے تھے۔ پہلا جسم پھٹ جاتا تھا اور اس کے اندر
سے ایک دوسرا بارہ برس کے لڑکے کا سا نیا جسم نکل آتا تھا۔
جن دنوں ہم گئے تھے وہ دوا تیار ہو رہی تھی۔ یہ
بابا جی اکسیر کے کھالے میں بڑے استاد تھے۔ کچھ
دنوں کے بعد میرا اعظم علی صاحب ہمیں قہر لکھتے
تھو لکھتے وہاں جا پہنچے۔ انہیں دیکھ کر بابا جی

نے پوچھا کہ یہ کون ہیں؟ میں نے کہا میرے پیتا ہیں۔ بولے
رنگ سے تو یہ بات ٹیک نہیں ملتی۔ تب میں نے
کہا کہ ہمارے گھر ہیں۔ انہوں نے کہا کہ ہاں یہ ہو سکتا
ہے۔ بالکل بھلا جی نے میرے ساتھ کو ستر ہونے پر
ایک بے لکڑی کی دی۔ وہاں سے باہر کی دی۔ راستے میں
میرے ساتھ نے کہا کہ بھلائی کی بات کو فک کر۔ میں نے
کہا کہ آپ بالکل بھلائی کی بات ہیں، ان کے کام آئیں گی۔
کہا کہ نہیں اس کو دیکھ کر خراب ہو جائے گا۔ تب ہم نے وہ
بے لکڑی دی۔

بھلائی پر مخلصانہ اتنا نہ ناز کرنا،
بہتر ہے کہیما سے دل کا گداز کرنا۔

[6]

ایک دن جب ہم مہرہ میں تھے تب کپڑے
بیل کھل پڑ گئے۔ گھر میں کوئی نہ تھی۔ مجبور ہو کر لڑکے
پڑھانے شروع کئے۔ جب کپڑوں کے لایکھ دھام آ گیا
تو پڑھانا بند کر دیا۔ ان دنوں مولوی حبیب اللہ شاہ کی
سہا میں رہے۔ حقیقت میں ان کی نگاہ جس پر پڑ جاتی تھی اس کے دل
کو پاک کرنے میں اس سے بہت بڑی مدد ملتی تھی۔ ہمارے
دل پر بھی ان کی نگاہ کا بہت بڑا اثر پڑا۔ یوگ کی کئی
کوریئیں جو نقشبندی نقیروں میں رائج تھیں ہم نے ان سے
سیکھیں۔ جب چکروں، چھوٹوں اور طرح طرح کے اندرونی تجربوں
کی سیر ہو چکی تو میں نے عرض کیا کہ ”آپ کی کرپا سے یہ
سب تماشہ تو خوب دیکھا پر گستاخی معاف کیجئے خدا کا پتہ
تو نہ کسی چکر میں لگا، نہ کسی لطیفہ میں۔ یہ سب بھانسی
کا سوانگ معلوم ہوتا ہے۔“ اس وقت تو یہ بات ان کو ناپسند
آئی لیکن آدمی بہت سچے اور سمجھدار تھے۔ رات کو سوچا تو بات
سمجھ میں آئی۔ صبح کو کہنے لگے کہ تم سچ کہتے ہو، سچ سچ وہ
پے چون اور بے چکرن، بشور نہ کسی چکر میں تھیں اور نہ
کسی رتھی سدھی میں۔ سیکڑوں مٹا شی (جکبازو) ہمارے
پاس آئے لیکن کسی نے اس سوچے بوجھ کی بات نہیں کی۔
اؤ دلی چکر شاہ ابوسمید صاحب سے پوچھیں۔ وہ مجھے دلی
لے گئے۔ شاہ صاحب سے بات چیت ہوئی۔ انہوں نے بہت ہی
ٹھیک جواب دیا اور کہا کہ—”سنو بیٹا، جو کچھ ہمیں اپنے
بزرگوں سے ملا ہے وہ ہمیں پہونچا دیا، اب اگر تمہاری ہمت
بڑھی اور تلاش زور کی ہے تو اور جگہ تھوڑھو۔“ یہ وہ دلی
سے چل دئے۔

[7]

ایک دن میں منڈاڑ میں ہم وہاں کے سجادہ نشین پیر
صاحب کے پاس بیٹھے تھے۔ اکثر پوروں کی عادت ہوتی ہے کہ
اپنے چیلوں سے ہر طرح کے کام لیتے ہیں۔ مہاں صاحب نے

* آدھ سیدھی سیدھی

میں اپنے چہلوں کو ہاتھ میں جوت رکھا تھا۔ ایک دن جب چیلے ہی مل جوت کر آئے تو آپ نے اُن سے کہا کہ—”ارے رات کو کچھ اللہ! اللہ! بھی کر لیا کرو۔“ اس پر ایک چیلہ کیا کہتا ہے کہ—”اب آئی ہم بدلتیوں کی کمبختی۔ دن کو تو مل جوتیں اور رات کو اللہ! اللہ کریں! بس اب ہم کیسے جنتیں گے؟ کس مصیبت میں پھنس گئے؟ ہم ایسی بڑی مریدی سے بھرپائے۔“ یہ بات سنا کر ہم تو ہنسنا لگے اور پھر جی چپ رہ گئے۔ کچھ جواب نہ دیا۔ حقیقت میں چہلوں سے کام لینا برا ہے، خاص کر اُن سے جو ایشور کے کھوجی ہوں۔ یوں تو کوئی کوئی سنت مہانتا بھی چہلوں سے بہت سخت کام لیا کرتے تھے، لیکن اُس میں کچھ مطلب تھا اور آخر میں اپنے مقصد (لکھیہ) تک بھی پہنچا دیتے تھے۔ خرابی تو یہ ہے کہ زیادہ تر پھر زادے سوائے اپنے خاندان کا گھنڈ کرنے کے اپنی گروہ کا کچھ نہیں رکھتے اور چہلوں کی خوب خبر لیتے ہیں۔ اگر کوئی پریمی چیلہ اپنے ہریم سے گروہ کا کوئی کام کرے تو دوسری بات ہے۔ لیکن کچھ بدلہ اُس کو بھی ملنا چاہئے۔ قرآن کی آیت ہے—جو تم پر احسان کرے اُس پر تم بھی احسان کرو۔

[8]

ایک دن جب ہم کرتپور میں گئے تو دیکھا کہ وہاں کے سجادہ نشین پیر جی نے صبح آکر حضرت احمد شاہ کے مزار کا طواف (پریکرم) اور سجدہ کیا۔ ہم نے پوچھا کہ ”صاحب! طواف اور سجدہ تو یہاں ہو گیا اب اگر حضرت غوث الاعظم کے مزار پر آپ جائیں تو وہاں کیا کیجیگا اور رسول اللہ محمد صاحب کے لئے کیا باقی رکھا ہے؟ اور خدا سے تو کچھ مطلب ہی نہیں جس کے لئے کچھ ادب تمہارے کی ضرورت ہو؟“ وہ ناراض ہو گئے اور بولے—”مہاں! طالب عام لوگ جتنی ہوتے ہیں، اُس لئے انہیں کچھ فائدہ نہیں ہوتا۔“ ہم نے کہا—”صاحب! ایسے فائدے کو ہمارا سلام ہے جس کے لئے خدا کو چہرے دوسرے کے سامنے سر جھکاویں اور ترحیم (ایکیشوراد) سے نکل کر دینی میں پھنس جاویں۔“

[9]

ایک دن جب ہم بنارس میں پہنچے تو ایک بزرگ کے پاس ٹھہرے جو ہمارے ہم نام تھے۔ پوچھا سے معلوم ہوا کہ خاندان فقہ ہندیہ میں مولوی حبیب اللہ شاہ کے چیلے ہیں۔ ہم نے کہا کہ ”آپ نہ صرف ہمارے ہم نام ہی ہیں بلکہ ہمارے گرو بھائی بھی ہیں۔“ پھر تو بڑا پریم ہو گیا۔ ایک دن کہنے لگے کہ ”یہاں ایک مندر ہے جس میں روز صبح کو گانا ہوتا ہے کل وہاں چلو۔“ اگلے دن صبح کی نماز کے بعد ہم دونوں وہاں گئے۔ دیکھا کہ ایک پلٹت جی، جوان عمر کے، چوکی پر بیٹھ ہوئے۔ زور زور سے آدھووا کی ویٹھیا کر رہے ہیں۔ جب وہ آدھی دس بجے

तो मुग्ध की रागिनी में आरती शुरू की. हमारे गुरु भाई सैयद गौस अली राह हुसैनी तो मुनकर इतने मुग्ध हो गए कि गिर ही पड़े. लेकिन हमने एक सम्भा पकड़ लिया और अपने आपको सम्हाले रखा. फिर भी हमारे सारे बदन में एक कंपकपी खी बौक गई. आर्ची खत्म हुई तो हमारे पीर भाई होश में आए और मकान को चले. आठ दिन तक हमारे दिल पर उसका गहरा असर रहा. एक दिन सैयद गौस अलीशाह ने हमसे कहा कि “आज गंगापुर चलो वहां एक चेले को सन्यास मिलेगा.” हम दोनों पहुंचे. देखा कि एक पन्डित किसी चेले को दीक्षा देने वाला है. हमारे गुरुभाई फट सर खोल कर पन्डित के सामने जा बैठे और कहा कि—“पंडित जी पहले हमको मूढ़ दो.” यह सुन कर पन्डित रोने लगा और बड़ी सच्चाई के साथ उसने यह कहा कि “मियां साहब, जो बात तुम चाहते हो उसकी हम को हवा भी नहीं लगी. सोचो, अगर हम इस क्राबिल होते तो टके टके पर क्यों मारे मारे फिरते. यह कतबा तो हमारे बुजुर्गों को हासिल था कि इधर उस्तरा सर पर रखा और उधर अन्तःकरण ने पलटा खाय़ा. हम लोग तो सिर्फ उनकी लकीर पीटते हैं.”

सचमुच हरिद्वार में हमने यही बात देखी जो इस पन्डित ने कही थी. यानी एक सन्यासी अपने चेले को सन्यास देना चाहता था कि एक मुसलमान फकीर सिर खोलकर आगे आ बैठा. सन्यासी ने जोरा में आकर नाई को इशारा किया कि अच्छा पहले इसी को मूढ़. नाई ने अपना काम शुरू किया. गुरु ने यूँ दीक्षा देनी शुरू की—“न पापी न पुष्पी, न स्वर्गी न नरकी, न ब्रह्मी न विरानी इत्यादि.”

इस दीक्षा के बावु उस मुसलमान फकीर की ऐसी अजीब हालत हुई कि फिर वह परमहंस हो गया। इसके बाद असली चेले की बारी आई, उस पर भी असर तो गहरा पड़ा मगर वह बात न हुई जो मुसलमान फकीर को हासिल हुई थी।

تو صبح کی راگنی میں آرنی شروع کی۔ ہمارے گرو بھائی سید غوث علی شاہ حسینی تو سنکر اُبلے مگر وہ کہتے کہ گر ہی پڑے۔ لیکن ہم نے ایک کھبا پکڑ لیا اور اپنے آپ کو سنہالے رکھا۔ پھر بھی ہمارے سارے بدن میں ایک کنگھی سے دوز گئی۔ آرنی ختم ہوئی تو ہمارے پھر بھائی ہوش میں آئے اور مکان کو چلے۔ آٹھ دن تک ہمارے دل پر اُس کا گہرا اثر رہا۔ ایک دن سید غوث علی شاہ نے ہم سے کہا کہ ”آج گنگاپور چلو وہاں ایک چیلے کو سلیس ملے گا۔“ ہم دونوں پہونچے۔ دیکھا کہ ایک پلذت کسی چیلے کو دیکھا دینے والا ہے۔ ہمارے گرو بھائی جھٹ سر کھول پلذت کے سامنے جا بیٹھے اور کہا کہ— ”پلذت جی پہلے ہم کو موز دو۔“ یہ سنکر پلذت رونے لگا اور بڑی سچائی کے ساتھ اُس نے یہ کہا کہ ”مہاش صاحب، جو بات تم چاہتے ہو اُس کی ہم کو ہوا بھی نہیں لگی۔ سوچو، اگر ہم اِس قابل ہوتے تو تمہ پر کیوں مارے مارے پھرتے۔ یہ رتبہ تو ہمارے بزرگوں کو حاصل تھا کہ ادھر اُسرا سر پر رکھا اور ادھر اُنکے کرن نے پلٹا کھایا۔ ہم لوگ تو صرف اُن کی لکیر پیکتے ہیں۔“

سچ مچ ہری دوار میں ہم نے بھی بات دیکھی جو اسی
 پلذت نے کہی تھی۔ یعنی ایک سنیاسی اپنے چیلے کو سنیاس
 دینا چاہتا تھا کہ ایک مسلمان فقہر سر کھول کر اُگے آ بھتا۔
 سنیاسی نے جوش میں آکر فائی کو اِشارة کیا کہ اچھا پہلے اسی کو
 جڑ۔ فائی نے اپنا کام شروع کیا۔ گرد نے یوں دیکھا دہلی شروع
 کی۔ ”نہ پاپی نہ پنی“ نہ سورگی نہ نرکی“ نہ بڑھی نہ
 وشنی اِتھادی۔“

اِس دیکھا کے بعد اُس مسلمان فقہر کی ایسی عجیب حالت ہوئی کہ پھر وہ پرم ہنس ہو گیا۔ اِس کے بعد اصلی چیلے کی باری آئی۔ اُس پر بھی اثر ہو گیا پڑا مگر وہ بات نہ ہوئی جو مسلمان فقہر کو حاصل ہوئی تھی۔

10 1

[10]

एक रोज जब हम कोट पूतली से चले तो रास्ते में एक मन्दिर मिला। वहाँ एक साधू बड़े मनोहर स्वर से भजन गा रहा था। हम उसके पास जा बैठे। भजन सुनते रहे। फिर उनसे बातें होने लगीं, यहाँ तक कि नमाज का वक्त आया। हमने कपड़ा बिछा कर नमाज पढ़ ली। नमाज के बाद वह साधू जी हमसे कहने लगे कि “भियां साहब, आपकी लबीयत में तो बड़ी आजादी मालूम होती है फिर यह नमाज की इस्लत क्यों लगा रखी है ?” हमने कहा कि “बाबा जी ! इस्लत से तो न तुम खाली, न हम खाली। तुमको इस पत्थर के पूजने की इस्लत मिली हुई है, हमको नमाज की। तुम

ایک روز جب ہم کورٹ پوتلی سے چلے تو راستے میں ایک ملندہ ملا۔ وہاں ایک سادھو بڑے منورہ سر سے بھجن گا رہا تھا۔ ہم اُس کے پاس جا بیٹھے۔ بھجن سنتے رہے۔ پھر اُن سے باتیں ہونے لگیں، یہاں تک کہ نماز کا وقت آیا۔ ہم نے کھڑا ہوجھا کر نماز پڑھ لی۔ نماز کے بعد وہ سادھو جی ہم سے کہنے لگے کہ ”میاں صاحب! آپ کی طبیعت میں تو بڑی آزادی معلوم ہوتی ہے پھر یہ نماز کی علت کیوں لگا رکھی ہے؟“ ہم نے کہا کہ ”بابا جی! علت سے تو نہ تم خالی، نہ ہم خالی۔ تم کو اس پتھر کے پوجنے کی علت لگی ہوئی ہے، ہم کو نماز لی۔ تم

بھٹا بجاوے ہو ہم مالا دھلاتے ہیں۔“

رساई نےس تا سارے مںجیلے ک کوفے ایموں را،
کے دیرو کاہا سارے رہ بوبد گبرو مسلمانوں را۔

یانی—وہس پرمبربر کے مکرام تک کوف اور ایمان
دونوں میں سے کسی کی بھی پہنچ نہیں، کیونکہ مندر اور کتبہ دونوں
کاہا دونوں ہندو اور مسلمانوں کے راستے کے پتھر ہیں۔

دلا* ماہل* نہ ہو دیرو† حرم‡ کا،
یہاں دونوں جگہ پتھر پڑے ہیں۔

رسانی نیست تا سر منزل او کفر و ایمان را
کہ دیرو و کتبہ سنگ را بود گبر و مسلمان را

یعنی—اُس پرمیشور کے مقام تک کفر اور ایمان دونوں
میں سے کسی کی بھی پہنچ نہیں، کیونکہ مندر اور کتبہ دونوں
ہندو اور مسلمانوں کے راستے کے پتھر ہیں۔

دلا* ماہل* نہ ہو دیرو† حرم‡ کا،
یہاں دونوں جگہ پتھر پڑے ہیں۔

جل کنیا کے آنسو

جل کنیا کے آنسو

ویربمہر ناٹھ پاڈے

ویربمہر ناٹھ پاڈے

مسلمانوں کی نماز میں مجھے ایک خاص کھنچاؤ معلوم
ہوتا ہے۔ اور خاص طور پر عشاء کی نماز۔ کتنی ہی بار میں نے مومن
کو اذان دیتے ہوئے اور اہل کو نماز پڑھاتے دیکھا ہے۔ زاہد سربے
لہجے سے قرآن کی تلاوت کرتا ہے اور نمازیوں کی قطاریں بیخودی
میں قلوب کو اُس پاک پروردگار اللہ تعالیٰ کے ساتھ ایک
تار میں بندھ جاتی ہیں۔ مجھے نہیں معلوم کہ اوروں کو بھی
نماز اُس طرح رجوع کرتی یا نہیں اور نہ میں نے اُس اثر کی
ہی چھان بین کرنے کی کوشش کی کہ مجھے یہ کیوں اتنی
دلکش لگتی ہے۔

نماز کا ذکر کرتے کرتے میرے من میں ملایا کی اُس گھٹنا
کی یاد تازہ ہوگئی۔ سوچ قلوب چکا تھا۔ نمازی مسجد میں
اُتر عشاء کی نماز کا انتظار کر رہے تھے۔ کچھ کلم مجید کا مطالعہ،
کر رہے تھے اور کچھ حدیثوں کی چرچا۔ ایک ہورج سے حاجی
حضرت پھمبر کے وفادار ساتھیوں کی قربانی اور جنتناری کی
کہانیاں سنا رہے تھے۔ دکن پورب کے اُن ملکوں میں اور خاص
طور پر ملایا میں مسافر کا من خاص طور پر دم چا تا ہے۔ اُسے
خوافش ہی نہیں ہوتی کہ سفر تمام کر کے اگے کی منزل کی
آر پڑے۔

نماز کا جیکر کرتے کرتے میرے من میں ملایا کی
اُس گھٹنا کی یاد تازہ ہو گئی۔ سوج قلوب چکا تھا۔ نمازی مسجد میں
اُتر عشاء کی نماز کا انتظار کر رہے تھے۔ کچھ کلم مجید کا مطالعہ،
کر رہے تھے اور کچھ حدیثوں کی چرچا۔ ایک ہورج سے حاجی
حضرت پھمبر کے وفادار ساتھیوں کی قربانی اور جنتناری کی
کہانیاں سنا رہے تھے۔ دکن پورب کے اُن ملکوں میں اور خاص
طور پر ملایا میں مسافر کا من خاص طور پر دم چا تا ہے۔ اُسے
خوافش ہی نہیں ہوتی کہ سفر تمام کر کے اگے کی منزل کی
آر پڑے۔

اس کھنچاؤ کا راز کیا ہے، اُس کے پیچھے رہسہ کیا ہے،
یہ بتانا ذرا مشکل ہے۔ کچھ تو دیہی کی سندرنا

اس کھنچاؤ کا راز کیا ہے، اُس کے پیچھے رہسہ کیا ہے،
یہ بتانا ذرا مشکل ہے۔ کچھ تو دیہی کی سندرنا

ۛ دے دِل دل

ۛ آساک

† مندر

‡ کاہا

کچھ دہشت گردوں کی پوزیشنوں کے ساتھ مصحف، کچھ قدرتی کے نظارے، کچھ موسم اور آب و ہوا کی من پسندگی مسافر کی طبیعت پر ایک عجیب و غریب اثر ڈالتے ہیں۔ اور اگر اسے صحرا پر ملایا چھوڑنا ہی پڑے تو وہ بھی بے شک ارادہ لیکر چھوڑتا ہے کہ دوسری بار کچھ زیادہ فرصت ساتھ لیکر وہ وہاں لوٹے گا۔ کتابوں سے اپنی معلومات بڑھانے والے اس بات کا اندازہ ہی نہیں کر سکتے کہ سفر میں جو باتیں دکھائی دیتی ہیں انکا ذکر تک کتابوں میں نہیں ہوتا۔ پھر بھی کتنی تسلی کی بات ہے کہ یہ چیزیں خود اپنی آنکھوں سے دیکھنے کو ملتی ہیں۔ حالانکہ میں وہاں دوسری بار نہ جاسکا پھر بھی وہ رہ کر مجھے ملایا کے اس سفر کی یاد آتی ہے۔

بھگت سنگھ کا یہ دو توفانی سمندروں کے बीच پر تہی کی ایک پتلی سی لکیر ہے۔ لیکن سمندری توفان اس کے کناروں سے ٹک کر نہیں لیتے۔ وہاں ہر وقت موسم بہار چھا رہا ہے۔ نہ لوگ، نہ آسمان، نہ جہاز، نہ کشتی، نہ نہ ہونچال اور نہ طوفان۔ چمن ساگر اور ہند ساگر کی بیوی لہریں اس سمندر جزیرہ کے محفوظ کناروں تک پہنچتے پہنچتے تھک کر لست ہو جاتی ہیں۔

وہ عشاء کی نماز کا ذکر کر رہا تھا۔ امام اٹے اور نماز پڑھا کر نمازیوں کو دعا دیکر آرام کرنے چلے گئے۔ کچھ بزرگ نمازی، جنگا گھر سے لگ لگاؤ کم ہو چکا تھا، وہیں دیوار کا سہارا لیکر بیٹھے تھے۔ کئی قسم کے چرچے شروع ہوئے، جن کے سلسلے ختم ہوتے ہی اس طرح جڑ جاتے تھے کہ وہ ایک لمبی داستان معلوم ہوتے تھے۔ وہ سارے چرچے اٹھ دلیچسپ تھے کہ من ہوتا تھا کہ بس سنتا ہی رہوں۔ سالنے والے کئی تھے اور ایک کے ختم کرتے نہ کرتے دوسرا فوراً کڑی پکڑ لیتا تھا۔

میں عشاء کی نماز کا ذکر کر رہا تھا۔ امام اٹے اور نماز پڑھا کر نمازیوں کو دعا دیکر آرام کرنے چلے گئے۔ کچھ بزرگ نمازی، جنگا گھر سے لگ لگاؤ کم ہو چکا تھا، وہیں دیوار کا سہارا لیکر بیٹھے تھے۔ کئی قسم کے چرچے شروع ہوئے، جن کے سلسلے ختم ہوتے ہی اس طرح جڑ جاتے تھے کہ وہ ایک لمبی داستان معلوم ہوتے تھے۔ وہ سارے چرچے اٹھ دلیچسپ تھے کہ من ہوتا تھا کہ بس سنتا ہی رہوں۔ سالنے والے کئی تھے اور ایک کے ختم کرتے نہ کرتے دوسرا فوراً کڑی پکڑ لیتا تھا۔

میں عشاء کی نماز کا ذکر کر رہا تھا۔ امام اٹے اور نماز پڑھا کر نمازیوں کو دعا دیکر آرام کرنے چلے گئے۔ کچھ بزرگ نمازی، جنگا گھر سے لگ لگاؤ کم ہو چکا تھا، وہیں دیوار کا سہارا لیکر بیٹھے تھے۔ کئی قسم کے چرچے شروع ہوئے، جن کے سلسلے ختم ہوتے ہی اس طرح جڑ جاتے تھے کہ وہ ایک لمبی داستان معلوم ہوتے تھے۔ وہ سارے چرچے اٹھ دلیچسپ تھے کہ من ہوتا تھا کہ بس سنتا ہی رہوں۔ سالنے والے کئی تھے اور ایک کے ختم کرتے نہ کرتے دوسرا فوراً کڑی پکڑ لیتا تھا۔

میں عشاء کی نماز کا ذکر کر رہا تھا۔ امام اٹے اور نماز پڑھا کر نمازیوں کو دعا دیکر آرام کرنے چلے گئے۔ کچھ بزرگ نمازی، جنگا گھر سے لگ لگاؤ کم ہو چکا تھا، وہیں دیوار کا سہارا لیکر بیٹھے تھے۔ کئی قسم کے چرچے شروع ہوئے، جن کے سلسلے ختم ہوتے ہی اس طرح جڑ جاتے تھے کہ وہ ایک لمبی داستان معلوم ہوتے تھے۔ وہ سارے چرچے اٹھ دلیچسپ تھے کہ من ہوتا تھا کہ بس سنتا ہی رہوں۔ سالنے والے کئی تھے اور ایک کے ختم کرتے نہ کرتے دوسرا فوراً کڑی پکڑ لیتا تھا۔

میں عشاء کی نماز کا ذکر کر رہا تھا۔ امام اٹے اور نماز پڑھا کر نمازیوں کو دعا دیکر آرام کرنے چلے گئے۔ کچھ بزرگ نمازی، جنگا گھر سے لگ لگاؤ کم ہو چکا تھا، وہیں دیوار کا سہارا لیکر بیٹھے تھے۔ کئی قسم کے چرچے شروع ہوئے، جن کے سلسلے ختم ہوتے ہی اس طرح جڑ جاتے تھے کہ وہ ایک لمبی داستان معلوم ہوتے تھے۔ وہ سارے چرچے اٹھ دلیچسپ تھے کہ من ہوتا تھا کہ بس سنتا ہی رہوں۔ سالنے والے کئی تھے اور ایک کے ختم کرتے نہ کرتے دوسرا فوراً کڑی پکڑ لیتا تھا۔

میں عشاء کی نماز کا ذکر کر رہا تھا۔ امام اٹے اور نماز پڑھا کر نمازیوں کو دعا دیکر آرام کرنے چلے گئے۔ کچھ بزرگ نمازی، جنگا گھر سے لگ لگاؤ کم ہو چکا تھا، وہیں دیوار کا سہارا لیکر بیٹھے تھے۔ کئی قسم کے چرچے شروع ہوئے، جن کے سلسلے ختم ہوتے ہی اس طرح جڑ جاتے تھے کہ وہ ایک لمبی داستان معلوم ہوتے تھے۔ وہ سارے چرچے اٹھ دلیچسپ تھے کہ من ہوتا تھا کہ بس سنتا ہی رہوں۔ سالنے والے کئی تھے اور ایک کے ختم کرتے نہ کرتے دوسرا فوراً کڑی پکڑ لیتا تھا۔

ناخدا 'توہ پرمتاگ' کے منسلک ہونے کی خدمت میں حاضر ہوا اور اُن کی اجازت سے موٹا پانی بہروانے کی اسکیم بنانے لگا۔ 'توہ پرمتاگ' کی چار بیٹیاں تھیں جن میں تیسری 'راؤنا' بھعد خوبصورت تھی۔ کسی چورٹے سے نکر میں اگر کوئی خوبصورت لڑکی ہو تو لوگ اس کی کافی چرچا کرتے ہیں۔ ناخدا کے کانوں میں بھی راؤنا کی تعریف کی بات پڑی اور اُس نے اتفاق سے راؤنا کو دیکھا بھی۔ لوگ کہتے ہیں کہ پریم موقع اور محل نہیں دیکھتا۔ راؤنا کو دیکھتے ہی ناخدا نے اپنا دل و جان اس پر نہچا اور کر دیا۔ وہ دن رات اُس کے پریم میں تڑپنے لگا۔ درختوں کے پر معلوم ہوا کہ راؤنا تو پہلے سے ہی محبت کی منزل کی مسافر ہے۔ اُسکی شادی بن چکی تھی اور وہ ایک دوسرے شخص کی ملکہتر تھی۔ مگر ناخدا کا پریم بھی ہار قبول کرنے سے انکار کر رہا تھا۔ آخر تو وہ سوداگر تھا اور پریم بھی تو ایک سودا ہی ہے۔ وہ اس کے لئے تیار تھا کہ اس سودے میں اُسے جو بھی بازی لگانی پڑے وہ پیچھے نہ ہٹے گا۔

بھان سنتم سنتم مہرا من راؤنا کی خوبصورتی کی کلیدا کرنے میں مشغول تھا۔ ہونے نمازی نے مہرا دیکھا کھینچتے ہوئے کہا—”اجنبی! تم جانتے ہو کہ یہ سمانرا والے ریشم اور خلتجور کے علاوہ ہشیکرن کی دوا بنا نا بھی جانتے ہیں۔“ مینہ شرمندہ ہو کر اپنی لائسی ظاہر کی۔ مینہ پوچھا کہ—”یہ ہشیکرن کی دوا ہے کھد؟“ بزرگوار نے جواب دیا—”یہ دوا 'جل کنیا' کے آنسو سے بنتی ہے۔ اس جل کنیا کو ہم لوگ 'دو یونگ' کہتے ہیں۔ جل کنیا سمندر میں رہتی ہے، ترنگوں کے ساتھ اٹھاتی ہے اور طوفانی موجوں کے ساتھ کھلتی ہے۔ اُس کی خوراک صرف دوب ہے۔ سمندر سے نکل کر جب وہ دوب کھاتے آتی ہے تو لوگ گھبرا ڈال کر اُسے پکڑ لیتے ہیں۔ اُس کا قد آدمی سے کچھ بڑا ہوتا ہے۔ کچھ لوگ اس کا گوشت بھی کھاتے ہیں۔ پھیس کے گوشت کی طرح اُس کا بھی گوشت لال ہوتا ہے۔ گرفتار ہونے پر یہ جل کنیا رونے لگتی ہے۔ اس کی آنکھوں سے ٹپ ٹپ لال آنسو گرنے لگتے ہیں۔ وہ سمندر کی لہروں میں لوتلے کے لئے چپکھٹاتے لگتی ہے۔ جس وقت وہ روتی ہے تو لوگ کتروں میں اُس کے لال لال آنسو جمع کر لیتے ہیں۔ اگر اُن آنسوؤں کو بھات کے ساتھ ملا دیا جائے تو بھات کا رنگ بھی لال ہو جاتا ہے۔

کہتے ہیں ناخدا کے پاس بھی ایک شیشی میں اسی جل کنیا کے آنسو تھے۔ توہ پرمتاگ کے باورچی کو رشوت کی ایک بڑی رقم دیکر راؤنا کے بھات میں اُس نے جل کنیا کے آنسو ملا دیا۔ سمندر کی دیوی اس لڑکی نے

کہتے ہیں ناخدا کے پاس بھی ایک شیشی میں اسی جل کنیا کے آنسو تھے۔ توہ پرمتاگ کے باورچی کو رشوت کی ایک بڑی رقم دیکر راؤنا کے بھات میں اُس نے جل کنیا کے آنسو ملا دیا۔ سمندر کی دیوی اس لڑکی نے

اجنجان میں وہ صاف صاف لیا۔ راتنا اسے لٹا کر نالکھوا کے پیار میں دیوانی ہو گئی۔

نالکھوا ایک مہینہ تک تیلک بات میں ڈھرا رہا۔ راتنا کی داسی کو کیمٹی ریشم مٹھ دے کر اسکی مہر سے وہ راتنا سے ملتا رہا۔ اس طرح کی بات عرصہ تک چلتی رہی اور کوئی سندیہ نہ کرے یہ ناممکن ہے۔ اس کے پریم پر اب تر حاوی ہوئے گا۔ راتنا ایک طاقتور مہیا کی لڑکی اور وہ ایک لچلی پردیسی۔ اگر تیرہ پر متانگ کو ذرا بھی شبہ ہوا تو یا اسکی ہوتی ہوتی کٹ لی جائے گی اور یا وہ کتوں سے لچھا کر پھینک دیا جائے گا۔ ریشم کا سوداگر پریم کا سودا نہ نہا سکا۔ اس لئے پتہ کا پانی بھر کر بنا کسی کو اطلاع دینے ایک دن اس نے اپنی کشتی کے لنگر اٹھا لئے۔

چوتھی سی جگہ میں ذرا ذرا سی بات کی چرچا ہوئی ہے۔ راتنا کے گل میں جہوں ہی نالکھوا مہیا کی روانگی کی پہلک پڑی وہ بدحواس ہو کر بندرگاہ کی طرف دوڑی، اس کی بہنیں اس کے پیچھے پیچھے۔ ناؤ نے پال اٹھا دئے تھے مگر ہوا کی رفتار منہر تھی، اس لئے نالکھوا کی کشتی کنارے سے کچھ تھوڑا آگے لہروں کے ہلکوروں سے کھل رہی تھی۔ راتنا سمندر کی لہروں کو چیرتے ہوئے آگے بڑھی۔ اس کی بہنوں نے اسے پوری طاقت سے پکڑ کر روکا اور سُرکلا سے اسے ڈھونڈنے سے بچا دیا۔ اس کی بہنوں نے اسے قہر سے بچا دیا۔ چھ پکار سن کر کنارے کے کچھ لوگ اٹھ اٹھے۔ ہساری کہانی سن کر انہوں نے نالکھوا کو واپس آنے کو کہا۔ مگر سمندر کا وہ سوداگر اس واپسی کا مطلب خوب سمجھتا تھا۔ لوگوں نے اس کی ناؤ کا پھینکا کیا مگر تب تک انوکھل واپو پا کر وہ ان کی گرفت میں نہ آسکا۔

راتنا اپنے بڑے اور نردنی پریمی کی جدائی میں زار زار روتی اور آہیں بھرتی رہی۔ نالکھوا پھر کبھی تیلک بات واپس نہیں لوٹا۔ راتنا کی بہن پر عرصہ ہوا موت نے کالی چادر چھک دی۔ مگر راتنا کی جدائی کا گیت اب تک ملایا میں گایا جاتا ہے۔ اس کی کچھ سطرین میں آپ کو سنانا ہوں اور مجھے اُمید ہے آپ اُدھیں گے نہیں۔

میرے نالکھوا !

میرے پرانوں کے سہارے ! تو کھان ہو ؟

اُنچے اُنچے تار کے درخت،

میرے کاسیدوں کی ہسینت سے

توہاری آماد کا ہنکار کر رہے ہیں،

فک درختوں سے ڈٹ کر اپنا سر ڈھن رہے ہیں۔

میرے نالکھوا !

میں توہاری بھڑت سندر مہر بھرا،

میرے نالکھوا !

میرے پرانوں کے سہارے ! تم کہاں ہو ؟

اُنچے اُنچے تار کے درخت،

میرے قاصدوں کی چھینٹ سے

تمہاری آمد کا انتظار کر رہے ہیں۔

پہل درختوں سے ٹوٹ کر اپنا سر ڈھن رہے ہیں۔

میرے نالکھوا !

میں تمہاری بہت سندر مہر بھرا،

تुम्ہاری جھمبڑی کی ہیرک کئی،
پرستیاں گونگاں کی جھوٹی،
توہارے کیرہ میں تھپ رہی ہیں۔

میرے ناکھوڑا !

توہارے پاؤں کی نئی جوتی بپ بپ،
میرے کانوں میں پڑ رہی ہے،
توہاری ناخ چپل سڑیوں میں تیرتی ہوئی،
دور، بہت دور، ہر منٹ دور چلی جا رہی ہے !

میرے ناکھوڑا !

میرے پرائی !

میرے کھینچی کے आधार !

میرے ماہی !

توہاری پوجا میں توہاری پوجا میں بستا ہے۔

پریتم ! سحر کی کیرائیوں بے دم ہو رہی ہیں،
جب تو نے لنگر کھانا کھا،
ہوا کا رخ مٹا کر نہ تھا،
لیکن اللہ کے رحم کی کوئی حد نہیں،
خدا کے فضل سے ہم جنت کے باغ میں ملیں گے۔

پریتم ! رہ رہ کر کھینچ سے تھکاتی سڑیوں میں،
دیکھو ہوشیار رہنا،
بائیں اور کا پال نہ کھولنا،
تین مہینے اور دس دن میں،
میرے پریتم تم ضرور لوٹ آنا۔

میری کھینچی کے आधार !

میرا دم ٹاپو پر پھینچ کر بھوکا آرام کر لینا،
تو مجھے بھوک کر جا رہے ہو،
لیکن مجھے لمبی جدائی نہ سہنے دینا،
دو مہینے بس—
کھانا کھا کر کھانا کھا کر تین مہینے میں لوٹ آنا۔

پریتم ! سمندر کی لہریں شانت ہیں،
کھینچ پر کھینچی کبھی نہیں لگاتے،
کھانا میرے ہاتھ سے کھاتے ہو،
کھانا تو نے اپنے کھینچ کی ڈال،
ابھی حال ہی میں نہیں تیر کر آئی تھی ؟

میرے پرائی کے आधार !

تو تھک کر آئے،
میرے دل کی شانتی چلی گئی،
شہطان میری تھک کر آئے،
میرا دل تو توہارے پاس ہے !

توہاری کھینچی کی ہیرک کئی،
پرستیاں گونگاں کی جھوٹی،
توہارے ہاتھ میں تھپ رہی ہیں۔

میرے ناکھوڑا !

توہارے پاؤں کی نئی جوتی بپ بپ،
میرے کانوں میں پڑ رہی ہے،
توہاری ناخ چپل سڑیوں میں تیرتی ہوئی،
دور، بہت دور، ہر منٹ دور چلی جا رہی ہے !

میرے ناکھوڑا !

میرے پرائی !

میرے کھینچی کے आधार !

میرے ماہی !

توہاری پوجا میں توہاری پوجا میں بستا ہے۔

پریتم ! سحر کی کیرائیوں بے دم ہو رہی ہیں،
جب تم نے لنگر کھانا کھا،
ہوا کا رخ مٹا کر نہ تھا،
لیکن اللہ کے رحم کی کوئی حد نہیں،
خدا کے فضل سے ہم جنت کے باغ میں ملیں گے۔

پریتم ! رہ رہ کر کھینچ سے تھکاتی سڑیوں میں،
دیکھو ہوشیار رہنا،
بائیں اور کا پال نہ کھولنا،
تین مہینے اور دس دن میں،
میرے پریتم تم ضرور لوٹ آنا۔

میری کھینچی کے आधार !

میرا دم ٹاپو پر پھینچ کر بھوکا آرام کر لینا،
تو مجھے بھوک کر جا رہے ہو،
لیکن مجھے لمبی جدائی نہ سہنے دینا،
دو مہینے بس—
کھانا کھا کر کھانا کھا کر تین مہینے میں لوٹ آنا۔

پریتم ! سمندر کی لہریں شانت ہیں،
کھینچ پر کھینچی کبھی نہیں لگاتے،
کھانا میرے ہاتھ سے کھاتے ہو،
کھانا تو نے اپنے کھینچ کی ڈال،
ابھی حال ہی میں نہیں تیر کر آئی تھی ؟

میرے پرائی کے आधार !

تو تھک کر آئے،
میرے دل کی شانتی چلی گئی،
شہطان میری تھک کر آئے،
میرا دل تو توہارے پاس ہے !

پریکشم !

میری آواز پر سیر کرو،
انمول ہیرے کو اپنے ہاتھ سے نہ ہٹاؤ،
ورنہ سب تمہاری ہنسی بکھڑکے !

پریکشم !

میری آواز پر غور کرو،
انمول ہیرے کو اپنے ہاتھ سے نہ ہٹاؤ،
ورنہ سب تمہاری ہنسی بکھڑکے !

میرے ناخدا !

سمندر تاروں سے جونی اس بچہ پر کون لے دے گا ؟
اس ریشمی دلائی کو کون آدھے گا ؟
اس چاندی کی چوکی پر کون بیٹھے گا ؟
اور یہ تکیہ اب کس کو سہارا دے گا ؟

میرے ناخدا !

سمندر تاروں سے بلی اس چٹائی پر کون لیتا گا ؟
اس ریشمی دلائی کو کون آدھے گا ؟
اس چاندی کی چوکی پر کون بیٹھے گا ؟
اور یہ تکیہ اب کس کو سہارا دے گا ؟

میرے ناخدا !

شالی میں سजे پکوان اب کون کھاوے گا ؟
برف سا ٹنڈا پانی اب کون پیوے گا ؟
توہاری مایوس دلیہا کو کون ڈارس دے گا ؟
او موات ! آ اور مجھے تکلیفوں سے بڑی کر۔

میرے ناخدا !

تھالی میں سजे پکوان اب کون کھاوے گا ؟
برف سا ٹنڈا پانی اب کون پیوے گا ؟
توہاری مایوس دلیہا کو کون ڈارس دے گا ؟
او موت ! آ اور مجھے تکلیفوں سے بڑی کر۔

ناخدا کی کیرتی آسٹوں سے آؤٹل ہو گئی۔ راتنا
روتی اور چیللائی تھی۔ سمندر کی لہروں میں سما جانے
کو ڈھپٹاتی تھی۔ مگر اسکی بھرنے اس کے پاس نہ ہوتی
تو جودا کا یہ گیت سمندر کی سترہ میں بکھیرا پڑا
رہتا۔ راتنا اور ناخدا کی یہی کہانی ہے۔ مالا کا
بچہ بچہ اسے جانتا ہے۔ راتنا پورے
ناخدا کی جودا میں دہرائی تھی۔ آخر
اس کے باپ نے زبردستی اس کے منکیت کے ساتھ اس کی
ادی کر دی۔ اس پر کسی بیٹی یہ جان سکتا نہیں
وہ اس کا نازک بدن اس کی روح کو زیادہ دنوں تک
لی بھتر سمیت کر نہ رکھ سکا۔

ناخدا اور راتنا کی کہانی میں سوا سوا سا مینے
جوجوگوار سے پوچھا—”ہزارت ! یہ جمل گنیا کے آئینے
میلے گئے؟“

جوجوگوار نے ہنسنے جواب دیا—”بھوت آسان
بات ہے۔ جمل گنیا جب کینارے کی مٹی دھو جانے سمندر
سے باہر نکلے تب اسے پکڑ لو اور اسے کینارے سے
کس کر باندھ دو۔ بونڈی دیر میں وہ اپنے ساتھی کی جودا میں
تڑپ تڑپ کر رہے لگیں گی۔ تم اس کے آئینے کو ایک پتھر سے
بند کر دو۔“

ناخدا اور راتنا کی کہانی میں کھوپا کھوپا سا مینے نے بزرگوار
پوچھا—”حضرت ! یہ جمل گنیا کے آئینے ملے گئے؟“
بزرگوار نے ہنسنے جواب دیا—”بہت آسان بات ہے۔
جمل گنیا جب کینارے کی مٹی دھو جانے سمندر سے باہر
آئے تب اسے پکڑ لو اور اسے کینارے سے کس کر باندھ دو۔ توڑی
میں وہ اپنے ساتھی کی جودا میں تڑپ تڑپ کر رہے
لگیں گی۔ تم اس کے آئینے کو ایک پتھر سے بند کر لو۔
اس سے تم لوگوں کو اپنے بس میں کر سکتے ہو۔“

اس کے بعد مسجد میں ملنا چھا گیا۔ پھر کولے میں بیٹھا
ایک آدمی بول پڑا—”میں نے سنا ہے پونانگ شہر میں
جمل گنیا کے آئینے ملے ہیں۔“

کھانی سننے والے نے فوراً جواب دیا—”وہ تو میں نے ہی
سنا ہے۔ مگر لوگوں کا خیال ہے کہ وہ نقلی آئینے ہیں۔
تجربہ لے کر خریدنا پکارا ہے۔“

کہانی سنانے والے نے فوراً جواب دیا—”بھ تو مینے
ہی سنا ہے، مگر لوگوں کا خیال ہے کہ وہ نقلی آئینے
ہیں۔ بڑی ہمتاں لیتے اسے خریدنا پکارا ہے۔“

میں نے پوچھا—“مگر امتحان کیسے لیا جائے؟”

بزرگوار بولے—“وہ بھی آسان ہے۔ ایک بطخ کی چونچ میں آگے ذرا سا مل دیجئے۔ اگر جل کر کھیا کے آنسو سچے ہیں تو بطخ بدبوئی ہو کر آپ کے پیچھے لگ جائیگی۔ جہاں جہاں آپ جائیں گے، پیچھے پیچھے بطخ ہوگی۔”

میں نے سنجیدگی سے پوچھا—“نیا آپ نے اس کی آزمائش بھی کی ہے؟”

”جی نہیں! مجھے ہشکرت کی ضرورت نہیں۔ میں ایسی آگ نہیں سلگانا چاہتا جس کی لپٹیں میرے قابو میں نہ ہوں۔ کسی کو جل کر کھیا کے آنسو سے اپنی محبت میں دیوانہ بنا دینا تو آسان ہے مگر اُس پیار کے سونے کو نبھا سنا بہت مشکل ہے۔ بہر حال اگر خود میں یہ آنسو خریدوں تو انہیں پہلے بطخ پر ضرور آزمائوں۔“

رات گھنٹے اندھیرے کی چادر اُڑھ کر خاموش سو رہی۔ دور سمندر کی لہروں کی छप छप سناई دے رہی ہے اور میں بڑی پتلیوں سے رازنا کے پریم اور جلال-کونیا کے آسوسوں کی بات سوچ رہا ہوں۔

X

X

X

X

X

X

X

نیا ہند کے پاٹھوں کے لیے میں نے رازنا کے بربھ گیت کا ترجمہ چھوں کا تہوں دیا ہے۔ صرف ’آدھار‘ لفظ کا ملبا میں بنیادی ترجمہ ’چھاتا‘ ہوا ہے۔ چھاتا میں اور دھوپ سے بچانا ہے۔ پردہ چونکہ استری کی حفاظت کرنا ہے اس لئے ملبا میں خاوند کو ’چھاتا‘ کہہ کر پکارا جاتا ہے۔ اسی طرح ’تکیہ‘ کا مرل ارتھ ’پتلی‘ ہے اور چونکہ پتلی پردہ کو سہارا دیتی ہے اس لئے ملبا زبان میں پتلی کو ’تکیہ‘ کہہ کر پکارا جاتا ہے۔

نیا ہند کے پاٹھوں کے لئے میں نے رازنا کے بربھ گیت کا ترجمہ چھوں کا تہوں دیا ہے۔ صرف ’آدھار‘ لفظ کا ملبا میں بنیادی ترجمہ ’چھاتا‘ ہوا ہے۔ چھاتا میں اور دھوپ سے بچانا ہے۔ پردہ چونکہ استری کی حفاظت کرنا ہے اس لئے ملبا میں خاوند کو ’چھاتا‘ کہہ کر پکارا جاتا ہے۔ اسی طرح ’تکیہ‘ کا مرل ارتھ ’پتلی‘ ہے اور چونکہ پتلی پردہ کو سہارا دیتی ہے اس لئے ملبا زبان میں پتلی کو ’تکیہ‘ کہہ کر پکارا جاتا ہے۔

”سچے سچا سدا کا، سچا سبھتا کا لکشن پری کرہ
برہانا نہیں ہے، بلکہ اُس کا دھار اور اچھا پروک
کھانا ہے۔ چھوں چھوں پری کرہ ہٹانے توں نہیں سچا
سم اور سچا سترہی برہانا ہے، سدا شکتی برہتی ہے۔“

—باپو

”سچے سچا سدا کا، سچا سبھتا کا لکشن پری کرہ
برہانا نہیں ہے، بلکہ اُس کا دھار اور اچھا پروک
کھانا ہے۔ چھوں چھوں پری کرہ ہٹانے توں نہیں سچا
سم اور سچا سترہی برہانا ہے، سدا شکتی برہتی ہے۔“

—باپو

اللہ میاں کے گیت

श्रीमती हाजरत बेगम

شریعتی حاجرة بیکم

अंग्रेज मिशनरियों ने जब अफ़्रीका के हबशियों को इन्सानियत की पालीम देनी चाही तो उनको ईसाई बनाया। लेकिन न तो उनको हबशियों की ख़्बान, न पुराने तमहून (सभ्यता) न रस्म रिवाज से इतनी बाक़फ़ियत थी कि वह उनको मसीही मज़हब का फ़लसफ़ा समझा सकते और न ही उनको इसकी ख़्यादा परबाह थी। मक़सद तो यह था कि जल्द से जल्द ख़्यादा से ख़्यादा हबशी अपने आप को ईसाई समझने लगें। खुनांचे जो अजब नलीजा नये और पुराने फ़लसफ़े की ढक्कर का निकला और जो रंग इस नई ब़ारनिश ने पुरानी लकड़ी पर चढ़ाया, उसका अन्दाज़ा हम इन गीतों से कर सकते हैं, जो आज भी अमरीका के हबशी अपनी सोख़ भरी आवाज़ में गाते हैं और जिनको कि 'निम्रो स्पीयुएल्स' कहा जाता है.

कुछ ऐसा ही असर हिन्दुस्तान के पुराने वाशिनदों (आर्थेतर) के दिमारा पर जरूर हुआ होगा जब कि फ़ारामरवा के मुसलमान होने की वजह से उन्होंने इस्लाम क़बूल किया. उनका मज़हब उनके वह रस्मों रिवाज थे जो कि फ़ितरत के क़ानूनों की मुनासबत से अख़्तियार किये गये थे और इस मज़हब का क़लसफ़ा समझने की उन्हें कभी जरूरत न पड़ी थी, क्योंकि वह तो नसलन बाद नसलन (पुस्त दूर पुस्त) से बनता और बदलता आया था और उनके रगों रेशों में पैबस्त था. लेकिन अब एक ग़ैर मुल्की क़ौम ने अपना क़लसफ़ा वहदत और रसालत का उनके सामने रखा, जिसको उन्होंने इस हद तक क़बूल तो जरूर किया कि मुसलमान कहलाने लगे. लेकिन हुआ वही कि पुराने पर नई क़लई चढ़ गई, यानी बजाय कृष्ण कन्हैया के बड़े पीर साहब, राम लछमन की जगह हसन हुसेन, सीता की जगह बीबी फ़ातमा हो गई. इस दौर की एक भलक हमें अल्लामियां के गीतों से मिलती है.

पूर्वाय हिन्दुस्तान में जब कोई खुरी की तक्ररीब होती है तो रतजगा होता है यानी औरतें रात भर जागती हैं, ढोलक बजाती और गाती हैं और गुलगुले पकाती है। सुबह होते होते गुलगुले लेकर मस्जिद आती हैं और ताक़ भरती हैं। मुसलमानों में दस्तूर है कि ऐसे मौकों पर पहले सात गीत अछा मियां के गाये जाते हैं, फिर सात सहर लड़के या भाई के और फिर तक्ररीब के मुनासिब जो गीत हो, मसलन सुहाग के या स्वयंवर के गीत।

انگریز مشنریوں نے جب افریقہ کے حبشیوں کو افسانیت
 ی تعلیم دینی چاہی تو ان کو عیسائی بنایا۔ لیکن نہ تو ان
 و حبشیوں کی زبان، نہ پرانے تمدن (سہیبتا) نہ رسم رواج سے
 تلی واقفیت تھی کہ وہ انکو مسیحی مذہب کا فلسفہ سمجھا
 سکے اور نہ ہی انکو اس کی زیادہ پرواہ تھی۔ مقصد تو یہ
 تھا کہ جلد سے جلد زیادہ سے زیادہ حبشی اپنے آپ کو عیسائی
 سمجھنے لگیں۔ چنانچہ جو عجب نتیجہ نئے اور پرانے فلسفہ
 کی فکر کا نکل اور جو رنگ اس نئی وارنہی نے پرانی لکڑی
 پر چڑھایا، اُس کا اندازہ ہم ان گیتوں سے کرسکتے ہیں، جو آج
 ہی امریکہ کے حبشی اپنی سوز بھری آواز میں گاتے ہیں اور
 جن کو کہ "نیگرو اسپیریچوایلس" کہا جاتا ہے۔

کچھ ایسا ہی اُتر ہندوستان کے پرانے باشندوں (آریہوں) کے
منافع پر ضرور ہوا ہوگا جب کہ نو مانروا کے مسلمان ہونے کی
وجہ سے اُنہوں نے اسلام قبول کیا۔ اُن کا مذہب اُن کے وہ
اسم و رواج تھے جو کہ فطرت کے قانونوں کی مناسبت سے اختیار
کئے گئے تھے اور اس مذہب کا فلسفہ سمجھنے کی اُنہیں کبھی
ضرورت نہ پڑی تھی، کیونکہ وہ تو نسلاً بعد نسل (پشت
در پشت) سے ملتا اور بدلتا آیا تھا اور اُن کے رنگوں ریشوں میں
بہوست تھا۔ لیکن اب ایک غیر ملکی قوم نے اپنا فلسفہ
وحدت اور رسالت کا اُن کے سامنے رکھا، جس کو اُنہوں نے اِس
حد تک قبول تو ضرور کیا کہ مسلمان کہلانے لگے۔ لیکن ہوا وہی
کہ پرانے پر نئی قلعی چڑھ گئی، یعنی بھائے کرشن کلہیا کے
بڑے پیڑ صاحب، رام لچھمن کی جگہ حسن حسین، سیتا کی
جگہ بی بی فاطمہ ہو گئیں۔ اِس دور کی ایک جھلک ہمیں
اللہ مہاں کے گیتوں سے ملتی ہے۔

یورپیہ ہندوستان میں جب کبھی خوشی کی تقریب ہوتی ہے، تو رتھکا ہوتا ہے، یعنی عورتیں رات بھر جاگتی ہیں، ڈھولک بجاتی اور گاتی ہیں اور گلے پکاتی ہیں۔ صبح ہوتے ہوتے گلے لہکر مسجد جاتی ہیں اور طاق بھرتی ہیں۔ مسلمانوں میں دستور ہے کہ ایسے موقعوں پر پہلے سات گیت اللہ مہلی کے گائے جاتے ہیں، پھر سات سہرے لڑکے یا بھائی کے اور پھر تقریب کے مناسب جو گیت ہو مثلاً سپاک کے یا سوئمیر کے گیت۔

مہینہ دین

مہینہ اچھا مینا کے گیتوں میں سے کچھ دیے جاتے ہیں—

اچھا مینا خوب بنی توہی شان.

سب مہینہ میں اچھا مہینہ اچھا،

وہ بھی مہینہ رمان.

سب کتاہن میں اچھا کتاہن اچھا،

وہ بھی کتاہن کوران.

سب جتہن میں اچھا جتہن اچھا،

وہ بھی جتہن آسماں.

سب بیہن میں اچھا بیہن اچھا،

وہ بھی بیہن فاتما.

سب پیرن میں اچھا پیر اچھا،

وہ بھی پیر بکے پیر.

اُپراٹ—اچھا مینا توہی شان، خوب بنی ہے. سب مہینوں میں ایک ہی مہینہ اچھا ہوتا ہے، وہ رمضان کا مہینہ ہوتا ہے اور سب کتاہن میں بڑھکر کتاہن قرآن ہے، اسی طرح ساری جتہن سے زیادہ عمدہ جتہن آسماں کی ہے. بیہنوں میں ایک ہی بیہن قابل تعریف ہے، وہ بیہن فاتمہ ہے. اور پیرن میں اگر کوئی ہے تو وہ بڑے پیر ہیں یعنی خواجہ معین الدین اچھری.

خوب بنی رہ اچھا توہی مہجہد،

خوب بنی رہ نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

کاہے بنی رہ اچھا توہی مہجہد،

کاہے بنا رہ نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

سوانے بنی رہ اچھا توہی مہجہد،

سوانے بنا رہ نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

کاہے بھارلے اچھا توہی مہجہد،

کاہے بھارلے نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

ہاروں بھارلے اچھا توہی مہجہد،

پلکوں بھارلے نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

کاہے بڈاؤں اچھا توہی مہجہد،

کاہے بڈاؤں نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

لڈھ بڈاؤں اچھا توہی مہجہد،

پے بڈاؤں نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

اُپراٹ—اچھا مینا توہی مہجہد، خوب بنی ہے اور یہ نبی توہا روجا بھی خوب بنا ہے. اچھا توہی مہجہد کس چیز کی بنی ہے اور یہ نبی توہا روجا کس چیز کا بنا ہے؟ سوانے کی تو مہجہد اچھا توہی ہے اور سوانے کا ہی روجا نبی کا ہے. اچھا میں توہی مہجہد میں کاہے سے سوارا ہے اور نبی کا روجا میں کاہے سے مڈاؤں؟ ہاروں سے اچھا میں توہی مہجہد مڈاؤں اور پلکوں سے نبی توہا روجا مڈاؤں. اور پیر بڈاؤں کیا میں توہی مہجہد اور روجا میں؟ لڈھ

نیچے اللہ مہاں کے گیتوں میں سے کچھ دیے جاتے ہیں—

اللہ مہاں خوب بنی توہی شان.

سب مہاں میں ایک مہینہ اللہ،

وہ بھی مہینہ رمضان.

سب کتاہن میں ایک کتاہن اللہ،

وہ بھی کتاہن قرآن.

سب جتہن میں ایک جتہن اللہ،

وہ بھی جتہن آسماں.

سب بیہن میں ایک بیہن ہی بی اللہ،

وہ بھی بی بی فاتمہ.

سب پیرن میں ایک پیر اللہ،

وہ بھی پیر بڑے پیر.

اُپراٹ—اللہ مہاں توہی شان خوب بنی ہے. سب مہینوں میں ایک ہی مہینہ اچھا ہوتا ہے، وہ رمضان کا مہینہ ہوتا ہے اور سب کتاہن میں بڑھکر کتاہن قرآن ہے، اسی طرح ساری جتہن سے زیادہ عمدہ جتہن آسماں کی ہے. بیہنوں میں ایک ہی بیہن قابل تعریف ہے، وہ بیہن فاتمہ ہے. اور پیرن میں اگر کوئی ہے تو وہ بڑے پیر ہیں یعنی خواجہ معین الدین اچھری.

خوب بنی رہ اللہ توہی مہجہد،

خوب بنی رہ نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

کاہے بنی رہ اللہ توہی مہجہد،

کاہے بنا رہ نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

سوانے بنی رہ اللہ توہی مہجہد،

سوانے بنا رہ نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

کاہے بھاروں اللہ توہی مہجہد،

کاہے بھاروں نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

ہاروں بھاروں اللہ توہی مہجہد،

پلکوں بھاروں نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

کاہے بڈاؤں اللہ توہی مہجہد،

کاہے بڈاؤں نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

لڈھ بڈاؤں اللہ توہی مہجہد،

پے بڈاؤں نبی توہا روجا—نبی توہا روجا.

اُپراٹ—اللہ مہاں توہی مہجہد، خوب بنی ہے اور یہ نبی توہا روجا بھی خوب بنا ہے. اللہ توہی مہجہد کس چیز کی بنی ہے اور یہ نبی توہا روجا کس چیز کا بنا ہے؟ سوانے کی تو مہجہد اللہ توہی ہے اور سوانے کا ہی روجا نبی کا ہے. اللہ میں توہی مہجہد میں کاہے سے سوارا ہے اور نبی کا روجا میں کاہے سے مڈاؤں؟ ہاروں سے اچھا میں توہی مہجہد مڈاؤں اور پلکوں سے نبی توہا روجا مڈاؤں. اور پیر بڈاؤں کیا میں توہی مہجہد اور روجا میں؟ لڈھ

تو میں اچھا تیری مسجد میں چڑھاؤں اور پتلا نہیں تیرے روئے
پر بڑھاؤں۔

و میں اللہ تیری مسجد میں چڑھاؤں اور پتلا نہیں تیرے روئے
پر چڑھاؤں۔

اچھا میاں کے کلسوں پہ برسات نور۔
کدھر سے اترتا سمندل کدوریا،
کدھر سے اترتا فूल—ہو.....
کدھر سے اترتا جاجم بیخوینا،
بٹھ گئے نبی رسول—ہو.....
اچھا میاں کے کلسوں پہ برسات نور۔
مکے سے اترتا سمندل کدوریا،
مدینہ سے اترتا فूल—ہو.....
کعبہ سے اترتا جاجم بیخوینا،
بٹھ گئے نبی رسول—ہو.....
کین نے جوتھاری سمندل کدوریا
کین نے جوتھارا فूल—ہو.....
کین نے جوتھارا جاجم بیخوینا
رٹھ گئے نبی رسول—ہو.....
مکھی جوتھاری سمندل کدوریا،
پھوٹا جوتھارا فूल—ہو.....
چیونٹی جوتھاری جاجم بیخوینا،
رٹھ گئے نبی رسول—ہو.....

اچھا میاں کے کلسوں پہ برسات نور۔

بہرہ—اچھا میاں کے کلسوں پر نور برساتا ہے۔
کدھر سے اترتا سمندل کا کدورا اور کدھر سے اترتا فूल؟
اور کدھر سے اترتا جاجم بیخوینا اترتا جس پر کین نبی
رسول بٹھے؟ مکے سے تو سمندل کا کدورا اترتا اور مدینہ
سے فूल اترتا اور کعبہ سے جاجم بیخوینا اترتا جس پر
نبی رسول بٹھے۔ سمندل کا کدورا کس نے جوتھا کیا اور
فूल اور جاجم بیخوینا کس نے جوتھا کیا کین نبی رسول
رٹھ گئے؟ مکھیوں نے سمندل کے کدورے کو اور پھوٹے نے
فول کو جوتھا کیا اور چیونٹی جاجم بیخوینا پر چڑھ گئی، اس لئے
نبی رسول رٹھ گئے۔

چلے آئیے بڑے پیر—مہجد میں۔
سوئے کی تھالی میں بھوجن پرہسا،
کھٹیو کھٹیو بڑے پیر—مہجد میں۔
چاندی کا گڑا گٹا جل پانی،
پیو پیو بڑے پیر—مہجد میں۔
چلے آئیے بڑے پیر—مہجد میں۔

بہرہ—بڑے پیر (خواجہ محمد الدین اجمیری) تم مسجد
میں چلے آنا۔ میں نے سوئے کی تھالی میں بھوجنا بھجھا
کھانا سجا دیا ہے، تم مسجد میں کھا لینا۔ چاندی کے برتن
میں میں نے گٹا جل پانی ہے، اے بڑے پیر تم آکر پی جانا۔

اللہ میاں کے کلسوں پہ برسات نور۔
کدھر سے اترتا سمندل کدوریا،
کدھر سے اترتا فूल—ہو.....
کدھر سے اترتا جاجم بیخوینا،
بٹھ گئے نبی رسول—ہو.....
اللہ میاں کے کلسوں پہ برسات نور۔
مکے سے اترتا سمندل کدوریا،
مدینہ سے اترتا فूल—ہو.....
کعبہ سے اترتا جاجم بیخوینا،
بٹھ گئے نبی رسول—ہو.....
کین نے جوتھاری سمندل کدوریا
کین نے جوتھارا فूल—ہو.....
کین نے جوتھارا جاجم بیخوینا
رٹھ گئے نبی رسول—ہو.....
مکھی جوتھاری سمندل کدوریا،
پھوٹا جوتھارا فूल—ہو.....
چیونٹی جوتھاری جاجم بیخوینا،
رٹھ گئے نبی رسول—ہو.....
اللہ میاں کے کلسوں پہ برسات نور۔

ارتھات—اللہ میاں کے کلسوں پر نور برساتا ہے۔ کدھر سے
اترنا سمندل کا کدورا اور کدھر سے اترتا فूल؟ اور کدھر سے
جوتھا اترتا جس پر کین نبی رسول بٹھے؟ مکے سے تو سمندل کا
کدورا اترتا اور مدینہ سے فूल اترتا اور کعبہ سے جاجم بیخوینا
اترنا جس پر نبی رسول بٹھے۔ سمندل کا کدورا کس نے جوتھا
کیا اور فूल اور جاجم بیخوینا کس نے جوتھا کیا کین نبی رسول
رٹھ گئے؟ مکھیوں نے سمندل کے کدورے کو اور پھوٹے نے فول کو
جوتھا کیا اور چیونٹی جاجم بیخوینا پر چڑھ گئی، اس لئے نبی
رسول رٹھ گئے۔

چلے آئیے بڑے پیر—مہجد میں۔
سوئے کی تھالی میں بھوجن پرہسا،
کھٹیو کھٹیو بڑے پیر—مہجد میں۔
چاندی کا گڑا گٹا جل پانی،
پیو پیو بڑے پیر—مہجد میں۔
چلے آئیے بڑے پیر—مہجد میں۔

ارتھات—بڑے پیر (خواجہ محمد الدین اجمیری) تم مسجد
میں چلے آنا۔ میں نے سوئے کی تھالی میں بھوجنا کھانا
سجا دیا ہے، تم مسجد میں کھا لینا۔ چاندی کے برتن میں
میں نے گٹا جل پانی ہے، اے بڑے پیر تم آکر پی جانا۔

کتابیں کتابیں

نوجوانوں پر کارنامے، احمد آباد کی کپی ہوئی ہے
جی کتاویں ہمارے سامنے ہیں :-

1. सर्वोदय, लेखक गान्धी जी, सके 244, मूल्य
रुपया 1.

2. Truth Is God (महात्मा गान्धी के लेखों
का संग्रह) सके. 168, मूल्य दो रुपया.

3. For Workers Against Untouchability,
(महात्मा गान्धी के लेखों का संग्रह) सके 34.
मूल्य आठ आना.

4. How To Serve The Cow (महात्मा
गान्धी के लेखों का संग्रह), सके 109, मूल्य सवा रुपया.

5. Nature Cure (महात्मा गान्धी के लेखों का
संग्रह), सके 68, मूल्य बारह आना.

6. A Discipline For Nonviolence,
लेखक रिचर्ड बी. ग्रेग, सके 32, मूल्य दस आना.

पहली किताब 'सर्वोदय' दो विभागों में बंटी हुई है.
पहले विभाग के सात भाग हैं, और दूसरे के पांच. पहले
विभाग में समय समय पर लिखी हुई सर्वोदय के बारे में
गान्धी जी की रायें और दूसरे विभाग में श्री राज गोपाला-
चारी, आचार्य विनोबा, श्री जे. सी. कुमारप्पा, श्री मशरू-
बासा और श्री धीरेन्द्र मजूमदार के सर्वोदय के सम्बन्ध
में विचार हैं.

स्वतंत्र भारत में कैसा समाज बनेगा, आज यह विचार
सब के सामने है. तरह तरह के बाव का लोग जिक्र करते
हैं. हम आज सरकार के मंत्रियों के चौराहे पर खड़े हैं. ऐसे
वास्तविक ब्रह्म में यह बेहद जरूरी है कि हम महात्मा गान्धी
के बताये हुए रास्ते पर संजीवनी से धीरे करें. इस लिहाज
से हमें समझदार आदमी को यह किताब पढ़नी चाहिये.

दूसरी किताब 'Truth is God' समय समय पर
गान्धी जी के लिखे हुए लेखों या विचारों का संग्रह है. राम
नाम पर गान्धी जी कि किताबी भ्रष्टा थी यह सबको मालूम
है. लेकिन उस राम नाम के साथ कैसे अपने को एक करना,
इसके पीछे गान्धी जी की 75 बरसों की साधना थी. ईश्वर

नो जीवन परकलन मन्दिर अहमदाबाद की जमीनी ची कताबों
हमारे सामने हों :-

1. 'सर्वोदय' लिखक गान्धी जी 'सफे 244' मूल
द्वैती रूपित .

2. Truth is God (महात्मा गान्धी के लिखों का
संग्रह) सफे 168, मूल दो रूपित .

3. For Workers Against Untouchability
(महात्मा गान्धी के लिखों का संग्रह) सफे 34, मूल आठ आने .

4. How To Serve The Cow (महात्मा गान्धी
के लिखों का संग्रह) सफे 109, मूल सवा रूपित .

5. Nature Cure (महात्मा गान्धी के लिखों का
संग्रह) सफे 68, मूल बारह आने .

6. A Discipline For Nonviolence
'लिखक रिचर्ड बी. ग्रेग' सफे 32, मूल दस आने .

पहली किताब 'सर्वोदय' दो विभागों में बंटी हुयी है .
पहले विभाग के सात भाग हैं, और दूसरे के पांच . पहले
विभाग में समय समय पर लिखी हुयी सर्वोदय के बारे में
गान्धी जी की रायें और दूसरे विभाग में श्री राज गोपाला-
चारी, आचार्य विनोबा, श्री जे. सी. कुमारप्पा, श्री मशरू-
बासा और श्री धीरेन्द्र मजूमदार के सर्वोदय के सम्बन्ध
में विचार हैं .

स्वतंत्र भारत में कैसा समाज बनेगा, आज यह विचार
सब के सामने है . तरह तरह के बाव का लोग जिक्र करते
हैं . हम आज सरकार के मंत्रियों के चौराहे पर खड़े हैं . ऐसे
वास्तविक ब्रह्म में यह बेहद जरूरी है कि हम महात्मा गान्धी
के बताये हुए रास्ते पर संजीवनी से धीरे करें . इस लिहाज
से हमें समझदार आदमी को यह किताब पढ़नी चाहिये .

दूसरी किताब 'Truth is God' समय समय पर
गान्धी जी के लिखे हुए लेखों या विचारों का संग्रह है . राम
नाम पर गान्धी जी कि किताबी भ्रष्टा थी यह सबको मालूम
है . लेकिन उस राम नाम के साथ कैसे अपने को एक करना,
इसके पीछे गान्धी जी की 75 बरसों की साधना थी . ईश्वर

اکتوبر ۱۹۵۵ء

ہماری رائے

بینوہا جی اور زمین کی ملکیت

آئی بینوہا باپے گاندھی جی کے جن نے گینے انویاایوں میں سے ہیں جو اپنی پوری سوت اور پوری شکتی کے ساتھ گاندھی جی کے سیدھاوتوں کو عمل میں لانے اور انہیں آگے بڑھانے میں اپنا سب کچھ ہونے میں ہیں۔ ہمارے دل میں ان کا بڑا اثر ہے۔ گاندھی جی کے اس طرح کے بہکتوں کا ہم انہیں سرتاج مانتے ہیں۔

بینوہا جی نے دیش کو کئی نئے شہد دیئے ہیں، جیسے بھومیدان، کھوپدان، جیونیدان، سمپتیدان، بھمیدان اور سب سے حال میں بھامیدان۔ پیکھلی 14 جولائی کو بڑیسا کے سونڈی بھامینی گاؤں میں بھامیدان کا بھتلاب اور اس سے لایم گاؤں کے لوگوں کو سمکھاتے ہوئے بینوہا جی نے ایک بڑا سونڈر بھاشن دیا۔ ان کے اس بھاشن کا سار لایم بھامی انہیں کے شہدوں میں ہم نے کچھ دیئے ہیں۔

”بھامیدان سے چار بڑے لایم ہیں۔ پہلا لایم بھامی لایم ہے۔ جب کوئی آدمی کسی زمین کو اپنی زمین نہیں سمجھتا اور لوگوں کی ساری زمین ایک اکائی سمجھی جائیگی، جو سب کی ایک برابر ملکیت ہوگی، تو اس سے زمین کی پیداوار یعنی لوگوں کی دولت بڑھے گی۔ سب لوگوں والے ملکر ملے کر سب کے کب کیا ہوگا اور اس میں سے کتنا بھر بھجوا جائے تب سب ملکر کھیتی کے طریقوں میں سدھار کر سکیں گے۔ ضرورت پڑے پر سرکار سے یا کسی باہر والے سے مدد لے سکتا آسان ہو جائیگا۔ لوگوں کا کوئی آدمی کس کا قرض دار نہ رہے گا۔ سب کو سکھ اور سنکھش ملے گا۔ یہ ایک آرتھک انقلاب ہوگا۔

”دوسرا بڑا لایم یہ ہوگا کہ جب سارے لوگوں کے لوگ ایک ملے جلے کھیت کی طرح رہنے لگیں گے تو آپس میں بڑھیکا۔ سارا لوگوں ایک سوڑگ کی طرح دکھائی دینے لگے گا۔ سب سب کے دھم سکھ میں شریک رہیں گے۔ اس سے سب کا سکھ بڑھے گا۔ یہ دوسرا لایم گرام دان کا کلچری لایم ہے۔

ونوبا جی اور زمین کی ملکیت

شہر ونوبا ہمارے گاندھی جی کے ان لے کلمہ انویاوتوں میں سے ہیں جو اپنی پوری سوجھ اور پوری شکتی کے ساتھ گاندھی جی کے سیدھاوتوں کو عمل میں لانے اور انہیں آگے بڑھانے میں اپنا سب کچھ ہونے میں ہیں۔ ہمارے دل میں ان کا بڑا اثر ہے۔ گاندھی جی کے اس طرح کے بہکتوں کا ہم انہیں سرتاج مانتے ہیں۔

ونوباجی نے دیہی کو کئی نئے شہد دیئے ہیں، جیسے ”گرام دان“، ”کوپ دان“، ”جھون دان“، ”سہتی دان“، ”شرم دان“ اور سب سے حال میں ”گرام دان“۔ پیکھلی 14 جولائی کو اڑیسہ کے سونڈی بھامینی گاؤں میں گرام دان کا مطلب اور اس سے لایم لوگوں کے لوگوں کو سمجھاتے ہوئے ونوبا جی نے ایک بڑا سونڈر بھاشن دیا۔ ان کے اس بھاشن کا سار لگ بھگ انہیں کے شہدوں میں ہم نے کچھ دیئے ہیں۔

”گرام دان سے چار بڑے لایم ہیں۔ پہلا لایم آرتھک لایم ہے۔ جب کوئی آدمی کسی زمین کو اپنی زمین نہیں سمجھتا اور لوگوں کی ساری زمین ایک اکائی سمجھی جائیگی، جو سب کی ایک برابر ملکیت ہوگی، تو اس سے زمین کی پیداوار یعنی لوگوں کی دولت بڑھے گی۔ سب لوگوں والے ملکر ملے کر سب کے کب کیا ہوگا اور اس میں سے کتنا بھر بھجوا جائے تب سب ملکر کھیتی کے طریقوں میں سدھار کر سکیں گے۔ ضرورت پڑے پر سرکار سے یا کسی باہر والے سے مدد لے سکتا آسان ہو جائیگا۔ لوگوں کا کوئی آدمی کس کا قرض دار نہ رہے گا۔ سب کو سکھ اور سنکھش ملے گا۔ یہ ایک آرتھک انقلاب ہوگا۔

”دوسرا بڑا لایم یہ ہوگا کہ جب سارے لوگوں کے لوگ ایک ملے جلے کھیت کی طرح رہنے لگیں گے تو آپس میں بڑھیکا۔ سارا لوگوں ایک سوڑگ کی طرح دکھائی دینے لگے گا۔ سب سب کے دھم سکھ میں شریک رہیں گے۔ اس سے سب کا سکھ بڑھے گا۔ یہ دوسرا لایم گرام دان کا کلچری لایم ہے۔

“سیکھتا تھا کہ وہ دیکھتا تھا کہ لوگوں کا آچار اونچا جاتا تھا۔ آپس
 جگہ، چوریوں اور دشمنیوں میں جاتے تھے۔ ہم اپنے گھروں کے
 در چوری نہیں کرتے۔ جب سارا گلوں ایک گھر میں جاتا
 گلوں میں بھی کوئی چوری نہیں کرتا۔ ہمارا آچار اس لئے
 ہے کہ اگر ہم چھوٹے چھوٹے سواروں میں پھنس گئے ہیں۔ آج
 ک ڈاکٹر ہیں، جس کا دھرم یہ ہے کہ کسی بھی روٹی کے روگ
 سن کر اس کے پاس دوڑ کر پہنچے، علاج کرنے سے پہلے روٹی
 اپنا ہتھوڑا کھولنے کے لئے کھتا ہے۔ اسی سے ہمارے سب کے دل تنگ
 گئے ہیں۔ دنیا کے سب جھگڑوں کی یہی چیز ہے۔ جب زمین
 دھن دولت پر سے لوگوں کی الگ الگ ملکیت جانی
 گی تو ہمارا آچار ضروری طور پر اونچا ہو جائے گا۔ یہی گرام
 ن کا سب سے بڑا لاپہ ہے۔ جس دن یہ ہو جائے گا اس دن دنیا
 وحشی سے ناپاکہ لگے گی۔ آج ہم دیکھی اس لئے ہوں کہ
 بارے الگ الگ سواروں کو کراتے رہتے ہیں۔ اسی سے دنیا میں
 سا بڑھ رہی ہے۔ اگر گلوں کی زمین اور گلوں کی سب سمیٹی
 رہے گلوں کی زمین اور سارے گلوں کی سمیٹی ہو جاوے تو
 ہمارا آچار سچ میچ آؤں گا۔ یہ لاپہ گرام دان کا
 ایک لاپہ ہے۔

“چوتھا لاپہ گرام دان کا آدھانک یعنی روحانی لاپہ ہے۔
 سب ہم ’میرا گھر‘، ’میری زمین‘ اور ’میرا پیسہ‘ اس طرح کی
 نہیں کرتے ہوں تو ہم میں ان چیزوں سے موہ پیدا ہوتا ہے۔
 جب آدمی اس ’میں‘ اور ’میرے‘ سے آزاد ہو جائے گا اور
 سمیٹے گا کہ سب چیزیں سب کے فائدے اور سب کے استعمال
 لئے ہوں، کوئی میری الگ چیز نہیں ہے تو آدمی نجات
 نزدیک پہنچ جائے گا۔ آج اس ’میں‘ اور ’میرے‘ نے ہی
 میں دنیا میں باندھ رکھا ہے۔ یہی ہماری مکتی میں سب
 بڑی رکاوٹ ہے۔ ہمیں یہ ماننا چاہئے کہ سارا گلوں ہمارا
 رہے اور جس گھر میں ہم رہ رہے ہیں، وہ بھی سب کا ہے۔
 نئی پالنے کا پرانا ڈھنگ جس میں آدمی سب چیزیں
 جنگل میں جا بیٹھتا تھا وہ بھی غلط ڈھنگ ہے۔ ہمیں یہ
 میں سوچنا چاہئے کہ نہ کوئی میرا اور نہ میں کسی کا۔ اس
 خلاف ہمیں یہ سوچنا چاہئے کہ سب میرے اور میں سب
 مکتی کا یہی راستہ ہے۔ کوئی دوسرا راستہ نہیں۔ اس لئے
 میں یہی سمجھنا چاہئے کہ ہمارے پاس جو کچھ ہے یہاں
 ک کہ ہمارا اپنا آپا بھی وہ سارے گلوں کی ملکیت ہے اور
 ہمارا گلوں ہمارا ہے۔ گرام دان کا یہ ایک بہت بڑا لاپہ ہے۔“

انہیں یاد ہے ایک بار ہم ایک بیڈوان مسلمان بھائی سے
بہت دھرم کے بارے میں بات چیت کر رہے تھے۔ بات کرتے کرتے
جب ایشور اور ایشور پوجا پر مہاتما بدھ کے ابدیشوں کا ذکر
آئے تو ہمارے مسلمان مترجم نے پوچھا ”یہ بھی کوئی مذہب ہو
سکتا ہے؟“ چنانچہ ایشور اور شانتی سے بات کرنے کے بعد انہوں
نے محسوس کیا کہ بدھ دھرم اور اسلام میں بہت بڑی مماثلت
ہے اور دونوں ایک ہی سکھ کے دو رخ ہیں، بلکہ ایک ہی
حقیقت کے دو روپ۔ ہم نہیں کہہ سکتے کوئی مسجددار
کمونسٹ ونوجاچی کے لین وچاروں کو پڑھکر کیا سوچتا ہوگا۔
ایک بڑے درجہ تک جو شکل ونوجاچی نے گرام دان کی
کھینچی ہے وہی شکل کمونزم کی ہے۔ فرق یہی ہے۔ کسی ایک
درخت کے کوئی دو پتے ایک رنگ کے نہیں ہوتے۔ فرق دیکھنے
والے کے لئے سب جگہ فرق کئی ملتے ہیں۔ ایکٹا دیکھنے والے کے
لئے ایکٹا کی کمی نہیں ہے۔ ہمارا یہ وشواس دن دن مضبوط
ہوتا جا رہا ہے کہ جسے آج اچھے سے اچھے معنی میں اندھیانترواد
یا اہنسواو یا گاندھی واد کہا جاتا ہے، اس کے اور جسے کمونزم
کہا جاتا ہے اس کے، ان دونوں کے سچے میل میں ہی اس
دیش اور دنیا کا بہلا ہے۔

16-7-55

—سندرلال

—سندرلال

16.7.55

شری بی. جی. کھیر اور سرکار

ایک دوسرے لیکھ میں ہم ”بمبئی کا ایک دکھ بھرا
نظارہ“ سرنام سے ایک لیکھ دے چکے ہیں۔ اس میں ہم نے
بمبئی کے اندر کچھ غریبوں کی بستیوں کی حالت اور شری
بی. جی. کھیر اور ان کے ساتھیوں کی تھک سیواؤں کی چرچا
کی ہے۔ اس سلسلہ میں ایک خاص سوال سرکار کے کروتیہ
اور اس کے سہوگ کا پیدا ہوتا ہے۔ ہم اس لیکھ میں لکھ چکے
ہیں کہ ہالا صاحب کو سرکار سے بہت ادھک آشنائی نہیں
ہیں۔ وہ جہاں تک ہوسکے غیر سرکاری یعنی جنا کی مدد سے
اپنے بھروسے پر کھڑا ہونا چاہتے ہیں۔ اس کے کئی صاف کارن
ہیں۔ ہم سرکار کی کھلائی کو بھی تھوڑا بہت سمجھ سکتے ہیں۔
انگریزی راج کی جگہ ہندوستانی راج ہم نے قائم کر لیا۔ پر نیچے
سے اوپر تک ہمارا سارا حکومت کا ڈھانچہ لگ بھگ وہی ہے
جو انگریزوں کے سہم میں تھا۔ اگر کچھ باتوں میں آجکل کا
ڈھانچہ پہلے سے اچھا ہے تو کئی میں پہلے سے بھی بدتر ہے۔
آرتھک معاملوں میں وہ لوگ جن کے ہاتھوں میں دیس کے
شاسن کی ہاکتور ہے، دیس سے بے کاری، پرورکاری، بیکسری
اور بیک ملنگین کو ملال اپنا فرض ضرور سمجھتے ہیں پر

اگست '55

(118)

اگست '55

وہنا ضروری فرض نہیں سمجھتا جتنا کل دیہی کی مجموعی پیداوار اور مجموعی دولت کو بڑھانا، چاہے وہ پیداوار پر نہیں چاکر ہی ہم اور وہ دولت کسی کے ہاتھوں میں بھی جمع ہو جائے۔ اس آرتھک سنکٹ میں گھریلو دھندوں کے لئے کوئی جگہ نہیں ہے، سوائے اُس درجے تک کہ جس درجے تک ہمارے ٹاسک اپنی راج کچی ضرورتوں کے لئے یا کھانے کی نگاہ سے انہیں بند رکھنا ضروری سمجھیں۔ اُن کی رائے میں گھریلو دھندے اگر ملوں کی پیداوار سے مقابلہ کی فکر نہیں لے سکتے، اور ظاہر ہے کہ وہ نہیں لے سکتے، تو وہ مٹ جائیں۔ لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں کی بے کاری اور بے روزگاری انہیں اتنا ادھک نہیں ستاتی۔ اسی لئے سات برس کی آزادی کے بعد بھی ملک کے اندر بے گروں کی تعداد اور غریبوں کی غریبی بڑھتی جا رہی ہے۔ یہ آرتھک ویسٹا نے کمپوسٹ ویسٹا ہے اور نہ گاندھی وادی ویسٹا ہے۔ یہ ہے پولیجی وادی اور سامراج وادی ویسٹا۔ ظاہر ہے کہ ہمارے آجکل کے شاکسوں کے سامنے اُس معاملے میں آدرش نہ روس ہے نہ چین اور نہ گاندھی جی کا آدرش دیہی۔ اُن کے سامنے آدرش ہیں امریکہ اور انگلینڈ۔ اسی لئے ہم بغیر اِس ہلت کی فکر کرتے کہ ہمارے سب جواہروں اور ہتھیاروں کو کام ملے، اِس فکر میں رہتے ہیں کہ اپنی ملوں سے کم سے کم مزدوروں کی مدد سے ادھک سے ادھک کھڑا ہتھیار ایران، عراق، ملایا اور دوسرے پچھڑے ہوئے دیہیوں میں بھیج کر اُن دیہیوں سے ادھک سے ادھک دھن کما سکیں۔ اسی لئے ہم اپنی یوجناؤں میں دیہی کے رہے سپہ ہتھیاروں کو بھی آزاد کاری کر دینے دے کر دھیرے دھیرے پہلے چھوٹے کارخانوں کے مالکوں کے اور پھر بڑے کارخانوں کے مالکوں کے روزیہ پانے والے مزدور بنا دینا چاہتے ہیں۔ خاص کر کپڑے کے دھندے کے بارے میں سرکاری یوجناؤں کا یہ پہلو بالکل صاف ہے۔

پنڈت جواہر لال نہرو بہت سچے، صاف اور ایماندار آدمی ہیں۔ دنیا جانتی ہے کہ انٹر راشیہ معاملوں میں انہوں نے دیہی کو کتنا اُونچا بڑھایا ہے۔ پر اِن معاملوں میں اُن کے وچار بالکل صاف ہیں۔ اگر اخباروں کی رپورٹیں سچ ہیں تو ایک ہزار مدراس کی کسی تقریر میں انہوں نے کہا تھا کہ دیہی کی پیداوار اور دولت کو بڑھانے کے لئے گھریلو دستکاریوں اور دستکاروں کی قربانی ایک ضروری چیز ہے۔ کہا جاتا ہے کہ الہ آباد میں کانگریسی کام کرنے والوں کے سامنے بولتے ہوئے انہوں نے اِس سے بھی ادھک صاف شہدوں میں قریب قریب یہ کہا تھا کہ میں چاہوں تو بے کاری آج مٹا سکتا ہوں۔ سب ملوں بند کر دوں تو بے کاری اپنے آپ بند ہو جائیگی، پر لوگوں کے جیوں کا اسٹر ایکسٹم نیچے چلا جاوے گا جو میں نہیں چاہتا۔

وہنا ضروری فرض نہیں سمجھتا جتنا کل دیہی کی مجموعی پیداوار اور مجموعی دولت کو بڑھانا، چاہے وہ پیداوار پر نہیں چاکر ہی ہم اور وہ دولت کسی کے ہاتھوں میں بھی جمع ہو جائے۔ اس آرتھک سنکٹ میں گھریلو دھندوں کے لئے کوئی جگہ نہیں ہے، سوائے اُس درجے تک کہ جس درجے تک ہمارے ٹاسک اپنی راج کچی ضرورتوں کے لئے یا کھانے کی نگاہ سے انہیں بند رکھنا ضروری سمجھیں۔ اُن کی رائے میں گھریلو دھندے اگر ملوں کی پیداوار سے مقابلہ کی فکر نہیں لے سکتے، اور ظاہر ہے کہ وہ نہیں لے سکتے، تو وہ مٹ جائیں۔ لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں کی بے کاری اور بے روزگاری انہیں اتنا ادھک نہیں ستاتی۔ اسی لئے سات برس کی آزادی کے بعد بھی ملک کے اندر بے گروں کی تعداد اور غریبوں کی غریبی بڑھتی جا رہی ہے۔ یہ آرتھک ویسٹا نے کمپوسٹ ویسٹا ہے اور نہ گاندھی وادی ویسٹا ہے۔ یہ ہے پولیجی وادی اور سامراج وادی ویسٹا۔ ظاہر ہے کہ ہمارے آجکل کے شاکسوں کے سامنے اُس معاملے میں آدرش نہ روس ہے نہ چین اور نہ گاندھی جی کا آدرش دیہی۔ اُن کے سامنے آدرش ہیں امریکہ اور انگلینڈ۔ اسی لئے ہم بغیر اِس ہلت کی فکر کرتے کہ ہمارے سب جواہروں اور ہتھیاروں کو کام ملے، اِس فکر میں رہتے ہیں کہ اپنی ملوں سے کم سے کم مزدوروں کی مدد سے ادھک سے ادھک کھڑا ہتھیار ایران، عراق، ملایا اور دوسرے پچھڑے ہوئے دیہیوں میں بھیج کر اُن دیہیوں سے ادھک سے ادھک دھن کما سکیں۔ اسی لئے ہم اپنی یوجناؤں میں دیہی کے رہے سپہ ہتھیاروں کو بھی آزاد کاری کر دینے دے کر دھیرے دھیرے پہلے چھوٹے کارخانوں کے مالکوں کے اور پھر بڑے کارخانوں کے مالکوں کے روزیہ پانے والے مزدور بنا دینا چاہتے ہیں۔ خاص کر کپڑے کے دھندے کے بارے میں سرکاری یوجناؤں کا یہ پہلو بالکل صاف ہے۔

پنڈت جواہر لال نہرو بہت سچے، صاف اور ایماندار آدمی ہیں۔ دنیا جانتی ہے کہ انٹر راشیہ معاملوں میں انہوں نے دیہی کو کتنا اُونچا بڑھایا ہے۔ پر اِن معاملوں میں اُن کے وچار بالکل صاف ہیں۔ اگر اخباروں کی رپورٹیں سچ ہیں تو ایک ہزار مدراس کی کسی تقریر میں انہوں نے کہا تھا کہ دیہی کی پیداوار اور دولت کو بڑھانے کے لئے گھریلو دستکاریوں اور دستکاروں کی قربانی ایک ضروری چیز ہے۔ کہا جاتا ہے کہ الہ آباد میں کانگریسی کام کرنے والوں کے سامنے بولتے ہوئے انہوں نے اِس سے بھی ادھک صاف شہدوں میں قریب قریب یہ کہا تھا کہ میں چاہوں تو بے کاری آج مٹا سکتا ہوں۔ سب ملوں بند کر دوں تو بے کاری اپنے آپ بند ہو جائیگی، پر لوگوں کے جیوں کا اسٹر ایکسٹم نیچے چلا جاوے گا جو میں نہیں چاہتا۔

”ہسپتالیں ہمارے آجکل کے شاسک جس طرح بھی ہو سکے آباہی کو بٹانے کی بھی فیکر میں رہتے ہیں۔ ہسپتالیں بچوں کی پیدائش کو روکنے کا سائنسی سامان باہر کے دیشوں سے، پری جنرل لائسنس میں آنے کی اجازت ہے اور سرکاری ہسپتالوں میں پیدائش کو روکنے کے طریقوں کی تعلیم دی جاتی ہے۔

ہم ان سارے بچاروں کو غلط اور جنتا کے لئے برباد کن مانتے ہیں۔ چین نے اپنی طرح سے ایک ملے جلے راستے پر چل کر اپنے سارے گھریلو دھندوں کو زندہ رکھ لیا اور دو سال کے اندر اندر اس طرح کا انتظام کر لیا کہ ایک چینی مرد یا عورت بھی بیکار نہ رہ سکے۔ ہمارے یہاں سات سال کے بعد بھی بیکاری بڑھتی جا رہی ہے۔ انہوں نے دو سال کے اندر دیش میں ایک بھی بیک مانگا نہ دیا۔ ہمارے یہاں بیک مانگنے والوں کی تعداد ہر شہر میں بڑھ رہی ہے۔ اگر ہم اس معاملے میں گاندھی جی کے بتائے ہوئے راستے پر چلے ہوتے تو ہمیں چین یا کسی دوسرے دیش کی طرف دیکھنے کی بھی ضرورت نہیں تھی۔ پر ہمیں نہ اس راستہ پر وشواس تھا اور نہ ہے۔

آئی بی۔ جی۔ خیر اپنے ستر ہزار پریشربالیوں کے ذریعہ دیش کو جس طرف لے جانا چاہتے ہیں وہ ٹھیک گاندھی جی کا بتایا ہوا راستہ ہے۔ ہمیں وشواس ہے کہ وہی راستہ اس دیش کے لئے بیکاری اور بیکسنگمن کو مٹانے اور جنتا کی خوشحالی کا راستہ ہے۔ اگر دیش کی جنتا اور جنتا کے سرورک اے سچے سچے ہاتھ میں لے لیں اور اس پر لگ جائیں تو ہم اپنی سرکار کی ساری کمی کو پورا کر سکیں گے۔ پر کلم آسان نہیں ہے۔ لاکھوں کے اس میں کھپ جانے کی ضرورت ہے۔ دیش کے لئے دوسرا راستہ بھی نہیں ہے۔ آج یا کل ہمیں اس راستہ پر چلنا ہی ہوگا۔

اب اگر ہم بمبئی سرکار کی طرف نگاہ ڈالیں تو ان سب گھنٹوں کے ہوتے ہوئے بھی ہمیں کچھ ادھک امید ہو سکتی ہے۔ بمبئی کے چیف منسٹر شری مرار جی پھائی دیسائی دیش کے لئے سے آچھے سچے اور ایماندار شاسکوں میں سے ہیں۔ وہ گاندھی جی کے بھی کافی بھکت ہیں۔ شری بی۔ جی۔ کھیر میں اور ان میں بہت بڑا پریم ہے۔ پفڈت جواہر لال نہرو کے دل میں بھی شری بی۔ جی۔ کھیر کا کافی آدر ہے۔ اس لئے ہم اٹا کرتے ہیں کہ بھارت سرکار اور بمبئی سرکار دونوں اپنی حدوں کے اندر شری بی۔ جی۔ کھیر کو ان کی فیکر کشش میں جہاں تک ہو سکے گا جی کھول کر مدد دینگے۔

بھارت کے بچے اور بی۔ سی۔ جی۔
کاٹیکہ

اسن سے پہلے کے ایک سمادنی فوت میں ہم بی.سی.جی۔
کے ٹیکے کے بارے میں اپنے وچار پرکٹ کر چکے ہوں ۔

اُس کے بعد بھارت کی سواستہ وزیر راج کماری امرت کور ایک بیان نکلا کہ انہیں اِس میں کوئی شک نہیں کہ ۔ سی ۔ جی ۔ دیس اور دیس کے بچوں کے لئے ایک مٹا ہی لاء دانک چیز ہے اور سرکار اپنے بی ۔ سی ۔ جی ۔ پرچار کو جاری رکھے گی ۔ شری راجا گوپالا چاری کے وردہ چرچا کرتے ہوئے راج کماری امرت کور نے کہا کہ راجا جی اِس نامے کو نہیں سمجھتے اور خواہ مخواہ دخل دیتے ہیں ۔ راج کماری رت کور نے اُن بچوں اور اُن کے ماتا پتا پر دیا پورٹ کی ۔ شری راجا گوپالا چاری کے ہوائے میں آکر بی ۔ سی ۔ جی ۔ ہسی پورٹ کے خلاف آواز اُٹھا رہے ہیں ۔

اِس کے بعد نیویارک 'امریکہ' سے یہ خبر اخباروں میں چھپی ہے
یو۔ این۔ او۔ کے دفتر سے معلوم ہوا کہ سن 1955 کے
ہر تک بھارت میں چھ کروڑ ساٹھ لاکھ بچوں کے تپنق کے
انٹی ٹیکہ لگائے جانے لگے اور دو کروڑ پندرہ لاکھ بچوں کے
سی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے لگائے جانے لگے۔

یہ آزمائشی ٹیکہ آج سے چالیس سال پہلے ہمارے ہی
اچکا ہے۔ ٹیکہ لگالے کے دو تین دن بعد اگر وہ جگہ
ی بہت پھپھد اُڑے تو سمجھا جاتا ہے کہ جس کے ٹیکہ
لے اُس میں تپدق کا اثر نہیں ہے اور اگر نہ پھپھد اُڑے
سمجھا جاتا ہے کہ جسم کے اندر کچھ نہ کچھ تپدق کا اثر
جس انگریز ڈاکٹر لے ہمارے یہ آزمائشی ٹیکہ لگایا تھا اُس
ہم سے خود کہا تھا کہ اِس ٹیکہ کا کوئی اثر کوئی خاص
نہیں رکھتا اور جو نریجے نکالے جاتے ہیں وہ دعویٰ کے
مستحکم ٹیکے نہیں کہہ جاسکتے۔

یو۔ این۔ او۔ کی کمیٹی نے سفارش کی تھی کہ ان سب ہاور اُن کے ساتھ کے ضروری سامان کو امریکہ سے بھارت پہنچانے کے لئے اور اسکے لئے کہ بھارت سرکار سن 1966 اور سن 1967 بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکوں کا پروگرام جاری رکھ سکے۔ بن۔ او۔ کی طرف سے اُنہی اسی ہاور ڈالز کی بھارت سرکار دے دی جاوے۔ اِس مدد کے ملنے پر بھارت سرکار کو اُنہی 1967 کے اُنٹ تک بھارت کے بارہ کروڑ ساٹھ لاکھ کے آزمائشی ٹیکے لگا چکے تھے اور اُن ماہ سے جن بچوں پر تپدق کے اثر کا شک ہوئے اُن سب کے بی۔ سی۔ جی۔ کے لگا چکے تھے۔

سن 1955 کے باقیہر تک دیند سرکار اس کام کے لیے کس بھی لاکھ ڈالر خرچ کرےگی، اور اس لاکھ ڈالر سن 1956 میں اور اس لاکھ سن 1957 میں خرچ کرےگی۔

کہا جاتا ہے کہ یو۔ این۔ او۔ کی کمیٹی اب تک اس کام کے لیے ساڑھے گیارہ لاکھ ڈالر دے چکی ہے۔

بھارت سرکار کا اراادہ ہے کہ وہ اس کام کو خوب بڑے پیمانے پر چلاوے اور دیش کی تندرستی کو ٹیکہ رکھنے کے لیے اسے ایک مستکمل پروگرام بنا لے تاکہ بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے بھارت کے بچوں کو ہمیشہ لگتے رہیں۔

اس کام میں لگے ہوئے ڈاکٹروں اور دوسرے لوگوں کو تنخواہوں کے ابالاوا بڑے بڑے ہتے دیے جآئیں گے اور یو۔ این۔ او۔ کی طرف سے انعام بھی ملینگے۔

اس بھی بھی راجا گوبالاچاری کے سمرنن میں اسکاہاروں کے اندر بچوں کے ماتا پتا اور سرپرستوں کے کئی خط بھی نکل چکے ہیں، جن میں لکھا ہے کہ ان کے اپنے بچوں کو بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے سے کیا کیا نقصان پہونچے۔ کچھ خط ایسے ڈاکٹروں کے بھی ہیں جنہوں نے ڈاکٹری اور سائنسی طریقے سے بھت کرکے یہ ثابت کرلے کی کوشش کی ہے کہ بی۔ سی۔ او۔ کا ٹیکہ سچ مچ کتا برا اور ہائیکر ہے۔ ایسے ڈاکٹروں کے بھی خط ہیں جنہوں نے لکھا ہے کہ بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے کے کارن وہ خود اپنے پھارے بچوں کی جان سے ہاتھ دھو بیٹھے۔ ظاہر ہے اس سے بھارت میں اس طرح کے ماں باپ جو ایسے معاملوں میں اپنی آواز اخباروں تک پہونچا سکیں ایک کام میں ایک بھی نہیں ہوسکتے۔ گاؤں گاؤں اور گلی گلی کھوم کر کوئی اس طرح کے خط جمع کرنا چاہے تو ہوسکتا ہے کہ انہیں ہی ایسے خط جمع ہوسکیں۔

پر سرکار کے بھی اپنے ڈاکٹر ہیں اور اپنے بڑے بڑے ماہر اور شہسکہ ہیں! سرکار اس بات کی تحقیقات بھی کرتی رہتی ہے اور آنکڑے جمع کرتی رہتی ہے کہ اصلیت میں کسی بچے کو بی۔ سی۔ او۔ سے کوئی نقصان پہونچا یا نہیں اور کتنوں کو فایدا پہونچا اور پہونچ رہا ہے۔ سرکار کے پتا لگانے والے سرکار کو بتاتے ہیں کہ کسی بچے کو بی۔ سی۔ او۔ سے ن نقصان پہونچا ہے اور ن پہونچ سکتا ہے۔ ابھر بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے کے باء کسی کی آئس فٹ گئی تو اسکا کارن آئس کی کوئی اور بیماری بھی جیسکا بی۔ سی۔ او۔ سے کوئی سمبندھ نہیں اور اگر کوئی بچہ مر گیا تو مرنے کے بھی بہت سے کارن ہو سکتے ہیں!

اس طرح کی تحقیقاتیں اور اس طرح کے آنکڑوں کے بارے میں ہمیں سچ مچ دنیا کی سرکاروں پر دیا آئی ہے۔

سن 1955 کے آخر تک ہلد سرکار اس کام کے لئے کل بیس لاکھ ڈالر خرچ کرچکی اور اس لاکھ ڈالر سن 1956 میں اور اس لاکھ سن 1957 میں خرچ کرچکی۔

کہا جاتا ہے کہ یو۔ این۔ او۔ کی کمیٹی اب تک اس کام کے لئے ساڑھے گیارہ لاکھ ڈالر دے چکی ہے۔

بھارت سرکار کا اراادہ ہے کہ وہ اس کام کو خوب بڑے پیمانے پر چلاوے اور دیہی کی تندرستی کو ٹیکہ رکھنے کے لئے اسے ایک مستکمل پروگرام بنا لے تاکہ بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے بھارت کے بچوں کو ہمیشہ لگتے رہیں۔

اس کام میں لگے ہوئے ڈاکٹروں اور دوسرے لوگوں کو تنخواہوں کے علاوہ بڑے بڑے ہتے دیے جائیں گے اور یو۔ این۔ او۔ کی طرف سے انعام بھی ملینگے۔

اس بیچ شری راجا گوبالا چاری کے سمرنن میں اخباروں کے اندر بچوں کے ماتا پتا اور سرپرستوں کے کئی خط بھی نکل چکے ہیں، جن میں لکھا ہے کہ ان کے اپنے بچوں کو بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے سے کیا کیا نقصان پہونچے۔ کچھ خط ایسے ڈاکٹروں کے بھی ہیں جنہوں نے ڈاکٹری اور سائنسی طریقے سے بھت کرکے یہ ثابت کرلے کی کوشش کی ہے کہ بی۔ سی۔ او۔ کا ٹیکہ سچ مچ کتا برا اور ہائیکر ہے۔ ایسے ڈاکٹروں کے بھی خط ہیں جنہوں نے لکھا ہے کہ بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے کے کارن وہ خود اپنے پھارے بچوں کی جان سے ہاتھ دھو بیٹھے۔ ظاہر ہے اس سے بھارت میں اس طرح کے ماں باپ جو ایسے معاملوں میں اپنی آواز اخباروں تک پہونچا سکیں ایک کام میں ایک بھی نہیں ہوسکتے۔ گاؤں گاؤں اور گلی گلی کھوم کر کوئی اس طرح کے خط جمع کرنا چاہے تو ہوسکتا ہے کہ انہیں ہی ایسے خط جمع ہوسکیں۔

پر سرکار کے بھی اپنے ڈاکٹر ہیں اور اپنے بڑے بڑے ماہر اور شہسکہ ہیں! سرکار اس بات کی تحقیقات بھی کرتی رہتی ہے اور آنکڑے جمع کرتی رہتی ہے کہ اصلیت میں کسی بچے کو بی۔ سی۔ او۔ سے کوئی نقصان پہونچا یا نہیں اور کتنوں کو فائدہ پہونچا اور پہونچ رہا ہے۔ سرکار کے پتے لگانے والے سرکار کو بتاتے ہیں کہ کسی بچے کو بی۔ سی۔ او۔ سے نہ نقصان پہونچا ہے اور نہ پہونچ سکتا ہے۔ اگر بی۔ سی۔ او۔ کے ٹیکے کے بعد کسی کی آئس فٹ گئی تو اس کا کارن آئس کی کوئی اور بیماری بھی جس کا بی۔ سی۔ او۔ سے کوئی سمبندھ نہیں اور اگر کوئی بچہ مر گیا تو مرنے کے بھی بہت سے کارن ہو سکتے ہیں!

اس طرح کی تحقیقاتیں اور اس طرح کے آنکڑوں کے بارے میں ہمیں سچ مچ دنیا کی سرکاروں پر دیا آئی ہے۔

بھ بےباری بےبص ہوئی ہے۔ انکے نیپٹھ کیے گئے سبھی اور آٹھویں جماعت کرنے والے آٹھویں پر اپنی سوج کے بڑی نئیجے نکالنے لگے ہیں اور اسی طرح کے آٹھویں جماعت کر دیتے ہیں جو بھ سمجھتے ہیں کہ انکے نیپٹھ کرنے والے بڑھتے ہیں اور آٹھ کر سارا ہوں گے۔ آٹھ کر کسی کوئی دوسری جماعت یا اس طرح کا سبھی نکالنے میں آٹھ کی جیسے سرکار کی من چاہی بات نہ کہی تو اسکی راج کے خلیفہ راج دینے والے دس کر دے ہو جاتے ہیں اور پہلی رائے "جلتا کے ہٹ کے لئے" آٹھ سے چپ ہاتھ کسی آٹھ میں بند کر دی جاتی ہے۔

اس کا تجربہ بھارت واسطوں کو بہت پرانا اور نئی ہے۔ مے خود سن 1908 کے اور دوسرے "دس سالوں میں آٹھ" نے آٹھ لوگوں کو تڑاڑا بھوک سے مرنے دیکھا ہے اور سرکاری بوٹوں میں ان کی موت کا کارن عام طور پر پیچھے یا بھار راج ہوتا تھا۔ اور سب سے عجیب بات یہ ہے کہ اکثر یہ بھی ہے کہ وہ بھی دونوں ہی باتیں ٹھیک ہوتی تھیں۔ جس کسی کی موت کا کوئی خاص کارن نہ پتہ چلے یا نہ بتانا منظور ہو ہے آٹھ سے کہا جا سکتا ہے کہ "ہارٹ فیل" ہونے سے مر گیا۔ آٹھ بھی سچ "ہارٹ فیل" ہونے سے مر بھی سکتا ہے!

اس طرح کے معاملوں میں سرکار کو اور خاص کر سرکار نے اوپر کے آدمیوں کو جیسے راج کماری امرت کر پے تصور ماننے لیں۔ ہمیں اس میں کوئی شک نہیں کہ ان کی نیت اچھی ہے۔ پر وہ اپنے آٹھ کی نفس اور خود اپنے سے لاپرواہ ہیں۔ ہم آج بھی بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے کو دیکھیں اور دیکھیں کہ بچوں کے لئے ایک شاپ اور ایک لائٹ مانتے ہیں۔ پشچیمیتا "نہی پشچیمیتا" کے جس روگ سے گاندھی جی اس دیکھیں کو بچانا چاہتے تھے وہ ظاہر ہے اس سب سے پورے زور پر ہے اور خالص کر ان دیکھیں بھگتوں میں جن کے ہاتھوں میں بدقسمتی سے اس سے دیکھیں کے شاسن کی باگ ہے۔ دیکھیں کے کروڑوں بچوں پر یہ گندے اور زہریلے تجربے تو ہونگے ہی" سب سے ادھک نہ اس ہمت کا ہے کہ ان کروڑوں بچوں میں بہت بڑی تعداد دیہیوں اور گلوں والوں کے ان بچوں کی ہے جنہیں پوڈٹ اور بھگت کا کھانا بھی نہیں ملتا۔ پر دنیا شاید تجربوں سے ہی سیکھتی ہے۔ انسانی جسموں سے زہر کو نکالنے کے طریقہ ہی میں ہی۔ ہم نراش نہیں ہیں۔ ہماری آٹھ کا ادھار دیکھیں کی وہ کروڑوں جنتا ہے جو ابھی تک اس اندھی پشچیمیتا کے لئے ادھک اثر میں نہیں ہے اور جسے کسی تحقیقات کے لئے خود اپنی گلیوں، اپنے گلوں اور اپنے نجی آٹھوں سے دور جانا نہیں پڑتا۔ جنتا کی سیدھی سادی سوج ہم پڑھے لکھوں کی لڑھی گڑھانی عقل سے انہیں کہیں اچھا اور ٹھیک راستہ نہکاتی ہے۔

ہم اپنے اپنے ملک کا راج کہتے ہیں۔ ابھی ہم اس آدرش سے کافی دور ہیں۔ بھارت کے رہے سہے دن دور ہونگے اور بھارت اسی دن باہر کی ٹاپ سے نہیں اپنے اندر کی چمک سے چمکے گا جس دن ہم سچ سچ اس آدرش تک پہنچے گا۔

28-7-55

— سندرلال

ایک آدرش گورنر

حال میں کلکتہ کے دورے میں ہمیں پچھمی بنگال کے گورنر ڈاکٹر ایچ. سی. مکرجی سے ملنے کا سہاگہ پڑا تھا۔ ان سے ملکر ہمیں بڑی خوشی ہوئی۔ ڈاکٹر ایچ. سی. مکرجی کی عمر اس سے لگ بھگ اسی برس کی ہے۔ ان کا رہن مہین اور لباس حد درجہ کا سادہ ہے۔ ان کے طرز اور لباس سے یہ معلوم نہیں ہوتا کہ وہ بھارت کی گلیوں اور گلوں میں پھرنے والے عام لوگوں سے کسی طرح کوئی الگ انسان ہیں۔ باتیں کرتے ہوئے ہمارا دھیان اس بات کی طرف گیا کہ گورنر ایچ. سی. مکرجی اپنی پانچ ہزار کی تنخواہ میں سے کھول پانچ سو روپیہ اپنے اور اپنے پریوار کے خرچ کے لئے رکھ کر باقی ساڑھے چار ہزار روپیہ ہر مہینے ایک ٹرسٹ کے حوالے کر دیتے ہیں اس لئے کہ اُسے غریب و دیار بھائیوں کی تعلیم آدمی پر خرچ کیا جاوے۔ ہم ڈاکٹر مکرجی کو یہ یاد دلانے بنا نہ رہ سکے کہ راشٹر پتا مہاتما گاندھی نے سونپتے بھارت کے منسٹروں اور گورنروں کے سامنے خطیفہ عمر کا آدرش پیش کیا تھا۔ گاندھی جی نے کہا تھا کہ ہمارے دیہی کے منسٹر اور گورنر کم سے کم تنخواہیں لیں اور خطیفہ عمر کا سا سادہ جیون بنائیں تاکہ ان میں اور چنتا میں گہرا سمبندھ بنا رہے۔ اس پر ڈاکٹر مکرجی نے خطیفہ عمر کے جیون کی کچھ گھٹائیاں ہم سے جانتا چلیں۔ ہم نے انہیں کئی گھٹائیاں سنائیں۔ یہاں ہم انہیں دھوانا نہیں چاہتے۔ ڈاکٹر مکرجی سنکر بہت خوش ہوئے۔ ہم نے ان سے یہ بھی کہا کہ جہاں تک ہمیں معلوم ہے اگر بھارت بھر میں آج کوئی گورنر گاندھی جی کے بنائے ہوئے اس آدرش کے نکت پہنچتا ہے تو ڈاکٹر مکرجی، ڈاکٹر مکرجی نے اس پر بڑا ستوش پڑا تھا۔

ان کی اس سادگی کی بابت ایک چھوٹی سی گھٹنا ہم نے اور سنی۔ دلی سرکار کے ایک بہت بڑے سجن نے اپنے کلکتہ کے دورے کے سہ گورنر مکرجی کے رہن میں کو دیکھ کر ان سے کہا کہ اگر آپ تھوڑا سا اور خرچ اپنے اوپر گوارا کریں تو آپ ذرا اچھی طرح رہ سکیں گے۔ گورنر مکرجی نے بڑا سندر جواب دیا۔ انہوں نے کہا کہ—”میں دیہی کا اصلی حاکم نہیں ہوں“

سندرلال

28.7.55

ایک آدرش گورنر

حال میں کلکتہ کے دورے میں ہمیں پچھمی بنگال کے گورنر ڈاکٹر ایچ. سی. مکرجی سے ملنے کا سہاگہ پڑا تھا۔ ان سے ملکر ہمیں بڑی خوشی ہوئی۔ ڈاکٹر ایچ. سی. مکرجی کی عمر اس سے لگ بھگ اسی برس کی ہے۔ ان کا رہن مہین اور لباس حد درجہ کا سادہ ہے۔ ان کے طرز اور لباس سے یہ معلوم نہیں ہوتا کہ وہ بھارت کی گلیوں اور گلوں میں پھرنے والے عام لوگوں سے کسی طرح کوئی الگ انسان ہیں۔ باتیں کرتے ہوئے ہمارا دھیان اس بات کی طرف گیا کہ گورنر ایچ. سی. مکرجی اپنی پانچ ہزار کی تنخواہ میں سے کھول پانچ سو روپیہ اپنے اور اپنے پریوار کے خرچ کے لئے رکھ کر باقی ساڑھے چار ہزار روپیہ ہر مہینے ایک ٹرسٹ کے حوالے کر دیتے ہیں اس لئے کہ اُسے غریب و دیار بھائیوں کی تعلیم آدمی پر خرچ کیا جاوے۔ ہم ڈاکٹر مکرجی کو یہ یاد دلانے بنا نہ رہ سکے کہ راشٹر پتا مہاتما گاندھی نے سونپتے بھارت کے منسٹروں اور گورنروں کے سامنے خطیفہ عمر کا آدرش پیش کیا تھا۔ گاندھی جی نے کہا تھا کہ ہمارے دیہی کے منسٹر اور گورنر کم سے کم تنخواہیں لیں اور خطیفہ عمر کا سا سادہ جیون بنائیں تاکہ ان میں اور چنتا میں گہرا سمبندھ بنا رہے۔ اس پر ڈاکٹر مکرجی نے خطیفہ عمر کے جیون کی کچھ گھٹائیاں ہم سے جانتا چلیں۔ ہم نے انہیں کئی گھٹائیاں سنائیں۔ یہاں ہم انہیں دھوانا نہیں چاہتے۔ ڈاکٹر مکرجی سنکر بہت خوش ہوئے۔ ہم نے ان سے یہ بھی کہا کہ جہاں تک ہمیں معلوم ہے اگر بھارت بھر میں آج کوئی گورنر گاندھی جی کے بنائے ہوئے اس آدرش کے نکت پہنچتا ہے تو ڈاکٹر مکرجی، ڈاکٹر مکرجی نے اس پر بڑا ستوش پڑا تھا۔

ان کی اس سادگی کی بابت ایک چھوٹی سی گھٹنا ہم نے اور سنی۔ دلی سرکار کے ایک بہت بڑے سجن نے اپنے کلکتہ کے دورے کے سہ گورنر مکرجی کے رہن میں کو دیکھ کر ان سے کہا کہ اگر آپ تھوڑا سا اور خرچ اپنے اوپر گوارا کریں تو آپ ذرا اچھی طرح رہ سکیں گے۔ گورنر مکرجی نے بڑا سندر جواب دیا۔ انہوں نے کہا کہ—”میں دیہی کا اصلی حاکم نہیں ہوں“

بھارتی حکیم آباد ہیں۔ اگر کل کسی کان سے میری کوئی بات آپ کو پسند نہ آئی اور آپ نے مجھے الگ کر دیا تو میرے کمرے کے آگے آئے خرچ ہونگے۔ آگے آئے کی رکھا ملنا کہ میں اس میں اپنی پتلی بہت شہر کے اپنے پرانے مکان میں چلا جاؤنگا۔ مجھے کوئی بھی کشف نہ ہوا۔ پر میری میں نے اپنے رہن سہن کو بدل لیا اور اپنے اوپر ادھک خرچ کرنا شروع کر دیا تو مجھے گورنری چھوڑنے پر تکلیف ہوئی۔ اس لئے میرے لئے یہی سادہ جہیز آچکا ہے۔“

ڈاکٹر مکر جی ایسائی ہیں۔ ہمیں وہ سچم سچے ایسائی ملائے ہوئے۔ ہم بوجے سے دھوکے کے ساتھ یہ کہہ رہے تھے کہ اگر سواتلر بھارت کے دوسرے گورنر اور منسٹر بھی انہی جی کی بات مان کر ڈاکٹر مکر جی کی مثال پر عمل کر کے ہوتے تو دہلی کی دشا آج کچھ اور ہی ہوتی!

24. 6. 55

—سندھ لال

انہی و شواس کا انوتھ

جائے کے پاس ترانا جانے والی سڑک پر ٹھکرا ل گئے ہیں۔ ہوائی مہینے کے آخری دنوں میں، جو گھٹنا ہوئی وہ ہونکا دینے والی ہے۔ ہمارے دیہی کی غریب جھٹا کو دھرم کے ام پر کس ہوی طرح بھکا جاسکتا ہے، اس کا ایک تارہ نمونہ اس گھٹنا سے ہمارے سامنے ایک بار پھر آگیا۔ ویسے تو ایسی چھوٹی رہتی گھٹناں عام طور پر ہوتی رہتی ہیں، پرنٹو اس گھٹنا نے سب کو مات کر دیا ہے۔ اس دن نئی دلی میں بھی ایک ہانک گھٹنا ہوگئی۔ مدن لال نام کے ایک کلرک کو کسی بیوتھی نے یہ کم دیا کہ 28 جون کو اس کی موت ہو جائیگی۔ اس کی موت کے بعد اس کے پرہوار کو بہت مصیبت ہائی پڑی۔ اپنی موت اور اپنے پرہوار والوں کی مصیبت کا خیال اس کے دماغ میں کچھ ایسا گھر کر گیا کہ اس نے اپنے مصوم 8 سال، 6 سال، اور 9 مہینے کے تین بچوں کو اور اپنی مری کو اپنے ہاتھوں سے موت کے گھاٹ اتار کر سویم ریل کی دی پر جا کر اپنی جان دے دی اور بیوتھی کی بیوتھی دانی بہت سا حصہ خود پورا کر ڈالا۔ بہت سال نہیں ہوئے ہیں، سب چمٹکروں پر وشواس رکھنے والے، ہمارے دیہی کے ہزاروں لک، جن میں اچھے پڑھے لکھوں کی سبھی بھی کچھ کم نہ ہیں، انکے (آپسے) کی اور ہانکے چلے گئے تھے۔ کھول اس کے دھن گولا پرہوار کا ایک چھوٹا سا لڑکا دوائی کے نام پر ہی پیر کی چھال کا کچھ تیار دیتا تھا، جس سے سبھی رج کی بیماریاں دور ہو جاتی تھیں! انہی و شواس کے اس

اصلی حاکم آپ ہیں۔ اگر کل کسی کان سے میری کوئی بات آپ کو پسند نہ آئی اور آپ نے مجھے الگ کر دیا تو میرے کمرے کے آگے آئے خرچ ہونگے۔ آگے آئے کی رکھا ملنا کہ میں اس میں اپنی پتلی بہت شہر کے اپنے پرانے مکان میں چلا جاؤنگا۔ مجھے کوئی بھی کشف نہ ہوا۔ پر میری میں نے اپنے رہن سہن کو بدل لیا اور اپنے اوپر ادھک خرچ کرنا شروع کر دیا تو مجھے گورنری چھوڑنے پر تکلیف ہوئی۔ اس لئے میرے لئے یہی سادہ جہیز آچکا ہے۔“

ڈاکٹر مکر جی ایسائی ہیں۔ ہمیں وہ سچم سچے ایسائی ملائے ہوئے۔ ہم بوجے سے دھوکے کے ساتھ یہ کہہ رہے تھے کہ اگر سواتلر بھارت کے دوسرے گورنر اور منسٹر بھی انہی جی کی بات مان کر ڈاکٹر مکر جی کی مثال پر عمل کر کے ہوتے تو دہلی کی دشا آج کچھ اور ہی ہوتی!

—سندھ لال

24. 6. 55

انہی و شواس کا انوتھ

جائے کے پاس ترانا جانے والی سڑک پر ٹھکرا ل گئے ہیں۔ ہوائی مہینے کے آخری دنوں میں، جو گھٹنا ہوئی وہ ہونکا دینے والی ہے۔ ہمارے دیہی کی غریب جھٹا کو دھرم کے ام پر کس ہوی طرح بھکا جاسکتا ہے، اس کا ایک تارہ نمونہ اس گھٹنا سے ہمارے سامنے ایک بار پھر آگیا۔ ویسے تو ایسی چھوٹی رہتی گھٹناں عام طور پر ہوتی رہتی ہیں، پرنٹو اس گھٹنا نے سب کو مات کر دیا ہے۔ اس دن نئی دلی میں بھی ایک ہانک گھٹنا ہوگئی۔ مدن لال نام کے ایک کلرک کو کسی بیوتھی نے یہ کم دیا کہ 28 جون کو اس کی موت ہو جائیگی۔ اس کی موت کے بعد اس کے پرہوار کو بہت مصیبت ہائی پڑی۔ اپنی موت اور اپنے پرہوار والوں کی مصیبت کا خیال اس کے دماغ میں کچھ ایسا گھر کر گیا کہ اس نے اپنے مصوم 8 سال، 6 سال، اور 9 مہینے کے تین بچوں کو اور اپنی مری کو اپنے ہاتھوں سے موت کے گھاٹ اتار کر سویم ریل کی دی پر جا کر اپنی جان دے دی اور بیوتھی کی بیوتھی دانی بہت سا حصہ خود پورا کر ڈالا۔ بہت سال نہیں ہوئے ہیں، سب چمٹکروں پر وشواس رکھنے والے، ہمارے دیہی کے ہزاروں لک، جن میں اچھے پڑھے لکھوں کی سبھی بھی کچھ کم نہ ہیں، انکے (آپسے) کی اور ہانکے چلے گئے تھے۔ کھول اس کے دھن گولا پرہوار کا ایک چھوٹا سا لڑکا دوائی کے نام پر ہی پیر کی چھال کا کچھ تیار دیتا تھا، جس سے سبھی رج کی بیماریاں دور ہو جاتی تھیں! انہی و شواس کے اس

بھنکر میں لوگ پاگل سے بن کر اٹھ کھڑے تھے۔ کسی کو یہ سوچا کہ فرصت ہی نہیں تھی کہ اہلیت کیا ہے۔ پھر دھنسان کی طرح دھڑکی کے چاروں اور سے ہزاروں لاکھوں استری پر ہی وہاں پہنچ گئے۔ مرکز کی ساری سوچاؤں اور دیکھنے کو لوگوں نے چھوٹا ٹھہرا دیا اور ان پر کچھ ہی اثر نہیں ہوا۔ لاکھوں روپیہ برباد ہوا اور جو مصیبتیں اُنہائی گئیں، ان کا تو کہنا ہی کیا۔ اُس چھوٹے سے استھان میں ہزاروں لوگوں کے کھائے پئے اور ٹھہر لے کا کوئی انتظام نہ تھا اور نہ ہو سکتا تھا۔

دھڑکی کی جس حادثہ کا ہم یہاں چرچا کرنا چاہتے ہیں، وہ تھوڑے میں یہ ہے کہ گیندکنور ہائی نام کی ایک استری کو یہ سہلا آیا کہ 28 جولائی کو اس کے پتی کی موت ہو جائیگی اور اس کے ساتھ سنی ہو جائیگی۔ حالانکہ وہ استری ایسا کوئی سہلا دیکھنے سے بھی انکار کرتی ہے۔ پر اُس سہلا کا جو قصہ چاروں اور پھیلا، اُس کا نتیجہ یہ ہوا کہ نکرا ل میں اُس سنی کے درشنوں کے لئے لاکھوں استری پر ہی جمع ہو گئے۔ کہتے ہیں کہ مہرا، گوالہر، جہانسی، لکھنؤ اور بمبئی تک سے لوگ وہاں گئے۔ پولس کی اور سے پتی پتی دونوں کے زندہ ہونے کی خبروں کا اعلان کرنے پر بھی لوگوں کا اُس پاس سے چاروں اور سے وہاں جانا جاری رہا۔ گیندکنور کا پتی سدھ ناتھ اندور کے اسپتال میں اپنی بیماری کا علاج کروا رہا تھا اور گیندکنور وہاں اُس کی سیوا کے لئے گئی ہوئی تھی۔ کلوں میں اُن کی اس فہر حضری کا مطلب یہ لگایا گیا کہ سدھ ناتھ کے مرنے پر گیندکنور ہائی سنی ہو چکی ہے اور اس ”دھارمک“ گھنٹا کو لوگوں سے چھپا دیا گیا ہے۔ اُن دونوں کو جنتا کے سامنے پیش کرنے کی جو مانگ کی گئی، اُس کا پورا کرسکنا ممکن نہ ہونے سے سنی ہونے کی لڑائی کی کھینا کو اور بھی ادھک ہل مل گیا۔ پھر، وہاں موجود دو ناگ سادھوؤں نے، جن کی بات کو اندھ وشواسی جنتا آج بھی ہمارے دیہی میں وید واکھ کی طرح سچ مانتی ہے، لوگوں کی اُس کھینا کو اتنا ادھک بھڑکا دیا کہ وہ پولس کی بات کو سچ ماننے کی بجائے، اُسی پر حملہ کر بیٹھے اور پولس والوں کو اپلی جان بچانا مشکل ہو گیا۔ ڈیڑ گھنٹے چھوڑنے اور لڑائی چلنے کا بھی جب کوئی نتیجہ نہ نکلا تب گولی چلانے کی نوبت آگئی۔ کہتے ہیں کہ 18 منٹ تک گولی چلی۔ حالانکہ چھ آدمیوں کے مرنے کی بات سنیکار کی گئی ہے، پر اُن کی سنگھیا کہیں ادھک ہونے کا شک کیا جاتا ہے۔

گھنٹا کا دوسرا پہلو اور بھی ادھک بھڑاک ہے۔ قانون سے سنی پرنتا کو بند ہونے قریب دھوڑ سو سال بیت جانے پر بھی اُس کا اندھ وشواس لوگوں کے دل اور دماغ پر ابھی تک چھایا ہوا ہے۔ یہ پرانی پرنتا ہے کہ

چکر میں لوگ پاگل سے بن کر اٹھ کھڑے تھے۔ کسی کو یہ سوچا کہ فرصت ہی نہیں تھی کہ اہلیت کیا ہے۔ پھر دھنسان کی طرح دھڑکی کے چاروں اور سے ہزاروں لاکھوں استری پر ہی وہاں پہنچ گئے۔ مرکز کی ساری سوچاؤں اور دیکھنے کو لوگوں نے چھوٹا ٹھہرا دیا اور ان پر کچھ ہی اثر نہیں ہوا۔ لاکھوں روپیہ برباد ہوا اور جو مصیبتیں اُنہائی گئیں، ان کا تو کہنا ہی کیا۔ اُس چھوٹے سے استھان میں ہزاروں لوگوں کے کھائے پئے اور ٹھہر لے کا کوئی انتظام نہ تھا اور نہ ہو سکتا تھا۔

نکرا ل کی جس گھنٹا کا ہم یہاں چرچا کرنا چاہتے ہیں، وہ تھوڑے میں یہ ہے کہ گیندکنور ہائی نام کی ایک استری کو یہ سہلا آیا کہ 28 جولائی کو اُس کے پتی کی موت ہو جائیگی اور اُس کے ساتھ سنی ہو جائیگی۔ حالانکہ وہ استری ایسا کوئی سہلا دیکھنے سے بھی انکار کرتی ہے۔ پر اُس سہلا کا جو قصہ چاروں اور پھیلا، اُس کا نتیجہ یہ ہوا کہ نکرا ل میں اُس سنی کے درشنوں کے لئے لاکھوں استری پر ہی جمع ہو گئے۔ کہتے ہیں کہ مہرا، گوالہر، جہانسی، لکھنؤ اور بمبئی تک سے لوگ وہاں گئے۔ پولس کی اور سے پتی پتی دونوں کے زندہ ہونے کی خبروں کا اعلان کرنے پر بھی لوگوں کا اُس پاس سے چاروں اور سے وہاں جانا جاری رہا۔ گیندکنور کا پتی سدھ ناتھ اندور کے اسپتال میں اپنی بیماری کا علاج کروا رہا تھا اور گیندکنور وہاں اُس کی سیوا کے لئے گئی ہوئی تھی۔ کلوں میں اُن کی اس فہر حضری کا مطلب یہ لگایا گیا کہ سدھ ناتھ کے مرنے پر گیندکنور ہائی سنی ہو چکی ہے اور اس ”دھارمک“ گھنٹا کو لوگوں سے چھپا دیا گیا ہے۔ اُن دونوں کو جنتا کے سامنے پیش کرنے کی جو مانگ کی گئی، اُس کا پورا کرسکنا ممکن نہ ہونے سے سنی ہونے کی لڑائی کی کھینا کو اور بھی ادھک ہل مل گیا۔ پھر، وہاں موجود دو ناگ سادھوؤں نے، جن کی بات کو اندھ وشواسی جنتا آج بھی ہمارے دیہی میں وید واکھ کی طرح سچ مانتی ہے، لوگوں کی اُس کھینا کو اتنا ادھک بھڑکا دیا کہ وہ پولس کی بات کو سچ ماننے کی بجائے، اُسی پر حملہ کر بیٹھے اور پولس والوں کو اپلی جان بچانا مشکل ہو گیا۔ ڈیڑ گھنٹے چھوڑنے اور لڑائی چلنے کا بھی جب کوئی نتیجہ نہ نکلا تب گولی چلانے کی نوبت آگئی۔ کہتے ہیں کہ 18 منٹ تک گولی چلی۔ حالانکہ چھ آدمیوں کے مرنے کی بات سنیکار کی گئی ہے، پر اُن کی سنگھیا کہیں ادھک ہونے کا شک کیا جاتا ہے۔

گھنٹا کا دوسرا پہلو اور بھی ادھک بھڑاک ہے۔ قانون سے سنی پرنتا کو بند ہونے قریب دھوڑ سو سال بیت جانے پر بھی اُس کا اندھ وشواس لوگوں کے دل اور دماغ پر ابھی تک چھایا ہوا ہے۔ یہ پرانی پرنتا ہے کہ

ساری کے نام پر ایک چبوترا بنا کر مندر کی طرح سے اس کی پوجا کی جاتی ہے۔ گھنٹہ کلور ہائی کے زندہ ہونے پر بھی اس کا چبوترا بنا دیا گیا اور چبوترے پر چڑھاوا چڑھنا ہی شروع ہو گیا۔ انہیں دیکھا حال لکھنے والے نے لکھا ہے کہ وہاں اتنا چڑھاوا چڑھا کہ 70-80 ہزار روپیہ کے تو نوٹ جمع کر کے بار دوست کہیں چھپت ہوئے اور ان نوٹوں کے علاوہ جو نقدی وہاں جمع ہوئی اس کا وزن کئی من تک پہنچ گیا۔ رنگ برنگ کپڑوں کا بھی وہاں ایک بڑا تھیر لگ گیا۔ نوٹ لہکر چھپت ہو جانے والوں کی پولس کھج کر رہی ہے اور 'دھرماتار' بنے ہوئے ناگا ساہو پولس کی حراست میں لے لئے گئے ہیں۔ کچھ سماچار پتروں میں یہ بھی پوکشت کیا گیا ہے کہ جن سنگھ والوں نے جلتا کی دھارمک بھاونائوں کو ابھارتے ہیں کچھ بھی اُنہا نہیں رکھا۔ جن سنگھ کے ادھیکاریوں نے اس کا پرہواد کیا ہے۔

جن سنگھ انہو ایسی ہی کسی دوسری سنسٹھا کا اس گھنٹا کے پیچھے ہاتھ ہو یا نہ ہو، اتنا تو صاف ہے کہ ان دھارمک آندھ وشواسوں اور چبوترے دھرموں کی وجہ سے ہی یہ ساری گھنٹا ہوئی، جن پر سامورداہیک سنسٹھانوں پھلتی پھولتی اور پلتی ہیں۔ بھولی بھالی جلتا کے دھارمک آندھ وشواسوں کو بھڑکا کر کتنا اثرتہ کیا جا سکتا ہے، اس کا ایک نمونہ یہ ساری گھنٹائیں ہیں۔

کچھ ہی ورش پہلے شاید 1950 میں اسی سے ملتی جلتی ایک گھنٹا گوالیر میں ہوئی تھی۔ تب مدھہ بھارت راج کی ودھان سبھا تک میں یہ منظور کیا گیا تھا کہ اس موقع پر پولس کے افسروں اور دوسرے ادھیکاریوں نے اپنے کرتوبہ کا پالن پوری تہورتا اور اہمائیاری سے نہیں کیا تھا۔ کارن یہ تھا کہ پولس والے اور دوسرے سرکاری ادھیکاری بھی جلتا کی صلوح آندھ وشواس میں پھنسے ہوئے تھے۔ آخر وہ بھی تو ان لوگوں میں سے ہی ہیں، جن کے دل اور دماغ پر یہ اور ایسے آندھ وشواس پوری طرح چھانے ہوئے ہیں۔ اسس یہ دیکھ کر ہوتا ہے کہ ہمارے کانگریسی وزیر بھی ان سے اپنا پلند نہیں چھڑا سکے ہیں۔ ہمارے بہت سے وزیر اب بھی جھوٹشیوں کے چکر میں پھنسے ہوئے ہیں اور وہ بات بات میں ان سے مہورت نکلاتے دھتے ہیں۔ انکی بھوشیہ وانہوں پر بھی اُنکا ویسا ہی وشواس ہے جیسا کہ عام جلتا کا۔ ہمارے خیال میں ایسی گھنٹائوں کے ہولے پر کوئی سخت قدم اس لئے نہیں اُٹھایا جا سکتا کہ اس قدم کو اُنہانے کی ذمہداری جن لوگوں پر ہوتی ہے، ان کے دل اور دماغ اپنے کرتوبہ کے پرتی صاف نہیں اور وہ اپنے کرتوبہ سے اپنے آندھوشواس کو ترجیح دے جاتے ہیں۔ اس لئے اُن گھنٹائوں کو روکنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ پہلے وہ لوگ اپنا دل اور دماغ صاف کریں جن پر شاسن کی ذمہداری ہے، نہیں تو ہماری

حالتِ اندھ نہتوں کے اندھ اتوائی کی سی ہوئے
 بنا نہ رہی۔ کمرال کی اس گھٹنا پر پولس کی
 کاررواہی کی لپٹا پوتی کر دینا ہی لگی نہیں ہے، اس
 کی جڑ میں جاگے لوگوں کے دلوں اور دماغوں کو بھی
 بدلنے کی کوشش کی جانی چاہئے۔ دھرم جھوٹا آدمیر، مایا
 جال اور اندھ وشواس دور کئے بنا اس اور سے اترتوں کو روکا
 نہیں جاسکتا۔

15 .8 .55

گوا کی آزادی کا سوال

1 اگست سن 1955 کو جب کہ ایک اور ہندستان میں آزادی کے دن کی خوشیاں منائی جا رہی تھیں نہتے ستیاگرہوں کے جتے یکے بعد دیگرے گو آء امن اور دیو میں نرنگا نشان لئے ہونے داخل ہو رہے تھے۔ 16 اگست کی رات کو ریڈیو نے ہمیں اطلاع دی کہ اہنسک اور نہتے ستیاگرہوں پر پرتگالی سینکوں نے گواہاں چلائیں اور یہ بھی اطلاع دی کہ 28 ستیاگرہی گولیاں کھانے بلہدان ہوئے اور 44 ستیاگرہی گولیوں سے گھائل ہوکر لیدم اسپتال میں پڑے ہوئے ہیں۔ گھیلوں میں عورتیں اور بچے بھی ہیں۔

اس دردناک خبر کو پڑھ کر ہر ہندوستانی کے خون میں جوش اُٹھ بلا نہ رہیگا۔ نہتے ستیاگرہیوں پر گولیاں چلائنا اس سے زیادہ ظالمانہ چیز اور کیا ہوسکتی ہے۔ ایک طرف چین کی حکومت ہے جس نے امریکی اُڑانوں کو جنہوں نے چین کی سرحد کے اندر قدم رکھا، گرفتار کرلیا اور دوسری طرف، بنگال کی سامراجواہی سرکار ستیاگرہیوں پر گولی چلانے میں بھیمان متکسوس کرتی ہے۔ اپنے ہمسک دشمنوں کے ساتھ بھی کوئی ایسا بسلوک نہیں کریگا جیسا پورنگال کی سرکار نہتے اہل واپسوں کے ساتھ کر رہی ہے۔

انہاس نے اُس منحوس دن کے واقعہ کو درج کیا ہے جب 22 مئی سن 1498ء کو ملبار کے کنارے پرتگال کے رہنے والے وائسکونڈیگاما کا جہاز کالیکت کے پاس آکر ٹھہرا۔ اُس سمہ کا کالیکت کا راجہ زمرن تھا۔ وائسکونڈیگاما نے دو زانو ہو کر زمرن کی خدمت میں اپنے راجہ کی عرض پیش کی اور اُس سے یہ پڑتھنا کی کہ وہ انھیں اپنے راج میں رہنے اور دیپار کرنے کی جازت دیدے۔

سن 1500ء میں پرتگالیوں نے اپنے واپار کے لئے کالیٹ میں ایک کوٹھی بنائی۔ 3 سال بعد پھرن کی اجازت سے اس کی قلعہ بندی کوئی اور ایک پرتگالی افسر الہورک کو اس کا قلعہ دار مقرر کیا۔

گولکھ نے کینارے کینارے صخر کی طرف بڑھ کر سن 1506ء میں گوالیار پر قبضہ کر لیا۔ ہوتے ہوئے سن 1510ء میں پرتگالیوں کا کالیکٹ کے راجا کے ساتھ جنگ ہو گیا جس میں پرتگالیوں نے کالیکٹ کے راجہ کو آگ لگادی اور شہر کو لوٹ لیا۔ سیکر 12 سال پہلے ان پر دہلیوں پر مہربانی کرنے کا ہوا۔ زمون کو یہ پہل 8ء اس کے بعد برابر پرتگالی اپنی حکومت بڑھاتے رہے اور سو سو سال کے اندر وہ ملک کو چون لگا دیو، گوالیار، بمبئی کے تاپو اور لیگاتیم کے مالک بن گئے۔

پرتگالیوں کی اس সময় کی تیز رفتاری کی دو باتیں اس دور پر جاننے کاہل ہیں—ایک یہ کہ ان لوگوں کے کچھ جہاز بھارت کے پچھلی اور پوری کنارے پر برابر گزرتے رہے اور کسی ہی بھارتیہ جہاز کو پاس سے نکلتے ہوئے دیکھ کر اُسے پکڑ کر لوٹ لیتے تھے۔ کبھی کبھی موقتہ پاور یہ کنارے کی آبادیوں پر بھی دھاوا بول دیتے تھے، انہیں لوٹ لیتے تھے اور موقتہ پاور وہاں کے جوان مرد اور عورتوں کو غلام بناد کر پکڑ لے جاتے تھے اور یورپ کے بازاروں میں بیچتے تھے۔ دوسرے یہ لوگ افریقہ اور دوسرے ملکوں سے اپنے جہازوں میں غلام بھر کر لاتے تھے اور بھارت کے بازاروں میں انہیں بیچتے تھے۔

بھارت کے جن حصوں پر پرتگالیوں کا قبضہ ہو گیا تھا وہاں کی جنگ کے ساتھ شروع دن سے ہی ان لوگوں کا ہرگز بے حد ظالمانہ تھا۔ یہ لوگ اکثر قسم کے عیسائی تھے اور جنگ کو زبردستی عیسائی بنا لینا وہ اپنا مذہبی فرض سمجھتے تھے۔ گوالیار میں انہوں نے اپنی غیر عیسائی پر جا کو پکڑ کر اور انہیں لادھب کہہ مار ڈالنے اور زندہ جلا دینے کے لئے ایک عدالت قائم کر رکھی تھی جسے 'انکوئیشن' کہتے تھے۔ اس لئے آج تک گوالیار کی زیادہ تر آبادی عیسائی ہے۔ اپنی ہندوستانی رعایا کی بہتری کے لئے پرتگالیوں نے کبھی کوئی قدم نہیں اٹھایا۔

سترہویں صدی کے شروع میں پرتگالیوں کی تجارت بنگال کی اور پھیلنے لگی۔ حالانکہ وہاں ان کی حکومت قائم نہیں ہوئی، لیکن وہاں بھی وہی لوٹ مار، وہی زیادتیاں، وہی غلام اور باندیوں کا دیوار چل پڑا۔ شاہجہاں اس وقت دلی کے تخت پر تھا۔ اس کے کانوں تک پرتگالیوں کی شکایت پہنچی۔ اس نے فوراً ایک فوجی دستہ بھیجا۔ پرتگالی ہرا دئے گئے۔ ان کی ہتھیاری کوٹھیاں گرا دی گئیں۔ ان کے جہاز جلا ڈالے گئے۔ ہندوستان میں ان کی ریاست ضبط کر لی گئی اور پرتگالیوں کو قید کر کے آگرہ پہنچا دیا گیا۔ بیحد آرزو منہ کرنے کے بعد اور اس وعدہ پر کہ آئندہ وہ ہندوستان کی جنگ کے ساتھ کبھی گستاخی سے پیش نہ

پرتگالیوں کی اس سے کی تجارت کی دو باتیں خاص طور پر جاننے کاہل ہیں—ایک یہ کہ ان لوگوں کے کچھ جہاز بھارت کے پچھلی اور پوری کنارے پر برابر گزرتے رہے اور کسی ہی بھارتیہ جہاز کو پاس سے نکلتے ہوئے دیکھ کر اُسے پکڑ کر لوٹ لیتے تھے۔ کبھی کبھی موقتہ پاور یہ کنارے کی آبادیوں پر بھی دھاوا بول دیتے تھے، انہیں لوٹ لیتے تھے اور موقتہ پاور وہاں کے جوان مرد اور عورتوں کو غلام بناد کر پکڑ لے جاتے تھے اور یورپ کے بازاروں میں بیچتے تھے۔ دوسرے یہ لوگ افریقہ اور دوسرے ملکوں سے اپنے جہازوں میں غلام بھر کر لاتے تھے اور بھارت کے بازاروں میں انہیں بیچتے تھے۔

بھارت کے جن حصوں پر پرتگالیوں کا قبضہ ہو گیا تھا وہاں کی جنگ کے ساتھ شروع دن سے ہی ان لوگوں کا ہرگز بے حد ظالمانہ تھا۔ یہ لوگ اکثر قسم کے عیسائی تھے اور جنگ کو زبردستی عیسائی بنا لینا وہ اپنا مذہبی فرض سمجھتے تھے۔ گوالیار میں انہوں نے اپنی غیر عیسائی پر جا کو پکڑ کر اور انہیں لادھب کہہ مار ڈالنے اور زندہ جلا دینے کے لئے ایک عدالت قائم کر رکھی تھی جسے 'انکوئیشن' کہتے تھے۔ اس لئے آج تک گوالیار کی زیادہ تر آبادی عیسائی ہے۔ اپنی ہندوستانی رعایا کی بہتری کے لئے پرتگالیوں نے کبھی کوئی قدم نہیں اٹھایا۔

سترہویں صدی کے شروع میں پرتگالیوں کی تجارت بنگال کی اور پھیلنے لگی۔ حالانکہ وہاں ان کی حکومت قائم نہیں ہوئی، لیکن وہاں بھی وہی لوٹ مار، وہی زیادتیاں، وہی غلام اور باندیوں کا دیوار چل پڑا۔ شاہجہاں اس وقت دلی کے تخت پر تھا۔ اس کے کانوں تک پرتگالیوں کی شکایت پہنچی۔ اس نے فوراً ایک فوجی دستہ بھیجا۔ پرتگالی ہرا دئے گئے۔ ان کی ہتھیاری کوٹھیاں گرا دی گئیں۔ ان کے جہاز جلا ڈالے گئے۔ ہندوستان میں ان کی ریاست ضبط کر لی گئی اور پرتگالیوں کو قید کر کے آگرہ پہنچا دیا گیا۔ بیحد آرزو منہ کرنے کے بعد اور اس وعدہ پر کہ آئندہ وہ ہندوستان کی جنگ کے ساتھ کبھی گستاخی سے پیش نہ

شاہجہاں نے انہیں گوہا، دمن اور پور میں بنے قلعوں کی تعمیر کروائی۔ مغل بادشاہ کی اس مہم کے بعد ہندوستان کی जनता کو आज یہ بات یاد ہے۔

مغل بادشاہوں کی سلاطین کے مرنے کا سبب بناتے ہوئے ایک پرتگالی لکھن لکھا ہے۔

”پرتگالی نوادہوں نے ایک ہاتھ میں تلوار اور دوسرے ہاتھ میں سلاہ (کوس) لے کر ہندوستان میں پورے ملک میں گھومنا شروع کیا۔ لیکن جب انہیں یہاں بہت زیادہ سونا نظر آیا تو انہوں نے سلاہ کو الگ کر لیا اور اپنی چھینیں پورے ملک میں شروع کر دیں اور جب ان کی چھینیں اتنی بھاری ہو گئیں کہ وہ انہیں ایک ہاتھ سے نہ اٹھا سکتے تو انہوں نے دوسرے ہاتھ سے بھی تلوار پھینک دی۔“

لیکن آج ایسا محسوس ہوتا ہے کہ انہوں نے اپنی تلوار کو الگ کر دیا اور دوسرے ہاتھ سے اپنی چھینیں پورے ملک میں گھومنا شروع کر دیں۔ لیکن ہم اس مالدار کی سلاہ کو یقین دلانا چاہتے ہیں کہ شاہجہاں کے وقت سے چمکا کا جانے والا پانی سمنڈر کی طرف جا چکا۔ آج 1955 میں ہندوستان کی آزاد قوم اس بات کو کہی گوارا نہیں کر سکتی کہ پرتگال کی وحشی اور حیوانی حکومت یہاں ایک دن بھی زیادہ ٹھہرے۔ سمرات شاہجہاں نے اپنی نوالی حکومت سے پرتگالیوں کی طاقت کو ختم کیا۔ ہم آج اٹلسا اور ستیاگرہ سے ان نتیجوں کو دہرانا چاہتے ہیں۔ ہندو شاہجہاں کو کیا معلوم تھا کہ اس کے رحم کی قیمت آج اس کے دیہی والوں کو اپنا خون بہا کر چکانی پڑیگی۔

مہاتما گاندھی نے سن 1946 میں گوا کی آزادی کی حمایت میں کہا تھا کہ گوا جلد سے جلد آزاد ہندوستان کا حصہ بنے گا۔ وہ ہندوستان کا ایک جز ہے اور اس کا الگ رہنا ہماری غیریت کو ایک نقصان ہے۔

ہمیں انیسویں اس بات کا ہے کہ انڈیا کی سرکار پرتگالیوں کی حمایت میں بیان شائع کرنے میں شرم محسوس نہیں کرتی۔ وہ پرتگالیوں کے ساتھ اپنے عہدنامہ کی ہمیں یاد دلاتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ اس صلحنامہ کی شرطوں کو ماننے ہوئے ہم اپنے ملک کے ایک حصہ پر پرتگالیوں کی حکومت قائم رہنے دیں۔ وزیراعظم نہرو نے حقارت کے ساتھ اس سے انکار کیا۔ پرتگالیوں کے دھرم کے بہانے کا پوپ نے پردہ ناسی کر دیا۔ صلح کی آج کوئی صورت نہیں سوائے اس کے کہ پرتگالی گوا خالی کریں۔

16 اگست کو پارلیمنٹ میں اپنا بیان دیتے ہوئے پنڈت نہرو نے یہ فرمایا کہ پرتگال میں کچھ ایسی طاقتیں کام کر رہی ہیں جو یہ چاہتی ہیں کہ گوا خالی کر دیا جائے۔ انہیں شواہد ہیں کہ یہ طاقتیں زور پکڑیں گی اور بہت جلد پرتگالی گوا خالی کر دیں گے۔ اگر ایسا ہوتا ہے تو ٹھیک ہے ورنہ ہندوستان کی چلنا لے یہ فیصلہ کر لیا ہے کہ وہ اٹلسا اور ستیاگرہ کے ذریعہ پرتگالیوں کو گوا سے نکال کر ہی دم لیں گی۔

17-8-55

—بی. نا. پانڈے

ہمیں انیسویں اس بات کا ہے کہ انڈیا کی سرکار پرتگالیوں کی حمایت میں بیان شائع کرنے میں شرم محسوس نہیں کرتی۔ وہ پرتگالیوں کے ساتھ اپنے عہدنامہ کی ہمیں یاد دلاتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ اس صلحنامہ کی شرطوں کو ماننے ہوئے ہم اپنے ملک کے ایک حصہ پر پرتگالیوں کی حکومت قائم رہنے دیں۔ وزیراعظم نہرو نے حقارت کے ساتھ اس سے انکار کیا۔ پرتگالیوں کے دھرم کے بہانے کا پوپ نے پردہ ناسی کر دیا۔ صلح کی آج کوئی صورت نہیں سوائے اس کے کہ پرتگالی گوا خالی کریں۔

16 اگست کو پارلیمنٹ میں اپنا بیان دیتے ہوئے پنڈت نہرو نے یہ فرمایا کہ پرتگال میں کچھ ایسی طاقتیں کام کر رہی ہیں جو یہ چاہتی ہیں کہ گوا خالی کر دیا جائے۔ انہیں شواہد ہیں کہ یہ طاقتیں زور پکڑیں گی اور بہت جلد پرتگالی گوا خالی کر دیں گے۔ اگر ایسا ہوتا ہے تو ٹھیک ہے ورنہ ہندوستان کی چلنا لے یہ فیصلہ کر لیا ہے کہ وہ اٹلسا اور ستیاگرہ کے ذریعہ پرتگالیوں کو گوا سے نکال کر ہی دم لیں گی۔

16 اگست کو پارلیمنٹ میں اپنا بیان دیتے ہوئے پنڈت نہرو نے یہ فرمایا کہ پرتگال میں کچھ ایسی طاقتیں کام کر رہی ہیں جو یہ چاہتی ہیں کہ گوا خالی کر دیا جائے۔ انہیں شواہد ہیں کہ یہ طاقتیں زور پکڑیں گی اور بہت جلد پرتگالی گوا خالی کر دیں گے۔ اگر ایسا ہوتا ہے تو ٹھیک ہے ورنہ ہندوستان کی چلنا لے یہ فیصلہ کر لیا ہے کہ وہ اٹلسا اور ستیاگرہ کے ذریعہ پرتگالیوں کو گوا سے نکال کر ہی دم لیں گی۔

مہاتما گاندھی نے سن 1946 میں گوا کی آزادی کی حمایت میں کہا تھا کہ گوا جلد سے جلد آزاد ہندوستان کا حصہ بنے گا۔ وہ ہندوستان کا ایک جز ہے اور اس کا الگ رہنا ہماری غیریت کو ایک نقصان ہے۔

ہمیں انیسویں اس بات کا ہے کہ انڈیا کی سرکار پرتگالیوں کی حمایت میں بیان شائع کرنے میں شرم محسوس نہیں کرتی۔ وہ پرتگالیوں کے ساتھ اپنے عہدنامہ کی ہمیں یاد دلاتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ اس صلحنامہ کی شرطوں کو ماننے ہوئے ہم اپنے ملک کے ایک حصہ پر پرتگالیوں کی حکومت قائم رہنے دیں۔ وزیراعظم نہرو نے حقارت کے ساتھ اس سے انکار کیا۔ پرتگالیوں کے دھرم کے بہانے کا پوپ نے پردہ ناسی کر دیا۔ صلح کی آج کوئی صورت نہیں سوائے اس کے کہ پرتگالی گوا خالی کریں۔

16 اگست کو پارلیمنٹ میں اپنا بیان دیتے ہوئے پنڈت نہرو نے یہ فرمایا کہ پرتگال میں کچھ ایسی طاقتیں کام کر رہی ہیں جو یہ چاہتی ہیں کہ گوا خالی کر دیا جائے۔ انہیں شواہد ہیں کہ یہ طاقتیں زور پکڑیں گی اور بہت جلد پرتگالی گوا خالی کر دیں گے۔ اگر ایسا ہوتا ہے تو ٹھیک ہے ورنہ ہندوستان کی چلنا لے یہ فیصلہ کر لیا ہے کہ وہ اٹلسا اور ستیاگرہ کے ذریعہ پرتگالیوں کو گوا سے نکال کر ہی دم لیں گی۔

—بی. نا. پانڈے

17-8-55

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساھتہ

हजरत मोहम्मद और इस्लाम

लेखक—परिहित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस्लाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—پنڈت سندر لال مولیہ—تین روپیہ
اسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں ہندوستانی زبانوں میں اس سے
سندر کوئی دوسری پستک نہیں

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—परिहित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکھک—پنڈت سندر لال مولیہ—دیرھ روپیہ

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

مہاتما زرتشت اور ایرانی سانسکرتی

لیکھک—وشو مہر نانہ پانڈے قیمت—دو روپیہ

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

یہودی دھرم اور سامی سانسکرتی

لیکھک—وشو مہر نانہ پانڈے قیمت—دو روپیہ

प्राचीन निख की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

پراچین مصر کی سبھیتا اور سانسکرتی

لیکھک—وشو مہر نانہ پانڈے قیمت—دو روپیہ

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

سومر بابل اور اسوریائی پراچین سانسکرتی

لیکھک—وشو مہر نانہ پانڈے قیمت—دو روپیہ

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

پراچین یونانی سبھیتا اور سانسکرتی

لیکھک—وشو مہر نانہ پانڈے قیمت—دو روپیہ

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

گنگا سے گومتی تک

(پرگتی شیل کہانی سترہ)

لیکھک—شری مجیب رضوی قیمت—دو روپیہ

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसैन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

آگ اور آنسو

(بھاپورن سماجک کہانیاں)

لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری قیمت—دیرھ روپیہ

کुरان और धार्मिक मतभेद

लेखक—भौलाना अबुलकलाम आजाद, कीमत—डेढ़ रुपया

قرآن اور دھارمک متبھید

لیکھک—مولانا ابوالکلام آزاد قیمت—دیرھ روپیہ

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुरति सहाय फिराक, कीमत—तीन रुपया

جھنکار

(پرگتی شیل کہانیاں کا سنگره)

لیکھک—رگھورتی سہای فیراک قیمت—تین روپیہ

मिलने का पता ملنے का پتہ

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

14 मुट्टीगंज, इलाहाबाद 145 مٹی گنج، الہ آباد

हिन्दी घर

ہندی گھر

کلتچر پر ہر तरह کی کتابیں ملنے کا ایک بڑی کےन्द्र—پاٹک ہندی، اردو، انگریزی کی اپنی من-پسند کتابوں کے لیے ہمیں لکھیں۔

کاپچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر—پاٹھک ہندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

لکھک—گاندھی داس کے مانے جانے

ویدوان : شری منچر آلی سوسدا

سکے 225، کیمت دو روپے

— : 0 : —

گاندھی بابا

(بچوں کے لیے بڑی دلچسپ کتاب)

لکھک—کدسیا جیدی

بھمیکا—پنڈت جواہر لال نہرو

موٹا کاغذ، موٹا ڈاڑھ، بڑی-سی رنگین تصویریں

داس دو روپے

— : 0 : —

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور کورن

275 سکے، داس ڈاڑھ روپے

ہندو مسلم اکوتا

100 سکے، داس بارھ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبک

کیمت بارھ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

کیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق

کیمت دو آنے

ہندوستانی کلتچر سوسائٹی

145 مٹھگانج ایلہا آباد

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

لکھک—گاندھی داس کے مانے جانے

ویدوان : شری منچر علی سوختہ

صفحہ 225، کیمت دو روپے

— : 0 : —

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)

لکھک—کدسیا جیدی

بھمیکا—پنڈت جواہر لال نہرو

موٹا کاغذ، موٹا ڈاڑھ، بہت سی رنگین تصویریں

داس دو روپے

— : 0 : —

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور کورن

275 سکے، داس ڈاڑھ روپے

ہندو مسلم ایکتا

100 سکے، داس بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

کیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

کیمت چار آنے

بنگال اور اس سے سبق

کیمت دو آنے

ہندوستانی کلتچر سوسائٹی

145 مٹھگانج ایلہا آباد

اس نمبر کے خاص لکھے اس نمبر کے

دنیا کی تالیف اور تالیف دینے والے

—ڈاکٹر بھگوانداس

—ڈاکٹر بھگوانداس

—ڈاکٹر تاراچند

—ڈاکٹر تاراچند

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

—پنڈت سندر لال

پاکستانی کچھ رسوائی، الہ آباد (کلیچر سوسائٹی، ایلہاہاواہ)

ستمبر 1955

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai

Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only

Can be had from

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

ہندوستان کا ہندو

نمبر 3 نمبر 20 جلد 20 جلد

شیخ فاضل الرحمن دہلی

29 SEP 1955

ستمبر 1955 ستمبر

ہندوستانی کلچر سوسائٹی ہندوستان کا کولچر سوسائٹی

145 مڈل گنج، ایلاہ آباد

145، مہی گنج، ایلاہ آباد

ستمبر 1955 سیتمبر

کیا کس سے	صفحہ	کیا کس سے
1. دنیا کی تالیف اور تالیف دینے والے	131	1. دنیا کی تعلیم اور تعلیم دینے والے
—ڈاکٹر مگھانواس	...	—ڈاکٹر مگھانواس
2. اکبر کی تاریخ کے احوال	144	2. اکبر کی تاریخ کے احوال
—ڈاکٹر تاراچند	...	—ڈاکٹر تاراچند
3. محمد علی شاہ کی کچھ حدیثیں	158	3. محمد علی شاہ کی کچھ حدیثیں
—مفتی محمد علی شاہ	...	—مفتی محمد علی شاہ
4. انیسویں صدی کے ایک فقیر کی قادی	162	4. انیسویں صدی کے ایک فقیر کی قادی
—مفتی محمد علی شاہ	...	—مفتی محمد علی شاہ
5. نرگس کے پھول (کہانی)	171	5. نرگس کے پھول (کہانی)
—مفتی محمد علی شاہ	...	—مفتی محمد علی شاہ
6. ایک آدھ چینی مزدور لڑکی	179	6. ایک آدھ چینی مزدور لڑکی
—مفتی محمد علی شاہ	...	—مفتی محمد علی شاہ
7. کچھ کہانیاں	186	7. کچھ کہانیاں
...
8. ہماری رائے—	188	8. ہماری رائے—

سچا اور شکر نہیں، سچا اور شکر—
مفتی محمد علی شاہ

سنا اور شکر نہیں، سنا اور شکر—
مفتی محمد علی شاہ

पहले के लेखों में हमने सब धर्मों की बुनियादी एकता के बारे में कुछ मोटी मोटी पर बुनियादी बातों की चर्चा की है, अब हम यह देखना चाहते हैं कि आजकल के विद्वानों, साइंसदानों और तालीम और तालीम देने वालों के साथ इसका क्या सम्बन्ध है.

बच्चों की तालीम हमारे जीवन का बीज और उसकी जड़ होती है, जिसे हम सभ्यता कहते हैं वह इस जीवन का फूल और फल है, बोने वाला यदि अच्छे बीज बोएगा तो फसल काटने वाला अच्छे और मीठे फल पाएगा, वह अगर कड़वे और जहरीले बीज बोएगा तो काटने वालों को फल भी कड़वे और जहरीले मिलेंगे, हमारे बच्चों को पढ़ाने वाले अध्यापक बीज बोने वाले हैं, वही मानव सभ्यता को बनाते हैं, वह हमारे बच्चों के दिलों और दिमागों में अच्छे बीज बो सकें इसके लिए आवश्यक है कि वह खुद सच्चे अर्थों में उस्ताद यानी ब्राह्मण हों, सच्चे मौलवी हों, सच्चे रब्बी हों, सच्चा ब्राह्मण वह जो ब्रह्म यानी ईश्वर में रहता हो, सच्चा मौलवी वह जो अपने मौला अल्लाह का सच्चा बंदा हो, यहूदी अपने पुरोहितों को रब्बी कहते हैं, सच्चा रब्बी वही है जो रब्ब यानी खुदा के हुकुम को समझे और उसके अनुसार चले, दूसरे धर्मों में भी ब्राह्मणों और मौलवियों के लिए जो शब्द आए हैं उनके भी इसी तरह के अर्थ हैं, सच्चे ब्राह्मण को ईश्वर अल्लाह का मिशनरी या प्रचारक होना चाहिए, शैतान का तनछाहदार नौकर नहीं होना चाहिए, क्योंकि शैतान अल्लाह का दुश्मन है.

यदि सन् 1914-18 के पहले महायुद्ध से पहले योरप के अध्यापकों, साइंसवानों, पादरियों और विद्वानों ने अपना कर्तव्य पालन किया होता और अपने अपने देश के बच्चों को नेकी की तालीम दी होती तो उस महायुद्ध का अवसर ही न आता। यदि उस महायुद्ध के बाद भी योरप के इन प्राज्ञाणों ने अपने अपने देशों के क्षत्रियों यानी जंगजू शासकों और वैश्यों यानी धन लोलुप उद्योगपियों के हाथ अपनी आत्माओं को न बेचा होता और विद्या, धर्म और साइंस का इस तरह दुरुपयोग होने न दिया होता, यदि वे मिलकर खड़े हो गए होते और अपने आत्मबल, धर्मबल और सत्यबल से उन्होंने अपने अपने यहाँ के बहके हुए क्षत्रियों और वैश्यों की शैतानियत का मुक्काबला किया होता तो हमारे अन्दर का शैतान जरूर हार जाता। यदि सब देशों में

پہلے کے لکھنؤ میں ہم نے سب دھرموں کی بنیادی ایکٹا کے بارے میں کچھ مورتی مورتی پر بنیادی باتوں کی چرچا کی ہے۔ اب ہم یہ دیکھنا چاہتے ہیں کہ آجکل کے 'دوانوں' سائنسدانوں اور قلمروں اور تعلیم دینے والوں کے ساتھ اس کا کیا تعلق ہے۔

بچپن کی تعلیم ہمارے جیون کا بیج اور اُس کی جر ہتی ہے۔ جسے ہم سبھیٹا کہتے ہیں وہ اِس جیون کا پھل اور پھل ہے۔ ہولے والا بیج اچھے بیج ہوئے گا تو فصل کاٹنے والا اچھے اور مہیٹے پھل پائیگا۔ وہ اگر کڑوے اور زہریلے بیج ہوئے گا تو کاٹنے والے کو پھل بھی کڑوے اور زہریلے ملوگے۔ ہمارے بچپن کو پوچھنے والے ادھیپاک بیج ہوئے والے ہیں۔ وہی مانو سبھیٹا کو بتاتے ہیں۔ وہ ہمارے بچپن کے دلوں اور دماغوں میں اچھے بیج ہو سکتے اِس کے لئے آوشیت ہے کہ وہ خود سچے ارتھوں میں اُستاد یعنی براہمن ہوں، سچے مولوی ہوں، سچے ربی ہوں۔ سچا براہمن وہ جو برہم یعنی ایشور میں رہتا ہو۔ سچا مولوی وہ جو اپنے مولا اللہ کا سچا بندہ ہو۔ یہودی اپنے پرروہتوں کو ربی کہتے ہیں۔ سچا ربی وہی ہے جو رب یعنی خدا کے حکم کو سمجھے اور اُس کے انوسار چلے۔ دوسرے دھرموں میں بھی براہمنوں اور مولویوں کے لئے جو شبد آئے ہیں اُن کے بھی اُسی طرح کے ارتھ ہیں۔ سچے براہمن کو ایشور اللہ کا مشنری یا پرچارک ہونا چاہئے، شیطان کا تذوہ دار نوکر نہیں ہونا چاہئے، کوہنہ شیطان اللہ کا دشمن ہے۔

یسوی سن 18-1914 کے پہلے مہابد سے پہلے یورپ کے ادھیپکوں، سائنسدانوں، پادریوں اور ودوانوں نے اپنا کرتوبہ پالن کیا ہوتا اور اپنے اپنے دیہوں کے بچوں کو نیکی کی تعلیم دی ہوتی تو اُس مہابد کا اوسر ہی نہ آتا۔ یسوی اُس مہابد کے بعد بھی یورپ کے ان ہر اہملوں نے اپنے اپنے دیہوں کے چھتریوں یعنی جنکچو شاسکوں اور ویشیوں یعنی دھن لولپ اڈیوگ یتھوں کے غاتم اپنی آتماؤں کو نہ بیچا ہوتا اور ودیا، دھرم اور سائنس کا اِس طرح دور پیوگ ہونے نہ دیا ہوتا، یسوی وہ ملکر کھڑے ہو گئے ہوتے اور اپنے آتم ہل، دھرم ہل اور ستھ ہل سے اُنہوں نے اپنے اپنے یہاں کے بھکے ہوئے چھتریوں اور ویشیوں کی شیطانت کا مقابلہ کیا ہوتا تو ہمارے اندر کا شیطان ضرور ہار جاتا۔ یسوی سب دیہوں میں

یہی صورت کے سب لوگ ملکر یوں کے خلیفہ بن گئے ہوتے ہیں اپنی آتما کی آواز پر یوں میں کسی صورت کا بھی سہیوگ دینے سے سافہ انکار کرتے تو دنیا بھر کے مہادیو کے بھنکر کھلے آسمان سے بچ گئی ہوتی۔ پر ان کے خلیفہ بڑے سے مبارک اور سرانہیہ اپوں کو چہرہ لگ بھگ سب دیہوں میں ودوانوں، ادھیپوں، پادریوں اور سائنسدانوں نے پریم کے خلیفہ لغت کا شانتی کے خلیفہ بدھ کا اور ایشور کے خلیفہ شیطان کا ساتھ دیا۔

ان سرانہیہ اپوں میں ایک خاص نام شری برٹینڈرسل کا ہے۔ ایک سچے سائنسدان اور دانشک کی طرح انہوں نے جیل جانا سونپکر کیا پر بدھ میں سہیوگ دینا یا اس کا سر نہیں کرنا سونپکر نہیں کیا۔ دنیا کے سب سے بڑے سائنسدان ڈاکٹر آئنسٹائن نے بھی سن 1932 میں ایک بدھ وردھی ایسوسی ایشن قائم کی۔ اپنی سچائی کے کرن انہیں اپنے دیہ سے جلاوطن ہونا پڑا۔ پروفیسر ایچ۔ ای۔ آرم اسٹرانگ نے "نیچر" نام کی پریکٹک میں، دنیا کے سائنسدانوں کی سرٹی ہوئی آتما کو جگانے کے لئے لکھا تھا :—

“سوی برس کی سائیس کی عظمت کا یہ نتیجہ ہوا ہے کہ جن باتوں کا اصلی مہم کو کچھ نہیں ہے ان میں ہماری جانکاری غیب کی بڑھ گئی ہے۔ پر ان سو برس نے ہمیں ان چیزوں کی باہت بہت کم جانکاری دی ہے جن سے ہمارا سب کا سچ سچ پیمت پورے اور ہم ملکر شانتی کے ساتھ رہ سکیں اور ایک دوسرے کو سہہ سکیں۔ ایک دوسرے کو دیکھ کر خوش ہوں اور ایک سچے عیسائی کی طرح سب کے ساتھ پریم اور مروتا نبھاندا تو اور بھی دور کی بات ہے..... ہوشیہ میں سائنس کے میدان میں کام کرنے والا کوئی بھی آدمی تب ہی سائیس کا سچا سوتک کہلا سکتا ہے جب وہ سارے مانو سماج کی سوا کے ذریعہ سب کا بھلا کر کے اپنے وجود کو سارتھک کرے۔“

سچے براہمن کی یہی تعریف ہے۔ براہمن، ادھیپک، استاد، مولوی یا سائنسدان کھول اپنے لوگوں کی دماغی جانکاری کو ہی نہیں بڑھاتا، وہ ان کے سداچار کو، ان کے آپسی سمبندھوں کو، ان کے غریب اور شاہری جیون کو اور ان کی آتما کو بھی اچھا لے جاتا ہے، جیون کے ہر کام اور ہر مہم کے میں وہ لوگوں کی سچھی رہنمائی کرتا ہے۔

ایڈنبرا کے پروفیسر کور نے دسمبر سن 1931 میں سائنس اور مانو سماج پر بولتے ہوئے کہا تھا :—

“آدمی کے اندر کے لوبہ اور لالچ کے کارن سائنس دیرپہوگ کر کے اس سے آدمی کی گندی اور

سچے براہمن کی یہی تعریف ہے۔ براہمن، ادھیپک، استاد، مولوی یا سائنسدان کھول اپنے لوگوں کی دماغی جانکاری کو ہی نہیں بڑھاتا، وہ ان کے سداچار کو، ان کے آپسی سمبندھوں کو، ان کے غریب اور شاہری جیون کو اور ان کی آتما کو بھی اچھا لے جاتا ہے، جیون کے ہر کام اور ہر مہم کے میں وہ لوگوں کی سچھی رہنمائی کرتا ہے۔

ایڈنبرا کے پروفیسر کور نے دسمبر سن 1931 میں سائنس اور مانو سماج پر بولتے ہوئے کہا تھا :—

“آدمی کے اندر کے لوبہ اور لالچ کے کارن سائنس دیرپہوگ کر کے اس سے آدمی کی گندی اور

ایڈنبرا کے پروفیسر کور نے دسمبر سن 1931 میں سائنس اور مانو سماج پر بولتے ہوئے کہا تھا :—

“آدمی کے اندر کے لوبہ اور لالچ کے کارن سائنس دیرپہوگ کر کے اس سے آدمی کی گندی اور

दुःखी इच्छाओं को पूरा करने का काम लिया जा रहा है.....आजकल की सबसे बड़ी समस्या यह नहीं है कि आदमी आदमी में मादी चीजों का बैठ बिठाव या बटबारा कैसे किया जाय, बल्कि सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों की आत्माओं के बीच में बैठ बिठाव कैसे किया जाय. दुनिया में इस समय इतना ज्ञान मौजूद है और इतनी शक्ति भी है कि जिससे सारे मानव समाज को फिर से ठीक रूप दिया जा सकता है. पर यह ठीक रूप देने की इच्छा अभी हममें नहीं है. हमारे सामने कोई ऐसा आदर्श नहीं है जिसकी तरफ हम सब चलें. ज़िन्दगी को कैसे क़ायम रखा जावे इसके तरीक़ों को तो हम थोड़ा बहुत जानते हैं, पर ज़िन्दगी कैसे बसर की जावे या किस बात के लिए जिया जावे यह हम नहीं जानते. साईंस आजकल आदमी की धन लोलुपता और शक्ति लोलुपता की गुलाम बन गई है. वह अब ज़ालिमों के हाथ का एक हथियार है. हमें फिर से यह पता लगाना होगा कि मनुष्य जाति का असली भला किस बात में है और फिर यह देखना होगा कि साईंस से हमें जो शक्ति मिलती है वह उसी मतलब को पूरा करने के लिए काम में लाई जावे. ज्ञान ने प्रेम से अलग होकर दुनिया में नफरत और दुख की आग भड़का दी है, अब हमें एक नई नैतिक यानी इस्लामी निगाह की ज़रूरत है. यह निगाह हमें कहाँ से मिले ?”

ہرے اچھلوں کو پورا کرنے کا کام لیا جا رہا ہے..... اچھل کی سب سے بڑی سسپنسا یہ نہیں ہے کہ آدمی آدمی میں مادی چیزوں کا بیتم بٹھاؤ یا بتواریہ کیسے کیا جائے، بلکہ سب سے بڑی سسپنسا یہ ہے کہ لوگوں کی آتماؤں کے بیچ میں بیتم بٹھاؤ کیسے کیا جائے۔ دنیا میں اس سے اتنا گیان موجود ہے اور اتنی شکتی بھی ہے کہ جس سے سارے مائو سماج کو پھر سے ٹھیک روپ دیا جاسکتا ہے۔ پر یہ ٹھیک روپ دینے کی اچھا ابھی ہم میں نہیں ہے۔ ہمارے سامنے کوئی ایسا آدرش نہیں ہے جس کی طرف ہم سب چلیں۔ زندگی کو کیسے قائم رکھا جاوے اس کے طریقوں کو تو ہم تھوڑا بہت جانتے ہیں، پر زندگی کیسے بسر کی جاوے یا کس بات کے لئے جیسا جاوے یہ ہم نہیں جانتے۔ سائنس اچھل آدمی کی دھن لوہتا اور شکتی لوہتا کی ظام بن گئی ہے۔ وہ اب ظالموں کے ہاتھ کا ایک ہتھیار ہے۔ ہمیں پھر سے یہ بیتم لگانا ہوگا کہ منشیہ جانی کا اصلی بیلا کس بات میں ہے اور پھر یہ دیکھنا ہوگا کہ سائنس سے ہمیں جو شکتی ملتی ہے وہ اسی مطلب کو پورا کرنے کے لئے کام میں لائی جاوے۔ گیان نے پریم سے الگ ہوکر دنیا میں لغزت اور دکھ کی آگ بھڑکا دی ہے، اب ہمیں ایک نئی ٹینک یعنی اخلاقی نگاہ کی ضرورت ہے۔ یہ نگاہ ہمیں کہاں سے ملے گی؟“

آدمی کے دیکھوں اور دیکھاؤں کو موہ کر ٹیک راستے پر لے جاتا ہے۔

پچھلے پچیس تیس برس میں دنیا کے اندر شائنتی اور امن بنانا رکھنے کے لیے کئی تہریکوں چلی چکی ہیں۔ ان میں سے ایک خاص تہریک "ورلڈ کونفرنس آف نیشنز" ہے جو 1933 میں شیکاگو (امریکا) میں شروع ہوئی۔ ورلڈ کونفرنس آف نیشنز کے مانی ہیں—دنیا کے سب دھرموں کا میلان۔ شیکاگو میں اس تہریک کی پہلی سہا ہوئی تھی۔ اس کی بابت کہا گیا کہ—"سب دھرموں" نسلوں اور دیشوں لوگ اس سہا میں آئے تھے... انہوں نے ملکر انسان کی نکل کی سب سہاؤں کے روحانی حل کھوجنے کی کوشش کی—سہاؤں یہ ہیں؛ جنگ، مت بھد کے کارن ایک دوسرے کو بھن پھونچانا، پکھپات، ایک طرف دھن کے انبار اور سوی طرف فریبی، بے روز گاری، راشٹروں راشٹروں میں تھریں، الٹ، نفرتیں اور ایک دوسرے سے تھریں۔"

اس سے بہت پہلے سن 1875 میں نیویارک میں تھیوسوفی کال سوسائٹی کرایم ہوئی تھی۔ اس سوسائٹی کے تین مقصد اور ہیں۔ یہ تھریں؛ اس میں کوئی شک نہیں، سرائیلہ۔ دے یہ ہیں—(1) نسل، دھرم، مرد، عورت، جات رنگ کے بھد بھاؤں سے اوپر اٹھ کر سارے مانو سماج کے یک بھائی چارے کا ایک کینڈر بنانا۔ (2) الگ الگ دھرموں، الگ الگ دھرم شاستروں، اور سائنس ان سب ملا کر پھلنا اور پھلنا۔ (3) قدرت کے ان قانونوں کا ابھی تک سمجھ میں نہیں آئے اور آدمی کے اندر کی ہی ہوئی شکلیں کا پتہ لگانا۔ اس تھریں باتوں کی عرض ہے یعنی دنیا کی شائنتی اور سب کی خوشحالی۔ سونیئل سوسائٹی کا صدر دفتر مدراس کے پاس انبار میں اور اس کی شاخیں دنیا کے پچاس سے اوپر دیشوں قائم ہیں۔

بہت سے دیشوں کے بڑے بڑے شہروں میں 'پارلیمنٹس آف ریلیجنس' یعنی دھرموں کی پارلیمنٹیں ہو چکی ہیں۔ ان میں سے پہلی 1893 میں شیکاگو ہی میں ہوئی تھی۔ ان سب مقصد بھی شائنتی قائم کرنا تھا۔

سن 1920 میں لیگ آف نیشنس کرایم ہوئی جس کا مقصد تھا—"راشٹروں راشٹروں کے بیچ سہیوک کو بڑھانا اور ان کے بیچ امن قائم کرنا۔"

بہت سے دیشوں میں سائنسدانوں کی ایسوسی ایشنیں بھی چلی ہیں۔ یہ ایسوسی ایشن اب سائنس کے 'انسانی' پہلو ملی سماجی یا اخلاقی پہلو پر ادھک دھیان دینے لگی ہیں یعنی اس بات پر کہ سائنس کا مشیہ کے لیے جلیے سماجی ن کے ساتھ کیا سمبندھ ہے۔ اس طرح کے نیک سدائوں کے لکھوں میں یہ وچار اب عام طر پر لکھا جاتا ہے کہ سائنس اب انلی تھری سے آگے

انی کے دلوں اور دھنوں کو سوز کر ٹیک راستے پر لے جاتی ہے۔

پچھلے پچیس تیس برس میں دنیا کے اندر شائنتی اور امن بنانا رکھنے کے لیے کئی تہریکوں چلی چکی ہیں۔ ان میں سے ایک خاص تہریک "ورلڈ کونفرنس آف نیشنز" ہے جو 1933 میں شیکاگو (امریکا) میں شروع ہوئی۔ ورلڈ کونفرنس آف نیشنز کے مانی ہیں—دنیا کے سب دھرموں کا میلان۔ شیکاگو میں اس تہریک کی پہلی سہا ہوئی تھی۔ اس کی بابت کہا گیا کہ—"سب دھرموں" نسلوں اور دیشوں لوگ اس سہا میں آئے تھے... انہوں نے ملکر انسان کی نکل کی سب سہاؤں کے روحانی حل کھوجنے کی کوشش کی—سہاؤں یہ ہیں؛ جنگ، مت بھد کے کارن ایک دوسرے کو بھن پھونچانا، پکھپات، ایک طرف دھن کے انبار اور سوی طرف فریبی، بے روز گاری، راشٹروں راشٹروں میں تھریں، الٹ، نفرتیں اور ایک دوسرے سے تھریں۔"

اس سے بہت پہلے سن 1875 میں نیویارک میں تھیوسوفی کال سوسائٹی کرایم ہوئی تھی۔ اس سوسائٹی کے تین مقصد اور ہیں۔ یہ تھریں؛ اس میں کوئی شک نہیں، سرائیلہ۔ دے یہ ہیں—(1) نسل، دھرم، مرد، عورت، جات رنگ کے بھد بھاؤں سے اوپر اٹھ کر سارے مانو سماج کے یک بھائی چارے کا ایک کینڈر بنانا۔ (2) الگ الگ دھرموں، الگ الگ دھرم شاستروں، اور سائنس ان سب ملا کر پھلنا اور پھلنا۔ (3) قدرت کے ان قانونوں کا ابھی تک سمجھ میں نہیں آئے اور آدمی کے اندر کی ہی ہوئی شکلیں کا پتہ لگانا۔ اس تھریں باتوں کی عرض ہے یعنی دنیا کی شائنتی اور سب کی خوشحالی۔ سونیئل سوسائٹی کا صدر دفتر مدراس کے پاس انبار میں اور اس کی شاخیں دنیا کے پچاس سے اوپر دیشوں قائم ہیں۔

بہت سے دیشوں کے بڑے بڑے شہروں میں 'پارلیمنٹس آف نیشنز' یعنی دھرموں کی پارلیمنٹیں ہو چکی ہیں۔ ان میں سے پہلی 1893 میں شیکاگو ہی میں ہوئی تھی۔ ان سب مقصد بھی شائنتی قائم کرنا تھا۔

سن 1920 میں لیگ آف نیشنس کرایم ہوئی جس کا مقصد تھا—"راشٹروں راشٹروں کے بیچ سہیوک کو بڑھانا اور ان کے بیچ امن قائم کرنا۔"

بہت سے دیشوں میں سائنسدانوں کی ایسوسی ایشنیں بھی چلی ہیں۔ یہ ایسوسی ایشن اب سائنس کے 'انسانی' پہلو ملی سماجی یا اخلاقی پہلو پر ادھک دھیان دینے لگی ہیں یعنی اس بات پر کہ سائنس کا مشیہ کے لیے جلیے سماجی ن کے ساتھ کیا سمبندھ ہے۔ اس طرح کے نیک سدائوں کے لکھوں میں یہ وچار اب عام طر پر لکھا جاتا ہے کہ سائنس اب انلی تھری سے آگے

بڑا گیا کہ سداچار کا اور سائیس کا ساتھ بڑھ گیا۔
ہالینڈ کے شہر روتھرن میں ایک انٹرنیشنل کونسل آف سائنٹسٹس
سائیسٹکس یونینس ہے جسکی ایک خاص کمیٹی سائیسٹس
اور مانعہ سماج کے درمیان संबंध پر ہے۔

یہ سب کوششیں اس لئے ضروری جا رہی ہیں کہ
سائنسدان ابھی تک اس بات کو نہیں سمجھ رہے ہیں کہ
سائنس کی بڑی سے بڑی اور عجیب سے عجیب ایجادیں
بھی برائی کی بارے کو نہیں روک سکتیں۔ یہ ایجادیں
برائی کی بارے اور اس کے انہیوں کو بڑھاتی ہی رہیں گی۔
برائی کی یہ بارے تبھی رک سکتی ہے جب ہم کوئی ایسا
تھنگ نکالیں جس سے دنیا کے سب لوگ اس پرانے سہارے
اصول پر عمل کرنے لگیں کہ ہر آدمی ہر دوسرے آدمی کے
ساتھ ویسا ہی برتاؤ کرے جیسا وہ چاہتا ہے کہ دوسرے اس کے
ساتھ کریں۔ اس کے لئے مانعہ سماج کے سنگٹھن کی ایک ایسی
ویپیک یوجنا بنانی ہوگی جس کے انہیوں ہر آدمی سائنس
کی نئی سے نئی ایجادوں کو ساری منشیہ جاتی کے بچے کے لئے
کام میں لائے۔ کوئی ان ایجادوں کو کسی ایک راشٹر کے ناپید
کے لئے یا اس راشٹر کے اندر ہی کسی ایک گروہ کے لئے کام
میں نہ لے سکے۔ ہمارا سماج سنگٹھن ایسا ہونا چاہئے جس
میں ہر آدمی کو اس کے لئے اپنے اندر سے سواہیاوک
پہرنا ملے۔

ہر آدمی سے دُنیا کی ہر "بڑی کڑم" پاگلوں کی طرح
اپنی فوجیں اور اپنے ہتھیار بڑھاتی جا رہی ہے اور
ساتھ ہی شانتی اور امن کی بات کرتی ہے۔ سن 1939 میں
دُنیا کی ان فوجوں کی تعداد جو ہر سال ہر سال کے لئے
تیار رہتی تھی پانچ کروڑ سے اوپر تھی۔ ان پر خرچ سن 1939
میں کیا جاتا ہے پچاس ارب روپے سے اوپر ہوا۔ آج ان فوجوں
کی تعداد اور ان پر خرچ اس سے بھی کئی گنا بڑھ چکا ہے۔
بہت سے دیہی ہتھیاروں کی اس گہر درجہ میں حصہ لینے کے
کارن بھاری قرضوں کے نیچے دبے جا رہے ہیں۔ دوسرے مہا
پدے نے اس ساری رشم استہتی کو اور بھی بھینک کر دیا ہے۔ اب
تیسرے مہادھ کا تہ دنیا کے سامنے ہے۔ دنیا ہر ہادی کے گڈھ
کے مہ پر کھڑی ہوئی ہے۔

ہر آدمی محسوس کرتا ہے اور کہتا ہے کہ یہ سب پاگل بن
سے۔ پر معلوم ہوتا ہے کہ قسمت یا کوئی دیوی شکتی سب کی
گردن پکڑ آئیں تھکے لئے جا رہی ہے۔
یعنی یہ کروڑوں آدمی جو ایک دوسرے کو قتل کرنے کے لئے
تیار کئے جا رہے ہیں اور وہ اردہیں اور کربوں روپیہ جو کروڑوں
ہتھیاروں کو زندہ ہونے والے کے لئے نئے نئے ہتھیار بنائے ہیں خرچ کیا
جا رہا ہے، یہی یہ ساری شکتی اور یہ سارا دھن سائنس کی مدد
سے سب کے بچے کے لئے خرچ کیا جاسکتا تو ہماری یہ دھرتی یہ

अमीर कमीन, एक हरे भरे लेत या चाय की तरह नाज, फल और फूल से लहलहा उठती. पर माया, जहालत, हिंस, एकधुर, चराह, अंधा लोभ, ऐशपरस्ती और दूसरों से नफरत इन सबने मिलकर हमें इतना अंधा कर दिया है कि दुनिया के बड़े से बड़े नेता न केवल दूसरे देशों के लोगों को बल्कि अपने अपने देशों की करोड़ों जनता को भी जोरा के साथ लोपों और गोलों का चारा बनने के लिये तैयार कर रहे हैं. इस से बढ़कर अंधापन, पागलपन और रौतान-परस्ती और क्या हो सकती है ?

दुनिया के बड़े से बड़े मानव प्रेमी, राह दिखाने वाले कण्वल ही बिस्लाते रहे—“एक दूसरे से प्रेम करो”, “दूसरों के साथ वैसा ही सलूक करो जैसा तुम चाहते हो कि वह तुम्हारे साथ करें.” अधिकार की शक्तियाँ उजाले की शक्तियों पर हावी हो रही हैं. सारी दुनिया इस आफत के नीचे तड़प रही है. आदमी पर बोझ बढ़ते जा रहे हैं, नकरत का बोझ घर का बोझ, हथियारों का बोझ और करोड़ों इंसानों के आर्थिक शोषण का बोझ. हथियारों का यह बोझ अब बहुत बिनो नही चल सकता. यह हथियार खतम तो होंगे ही, चाहे एक दूसरे को खतम करके खतम हों और चाहे सब को जिंदा रख कर आपसी समझौते से खतम हों !

इस मुसीबत से बचने के लिए और मानव जाति की आइन्दा की शान्ति, सलामती और खुराहाली के लिए सबसे पहली जरूरत यह है कि दुनिया के कानून बनाने वालों, हाकिमों, हर घर, हर उद्योग, हर महकमे और हर संस्था के सरदार या नेता में और इन सबसे बढ़कर दुनिया के बच्चों को तालीम देने वाले अध्यापकों में दिमागी जानकारी और होशियारी से कहीं बढ़कर ऊँचे नैतिक गुण हों, उनके दिलों में दूसरों के लिये वैसा ही प्रेम हो जैसा पिता के दिल में अपनी औलाद के लिये. हमारा दिमाग अगर बहुत चतुर न भी हो तो भी सच्चा प्रेम भरा दिल हम सब को ठीक रास्ते पर और सब के भले के रास्ते पर लगा सकता है. दिमाग की चतुराई अगर उसके साथ दिल खराब है तो हमें लबाही के गड्ढे में गिराए बगैर नहीं रह सकती. दिमाग जितना चतुर होगा उतना ही जल्दी हम सब बरबाद होंगे, इसलिए यह जरूरी है कि हमारी शिक्षा संस्थाओं में, हमारी तालीमगाहों में बच्चों को बहुत अधिक जानकारी देने की अपेक्षा उनके चरित्र को अच्छा, ऊँचा और मजबूत बनाने की तरफ कहीं अधिक ध्यान दिया जावे. इसके लिए यह जरूरी है कि हमारे अध्यापक खुद नेक, निस्वार्थ, प्रेमी और ऊँचे चरित्र के हों. सच्चा अध्यापक, सच्चा ब्राह्मण होना चाहिए, सच्चा मौलवी होना चाहिए, उसमें विद्या होनी चाहिए, इल्म होना चाहिए और जोहद होना चाहिए. ज्ञान और परोपकार भावना दोनों से मिलकर बुद्धि यानी अक्ल पैदा होती है.

ہی رہیں۔ ایک دوسرے دوسرے گھبراتے یا باغ کی طرح
پھل اور پھول سے لہلہا اُٹھتی۔ پر ماما، جہالت،
میں، تہیز، گھمبند، اندھا لوبہ، عیسیٰ پرستی اور دوسروں سے
اتفاق سب نے ملکر ہمیں اتنا اندھا کر دیا ہے کہ دنیا کے
سے بڑے لیڈر نہ کھول دوسرے دیشوں کے لوگوں کو بلکہ اپنے
دیشوں کی کروڑوں جھلٹا کو بھی جوش کے ساتھ توہین اور گولی
چارا بلیغ کے لئے تیار کر رہے ہیں۔ اس سے بڑھکر اندھاپن،
لین اور شیطان پرستی اور کیا ہوسکتی ہے ؟

دنیا کے بڑے سے بڑے مالو پریمی راہ دکھائے والے فقروں ہی
تے رہے۔ ”ایک دوسرے سے پریم کرو“ ”دوسروں کے ساتھ
ما ہی سلوک کرو جیسا تم چاہتے ہو کہ وہ تمہارے ساتھ
کریں۔“ اندھکار کی شکستیں اُجالے کی شکستیں پر حاوی ہو
رہی ہیں۔ ساری دنیا اِس آنٹ کے نیچے تڑپ رہی ہے۔
اُدسی پر بوجھ بڑھتے جا رہے ہیں، نفرت کا بوجھ، تر کا بوجھ،
ہتھیاروں کا بوجھ اور کروڑوں انسانوں کے آرتھک شوشن کا بوجھ
ہتھیاروں کا یہ بوجھ اب بہت دنوں نہیں چل سکتا۔ یہ
ہتھیار ختم تو ہونگے ہی، چاہے ایک دوسرے کو ختم کر کے ختم
ہیں اور چاہے سب کو زندہ رکھ کر ایسی سمجھوتے سے ختم ہوں !

اس مصیبت سے بچنے کے لئے اور مانو جانی کی آئندہ کی شانتی، سلامتی اور خوشحالی کے لئے سب سے پہلی ضرورت یہ ہے کہ دنیا کے قانون بنائے والوں، حاکموں، ہر گھر، ہر ادبگ، ہر محکمہ اور ہر ساستہ کے سردار یا نیٹا میں اور ان سب سے بڑھکر دنیا کے بچوں کو تعلیم دینے والے ادھیپاکوں میں دماغی جانکاری اور ہر شہاری سے کہیں بڑھکر ارنچے نہتک کن ہوں، ان کے دلوں میں دوسروں کے لئے ویسا ہی یریم ہو جیسا پتا کے دل میں اپنی آرلاں کے لئے۔ ہمارا دماغ اگر بہت چتر نہ بھی ہو تو بھی سچا یریم ہوا دل ہم سب کو ٹھیک راستہ پر اور سب کے بیلے کے راستے پر لگا سکتا ہے۔ دماغ کی چترائی اگر اُس کے ساتھ دل خراب ہے تو ہمیں قبلی کے گڈے میں گرائے بغیر نہیں رہ سکتی۔ دماغ جتنا چتر ہوگا اُننا ہی جلدی ہم سب پر باد ہونے، اس لئے یہ ضروری ہے کہ ہماری شکشا سنستھاؤں میں، ہماری تعلیم گاہوں میں بچوں کو بہت ادھک جانکاری دینے کی اپیکشا اُن کے چتر کو اچھا ارنچا اور مضبوط بنانے کی طرف کہیں ادھک دھیان دیا جائے۔ اس کے لئے یہ ضروری ہے کہ ہمارے ادھیپاک خود ٹھیک، نسوازتہ، یریمی اور ارنچے چتر کے ہوں۔ سچا ادھیپاک، سچا براہمن ہونا چاہئے، سچا مریبی ہونا چاہئے۔ اُس میں ودیا ہونی چاہئے، تب ہونا چاہئے، علم ہونا چاہئے اور زہد ہونا چاہئے۔ گیان اور یریریکر بھاونو دونوں سے ملکر بدھی یعنی عقل سلیم بنتی ہے۔

دھرم یا مذہب جس کا کلم سب کے دلوں کو تسلی دیتا ہے سب کے چہرے کو اُونچا لیٹاتا، سب کو ملاتا اور سب کا ہلا کرتا تھا، اب سب جگہ گر کر سوار تھی پختہ پروہتوں اور پادری ملاؤں کے ہاتھوں میں نکتہ ریت راجوں اور اندھ و شرابوں کو بڑھانے والا اور دنیا کو دھوکا دینے والا اور آدمی کو آدمی سے پہاڑنے والا ایک بھیڑیہ جال بن کر رہ گیا ہے۔ راج جس کا کام سب کی رکشا اور سب کی ترقی کرنا تھا اب سوار تھی راجنیک نیتوں کے ہاتھوں میں پروکھ دنیا کو چوسنے والی اور کھلے انیائے کرنے والی سلسلہ بن گیا ہے۔ پنچائتوں اور عدالتوں جن کا کام سب کے جھگڑے حلہ کواکر اُنہیں ملانا تھا اب خود غرض اور چالاک دکھوں کے آگے بن گئی ہیں۔ دانتر اور وید جن کا کام دنیا کے روگوں کو دور کر کے اُنہیں پھر سے تندرست کرنا تھا دھن کے لوہے میں اب لپٹے شکاریوں کو چوڑیوں کی طرح چوسنے لگے ہیں۔ ویپار اور تجارت جن سے سب کو کھانا، کپڑا اور زندگی کی ضرورتیں ملتی چاہئے تھیں اب بدل کر سب کو ہرباد کرنے والا نیا ارتھ شاستر بن گیا ہے، جس میں استاک جمع کئے جاتے ہیں، کمپنوں کے حصوں کا جو آ کھیا جاتا ہے، سنا کھا جاتا ہے، پھانکا لڑایا جاتا ہے، دنیا کے سکوں کے ساتھ جادوگروں کی طرح نمائش کئے جاتے ہیں، سرکاروں کی اچھا پر کہیں سکوں کے دام کھٹائے جاتے ہیں کہیں بڑھانے جاتے ہیں، کہیں روپیوں کی کوزیاں کردی جاتی ہیں اور کہیں کوزیوں کے روپیہ کردئے جاتے ہیں، بالکل ہٹاؤتی دھنگ سے اور زبردستی، خاص گتوں، کمپنیوں اور گروہوں کے نچوہ لہے کے لئے چیزوں کی قیمتوں کو من مانا بڑھایا اور گھٹایا جاتا رہتا ہے، جو آ چوری ایک بڑے پیمانے پر اور کھلے بے شرمی کے ساتھ جاری ہے، بڑے بڑے شاستری، ودوان، نیتا اور ماہر آئے بڑھاوا دیتے ہیں، اپنے اندھے پن میں ہم اشرفیاں لٹا رہے ہیں اور کونلوں یا گھٹلوں کے گھڑوں پر سہر لگا رہے ہیں۔ گرسہ جہوں جس سے زندگی میں مٹھاس بھر جانی چاہئے تھی، نئی جان آئی چاہئے تھی اور آدمی کا بل بڑھنا چاہئے تھا، اب کپول کام ٹٹکا سا دھن رہ گیا ہے۔ اس کا خاص کان پہ ہے کہ ہمارے بچوں اور نوجوانوں کی تعلیم جس سے سب کو ٹھیک راستہ ملنا چاہئے تھا، خود غلط راستہ پر پڑ گئی ہے۔ ہمارے ماسٹر، ادھیاپک اور پروفیسر اپنے اعلیٰ مشن سے بے پرواہ ہو کر غلط طرف بھٹک گئے ہیں۔ ان کے اندر جو زبردست ٹھیک شکلی، تیاگ اور تپسیا کا بل اور آتم بل ہونا چاہئے تھا وہ جاتا رہا۔ وہ نوجوان لہذروں اور سوار تھی پونجی پتوں کے ہاتھوں میں کھیلنے لگے، جب کہ ان کا کام تھا ان لہذروں اور پونجی پتوں کو ٹھیک راستہ پر رکھنا۔ ہمارے ادھیاپکوں نے

انہی کے لیے اور پختہ کام کو نیچے گिरا کر اب مریں کی طرح اور ایک نئی شکل سے انہیں کو اس طرح چلانا شروع کر دیا ہے جس طرح جانوروں کے گلوں کو چلایا جاتا ہے۔ ادھیانوں کے دل جو سنا پتا کے سے پریم سے بھرے ہوئے چاہتے تھے اب سوکھے، سواتھی اور نردنی ہو گئے ہیں۔ ہم سب ایک شیطانی چکر میں پھنس گئے ہیں۔ خراب بیج سے ہم نے خراب پل پیدا کئے، ان پلوں سے اور بھی خراب بیج نکلتے، ان سے اور ادھک خراب پل نکلتے۔ یہاں تک کہ ہوسرا مہادیہ اور انسانی قوم یا کم سے کم انسانیت کا خاتمہ اب ہماری آنکھوں کے سامنے لچ رہا ہے۔

آج جو کرم جتنی زیادہ سبب سے سمجھی جاتی ہے اتنا ہی اس کی ساری زندگی میں خودی، انکار اور اپنا دھابی بڑی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔ ہر آدمی بڑے سے بڑا بننا چاہتا ہے۔ ہر ایک دوسرے سے بڑھ کر رہنا چاہتا ہے اور جتنی تیزی سے ہو سکے اوپر اٹھنا چاہتا ہے۔ سب کسی نہ کسی روپ میں بھوک ولس اور عیش پرستی کی طرف دوڑے چلے جا رہے ہیں۔ اسی کا نام ہم لوگوں نے ”جیوں کے اُسٹر کو اُرنچا کرنا“ (raising of the standard of life) رکھ رکھا ہے! پشاپرستی کے ساتھ نافرمانی کا چلنا لازمی ہے۔ ہم پہلے ایک لکھ میں کھڑے تھے کہ اب آدھی لکھ میں آگے آئے ہیں۔ آج کل یہ چھوٹے بڑے زور پر ہیں۔ یہ ہیں: — عیش پرستی، جنگ کی تیاریاں، پونجی دان، دوسروں کو تیرا کر رکھنا، سامراجیवाद، اور دوسروں کو چوس کر اپنے اپنے رشتہ کا دھن اور ہل بڑھانا۔ آج کل کی سبھی چیزیں کے ہر میدان میں، ویکٹی گت، سماجی، راشتریہ، گھریلو، مالی، آرتھک اور راجنیتک، سب پہلوؤں سے آئے بند کئے برہادی کی طرف بڑھی چلی جا رہی ہے۔ الگ الگ دیہ اپنے اپنے قومی قرضہ کو بے تحاشا بڑھاتے چلے جا رہے ہیں۔ ہتھیاروں کے اٹبار لگ رہے ہیں اور ان میں ہوز جاری ہے۔ خرچ کو روکنے یا کم کرنے کا کسی کو دھیان تک نہیں ہے۔ آگے کی کسی کو پروا نہیں ہے کہ اپنی چوٹی سی زندگی سے آگے یا اپنی ناک کے سرے سے آگے تک دیکھنے کی چلتا نہیں کرتا۔ آج کل کی سرکاریں جس طرح چل رہی ہیں اُس طرح کوئی ویکٹی چلتا تو پاگل اور اتم ہتھارا کہا جاتا۔ دنیا کی بے گناہ چلتا کی انھیں شکتی جیوں کی آرشیک وستیوں ہلانے کی جگہ اور سب کو آرام پہونچانے والی چیزیں تیار کرنے کی جگہ تھوڑے سے لوگوں کو عیش آرام کے سامان تیار کرنے اور منورنجن کے گندے اور نقصی سامان تیار کرنے اور اُس سے ادھک زمینی، سمندری اور ہوائی لواٹھی کے دے سامان تیار کرنے میں لگی ہوئی ہیں جن کا ایک ماتر ادھیہ یہ ہے کہ آدمی کی زندگی، اس کی مصفت، اُس کے مال اسباب اور ہال بچوں کو ملایا جائے۔

انہی کے لیے اور پختہ کام کو نیچے گिरا کر اب مریں کی طرح اور ایک نئی شکل سے انہیں کو اس طرح چلانا شروع کر دیا ہے جس طرح جانوروں کے گلوں کو چلایا جاتا ہے۔ ادھیانوں کے دل جو سنا پتا کے سے پریم سے بھرے ہوئے چاہتے تھے اب سوکھے، سواتھی اور نردنی ہو گئے ہیں۔ ہم سب ایک شیطانی چکر میں پھنس گئے ہیں۔ خراب بیج سے ہم نے خراب پل پیدا کئے، ان پلوں سے اور بھی خراب بیج نکلتے، ان سے اور ادھک خراب پل نکلتے۔ یہاں تک کہ ہوسرا مہادیہ اور انسانی قوم یا کم سے کم انسانیت کا خاتمہ اب ہماری آنکھوں کے سامنے لچ رہا ہے۔

آج جو کرم جتنی زیادہ سبب سے سمجھی جاتی ہے اتنا ہی اس کی ساری زندگی میں خودی، انکار اور اپنا دھابی بڑی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔ ہر آدمی بڑے سے بڑا بننا چاہتا ہے۔ ہر ایک دوسرے سے بڑھ کر رہنا چاہتا ہے اور جتنی تیزی سے ہو سکے اوپر اٹھنا چاہتا ہے۔ سب کسی نہ کسی روپ میں بھوک ولس اور عیش پرستی کی طرف دوڑے چلے جا رہے ہیں۔ اسی کا نام ہم لوگوں نے ”جیوں کے اُسٹر کو اُرنچا کرنا“ (raising of the standard of life) رکھ رکھا ہے! پشاپرستی کے ساتھ نافرمانی کا چلنا لازمی ہے۔ ہم پہلے ایک لکھ میں کھڑے تھے کہ اب آدھی لکھ میں آگے آئے ہیں۔ آج کل یہ چھوٹے بڑے زور پر ہیں۔ یہ ہیں: — عیش پرستی، جنگ کی تیاریاں، پونجی دان، دوسروں کو تیرا کر رکھنا، سامراجیवाद، اور دوسروں کو چوس کر اپنے اپنے رشتہ کا دھن اور ہل بڑھانا۔ آج کل کی سبھی چیزیں کے ہر میدان میں، ویکٹی گت، سماجی، راشتریہ، گھریلو، مالی، آرتھک اور راجنیتک، سب پہلوؤں سے آئے بند کئے برہادی کی طرف بڑھی چلی جا رہی ہے۔ الگ الگ دیہ اپنے اپنے قومی قرضہ کو بے تحاشا بڑھاتے چلے جا رہے ہیں۔ ہتھیاروں کے اٹبار لگ رہے ہیں اور ان میں ہوز جاری ہے۔ خرچ کو روکنے یا کم کرنے کا کسی کو دھیان تک نہیں ہے۔ آگے کی کسی کو پروا نہیں ہے کہ اپنی چوٹی سی زندگی سے آگے یا اپنی ناک کے سرے سے آگے تک دیکھنے کی چلتا نہیں کرتا۔ آج کل کی سرکاریں جس طرح چل رہی ہیں اُس طرح کوئی ویکٹی چلتا تو پاگل اور اتم ہتھارا کہا جاتا۔ دنیا کی بے گناہ چلتا کی انھیں شکتی جیوں کی آرشیک وستیوں ہلانے کی جگہ اور سب کو آرام پہونچانے والی چیزیں تیار کرنے کی جگہ تھوڑے سے لوگوں کو عیش آرام کے سامان تیار کرنے اور منورنجن کے گندے اور نقصی سامان تیار کرنے اور اُس سے ادھک زمینی، سمندری اور ہوائی لواٹھی کے دے سامان تیار کرنے میں لگی ہوئی ہیں جن کا ایک ماتر ادھیہ یہ ہے کہ آدمی کی زندگی، اس کی مصفت، اُس کے مال اسباب اور ہال بچوں کو ملایا جائے۔

انہیں چیزوں کی رکشا کرنا، بڑھانا اور ترکتاری دینا
سراکاروں کا کام ھا۔ اور سب سراکارے انہیں کو میدانے
کی ترکتاریوں میں لگی ھوئے ھے۔ ابلال ابلال ڊسوں کے ٲے سااسک،
ناتا اور راجنیتیکل جو ابلانے کو ٲلوت ھوشیار اور
'ٲٲاٲھارک' سااسکتے ھے آج اسی ٲاالالٲن کی ڊیک میں
اک ڊسارے سے ھوٲ لگا رھے ھے۔

آجکل کی سااٲتا نے جو کئی ترھ کی ڳوے کی
ډرٲیوں ھمارے ساانے لکھی کر ڊی ھے، انمیں سے اک سب سے
اٲیک ڳوے کی اور راتانی ٲیٲ ٲھی "ٲٲاٲھارکاتا"
ہے۔

ھم میں سے ٲلوت سے اٲکسارے اس ٲاٲ ٲر ٲلھس کرتے
رھتے ھے کی ٲٲا ٲیٲ ٲٲاٲھارک یاانی ٲرےکٹکل ہے اور
ٲٲا اٲٲاٲھارک یاانی اٲٲرےکٹکل کے ٲل ہے۔

آب ڊونیا میں ڊرم کا آور ھا تو اٲکسار لول
سااسکتے ٲے اور کھتے ٲے کی ماری ڊرم ڊیک اور ڊسارے کا
ڊرم رالال۔ آج آب راجنیتیکل کا آور ہے تو ٲسی ترھ
کے لول کھتے ھے کی ماری رال، ماری ساااٲ اور ماری
آولنا ٲٲاٲھارک اور ڊسارے کی اٲٲاٲھارک یا کورا
اٲاٲشاٲاڊ۔ ساالال ٲل کی جو مومے ڊیک آئے ٲل ٲٲاٲھارک
'اٲملی' اور جو ڊسارے کو ڊیک آئے ٲل ٲٲاٲھارک
'اٲٲاٲھارک' (رور اٲملی)۔

ٲلوت سی ٲیٲوں جو ٲلھے کورا اٲاٲشاٲاڊ اور رور
اٲملی مالول ھوئی ٲی اٲ اٲملی میں آا گئے۔ اٲاٲ،
ٲیٲلی، رےٲیو، ھٲاٲے آاآآ، ٲنٲوٲی، سااٲیٲ رل،
ٲیٲ، سااٲاٲاڊ، ډیلیٲیٲن، ٲیٲم ٲم اور ھائوآولن ٲم
اسکی ٲنڊ میسالے ھے۔ ٲیر می ھمارا ٲل ٲٲاٲھارکاتا'
کا اٲل کلاٲو میں نہی آاتا۔ ڊرلٲ اٲانے ٲلوں سے ٲلھانا
آاتا ہے۔ آجکل کے ان ٲلور راجنیتیکل اور ناتاوں کی
اس ٲٲاٲھارکاتا کے ناتیوں ٲر ھم اک نیگاھ ډالکر
ڊلے

ٲلھے ڊرم ھی کو لیآیٲ۔ سااٲے ڊرم سے نکلی، سااٲاٲ
اور اک ڊسارے کے ساا یرمانڊاری کا ٲاٲاٲ ٲیڊا ھونے
ٲاڊیے ٲے۔ اٲ لگمگ سب "ترکتاریاٲا" کلاوں کی
آینڊگی سے ڊرم ککریٲ ککریٲ میٹ ٲکا۔ سااٲاٲ میں گھرا
'اٲکلاٲا' ٲیڊا ھو ٲکا ہے۔ اک ترلٲ کلاٲوٲی ٲیٲااا
اور سااٲر ٲریم اور ڊساری ترلٲ اٲاٲم سااٲم اور گھسٲ
یاانی کویڊمبک ٲریم، ان ڊوٲوں کے ٲیٲ ٲل سااٲم آاری
ہے کی انمیں سے کویٲ نہ کویٲ ڊسارے کو میڊاکر رھےگا۔

اٲ راجنیتیکل کو لیآیٲ۔ ڊونیا کی ٲارلیمنٲے اور
کلاٲن سااٲاٲ سااٲاٲی لولوں اور گیروھوں کی لآیٲا ٲانی کے
اٲاٲاڊے ٲنی ھوئے ھے۔ اٲاٲسی کلاڊے، سااٲیٲوں، اک ڊسارے کے
آیلاک ڳوٲاٲاٲا ترکتاریوں، سب اٲانے اٲانے گیروھوں کے نام
ٲر ھوئی ھے۔ سب کے اٲلے کی سااٲنے کا کھی نام نہی

انہیں آیزوں کی رکشا کرنا، بڑھانا اور ترکتاری دینا
کا کام ھا۔ اور سب سراکارے انہیں کو میدانے کی ترکتاریوں
میں لگی ھوئی ھیں۔ اک اٲک ڊیٲوں کے ڊے سااسک، ناتا اور
راجنیتیکل جو اٲانے کو ٲلوت ھوشیار اور 'ٲٲاٲھارک' سااسکتے
ھیں آج اسی ٲاٲلٲن کی ڊور میں اک ڊسارے سے ھوٲ لگا
رھے ھیں۔

آکل کی سااٲتا نے جو کئی ترھ کی ڳوے کی
ھمارے ساانے کھی کر ڊی ھیں، ان میں سے اک سب سے
اٲیک ڳوے کی اور رالٲانی آیز ٲیٲ "ٲٲاٲھارکاتا" ہے۔

ھم میں سے ٲلوت سے اٲک اس ٲاٲ ٲر ٲلھس کرتے رھتے
ھیں کہ آیز ٲٲاٲھارک یعنی ٲرےکٹکل ہے اور آیز ٲٲاٲھارک
یعنی اٲٲرےکٹکل کے ٲل ہے۔

آب ڊنیا میں ڊرم کا آور ھا تو اٲک لول سااسکتے ٲے
اور کھتے ٲے کہ ماری ڊرم ڊیک اور ڊسارے کا ڊرم رلٲ۔ آج
آب رالٲیٲی کا آور ہے تو اسی ترھ کے لول کھتے ھیں کہ
ماری رال، ماری ساااٲ اور ماری آولنا ٲٲاٲھارک اور ڊسارے
کی اٲٲاٲھارک یا کورا اٲاٲشاٲاڊ۔ مٲلٲ ٲے کہ جو مٲیٲ ڊیک
آولٲے ڊے "ٲٲاٲھارک" (علی) اور جو ڊسارے کو ڊیک
آولٲے ڊے "اٲٲاٲھارک" (رور علی)۔

ٲلوت سی آیزوں جو ٲلھے کورا اٲاٲشاٲاڊ اور رور علی
مالول ھوئی ٲھیں اٲ عل میں آکھیں۔ ٲاٲ، ٲیٲلی، رےٲیو
ھوائی آیز، ٲن ډیٲی، سااٲر روس، آیز، سااٲاٲاڊ، ډیلیٲیٲن
ایٲم ٲم لور ھائوآولن ٲم اس کی آلٲ سااٲیں ھیں۔ ٲل ٲی
ھمارا ٲے "ٲٲاٲھارکاتا" کا ٲلوت آابو میں نہی آتا۔ ڊرلٲ اٲانے
ٲلوں سے ٲلھانا آاتا ہے۔ آکل کے ان آیز رالٲیٲیوں اور
نیتاوں کی اس ٲٲاٲھارکاتا کے نیتاوں ٲر ھم اک لگا ډالکر
ڊیٲیں۔

ٲلھے ڊرم ھی کو لیآیٲے۔ سااٲے ڊرم سے نیکی، سااٲاٲ
اور اک ڊسارے کے ساا اٲمانڊاری کا ٲاٲاٲ ٲیڊا ھونے
ٲاڊے۔ اٲ لگ ٲل سب "ترکتاریاٲا" ٲموں کی رلٲگی سے
ڊرم رلٲ رلٲ مٲ آکا۔ سااٲاٲ میں کورا "اٲلٲا" ٲیڊا
ھوٲکا ہے۔ اک ترلٲ رالٲیٲی اور سااٲر ٲریم اور
ڊساری ترلٲ اٲم سااٲم اور گھسٲے یعنی کویٲک ٲریم، ان ڊوٲوں
کے ٲیٲ ڊے سااٲم آاری ہے کہ ان میں سے کویٲ نہ کویٲ ڊسارے
کو مٲاٲر رھےگا۔

اٲ رالٲیٲی کو لیآیٲے۔ ڊنیا کی ٲارلیمنٲیں اور رالٲن
سااٲیں سااٲی لولوں اور گروھوں کی ٲلھنا ٲانی کے اٲاٲاٲ
ٲی ھوئی ھیں۔ اٲسی آیز، سااٲیٲوں، اک ڊسارے کے
آلٲ ڊھواں ڊھار رلٲیٲیوں، سب اٲانے اٲانے گروھوں کے نام ٲر ھوئی
ھیں۔ سب کے ٲلے کی سااٲنے کا کھن نام نہی

دیکھاई دے گا۔ کلاں اور آج کل اس طرح کے بناتے رہتے ہیں جن سے آپس میں کھڑے اور گھروں کے بیچ سے گزرتے ہوئے ایک ایک کر کے اور بڑے بڑے مہائے میں ایک ایک کر کے اور آدمی مارے گئے اور لگ بھگ سات سو ارب روپے کے مال کا دنیا کا نقصان ہوا۔ بڑی بڑی قوموں پر قرضے کے بوجھ لگ گئے۔ کمزور اور غریب قومیں پڑوسیوں تک کے لئے دوسروں کے یہاں رہن رکھ دی گئیں۔ دوسرے مہائے میں اس سے کئی گنا ادھک پرواہی ہوئی اور آج دوسرے مہائے سے پہلے دنیا کی بڑی بڑی قوموں نے اپنے پنچوں، اپنی چونچوں اور اپنے دانوں کو اتنا پیدا کر لیا ہے اور لوہ لالچ، ایک دوسرے پر اوشاں، گھمٹ اور نفرتوں کا بازار اتنا گرم ہو گیا ہے کہ سب کو تر ہونے لگا ہے کہ اگلے مہائے کے بعد کوئی بھی بچیکا یا نہیں۔ یہ ہے ہماری ”دبا دھارک“ راجدیتی !

اب اوتھ شاستر کو لیجئے۔ ہم ایمانداری سے دیکھیں تو دنیا کی ادھکتر قومیں آج دیوالیہ ہو چکی ہیں یا تیزی سے دیوالیہ پن کی طرف جا رہی ہیں۔ بے کاروں کی تعداد بیس کروڑ سے اوپر تک پہنچ چکی ہے۔ بے کاروں سے پنچ گنے دے ہیں جو ایک دوسرے کی پرواہی کے کاموں میں لگے ہیں۔ پرانے اصول ہے—”ایمانداری سب سے اچھی پالسی ہے“ اور ”ادھار دیا کر تو قرضہ ادا کرنے کے لئے روپیہ پہلے پاس رکھ لو۔“ اب ایسی باتیں ”ادھارک“ سمجھی جاتی ہیں۔ اب اصول ہے—”اندھ جمع ہو یا نہ ہو“ ہوائی ساک پر دیوار بڑھانہ چلو۔“ یہ اصول ”ادھارک“ مانا جاتا ہے۔ اگر کوئی یہ کہہ کہ اس ادھار میں روپیہ کو جو غلط کاریوں پر خرچ کیا جاتا ہے سمجھ کے ساتھ سب کے پہلے کے لئے خرچ کیا جاوے اور دنیا بھر کے بے کاروں کو دھرتی کے اُن بڑے بڑے حصوں پر جہاں ہرے بھرے کھیت اور خوشحال آبادیاں کھڑی کی جاسکتی ہیں جیسے کناڈا، آسٹریلیا، دکن امریکہ، افریقہ میں لیجا کر بسایا جاوے تو اس طرح کی بات سمجھانے والا ”ادھارک“ اور ”کھرا ادھارک“ سمجھا جاتا ہے۔

اب گھریلو جہوں کو لیجئے۔ پچھم کے بہت سے بڑے شہروں میں سال میں جتنی شادیوں ہوتی ہیں اُس سے آدھے سے ادھک طلاق ہوتے ہیں۔ شادی اور طلاق کے بیچ کا سمنے جگہ جگہ کچھ برسوں سے کھلتے کھلتے کچھ مہینے اور اب کچھ ہفتے رہ گیا ہے۔ کر کے کرائے اور اولاد پیدا نہ کرنے کی دواؤں کا بلیے عام پرچار ہوتا ہے۔ یہ ہے ہمارے سدآچار میں انقلاب ! آبادی بھر بھی بڑھتی چلی جا رہی ہے اور کسی بچنے کے ساتھ لوگوں کو جگہ بہ جگہ لیجا کر بساتے کے بجائے روٹی کے لئے کھینچاٹائی اور جنگوں کی سہیڑنا بڑھتی جا رہی ہے۔

اب گھریلو جہوں کو لیجئے۔ پچھم کے بہت سے بڑے شہروں میں سال میں جتنی شادیوں ہوتی ہیں اُس سے آدھے سے ادھک طلاق ہوتے ہیں۔ شادی اور طلاق کے بیچ کا سمنے جگہ جگہ کچھ برسوں سے کھلتے کھلتے کچھ مہینے اور اب کچھ ہفتے رہ گیا ہے۔ کر کے کرائے اور اولاد پیدا نہ کرنے کی دواؤں کا بلیے عام پرچار ہوتا ہے۔ یہ ہے ہمارے سدآچار میں انقلاب ! آبادی بھر بھی بڑھتی چلی جا رہی ہے اور کسی بچنے کے ساتھ لوگوں کو جگہ بہ جگہ لیجا کر بساتے کے بجائے روٹی کے لئے کھینچاٹائی اور جنگوں کی سہیڑنا بڑھتی جا رہی ہے۔

اب گھریلو جہوں کو لیجئے۔ پچھم کے بہت سے بڑے شہروں میں سال میں جتنی شادیوں ہوتی ہیں اُس سے آدھے سے ادھک طلاق ہوتے ہیں۔ شادی اور طلاق کے بیچ کا سمنے جگہ جگہ کچھ برسوں سے کھلتے کھلتے کچھ مہینے اور اب کچھ ہفتے رہ گیا ہے۔ کر کے کرائے اور اولاد پیدا نہ کرنے کی دواؤں کا بلیے عام پرچار ہوتا ہے۔ یہ ہے ہمارے سدآچار میں انقلاب ! آبادی بھر بھی بڑھتی چلی جا رہی ہے اور کسی بچنے کے ساتھ لوگوں کو جگہ بہ جگہ لیجا کر بساتے کے بجائے روٹی کے لئے کھینچاٹائی اور جنگوں کی سہیڑنا بڑھتی جا رہی ہے۔

اب گھریلو جہوں کو لیجئے۔ پچھم کے بہت سے بڑے شہروں میں سال میں جتنی شادیوں ہوتی ہیں اُس سے آدھے سے ادھک طلاق ہوتے ہیں۔ شادی اور طلاق کے بیچ کا سمنے جگہ جگہ کچھ برسوں سے کھلتے کھلتے کچھ مہینے اور اب کچھ ہفتے رہ گیا ہے۔ کر کے کرائے اور اولاد پیدا نہ کرنے کی دواؤں کا بلیے عام پرچار ہوتا ہے۔ یہ ہے ہمارے سدآچار میں انقلاب ! آبادی بھر بھی بڑھتی چلی جا رہی ہے اور کسی بچنے کے ساتھ لوگوں کو جگہ بہ جگہ لیجا کر بساتے کے بجائے روٹی کے لئے کھینچاٹائی اور جنگوں کی سہیڑنا بڑھتی جا رہی ہے۔

راہیڑیوں کے ہاتھوں میں بچوں کی پیدائش بے رحمی سے ہو رہی ہے۔
پانچویں اور گیارہویں صدیوں کی گنتی دنیا بھر میں ہو رہی ہے۔
بہت جگہ تو بچے ہی ان برائوں کے ساتھ لے کر پھینک دیے جاتے ہیں۔
سب سے پہلے سچے وچارے اور تعلیمیت کا کہیں پتہ نہیں۔ گھروں کے
اندروں ”چاندی دیکھ کر پتہ پتہ“ جیسی باتیں اب غیر عملی
مانی جاتی ہیں۔ کوئی یہ کہہ کہ ایک ایک راشن کارڈ کا
انتظام اسی طرح ہونا چاہئے جس طرح ایک ایک گھر
کا، یعنی یہ کہ ایک حد کے اندر اور جہاں تک ہو سکے
وہ راشن اپنی ضرورت کی چیزیں خود تیار کرے اور اپنے پیسوں پر
کھرا ہو، تو اس طرح کے سچے وچارے عملی بنائے جاتے ہیں!

اب تعلیم کو لیجئے۔ پرانا اصول تھا ”سادہ زندگی بسر
کو اور اپنے وچاروں کو اُونچا رکھو۔“ اب کہا جاتا ہے ”اپنی
ضرورتوں کو بڑھاتے جانا اور ان ضرورتوں کو پورا کرنے کے سادہ
کو بھی لگاتار بڑھاتے جانا اسی کا نام سہولیت ہے۔“ سائنس آج
نیکی اور پروپیگنڈا کے راستے سے ہٹ کر لوگوں کی بری
اور آپسی نفرتوں کو پورا کرنے کے لئے ایک گندے سادہ
کام دے رہی ہے۔ گیسوں تیار کی جارہی ہیں جنہیں ہوائی
جہاز سے ہر سال لکڑی، ٹیوبارک اور برلن جیسے شہروں کی کل
آبادی کو چند گھنٹوں کے اندر دم گھوٹ کر ختم کیا جا سکتا
ہے۔ چہرے پہار کے تجربوں میں زندہ انسان بچے اور بالغ مرد
عورت تک کام میں لائے جاتے ہیں۔ اخباروں کا ادھنکار
رہ گیا ہے ایک بڑے پیمانے پر جھوٹا پروپیگنڈا، جھوٹے
اُستہار اور جھوٹے سچی روشنی دینے کی جگہ انہیں پورا پورا
دنیا۔ پرانا اصول تھا کہ دنیا مل کر چلنے کے لئے ہے اور ایک
دوسرے کے لئے قربانیاں کرتے ہوئے ہی ہم آگے بڑھ سکتے ہیں۔
یہ ”ویاوارک“ بات بتائی جاتی ہے۔ ویارک اصل اب
یہ بتا یا جاتا ہے کہ ہر آدمی کا جیون ایک لگانا ”سنگھڑش“
ہے، جو جتنوں کو مٹا سکے اتنا ہی اُس کا جیون سہل ہو گا۔
یہ ہے آج کل کی ”ویاوارک“!

کلا اور منورجن میں آجکل کے بڑے شہروں کے رات کے
جیون پر جو کہا جا سکے وہ تھوڑا ہے۔ شراب، بدچلتی، دولت
کی چاٹ ہی جیون میں سہ پیدا کرنے کے ایک ماتر سادہ
وہ گتے ہیں۔ نیتک یا آدھیاتمک یعنی اخلاقی اور روحانی
سہ کوئی چیز ہی نہیں رہی۔ قدرت کے ساتھ میل یا سپرک
کی تو ہمارے جیون میں کوئی جگہ ہی نہیں رہی۔

پچھم کی بڑی سے بڑی قومیں آج اسی بات کو
سب سے زیادہ ”ویاوارک“ مانتی ہیں کہ دوسری کمزور
اور نردھن قومیں کو خود اپنے ہی یہاں کے کمزور
اور نردھن لوگوں کو چٹنا ہو سکے چوس کر، آرتھک

کلا اور منورجن میں آجکل کے بڑے شہروں کے رات
کے جیون پر جو کہا جا سکے وہ تھوڑا ہے۔ شراب،
بدچلتی، دولت کی چاٹ ہی جیون میں سہ پیدا کرنے کے
ایک ماتر سادہ وہ گتے ہیں۔ نیتک یا آدھیاتمک
یعنی اخلاقی اور روحانی سہ کوئی چیز ہی نہیں
رہی۔ قدرت کے ساتھ میل یا سپرک کی تو ہمارے
جیون میں کوئی جگہ ہی نہیں رہی۔

پچھم کی بڑی سے بڑی قومیں آج اسی بات کو
سب سے زیادہ ”ویاوارک“ مانتی ہیں کہ دوسری کمزور
اور نردھن قومیں کو خود اپنے ہی یہاں کے کمزور
اور نردھن لوگوں کو چٹنا ہو سکے چوس کر، آرتھک

نیگاھ سے بھی چوس کر اور راجنیتک نگاہ سے بھی چوس کر اپنی "شاندار سہولت" کو قائم رکھا جائے !

یہ سب گوراہیوں کے بل ایک ایسے व्यापک और वैज्ञانिक धर्म की मद्द سے और एक ऐसे समाज संगठन के जरिये ही दूर हो सकती हैं जो इस धरती की सारी मानव जाति को अपने अंदर समा सके.

दुनिया के राजनीतिज्ञों और नेताओं को चाहिये कि वे केवल 'राष्ट्रीय' या नेशनेलिस्ट न होकर 'मानवीय' यानी ह्यूमेनिस्ट हों, और समाज संगठन की इस तरह की योजनाएँ तैयार करें और दुनिया के सामने रखें, जिनमें सबकी सब जरूरतें पूरी हो सकें और सबके दिलों को तसल्ली और संतोष मिल सके. लोग नारों और फिक्रों के चक्कर में न पड़कर मेल और सबके भले की बातें सोचें. पूरब और पच्छिम, एशिया और योरप आज एक दूसरे के काफी निकट आ गए हैं और आ रहे हैं. दोनों में कमजोरियाँ हैं. दोनों में गुण हैं. दुनिया के नेताओं का काम है कि दोनों की कमजोरियों को दूर करते हुए दोनों के गुणों को चमकावें और सबको सबके गुणों से फायदा उठाने का मौका दें. पुराना पूरब और नया पच्छिम दोनों का आज गठबन्धन हो रहा है. क्रुदरत दोनों का आज संगम चाहती है और पूरा पूरा संगम चाहती है. हमें अपनी योजनाओं और उनके अमल से यह साबित करना है कि क्रुदरत ने पूरब और पच्छिम को निकट लाकर गलती नहीं की, और इनको निकट लाना शैतान का काम नहीं है बल्कि भलाई के फरिश्ते का काम है. यही इस समय दुनिया के सामने काम करने का है. यही व्यावहारिक बात है, अमली है बाक़ी सब और अमली.

रेल, जहाज़, हवाई जहाज़ इन सबने मिलकर बनावटी राजनैतिक सीमाओं का तोड़ दिया है. सब क़ौमों के अच्छे से अच्छे लोग समझ रहे हैं और कह रहे हैं कि हमें अब दुनिया भर के एक संगठन की आवश्यकता है जो हमें बरबादी से बचा सके. एच. जी. वैंल्स ने अपनी किताब "ए शार्ट हिस्ट्री आफ़ दी वर्ल्ड" में लिखा है कि—"पुराने डंग के अलग अलग बिलकुल खुदमुख्तार राष्ट्र अब नहीं चल सकते." दुनिया के नेक और अच्छे दिमाग़ किस तरह सोच रहे हैं इसकी एक मिसाल सन् 1933 के शिकागो के वर्ल्ड फ़ेलोशिप आफ़ फ़ेड्स के जलसे में ईसाई पादरी डा. डी. करटिस. डब्लू. रीज़ की तक्रारी थी. उनके कुछ फ़िक्रारे हम नीचे देते हैं. उन्होंने कहा कि :—

"राजशाही, लोकशाही और कम्युनिस्ट तीनों तरह के देशों में एक बड़े पैमाने पर समाज का फिर से संगठन करने की योजना तैयार करने का विचार बढ़ता जा रहा है. लोग

नगाह से भी चوس کر اور راجنیتک نگاہ سے بھی چوس کر اپنی "شاندار سہولت" کو قائم رکھا جائے !

۔ بہ سب ہوائی کھول ایک ایسے دبا پک اور ریگنٹک دھرم کی مدد سے اور ایک ایسے سماج سنگٹھن کے ذریعہ ہی دور ہو سکتی ہیں جو اس دھرتی کی ساری مالتو جاتی کو اپنے اندر سما سکے .

دنیا کے راج نیتکوں اور نیتاؤں کو چاہئے کہ وہ کھول 'رائٹریہ' یا فہشلیسٹ نہ ہو کر 'مانویہ' یعنی 'ہیومنسٹ' ہوں اور سماج سنگٹھن کی اس طرح کی یوجناٹیں تیار کریں اور دنیا کے سامنے رکھیں جن میں سب کی سب ضرورتوں پوری ہو سکیں اور سب کے دلوں کو تسلی اور سنگٹھش مل سکے . لوگ نعروں اور فقروں کے چکر میں نہ پڑ کر مہل اور سب کے بیلے کی باتیں سوچیں . یورپ اور پچیم ایشیا اور یورپ آج ایک دوسرے کے کٹی نکٹ آگئے ہیں اور آ رہے ہیں . دونوں میں کمزوریاں ہیں . دونوں میں گن ہیں . دنیا کے نیتاؤں کا کام ہے کہ دونوں کی کمزوریوں کو دور کرتے ہوئے دونوں کے گنوں کو چمکاویں اور سب کو سب کے گنوں سے دایہ اٹھانے کا موقع دیں . پرانا یورپ اور نیا پچیم دونوں کا آج گم بندھن ہو رہا ہے . قدرت دونوں کا آج سنگم چاہتی ہے اور پورا پورا سنگم چاہتی ہے . ہمیں اپنی یوجناٹوں اور اُن کے عمل سے یہ ثابت کرنا ہے کہ قدرت نے یورپ اور پچیم کو نکٹ لا کر غلطی نہیں کی ، اور اُن کو نکٹ لانا شیطان کا کام نہیں ہے بلکہ بھائی کے فوشے کا کام ہے . یہی اس سنگم دنیا کے سامنے کام کرنے کو ہے . یہی ویاوہارک بات ہے ، علی ہے ، باقی سب غیر علی .

ریل ، جہاز ، ہوائی جہاز ان سب نے مل کر بناوٹی راج نیتک سہاؤں کو توڑ دیا ہے . سب قوموں کے اچھے سے اچھے لوگ سمجھ رہے ہیں اور کہہ رہے ہیں کہ ہمیں اب دنیا بھر کے ایک سنگٹھن کی اوشیکتا ہے جو ہمیں ہر بادی سے بچا سکے . ایچ . جی . ویلس نے اپنی کتاب "اے شارٹ ہسٹری اب دی ورلڈ" میں لکھا ہے کہ—"ہر آلے تھنگ کے الگ الگ بالکل خرد مختار رائٹر اب نہیں چل سکتے" دنیا کے نہک اور اچھے دماغ کس طرح سوچ رہے ہیں اس کی ایک مثال سن 1933 کے شکاگو کے ورلڈ فیلو شپ آف فہٹھس کے جلسہ میں عیسائی پادری ڈائمر تی کرٹس ڈبلیو . ریڈ کی تقریر تھی . اُن کے کچھ فقرے ہم نیچے دیتے ہیں . انہوں نے کہا کہ :—

"اچ شعلی" لوگ شاعی اور کمہونسٹ فیلوں طرح کے دیشوں میں ایک بڑے پیمانے پر سماج کا پیر سے سنگٹھن کرنے کی یوجنا تیار کرنے کا وچار پوھتا جا رہا ہے . لوگ

اب دیر تک آگے دیکھ لے ہیں۔ اس کے بعد جاپان، جرمنی، فرانس، انگلینڈ، اٹلی، اسپین اور امریکا میں اس طرح کی کوششوں کو بیان کرنے کے بعد ڈاکٹر ریڈ نے کہا کہ:—”اس میں شک نہیں کہ اشتراکیت یوجناؤں کے تیار کرنے میں روس کی یوجنا اور روس کی مثال سب سے ادھک چمکتی ہوئی ہے۔ یہ یوجنا ان وچاروں کو سامنے رکھ کر بنائی گئی ہے کہ کیا کیا چیزیں پیدا کی جاویں، کتنی پیدا کی جاویں، کب اور کہاں پیدا کی جاویں، کتنی پیدا کی جاویں... اس میں کسی اشخاص کی بات نہیں کہ روس بدلتا آگے بڑھ رہا ہے۔ روس کا فلسفہ سماجک نیٹرن کا فلسفہ ہے یعنی سماج پر قابو اور سماج کا اپنے اوپر قابو۔ روس کی یوجنا ایک ویاپک یوجنا ہے۔ اس میں ہر تفسیل کی طرف دھیان دیا گیا ہے۔ اس لئے اس کی کامیابی میں لگ بھگ کوئی شک نہیں ہو سکتا۔ یہ کہنا بھی بڑھا کر بات کرنا نہ ہوگا کہ روس میں جس طرح کی یوجنا بنائی جا رہی ہیں ان کا رنگ دھنگ اور ان کا مقصد دھارمک (Religious) ہے۔“ آگے چل کر ڈاکٹر ریڈ نے کہا ہے کہ:—”سماج کا مقصد ایک ایسا سماج قائم کرنا ہے جن میں الگ الگ اُنچے نیچے جماعتیں نہ ہوں (a classless society)۔ یہ مقصد جب ساری دنیا کے لئے لگا یا جائے تو الگ الگ جماعتوں کے بیچ کے سنگھڑے کے زورے پن کے سامنے یہ کہیں ادھک شکتی شالی چیز ہوگا۔“

جہاں تک امیر اور غریب اور جنم سے جات پات کا سوال ہے وہاں تک یہ بالکل ٹھیک ہے کہ ہمیں ایک ایسا سماج بنانا ہے جس میں اس طرح کی جماعتوں کا فرق بالکل ہی نہ رہے۔ پر دنیا میں سب جگہ چار طرح کے آدمی ہیں، چار طرح کے قدرتی شوق اور ان کی چار طرح کی اہلیاں ہوا پر رہنے کی، کچھ ودیا پریمی، کچھ حکومت پریمی، کچھ دھن پریمی اور کچھ کیول سہوا پریمی۔ اس فرق کو ہی نہ سمجھ پانا اس سلسلے کے روسی تجربے کی ایک مائت ہے۔ اس کے کارن غلطیاں بھی ہو رہی ہیں۔ اس لئے لٹ چھانٹ بھی کرنی پڑ رہی ہے۔ پر خوشی کی بات ہے کہ اس بڑے تجربے کی ساری پالیسی میں سدھار اور تبدیلیاں ہی ہوتی جا رہی ہیں۔

دُنیا کے अध्याپकों का कर्ज है कि इन सब चीजों को ठीक ठीक समझें और आइन्दा की नसलों को समझावें۔

اب دور تک آگے دیکھ لے ہیں۔ اس کے بعد جاپان، جرمنی، فرانس، انگلینڈ، اٹلی، اسپین اور امریکا میں اس طرح کی کوششوں کو بیان کرنے کے بعد ڈاکٹر ریڈ نے کہا کہ:—”اس میں شک نہیں کہ اشتراکیت یوجناؤں کے تیار کرنے میں روس کی یوجنا اور روس کی مثال سب سے ادھک چمکتی ہوئی ہے۔ یہ یوجنا ان وچاروں کو سامنے رکھ کر بنائی گئی ہے کہ کیا کیا چیزیں پیدا کی جاویں، کتنی پیدا کی جاویں، کب اور کہاں پیدا کی جاویں، کتنی پیدا کی جاویں... اس میں کسی اشخاص کی بات نہیں کہ روس بدلتا آگے بڑھ رہا ہے۔ روس کا فلسفہ سماجک نیٹرن کا فلسفہ ہے یعنی سماج پر قابو اور سماج کا اپنے اوپر قابو۔ روس کی یوجنا ایک ویاپک یوجنا ہے۔ اس میں ہر تفسیل کی طرف دھیان دیا گیا ہے۔ اس لئے اس کی کامیابی میں لگ بھگ کوئی شک نہیں ہو سکتا۔ یہ کہنا بھی بڑھا کر بات کرنا نہ ہوگا کہ روس میں جس طرح کی یوجنا بنائی جا رہی ہیں ان کا رنگ دھنگ اور ان کا مقصد دھارمک (Religious) ہے۔“ آگے چل کر ڈاکٹر ریڈ نے کہا ہے کہ:—”سماج کا مقصد ایک ایسا سماج قائم کرنا ہے جن میں الگ الگ اُنچے نیچے جماعتیں نہ ہوں (a classless society)۔ یہ مقصد جب ساری دنیا کے لئے لگا یا جائے تو الگ الگ جماعتوں کے بیچ کے سنگھڑے کے زورے پن کے سامنے یہ کہیں ادھک شکتی شالی چیز ہوگا۔“

جہاں تک امیر اور غریب اور جنم سے جات پات کا سوال ہے وہاں تک یہ بالکل ٹھیک ہے کہ ہمیں ایک ایسا سماج بنانا ہے جس میں اس طرح کی جماعتوں کا فرق بالکل ہی نہ رہے۔ پر دنیا میں سب جگہ چار طرح کے آدمی ہیں، چار طرح کے قدرتی شوق اور ان کی چار طرح کی اہلیاں ہوا پر رہنے کی، کچھ ودیا پریمی، کچھ حکومت پریمی، کچھ دھن پریمی اور کچھ کیول سہوا پریمی۔ اس فرق کو ہی نہ سمجھ پانا اس سلسلے کے روسی تجربے کی ایک مائت ہے۔ اس کے کارن غلطیاں بھی ہو رہی ہیں۔ اس لئے لٹ چھانٹ بھی کرنی پڑ رہی ہے۔ پر خوشی کی بات ہے کہ اس بڑے تجربے کی ساری پالیسی میں سدھار اور تبدیلیاں ہی ہوتی جا رہی ہیں۔

دُنیا کے ادھیاپکوں کا فرض ہے کہ ان سب چیزوں کو ٹھیک ٹھیک سمجھیں اور اُنکے کی نسلوں کو سمجھاویں۔

अकबरी राज के उसूल

اکبری راج کے اصول

डाक्टर ताराचन्द

ठाकुर तारा چند

यूँ तो दुनिया की तारीख में बहुत से बड़े राजा हुए हैं जिन्होंने क्रीमों के जीवन पर अपना सिक्का जमाया है। किसी ने लड़ाइयों में देशों को जीत कर बड़े साम्राज कायम किए; किसी ने प्रजा की भलाई के काम किए और धन-दौलत को बढ़ाया; किसी ने कलाओं को तरक्की दी, सुन्दर इमारतें बनवाईं, नहरें और तालाब खुदवाए, नगर बसाए; किसी ने सरकारी संगठन को सुधारा, राजा और प्रजा के सम्बन्धों को मजबूत किया, न्याय की नाँव पर राज का मन्दिर खड़ा किया; और किसी ने लोगों में धर्म का प्रचार किया, इस लोक के साथ परलोक के हित को सँवारा, मेल जोल और प्रेम के रिश्तों को बढ़ाया और आदिमियों के चलन पर गहरा असर डाला। पर ऐसे राजा बिरले ही दिखाई देते हैं जिन्होंने इन सब अंगों में काम कर दिखाया हो। इन बिरले राजाओं में अकबर का नाम सबसे ऊँची पाँत में रखने के लायक है।

अकबर के कामों का व्योरा लें तो मालूम होता है कि वह सब गुणों से पूरा था। जिस वक्त उसके बाप की मौत हुई उसकी उम्र तेरह बरस की थी और सिवाय पंजाब के कुछ जिलों और देहली के सारा हिन्दुस्तान गैरों के हाथ में था। अकबर चारों तरफ दुश्मनों से घिरा हुआ था। उसने अपने अद्भुत बल और कौशल से सब बैरियों को हराया और हिमालय से सतपुड़ा तक सारे देश पर मुराल राज कायम किया। वह लड़ाई में जिस तेजी और बहादुरी से काम करता था उसे देखकर अश्मभा होता है। उसके धावों की ऐसी धाक थी कि दुश्मन उसके नाम से दहलते थे। उसकी जंगी क़ाबलियत की सबसे बड़ी मिसालें 1581 की बराबत का दबाना और सरहद्दी सूबों का जीतना है। यह वह साल था जब अकबर की धर्मनीति से कट्टर मुसलमानों में बड़ी हलचल फैली थी। उन्होंने उसके भाई मुहम्मद हकीम को जो काबुल में हाकिम था उकसाया, उधर मुल्ला मुहम्मद कश्मी ने जो जौनपुर का क़ाज़ी था बादशाह के खिलाफ़ फतवा दे दिया और बराबत को धर्म के अनुकूल ठहराया। बंगाल और बिहार के अफसरों ने अकबर के हुक्मों को मानने से इन्कार कर दिया। इस आड़े वक्त में जब बैर की आग चारों तरफ़ भड़क रही थी और बहुत से मुसलमानों के दिलों में राज के लिए दुविधा पैदा हो गई थी अकबर ने

यों तो दुनिया की तारीख में बहुत से बड़े राजा हुए हैं जिन्होंने क्रीमों के जीवन पर अपना सिक्का जमाया है। किसी ने लड़ाइयों में देशों को जीत कर बड़े साम्राज कायम किए; किसी ने प्रजा की भलाई के काम किए और धन-दौलत को बढ़ाया; किसी ने कलाओं को तरक्की दी, सुन्दर इमारतें बनवाईं, नहरें और तालाब खुदवाए, नगर बसाए; किसी ने सरकारी संगठन को सुधारा, राजा और प्रजा के सम्बन्धों को मजबूत किया, न्याय की नाँव पर राज का मन्दिर खड़ा किया; और किसी ने लोगों में धर्म का प्रचार किया, इस लोक के साथ परलोक के हित को सँवारा, मेल जोल और प्रेम के रिश्तों को बढ़ाया और आदिमियों के चलन पर गहरा असर डाला। पर ऐसे राजा बिरले ही दिखाई देते हैं जिन्होंने इन सब अंगों में काम कर दिखाया हो। इन बिरले राजाओं में अकबर का नाम सबसे ऊँची पाँत में रखने के लायक है।

अकबर के कामों का व्योरा लें तो मालूम होता है कि वह सब गुणों से पूरा था। जिस वक्त उसके बाप की मौत हुई उसकी उम्र तेरह बरस की थी और सिवाय पंजाब के कुछ जिलों और देहली के सारा हिन्दुस्तान गैरों के हाथ में था। अकबर चारों तरफ़ दुश्मनों से घिरा हुआ था। उसने अपने अद्भुत बल और कौशल से सब बैरियों को हराया और हिमालय से सतपुड़ा तक सारे देश पर मुराल राज कायम किया। वह लड़ाई में जिस तेजी और बहादुरी से काम करता था उसे देखकर अश्मभा होता है। उसके धावों की ऐसी धाक थी कि दुश्मन उसके नाम से दहलते थे। उसकी जंगी क़ाबलियत की सबसे बड़ी मिसालें 1581 की बराबत का दबाना और सरहद्दी सूबों का जीतना है। यह वह साल था जब अकबर की धर्मनीति से कट्टर मुसलमानों में बड़ी हलचल फैली थी। उन्होंने उसके भाई मुहम्मद हकीम को जो काबुल में हाकिम था उकसाया, उधर मुल्ला मुहम्मद कश्मी ने जो जौनपुर का क़ाज़ी था बादशाह के खिलाफ़ फतवा दे दिया और बराबत को धर्म के अनुकूल ठहराया। बंगाल और बिहार के अफसरों ने अकबर के हुक्मों को मानने से इन्कार कर दिया। इस आड़े वक्त में जब बैर की आग चारों तरफ़ भड़क रही थी और बहुत से मुसलमानों के दिलों में राज के लिए दुविधा पैदा हो गई थी अकबर ने

تجربہ اور حوصلہ سے کام لیا۔ یہ دیکھ کر ہی دیکھ کر
ٹنڈا ہوا، دھرمیوں کو پناہ مانگنی پڑی اور
ان کا کام ہو گیا۔

کتنے کے آٹھ برس بعد اکبر نے ہندوستان
میں—کشمیر، افغانستان، سندھ، بلوچستان—پر اس خیال
سے قبضہ کرنے کی تہائی کہ ان کے پرے مدھیہ ایشیا میں
اوپر کے زور بڑھ رہا تھا۔ تازہ کے پانچ کی طرح اپنی فوجوں
کو پہلے اس نے اپنے دیہہ کی رچنا کی کہ کچھ ہی دنوں
میں سب ملکوں کو اپنے راج میں ملا لیا اور ہندستان کو
پوری حلقہ کرنے والوں کے منصوبوں سے بچایا۔

اس فتنہ کے آٹھ برس بعد اکبر نے ہندستان کے سرحدی
میں—کشمیر، افغانستان، سندھ، بلوچستان—پر اس خیال
سے قبضہ کرنے کی تہائی کہ ان کے پرے مدھیہ ایشیا میں
اوپر کے زور بڑھ رہا تھا۔ تازہ کے پانچ کی طرح اپنی فوجوں
کو پہلے اس نے اپنے دیہہ کی رچنا کی کہ کچھ ہی دنوں
میں سب ملکوں کو اپنے راج میں ملا لیا اور ہندستان کو
پوری حلقہ کرنے والوں کے منصوبوں سے بچایا۔

یہ اور شہریت کی مہماتوں سے اس کا جیون بھرا ہوا
ہے۔ ان میں بہت سی باتوں کے کچلنے کے سلسلہ میں
ملتی ہیں۔ ایک کا یہاں ذکر کیا جاتا ہے۔ اکبر نے 1572
میں گجرات کا صوبہ جیتا اور وہاں اپنا صوبیدار مقرر کیا۔
جب وہ لوٹ کر آگئے آیا تو صوبیدار نے خبر دی کہ اکبر کے
دشمنوں نے بلوچ چاڑھوں اور صوبہ کے امن کو بگاڑ دیا
ہے۔ اکبر نے خبر پاتے ہی تیزی شروع کی اور 23 اگست
1573 کے دن آگئے سے کوچ کر دیا۔ ایک ایک دن میں آگئے
اور گھوڑے کی سواری سے پچاس پچاس میل کا سفر طے کیا اور
چھ سو میل کا راستہ نو دن میں پورا کر احمد آباد آدھکا۔
اس کے ساتھ کل 3000 سواروں کی فوج تھی اور دشمنوں کی
تعداد 20,000 سے زیادہ تھی۔ ساہی کے کڈارے ابھی نفاذ
کی آواز گونجتی تو دشمنوں کو بڑا اچڑھوا۔ ان کے منہ
لے خبر دی تھی کہ دس روز پہلے اکبر فتح پور سیکری میں
آگئے کرتا تھا، یہ کیسے ہو سکتا تھا کہ اتنی جلدی گجرات پہنچ
جائے! نہ شاہی ہاتھی نظر آتے تھے، نہ خیمے اور قلعے۔
پر کانوں کی ساکشی بھی چھوٹ نہیں ہو سکتی تھی۔ ابھی
دشمن اچھلے سے سنبھلے نہ تھے کہ اکبر نے لکڑا۔ نہ دشمن کی
تعداد کا وچار کیا، نہ اپنے صوبیدار کی کمک کے آئے کا۔ بڑھکر
گھوڑے کو دریا میں ڈال دیا اور اپنا اُس پار جا پہنچا۔
دشمنوں کی صفوں پر خونخوار شہر کی طرح دھاوا کیا۔ انہیں
چھوٹا پھارتا بڑھا اور ان کے سردار کو پکڑ لیا۔ دوسری فوج جو
گھٹ میں لگی تھی اب اس پر ٹوٹ پڑی۔ پر اس کے سوا
قر سے ایسے بوکھلے کہ اکبر کے سواروں نے انہیں کے ترکشوں میں
سے تھوڑا نکالے اور ان پر ہراسہ۔ اس فوج کا سردار بھی بھاگ
گیا اور باقیوں کا خاتمہ ہو گیا۔

پر اکبر بہادر سپاہی، جوشیلہ وجیتا اور بدھیمان
سپاہی ہی نہیں تھا جس نے ایک وصال سہرا
کی تھوڑی، اس نے پوجا کی پٹائی کی بہت سی

عالمیہ پہلے کی، ہندوستان کوئی پرانے کا۔ اچانک نے زمین کے بندوبست کے لیے ڈیڑھ لاکھ سال کی مدد سے ایسی سرکاری کی کہ کارکنوں پر سکتی نہ ہو۔ اور سرکاری مالگاری بھی آسانی سے وصول ہو جائے۔ اسے آبادی بڑھانے اور کوئی کی سرکاری کی سدا لگن رہتی تھی۔ اس کے زمانے میں دستکاری میں خوب ورنیت ہوئی، اس کے کارخانوں میں اچھے سے اچھے کاریگر رہتے تھے اور وہ کلاسیکوں کے گروں کا بڑا گاہک تھا۔ ہندوستان کے بننے مال کی ساری دنیا میں کدور ہوتی تھی۔ ایشیا اور یورپ کے سبھی دیشوں سے تجارت کے لئے آتے تھے۔ ہندوستان سہتم اور ساہوکار دنیا کے لکھنوں کا مقابلہ کرتے تھے۔ درودہ گئی اور اناج کی انی بھونات تھی کہ اس زمانے میں جتنے پانی یورپ سے یہاں آئے سبھی نے ان کے سیکرین کی گواہی دی ہے۔ اسی سے رعایا سکی اور خوشحال تھی۔

اچانک کو سرکاری انتظام کے ماملوں میں جیسی سوجھ بوجھ تھی اس کا اندازہ اس کے فوجی اور دیوانی سنگتوں سے ہو سکتا ہے۔ یہ سنگتوں اچانک کے وقت میں قائم ہوا پر آج بھی قریب پورے چار سو برس بیتانے پر اس کی روپ دیکھا جاتا ہے۔ انگریزوں کو اس بات کا گھمڈ ہے کہ ان کی قوم نے ریاستی انتظام میں دنیا کو راہ دکھائی ہے۔ پر انہوں نے بھی ہندوستان میں اچانک بھادوں پر ہی اپنی حکومت کی عمارت کھڑی کی۔ جیسا کہانچہ کل ہند صوبوں اور سرکاروں کی حکومت کا اس وقت بنا تھا اسی کی نقل تھوڑے بڑے روپ میں آج بھی دکھائی دیتی ہے۔ اچانک کے منصبداروں سنگتوں کی جگہ سول سروس نے لی ہے، فرق اتنا ہی ہے کہ آج فوجی اور دیوانی کام بالکل الگ کورڈ گئے ہیں، اس زمانے میں وہ ملے تھے اور ایک ہی افسر کے اختیار میں تھے۔ جس طرح بادشاہ اور اس کے وزیر سارے دیش کی دیکھ بھال کرتے تھے اسی طرح وائسرائے اور اس کی انتظامی کونسل (ایگزیکٹو کونسل) ملک پر حکومت کرتے تھے۔ ایک بات میں اچانک کی حکومت کو آجکل کی حکومت پر ترجیح تھی۔ اچانک اور اس کے وزیر ہندوستانی تھے۔ اچانک نے کئی بار ہندوں کو سب سے اونچے عہدوں پر نہایت کیا۔ انگریزی راج کے قیام سے سو برس بیتانے پر بھی ہاگڈور انگریزوں کے ہی ہاتھ میں رہی۔ انگریز نہ خود ہندوستانی بلکہ نہ انہوں نے ہندوستانیوں کو اپنا اور نہ اپنے برابر مانا۔

اگر کا، سنگت، کوہتا، سائنس اور فلسفہ کی طرف دھیان دیں تو معلوم ہوتا ہے کہ اچانک نے ان کی ایسی دل کھول کر دیو کی اور ان کا ایسی ادارا کے ساتھ پالن پرش کیا کہ ہر طرف انوکھی ترقی، ہر فن میں عجیب گہائی، دکھائی دیا۔ لکی۔ چتر کا میں اس نے

اچانک کو سرکاری انتظام کے معاملوں میں جیسی سوجھ بوجھ تھی اس کا اندازہ اس کے فوجی اور دیوانی سنگتوں سے ہو سکتا ہے۔ یہ سنگتوں اچانک کے وقت میں قائم ہوا پر آج بھی قریب پورے چار سو برس بیتانے پر اس کی روپ دیکھا جاتا ہے۔ انگریزوں کو اس بات کا گھمڈ ہے کہ ان کی قوم نے ریاستی انتظام میں دنیا کو راہ دکھائی ہے۔ پر انہوں نے بھی ہندوستان میں اچانک بھادوں پر ہی اپنی حکومت کی عمارت کھڑی کی۔ جیسا کہانچہ کل ہند صوبوں اور سرکاروں کی حکومت کا اس وقت بنا تھا اسی کی نقل تھوڑے بڑے روپ میں آج بھی دکھائی دیتی ہے۔ اچانک کے منصبداروں سنگتوں کی جگہ سول سروس نے لی ہے، فرق اتنا ہی ہے کہ آج فوجی اور دیوانی کام بالکل الگ کورڈ گئے ہیں، اس زمانے میں وہ ملے تھے اور ایک ہی افسر کے اختیار میں تھے۔ جس طرح بادشاہ اور اس کے وزیر سارے دیش کی دیکھ بھال کرتے تھے اسی طرح وائسرائے اور اس کی انتظامی کونسل (ایگزیکٹو کونسل) ملک پر حکومت کرتے تھے۔ ایک بات میں اچانک کی حکومت کو آجکل کی حکومت پر ترجیح تھی۔ اچانک اور اس کے وزیر ہندوستانی تھے۔ اچانک نے کئی بار ہندوں کو سب سے اونچے عہدوں پر نہایت کیا۔ انگریزی راج کے قیام سے سو برس بیتانے پر بھی ہاگڈور انگریزوں کے ہی ہاتھ میں رہی۔ انگریز نہ خود ہندوستانی بلکہ نہ انہوں نے ہندوستانیوں کو اپنا اور نہ اپنے برابر مانا۔

اگر کا، سنگت، کوہتا، سائنس اور فلسفہ کی طرف دھیان دیں تو معلوم ہوتا ہے کہ اچانک نے ان کی ایسی دل کھول کر دیو کی اور ان کا ایسی ادارا کے ساتھ پالن پرش کیا کہ ہر طرف انوکھی ترقی، ہر فن میں عجیب گہائی، دکھائی دیا۔ لکی۔ چتر کا میں اس نے

اگر کا، سنگت، کوہتا، سائنس اور فلسفہ کی طرف دھیان دیں تو معلوم ہوتا ہے کہ اچانک نے ان کی ایسی دل کھول کر دیو کی اور ان کا ایسی ادارا کے ساتھ پالن پرش کیا کہ ہر طرف انوکھی ترقی، ہر فن میں عجیب گہائی، دکھائی دیا۔ لکی۔ چتر کا میں اس نے

ایک نئے ہنگامے کی ایجاد کی جس میں ایرانی اور ہندو طرز کو ایسے سمیٹا کہ ایک نیا اور انوکھا تہنگ پیدا ہو گیا۔ بہزاد اور اجنٹا کو ایک سانچے میں ڈھال کر ہندوستانی قلم کا خوبصورت طرز پیدا کیا۔ اس طرز کے استاد خواجہ عبدالصمد شہر میں قلم 'دسوتہ' اور ہزاروں تہ عبارت کی تلامیں یہی بات پیدا کی۔ اسلامی اور ہندو طریقوں کو اس خوبی سے ملایا کہ ایک نیا شاندار طرز بن گیا۔ فتح پور سیکری میں اس طرح کی عبارتوں کے نمونے آج بھی اکبر کے خوبصورتی کے سپنے کے نشان دکھاتے ہیں۔ سنگیت میں 'ان سین اور بابا ہریداس کے نام اکبری دربار کی یاد سدا زندہ رکھیں گے۔' ادب کے میدان میں ان میں 'چندر لکھ' اٹھا کر دیکھئے اکبر کے فیض کی تصویریں سامنے آتی ہیں۔ 'سوردا'س، 'ہریداس'، 'گنگ بیٹ'، 'نرہری'، 'پرمانند'، 'مادھو'، 'رحیم'، 'ہرج بہاشا کے کوئی'، 'وٹیل'، 'کرشن داس'، 'گنگا دھر'، 'نرسنگم'، 'بھانو چند'، 'سدھ چند'، 'ناراین بیٹ'، 'نہل کنگ'، 'کالہداس'، 'سلسکرت' کے ودوان اس کے آشرئے میں رہتے تھے۔ فارسی کے شاعر، تاریخ دان، 'نجمی'، 'ادیب'، فلسفی بڑی تعداد میں انعام اکرام اور تاختواہوں پاتے تھے۔ ہندو مسلمانوں میں میل جول پیدا کرنے کے لئے بادشاہ نے سلسکرت کی پستکوں کے فارسی میں ترجمہ کروائے۔ اس سلسلہ میں 'انہرو وید'، 'مہا بھارت'، 'ہری ونش'، 'بھگود گیتا'، 'راماین'، 'یوگ ویشٹ'، 'بھاگوت'، 'وشنو پوران' وغیرہ کے ترجمہ ہوئے۔ ابولفضل نے مہابھارت کے ترجمہ کے دیباچے میں اس نہتی کا ذکر کیا ہے۔ وہ کہتا ہے:—

”جوں یہ دیرانت کامل خود نزع فرایتی ملت مکتدی و پیرد و ہندو را بہشتی یافت و انکار یک دیگر از اندازه معلوم شد“ خاطر نمکندوں ہراں قرار یافت کہ کتوب معتبر طارفین بہ زبان متخالف ترجمہ کردہ آید تا ہندو فریق بہ برکت انفاں قدسہ حضرت اکمل الزمانی از طعلت وانعاد ہرآمادہ جویائہ حق شوند و ہر محتاسن و عیوب یک دیگر اطلاع یابند در اصلاح احوال خود مساعی جمیلہ نمایند۔“

ارتہات—”پوری طرح سے چھان بین کرنے پر جب یہ معلوم ہوا کہ مسلمان، یہودی اور ہندو دھرم کے لوگوں میں بہت جھگڑے ہیں اور وہ ایک دوسرے کی باتوں کو بہت زیادہ اُلٹے میں تو بادشاہ نے جو ان معلوم کو خوب سمجھتے ہیں، دل میں یہ نہیچے کیا کہ ان سپرداہوں کی وشواسی پستکوں کا ایک دوسرے کی بھلاشامیں ترجمہ کرایا جائے تاکہ سب دلوں کے لوگ بادشاہ کی مہربانی کی وجہ سے جھگڑے اور لڑائی سے ہٹ کر سچ کی تلاش میں لگیں اور ایک دوسرے کے دھرم کی اچنائیوں اور ہراندیوں کو جان کر اپنی حالت کے سدھارنے میں پوری پوری کوشش کریں۔“

”چوں کہ دریاہستہ کامیل خود نیچاے فریایکتہ میللتے مہدہمادی و یھود و ہنود را بہتر یافت و انکار یکدیگر از اندازه معلوم شد، خاطر نمکندوں ہراں قرار یافت کہ کتوب معتبر طارفین بہ زبان متخالف ترجمہ کردہ آید تا ہندو فریق بہ برکت انفاں قدسہ حضرت اکمل الزمانی از طعلت وانعاد ہرآمادہ جویائہ حق شوند و ہر محتاسن و عیوب یک دیگر اطلاع یابند در اصلاح احوال خود مساعی جمیلہ نمایند۔“

”اورثا—پوری طرح سے جان بین کرنے پر جب یہ معلوم ہوا کہ مسلمان، یہودی اور ہندو دھرم کے لوگوں میں بہت جھگڑے ہیں اور وہ ایک دوسرے کی باتوں کو بہت زیادہ جھگڑے میں تو بادشاہ نے، جو ان ماملوں کو خوب سمجھتے ہیں، دل میں یہ نہیچہ کیا کہ ان سمپدایوں کی ویشواسی پستکوں کا ایک دوسرے کی भाषा میں ترجمہ کرایا جائے تاکہ سب دلوں کے لوگ بادشاہ کی مہربانی کی وجہ سے جھگڑے اور لڑائی سے ہٹ کر سچ کی تلاش میں لگیں اور ایک دوسرے کے دھرم کی اچنائیوں کو جان کر اپنی حالت کے سدھارنے میں پوری پوری کوشش کریں۔“

اکبر نے دھرم کے پھروں کا انت کرتے کے لئے ہی اس دینی کا سہارا لیا جسے صالح کل (ایکے) شاعری کا نام دیا۔ اس کے دل میں سب دھرموں کے لئے آکر تھا۔ وہ انت و انت پر چلتا تھا، ہندو شمعوں، عیسائیوں کے پلڈوں سے دھرم کی بات چیت کرتا تھا، سچ کی کہج میں لگا رہتا تھا۔ پر اس کا من صرف کوچ کرنے والے و دیارتھی کا سانس تھا۔ وہ ایک انہی آدمی تھا جس کی آتما پر دم جھوٹی کے درشلوں کی ہوئی تھی۔ اسے اس نفع میں کامیابی ہی ہوئی اور اس نے دیکھ لیا کہ باہری آدمیوں کی انہی کاؤں کے لئے ایک تلو ہے جو سب میں ایکسا چھلکتا ہے اور سب دھرموں کے ماننے والے اپنی اپنی ریت سے اس کی ہی کوچ کرتے ہیں۔ اس اصول پر پہنچ کر اکبر نے ایک سمہرائے کی بنیاد ڈالی جس کا مقصد توحیدانی (ایک) کا پھیلانا تھا۔ اسے دین الہی کے نام سے پکارتے ہیں۔ یہ کوئی نیا دھرم نہیں تھا۔ دھرموں کی ایک ہی اصل سہانت تھا۔

غرض یہ کہ سماج کے جیون کا کوئی پہلو نہ تھا جس پر اکبر نے گہرا اثر نہ ڈالا ہو۔ اسی سبب سے اس کا پایہ دنیا کے بڑے بادشاہوں میں اونچا ہے اور اس بات کی ضرورت ہے کہ اس کے راج کے اصولوں کو سمجھنے کی کوشش کی جائے۔ کسی راج کے بنیادی اصولوں کو جاننے کے لئے چاہئے کہ راج اور سماج کا مطلب اور سمبندھ سمجھ لیا جائے۔ سماج سے معمولی طور پر آدمیوں کے ایک گروہ سے مطالب لیا جاتا ہے۔ گروہ بنا کر رہنا آدمی کا سہارا ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ آدمی کی ضرورتیں بنا گروہ بندی کے پوری نہیں ہو سکتیں۔ آدمی کا نجی جیون، کھانا پینا، سنتان اور اس کی رکشا بنا آپس کی مدد کے ممکن نہیں۔ پھر آدمی بھاڑ اور پرورتنوں کا پلا ہے۔ ان کے پورا کرنے میں ہی اس کی زندگی کی سہلٹا ہے۔ سلسار کی وستوں میں اسے اپنی طرف کھینچتی ہیں، اور انہیں اپنانے کے لئے وہ ان کے پیچھے دبوڑتا ہے۔ گرمی، برسات اور ٹھنڈ سے بچنا، امن سے رہنا، خطرے سے گھبرانا اسے گھر بنانے پر مجبور کرتے ہیں۔ آدمی سوہاڑ سے لڑاکا، ساهسی، آگے چلنے والا ہے۔ اسی سے فوجیں بناتا ہے، شکار کھیلتا ہے، دنیا کے چائل پہاڑوں کو کھوندتا ہے اور لوگوں کا نیٹا بنتا ہے۔ ایک طرف اس میں گہنڈ، مان، دکھاوا ہے تو دوسری طرف ہندگی، بے چارگی، وٹہ۔ کبھی کبھی دھن کو شان شوکت میں دھوئیں کی طرح اڑانا ہے اور کبھی لکر اور ہستی سے مان مرز ترجن چٹکوں میں عمر بٹانا ہے۔ بھوک، پیاس، بدن کا دکھاؤ، اولاد یہ ایسی ضرورتیں ہیں جن کے پورا نہ بنا اس کا جیلا دبوڑتا ہے۔

غرض یہ کہ سماج کے جیون کا کوئی پہلو نہ تھا جس پر اکبر نے گہرا اثر نہ ڈالا ہو۔ اسی سبب سے اس کا پایہ دنیا کے بڑے بادشاہوں میں اونچا ہے اور اس بات کی ضرورت ہے کہ اس کے راج کے اصولوں کو سمجھنے کی کوشش کی جائے۔ کسی راج کے بنیادی اصولوں کو جاننے کے لئے چاہئے کہ راج اور سماج کا مطلب اور سماج سے سمبندھ سمجھ لیا جائے۔ سماج سے مامولی طور پر آدمیوں کے ایک گروہ سے مطالب لیا جاتا ہے۔ گروہ بنا کر رہنا آدمی کا سہارا ہے۔ اس کی وجہ یہ ہے کہ آدمی کی ضرورتیں بنا گروہ بندی کے پوری نہیں ہو سکتیں۔ آدمی کا نجی جیون، کھانا پینا، سنتان اور اس کی رکشا بنا آپس کی مدد کے ممکن نہیں۔ پھر آدمی بھاڑ اور پرورتنوں کا پلا ہے۔ ان کے پورا کرنے میں ہی اس کی زندگی کی سہلٹا ہے۔ سلسار کی وستوں میں اسے اپنی طرف کھینچتی ہیں، اور انہیں اپنانے کے لئے وہ ان کے پیچھے دبوڑتا ہے۔ گرمی، برسات اور ٹھنڈ سے بچنا، امن سے رہنا، خطرے سے گھبرانا اسے گھر بنانے پر مجبور کرتے ہیں۔ آدمی سوہاڑ سے لڑاکا، ساهسی، آگے چلنے والا ہے۔ اسی سے فوجیں بناتا ہے، شکار کھیلتا ہے، دنیا کے چائل پہاڑوں کو کھوندتا ہے اور لوگوں کا نیٹا بنتا ہے۔ ایک طرف اس میں گہنڈ، مان، دکھاوا ہے تو دوسری طرف ہندگی، بے چارگی، وٹہ۔ کبھی کبھی دھن کو شان شوکت میں دھوئیں کی طرح اڑانا ہے اور کبھی لکر اور ہستی سے مان مرز ترجن چٹکوں میں عمر بٹانا ہے۔ بھوک، پیاس، بدن کا دکھاؤ، اولاد یہ ایسی ضرورتیں ہیں جن کے پورا نہ بنا اس کا جیلا دبوڑتا ہے۔

पर आदमी निरा-आश का बन्या नहीं है, उसमें अज्ञान, बुद्धि, समझ की रोशनी है जो उसे जानवरों से अलग करता है। उसके सब काम कुदरत के कानूनों के साथ-साथ अज्ञान के कानूनों के मातहत हैं। उसे भूक लगती है तो वह जानवरों की तरह अपना पेट भर कर खुश नहीं होता। उसे गर्मी या ठंड सताती है तो वह पानी में बैठकर या खोहों में छुपकर अपनी जरूरतों को पूरा नहीं करता। खादियों के पूरा करने में वह वज्रत का गुलाम नहीं, वह दूर की बात सोचता है, आगा पीछा देखकर नतीजों पर गौर करने के बाद कार्यवाई करता है। बुद्धि उसकी प्रवृत्तियों को एक सूत में बाँधने और उनमें जाबता क्रायम करने की तरफ मुकाती है। यही वजह है कि वह अपने और दूसरों के फायदों को मिलाकर ऊँचे आदर्श बनाता है और उन्हें हासिल करने के जतन करता रहता है।

जिस एक गिरोह के जरिये से आदमी अपनी जिन्दगी की इन जरूरतों को एकसां आदर्शों को सामने रखते हुए पूरा करते हैं उसी को समाज कहते हैं, समाज की असलियत उसकी एकता में है, जब तक वह एकता कायम है समाज जिन्दा है, समाज टूट कर छोटे टुकड़ों में बँट गया या दूसरे समाजों से मिल गया तो उससे नया समाज पैदा होगा और उसके असली निजी जीवन का अंत हो जायगा, अपने जीवन की यात्रा पूरी करने के लिए समाज को कायदे कानूनों की जरूरत होती है, रीति रिवाज और धर्म बनाने रहते हैं, कानूनों को ब्यौहार में लाने के लिए राज बनते हैं, जब समाज के अपने बनाए कानूनों का राज पालन करता है तो उसे स्वराज कहते हैं, लेकिन जब राज ऐसे कानून चलाता है जो समाज ने नहीं बनाए हैं तो वह राज परराज और वह समाज पराधीन समाज कहलाते हैं.

हमारा हिन्दुस्तान एक महान देश है जिसका बड़ा भारी विस्तार है, यह बहुत पुराने ज़माने से अनेक समाजों का घर रहा है, पर इसके इतिहास में जो खासियत साफ़ तौर पर झलकती है वह अनेकताओं को मिटा कर एकता की तरफ़ बढ़ने का मुकाब है। हमारे देश में समय समय पर बहुत सी नसलों के गिरोह आए जो फ़िर्कों और बंशों में बँटे हुए थे, पहले आर्यों की कई शाखें आईं जो देश के अलग अलग हिस्सों में बसीं, उसके अलग अलग राज कायम हुए, आर्यों के दो बंश मशहूर थे, सूर्य वंश और चन्द्र वंश, फिर इनकी शाखों का नाम चला जैसे चन्द्र वंशियों के यदु, तुर्वस, द्रत्यु, अनु पुरु, सूर्य वंशियों में कोशलियों की चर्चा सबसे ज्यादा हुई, इस पुराने वक्त में इन नामों से अलग अलग गिरोह समझे जाते थे, इन गिरोहों को जन कहते थे, बाद में जिन देशों में यह जन बसे उनके नाम पर राज्य कायम हुए और यह जनपद कहलाए, जिस वक्त गौतम बुद्ध ने

یہ اُسی نرا بھاؤ کا بلندہ نہیں ہے۔ اُس میں عقل، بدھی،
سمجھ کی روشنی ہے جو اُسے جانوروں سے علیحدہ کرتی ہے۔
اُس کے سب کلم قدرت کے قانونوں کے ساتھ ساتھ عقل کے
قانونوں کے ماتحت ہیں۔ اُسے بھوک لگتی ہے تو وہ جانوروں
کی طرح اپنا پیٹ بھر کر خورشی نہیں ہوتا۔ اُسے گرمی یا
ٹھنڈ سہتی ہے تو وہ پانی میں بیٹھ کر یا کھڑیوں میں چھپ
کر اپنی ضرورتوں کو پورا نہیں کرتا۔ خواہشوں کے پورا کرنے
میں وہ وقت کا غلام نہیں، وہ دور کی بات سوچتا ہے، آگے پیچھا
دیکھ کر نتیجوں پر غور کرنے کے بعد کارروائی کرتا ہے۔ بدھی
اُس کی پرورتوں کو ایک سوت میں بالندہ اور اُن میں
ضابطہ قائم کرنے کی طرف جھکانی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ وہ
اپنے اور دوسروں کے فائدوں کو ملا کر اُولچے آدرش بناتا ہے اور
انہیں حاصل کرنے کے جتن کرتا رہتا ہے۔

جس ایک گروہ کے ذریعہ سے آدمی اپنی زندگی کی ان ضرورتوں کو ایکساں آدرشوں کو سامنے رکھتے ہوئے پورا کرتے ہیں اسی کو سماج کہتے ہیں۔ سماج کی اصلیت اُس کی ایکتا میں ہے۔ جب تک وہ ایکتا قائم ہے سماج زندہ ہے۔ سماج ٹوٹ کر چھوٹے ٹکڑوں میں بٹک گیا یا دوسرے سماجوں سے مل گیا تو اُس سے نیا سماج پیدا ہوگا اور اُس کے اصلی نجی جہوں کا اثر ہو جائیگا۔ اپنے جہوں کی پورا پوری کرنے کے لئے سماج کو قایدے قانونوں کی ضرورت ہوتی ہے، ریتی رواج اور دھرم بنائے پڑتے ہیں۔ قانونوں کو بھوہار میں لانے کے لئے راج بنئے ہیں۔ جب سماج کے اپنے بنائے قانونوں کا راج پالنے کو کرنا ہے تو اسے سہراج کہتے ہیں، لیکن جب راج ایسے قانون چلانا ہے جو سماج نے نہیں بنائے ہیں تو وہ راج پوراج اور وہ سماج پراندھین سماج کہلاتے ہیں۔

ہمارا ہندوستان ایک مہان دیپھ ہے جس کا بڑا بھاری
 وستار ہے۔ یہ بہت پرانے زمانے سے انہک سماجوں کا گھر رہا ہے۔
 پر اس کے انتہاس میں جو خاصیت صاف طور پر جھلکتی ہے
 وہ انیمتوں کو متاثر ایکتا کی طرف بڑھنے کا جھاڑ ہے۔ عمارے
 دیپھ میں سہ سے پر بہت سی نسلوں کے گرد آئے جو
 فرقوں اور بلشوں میں بنتے ہوئے تھے۔ پہلے اُردیوں کی کئی
 شاخیں انہیں جو دیپھ کے الگ الگ حصوں میں بسیں۔
 اُس کے الگ الگ راج قائم ہوئے۔ اُردیوں کے دو ونش مشہور
 تھے، سوریت ونش اور چندر ونش، پھر ان کی شاخوں کا نام چلا
 چھ سے چندر ونشوں کے بدو، تروس، درتھو، انو، پرو۔ سوریت
 ونشوں میں کوشلوں کی چرچا سب سے زیادہ ہوئی۔
 اِس پرانے وقت میں ان ناموں سے الگ الگ گرد
 سمجھے جاتے تھے۔ ان گردوں کو جن کہتے تھے۔ بعد
 میں جن دیشوں میں یہ جن سے اُن کے نام پر راجہ
 قائم ہوئے اور یہ جن پد کہلائے۔ جس وقت گوتم بدھ نے

اپنے ذہن کا پرچار کیا۔ اُتریں ہندستان میں سولہ مہان جن پد تھے۔ مہربہ وٹس کے بادشاہوں نے انہیں ایک چتر کی چھاپا کے نیچے جمع کیا اور ایک بڑا سامراج قائم کیا۔ یہ ہندستان کی تاریخ میں پہلا موقع تھا کہ قریب کل ہند ایک رشتے میں بندھا۔

مہربہ کی طاقت گہنی تو ہندستان پر پچھم اُتر سے نہ حملے ہوئے تھے۔ شک اور کشن جانتوں نے دیہی میں قیام کیا۔ ان جانتوں کو ہندستانی ہندو دیہی نے ایک نئے سامراج کو جنم دیا۔ اس کے بنانے والے سمندر گہت تھے۔ گہت وٹس کے سمندر کے یک کی عمارت مہل کی بنیاد پر رکھی گئی۔ گہتوں کے بعد پانچویں صدی عیسوی میں مہل گرجوں، جاتوں اور بانہوں نے عمارت دیہی میں پور رہا۔ ان کے اُتے سے بڑی آہل پتہل مچھی۔ پرانے اور نئے سماجوں کا ایسا منہل ہوا کہ سمیٹنے کے سبھی انکوں میں نیا پن آ گیا۔ ان نئے سماجوں کا وردھنوں اور راجپوت وٹسوں نے راجپوت کے روپ میں سنگتہن کیا۔

جب راجپوتوں میں کمزوری آئی تو گیارہویں صدی سے ترکوں کے حملے شروع ہوئے اور تیرہویں صدی میں اسلامی راج کا جھنڈا دیہی پر پھرا لے گا۔ اب تک جو لوگ ہندستان میں آئے تھے انہوں نے یہاں کے دھرم اور سہیٹا کو قبول کیا تھا۔ پر ہرک اپنے ساتھ ایک زبردست دھرم اور انوکھی سہیٹا لائے اور انہوں نے دیہی کے سامنے ایک نیا سوال کھڑا کر دیا۔ ہر ہندستان کی آتما جو مہل اور ایکٹا کے اُصولوں میں بسی تھی اس سوال سے گہرائی نہیں اور اُس نے انیکٹا کو متانے اور ایکسانیت کو پھدا کرنے کا عمل شروع کر دیا۔

اُندر کے زمانے تک اس عمل کا بہت کچھ اثر ہو چکا تھا۔ اکبر کا پرکھا قیامور 1598 میں ہندستان میں آیا تھا اور اُس نے بہانہ ہی یہ نکالا تھا کہ ہندستان کے مسلمان اپنے مذہب اور تہذیب سے دور چلے گئے تھے۔ اُندر کے بابا باہر نے ہندستان میں جو دشمنک دیکھا اُس کے بارے میں لکھا ہے:—

”ہندستان، یہ ایک اچھی ملک ہے۔ ہماری بیلایات سے دور دُنیا ہے۔ پہاڑ، دریا، جنگل، جانور، نباتات، آبادی، زبان، ہوا اور مینو سب اور ہیں۔ اگرچہ کابل کے علاقہ جات میں سے گرم سیر بعض چیزوں میں ہندستان سے مشابہ ہے اور بعض میں نہیں ہے، مگر دریائے سندھ کے اندر آتے ہی زمین، درخت، پتھر، قومیں اور اُن کے راہ و رسم سب ہندستانی طریق کی۔“ (توک باہری)

اس ہندستانی طریق، ہندستانی چال وچال، یعنی رواج کو اکبر نے بڑی چترائی اور دوراندیشی سے پڑھایا۔ اس نے اپنے راج کو اسی بنیادی اصول پر

اپنے دھرم کا پرچار کیا۔ اُتریں ہندستان میں سولہ مہان جن پد تھے۔ مہربہ وٹس کے بادشاہوں نے انہیں ایک چتر کی چھاپا کے نیچے جمع کیا اور ایک بڑا سامراج قائم کیا۔ یہ ہندستان کی تاریخ میں پہلا موقع تھا کہ قریب کل ہند ایک رشتے میں بندھا۔

مہربہ کی طاقت گہنی تو ہندستان پر پچھم اُتر سے نہ حملے ہوئے تھے۔ شک اور کشن جانتوں نے دیہی میں قیام کیا۔ ان جانتوں کو ہندستانی ہندو دیہی نے ایک نئے سامراج کو جنم دیا۔ اس کے بنانے والے سمندر گہت تھے۔ گہت وٹس کے سمندر کے یک کی عمارت مہل کی بنیاد پر رکھی گئی۔ گہتوں کے بعد پانچویں صدی عیسوی میں مہل گرجوں، جاتوں اور بانہوں نے عمارت دیہی میں پور رہا۔ ان کے اُتے سے بڑی آہل پتہل مچھی۔ پرانے اور نئے سماجوں کا ایسا منہل ہوا کہ سمیٹنے کے سبھی انکوں میں نیا پن آ گیا۔ ان نئے سماجوں کا وردھنوں اور راجپوت وٹسوں نے راجپوت کے روپ میں سنگتہن کیا۔

جب راجپوتوں میں کمزوری آئی تو گیارہویں صدی سے ترکوں کے حملے شروع ہوئے اور تیرہویں صدی میں اسلامی راج کا جھنڈا دیہی پر پھرا لے گا۔ اب تک جو لوگ ہندستان میں آئے تھے انہوں نے یہاں کے دھرم اور سہیٹا کو قبول کیا تھا۔ پر ہرک اپنے ساتھ ایک زبردست دھرم اور انوکھی سہیٹا لائے اور انہوں نے دیہی کے سامنے ایک نیا سوال کھڑا کر دیا۔ ہر ہندستان کی آتما جو مہل اور ایکٹا کے اُصولوں میں بسی تھی اس سوال سے گہرائی نہیں اور اُس نے انیکٹا کو متانے اور ایکسانیت کو پھدا کرنے کا عمل شروع کر دیا۔

اُندر کے زمانے تک اس عمل کا بہت کچھ اثر ہو چکا تھا۔ اکبر کا پرکھا قیامور 1598 میں ہندستان میں آیا تھا اور اُس نے بہانہ ہی یہ نکالا تھا کہ ہندستان کے مسلمان اپنے مذہب اور تہذیب سے دور چلے گئے تھے۔ اُندر کے بابا باہر نے ہندستان میں جو دشمنک دیکھا اُس کے بارے میں لکھا ہے:—

”ہندستان، یہ ایک اچھی ملک ہے۔ ہماری بیلایات سے دور دُنیا ہے۔ پہاڑ، دریا، جنگل، جانور، نباتات، آدمی، زبان، ہوا اور مینو سب اور ہیں۔ اگرچہ کابل کے علاقہ جات میں سے گرم سیر بعض چیزوں میں ہندستان سے مشابہ ہے اور بعض میں نہیں ہے، مگر دریائے سندھ کے اندر آتے ہی زمین، درخت، پتھر، قومیں اور اُن کے راہ و رسم سب ہندستانی طریق کی۔“ (توک باہری)

اس ہندستانی طریق، ہندستانی چال وچال، یعنی رواج کو اکبر نے بڑی چترائی اور دوراندیشی سے پڑھایا۔ اس نے اپنے راج کو اسی بنیادی اصول پر

ہندوستان کی تمام زبانوں اور قوموں کے واسطے کے مناجات
میں آج بھی ہندوستان میں ہندوستانیوں کا بول چال
ہے۔ ان کے خیالات اور آداب کو اس کے سمجھنے والوں نے ان
لفظوں میں ظاہر کیا ہے۔ یہ لفظ کشمیر کے ایک مندر کی
دیوار پر کندہ ہے۔

ایک بھر خانہ کی میز پر جو پائے تو اندر بھر رہا ہے
میں شلوں کی بات تو۔

کفر و اسلام در رھت پویان

وحدۃ الشریک لا گویان

اگر مسجد دہشت ہے یاد تو نعرۂ قدوس می زند، و اگر
کلیسا ہے شوق تو ناقوس می چلند۔

گہے معترف دیرم و گہے ساکن مسجد

یعنی کہ ترا می طلب خانہ ہے خانہ

اگر خاصا تو ہے کفر و اسلام کارے نیست، این ہر دور
دروردۃ اسلام تو ہارے نہ۔

کفر کا تو را و دیں دیندار را

گردۂ وردی دل عطار را

ایں خانہ ہے نہایت اتفاق قلوب موحدان ہندوستان و
خصوصاً معبود پرستان عرصۂ کشمیر تعمیر یافتہ۔

انہیات—”ہے ایشور جس گھر کو دیکھتا ہوں اُس میں تیرے
تھوڑے والے ہیں اور جس بیٹا کو سنتا ہوں اُس میں تیرا
ہی چرچا ہے۔ کفر (دیوتاؤں کا پوجن) اور اسلام تیرے ہی
راستے پر دوڑتے ہیں اور کہتے ہیں تو ایک ہے، تیرا کوئی ساتھی
نہیں۔“ مسجد ہے تو اُس میں تیری یاد میں دھرم کے نعرے
لگاتے ہیں اور گرجا ہے تو تیرے ہی پریم میں گھنٹے بجاتے
ہیں۔

”کیسی میں مندر میں بیٹھ کر دھیان کرتا ہوں، کیسی
مسجد میں۔ یعنی کہ تجھے ہی ہر گھر میں تھوڑھتا ہوں۔

جو تیرے چنے لوگ ہیں انہیں نہ کفر اور نہ اسلام سے کام
ہے، کیونکہ ان دونوں کے لئے تیری قبولیت کے پردے میں
جگہ نہیں ہے۔

”کفر کا تو را و دیں دیندار کے لئے ہے، پر گندھی
(عطر پہنچانے والے) کے دل کے لئے تو گلاب کے پھول کی بج
ہی چاہئے۔

”یہ مندر ہندوستان کے ادویتاؤں کے دلوں کو ملانے کے
لئے اور خاص طور پر کشمیر دیہی کے پجاریوں کے لئے بنایا
گیا۔“

ہندوستان کے انتہائی کمال میں ادویتاؤں کا آدرش
دونوں ہندو اور مسلمانوں کو ایکساں طریقے سے پسند تھا، اور
دونوں بھکتی کے راستے اس آدرش تک پہنچنے
کی کوشش میں لگے رہتے تھے۔ ان کی سبھتا میں اسی
آدرش کی شکتی کام کر رہی تھی۔ اسی سے ان کی کلا،

کھینکا، آدھ میں یکساںیت آا गई थी. समाज और राज के संगठन में भी इसी आवर्श की प्रेरणा दिखाई देती है.

यह सच है कि मँकले काल में कुल हिन्दू एक समाज के रिश्तों में नहीं बँध सका, सारे हिन्दुस्तानी एक जत्थे के अन्दर नहीं समा सके. इसीलिये एक क्रौम या राष्ट्र का जन्म नहीं हुआ. लेकिन यह मानना पड़ेगा कि हिन्दुस्तान ने इस भंगिल की तरफ बढ़ने की पूरी कोशिश की. मुसलमानों के हिन्दुस्तान में आने के वक्त हिन्दुस्तान अनेक वंशों, सम्प्रदायों, जातियों, कबीलों, रजवाड़ों, राजों में बँटा हुआ था. मुसलमानी साम्राज कायम होने की वजह से इस तक्रसीम में कुछ कमी हुई. हिन्दू समाज के संगठन का मुसलमानों पर असर पड़ा और उनका संगठन एक हद तक हिन्दू ढाँचे की नक़ल बना. अगर हिन्दुओं में देश, जाति, धन्धे, दौलत, मत, राजनीति के विचारों से अलग-अलग सम्प्रदाय, फ़िर्के और गिरोह थे तो ऐसा ही हाल मुसलमानों का भी था. राजपूत, मराठा, द्राविड़, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र और इनकी अनेक शाखें; सुनार, लुहार, केवट, कायस्थ; शैब, बैष्णव, शक में हिन्दू बँटे थे तो ईरानी, ख़ुरासानी, पठान; दक्कनी हिन्दुस्तानी, जुलाहे, क़साई, हज़ाम, सुन्नी, शिआ मुसलमानों में थे. दौलत और रतबे के लिहाज़ से हिन्दुओं में ब्राह्मण, क्षत्री, सेठ, साहूकार और कायस्थ ऊँचे दर्जे में समझे जाते थे और जातें जो दस्तकारी, धन्धे, मजदूरी में लगी थीं वह नीचे दर्जे में थीं. इसी तरह मुसलमानों में शरीफ़ और रज़ील की तक्रसीम थी.

आइने अकबरी में समाज के संगठन पर बहस की है. समाज को एक पुरुष (शख्स) के समान माना है. जिस तरह दुनिया चार तत्वों से मिलकर बनती है यानी आग, पानी, हवा और मिट्टी से वही तरह इस दुनिया को बसाने वाला आदमी (पुरुष, शख्स) चार तत्वों का पुतला है. आदमियों का गिरोह जिसे समाज कहते हैं और जो आदमी के समान है वह भी चार तत्वों पर निर्भर करता है. इसीलिये इसमें चार तरह के आदमी हाते हैं. मुबारिज़ (लड़ाके) जो समाज में आग के समान हैं, पेशेवर (काम धन्धे वाले) जो हवा के समान हैं. अहले क़लम (पढ़ने लिखने वाले) जो पानी से समानता रखते हैं. बज़ागर या क़शावज़ (बेतिहर) जिनका मिट्टी से मिलान किया जा सकता है. इन्हीं चारों पर समाज के जीवन का सहारा है. इन्हीं से समाज को बल और सुख का लाभ होता है. इन्हीं चारों तत्वों के समान गिरोहों के तानेबाने से समाज का कपड़ा बुना जाता है और इनके मेल से अनेक एक में तब्दील होता है. यह चार गिरोह दो जमाअतों में रखे जा सकते हैं. अज़ाफ़ (ऊँचे) जिनमें पहले सैफ़ (तलवार चलाने वाले) शामिल हैं और अख़लाफ़ (नीचे) जिनमें पेशेवर और

लेफ़ा, ادب میں ایکساںیت آگئی تھی. سماج اور راج کے سنگٹوں میں بھی اسی آدھ کی پرپرنا دکھائی دیتی ہے.

یہ سچ ہے کہ منجملے کال میں کل هند ایک سماج کے رشتوں میں نہیں بندھ سکا، سارے هندستانی ایک جتھے کے اندر نہیں سما سکے. اسی لئے ایک قوم یا راشٹر کا جنم نہیں ہوا. لیکن یہ ماننا پڑیگا کہ هندستان نے اس منزل کی طرف بڑھنے کی پوری کوشش کی. مسلمانوں کے هندستان میں آنے کے وقت هندستان اٹیک و فٹش، سپرداویں، جاتھوں، قبیلوں، رجواروں، راجوں میں بٹلا ہوا تھا. مسلمانوں کے سامراج قائم ہونے کی وجہ سے اس تقسیم میں کچھ کمی ہوئی. ہندو سماج کے سنگٹوں کا مسلمانوں پر اثر پڑا اور ان کا سنگٹوں ایک حد تک ہندو بھانچے کی نقل بنا. اگر ہندوؤں میں دیہی، جاتی، دھندے، دولت، مہت، راج، نہتی کے وجاروں سے الگ الگ سپردانے، رتبے اور گروہ تھے تو ایسا ہی حال مسلمانوں کا بھی تھا. راجپوت، مراٹھا، دراوڑ، براہمن، چھتری، ویشیہ، شوہر اور ان کی انیک شاخیں؛ سونار، لہار، کیوت، کایستہ، شوہ، ویشنو، شک میں ہندو بٹھے تھے تو ایرانی، خراسانی، بھان، دکنی، هندستانی، چلائے، قصابی، حجّام، سنئی، شیخہ مسلمانوں میں تھے. دولت اور رتبہ کے لحاظ سے ہندوؤں میں براہمن، چھتری، شیخ، ساہوکار اور کایستہ اُنچے درجے میں سمجھے جاتے تھے اور ڈانیں جو دستکاری، دھندے مزدوری میں لگی تھیں وہ نیچے درجے میں تھیں. اسی طرح مسلمانوں میں شریف اور رذیل کی تقسیم تھی.

انہیں اکبری میں سماج کے سنگٹوں پر بحث کی ہے. سماج کو ایک پورھ (شخص) کے سمان مانا ہے. جس طرح دنیا چار تھوں سے ملکر بنتی ہے یعنی آگ، پانی، ہوا اور مٹی سے اسی طرح اس دنیا کو بسانے والا آدمی (پورھ، شخص) چار تھوں کا پتلا ہے. آدمیوں کا گروہ جسے سماج کہتے ہیں اور جو آدمی کے سمان ہے وہ بھی چار تھوں پر نرہر کرتا ہے. اسی لئے اس میں چار طرح کے آدمی ہوتے ہیں. مبارز (لڑاکے) جو سماج میں آگ کے سمان ہیں، پشہور (کلم لھندے والے) جو ہوا کے سمان ہیں. اہل قلم (پڑھنے لکھنے والے) جو پانی سے سمانا رکھتے ہیں. ہرزہ گر یا کشاورز (کھتہر) جن کا مٹی سے ملن کیا جاسکتا ہے. انہیں چاروں پر سماج کے جھوں کا سہارا ہے. انہیں سے سماج کو بل اور سکھ کا لبہ ہوتا ہے. انہیں چاروں تھوں کے سمان گروہوں کے تالے ہاتے ہیں. سماج کا کپڑا بنا جاتا ہے اور ان کے مہل سے اٹیک ایک میں تبدیل ہوتا ہے. یہ چار گروہ دو جماعتوں میں رکھے جاسکتے ہیں. اشراف (اُنچے) جن میں اہل صیف (تولار چلائے والے) شامل ہیں اور اسفہ (نیچے) جن میں پشہور اور

हदर खेतिहर समझा है, राज का यही काम है कि इस रों का पलका बराबर रखे और हर एक को अपने कर्तव्य, यह और मर्यादा से हटने न दे।

समाज की जिस एकता का आधार अकबर की आँखों सामने था इसका ठोँचा आईने अकबरी के पढ़ने से कम होता है। पर समाजी ठोँचे का ठहराव राज के संगठन आसरे पर है। इसलिए अकबरी राज के सिद्धांतों पर ध्यान न जरूरी है।

यह सिद्धांत न तो इसलामी राजनीति से उधार लिए गए थे, न हिन्दू राजनीति से नक़ल किए गए थे। बल्कि दोनों जनीतियों से जुने गए थे।

हिन्दू राजनीति के उसूल हिन्दू जीवन के उसूलों पर तय थे। और हिन्दू आदमी के जीवन को अलहदा लहदा हिस्सों में बाँटा हुआ नहीं मानते थे। इनके नज़दीक जीवन एक ऐसा पूरा और अदृष्ट व्यापार है जिसके टुकड़े ही हो सकते। इसकी मिसाल यह है कि जिस तरह आदमी सी वक्त तक आदमी है जब तक उसके सब अंग एक साथ जुड़े हुए हैं, और अगर अंग अंग हो जाय तो आदमी न अस्त हो जाता है। जीवन के दो मक़सद हैं—एक दुन्यावी क़ दीनी। दुन्यावी की तीन क्रिस्में हैं—काम, अर्थ, धर्म। दीनी ती एक—मोक्ष। पहले तीन बर्गों को हासिल करने से इस निया का भला होता है, अभ्युदय मिलता है। दूसरे से आदमी सदा के लिए दुखों से छूट जाता है, परम आनन्द प्राप्त करता है।

दुन्यावी फ़ायदों या अर्थों की तीन क्रिस्में हमारी तिरंगी श्रद्धा के साथ बाँधी हैं। हमारी पहली जरूरत बंश का तयम रखना, दूसरी जरूरत शरीर का पालन और तीसरी समाज की रक्षा है। काम, अर्थ और धर्म का त्रिवर्ग इन्हीं जरूरतों को पूरा करने का नाम है। यह जरूरतें बिना शांति और संगठन के पूरी नहीं हो सकतीं। शांति और संगठन के लिये राज की ताक़त चाहिए। इसी ताक़त को हिन्दू राजनीति वंद कहा गया है। वंशशास्त्र नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र का मेल जोल है।

राजा वंद को धारण करता है इसी लिए उसकी उता सब से भारी है। महाभारत और दूसरी राजनीति की पुस्तकों में राजा को नरदेव कहा गया है। राजा की देह वैष्णु का स्थान है इसलिए राजा पूजने काबिल है। मनु स्मृति में लिखा है कि ब्रह्मा ने राजा को आठ देवताओं के भंशों से मिलाकर बनाया। इसलिए उसमें इन्द्र, मरुत, वसु, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्र और कुबेर की शक्ति है।

राजा का ओहदा देवताओं के बराबर है क्योंकि वह वैसी शक्ति का स्वामी है। राज के कामों को दो हिस्सों में बाँटा गया है—दिगपाल और दिग्विजय। लोकपालन में त्रिवर्ग की प्राप्ति के आधनों को सुदृष्ट करना, न्याय या

मुहूर्त क़ेदर शामिल हैं। राज का भी काम है कि इन ज़रूरतों का पला बराबर रहे और हर एक को अपने कर्तव्य, ज़क़ और मर्यादा से हटने न दे।

समाज की जिस एकता का आधार अकबर की आँखों सामने था इसका ठोँचा आईने अकबरी के पढ़ने से कम होता है। पर समाजी ठोँचे का ठहराव राज के संगठन आसरे पर है। इसलिए अकबरी राज के सिद्धांतों पर ध्यान न जरूरी है।

हिन्दू राजनीति के उसूल हिन्दू जीवन के उसूलों पर तय थे। और हिन्दू आदमी के जीवन को अलहदा लहदा हिस्सों में बाँटा हुआ नहीं मानते थे। इनके नज़दीक जीवन एक ऐसा पूरा और अदृष्ट व्यापार है जिसके टुकड़े ही हो सकते। इसकी मिसाल यह है कि जिस तरह आदमी सी वक्त तक आदमी है जब तक उसके सब अंग एक साथ जुड़े हुए हैं, और अगर अंग अंग हो जाय तो आदमी न अस्त हो जाता है। जीवन के दो मक़सद हैं—एक दुन्यावी क़ दीनी। दुन्यावी की तीन क्रिस्में हैं—काम, अर्थ, धर्म। दीनी ती एक—मोक्ष। पहले तीन बर्गों को हासिल करने से इस निया का भला होता है, अभ्युदय मिलता है। दूसरे से आदमी सदा के लिए दुखों से छूट जाता है, परम आनन्द प्राप्त करता है।

दुन्यावी फ़ायदों या अर्थों की तीन क्रिस्में हमारी तिरंगी श्रद्धा के साथ बाँधी हैं। हमारी पहली जरूरत बंश का तयम रखना, दूसरी जरूरत शरीर का पालन और तीसरी समाज की रक्षा है। काम, अर्थ और धर्म का त्रिवर्ग इन्हीं जरूरतों को पूरा करने का नाम है। यह जरूरतें बिना शांति और संगठन के पूरी नहीं हो सकतीं। शांति और संगठन के लिये राज की ताक़त चाहिए। इसी ताक़त को हिन्दू राजनीति वंद कहा गया है। वंशशास्त्र नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र का मेल जोल है।

राजा वंद को धारण करता है इसी लिए उसकी उता सब से भारी है। महाभारत और दूसरी राजनीति की पुस्तकों में राजा को नरदेव कहा गया है। राजा की देह वैष्णु का स्थान है इसलिए राजा पूजने काबिल है। मनु स्मृति में लिखा है कि ब्रह्मा ने राजा को आठ देवताओं के भंशों से मिलाकर बनाया। इसलिए उसमें इन्द्र, मरुत, वसु, सूर्य, अग्नि, वरुण, चन्द्र और कुबेर की शक्ति है।

राजा का ओहदा देवताओं के बराबर है क्योंकि वह वैसी शक्ति का स्वामी है। राज के कामों को दो हिस्सों में बाँटा गया है—दिगपाल और दिग्विजय। लोकपालन में त्रिवर्ग की प्राप्ति के आधनों को सुदृष्ट करना, न्याय या

ہندو، شامل ہیں۔ دینویجی سے متعلق ہے کہ راج کی سرحدوں کو پھیلانا۔ ہر ہندو راجہ کا فرض تھا کہ ہر سات کے بند ہوتے ہی دشاہرا بنا کر دہشوں کو جیتنے کے لیے کڑی لے کر نکلے۔ چکرورتی راج کا کام کرنا، ساری دنیا کو ایک راج کی لایا کے نیچے جما کرنا ہی راجا کے اہم ترین کاموں کے تحت سمجھا جاتا تھا۔ اور وہی راجا ہندو راج کے قابل سمجھا جاتا تھا جو لوک پال اور دکرچہ کا ہمارا سہا

دھ شاہ میں لکھا ہے کہ راجا کو اچھے گروں سے سمجھنا ہوتا تھا۔ گروں میں اچھا کل، شوبھرتا، سہا کے کل کی پگتا، دھرم شاستر کا گہا، راج دھرم کے سدھارتوں کی جانکاری اور سدچار شامل ہیں۔ جس راجہ میں یہ خوبیاں نہیں، جس کے بدن کے کسی انگ میں خرابی ہے یا جو روکی ہے وہ راج سہاسن پر بیٹھنے کے لائق نہیں سمجھا جاتا تھا۔ راجہ کی ذمہ داری اتنی بھاری تھی کہ اس عہدے کو موروثی نہیں بنایا گیا۔ اسی لئے کئی وراثت کا قانون نہیں تھا۔

راجاؤں کو اونچے پد، ذمہ داری کے کاموں اور بھاری کٹوتیوں کے بیچارے سے اچھی (پادشاہی) دی جاتی تھی۔ گہت وٹھی کے راجاؤں کے خطاب یہ تھے—مہاراج، راجا دھیراج، پریشور، پریشورک، پریشور، ساروہوم، چکرورتی، دھرم پرورتک۔

ہندو راجنیتی میں جو راج کی پرکرتی، راج کے دھرم، راج کے مکتبہ بتلائے گئے ہیں ان کا مقابلہ اسلامی راجنیتی سے کریں تو دونوں کے بیحد اور سمانتاؤں کا پتہ چلتا ہے۔ اسلام آدمی کے جہن کے سب انگوں کو ایک رشتہ میں بندھا مانتا ہے۔ وہ دھرم اور دیوہار، پرلوک اور اس لوک کے ارتھوں کو ایک ایک نہیں سمجھتا۔ آدمی کسی بھی کام میں لگے—کلیہ کے دھندوں میں، دھن دولت کے پیدا کرنے میں، راج کی سدا میں، دبا کے حاصل کرنے میں، ایشور پوجا میں—سب کاموں میں اس کے لئے نیم ہلے ہوئے ہیں جو اس کی دھرم بستک قرآن میں دئے ہوئے ہیں۔

ہندو راجنیتی میں جو راج کی پرکرتی، راج کے دھرم، راج کے مکتبہ بتلائے گئے ہیں ان کا مقابلہ اسلامی راجنیتی سے کریں تو دونوں کے بیحد اور سمانتاؤں کا پتہ چلتا ہے۔ اسلام آدمی کے جہن کے سب انگوں کو ایک رشتہ میں بندھا مانتا ہے۔ وہ دھرم اور دیوہار، پرلوک اور اس لوک کے ارتھوں کو ایک ایک نہیں سمجھتا۔ آدمی کسی بھی کام میں لگے—کلیہ کے دھندوں میں، دھن دولت کے پیدا کرنے میں، راج کی سدا میں، دبا کے حاصل کرنے میں، ایشور پوجا میں—سب کاموں میں اس کے لئے نیم ہلے ہوئے ہیں جو اس کی دھرم بستک قرآن میں دئے ہوئے ہیں۔

اسلام کا دعویٰ ہے کہ وہ ساری دنیا کا دھرم ہے۔ وہ نہ جانتیوں میں بیحد کرتا ہے نہ آدمیوں کے رنگوں میں۔ کل دنیا اور سب جانتیوں کو ایک سماج، ایک راج کی ایک مضبوط رسی میں بانڈھا اس کا آدھ ہے۔ ایسی صورت میں سب دنیا کے لئے ایک قانون کا ہونا ضروری ہے اور یہ قانون کسی آدمی کا بلایا نہیں ہو سکتا۔ اسی لئے وہ کہتا ہے کہ شریعت کا قانون تو اللہ کا بھیجا ہوا ہے، سب کے اوپر ایکساں لاگو ہے۔ اس قانون کو پانے والا اللہ کا رسول یا پیغمبر ہے اور اس قانون کی رضا کرنے والا خلیفہ، بادشاہ یا مسلمان۔ قرآن میں لیا ہے:—

عظیم، اللہ ہی عظیم، الرسول الامم مسلم

”ہے لوگو، اجماع کی ہوا بھرت کرو، رسول کی ہوا بھرت کرو اور انکی ہوا بھرت کرو جو تم میں حاکم ہیں۔“

اپنی شیعہ میں حضرت محمد رسول تھے اور حاکم بھی تھے۔ پر ان کے مرنے کے بعد ان کے خلیفہ اسلامی ملت کے حاکم ہوئے، ساتھ ساتھ وہ امام اور امیر المؤمنین بھی کہلاتے۔ خلیفہ کی حیثیت سے وہ حضرت محمد کے وارث تھے لیکن اس رقبہ کے ساتھ کہ ان کو پیغمبری کا درجہ حاصل نہیں تھا۔ مہر کی حیثیت سے وہ مسلمانی فوجوں کے سپہاچی تھے اور امام کی حیثیت سے مذہبی کاموں میں پیشوا تھے۔

خلیفہ کے فرض یہ تھے کہ وہ دھرم کا پالنہ کریں، مقدسوں کا کفایت کریں، فوجداری قانون کے مطابق سزا دیں، دیہات کی دیکھ کریں، دشمنوں سے جنگ کریں، محصول جمع کریں، دیہات کی مدد کریں، وزیر اور عہددار مقرر کریں اور راج کا راج انتظام کریں۔ ان فرضوں کو پورا کرنے کے لئے مسلمانوں کو اختیار تھا کہ اپنا خلیفہ چن لیں۔ چنانچہ کی شرطیں یہ تھیں کہ جسے چنا جائے وہ سداچاری ہو، دھرم شلستر (نظم) پالنے والا ہو، آئندہ ناک ہاتھ پاؤں سے ٹھیک ہو، کتا کترا، لکڑا لکڑا نہ ہو، بہادر ہو، قریب و دُور کی اسلامی سداچاریوں کے مطابق خلیفہ کے اختیار ایشور کی طرف سے ہیں اور سب مسلمانوں کا کرتوبہ ہے کہ اُس کی آئین و مانیں۔ خلیفہ کو اسی وچار سے ظل اللہ (ایشور کا سایہ) کی اُنچلی بدوی دی گئی۔ لیکن اُس سے یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ خلیفہ کے اختیارات کی کوئی حد بندی نہیں تھی۔ اس کا فرض تھا کہ شریعت (دھرم کے قانونوں) کی پابندی کرے، کیونکہ شریعت ایشور کے دیئے ہوئے قانونوں پر شرت ہے۔ شریعت آدمی کے سبھی کاموں اور جیوں کے ہر انگ پر حاوی ہے۔ اُس لئے خلیفہ یا حاکم کو قانونی معاملات میں بہت کم دخل ہے۔ خلیفہ کو شریعت کی دیکھنا کا حق ہے اور اُس میں کھٹالے بڑھانے کا نہیں۔

اسلامی اتھاس میں ایک سماج اور ایک راج کا اندیشہ بہت دنوں تک قائم نہ رہا۔ جیوں جیوں اسلامی سماج پھلتا گیا دنیا کے الگ حصوں میں حاکم خود مختاری حکومتیں بننے لگیں۔ اور یہ سوال پیدا ہوا کہ خلیفہ اور ان حاکموں کے بیچ میں کیا رشتہ ہونا چاہئے۔ کچھ راج نہتی شلستریوں کی آئے میں ان حاکموں کو خلیفہ کا نائب سمجھنا چاہئے۔ اُس خیال سے ہندوستان کے مسلمان بادشاہوں نے اپنے خطابوں میں ایسے نام رکھے جیسے بھین خلیفۃ اللہ (اللہ کے خلیفہ کا دایاں ہاتھ)، ناصر امیر المؤمنین (امیر المؤمنین کا مددگار)، سلطان (حکومت کرنے والا)۔

”ہے لوگو، اجماع کی ہوا بھرت کرو، رسول کی ہوا بھرت کرو اور انکی ہوا بھرت کرو جو تم میں حاکم ہیں۔“

اپنی زندگی میں حضرت محمد رسول تھے اور حاکم بھی تھے۔ پر ان کے مرنے کے بعد ان کے خلیفہ اسلامی ملت کے حاکم ہوئے، ساتھ ساتھ وہ امام اور امیر المؤمنین بھی کہلاتے۔ خلیفہ کی حیثیت سے وہ حضرت محمد کے وارث تھے لیکن اس رقبہ کے ساتھ کہ ان کو پیغمبری کا درجہ حاصل نہیں تھا۔ مہر کی حیثیت سے وہ مسلمانی فوجوں کے سپہاچی تھے اور امام کی حیثیت سے مذہبی کاموں میں پیشوا تھے۔

خلیفہ کے فرض یہ تھے کہ وہ دھرم کا پالنہ کریں، مقدسوں کا کفایت کریں، فوجداری قانون کے مطابق سزا دیں، دیہات کی دیکھ کریں، دشمنوں سے جنگ کریں، محصول جمع کریں، دیہات کی مدد کریں، وزیر اور عہددار مقرر کریں اور راج کا راج انتظام کریں۔ ان فرضوں کو پورا کرنے کے لئے مسلمانوں کو اختیار تھا کہ اپنا خلیفہ چن لیں۔ چنانچہ کی شرطیں یہ تھیں کہ جسے چنا جائے وہ سداچاری ہو، دھرم شلستر (نظم) پالنے والا ہو، آئندہ ناک ہاتھ پاؤں سے ٹھیک ہو، کتا کترا، لکڑا لکڑا نہ ہو، بہادر ہو، قریب و دُور کی اسلامی سداچاریوں کے مطابق خلیفہ کے اختیار ایشور کی طرف سے ہیں اور سب مسلمانوں کا کرتوبہ ہے کہ اُس کی آئین و مانیں۔ خلیفہ کو اسی وچار سے ظل اللہ (ایشور کا سایہ) کی اُنچلی بدوی دی گئی۔ لیکن اُس سے یہ نہیں سمجھنا چاہئے کہ خلیفہ کے اختیارات کی کوئی حد بندی نہیں تھی۔ اس کا فرض تھا کہ شریعت (دھرم کے قانونوں) کی پابندی کرے، کیونکہ شریعت ایشور کے دیئے ہوئے قانونوں پر شرت ہے۔ شریعت آدمی کے سبھی کاموں اور جیوں کے ہر انگ پر حاوی ہے۔ اُس لئے خلیفہ یا حاکم کو قانونی معاملات میں بہت کم دخل ہے۔ خلیفہ کو شریعت کی دیکھنا کا حق ہے اور اُس میں کھٹالے بڑھانے کا نہیں۔

اسلامی اتھاس میں ایک سماج اور ایک راج کا اندیشہ بہت دنوں تک قائم نہ رہا۔ جیوں جیوں اسلامی سماج پھلتا گیا دنیا کے الگ حصوں میں حاکم خود مختاری حکومتیں بننے لگیں۔ اور یہ سوال پیدا ہوا کہ خلیفہ اور ان حاکموں کے بیچ میں کیا رشتہ ہونا چاہئے۔ کچھ راج نہتی شلستریوں کی آئے میں ان حاکموں کو خلیفہ کا نائب سمجھنا چاہئے۔ اُس خیال سے ہندوستان کے مسلمان بادشاہوں نے اپنے خطابوں میں ایسے نام رکھے جیسے بھین خلیفۃ اللہ (اللہ کے خلیفہ کا دایاں ہاتھ)، ناصر امیر المؤمنین (امیر المؤمنین کا مددگار)، سلطان (حکومت کرنے والا)۔

اسلامی اتھاس میں ایک سماج اور ایک راج کا اندیشہ بہت دنوں تک قائم نہ رہا۔ جیوں جیوں اسلامی سماج پھلتا گیا دنیا کے الگ حصوں میں حاکم خود مختاری حکومتیں بننے لگیں۔ اور یہ سوال پیدا ہوا کہ خلیفہ اور ان حاکموں کے بیچ میں کیا رشتہ ہونا چاہئے۔ کچھ راج نہتی شلستریوں کی آئے میں ان حاکموں کو خلیفہ کا نائب سمجھنا چاہئے۔ اُس خیال سے ہندوستان کے مسلمان بادشاہوں نے اپنے خطابوں میں ایسے نام رکھے جیسے بھین خلیفۃ اللہ (اللہ کے خلیفہ کا دایاں ہاتھ)، ناصر امیر المؤمنین (امیر المؤمنین کا مددگار)، سلطان (حکومت کرنے والا)۔

शुरु में खिलाफत एक मजहबी आह्वान था, पर पहले म्लार खलीफाओं के बाद इसकी स्वासियत में तब्दीली आ गई और मजहब के साथ दुनिया की बादशाहत के तत्त्व शामिल हो गए. जब खिलाफत की ताकत बिलकुल खत्म हो गई तो सिर्फ नाम रह गया और उसके साथ आह्वे का मान. इसलामी देशों के हाकिम अपने अपने राज्य के मलिक बन गए जो खलीफा की दिखावे की इज्जत करते थे. वे मस्जिद में ख़ुतबे (जुम्मे की नमाज में मिम्बर से ब्याख्यान) में खलीफा का नाम लेते थे और अपने सिक्कों पर उसके नाम का ठप्पा लगाते थे. यह सब इसलिए भी होता था कि मुसलमान रियाया के दिलों पर यह असर डालें कि उनकी हुकूमत खलीफाओं की आज्ञाओं पर निर्भर है. हिन्दुस्तान की तारीख में इसकी कई मिसालें मिलती हैं. इस्तुमिश ने 1229 में खलीफा से फ़र्मान मंगाया और इसे दरबार में बड़े आदर के साथ पढ़कर सुनाया. मुहम्मद बिन तुग़लक़ जो 1325 में सिंहासन पर बैठा बड़ी कठिनाइयों में फँसा. उसने अपने राज के अठारवें साल में खलीफा से सनद हासिल की.

जब मुगलों ने दिल्ली पर क़ब्ज़ा किया उस वक्त् ख़िलाफ़त तुर्कों के हाथ में थी, पर मुग़ल इन्हें ख़लीफ़ा मानने को तैयार न थे. उनके सामने सवाल यह था कि मुग़ल बादशाहत को किन उसूलों पर कायम करें. बाबर ने जिस बादशाहत की दाराबेल डाली उस पर उसके बाद के बादशाहों ने एक शानदार महल खड़ा किया. इसका पूरा नक़शा अबुलफ़ज़ल ने आईने अकबरी में खींचा और इससे अकबरी राज के उसूलों की तस्वीर हमारी निगाहों के सामने आती है. अबुलफ़ज़ल लिखता है—

“उस न्याय करने वाले (ईश्वर) क सामने जिसके समान कोई दूसरा नहीं, बादशाही से बढ़कर कोई रतबा नहीं और जितने बुद्धिमान लोग हैं वह उसी के इकबाल के खोते से प्यास बुझाते हैं. जो इस बात की दलील चाहते हैं उनके लिये यह कहना काफी है कि बादशाही आदमियों के गिरोहों के विद्रोह का इलाज और रिआया के हुक्म मानने की वजह है. इस बात को पादशाह का लफ्ज भी जाहिर करता है. क्योंकि “पाद के माने हैं प्रतिष्ठा और अधिकार (मजबूती और कब्जा) और “शाह” के माने हैं जड़ (असल) और मालिक (खुदाबन्द). पादशाह प्रतिष्ठा और अधिकार का सांता और ईश्वर है. आज हुक्मत का दबदबा न रहे तो भगड़े की आँधी कैसे दब सकती है और स्वार्थ की बुराई कैसे दूर हो सकती है ? आदमी काम और क्रोध के बस में आकर नाश के गढ़े में गिर पड़े, दुनिया में चारों ओर से रौनक उठ जाए और थोड़े दिनों में पृथ्वी सूनी हो जाए.....शाह का मतलब उस चीज से भी होता है जो सबसे अच्छी हो जैसे शाहसवार और शाहराह.

شروع میں خلافت ایک مذہبی عہدہ تھا، پھر پہلے چار خلیفوں کے بعد اس کی خاصیت میں تبدیلی آگئی اور مذہب کے سلسلہ دنیا کی بادشاہت کے تحت شامل ہو گئے۔ جب خلافت کی طاقت بالکل ختم ہو گئی تو صرف نام رہ گیا اور اس کے ساتھ عہدہ کا مان۔ اسلامی دیشوں کے حاکم اپنے اپنے راجہ کے مالک بن گئے جو خلیفہ کی دکھانے کی عزت کرتے تھے۔ وہ مسجد میں خطبہ (جمعہ کی نماز میں منبر سے دیا جاتا تھا) میں خلیفہ کا نام لیتے تھے اور اپنے سکوں پر ان کے نام کا ٹھہ لگاتے تھے۔ یہ سب اس لئے بھی ہوتا تھا کہ مسلمان رعایا کے دلوں پر یہ اثر ڈالیں کہ ان کی حکومت خلیفوں کی آگیاؤں پر نہیں ہے۔ ہندوستان کی تاریخ میں اس کی کئی مثالیں ملتی ہیں۔

التمش نے 1229 میں خلیفہ سے فرمان منگا یا اور اسے دربار میں بڑے آمر کے ساتھ بڑھکر سنایا۔ محمد بن تغلق جو 1325 میں سنگھاسن پر بیٹھا بڑی کٹھنائیوں میں پہنسا۔ اس نے اپنے راج کے اٹھارہویں سال میں خلیفہ سے سند حاصل کی۔

جب مہلوں نے دلی پر قبضہ کیا اُس وقت خلافت ترکوں کے ساتھ میں تھی پر مغل انہیں خلیفہ ماننے کو تیار نہ تھے۔ اُن کے سامنے سوال یہ تھا کہ مغل بادشاہت کو کن اصولوں پر قائم کریں۔ باہر نے جس بادشاہت کی داغ بیل ڈالی اُس پر اُس کے بعد کے بادشاہوں نے ایک شاندار محل کھڑا کیا۔ اِس کا پورا نقشہ ابوالفضل نے آئین اکبری میں کھینچا اور اِس سے اکبری راج کے اصولوں کی تصویر ہماری نگاہوں کے سامنے آئی ہے۔ ابوالفضل لکھتا ہے—

”اُس فیائے کرتے والے (ایشور) کے سامنے جس کے سداں کوئی دوسرا نہیں، بادشاہی سے ہڑھکر کوئی رتبہ نہیں اور جتنے بدقسمان لوگ ہوں وہ اُسی کے اقبال کے سوتے سے پیاس بجھاتے ہیں۔ جو اِس بات کی دلیل چاہتے ہیں اُن کے لئے یہ کہنا کافی ہے کہ بادشاہی آدمیوں کے گردوں کے درود کا علاج اور رعایا کے حکم ماننے کی وجہ ہے۔ اِس بات کو بادشاہ کا لفظ بھی ظاہر کرتا ہے۔ کیونکہ ”پاد“ کے معنی ہیں پرستشیا اور اندھیکار (مضبوطی اور قبضہ) اور ”شاه“ کے معنی ہیں جز (اہل) اور مالک (خداوند)۔ بادشاہ پرستشیا اور اندھیکار کا سوتا اور ایشور ہے۔ آج حکومت کا دبدبہ نہ رہے تو جھکے کی اندھی کیسے دب سکتی ہے اور سوارتہ کی ہرائی کیسے دور ہو سکتی ہے؟ آدمی کام اور کردہ کے پس میں آکر ناہی کے گڑھے میں گر پڑیں، دنیا میں چلروں اور سے رونق اُٹھ جائے اور تھوڑے دنوں میں پوتھی سولی ہو جائے... شاہ کا مطلب اُس چیز سے بھی ہوتا ہے جو سب سے اچھی ہو جیسے شاہ سولہ اور شاہ راہ۔

روز اس کے محلے دامان کے بھی ہیں۔ دنیا کی دھن
ہاشا کو بہرتی ہے اور وہ سندر بہو اُس کی پوجا کرتی ہے...
ہاشا کی جھوٹی ہے جو ایشور سے نکلی ہے، وہ کرن ہے جو
سلسار کو روشن کرنے والے سورج سے اگتی ہے۔ سب سدھیں
کی پستھوں کی تالیکا اور سارے گزوں کا خزانہ ہے۔ چلتی ہاشا
میں اسے فر ایزدی (دیوی جھوٹی) اور پرانی ہاشا میں کہان
خوارہ (پارمارتھک تیج) کہتے ہیں۔

”بادشاہ میں چار خاصیتیں ہونی ضروری ہیں۔ پہلی یہ کہ راجہ کو پرچا کے ماں باپ کی جگہ ہونا چاہئے کیونکہ رعایا اُس کی مہربانی سے سکم پاتی ہے اور مت منافقوں کے جھکڑوں سے بچتی ہے۔ دوسرے راجہ کا دل اور حوصلہ بڑا ہونا چاہئے۔ تیسرے اُسے ایشور پر دنوں دن بڑھتا پیروں سے کرنا چاہئے۔ اور چوتھے اُس کا من پرارتہا اور بھکتی میں لگا رہنا چاہئے۔ اپنے کاموں میں پہلے دیکھتے ہوئے ایشور کو بھولنا نہیں چاہئے اور آفتوں میں پڑ کر مت بھرائت نہ ہونا چاہئے۔ بادشاہ کا کلم ہے کہ پرچا کی پہلائی اور اُس کے دکھوں کے علاج میں لگا رہے۔“

ابوالفضل کے مطابق بادشاہی دیپار کے نہیں انگ ہیں۔ ایک اور راج نواس کی اُنتی، دوسرے فوج کی سہلنا اور تیسرے پرجا کی بڑھوتری۔ پہلے انگ میں شاہی خزانہ، ہاتھی، گھڑے، ساز، سامان، کار خانے، دربار، محل، رنواس اور پریوار شامل ہیں۔ دوسرے میں پیدل، سوار، توپخانہ، سپاہی اور انسیر، اور تیسرے میں کہتی اور گلوں کی آبادی۔ ان تینوں کو ملا کر جہانبانی (لوک پالین) اور جہانداری (دگرجئے) کے اندر رکھا جا سکتا ہے۔

ابوالفضل کے بیان سے صاف معلوم ہوتا ہے کہ اکبر راج کی شکتی کو ایشور کی دین سمجھتا تھا اور اپنی چیشٹاؤں کا بہت اُنچا اُدش رکھتا تھا۔ جہاں وہ یہ چاہتا تھا کہ راج کی شکتی کو سماج کے جیوں کے ہر ایک انگ میں استعمال کرے، دھرم اور چال چلن کے سدھار میں بھی اور ہنج بیہزار اور کھیتی دستکاری کی اُننتی میں بھی، رشاں وہ یہ بھی سمجھتا تھا کہ اِس وشال شکتی کو ایشوری تپائے اور فاترن کی حدوں سے باہر نہ جانے دے۔ اپنی راج شکتی کو وہ دنیا کی کسی باہری طاقت سے نیچا ماننے کو تیار نہ تھا۔ اُسی لئے اُس نے اپنے خطابوں کے ذریعہ اپنی پوری آزادی کا اعلان کیا۔ اُس کے خطاب یہ تھے:—

سلطان الاعظم (سلطانوں میں سب سے بڑا سلطان)

خاقان معظم (بادشاہوں میں سب سے بڑا بادشاہ)

خالی کاغذ-میں (اُچی پدھی والا خلیفہ)
ہمامہ آدیل (مہاراجہ پشاور)۔

بادشاہِ ایشور کا ارشاد ہے۔ اسلئے اسنے کورنیش،
تسلیم، ارمیوس، ناز، اور نیواک کے رواج جاری
کیئے۔ ایشور کی آغوش میں سارے جگت کے پراپی ایک سامان
ہے، ایشور نے ایشور، مسلمان، جین، ایشور،
سب کے ساتھ ایکسا برتاوہ مناسبتھا۔ یہی سلوک
کول (سب کے ساتھ پرم) کی نیکی تھی جسنے ہندوستان
کی تاریخ میں اس جگمگاتے ستارے بننے
کا اہمہ کیا جس کو پرمہر آج بھی ہم اپنے قومی جیوں کے لئے
اچھا سبق حاصل کر سکتے ہیں۔

خلیفہ مہدی (اُچی پدھی والا خلیفہ)
امام عادل (مذہبی پیشوا)۔

بادشاہِ ایشور کا ارشاد ہے۔ اسلئے اسنے کورنیش،
تسلیم، ارمیوس، ناز، اور نیواک کے رواج جاری
کیئے۔ ایشور کی آغوش میں سارے جگت کے پراپی ایک سامان
ہے، ایشور نے ایشور، مسلمان، جین، ایشور،
سب کے ساتھ ایکسا برتاوہ مناسبتھا۔ یہی سلوک
کول (سب کے ساتھ پرم) کی نیکی تھی جسنے ہندوستان
کی تاریخ میں اس جگمگاتے ستارے بننے
کا اہمہ کیا جس کو پرمہر آج بھی ہم اپنے قومی جیوں کے لئے
اچھا سبق حاصل کر سکتے ہیں۔

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

انوارِ اکبر—شرعی مجاہد رضوی

انوارِ اکبر—شرعی مجاہد رضوی

محمد صاحب نے کہا :—”اللہ کا جو کوئی بندہ
دنیا کے لوگوں کو (بے پرواہی) کی نگاہ سے دیکھتا ہے ایشور اُس
کے دل میں روپک پیدا کرتا ہے اور اُس کی زبان کو ایسا بنا
دیتا ہے کہ وہ اسی روپک کی روشنی میں بولتی ہے۔ ایشور اُسے
دنیا کی برائیاں اور بیماریاں اور اُن سب کا علاج بتا دیتا ہے
اور اُسے اُن سب کے پیچ سے بچانا ہوا آفتِ شامی کے لڑکے
میں پہنچا دیتا ہے۔“

محمد صاحب نے کہا :—”اللہ کا جو کوئی بندہ
دنیا کے لوگوں کو (بے پرواہی) کی نگاہ سے دیکھتا ہے ایشور اُس
کے دل میں روپک پیدا کرتا ہے اور اُس کی زبان کو ایسا بنا
دیتا ہے کہ وہ اسی روپک کی روشنی میں بولتی ہے۔ ایشور اُسے
دنیا کی برائیاں اور بیماریاں اور اُن سب کا علاج بتا دیتا ہے
اور اُسے اُن سب کے پیچ سے بچانا ہوا آفتِ شامی کے لڑکے
میں پہنچا دیتا ہے۔“

—ابو زر : بھٹی۔

—ابو زر : بھٹی۔

محمد صاحب نے کہا :—”کیوں موتا اور کھردرا کھڑا پہننا
اور روکھا سوکھا کھانا اِس دنیا کو قیامت نہیں ہے، اِس دنیا کو
نہانے کا مطلب یہ ہے کہ آدمی اپنی خواہشوں یعنی اچھاؤں
کو کم کرے۔“

محمد صاحب نے کہا :—”کیوں موتا اور کھردرا کھڑا پہننا
اور روکھا سوکھا کھانا اِس دنیا کو قیامت نہیں ہے، اِس دنیا کو
نہانے کا مطلب یہ ہے کہ آدمی اپنی خواہشوں یعنی اچھاؤں
کو کم کرے۔“

—صفیان۔

—صفیان۔

میں نے کہا :—”اے اللہ کے رسول ! مجھے کچھ اُپدیش
دیجئے۔“ محمد صاحب نے کہا :—”کبھی کسی کو گالی نہ
دو۔“ اِس کے بعد سے میں نے کبھی بھی کسی آزاد آدمی
’ظلم‘ اُرنٹ یا بھڑک کو گالی نہیں دی۔ محمد
صاحب نے یہ بھی کہا کہ :—”کسی اچھی چیز سے نفرت
نہ کرو، اور پرم سے چٹ ہوکر اپنے بھائی سے بات کرو، سچ
یہ ہے کہ ایسا کرنا نہکی اور دیا کے کاموں میں سے ہے؛

میں نے کہا :—”اے اللہ کے رسول ! مجھے کچھ اُپدیش
دیجئے۔“ محمد صاحب نے کہا :—”کبھی کسی کو گالی نہ
دو۔“ اِس کے بعد سے میں نے کبھی بھی کسی آزاد آدمی
’ظلم‘ اُرنٹ یا بھڑک کو گالی نہیں دی۔ محمد
صاحب نے یہ بھی کہا کہ :—”کسی اچھی چیز سے نفرت
نہ کرو، اور پرم سے چٹ ہوکر اپنے بھائی سے بات کرو، سچ
یہ ہے کہ ایسا کرنا نہکی اور دیا کے کاموں میں سے ہے؛

پیر अगर तुम्हारी किसी कमजोरी को जानने के कारण कोई तुम्हें बुरा भला कहता है और तुम से नफरत करता है तो तुम उसकी उन कमजोरियों के आधार पर जिन्हें तुम जानते हो उससे नफरत न करो ताकि तुम्हें इस नेकी का इनाम मिल सके और उसका पाप उसके सर रहे.

—जाविर بن सुलेमान : अबुदाؤد.

मुहम्मद साहब ने कहा :—“जो मर चुके हैं उन्हें बुरा भला न कहो क्योंकि ऐसा करके तुम उन लोगों का दिल दुखाते हो जो खिन्दा हैं.

—युरैरा : तिरमिष्बी.

मुहम्मद साहब ने कहा :—“आँखों का व्यभिचार (बदचलनी) किसी को बुरी निगाह से देखना है, कानों का व्यभिचार बुरी बातों को सुनकर उनमें रस लेना है, ज़बान का व्यभिचार बुरी बातों का बोलना है, हाथों का व्यभिचार बिना इज़ा के किसी को हाथ लगाना है, पैरों का व्यभिचार बुरे इरादे से कहीं जाना है. दिल बुरे काम की इच्छा करता है, अपने में लालसा पैदा करता है, और आदमी की इन्द्रियाँ (हवास) या तो उस बुराई को अमल में लाती हैं और या बुराई के इरादे को ही ख़तम कर देती हैं.”

—बुख़ारी; मुसलिम; अबुदाؤद.

पैगम्बर ने अपने साथियों से पूछा :—“आप लोग किसے बलवान समझते हैं ?” उनके साथियों ने कहा :—“उसे जो दूसरे का कुशती में पछाड़ दे.” पैगम्बर ने कहा :—“नहीं ! वह आदमी सब से ज्यादा बलवान है जो गुस्से में अपने ऊपर काबू रखता है.”

—इब्न मसऊद : मुसलिम; अबुदाؤद.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—“वह आदमी बलवान या बहादुर नहीं है जो लोगों को पछाड़ देता है, हम में से वह आदमी बलवान और बहादुर है जो अपने गुस्से को काबू में कर लेता है.”

—बुख़ारी; मुसलिम.

मुहम्मद साहब ने कहा कि :—“सच बात यह है कि आदम के बेटों के दिलों में गुस्सा एक शोले की तरह है. क्या गुस्से वाले आदमी के आँखों की लाली और उसके गले की फूलती हुई नसें तुम्हें दिखाई नहीं देती ? यदि इन अलामतों में से कोई भी किसी को अपने अन्वर अनुभव हो तो उसे तुरन्त ज़मीन पर बैठ जाना चाहिये.”

—अबुसईद अलखुदरी : तिरमिष्बी.

اور اگر تمہاری کسی کمزوری کو جاننے کے کارن تمہیں برا بھلا کہتا ہے اور تم سے نفرت کرتا ہے تو تم اُس کی اُن کمزوریوں کے ادھار پر جلتے ہو اُس سے نفرت نہ کرو۔ تاکہ تمہیں اِس نہی کا انعام مل سکے اور اُس کا پاپ اُس کے سر رہے۔“

—جاویر بن سلیمان : ابوداؤد.

محمد صاحب نے کہا :—“جو مرنے والے ہیں انہیں برا بھلا نہ کہو کیونکہ ایسا کر کے تم ان لوگوں کا دل دکھاتے ہو جو زندہ ہیں۔“

—مفیدہ : ترمذی.

محمد صاحب نے کہا :—“آنکھوں کا وہیچار (بدچلنی) کسی کو بری نگاہ سے دیکھنا ہے، کانوں کا وہیچار بری باتوں کو سنکر اُن میں رस لینا ہے، زبان کا وہیچار بری باتوں کا بولنا ہے، ہاتھوں کا وہیچار بنا حق کے کسی کو ہاتھ لگانا ہے، پیروں کا وہیچار برے ارادے سے کہیں جانا ہے. دل برے کام کی اچھا کرتا ہے، اپنے میں لالسا پیدا کرتا ہے، اور آدمی کی اندریاں (حواس) یا تو اُس برائی کو عمل میں لاتی ہیں اور یا برائی کے ارادے کو ہی ختم کر دیتی ہیں.”

—بخاری; مسلم; ابوداؤد.

پیغمبر نے اپنے ساتھیوں سے پوچھا :—“آپ لوگ کسے بولان سمجھتے ہیں ؟” اُن کے ساتھیوں نے کہا :—“اُسے جو دوسرے کو کشتی میں پھینک دے.” پیغمبر نے کہا :—“نہیں ! وہ آدمی سب سے زیادہ بولان ہے جو غصے میں اپنے اوپر قابو رکھتا ہے.”

—ابن مسعود : مسلم; ابوداؤد.

محمد صاحب نے کہا کہ :—“وہ آدمی بولان یا بہادر نہیں ہے جو لوگوں کو پھینک دیتا ہے، ہم میں سے وہ آدمی بولان اور بہادر ہے جو اپنے غصے کو قابو میں کر لیتا ہے.”

—بخاری; مسلم.

محمد صاحب نے کہا کہ :—“سچ بات یہ ہے کہ آدم کے بیٹوں کے دلوں میں غصہ ایک شعلے کی طرح ہے. کیا غصہ والے آدمی کے آنکھوں کی لالی اور اُس کے گلے کی پھولتی ہوئی نسیں تمہیں دکھائی نہیں دیتی ہیں ؟ یہی ان علامتوں میں سے کوئی بھی کسی کو اپنے اندر اُنویہو ہو تو اُسے ترنت زمین پر بیٹھ جانا چاہئے.”

—ابو سعید الخدری : ترمذی.

محمّد صاحب نے کہا :—”کچھ ہونے کی حالت میں اگر تم میں سے کسی کو غصہ آجائے تو اسے بیٹھ جانا چاہئے؛ پھر اگر اس کا غصہ اُتر جائے تو اچھا نہیں تو اسے لیٹ جانا چاہئے۔“

—ابوداؤد۔

—ابوداؤد۔

پیرامبر کے پاس ایک آدمی آیا اور کہنے لگا—
”پے رسول ! مجھے کوئی ایسی بات بتائیے جس کا میں پالنے کی ضرورت نہیں ہے، لیکن وہ بات میرے لئے اتنی گہری نہ ہو کہ میں اس سے بے پروا ہو جاؤں۔“

پیرامبر نے جواب دیا—”غصہ نہ کیا کرو۔“
—بخاری؛ مسلم؛ ترمذی۔

—بخاری؛ مسلم؛ ترمذی۔

پیرامبر نے کہا :—”کسی کی چغلی کرنا اپنے بھائی کے لئے برا ہے۔ جو کوئی کسی کو اس سے روکتا ہے خدا کے سامنے اس کا یہ حق قائم ہو جاتا ہے کہ خدا اسے دروزخ کی آگ سے بچالے۔“

—بخاری۔

پیرامبر نے کہا :—”کسی کی چغلی کرنا اپنے بھائی کا مانس نہالنے کے برابر ہے۔ جو کوئی کسی کو اس سے روکتا ہے خدا کے سامنے اس کا یہ حق قائم ہو جاتا ہے کہ خدا اسے دروزخ کی آگ سے بچالے۔“

—بخاری۔

آنسار میں سے ایک آدمی محمد صاحب کے پاس آیا اور اس نے اُن سے بیٹھ کر مانتی۔ پیرامبر نے اُس سے پوچھا—”کیا تمہارے گھر میں کچھ بھی نہیں ہے؟“ اُس نے کہا—”ہاں، میرے پاس ایک اونٹنی درو ہے جس کا ایک حصہ ہم اور ہماری بیوی اور دوسرا ہم بچھاتے ہیں اور ہمارے پاس ایک پیالہ ہے جس سے ہم پانی پیتے ہیں۔“ پیرامبر نے کہا—”یہ دونوں چیزیں لیکر تم میرے پاس آؤ۔“ وہ آدمی دونوں چیزیں محمد صاحب کے پاس لیکر آیا۔ اُنہوں نے اُن چیزوں کو ہاتھ میں لے کر کہا—”ان دونوں چیزوں کو کون خریدیگا؟“ ایک آدمی نے کہا—”میں ایک درم میں دونوں چیزیں خرید لوں گا۔“ پیرامبر نے پھر کہا—”کوئی ہے جو ایک درم سے ادھک دے؟“ یہ بات اُنہوں نے دو بارہ تباہہ کہی۔ ایک دوسرے آدمی نے کہا—”میں دونوں چیزوں کے لئے دو درم دے دوں گا۔“ پیرامبر نے دونوں چیزیں اُس آدمی کے حوالے کر دیں اور دو درم لیکر چیزوں کے مالک کو دیکر کہا—”ان میں سے ایک درم کا کھانا خریدو اور اپنے گھروالوں کو پہنچا دو اور دوسرے درم سے ایک گھڑی خرید لو۔“ اُسے لیکر میرے پاس آؤ۔“ اُنہوں نے اپنے ہاتھوں سے اُس میں بیٹھ لگایا اور کہا—”جاؤ جنگل سے لکڑی کاٹ کر لے آؤ اور پندرہ دن تک مجھے شکل نہ دکھانا۔“ اُس آدمی نے ویسا ہی کیا جیسا اُسے حکم ملا تھا۔ جب اُس کے پاس دس درم ہو گئے تب وہ آدمی محمد صاحب کے پاس

آیا۔ اس رقم میں سے کچھ کا اُس نے کپڑا خریدا اور باقی کا کھانا۔ پیغمبر نے تب کہا—”قیامت کے دن کالک پونے سالہ اُس سے یہ تمہارے لئے بہتر ہے۔“

—انس: ابو داؤد۔

—انس: ابو داؤد۔

محمد صاحب نے کہا—”سبب یہ ہے کہ پاس رکھتے ہوئے بھیک مانگنا جائز نہیں ہے، اور نہ اُن لوگوں کے لئے بھیک مانگنا جائز ہے جن کا شریعہ مضبوط ہے یا جو خاصی اچھی طرح رہتے ہیں۔ مانگنا اُس کے لئے جائز ہے جو نادار ہے اور دھم سے جیون و بھیت کرتا ہے، یا جس کا دیوالہ نکل گیا ہے اور جو قرض میں دبا ہوا ہے، اور جو کوئی اپنا دھن بڑھانے کے لئے دوسروں سے بھیک مانگتا ہے قیامت کے دن اُس کے بدن پر داغ ہونگے اور اُس کا شریعہ زخموں سے بھرا ہوگا اور اُس پر اُسے بری طرح دوزخی پتھر پھرتے ہونگے۔ اب فیصلہ تمہارے ہاتھوں میں ہے کہ یا تو اپنی تھوڑی سی پونجی سے سنتشک رہو اور یا اپنی پونجی کو بھیک مانگ کر بڑھانے کی کوشش کرو۔“

—تیرمچی۔

—ترمزی۔

محمد صاحب نے کہا—”تم میں جو کوئی اپنی دسی لہکر پہاڑ پر جاتا ہے اور لکڑی کا بوجھ پیٹھ پر لاد کر لاتا ہے اور اُسے بیچتا ہے تو خدا اُس کی رکشا کرتا ہے۔ دوسروں سے بھیک مانگنے کے مقابلے میں، چاہے وہ دیں یا نہ دیں، یہ کام اُس کے لئے بہتر ہے۔“

—زہیر: بخاری۔

—زہیر: بخاری۔

★★★

★★★

منتر پڑھنا، بجن گانا اور مالا فیرنا چھوڑ، مندر کے سارے دروازے بند کر۔ اِس اندھیرے اگانت کوئے میں تو کس کی پوجا کرتا ہے؟ اپنی آنکھیں کھول کر دیکھ تیرا دیوتا تیرے سامنے نہیں ہے۔

منتر پڑھنا، بجن گانا اور مالا پھیرنا چھوڑ، مندر کے سارے دروازے بند کر۔ اِس اندھیرے اگانت کوئے میں تو کس کی پوجا کرتا ہے؟ اپنی آنکھیں کھول کر دیکھ تیرا دیوتا تیرے سامنے نہیں ہے۔

ہل چلانے والا جہاں کتھور بھومی میں ہل چلا رہا ہے اور سڑک بنانے والا جہاں پتھر توڑ رہا ہے، بھکوان وہاں ہی اُن کے ساتھ دھوپ میں ہے اور بارش میں ہے، اُس کا کپڑا دھول میں لت پت ہے۔

ہل چلانے والا جہاں کتھور بھومی میں ہل چلا رہا ہے اور سڑک بنانے والا جہاں پتھر توڑ رہا ہے، بھکوان وہاں ہی اُن کے ساتھ دھوپ میں ہے اور بارش میں ہے، اُس کا کپڑا دھول میں لت پت ہے۔

—ریندر ناتھ ٹاکور

—ریندر ناتھ ٹاکور

★★★

★★★

[2]

[2]

پریشیت سندرللال
(پہلے نمبر سے آگے)

(11)

پلڈت سندر لال
(پہلے نمبر سے آگے)

(11)

ایک دن جب ہم حج کے ارادے سے چلے تو اہلور کے راستے میں ایک ہندو فقیر چار چیلوں سمیت ہمارے ساتھ ہوئے۔ کہنے لگے کہ رات کو ہمارے ساتھ ٹھہرنا۔ رات ہوئی تو ہم سب کے سب ایک دھرم شالہ میں جا اُترے۔ اُنہوں نے چیلوں سے پوچھا کیا کھاؤ گے؟ سب نے اپنی اپنی طبیعت کی چیز کہی۔ وہی کھانا موجود ہو گیا۔ پھر ہم سے پوچھا۔ ہم نے کہا صاحب! جو آپ کھاؤ گے وہی ہم کھاؤ گے۔ کہا میں تو مونگ کی دال اور چھاتی کھایا کرتا ہوں۔ جب اُن کا کھانا تیار ہوا تو ہم نے بھی وہی کھایا۔ بات چیت شروع ہوئی تو آپس میں پریم ہو گیا۔ میں نے اُن سے کہا کچھ اُپدیش دیجئے۔ کہنے لگے تین دن ہمارے پاس رہو تو چوتھے دن اُپدیش دیں گے۔ ہم تہر گئے۔ اُنہوں نے تین دن تک ہم سے روت رکھوایا۔ پھر کویا درشتی ڈالی اور اُپدیش دیا۔ سچ میچ بڑے پہنچے ہوئے آدمی تھے۔ ہم بہت لوگوں سے ملے اور اُپدیش لیا، پر یہ بات اور یہ اثر کسی میں نہیں دیکھا۔ اُن کی درشتی پڑتے ہی ہمارا دل گلاب کے پھول کی طرح کھل گیا اور غایم ہو گیا۔ ایک دن (روح) (آتما) کے ایک جسم (شریر) سے دوسرے جسم میں جانے کی بات آئی۔ کہا کہ ہاں ہو سکتا ہے۔ کیا تم تماشہ دیکھو گے؟ میں نے کہا—ضرور۔ کہا تو ایک مرا ہوا جانور لاؤ۔ اگلے دن ہم ایک مرا ہوا طوطا لائے۔ رات کے وقت وہ دیوار سے تکیہ لگا کر بیٹھ گئے اور طوطے کو سامنے رکھ لیا۔ دیا بجھا دیا۔ سسکی لہکر دم کھینچا۔ کہتے سے ایک آواز ہوئی، بجلی سی چبکی اور طوطے میں جان آگئی۔ ہم نے اُسے پکڑ لیا اور ہاتھیں کرنی شروع کیں۔ وہ بول تو نہ سکتا تھا لیکن اشارے سے باتیں کرتا تھا۔ پھر ہم نے کہا کہ اچھا اب اپنے جسم میں آجائے۔ تماشہ دیکھ لیا۔ وہ اُسی چمک دمک سے اپنے جسم میں آگئے۔ ہم نے کہا کہ یہ بات ہم کو بھی سکھادیجئے۔ کہا کہ اچھا 15 دن میں سکھلا دیں گے۔ مگر روٹی کھانے کو منع کر دیا۔ صرف دودھ اور چاول کھانے کو کہا اور کھانی چھوٹا بتایا۔ کھالی دو طرح

ایک دن جب ہم حج کے ارادے سے چلے تو اہلور کے راستے میں ایک ہندو فقیر چار چیلوں سمیت ہمارے ساتھ ہوئے۔ کہنے لگے کہ رات کو ہمارے ساتھ ٹھہرنا۔ رات ہوئی تو ہم سب کے سب ایک دھرم شالہ میں جا اُترے۔ اُنہوں نے چیلوں سے پوچھا کیا کھاؤ گے؟ سب نے اپنی اپنی طبیعت کی چیز کہی۔ وہی کھانا موجود ہو گیا۔ پھر ہم سے پوچھا۔ ہم نے کہا صاحب! جو آپ کھاؤ گے وہی ہم کھاؤ گے۔ کہا میں تو مونگ کی دال اور چھاتی کھایا کرتا ہوں۔ جب اُن کا کھانا تیار ہوا تو ہم نے بھی وہی کھایا۔ بات چیت شروع ہوئی تو آپس میں پریم ہو گیا۔ میں نے اُن سے کہا کچھ اُپدیش دیجئے۔ کہنے لگے تین دن ہمارے پاس رہو تو چوتھے دن اُپدیش دیں گے۔ ہم تہر گئے۔ اُنہوں نے تین دن تک ہم سے روت رکھوایا۔ پھر کویا درشتی ڈالی اور اُپدیش دیا۔ سچ میچ بڑے پہنچے ہوئے آدمی تھے۔ ہم بہت لوگوں سے ملے اور اُپدیش لیا، پر یہ بات اور یہ اثر کسی میں نہیں دیکھا۔ اُن کی درشتی پڑتے ہی ہمارا دل گلاب کے پھول کی طرح کھل گیا اور غایم ہو گیا۔ ایک دن (روح) (آتما) کے ایک جسم (شریر) سے دوسرے جسم میں جانے کی بات آئی۔ کہا کہ ہاں ہو سکتا ہے۔ کیا تم تماشہ دیکھو گے؟ میں نے کہا—ضرور۔ کہا تو ایک مرا ہوا جانور لاؤ۔ اگلے دن ہم ایک مرا ہوا طوطا لائے۔ رات کے وقت وہ دیوار سے تکیہ لگا کر بیٹھ گئے اور طوطے کو سامنے رکھ لیا۔ دیا بجھا دیا۔ سسکی لہکر دم کھینچا۔ کہتے سے ایک آواز ہوئی، بجلی سی چبکی اور طوطے میں جان آگئی۔ ہم نے اُسے پکڑ لیا اور ہاتھیں کرنی شروع کیں۔ وہ بول تو نہ سکتا تھا لیکن اشارے سے باتیں کرتا تھا۔ پھر ہم نے کہا کہ اچھا اب اپنے جسم میں آجائے۔ تماشہ دیکھ لیا۔ وہ اُسی چمک دمک سے اپنے جسم میں آگئے۔ ہم نے کہا کہ یہ بات ہم کو بھی سکھادیجئے۔ کہا کہ اچھا 15 دن میں سکھلا دیں گے۔ مگر روٹی کھانے کو منع کر دیا۔ صرف دودھ اور چاول کھانے کو کہا اور کھانی چھوٹا بتایا۔ کھالی دو طرح

کی ہوتی ہے۔ ایک بھگوانا، جس میں سانس روکنے کے لیے ہوا کاایم رکھنا ہے، دوسری بھگوانا کی جس میں سانس روکنے کے لیے ہوا بھی نہیں رکھتا۔ اس سے پہلے بھگوانا کو کھانا پکھانا کرنا اور 15 دن میں اپنا کام پورا کر دینا، اس نے کئی دن کر کے یہ کام پورا کر دیا، کیونکہ ایک بھگوانا تھا۔ کھانا پکھانا ہمیں لوگوں سے یاد تھا، اسی لئے 15 دن میں سب کام پورا ہو گیا۔

(12)

ہندوستان میں ایک کھانا بھگوانا تھا۔ اس میں سانس روکنے کے لیے ہوا کاایم رکھنا ہے، دوسری بھگوانا کی جس میں سانس روکنے کے لیے ہوا بھی نہیں رکھتا۔ اس سے پہلے بھگوانا کو کھانا پکھانا کرنا اور 15 دن میں اپنا کام پورا کر دینا، اس نے کئی دن کر کے یہ کام پورا کر دیا، کیونکہ ایک بھگوانا تھا۔ کھانا پکھانا ہمیں لوگوں سے یاد تھا، اسی لئے 15 دن میں سب کام پورا ہو گیا۔

(12)

ہندوستان میں ایک کھانا بھگوانا تھا۔ اس میں سانس روکنے کے لیے ہوا کاایم رکھنا ہے، دوسری بھگوانا کی جس میں سانس روکنے کے لیے ہوا بھی نہیں رکھتا۔ اس سے پہلے بھگوانا کو کھانا پکھانا کرنا اور 15 دن میں اپنا کام پورا کر دینا، اس نے کئی دن کر کے یہ کام پورا کر دیا، کیونکہ ایک بھگوانا تھا۔ کھانا پکھانا ہمیں لوگوں سے یاد تھا، اسی لئے 15 دن میں سب کام پورا ہو گیا۔

انہوں نے جواب دیا کہ یہ تو مشکل ہے۔ ہم نے کہا کہ اگر یہ مشکل ہے تو ہمارا بھی سہم ہے۔

(13)

ایک دن جب ہم کعبہ میں پہنچے تو حسن علی زمری کے حجبہ (کتاب) میں لکھا ہے۔ کچھ دنوں کے بعد مولوی محمد یعقوب اور مولانا شاہ اسحاق سے ملاقات ہوئی۔ دھیرے دھیرے ان سے آنا جانا بڑھ گیا۔ ایک دن ہم نے مولوی محمد یعقوب سے پوچھا کہ ”اللہ کا جلوہ (پرکاش) کیا عرب اور فلسطین میں کچھ الگ الگ ہے؟“ کہا۔ ”نہیں“۔ پھر ہم نے پوچھا۔ ”ہری دوار اور کعبہ میں کیا فرق ہے؟“ کہا۔ ”کچھ نہیں“۔ اس کے بعد ہم نے کہا کہ۔ ”پھر آپ ہندوستان سے کبوں بھاگے؟“ کہا کہ۔ ”بھائی! ہم محمدی ہیں تو ہمیں ہمارے یہ بات چیت مولانا شاہ اسحاق بھی پرانے کی آڑ میں بیٹھے سن رہے تھے اور ہم کو کچھ خبر نہ تھی۔ اس کے بعد ہم نے مولوی محمد یعقوب سے درخواست (پراپٹ) کی کہ ہمیں ”حسن حسن“ (ایک طرح کا منتر) کی اجازت دیجئے۔ انہوں نے کہا کہ بڑے بھائی صاحب سے لو۔ دوسرے دن شاہ صاحب سے درخواست کی۔ بڑے خطا ہوئے کہ ہمیں

ایک دن جب ہم کعبہ میں پہنچے تو حسن علی زمری کے حجبہ (کتاب) میں لکھا ہے۔ کچھ دنوں کے بعد مولوی محمد یعقوب اور مولانا شاہ اسحاق سے ملاقات ہوئی۔ دھیرے دھیرے ان سے آنا جانا بڑھ گیا۔ ایک دن ہم نے مولوی محمد یعقوب سے پوچھا کہ ”اللہ کا جلوہ (پرکاش) کیا عرب اور فلسطین میں کچھ الگ الگ ہے؟“ کہا۔ ”نہیں“۔ پھر ہم نے پوچھا۔ ”ہری دوار اور کعبہ میں کیا فرق ہے؟“ کہا۔ ”کچھ نہیں“۔ اس کے بعد ہم نے کہا کہ۔ ”پھر آپ ہندوستان سے کبوں بھاگے؟“ کہا کہ۔ ”بھائی! ہم محمدی ہیں تو ہمیں ہمارے یہ بات چیت مولانا شاہ اسحاق بھی پرانے کی آڑ میں بیٹھے سن رہے تھے اور ہم کو کچھ خبر نہ تھی۔ اس کے بعد ہم نے مولوی محمد یعقوب سے درخواست (پراپٹ) کی کہ ہمیں ”حسن حسن“ (ایک طرح کا منتر) کی اجازت دیجئے۔ انہوں نے کہا کہ بڑے بھائی صاحب سے لو۔ دوسرے دن شاہ صاحب سے درخواست کی۔ بڑے خطا ہوئے کہ ہمیں

ہذاقت نہیں دیں گے، کمال تو دونوں کجا بک رہے تھے؟' ہم نے معافی چلی۔ پھر شاہ صاحب نے ہمیں 'حسن حسن' پڑھائی اور اجازت دی۔ جب اجازت مل گئی تو ہم نے کہا کہ حضرت سچے سچ کہتے تھے کہ ہم دونوں جو بات چیت کر رہے تھے وہ حقیقت (سچائی) کے خلاف تھی؟ کچھ ٹھہرے، کہتے تھے کہ 'ہاں' سچ تو وہی ہے جو تم کہتے تھے مگر یہائی ہم محمندیوں کو ایسی بات مانو سے نکالنا اچھا نہیں لگتا، کیونکہ ان باتوں سے حضرت رسول (محمد صاحب) ناراض ہوتے ہیں، ہم نے کہا—'اور خدا؟' جواب دیا—'بس رہے دو۔ آگے بات چیت نہ کرو۔ آدمی خراب ہو جاتا ہے۔' اس وقت ہم نے کہا—'خدا کا شکر ہے کہ آپ بھی ہمارے ساتھی نکلے۔ بس' ہم کو اتنا ہی جاننا ہائی تھا۔' سکر ہنس دیے۔

(14)

ایک دن کعبہ میں ہمارے باپ کا ایک مرید (چیلہ) شہر کے دن تھوڑا سا حلوہ پکا کر لایا اور کہا کہ بزرگوں (پتروں) کی فاتحہ پڑھ دیجئے۔ ہم نے کہا کہ بیلے مانس دیکھ تو کہیسی مصیبت اٹھاکر ہم تم یہاں پہنچے ہیں۔ یہاں اس ذرا سے حلوے کے لئے کہیں بزرگوں (پتروں) کو تکلیف دیتا ہے۔ اتنی دور کا سفر، بیچ میں سندر اور پھر اگر روے آ بھی گئے تو اتلے سے حلوے میں بھلا کیا ہوگا؟ کیا تو انہیں آپس میں لڑانا چاہتا ہے؟ ہنسکر کہنے لگا 'میاں صاحب! آپ کو تو ہمیشہ مذاق ہی سوجھتا ہے۔ اپنے بزرگوں سے بھی نہیں چوتے! خیر' ہم نے فاتحہ پڑھکر حلوہ بانٹ دیا۔

(14)

ایک دن ہم چولی - مہیشہ میں پہنچے تو شام ہوگئی۔ ایک آدمی راستے میں ہمارے ساتھ ہولیا۔ اس نے کہا نرجدا ندی کے کنارے ایک باہا جی کا مکان ہے۔ چلو اسی میں رات بسر کریں گے۔ باہا جی سے اجازت چاہی۔ انہوں نے کہا کہ ہم تو کسی کو ٹھہرنے نہیں دیتے۔ ہم باہر آئے اور پیل کے پیر کے نیچے بستر لگا دیا۔

(15)

ایک دن ہم چولی - مہیشہ میں پہنچے تو شام ہوگئی۔ ایک آدمی راستے میں ہمارے ساتھ ہولیا۔ اس نے کہا نرجدا ندی کے کنارے ایک باہا جی کا مکان ہے۔ چلو اسی میں رات بسر کریں گے۔ باہا جی سے اجازت چاہی۔ انہوں نے کہا کہ ہم تو کسی کو ٹھہرنے نہیں دیتے۔ ہم باہر آئے اور پیل کے پیر کے نیچے بستر لگا دیا۔

درویشی ہو کجا کہ شب آمد سرائے اوست۔

(ارتھت—فقیر کو جہاں رات ہو جائے وہیں اُس کی سرائے ہے۔)

اپنے ساتھی سے ہم نے کہا کہ پہلی آدھی رات کا پہرہ تم دو۔ پہلی آدھی رات ہم جاگتے رہیں گے، کیونکہ یہ ندی کا کنارہ ہے، ممکن ہے کوئی جنگلی جانور چوٹ کر بیٹھے۔ ہم نماز پڑھکر سو گئے۔ وہ جاگتا رہا۔ اتلے میں باہا جی نے اپنے مکان کا پتاکہ کھولا اور ہمیں دیکھکر آواز دی—'کون ہے؟' ہم نے کہا کہ کھل گئی۔

میں نے جواب دیا وہی مسافر چلے آئے آپ نے پہلے
 دیا۔ بولے کہ چلے آؤ۔ ہم اندر گئے۔ دیکھا کہ ایک بہت
 بڑا گھر ہے۔ چاروں طرف پکی کوٹھریاں بنی ہیں۔ نماز کے لئے
 چوڑھے ہیں۔ نہالے دھولے کے لئے ایک جگہ ہے، وغیرہ وغیرہ۔
 ایک کوٹھری میں انہوں نے مجھے بیٹھا دیا اور کھانا لائے۔ میں
 نے کہا کہ ہم دونوں آدمی مسلمان ہیں، ساتھ کھانا کھا لیں گے۔
 ابا جی نے اسے منظور نہ کیا اور کہا کہ نہیں تم الگ کھاؤ،
 نہیں دوسری کوٹھری میں الگ کھائیں گے۔ طرح طرح کے
 بوجھ میسرے سامنے چن دئے گئے، کٹی طرح کے چاول، کٹی
 لوح کی دالیں، طرح طرح کی ٹوکریاں، روٹی وغیرہ۔ ہماری
 اہل دنگ ہو گئی کہ انہی تھوڑے سے وقت میں اس اکیلے
 آدمی نے یہ چیزیں کسے تیار کی ہوگی۔ کھانا کھانے کے بعد
 ہم لگے۔ ہمارے انکار سے تم نے برا مانا ہوگا؛ لیکن بات یہ تھی
 کہ اگر اُس وقت تمہیں بلا لیتا تو تمہارا اندر سنکر کڑا یا بوجھ
 کٹا؟ میں جانتا تھا کہ آج تم ہمارے مہمان ہو گے۔ اسی لئے
 جب میں نے سب چیزیں تیار کر لیں تب تمہیں اندر بلایا۔
 اس کے بعد یہ کہ تم کو کھانا کھانے کا اکیلے رہنا ہی بہتر ہے ہم دونوں
 و الگ الگ کوٹھریاں سولے کو دیں۔ ایک جگہ نہ سولے دیا۔
 بیچ کو ہم نے چلنے کا ارادہ کیا تو بابا جی نے ضد کر کے ہمیں
 پھرایا۔ بیس دن تک زبردستی ٹھہرائے رکھا۔ دونوں وقت
 سی طرح کا کھانا کھاتے رہے۔ ہمیں اس بات کی بڑی حیرانی
 ہی کہ نہ تو وہاں کسی کو پانی پھرتے دیکھا، نہ کسی کو روٹی
 کاتے، نہ دھواں اُٹھتے دیکھا، نہ کبھی کسی کو چھارو دیتے دیکھا،
 بہن سب مکان بالکل اُچلے اور صاف رہتے تھے۔ بابا جی کی
 سورت بھی ایسی سندر اور منوہر تھی کہ ہم نے اپنی عمر بھر
 میں ایسا سندر آدمی نہیں دیکھا۔ کٹی داڑھی کا عکس
 چمکتے ہوئے گالوں پر ایسا پڑتا تھا جیسے شیشہ میں ہو۔
 سلفی طاقتیں (مانسک شکتیاں) بھی بڑے اونچے درجے کی
 ہیں۔ ہر وقت کام میں لگے رہتے تھے۔ ایک پھر رات گئے سے
 اُٹھتے تو صبح کر دیتے تھے۔ جیسے بھوت سے پہونچے ہوئے اور
 اصل تھے ویسے ہی باہر سے بھی۔ ویدیک وغیرہ میں ہوشیار
 ہے۔ ایک دن دو کوڑھی آئے، ایک ہندو تھا دوسرا مسلمان۔
 سورت دیکھتے ہی ہندو سے کہا کہ تمہارے گرو نے کچھ چاپ
 بکلیا تھا، تم نے اس چاپ میں استری بیوگ کیا، اس لئے
 خوں چکر کھا گیا۔ اس نے اپنے قصور کو مان لیا۔ کہنے لگے
 ب اپنے گرو کے پاس چلے جاؤ، وہی اس کا کٹ کر دینگے۔
 مسلمان سے کہا تھوڑے تمہیں دوا دینگے۔ دوسرے دن ٹرہدا
 کے اندر آئے گئے پھر پانی میں کھڑا کر کے ایک چاول
 پر دوا کھا دی۔ تھوڑی دیر بعد وہ پھاس کے مارے
 پڑے لگا۔ بابا جی نے کہا خبردار! پانی پینے کا تو فوراً

میں نے جواب دیا وہی مسافر چلے آئے آپ نے پہلے
 دیا۔ بولے کہ چلے آؤ۔ ہم اندر گئے۔ دیکھا کہ ایک بہت
 بڑا گھر ہے۔ چاروں طرف پکی کوٹھریاں بنی ہیں۔ نماز کے لئے
 چوڑھے ہیں۔ نہالے دھولے کے لئے ایک جگہ ہے، وغیرہ وغیرہ۔
 ایک کوٹھری میں انہوں نے مجھے بیٹھا دیا اور کھانا لائے۔ میں
 نے کہا کہ ہم دونوں آدمی مسلمان ہیں، ساتھ کھانا کھا لیں گے۔
 ابا جی نے اسے منظور نہ کیا اور کہا کہ نہیں تم الگ کھاؤ،
 نہیں دوسری کوٹھری میں الگ کھائیں گے۔ طرح طرح کے
 بوجھ میسرے سامنے چن دئے گئے، کٹی طرح کے چاول، کٹی
 لوح کی دالیں، طرح طرح کی ٹوکریاں، روٹی وغیرہ۔ ہماری
 اہل دنگ ہو گئی کہ انہی تھوڑے سے وقت میں اس اکیلے
 آدمی نے یہ چیزیں کسے تیار کی ہوگی۔ کھانا کھانے کے بعد
 ہم لگے۔ ہمارے انکار سے تم نے برا مانا ہوگا؛ لیکن بات یہ تھی
 کہ اگر اُس وقت تمہیں بلا لیتا تو تمہارا اندر سنکر کڑا یا بوجھ
 کٹا؟ میں جانتا تھا کہ آج تم ہمارے مہمان ہو گے۔ اسی لئے
 جب میں نے سب چیزیں تیار کر لیں تب تمہیں اندر بلایا۔
 اس کے بعد یہ کہ تم کو کھانا کھانے کا اکیلے رہنا ہی بہتر ہے ہم دونوں
 و الگ الگ کوٹھریاں سولے کو دیں۔ ایک جگہ نہ سولے دیا۔
 بیچ کو ہم نے چلنے کا ارادہ کیا تو بابا جی نے ضد کر کے ہمیں
 پھرایا۔ بیس دن تک زبردستی ٹھہرائے رکھا۔ دونوں وقت
 سی طرح کا کھانا کھاتے رہے۔ ہمیں اس بات کی بڑی حیرانی
 ہی کہ نہ تو وہاں کسی کو پانی پھرتے دیکھا، نہ کسی کو روٹی
 کاتے، نہ دھواں اُٹھتے دیکھا، نہ کبھی کسی کو چھارو دیتے دیکھا،
 بہن سب مکان بالکل اُچلے اور صاف رہتے تھے۔ بابا جی کی
 سورت بھی ایسی سندر اور منوہر تھی کہ ہم نے اپنی عمر بھر
 میں ایسا سندر آدمی نہیں دیکھا۔ کٹی داڑھی کا عکس
 چمکتے ہوئے گالوں پر ایسا پڑتا تھا جیسے شیشہ میں ہو۔
 سلفی طاقتیں (مانسک شکتیاں) بھی بڑے اونچے درجے کی
 ہیں۔ ہر وقت کام میں لگے رہتے تھے۔ ایک پھر رات گئے سے
 اُٹھتے تو صبح کر دیتے تھے۔ جیسے بھوت سے پہونچے ہوئے اور
 اصل تھے ویسے ہی باہر سے بھی۔ ویدیک وغیرہ میں ہوشیار
 ہے۔ ایک دن دو کوڑھی آئے، ایک ہندو تھا دوسرا مسلمان۔
 سورت دیکھتے ہی ہندو سے کہا کہ تمہارے گرو نے کچھ چاپ
 بکلیا تھا، تم نے اس چاپ میں استری بیوگ کیا، اس لئے
 خوں چکر کھا گیا۔ اس نے اپنے قصور کو مان لیا۔ کہنے لگے
 ب اپنے گرو کے پاس چلے جاؤ، وہی اس کا کٹ کر دینگے۔
 مسلمان سے کہا تھوڑے تمہیں دوا دینگے۔ دوسرے دن ٹرہدا
 کے اندر آئے گئے پھر پانی میں کھڑا کر کے ایک چاول
 پر دوا کھا دی۔ تھوڑی دیر بعد وہ پھاس کے مارے
 پڑے لگا۔ بابا جی نے کہا خبردار! پانی پینے کا تو فوراً

میرا جاننا، ایک ایک پہر کے بعد اُسے ندی کے اندر ہی گھسیٹتے رہے۔ جب باہر نکلنا تو بدن کھنڈن کی طرح ہلکانے لگا تھا۔ پھر اسے بیٹھا کر دیا۔ ہم بیس دن رہے، کچھ بھید نہ کھلا کہ وہ بابا جی فرشتہ تھے یا انسان۔ صبر سے یہ بھی پتہ نہ چلتا تھا کہ ہندو ہیں یا مسلمان۔ ایک دن ہم سے کہنے لگے—میاں! ساہب! تم کہاں جاؤ گے، ہمارے پاس ہی رہ جاؤ۔ لیکن شرت یہ ہے کہ اگر ہم مر جائیں تو تم ہماری داغ میں رستی باغ کر نبردہ میں لے جا کر ڈال دینا اور اگر تم مر گئے تو ہم پاس کے گڑ سے اُسی پانی سے تمہارا آخری سنسکار کرادینگے۔ لیکن ہم وہاں زیادہ نہ ٹھہرے۔

(16)

ایک دن ہم لکھنؤ کی ایک مسجد میں ٹھہرے ہوئے تھے۔ (سن 57 کے بعد کی بات ہے) اتفاق سے ایک امیر سپر کو جانا تھا۔ دیکھا تو سامنے سے سلیمان صاحب انگریز آتا تھا۔ اس خیال سے کہ انگریز کو سلام کرنا پڑے گا، وہ امیر جہت مسجد میں چلا آیا۔ سلیمان صاحب بھی پیچھے پیچھے مسجد میں آہونچا۔ مدوری طرف دیکھ کر پوچھنے لگا کہ آپ کون ہیں؟ میں نے کہا کہ صاحب! یہ تو مجھے بھی پتہ نہیں کہ میں کون ہوں۔

کچھ نہیں کہنا مجھے میں کون ہوں
صورت حیرت ہوں یا شکل جنوں؟

پھر پوچھا کہ آپ کی قوم کیا ہے؟ میں نے کہا کہ جو حضرت آدم کی قوم ہے۔ کہا آدم کی کیا قوم ہے؟ میں نے کہا کہ مجھے نہیں معلوم یہ آدم سے پوچھئے۔ پھر کہا کہ آپ کہاں سے آئے؟ میں نے کہا کہ جہاں سے سب آئے۔ وہ بڑا حیران ہوا اور بولا—صاحب! جو بات ہم پوچھتے ہیں اُس کا اُلٹا ہی جواب دیتے ہو۔ پھر تو اُن سے پریم ہو گیا۔ کبھی کبھی ہمارے پاس آئے لگے۔ ایک دن بڑے پریم سے دعوت کی۔ مطلب یہ کہ فقیر کو چاہئے کہ ہر رنگ کا تماشا دیکھے اور کسی کو برا نہ جائے، کیونکہ اللہ کا ظہور ہر جگہ ایکسا ہے—

خدا ہر شے کے اندر یوں نہاں ہے،
کہ جہوں ہو گل کی گل کے درمیاں ہے۔
ارنہات—ایمشور ہر پدارتہ میں اس طرح چھپا ہوا ہے کہ جس طرح پھول کی گندہ پھول کے اندر چھپی ہے۔

(17)

شہر دلی میں ایک رند (ویشیا) بہت خوبصورت کسی امیر کے یہاں رہتی تھی۔ ایک دن گرمی کے دنوں میں اُنہی رات کے بعد اُس کے مکان کے نیچے کسی اُسی نے

شہر دلی میں ایک رند (ویشیا) بہت خوبصورت کسی امیر کے یہاں رہتی تھی۔ ایک دن گرمی کے دنوں میں اُنہی رات کے بعد اُس کے مکان کے نیچے کسی اُسی نے

ہارا کیا ہے۔ کوئی دیکھ کر اس کا ہنسا جو اسے دیکھ کر
 لہو پلکا ہے! آواز سن کر وہ رنٹی جاگ اٹھی اور ایک صاف صاف
 لہلہہ پانی کی اور ایک صاف گلاس میں لے کر آئی۔
 اس نے پیاسے فقیر کو پانی پلایا۔ جب وہ پی چکا تو گلاس کا
 بچا ہوا پانی اس نے رنٹی سے پیلے کے لئے کہا۔ رنٹی نے
 اسے پی لیا۔ فقیر چل دیا۔ اس چہرے پر کی ملاقات کا رنٹی
 کے دل پر اتنا زبردست اثر ہوا کہ وہ اسی جگہ بیٹھ گئی۔ اس پر
 اسے جب آنکھ کھلی تو ادھر ادھر دیکھا، وہ نظر نہ پڑی۔ گہرا
 گرتھونٹھا لگا۔ دیکھا کہ وہ زینہ کے نیچے مٹی پر پڑی ہے۔
 اٹھا کر لایا، سب حال پوچھا۔ رنٹی نے کہا—اب ہم سے تم
 سے کچھ تعلق نہیں ہے میں تمہارے کام کی، نہ تم میرے
 مطلب کے۔

عقل گوید کہ دنیا و عتیق بجز
 عشق می گوید بجز مولا محبوب۔
 عقل می گوید کہ خود را پیش کن
 عشق می گوید کہ ترک خویش کن۔

(ارتقا—عقل کہتی ہے کہ اس لوک اور پرلوک دونوں
 کو تھونٹھا پریم کہتا ہے کہ سوائے مولا (ایشور) کے اور کسی کو
 نہ تھونٹھے۔

عقل کہتی ہے کہ اپنے کو آگے بڑھا، پریم کہتا ہے کہ اپنے
 کو مٹا۔)

رنٹی نے اس سے کہا کہ مجھ پر اتنی ڈرنا کرو کہ ایک
 انگ مکان دے دو۔ نہ میں کسی کے پاس جاؤں نہ کوئی
 میرے پاس آوے۔ کچھ دنوں کے بعد وہ شہر سے باہر ایک
 مقبرے پر رہتی تھی۔ کوئی ملاشی (جکیا سو) کسی سادھو
 کے پاس گئے۔ اس سادھو نے اسے پتہ دیا کہ فلاں جگہ پر ایک
 عورت رہتی ہے، تم اس کے پاس جاؤ۔ وہ ملاشی وہیں پہونچا
 اور اپنا مطلب کہہ سنایا۔ عورت ہولی میں تو رنٹی ہوں، اگر
 کچھ تمہارے پاس ہو تو لاؤ۔ اس کے سوائے میں کچھ نہیں
 جانتی۔ اس نے جواب دیا آپ کچھ ہی کہیں، میں ایک
 بھیدی کا بھونچا ہوا ہوں، تالے سے ٹوٹتا نہیں۔ تب اس نے
 کہا—اچھا تم اس قابل تو نہیں ہو کہ ایکدم تمہیں دیکھا دے
 ہی جاوے، ہاں روز صبح شام میرے پاس آکر بیٹھا کرو۔ لیکن
 گر کوئی پوچھے تو کہہ دینا کہ ہم سے اس سے پریم ہے۔ چہ مہینے
 تک وہ آدمی روز اس طرح آتا رہا۔ چہ مہینے کے بعد اس
 کی شکشا کو پورا کر کے اس رنٹی نے اسے ہدا کہا

دوکارا مکہ عبادت گاہ ہیں
 آپ کے ملنے کی لاکھوں راہ ہیں۔

(اس کے بعد گرجی نے کہا کہ) جس زمانے میں ہم
 مولانا شاہ عبدالعزیز سے پڑھتے تھے تو ہم بھی کئی بار اس عورت
 سے ملنے گئے تھے۔

(18)

پچھلے زمانے میں جہاد کے وقت کسی مسلمان کی

ہارا کیا ہے۔ کوئی دیکھ کر اس کا ہنسا جو اسے دیکھ کر
 لہو پلکا ہے! آواز سن کر وہ رنٹی جاگ اٹھی اور ایک صاف صاف
 لہلہہ پانی کی اور ایک صاف گلاس میں لے کر آئی۔
 اس نے پیاسے فقیر کو پانی پلایا۔ جب وہ پی چکا تو گلاس کا
 بچا ہوا پانی اس نے رنٹی سے پیلے کے لئے کہا۔ رنٹی نے
 اسے پی لیا۔ فقیر چل دیا۔ اس چہرے پر کی ملاقات کا رنٹی
 کے دل پر اتنا زبردست اثر ہوا کہ وہ اسی جگہ بیٹھ گئی۔ اس پر
 اسے جب آنکھ کھلی تو ادھر ادھر دیکھا، وہ نظر نہ پڑی۔ گہرا
 گرتھونٹھا لگا۔ دیکھا کہ وہ زینہ کے نیچے مٹی پر پڑی ہے۔
 اٹھا کر لایا، سب حال پوچھا۔ رنٹی نے کہا—اب ہم سے تم
 سے کچھ تعلق نہیں ہے میں تمہارے کام کی، نہ تم میرے
 مطلب کے۔

ابنل گویہ کی دینیاتو وکراہا بزو،
 ہرک مہی گویہ بزوچا مویلا مجو۔
 ابنل مہی گویہ کے لود را پشا کون،
 ہرک مہی گویہ کے تکرے شہا کون۔

(اثری—ابنل کہتی ہے کہ اس لوک اور پرلوک
 دونوں کو دھڑ، پریم کہتا ہے کہ سیوا مویلا (ہرک) کے
 پریم کسی کو نہ دھڑ۔

رنٹی نے اس سے کہا کہ مجھ پر اتنی ڈرنا کرو کہ ایک
 مکان دے دو۔ نہ میں کسی کے پاس جاؤں نہ کوئی
 میرے پاس آوے۔ کچھ دنوں کے بعد وہ شہر سے باہر ایک
 مقبرے پر رہتی تھی۔ کوئی ملاشی (جکیا سو) کسی سادھو
 کے پاس گئے۔ اس سادھو نے اسے پتہ دیا کہ فلاں جگہ پر ایک
 عورت رہتی ہے، تم اس کے پاس جاؤ۔ وہ ملاشی وہیں پہونچا
 اور اپنا مطلب کہہ سنایا۔ عورت ہولی میں تو رنٹی ہوں، اگر
 کچھ تمہارے پاس ہو تو لاؤ۔ اس کے سوائے میں کچھ نہیں
 جانتی۔ اس نے جواب دیا آپ کچھ ہی کہیں، میں ایک
 بھیدی کا بھونچا ہوا ہوں، تالے سے ٹوٹتا نہیں۔ تب اس نے
 کہا—اچھا تم اس قابل تو نہیں ہو کہ ایکدم تمہیں دیکھا دے
 ہی جاوے، ہاں روز صبح شام میرے پاس آکر بیٹھا کرو۔ لیکن
 گر کوئی پوچھے تو کہہ دینا کہ ہم سے اس سے پریم ہے۔ چہ مہینے
 تک وہ آدمی روز اس طرح آتا رہا۔ چہ مہینے کے بعد اس
 کی شکشا کو پورا کر کے اس رنٹی نے اسے ہدا کہا

دوکارا مکہ عبادت گاہ ہیں
 آپ کے ملنے کی لاکھوں راہ ہیں۔

(اس کے بعد گرجی نے کہا کہ) جس زمانے میں ہم
 مولانا شاہ عبدالعزیز سے پڑھتے تھے تو ہم بھی کئی بار اس عورت
 سے ملنے گئے تھے۔

(18)

پچھلے زمانے میں جہاد کے وقت کسی مسلمان کی

एक बुतपरस्त (मूर्ति पूजक) से लड़ाई हुई. बड़ी देर तक दोनों लड़ते रहे. कोई किसी को हरा न सका. इतने में नमाज का वक़्त आया. मुसलमान ने कहा कि अब मुझे थोड़ी देर के वास्ते छुट्टी दे ताकि नमाज अदा कर लूँ. बुतपरस्त ने इजाजत दे दी. नमाज के बाद फिर लड़ाई शुरू हो गई. इतने में बुतपरस्त की पूजा का वक़्त हो गया. उसने भी छुट्टी चाही और पूजा में लग गया. मुसलमान को ख्याल आया कि अब अच्छा मौक़ा है. इसका काम तमाम कर दो. तुरन्त ग़ैब (अदृष्ट) से आवाज़ आई—दे, बेवफ़ा! क्या—‘ओफ़ु बिल ओफ़ुदे’ (अर्थात्—पूरा करो अपने वादों को)—कुरान की एक आयत का यही मतलब है? इस बात में तुझसे तो बुतपरस्त बढ़कर निकला. यह आवाज़ सुनते ही वह मुसलमान शरमिन्दा होकर रोने लगा और फिर लड़ाई से बाज़ रहा.

ऐसे ही आजकल के मुसलमान भी बेवफ़ाई में यकता (बेमिसाल) हैं. लेकिन ग़ैब की आवाज़ उन्हें सुनाई नहीं देती, और कुरान शरीफ़ को देखते नहीं. अगर देखते हैं तो अमल करते नहीं.

बर जबां तसबीह व दर दिल गाओ खर,
ई चुनी तसबीह कै दारद असर.

(अर्थात्—जबान से अल्लाह, अल्लाह जपते हैं और दिल में बैल और गधे का ख्याल भरा हुआ है. इस तरह के जप से क्या असर हो सकता है!)

(19)

जिस चेले ने अपने पीर के मुँह से सुन सुन कर इन सब घटनाओं को लिखा है, उसकी यह आदत थी कि जब कभी वह अपने पीर (गुरु जी) से कुछ सुनना चाहता था तो उनके सामने जाकर यह शेर पढ़ दिया करता था.

बाज गो अज नज्द वज याराने नज्द
ता दरो दीवार रा आरी व वज्द

एक दिन उसने सामने आकर यही शेर पढ़ा. गुरु जी ब्रह्मे लगे कि—

जाकी जैसी लगन है बाको बैसो राम,
रोम रोम में रम रही नहीं और से काम.
पास कहूँ तो पास है दूर कहूँ तो दूर,
जान अजान जहान में सब में है भरपूर.
दूर कहूँ तो दूर है पास कहूँ तो पास,
रोम रोम में रम रही ज्यों फूलन में बास.
नहनो अक्ररबो इलैहे मिन हबिलल बरीद.

(कुरान)

(अर्थात्—ईश्वर मनुष्य की गरदन की रग की निस्वत उसके क्या वाक्यीक है.)

एक बेत परस्त (मूर्ति पूजक) से लड़ाई हुई. बड़ी देर तक दोनों लड़ते रहे. कोई किसी को हरा न सका. इतने में नमाज का वक़्त आया. मुसलमान ने कहा कि अब मुझे थोड़ी देर के वास्ते छुट्टी दे ताकि नमाज अदा कर लूँ. बुतपरस्त ने इजाजत दे दी. नमाज के बाद फिर लड़ाई शुरू हो गई. इतने में बुतपरस्त की पूजा का वक़्त हो गया. उसने भी छुट्टी चाही और पूजा में लग गया. मुसलमान को ख्याल आया कि अब अच्छा मौक़ा है. इसका काम तमाम कर दो. तुरन्त ग़ैब (अदृष्ट) से आवाज़ आई—दे, बेवफ़ा! क्या—‘ओफ़ु बिल ओफ़ुदे’ (अर्थात्—पूरा करो अपने वादों को)—कुरान की एक आयत का यही मतलब है? इस बात में तुझसे तो बुतपरस्त बढ़कर निकला. यह आवाज़ सुनते ही वह मुसलमान शरमिन्दा होकर रोने लगा और फिर लड़ाई से बाज़ रहा.

ऐसे ही आजकल के मुसलमान भी बेवफ़ाई में यकता (बेमिसाल) हैं. लेकिन ग़ैब की आवाज़ उन्हें सुनाई नहीं देती, और कुरान शरीफ़ को देखते नहीं. अगर देखते हैं तो अमल करते नहीं.

برزباں تسبیح و در دل گاؤ وخر
این چشمن تسبیح کے دارد اثر .

(अर्थात्—जबान से अल्लाह, अल्लाह जपते हैं और दिल में बैल और गधे का ख्याल भरा हुआ है. इस तरह के जप से क्या असर हो सकता है!)

(19)

जिस चिले ने अपने पीर के मुँह से सुन सुन कर इन सब घटनाओं को लिखा है, उसकी यह आदत थी कि जब कभी वह अपने पीर (गुरु जी) से कुछ सुनना चाहता था तो उनके सामने जाकर यह शेर पढ़ दिया करता था.

बाज गो अज नज्द वज याराने नज्द
ता दरो दीवार रा आरी व वज्द

एक दिन उसने सामने आकर यही शेर पढ़ा. गुरु जी ब्रह्मे लगे कि—

जाकी जैसी लगन है बाको बैसो राम,
रोम रोम में रम रही नहीं और से काम.
पास कहूँ तो पास है दूर कहूँ तो दूर,
जान अजान जहान में सब में है भरपूर.
दूर कहूँ तो दूर है पास कहूँ तो पास,
रोम रोम में रम रही ज्यों फूलन में बास.
नहनो अक्ररबो इलैहे मिन हबिलल बरीद.

(कुरान)

(अर्थात्—ईश्वर मनुष्य की गरदन की रग की निस्वत उसके क्या वाक्यीक है.)

یار نچھریکتر آج من بمانست،
 وہی آجکتر کے من آج وہ دورم۔
 وہ کونم تاکے تھاں گومت کی ڈ،
 دُر کینارے من بمان مہجورم۔

(بہرہ)۔—میرا یار میری نیت بھی میرے اذیت نیکٹ
 ہے اور آجکتر یہ ہے کہ میں اس سے دور ہوں ! کیا کہوں، میں
 یہ کس سے کہہ سکتا ہوں کہ وہ میری نیت میں ہے اور میں
 اس سے دور ہوں۔)

ایک راجہ تھا۔ اسے یہ خیال ہوا کہ آخر ایک دن مرنا ہے، مکتی
 حاصل کرنے کے لئے اپنی آتما کو پہچان لینا چاہیئے۔ اس کی کوئی
 ترقیب کرنی چاہیئے۔ اس نے بہت سے براہمنوں کو جمع کیا اور کہا۔ کوئی
 ایسی بات بتاؤ جس سے میں اپنی آتما کو پہچان سکوں اور جہنم مکت
 ہو جاؤں۔ براہمنوں نے وجہ کر جواب دیا کہ مہاراج ! ایک سولے
 کی گتہ بنوائیے۔ اسے براہمنوں کو دان دیجئے اور اس طرح
 سے اور دھن وغیرہ دان دیجئے۔ 64 نھرتہ کر آئے تو ہرکوان کی
 دیا سے جہنم مکت ہو جائیگا۔ راجہ نے یہ سب کرم کئے۔ پر ان
 سے نہ وہ اپنے کو پہچان سکا نہ دل کو شانتی ملی اور نہ مکتی کا
 کوئی لچھن دکھائی دیا۔ پھر اس نے جوگیوں کی طرف دھیان
 دیا اور یہی پوچھا اُن سے کی۔ جوگیوں نے پہلے تو راجہ کے
 کن پھوٹا اور پھر ہرہچریہ، بانہرستہ، دند کمنڈل اور وجہا ہم
 وغیرہ چار طرح کی شمشاد دی۔ راجہ نے یہ سب کچھ بھی کیا۔
 لیکن اس کا بھی کچھ پھل نہ ہوا۔ اس کے بعد اس نے
 مسلمانوں کے مولویوں کو جمع کیا اور یہی سوال اُن کے سامنے
 رکھا۔ انہوں نے کہا کہ صاحب ! اگر آپ اسلام دھرم منظور کر لیں
 تو آپ کی خواہش پوری ہو سکتی ہے۔ راجہ نے منظور کر لیا۔
 مولویوں نے اسے مسلمان بنایا۔ اس کا ختنہ کر دیا۔ اسے
 نماز، روزہ، حج، ذکاۃ وغیرہ کی تعلیم دی۔ جب سب سیکھ
 لیا تو کہا کہ اب آپ حج کے لئے مکہ مدینہ ہو آئیے۔ راجہ نے
 یہ سب بھی کیا۔ جب واپس اپنے دیہی آیا تو پھر مولویوں
 کو جمع کیا اور کہا کہ حجے تو کچھ بھی حاصل نہیں ہوا۔
 اب آپ کیا کہتے ہیں ؟

یار نزدیک تر از من بہ ماست
 وہی عجب تر کہ من از وہ دورم
 چہ کنم تا کہ توان گفت کہ او
 در کنار من بمن مہجورم

(ارتقاء)۔—میرا یار میری نسبت بھی میرے ادھک نیکٹ
 ہے اور آجکتر یہ ہے کہ میں اس سے دور ہوں۔ کیا کروں میں
 یہ کس سے کہہ سکتا ہوں کہ وہ میری نیت میں ہے اور میں
 اس سے دور ہوں۔)

ایک راجہ تھا۔ اسے یہ خیال ہوا کہ آخر ایک دن مرنا ہے، مکتی
 حاصل کرنے کے لئے اپنی آتما کو پہچان لینا چاہیئے۔ اس کی کوئی
 ترقیب کرنی چاہیئے۔ اس نے بہت سے براہمنوں کو جمع کیا اور کہا۔ کوئی
 ایسی بات بتاؤ جس سے میں اپنی آتما کو پہچان سکوں اور جہنم مکت
 ہو جاؤں۔ براہمنوں نے وجہ کر جواب دیا کہ مہاراج ! ایک سولے
 کی گتہ بنوائیے۔ اسے براہمنوں کو دان دیجئے اور اس طرح
 سے اور دھن وغیرہ دان دیجئے۔ 64 نھرتہ کر آئے تو ہرکوان کی
 دیا سے جہنم مکت ہو جائیگا۔ راجہ نے یہ سب کرم کئے۔ پر ان
 سے نہ وہ اپنے کو پہچان سکا نہ دل کو شانتی ملی اور نہ مکتی کا
 کوئی لچھن دکھائی دیا۔ پھر اس نے جوگیوں کی طرف دھیان
 دیا اور یہی پوچھا اُن سے کی۔ جوگیوں نے پہلے تو راجہ کے
 کن پھوٹا اور پھر ہرہچریہ، بانہرستہ، دند کمنڈل اور وجہا ہم
 وغیرہ چار طرح کی شمشاد دی۔ راجہ نے یہ سب کچھ بھی کیا۔
 لیکن اس کا بھی کچھ پھل نہ ہوا۔ اس کے بعد اس نے
 مسلمانوں کے مولویوں کو جمع کیا اور یہی سوال اُن کے سامنے
 رکھا۔ انہوں نے کہا کہ صاحب ! اگر آپ اسلام دھرم منظور کر لیں
 تو آپ کی خواہش پوری ہو سکتی ہے۔ راجہ نے منظور کر لیا۔
 مولویوں نے اسے مسلمان بنایا۔ اس کا ختنہ کر دیا۔ اسے
 نماز، روزہ، حج، ذکاۃ وغیرہ کی تعلیم دی۔ جب سب سیکھ
 لیا تو کہا کہ اب آپ حج کے لئے مکہ مدینہ ہو آئیے۔ راجہ نے
 یہ سب بھی کیا۔ جب واپس اپنے دیہی آیا تو پھر مولویوں
 کو جمع کیا اور کہا کہ حجے تو کچھ بھی حاصل نہیں ہوا۔
 اب آپ کیا کہتے ہیں ؟

مکہ گئے، مدینہ گئے، کربلا گئے،
 جیسے گئے تھے ویسے ہی ہر پھر کے آگئے۔

مولویوں نے جواب دیا کہ جو کچھ ہمارے دھرم میں تھا
 ہم نے آپ کو سب بتا دیا۔ اس سے زیادہ ہم کچھ نہیں
 جانتے۔ سب طرف سے مایوس (نراش) ہو کر راجہ کو
 ایک طرح کا پاگل پن ہو گیا۔ ایک ہاتھ سے اس نے
 اپنا کل پکڑا اور دوسرے ہاتھ سے ختنہ کی چکھ اور

مکے گئے، مدینہ گئے، کربلا گئے،
 جیسے گئے تھے ویسے ہی ہر پھر کے آگئے۔

مولویوں نے جواب دیا کہ جو کچھ ہمارے دھرم میں
 تھا ہم نے آپ کو سب بتا دیا۔ اس سے زیادہ ہم کچھ
 نہیں جانتے۔ سب طرف سے مایوس (نیراش) ہو کر راجہ
 کو ایک طرح کا پاگل پن ہو گیا۔ ایک ہاتھ سے اس نے
 اپنا کان پکڑا اور دوسرے ہاتھ سے ختنہ کی چکھ اور

जगह जगह घूम कर यह कहना शुरू किया कि 'यह हिन्दू है, और यह मुसलमान ! मैं कौन हूँ ?'

बाहिर में गरचे बैठा लोगों के दरमियां हूँ,
पर जानता नहीं हूँ मैं कौन हूँ कहाँ हूँ-

आखिर में पागलों की तरह घूमते घूमते 'जोइन्दा या-
विन्दा' (अर्थात्—'जिन वृंदा तिन पाइयां') के मुताबिक
राजा के पास एक सक्का फकीर अपने कुछ चेलों समेत आ
पहुँचा. राजा को देखा और पूछने लगा—क्या कहता है ?
.राजा ने फिर बड़ी कहा—'यह हिन्दू, यह मुसलमान, मैं
कौन ?' फकीर ने उसे अच्छी तरह परखकर तसल्ली देकर
उपदेश दिया कि यह हिन्दू मुसलमान का भेद ही आत्मा के
असली रूप को समझने में सबसे बड़ी रुकावट है. आत्मा
के दीवार (दर्शन) के लिए सबसे पहले इस दुई के परदे
को बीच से हटा देना जरूरी है. अब राजा की आखें खुलीं.
वह कर्मकाण्ड, हिन्दू मुसलमान और दुई के भेद से ऊपर
उठकर हर जानदार में एक आत्मा के दर्शन करने लगा.

सत गुरु पूरा मिल गया जो खोल दिखाए नैन.

(बाक़ी फिर)

جگہ جگہ گھر گھر یہ کہنا شروع کیا کہ یہ 'ہندو' اور یہ
مسلمان! میں کیوں ہوں؟

ظاہر میں گرجہ بیتھا لوگوں کے درمیاں ہیں ،
 پر جانتا نہیں ہوں میں کون ہوں کہاں ہوں ۔

آخر میں ہاتھوں کی طرح گھومتے گھومتے 'جو نلدا' باندھے (ارتھتاس—جی تھوڑھتا تن پاتھاس) کے مطابق راجہ کے پاس ایک سچا فقیر اپنے کچھ چٹاوں سمیت آہونچا۔ راجہ کو دیکھا اور پوچھنے لگا—'کیا کہتا ہے؟ راجہ نے پھر وہی کہا—'یہ ہندو' یہ مسلمان' میں کون؟' فقیر نے اُسے اچھی طرح دیکھ کر تسلی دیکر اُپدیش دیا کہ یہ ہندو مسلمان کا بھوت ہی آتما کے اصلی روپ کو سمجھنے میں سب سے بڑی رکاوٹ ہے۔ آتما کے دیدار (درشن) کے لئے سب سے پہلے اِس دونی کے پردے کو پیچ سے ہٹا دینا ضروری ہے۔ اب راجہ کی آنکھیں کھلیں۔ وہ کرم کانت' ہندو مسلمان اور دونی کے بھوت سے اُپر اُتھر ہر جاندار میں ایک آتما کے درشن کرنے لگا۔

ست گرد پروا مل گيا جو ڪهل دکائڻه نهن .

(باقی ہے)

“परीषों पर खुदा का यह बड़ा एहसान बाक़ी है
कि दुनिया में अभी तक उनका क़ब्रिस्तान बाक़ी है
बचाए जाते हैं लेकर खुदा का नाम इनसाँ को
बरम के ठेकेदारों का मगर ईमान बाक़ी है
बहा ले जाए जो जुल्मों सितम को सारी दुनिया से
फ़माने में अभी आने को वह तूफ़ान बाक़ी है
जहाँ बिकती है रोटी के एबज़ इन्सानियत नाजुक
सितम है अन्नदाताओं की वह दुकान बाक़ी है
परीषों से मिलेगा भोग क्या भगवान को नाजुक
जहाँ रोटी के बदले सिर्फ़ उनकी जान बाक़ी है”

—नाज़क इलाहाबादी

"غریبوں پر خدا کا یہ ہوا احسان باقی ہے
 کہ دنیا میں ابھی تک اُن کا قبرستان باقی ہے
 چٹانے جاتے ہیں لے کر خدا کا نام انسان کو
 دھرم کے تھیمیداروں کا مگر ایمان باقی ہے
 بہا لے جائے جو ظلم و ستم کو ساری دنیا سے
 (مالے میں ابھی آئے کو وہ طوفان باقی ہے
 جہاں ہمکتی ہے روتی کے عوض انسانیت نازک
 ستم ہے اُن دانتوں کی وہ دوکان باقی ہے
 غریبوں سے ملیکا بھوک کیا بھوکاں کو نازک
 جہاں روتی کے بدلے صرف ان کی جان ہانی ہے"
 — نازک انہ آبادی

بیربمبھرنایا پاٹے

وشومہر ناتھ پانتے

میں نے ابھر جاپانیوں کو یہ کہتے سنا ہے کہ اگر تم نے تو مجھے کے مندر نہیں دیکھ تو تم نے کچھ بھی نہیں دیکھا۔ اتفاق سے میں نے تم کے مندر دیکھے ہیں اور میں یہ مانتا ہوں کہ وہ بے حد شاندار اور عالی شان ہیں، مگر یہ کہنا کہ وہ دنیا کی تعمیری کلا میں لائق ہیں، اس سے جاپانیوں کو بے شک تسلی ہو سکتی ہے مگر کلا کے پریموں کو نہیں۔

میں اس کا دعویٰ نہیں کرتا کہ میں نے کلا کے لحاظ سے دنیا کی سبھی شاندار عمارتوں کو دیکھا ہے۔ البتہ یورپ، ایشیا اور آفریقہ کی اپنی سڑوں میں میں نے کئی بے حد سند عمارتیں دیکھی ہیں۔ مصر کے پیرمڈ، بابل کے سات ستون، یونان کی رنگ شالیں، روم کے تھیٹر، ایران میں بے ہستون کے شالیں، چین کی بڑی دیوار، جاوا کا بورو بدر کا مندر، رنگوں کا پکودا اور اجنٹا اور ایلورہ کی گہنائیں سب آج بھی میری نگاہوں میں سمائی ہوئی ہیں اور عکس بہ عکس میری نگاہوں میں چھائی ہوئی ہیں۔ ہر بس میرا ماتھا اُن جالے اور انجانے کلاؤں اور شلیوں کے قدموں پر جھکا ہے جنہوں نے پرانے زمانے کو اپنی کلا کے ذریعہ اپنی چھٹی اور اپنے ہتھوڑے سے، درنمان زمانے کے ساتھ جوڑا ہے۔ انمول کلا کے یہ امر نمونے ہمیں یہ تسلی دیتے رہتے ہیں کہ انسان کی زندگی چند روزہ ہو سکتی ہے مگر کلا امر ہے اور اس کی چھاپ ہمیشہ ہمیشہ کے لئے دنیا پر رہتی ہے۔

میں شیلی ہوں اور نہ کلاکار، اور نہ مجھے کلا کی نکتہ چینی کرنے کا ہی ادھکار حاصل ہے۔ لیکن ایک معمولی سیلانی کی حیثیت سے یہ کہہ سکتا ہوں کہ اگرے کے ناچ کو دیکھ کر مجھ پر چڑاؤ پڑا ہے بیان کر سکتا ہوں کہ اس کے باہر ہے۔ کلاکار کی نگاہ اور شلیوں کی چٹرائی کی اتنی مکمل تصویر میری نظروں سے آج تک نہیں گذری۔

اس بات کو جانے کتنے برس بیت چکے، اٹھتی، دال چینی اور صندل کے پتوں کو تھپتھپا دیتی ہوئی چینی ہوا کے ہولے ہولے دھنکی جھکڑے قدرت کو گدگدا رہے تھے۔ میں اگرے کی تنگ گلیوں کو پار کر چمکا کے کلاکارہ آواز اور سلسلہ سڑک سے چکر کاٹتا ہوا، اسیا سا ایک بچہ پر بیٹھا ہوا جا رہا تھا۔ دواپر

میں نے اس کا دعویٰ نہیں کرتا کہ میں نے کلا کے لحاظ سے دنیا کی سبھی شاندار عمارتوں کو دیکھا ہے۔ البتہ یورپ، ایشیا اور آفریقہ کی اپنی سڑوں میں میں نے کئی بے حد سند عمارتیں دیکھی ہیں۔ مصر کے پیرمڈ، بابل کے سات ستون، یونان کی رنگ شالیں، روم کے تھیٹر، ایران میں بے ہستون کے شالیں، چین کی بڑی دیوار، جاوا کا بورو بدر کا مندر، رنگوں کا پکودا اور اجنٹا اور ایلورہ کی گہنائیں سب آج بھی میری نگاہوں میں سمائی ہوئی ہیں اور عکس بہ عکس میری نگاہوں میں چھائی ہوئی ہیں۔ ہر بس میرا ماتھا اُن جالے اور انجانے کلاؤں اور شلیوں کے قدموں پر جھکا ہے جنہوں نے پرانے زمانے کو اپنی کلا کے ذریعہ اپنی چھٹی اور اپنے ہتھوڑے سے، درنمان زمانے کے ساتھ جوڑا ہے۔ انمول کلا کے یہ امر نمونے ہمیں یہ تسلی دیتے رہتے ہیں کہ انسان کی زندگی چند روزہ ہو سکتی ہے مگر کلا امر ہے اور اس کی چھاپ ہمیشہ ہمیشہ کے لئے دنیا پر رہتی ہے۔

میں نے اس کا دعویٰ نہیں کرتا کہ میں نے کلا کے لحاظ سے دنیا کی سبھی شاندار عمارتوں کو دیکھا ہے۔ البتہ یورپ، ایشیا اور آفریقہ کی اپنی سڑوں میں میں نے کئی بے حد سند عمارتیں دیکھی ہیں۔ مصر کے پیرمڈ، بابل کے سات ستون، یونان کی رنگ شالیں، روم کے تھیٹر، ایران میں بے ہستون کے شالیں، چین کی بڑی دیوار، جاوا کا بورو بدر کا مندر، رنگوں کا پکودا اور اجنٹا اور ایلورہ کی گہنائیں سب آج بھی میری نگاہوں میں سمائی ہوئی ہیں اور عکس بہ عکس میری نگاہوں میں چھائی ہوئی ہیں۔ ہر بس میرا ماتھا اُن جالے اور انجانے کلاؤں اور شلیوں کے قدموں پر جھکا ہے جنہوں نے پرانے زمانے کو اپنی کلا کے ذریعہ اپنی چھٹی اور اپنے ہتھوڑے سے، درنمان زمانے کے ساتھ جوڑا ہے۔ انمول کلا کے یہ امر نمونے ہمیں یہ تسلی دیتے رہتے ہیں کہ انسان کی زندگی چند روزہ ہو سکتی ہے مگر کلا امر ہے اور اس کی چھاپ ہمیشہ ہمیشہ کے لئے دنیا پر رہتی ہے۔

میں نے اس کا دعویٰ نہیں کرتا کہ میں نے کلا کے لحاظ سے دنیا کی سبھی شاندار عمارتوں کو دیکھا ہے۔ البتہ یورپ، ایشیا اور آفریقہ کی اپنی سڑوں میں میں نے کئی بے حد سند عمارتیں دیکھی ہیں۔ مصر کے پیرمڈ، بابل کے سات ستون، یونان کی رنگ شالیں، روم کے تھیٹر، ایران میں بے ہستون کے شالیں، چین کی بڑی دیوار، جاوا کا بورو بدر کا مندر، رنگوں کا پکودا اور اجنٹا اور ایلورہ کی گہنائیں سب آج بھی میری نگاہوں میں سمائی ہوئی ہیں اور عکس بہ عکس میری نگاہوں میں چھائی ہوئی ہیں۔ ہر بس میرا ماتھا اُن جالے اور انجانے کلاؤں اور شلیوں کے قدموں پر جھکا ہے جنہوں نے پرانے زمانے کو اپنی کلا کے ذریعہ اپنی چھٹی اور اپنے ہتھوڑے سے، درنمان زمانے کے ساتھ جوڑا ہے۔ انمول کلا کے یہ امر نمونے ہمیں یہ تسلی دیتے رہتے ہیں کہ انسان کی زندگی چند روزہ ہو سکتی ہے مگر کلا امر ہے اور اس کی چھاپ ہمیشہ ہمیشہ کے لئے دنیا پر رہتی ہے۔

اس بات کو جانے کتنے برس بیت چکے، اٹھتی، دال چینی اور صندل کے پتوں کو تھپتھپا دیتی ہوئی چینی ہوا کے ہولے ہولے دھنکی جھکڑے قدرت کو گدگدا رہے تھے۔ میں اگرے کی تنگ گلیوں کو پار کر چمکا کے کلاکارہ آواز اور سلسلہ سڑک سے چکر کاٹتا ہوا، اسیا سا ایک بچہ پر بیٹھا ہوا جا رہا تھا۔ دواپر

یک میں ارجن کے جس رتہ کو کرشن پہنوں نے
 سارتھی ہنکر ہانکا تھا، رشتہ میں یہ یکہ اُس کا پروتا لکھا ہے۔
 اب نہ ایں پر راجا بیٹھتے ہیں نہ عدلے، نہ نہتا بیٹھتے ہیں اور
 نہ ایم۔ لیل۔ اے۔ نہ ایں میں دھمی جھاریں ہیں اور
 نہ سلہرے گڑ نکمے۔ اب یہ سو فیصدی غریبوں کی سواری ہے۔
 یکہ کا مریل سا گھورا ایک جھٹکے کے ساتھ رکا۔ میں نے اچانک

دیکھا کہ میں ایک عالیشان لال پھانک کے سامنے کھڑا ہوا ہوں۔
 لچانک مہری نگاہ پھانک کے بیوٹر گئی اور مجھے ایسا لگا کہ
 ایک شاندار لال محراب کے فریم میں جڑی ہوئی خوبصورتی
 کی ایک سلیڈ چمچماتی ہوئی تصویر مہری آنکھوں کے سامنے
 ہے۔ چمکتے ہوئے سورج کی کرنیں سنگ مرمر کے سونڈریہ
 بہوں کے ساتھ اٹکھیلیاں کر رہی تھیں اور اُس کی اُرنچی
 میناریں میٹھم ہیں نیلے آسمان کے دل میں ماتو چبہ جاتا
 چاہتا تھا۔

چاندی تاج
تاج سبکدوش کا منہ—بھانک سے بہت دور ایک بھم
کائے کرسی پر خاموش کھڑا ہوا ہے۔ سامنے خوشنما باغ تھا
جہاں ہلوری فوارے نرمل جل کی دھارائیں پھینک رہے تھے اور
جہاں ہری ہری مضملی دروب کا قالین بچھا ہوا تھا۔ تاج کے
دونوں اور دو پہرے داروں کی طرح کھڑے ہوئے تھے لال مصل اور
لال مسجد۔ ممتاز کے قدموں کو چھوتی ہوئی جمنا ماتو اُلٹنا
دیتی ہوئی کم رہی تھی—”راہا کی جدائی کو بھونکر بلندابن
سے میں یہاں آئی تھی ممتاز! تمہوں اس کا بھی خیال نہ رہا!“
”تمہاس کے پلے میرے دل کی تاریکی کو چہر چہر کر کالہنا
کی سطح پر آ رہے تھے اور میں اپنے آپ میں بھولا ہوا بدلتے
شوقے یگر کے چھوٹے میں پینگیں بھر رہا تھا کہ اچانک تاج کے
گلاز کی بات میرے کانوں میں پڑی—”حضر! اس عمارت کے
ہذائے میں سترہ برس لگے“ قریب بیس ہزار مزدوروں نے کام کیا
اور شانہجہاں کے خزانے سے 3 کروڑ 80 لاکھ روپیہ خرچ ہوا۔“
حسابی آنکروں میں یہ تھا پریم کا تخیل! گلاز کی بات
سنکر طبیعت میں متلی سی شوق لگی، مگر گلاز کا بھی کیا
قصر لا بھجت کے دو تلوں کے بیچ سے جن کا جہوں دریا بہتا ہے
ایسے یورپ اور امریکہ کے صاحب گلاز سے پہلا سوال بھی کرتے
ہیں۔

سانگ مرمر کی چادر تانے ہوئے شاہجہاں اپنی محبوبہ ملکہ کے قدگ، زمانے کی سرحدوں کو توڑ کر، مانو خود پریم کی ساگر مرزت میں گیا تھا۔

ساکر مررت بن گیا تھا۔

تاج کی پوری عمارت اتنی لٹائی ہے، اُس کے مختلف حصوں کا سلیجوگ اتنا سندر اور لا جواب ہے اور سب ملا کر پورا اثر اتنا دلکش ہے کہ جب تک آپ خود تاج کے چبوترے پر جا کر نہ کھڑے ہو جائیں، آپ اس بات کا قیاس تک نہیں کر سکتے کہ تاج کی عمارت کتنی عظیم الشان ہے۔ کتنا بڑا لا کر رہا ہوگا وہ

155

ताज की पूरी इमारत इतनी लासानी है, उसके मुक्त-
वर्तिक हिस्सों का संजोग इतना सुन्दर और लाजवाब है और
सब मिला कर पूरा अक्षर इतना दिलकश है कि जब तक आप
सुब ताज के चबूतरे पर जाकर न खड़े हो जाएँ, आप इस
काय का क्रयास तक नहीं कर सकते कि ताज की इमारत कितनी
अमीनगरमान है. कितना बड़ा कलाकार रहा होगा वह

شکس کی جیسے تاج کی کल्पنا کی تھی۔ اس کے باوجود میں کتنی عجب اور کتنی موہکتا ہے۔ بے شمار سنگ مرمر، ایسا مہسوس ہونے لگتا ہے کہ، ہزار ہزار زبانوں سے پریم کی آواز اٹھنے کی تان چھوڑنا چاہتا ہے۔

جس فریم میں فریم اور سندرنا کا یہ لٹائی لکھتے جزا ہوا ہے اس تاج کا سارا ارد گرد کتنا موزوں اور کتنی اچھوتا پیدا کرنے والا ہے۔ جتنی سندر تصویر ہے، اتنا ہی شاندار فریم ہے۔ ایسا لگتا ہے مائو بہشت کے چٹانوں نے کھنڈے کے کھنڈوں پر دھری سندرنا کی ایک دلکش تصویر کھینچ دی ہے۔ درشک اچھڑ سے بھرا ہوا ایک ٹک دیکھتا رہتا ہے اور حسن کے اس پے آنت خزانے کو دیکھ سکے کے لئے اپنے کو تسکین سمجھتا ہے اور اپنے من میں تاج کے اس نظارے کی امت جہان کی لہر رہے وہاں سے رخصت ہوتا ہے۔

رؤخے کے بلند محراب پر سنگ مرمر کے ٹکڑوں سے عربی الفاظ اس طرح جڑے ہوئے ہیں مائو رؤخے کالہ مبارکجات پھولوں کا کجرا پہنے کھڑا ہے۔ سنگ مرمر کی گورائی پر یہ کالہ رنگ کا کجرا ہے حد سندر لگتا ہے۔ سنگ مرمر کی جانوروں سے سورج کی رو پہلی کرنیں چمن چمن کر دھوپ چھاں کھلتی ہیں۔ ہلکے ہلکے پرکھ کی ہلکی روشنی سدن کے بھڑکی حصہ کو آلوکت گوتی دھتی ہے۔ سدن کے بیچ میں سنگ مرمر کی جالیدار قلاصٹ کھڑی ہے مائو کسی آنت سفر کے پڑاؤ پر ملکہ ممتاز پردہ میں سنکار کر رہی ہیں: سنگ مرمر کی اس جانوری میں اصول نکلتے جزے ہوئے ہیں—الجود، سنگ سلیمان، علق، سوربہ، کانت، نھام، چندر کانت اور پشپ راگ—طرح طرح کے پھولوں اور پیل پھولوں کی شکل میں۔ اس جانوری کے بھڑکے شامچیاں اور ممتاز کبھی نہ ٹوٹنے والی نھد میں سدہ بدھ کھوئے ہوئے پڑے ہیں۔

پونم کا چاند جب اپنے سفر کی ادھی منزل طے کر کے آرام کرنے کے لئے ٹھہر گیا تھا، ٹھیک ایسے وقت میں یہ دوبارہ تاج محل پہنچا۔ چاندنی نے قدرت کے آنچل کو جھپی اور چمیلی کے پھولوں سے بھر دیا تھا۔ دھلی ہوا تاج محل کے آؤپر چلور مٹا رہی تھی۔ ام کی ڈالی پر بیٹھی ہوئی کویل لسرائے کے تار سلجھا رہی تھی۔ تاج محل کی داہنی طرف اس لال محل کے آنگن میں کھڑا ہو کر میں ایک ٹک تاج کی شوبھا دیکھ رہا تھا۔ باغ کے پیر اپنی شاہانہ پھیلائے ہوئے اس محل سے خاموشی کے سروں میں اپنے سک دھ کی کہانی کہتے ہیں مصروف تھے۔ زمانہ بیت گیا اُن گھنٹاؤں کو دیکھے ہوئے مگر اب بھی وہ کتنی صفائی سے اُن کے دلوں میں جڑی ہوئی ہیں۔ برگ کا وہ درخت تب کتنا ننھا سا تھا۔ شہزادی زہب النساء نے لاق میں جب اُس کی کونہوں تیزی تھیں تو مابدولت شامچیاں نے شہزادی کو ڈانٹ کر حسرت بھری

پونم کا چاند جب اپنے سفر کی ادھی منزل طے کر کے آرام کرنے کے لئے ٹھہر گیا تھا، ٹھیک ایسے وقت میں یہ دوبارہ تاج محل پہنچا۔ چاندنی نے قدرت کے آنچل کو جھپی اور چمیلی کے پھولوں سے بھر دیا تھا۔ دھلی ہوا تاج محل کے آؤپر چلور مٹا رہی تھی۔ ام کی ڈالی پر بیٹھی ہوئی کویل لسرائے کے تار سلجھا رہی تھی۔ تاج محل کی داہنی طرف اس لال محل کے آنگن میں کھڑا ہو کر میں ایک ٹک تاج کی شوبھا دیکھ رہا تھا۔ باغ کے پیر اپنی شاہانہ پھیلائے ہوئے اس محل سے خاموشی کے سروں میں اپنے سک دھ کی کہانی کہتے ہیں مصروف تھے۔ زمانہ بیت گیا اُن گھنٹاؤں کو دیکھے ہوئے مگر اب بھی وہ کتنی صفائی سے اُن کے دلوں میں جڑی ہوئی ہیں۔ برگ کا وہ درخت تب کتنا ننھا سا تھا۔ شہزادی زہب النساء نے لاق میں جب اُس کی کونہوں تیزی تھیں تو مابدولت شامچیاں نے شہزادی کو ڈانٹ کر حسرت بھری

* ایک فریم کا بدھیشی فوٹو

نیگاہوں سے اس بزرگ کے ہونے کے لئے سے بدن پر اپنے شاہی مانت پھرتے تھے۔ محض اسی ایک یاد کو تازہ کئے ہوئے وہ آج چار صدیوں سے اپنے مالک کی قبرگاہ کو نہارتا رہتا ہے۔ بدن اس کا کھولنا ہو گیا ہے تو کیا ہوا وہ اپنے لڑکھاتے پوروں پر کھڑا ہے، مانت قیامت کے دن انکوائی لیکر اٹھتے ہوئے شہشاہ سے کہیگا— ”جہاں پناہ! میں تمہارا حقیر خادم ہوں۔“ کچھ درخت اپنی الٹائی شاخیں جمنا کی اور بڑھا کر مانت منڈیں کر رہے ہیں— ”ہن، تھرو! تم تو دلی سے آ رہی ہو۔ بہادر شاہ کے بعد تم نے دیوان خاص کی کوئی خبر نہیں بتائی۔ کیوں؟ کیا لاں قلعہ کی دیواریں تمہیں دیکھ کر اب اپنا منہ پھیر لیتی ہیں؟ ہن، نارورقی تو دھرا دھرا کر یہ اعلان کر رہے ہیں کہ فرنگی اب لاں قلعہ سے رخصت ہو گئے ہوں اور وہاں ملکی نشان بھرا رہا ہے۔“ مگر جمنا کے کانوں میں کوئی بات ہی نہیں پڑتی اور وہ انہی ہو کر آگے بڑھ جاتی ہے۔ صرف کل کل، چہپ چہپ کی آواز کانوں میں پڑتی ہے مانتو جمنا کی دھارائیں اس کے ان منہ پن پر گانا پھوسی کر رہی ہیں۔

تاج کے بائیں طرف لاں مسجد کھڑی ہوئی تھی۔ روہیلے سنگ مرمر سے ٹکرا کر چاندنی مسجد کے گلابی بدن کو سفید تماگانی ململ کی چادر سے ڈھکنے کی بیکار کوشش کر رہی تھی۔ تاج کے پیچھے سے جمنا شہر کی اور اس طرح بہ رہی تھی مانتو ممتاز کے دامن کا روہیلا گوتا سیلن توڑ کر بکھر گیا ہو۔ تاج سے نین میل دور کالہ دھبے کی طرح دلعہ اور جہانگیری محل کھڑے ہوئے تھے۔ قلعہ کے باہر کے لاں پتھر کی چہاردیواری دھندلکے میں صاف نہیں دکھائی دے رہی تھی، لیکن ہیپتو کی سنگ مرمر کی موتی مسجد وہ رہ کر چمک اٹھتی تھی۔

رات کی خاموشی میں تواریخ کی ڈوٹی کڑیوں کو سلسلہ وار جرزے کی کوشش کرتے ہوئے کتنی رات بیت گئی اس کا مجھے ذرا بھی اندازہ نہ تھا۔ چاند کی شیتل کرنیں، مند مند ہوا کے جھکڑے، روہیلا اور چمکتا ہوا تاج محل—سارا سماں اور نظارہ اتنا من موہنے والا تھا کہ دماغ ایک جگہ آگ کر رہ گیا۔ سہا اس سنسان محل کو دس میں نہلاتی ہوئی اسراج کی ایک مدھرتان مہرے کانوں میں گونج گئی۔ میرے اچرج کا ٹھکانہ نہ رہا۔ جب میں نے یہ محسوس کیا کہ اس سنسان محل کے ہیپتو سے مدھر مدھر گیت کی یہ دھن آگ رہی تھی تو میرے تن بدن میں کنبہ کی سی دوز گئی۔

ایک باجے کی گت کے ساتھ مجھے ایک ایرانی ناچ کے پدچاپ سنائی دیئے۔ اسراج کے تاز ہوا کو متہ کر

تاج کے بائیں طرف لاں مسجد کھڑی ہوئی تھی۔ روہیلے سنگ مرمر سے ٹکرا کر چاندنی مسجد کے گلابی بدن کو سفید تماگانی ململ کی چادر سے ڈھکنے کی بیکار کوشش کر رہی تھی۔ تاج کے پیچھے سے جمنا شہر کی اور اس طرح بہ رہی تھی مانتو ممتاز کے دامن کا روہیلا گوتا سیلن توڑ کر بکھر گیا ہو۔ تاج سے نین میل دور کالہ دھبے کی طرح دلعہ اور جہانگیری محل کھڑے ہوئے تھے۔ قلعہ کے باہر کے لاں پتھر کی چہاردیواری دھندلکے میں صاف نہیں دکھائی دے رہی تھی، لیکن ہیپتو کی سنگ مرمر کی موتی مسجد وہ رہ کر چمک اٹھتی تھی۔

رات کی خاموشی میں تواریخ کی ڈوٹی کڑیوں کو سلسلہ وار جرزے کی کوشش کرتے ہوئے کتنی رات بیت گئی اس کا مجھے ذرا بھی اندازہ نہ تھا۔ چاند کی شیتل کرنیں، مند مند ہوا کے جھکڑے، روہیلا اور چمکتا ہوا تاج محل—سارا سماں اور نظارہ اتنا من موہنے والا تھا کہ دماغ ایک جگہ آگ کر رہ گیا۔ سہا اس سنسان محل کو دس میں نہلاتی ہوئی اسراج کی ایک مدھرتان مہرے کانوں میں گونج گئی۔ میرے اچرج کا ٹھکانہ نہ رہا۔ جب میں نے یہ محسوس کیا کہ اس سنسان محل کے ہیپتو سے مدھر مدھر گیت کی یہ دھن آگ رہی تھی تو میرے تن بدن میں کنبہ کی سی دوز گئی۔

ایک باجے کی گت کے ساتھ مجھے ایک ایرانی ناچ کے پدچاپ سنائی دیئے۔ اسراج کے تاز ہوا کو متہ کر

مردہوشا بنا رہے تھے۔ پُشیموں کی مکار بھی تھی پکڑ رہی تھی۔ میں بھی سُر تال میں بپکی ہر کر مومنہ لگا۔ میرے پیر ہر بس باربس ناچ کا تال اور سُر مرنے لگے۔ میں ہیران ہو کر سوچنے لگا کہ اسراج کے تاروں پر اتنا مدمست کہیں آخر کی آنکھوں نے پیدا کیا؟ یہ ناچ اور گن آخر ہو کہاں رہا ہے؟ میں یہ سوچ ہی رہا تھا کہ میرے کانوں میں دمشق کے ایک عربی پریم گیت کے سر پڑے۔ کیا اپنے پہچلے سفر میں میں یہی پریم گیت نہیں سنا تھا؟ مگر یہاں اُس گیت پر لاکر کے کومل سروں نے مقہاس کا ملمع پھر دیا تھا۔ سا...رے...گا...ما کے مدھر سر پر لاپ دور رہا تھا۔ اسراج کے صرف تین تاروں پر آنکھیاں پھر رہی تھیں مگر میرا دل اسراج کی کہیں کے ساتھ تڑپتا اور چٹکڑ کرنا، رات کی خاموشی کر چہ "چاندنی اور اندھیرے میں ملتا رہتا" ہزاروں کی شاخوں پر چٹا، چٹا کی ترنگوں پر چھوٹا، سارے سماں کو کمپت کرنا نت میں سا جانا چاہتا تھا۔ ایسا لگتا تھا مانو کسی ہسات کے سویرے ساری دنیا کی حسرت بھور۔ کر پیٹھا لینے ہی کے ساتھ ایک ہو جانا چاہتا تھا۔ گا یک کے سروں میں اتنا جادو تھا کہ میں اپنی سندھ بدھ کو بیٹھا۔ نیلے آسمان میں چمچاتا ہوا یونم کا چاند دونوں ہاتھوں سے اپنی چاندنی بکھیر رہا تھا۔ گیت کی تان کے ساتھ سلسلار کا سارا رس مانو ایک جگہ اکٹھا ہو رہا تھا۔ جو کچھ مہلے دیکھا اور سنا اُس کی صحیح صحیح تصویر لفظوں میں اُتار سکتا میرے لئے قطعی ناممکن ہے۔

جب تک وہ کانپتے ہوئے اور ہلکتے ہوئے سنگیت کے سُر چاندنی پر ریچھے ہوئے چاروں دشاؤں میں بھکتے رہے تب تک میں سندھ بدھ ہمار کو اُسے سنتا رہا۔ تھوڑی دیر کے لئے گیت کا ایک تھم گیا۔ تھوڑی دیر میں میرے ہوش حواس لوٹے۔ تب مجھے احساس ہوا کہ گیت کی دھن تو اُسی محل کے اُوپر کی منزل سے آرہی تھی۔ ایک من میں میں بھاؤنا اُٹھی کہ کہوں نہ اُوپر چل کر دیکھا جائے۔ کئی چکر دار سیرمیں پر چڑھتا ہوا، روشنی اور اندھیرے سے گذرتا، میں راستہ کھوجتا ہوا اُوپر کا راستہ پانے لگا۔ گول چکر کاتنی ہوئی سیرمیں چہت پر ایک چھوٹے سے ہرآمدہ میں ختم ہوتی تھیں۔ ہرآمدہ کئی ہوئی جانوری سے بند تھا۔ ہرآمدہ کے بعد ہی ایک بڑی سی چہت تھی۔

چاندنی کی معصوم کرنیں (پہلی پوشاک پہنے ہوئے چہت پر رہ رہ کر گلاب جل چھڑک رہی تھیں۔ چالیس فٹ لمبے چھڑے سنگ مر مر کے فرش پر قریب چار انچ موٹا دمشق قالین بچھا ہوا تھا۔ پورب کے جانب ایک چاندنی کا تخت پڑا ہوا تھا جس پر بیٹھ قیمت

مردہوشا بنا رہے تھے۔ پُشیموں کی مکار بھی تھی پکڑ رہی تھی۔ میں بھی سُر تال میں بپکی ہر کر مومنہ لگا۔ میرے پیر ہر بس باربس ناچ کا تال اور سُر مرنے لگے۔ میں ہیران ہو کر سوچنے لگا کہ اسراج کے تاروں پر اتنا مدمست کہیں آخر کی آنکھوں نے پیدا کیا؟ یہ ناچ اور گن آخر ہو کہاں رہا ہے؟ میں یہ سوچ ہی رہا تھا کہ میرے کانوں میں دمشق کے ایک عربی پریم گیت کے سر پڑے۔ کیا اپنے پہچلے سفر میں میں یہی پریم گیت نہیں سنا تھا؟ مگر یہاں اُس گیت پر لاکر کے کومل سروں نے مقہاس کا ملمع پھر دیا تھا۔ سا...رے...گا...ما کے مدھر سر پر لاپ دور رہا تھا۔ اسراج کے صرف تین تاروں پر آنکھیاں پھر رہی تھیں مگر میرا دل اسراج کی کہیں کے ساتھ تڑپتا اور چٹکڑ کرنا، رات کی خاموشی کر چہ "چاندنی اور اندھیرے میں ملتا رہتا" ہزاروں کی شاخوں پر چٹا، چٹا کی ترنگوں پر چھوٹا، سارے سماں کو کمپت کرنا نت میں سا جانا چاہتا تھا۔ ایسا لگتا تھا مانو کسی ہسات کے سویرے ساری دنیا کی حسرت بھور۔ کر پیٹھا لینے ہی کے ساتھ ایک ہو جانا چاہتا تھا۔ گا یک کے سروں میں اتنا جادو تھا کہ میں اپنی سندھ بدھ کو بیٹھا۔ نیلے آسمان میں چمچاتا ہوا یونم کا چاند دونوں ہاتھوں سے اپنی چاندنی بکھیر رہا تھا۔ گیت کی تان کے ساتھ سلسلار کا سارا رس مانو ایک جگہ اکٹھا ہو رہا تھا۔ جو کچھ مہلے دیکھا اور سنا اُس کی صحیح صحیح تصویر لفظوں میں اُتار سکتا میرے لئے قطعی ناممکن ہے۔

جب تک وہ کانپتے ہوئے اور ہلکتے ہوئے سنگیت کے سُر چاندنی پر ریچھے ہوئے چاروں دشاؤں میں بھکتے رہے تب تک میں سندھ بدھ ہمار کو اُسے سنتا رہا۔ تھوڑی دیر کے لئے گیت کا ایک تھم گیا۔ تھوڑی دیر میں میرے ہوش حواس لوٹے۔ تب مجھے احساس ہوا کہ گیت کی دھن تو اُسی محل کے اُوپر کی منزل سے آرہی تھی۔ ایک من میں میں بھاؤنا اُٹھی کہ کہوں نہ اُوپر چل کر دیکھا جائے۔ کئی چکر دار سیرمیں پر چڑھتا ہوا، روشنی اور اندھیرے سے گذرتا، میں راستہ کھوجتا ہوا اُوپر کا راستہ پانے لگا۔ گول چکر کاتنی ہوئی سیرمیں چہت پر ایک چھوٹے سے ہرآمدہ میں ختم ہوتی تھیں۔ ہرآمدہ کئی ہوئی جانوری سے بند تھا۔ ہرآمدہ کے بعد ہی ایک بڑی سی چہت تھی۔

چاندنی کی معصوم کرنیں (پہلی پوشاک پہنے ہوئے چہت پر رہ رہ کر گلاب جل چھڑک رہی تھیں۔ چالیس فٹ لمبے چھڑے سنگ مر مر کے فرش پر قریب چار انچ موٹا دمشق قالین بچھا ہوا تھا۔ پورب کے جانب ایک چاندنی کا تخت پڑا ہوا تھا جس پر بیٹھ قیمت

❁ ❁ ❁

बकायक मजलिस लकी और सब के सब मुँडेर के पास
आकर, नीचे बहती हुई जमुना के उस पार काँहरे का डुपट्टा
जोड़े आगरे की सोई हुई नगरी की ओर ध्यान से देखने
लगे, मैं भी कौतूहल से भरा हुआ दीवार के पास पहुँचा।
जो कुछ देखा, मेरे अचरज का ठिकाना न रहा। फटते हुए
काँहरे की चादर से साफ़ होता हुआ संगमरमर का एक पुल
दिखाई दिया जिसकी एक मेहराब ताज के इस किनारे पर
थी तो दूसरी मेहराब जमुना के उस किनारे पर। सिर्फ़ एक
मेहराब वाला रुपहले संगमरमर का बुर्जदार खूबसूरत पुल
देखकर मेरी हैरत का ठिकाना न रहा। काँहरा जरा और
झुका हुआ और तब मैंने देखा कि ठीक जमुना के उस

✻ ✻ ✻

सितम्बर '५५

کنال پر سگ مرمر کے پل اُس پل کے پلے ناچ مصل کی ہو ہو
ایک دوسری عبارت کہی تھی۔ اُتلی ہی صاف، اُتلی ہی سندر،
اُتلی ہی کا ہے بھری ہوئی، اُتلی ہی بلوری—دونوں میں کس قسم کا
فرق کر سکتا مشکل تھا۔ پل کا راستہ، چھتا، محراب، کھڑکیاں
سب سفید چمکدار سنگ مرمر کی بنی ہوئی تھیں۔ میں اُچرچ
اُپر چھوٹ میں سروپا قہقہ کر اپنی سیدہ بدھ کو دیکھا۔ پل
تھا تھا مالم سنگ مرمر کا دھلے ناچ کو دوسرے
ناچ سے جوڑ رہا تھا۔

میں بے چین ہو کر اُس نظارے کے پست کے پست اپنے دل میں یہ رہا تھا کہ اچانک جھٹکے جل سے گھبرا اٹھ کر اُسکی میں چھانے لگا۔ آگرے کا شہر، سنگ مرمر کا پل، اُس پار کا قلعہ محل اور ندی سب کے سب دھندلکے کے پردے میں چھپ گئے۔ میں نے اُسکی کی اور نظر ڈالی تو دیکھا کہ یونم کا چاند اتنی کے ہونٹوں کا چمک رہا تھا۔ چاندنی نعلی پر رہی تھی اور آنے والی جدائی کے صدمہ سے سسکتی جا رہی تھی۔

مہلہ مرکز مجلس کی طرف نظر ڈالی مگر وہاں پانچویں
میں سے کوئی بھی نہ تھا۔ ہذا کسی آواز کے، خاموشی
کے ساتھ وہ مانتو سب کے سب ہوا میں غائب ہو گئے۔ وہ
سوٹا مضامی قالین، چراؤ چاندی کا تخت، ریشمی اور کمنداب
کی چادریں، زریں گلو تیکٹہ اور مسندیں، استاد اور اسراج،
نرتکیاں اور ان کے گھرنکھرو، وہ حسن کی پری اور وہ انسانیت
کا دھڑکا، سب کے سب دھستہ کے پردے میں سما گئے۔ کسی
چیز کی وہاں پرچھائیں تک باقی نہ رہی۔ اُس عجیب و
غریب مجلس کی یادگار کو تازہ رکھنے والا صرف وہ کچھ تھا سدا
بہار نرگس کے پھولوں کا وہ کچھا اہیلے ایک سرد آہ بھر کر
دھیرے سے اُسے جاگر اُٹھا لیا۔

ایک ٹھنڈی ہوا کے جھونکے نے مہری کھوٹی ہوئی چیتنا واپس لا دی۔ مینہ آگرے کی طرف نظر دوڑائی۔ ریل کے انجنوں اور کارخانوں کی چمنہیں کا دھواں لکڑی بنا ہوا ہوا کے رخ آتر دشا میں اکتھا ہو رہا تھا۔ دور، بہت دور پہاڑیوں کی ایک قطار تھکی ماندی پڑی تھی۔ میں گم سم سوچ رہا تھا کہ وہ سنگ مرمر کا پل اور وہ دوسرا تاج کیا محض مہری کلہنا اور دھوکا تھے؟ وہ حسن کی پری اور وہ شایستگی کا دیوتا کیا وہ دونوں بھی دھوکا تھا؟ وہ نوجوان نرکتیاں جہوم جہوم کر ناچتی ہوئی اور کلا کا دھنی وہ استاد کیا وہ تیلوں بھی پہنا تھے؟ نہیں یہ قطعی ناممکن ہے۔ میں ان سب کے چہروں کی رائی رائی بناوٹ دھرا سکتا ہوں۔ کتنا سہل لگتا تھا استاد کا کتنا سوز اور قال سے بھرا ہوا اکھا وہ

یہ سب سہلا اور دھوکا تھا تو یہ نرگس کے پھول؟ ان کی سکنہ، ان کی ہلکیاں اور ان کی مادکنا یہ سب کتنی جتنی جاگتی باتیں ہیں! میں ان کی خوشبو کو سونگ رہا ہوں، انہیں ہاتھوں سے چھو رہا ہوں اور آنکھوں سے دیکھ رہا ہوں۔ اگر یہ سہلا اور دھوکا نہیں ہیں تو وہ حسن کی پری جس نے انہیں اپنی کامل آنکھوں سے پکڑ رکھا تھا کیسے سہلا اور دھوکا ہو سکتی ہے؟

✽ ✽ ✽

حکیم نے دھیرے سے سندور کا تھال بکھیر دیا۔ اسے اس نے ہنس کر اس کی پیشانی پر چوم لیا۔ سورج نے کنگھوں سے ان کی یہ پریم لہلا دیکھی۔ سولسویں کے پیر پر بیٹھا ہوا بیٹھا ہی کہاں! یہ کہاں! کی تھل لگا لگا۔ نیچے باغ کی صفائی اور اگا دوکا سیلابی کی آمد رخت شروع ہو گئی۔ میں تھکا ہوا بہاری پدروں سے سڑھیاں طے کرتا ہوا نیچے آیا۔ محل سے نکلے ہی ایک بڑھے خواستگار پر مہری نظر پڑی۔ مہنے پاس جا کر اس سے رات کے کھیت اور ناچ کی بات پوچھی۔ لہرواھی سے بڑھے نے مجھے ٹال دیا۔ پر جب مہنے اس حسن کی پری کی بات کہی تو اس کے پیر لڑا کھڑا گئے۔ اس کے ہاتھ سے لائی چھوٹ کر گر پڑی۔ وہ وہیں کلیجہ تھام کر بیٹھ گیا۔ جب سنبھل کر اٹھا تو اسے آواز میں، 'ملکہ جہاں! ملکہ جہاں!' کہتا ہوا ایک اور چلا گیا۔ میں اس سے زیادہ کچھ نہ پوچھ سکا۔

اس پونو کی رات کی بات میں کس سے پوچھوں؟ لوگ مجھے خبطی اور دیوانہ سمجھیں گے، حالانکہ مجھے اس کی ذرا بھی پروا نہ تھی۔ لیکن میں یہ نہیں چاہتا کہ کوئی ملکہ جہاں ممتاز کا مذاق اڑائے۔

وہ سدا سکندہ دہلے والے نرگس کے پھول اب بھی جتن کے ساتھ مہرے قرآنک روم میں چائنا کے پھولوں میں رکتے ہوئے ہیں۔

یہ سب سہلا اور دھوکا تھا تو یہ نرگس کے پھول؟ ان کی سکنہ، ان کی ہلکیاں اور ان کی مادکنا یہ سب کتنی جتنی جاگتی باتیں ہیں! میں ان کی خوشبو کو سونگ رہا ہوں، انہیں ہاتھوں سے چھو رہا ہوں اور آنکھوں سے دیکھ رہا ہوں۔ اگر یہ سہلا اور دھوکا نہیں ہیں تو وہ حسن کی پری جس نے انہیں اپنی کامل آنکھوں سے پکڑ رکھا تھا کیسے سہلا اور دھوکا ہو سکتی ہے؟

✽ ✽ ✽

حکیم نے دھیرے سے سندور کا تھال بکھیر دیا۔ اسے اس نے ہنس کر اس کی پیشانی پر چوم لیا۔ سورج نے کنگھوں سے ان کی یہ پریم لہلا دیکھی۔ سولسویں کے پیر پر بیٹھا ہوا بیٹھا ہی کہاں! یہ کہاں! کی تھل لگا لگا۔ نیچے باغ کی صفائی اور اگا دوکا سیلابی کی آمد رخت شروع ہو گئی۔ میں تھکا ہوا بہاری پدروں سے سڑھیاں طے کرتا ہوا نیچے آیا۔ محل سے نکلے ہی ایک بڑھے خواستگار پر مہری نظر پڑی۔ مہنے پاس جا کر اس سے رات کے کھیت اور ناچ کی بات پوچھی۔ لہرواھی سے بڑھے نے مجھے ٹال دیا۔ پر جب مہنے اس حسن کی پری کی بات کہی تو اس کے پیر لڑا کھڑا گئے۔ اس کے ہاتھ سے لائی چھوٹ کر گر پڑی۔ وہ وہیں کلیجہ تھام کر بیٹھ گیا۔ جب سنبھل کر اٹھا تو اسے آواز میں، 'ملکہ جہاں! ملکہ جہاں!' کہتا ہوا ایک اور چلا گیا۔ میں اس سے زیادہ کچھ نہ پوچھ سکا۔

اس پونو کی رات کی بات میں کس سے پوچھوں؟ لوگ مجھے خبطی اور دیوانہ سمجھیں گے، حالانکہ مجھے اس کی ذرا بھی پروا نہ تھی۔ لیکن میں یہ نہیں چاہتا کہ کوئی ملکہ جہاں ممتاز کا مذاق اڑائے۔

وہ سدا سکندہ دہلے والے نرگس کے پھول اب بھی جتن کے ساتھ مہرے قرآنک روم میں چائنا کے پھولوں میں رکتے ہوئے ہیں۔

ایک آदर्ش چینی مزدور لڑکی

ایک آदर्ش چینی مزدور لڑکی

شریمنی پربھا ایم . اے . ہندی ادھیابکا پیکنگ یونیورسٹی
پیکنگ

شریمنی پربھا ایم . اے . ہندی ادھیابکا پیکنگ یونیورسٹی
پیکنگ

(1)

(1)

ہو چیں شو کو میں پہلے نہیں جانتی تھی پر نام بہت سنا تھا . چین میں جہاں کہیں بھی ہم کپڑے کی مل دیکھتے گئے معلوم ہوا کہ وہاں کے کارخانے والے ہو چیں شو کا طریقہ کم میں لے رہے ہیں . ایک دن میرے ایک دبیارتھی لھاؤ چھی یونی نے مجھ سے پوچھا—”آپ ہوچیں شو کو جانتی ہیں ؟“ میں نے کہا—”پتربیکڑوں میں کچھ اُن کے بارے میں پڑھا ہے.“ اُس نے کہا—”آپ اُن سے ملنے“ پیکنگ ہی میں تو ہیں اور سارے دیہے میں مشہور ہیں .“ اُسی دن سے مجھے اچھا ہوئی کہ میں ہوچیں شو سے ملاقات کروں . میں نے اپنی اچھا اپنے چینی ادھیابک ساتھی شری یین ہنگ یونین کے سامنے رکھی . اُنہوں نے بڑی دلچسپی کے ساتھ وشودیالیہ کے بوروی بھاشا دیہاک کی طرف سے میرے ہوچیں شو کے پاس جانے کا پرہندہ کر دیا . مجھے 12 ذروری کو 4 بجے اُن سے ملنے کا سہ دیا گیا . من میں عجب طرح کی خوشی محسوس کرتی ہوئی میں اُس دن یین صاحب کے ساتھ ہوچیں شو سے ملنے چلی .

ہوچیں شو جنٹا وشودیالیہ (Peoples University) کے میڈیکل سکول میں پہلے درجے کی ویڈیارتھی ہیں . جنٹا وشودیالیہ پیکنگ وشودیالیہ سے تین چار میل دور ہے . جب ہم اُس وشودیالیہ کے پھاٹک پر پہونچے تو وہاں کے پردھان (Vice-Chancellor) و آپ پردھان (نائب وائس چانسلر) نے ہمارا سواگت کیا . سادی پوشاک میں منجھولے قد کی لگ بھگ اُنیس برس کی ایک تندرست و ہنس مکھ چہرے والی لڑکی کو پردھان نے آگے کر دیا—”یہ ہیں ہوچیں شو .“ وہ ہم سے بڑی محبت سے ملیں اور اُس کمرے میں لے گئیں جہاں مہمانوں کے بیٹھنے کے لئے خاص طور سے انتظام ہے . پردھان نے مجھ سے کہا کہ ہوچیں شو اُن کے وشودیالیہ میں پڑھتی ہے یہ اُن کے لئے خوشی کی بات ہے . میں بھی بے حد خوش تھی . میں نے پردھان کو دھنہواد دیا کہ اُنہوں نے مجھے ہوچیں شو سے ملنے کا موقع دیا . اِس کے بعد وہ باہر چلے گئے اور میں ہوچیں شو سے بات چیت کرنے لگی .

ہوچیں شو نے مجھ سے اپنے بچپن کا حال بتاتے ہوئے کہا :—

”میں شانکتنگ پرائنٹ کے چھنگ قو شہر کے پاس تاؤ

سامان گاؤں میں پیدا ہوئی تھی۔ لاکھوں اور غریب بچوں کی طرح میرا بچپن بھی غریبی میں بوتا۔ گھر میں ماما پتا کے علاوہ چار چوتھے بھائی اور دو بہنیں تھیں، میں سب سے بڑی تھی۔ پتا جی کے پاس ایک گدھا گاڑی تھی۔ اُس سے وہ چھنگ تاؤ سے دوسری جگہوں پر امیروں کا سامان ڈھویا کرتے تھے۔ اُن دنوں چوروں لٹوروں کے گرن راستہ خطرناک تھا مگر گزارے کا دوسرا سادھن نہ ہونے کے گرن میرے پتا جی کئی سال سے یہی کم کرتے تھے۔ راستے میں پولس تو دھکی تھی پر وہ بہت کم دھکیا دیتی تھی اور میرے پتا جی انڈر گاڑی لٹ جاتے کے گرن دھکی و آداس ہوکر گھر لوٹتے تھے۔ اُن کے دن چننا میں بیٹتے تھے۔ اور کبھی کبھی سامان لٹ جاتے کے گرن انہیں امیر مالکوں کو اُن کے مال کی قیمت بھی بھرنی پڑتی تھی۔ جب کدائی نہیں تو پیسے کہاں سے دیتے؟ اِس لئے اُن کی حالت بہت ہی خراب رہتی تھی۔“

ہو چیں شو نے کہا کہ:—”جب میں آٹھ سال کی تھی تب جاپانیوں نے وہاں قبضہ کر لیا۔ سارا گاؤں خالی کر دیا گیا۔ دوسرے گھروں کے ساتھ ساتھ ہمارا گھر بھی جلا دیا گیا، کیونکہ جاپانیوں کو وہاں ہوائی اڈا بنانا تھا۔ ماما پتا کے ساتھ میں گاؤں کے باہر چلی گئی پر کہیں رہنے کے لئے جگہ نہ ملی۔ ہم سب ایک پہاڑی گھاٹی میں رہنے لگے۔“ اِس پر لمبی ساؤس لیتے ہوئے چن نے کہا:—”وہ دنوں ہماری حالت بہت خراب تھی۔ میں گھر کی حالت سمجھتی تو تھی لیکن مجھے کیا کرنا چاہئے یہ سمجھ نہ تھی۔ کچھ دن کے بعد میں ماما جی کے کہنے پر جنگل سے سوکھی گھاس جمع کرنے گئی اور بعد میں روز جنگل سے گھاس، کھیتوں سے سبزیاں اور سنڈر سے کچھ کھانے کی چیزیں اکٹھا کرنے لگی۔ اُن دنوں میں کچرا گھروں کے آگے اور کارخانوں کے پچھواڑے چکر لگاتی کرتی تھی اور جیلے ہوئے کونلوں میں سے اچھے اچھے چھانٹ کر گھر لے آتی تھی۔ کونلے بٹورنے کے گرن میرے ہاتھ، پاؤں، منہ سب کاٹے ہوئے تھے، اُس لئے اُس پاس کے سب لوگ مجھے ’چھوٹی کالی بھونٹی‘ کہنے لگے تھے۔“

یہ کہتے کہتے اُس کے منہ پر مسکراہٹ آگئی۔ پر اُس مسکراہٹ میں بھی اُس سمے کی حالت کا دردناک چتر اور اُس کے پرتی اُس کا استغوش صاف ظاہر ہو رہا تھا۔

پرستہنوں نے اُسے اپنی عمر سے کچھ ادھک سمجھدار بنا دیا تھا۔ گریباں کھیلنے کی عمر میں اُس نے مزدوری کرنے کی اچھا پڑگٹ کی۔ ماما پتا بھی اِس سے خوش ہوئے پر اُس نے مجھ سے کہا کہ بہت کوشش کرنے پر بھی اُسے کوئی کام نہ ملا۔

جون 1949 میں چھنگ تاؤ گاؤں جاپانیوں کے قبضہ سے آزاد ہو گیا۔ اب ہو چیں شو کے چہروں کی دشا ہی

ہو چیں شو نے کہا کہ:—”جب میں آٹھ سال کی تھی تب جاپانیوں نے وہاں قبضہ کر لیا۔ سارا گاؤں خالی کر دیا گیا۔ دوسرے گھروں کے ساتھ ساتھ ہمارا گھر بھی جلا دیا گیا، کیونکہ جاپانیوں کو وہاں ہوائی اڈا بنانا تھا۔ ماما پتا کے ساتھ میں گاؤں کے باہر چلی گئی پر کہیں رہنے کے لئے جگہ نہ ملی۔ ہم سب ایک پہاڑی گھاٹی میں رہنے لگے۔“ اِس پر لمبی ساؤس لیتے ہوئے چن نے کہا:—”وہ دنوں ہماری حالت بہت خراب تھی۔ میں گھر کی حالت سمجھتی تو تھی لیکن مجھے کیا کرنا چاہئے یہ سمجھ نہ تھی۔ کچھ دن کے بعد میں ماما جی کے کہنے پر جنگل سے سوکھی گھاس جمع کرنے گئی اور بعد میں روز جنگل سے گھاس، کھیتوں سے سبزیاں اور سنڈر سے کچھ کھانے کی چیزیں اکٹھا کرنے لگی۔ اُن دنوں میں کچرا گھروں کے آگے اور کارخانوں کے پچھواڑے چکر لگاتی کرتی تھی اور جیلے ہوئے کونلوں میں سے اچھے اچھے چھانٹ کر گھر لے آتی تھی۔ کونلے بٹورنے کے گرن میرے ہاتھ، پاؤں، منہ سب کاٹے ہوئے تھے، اُس لئے اُس پاس کے سب لوگ مجھے ’چھوٹی کالی بھونٹی‘ کہنے لگے تھے۔“

یہ کہتے کہتے اُس کے منہ پر مسکراہٹ آگئی۔ پر اُس مسکراہٹ میں بھی اُس سمے کی حالت کا دردناک چتر اور اُس کے پرتی اُس کا استغوش صاف ظاہر ہو رہا تھا۔

پرستہنوں نے اُسے اپنی عمر سے کچھ ادھک سمجھدار بنا دیا تھا۔ گریباں کھیلنے کی عمر میں اُس نے مزدوری کرنے کی اچھا پڑگٹ کی۔ ماما پتا بھی اِس سے خوش ہوئے پر اُس نے مجھ سے کہا کہ بہت کوشش کرنے پر بھی اُسے کوئی کام نہ ملا۔

جون 1949 میں چھنگ تاؤ گاؤں جاپانیوں کے قبضہ سے آزاد ہو گیا۔ اب ہو چیں شو کے چہروں کی دشا ہی

بدل گئی۔ چینی کارخانوں میں مزدوروں کی مانگ ہوئی۔ نومبر میں اسے سرکاری کپڑا میل نمبر 6 میں کام مل گیا۔ وہ اس سے 14 سال کی بھی نہیں تھی۔

घर की गरीबी का चित्र उसके सामने था. भाई बहनों का भूक से तड़पना उसे याद था. उससे पहले बीसों बार काम के लिये कोशिश कर चुकी थी, इसलिये जब उसे काम मिला तो वह बहुत खुश हुई और जी लगाकर काम करने लगी. शुरू से ही उसने बड़ी तरक्की की और अपनी लगन व मेहनत से उसने एक नया तरीका निकाला जिसके अनुसार काम करने में पैदावार बढ़ती थी और सब को बहुत फायदा था. कारखाने के अन्दर रुई की कताई और पूती बनाई में जो रुई आया जाती थी उसमें दो चैन शू के नए तरीके से पचासी फीसदी रुई की बचत होने लगी. पहले तो किसी को विश्वास नहीं हुआ. साथियों ने मजाक भी उड़ाया पर लगातार अध्ययन करने और देखते रहने के बाद अधिका-रियों को उसकी बात मंजूर करनी पड़ी. दो चैन शू का तरीका एक नया और सफल तरीका था इसलिये दिसम्बर 1950 में वह अपने कारखाने की "आदर्श मजदूर" कहलाने लगी और मई 1951 में उसे दूसरे दर्जे का यानी छिंग ताव का "आदर्श मजदूर" घोषित कर दिया गया. अगस्त 1951 में वह सारे देश की "आदर्श मजदूर" कही जाने लगी. उस समय उसका वेतन लगभग 175 रुपये माहवार था और वह मुश्किल से 16 साल की थी.

सितम्बर 1953 में दो चैन शू को कारखाने की तरफ से जनता विश्वविद्यालय के मिडिल स्कूल में पढ़ने के लिये भेजा गया. यहां वह तीन साल पढ़ेगी और फिर अपने काम पर वापस चली जाएगी. दो चैन शू विश्वविद्यालय में बहुत खुश है, वेतन अब भी उसे बराबर मिलता रहता है. उसके पिता ने गाड़ी चलाने का काम नहीं छोड़ा. गांव आजाद होने के बाद अब भी बड़ी खुशी से अपना काम कर रहे हैं. घर लौटते हैं तो मुंह पर प्रसन्नता रहती है क्योंकि एक दिन में करीब करीब 8-10 रुपये की आमदनी उन्हें हो जाती है. माता घर का काम देखती हैं; मगर उनकी आंखों में अब दुख के आंसू नहीं, खुशी की चमक रहती है. सब भाई-बहिन तन्दुरुस्त और खुश हैं और सब पढ़ते हैं—“आजादी ने हमारे परिवार में जीवन ला दिया.” दो चैन शू ने कहा—“इस खुशी और आनन्द की पहले हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे; हमारा परिवार अब किसी भी परिवार से कम सुखी नहीं. इन शब्दों को कहते समय उसके चेहरे पर बच्चों की सी सरलता थी. बातचीत के साथ साथ उसके चेहरे के भाव भी बदलते जा रहे थे. परिवार के और अपने सुखी जीवन का खिन्न करने ही वह खुशी से गदगद हो गई. अब उसने अपने आप बातचीत का विषय बदल दिया :—“वह

بدل گئی۔ چینی کارخانوں میں مزدوروں کی مانگ ہوئی۔ نومبر میں اسے سرکاری کپڑا میل نمبر 6 میں کام مل گیا۔ وہ اس سے 14 سال کی بھی نہیں تھی۔

گھر کی غریبی کا چتر اُس کے سامنے تھا۔ بھائی بھنوں کا بھوک سے تڑپنا اُسے یاد تھا۔ اُس سے پہلے بیسوں بار کام کے لئے کوشش کرچکی تھی، اُس لئے جب اُسے کام ملا تو وہ بہت خوش ہوئی اور جی لگا کر کام کرنے لگی۔ شروع سے ہی اُس نے بڑی ترقی کی اور اپنی لگن و محنت سے اُس نے ایک نیا طریقہ نکالا جس کے अनुसार کام کرنے میں پیداوار بڑھتی تھی اور سب کو بہت فائدہ تھا۔ کارخانے کے اندر روئی کی کٹائی اور پوتی بنائی میں جو روئی ضائع جاتی تھی اُس میں ہوجین شو کے نئے طریقہ سے پچاس فیصدی روئی کی بچت ہونے لگی۔ پہلے تو کسی کو وشواس نہیں ہوا۔ ساتھیں نے مذاق بھی اڑایا پر لگاتار اُندھیں کرنے اور دیکھتے رہنے کے بعد ادھیڑکریں کو اُس کی بات منظور کرنی پڑی۔ ہوجین شو کا طریقہ ایک نیا اور سہل طریقہ تھا اُس لئے دسمبر 1950 میں وہ اپنے کارخانے کی "آدرش مزدور" کہلانے لگی اور مئی 1951 میں اُسے دوسرے درجہ کا یعنی چینگ تاو کا "آدرش مزدور" ٹھوسٹ کر دیا گیا۔ اگست 1951 میں وہ سارے دیہی کی "آدرش مزدور" کہی جانے لگی۔ اُس سے اُس کا ویتن لگ بھگ 175 روپے ماہوار تھا اور وہ مشکل سے 16 سال کی تھی۔

ستمبر 1953 میں ہوجین شو کو کارخانے کی طرف سے چنگا وشودیالیہ کے مڈل اسکول میں پڑھنے کے لئے بھیجا گیا۔ یہاں وہ تین سال پڑھنی اور پھر اپنے کام پر واپس چلی جائیگی۔ ہوجین شو وشودیالیہ میں بہت خوش ہے۔ ویتن اب بھی اُسے برابر ملتا رہتا ہے۔ اُس کے پتے لے گاڑی چلانے کا کام نہیں چھوڑا۔ گاڑی آزاد ہونے کے بعد اب بھی بڑی خوشی سے اپنا کام کر رہے ہیں۔ گھر لوٹتے ہیں تو منہ پر پرسنٹا رہتی ہے کیونکہ ایک دن میں قریب قریب 8-10 روپے کی آمدنی انہیں ہوجاتی ہے۔ ماما گھر کا کام دیکھتی ہیں، مگر اُن کی آنکھوں میں اب دکھ کے آنسو نہیں خوشی کی چمک رہتی ہے۔ سب بھائی بہن تندرست اور خوش ہیں اور سب پڑھتے ہیں۔ "آزادی نے ہمارے پرپوار میں جیوں لا دیا" ہوجین شو نے کہا— "اُس خوشی اور آئندہ کی پہلے ہم کلپنا بھی نہیں کر سکتے تھے؛ ہمارا پرپوار اب کسی بھی پرپوار سے کم سکھی نہیں۔" ان شبدوں کو کہتے سے اُس کے چہرے پر ہجڑوں کی سی سرلٹا تھی۔ بات چیت کے ساتھ ساتھ اُس کے چہرے کے بھاؤ بھی بدلتے جا رہے تھے۔ پرپوار اور اپنے سکھی جیوں کا ذکر کرتے ہی وہ خوشی سے گدگد ہوگئی۔ اب اُس نے اپنے آپ بات چیت کا وشنے بدل دیا :—“یہ

بھلا مائیکہ ہے جب میں کسی ہندوستانی عورت سے بات چیت کر رہی ہوں۔ مجھے اس سے بے حد خوشی ہے کیونکہ انہاس کی کلاس میں ہم نے پڑھا ہے کہ چین اور بھارت میں کئی ہزار برس سے گہشت مچ رہی ہے۔ پچھلے سال پردھان منتری پنڈت نہرو یہاں آئے اور پردھان منتری چائو این لائی بھارت گئے۔ اب سب لوگ یہ جانتے ہیں کہ دونوں نے جو پینچ شیل کے پانچ سدھانت ملے تھے وہ دنیا کی شانتی کے لئے کتنے ضروری ہیں۔ اس کے بعد ہوجین شونے کہا۔ ”چین سے ایک سائنسریک منڈل بھارت گیا اور بھارت کا فلکار منڈل ہاں آیا۔ اس سے ظاہر ہے کہ دونوں دہشوں کی مینا پردھان منتری پر ہے اور اب ہمارا سمبندھ اور زیادہ گہشت ہوتا جا رہا ہے۔ مجھے وشواس ہے کہ نکت بھوشیہ میں ہمارا سمبندھ مینا سے بڑھکر بھائی چارے کا ہوجائیکا۔“

اُس نے کہا۔ ”اخبار میں یہ پڑھکر ہمیں بڑی خوشی ہوئی کہ بھارت میں چین کے لئے ایک خاص آندولن ہوا اور ’ناہوان چھوڑو‘ دن منایا گیا، اس سے بھی یہ ظاہر ہے کہ بھارت کی جنتا چھلی جنتا کو پیار کرتی ہے اور اس کی مدد کرتی ہے۔“

”میری بڑی اچھا ہے“ ہو چین شونے چائے کے خالی پیالے میں چائے ڈالتے ہوئے کہا کہ۔ ”بھارت کی مہیلاؤں سے ملوں اور اُن سے بھارت کی استریوں کے بارے میں جانکاری حاصل کروں۔ بھوشیہ میں شاید بھارت جانے اور بھارت کی مہیلاؤں سے ملنے کا موقع ملے۔“ جس طرح پیار سے وہ باتیں کر رہی تھی، جس سنبھ سے کبھی ہاتھ میں ہاتھ لیکر، کبھی گلے میں ہاتھ ڈالکر وہ مجھے سب کچھ بتا رہی تھی اُس سے اُس تھوڑے سے سمنے میں ہی مجھے لگنے لگا کہ میں کسی اجنبی سے نہیں اپنی کسی پردیخت سہیلی سے بات کر رہی ہوں۔ مجھے وشواس ہو گیا کہ وہ گہبیر ہوتے ہوئے بھی خوشدل ہے، وچار شیل ہوتے ہوئے بھی ملنسار ہے۔

”میری بڑی اچھا ہے“ ہو چین شونے چائے کے خالی پیالے میں چائے ڈالتے ہوئے کہا کہ۔ ”بھارت کی مہیلاؤں سے ملوں اور اُن سے بھارت کی استریوں کے بارے میں جانکاری حاصل کروں۔ بھوشیہ میں شاید بھارت جانے اور بھارت کی مہیلاؤں سے ملنے کا موقع ملے۔“ جس طرح پیار سے وہ باتیں کر رہی تھی، جس سنبھ سے کبھی ہاتھ میں ہاتھ لیکر، کبھی گلے میں ہاتھ ڈالکر وہ مجھے سب کچھ بتا رہی تھی اُس سے اُس تھوڑے سے سمنے میں ہی مجھے لگنے لگا کہ میں کسی اجنبی سے نہیں اپنی کسی پردیخت سہیلی سے بات کر رہی ہوں۔ مجھے وشواس ہو گیا کہ وہ گہبیر ہوتے ہوئے بھی خوشدل ہے، وچار شیل ہوتے ہوئے بھی ملنسار ہے۔

آجکل ہو چین شونے کا کاربہ چھتر کانی ہوا ہے۔ وہ کئی سلسٹھاؤں کی ممبر ہے۔ اس سمنے وہ ’کل چین مزدور نیدریشن‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی ممبر ہے، چین کے ’لوک سنگ‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی بھی ممبر ہے، اور ’کل چین مہیلا نیدریشن‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی ممبر ہے۔ ہو چین شو کو جنتا اور سرکار کی طرف سے بہت سمان ملا۔ 1951 اکتوبر دیوس کے بعد سے وہ چینی جنتا کی ’صلاح مشورہ کمیٹی‘ کی ممبر بنا دی گئی۔ 1952 میں اُسے چینی ’ٹریڈ یونین‘ کے پرنیڈھی کے روپ میں سوربیت روس بھیجا گیا۔

آجکل ہو چین شونے کا کاربہ چھتر کانی ہوا ہے۔ وہ کئی سلسٹھاؤں کی ممبر ہے۔ اس سمنے وہ ’کل چین مزدور نیدریشن‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی ممبر ہے، چین کے ’لوک سنگ‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی بھی ممبر ہے، اور ’کل چین مہیلا نیدریشن‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی ممبر ہے۔ ہو چین شو کو جنتا اور سرکار کی طرف سے بہت سمان ملا۔ 1951 اکتوبر دیوس کے بعد سے وہ چینی جنتا کی ’صلاح مشورہ کمیٹی‘ کی ممبر بنا دی گئی۔ 1952 میں اُسے چینی ’ٹریڈ یونین‘ کے پرنیڈھی کے روپ میں سوربیت روس بھیجا گیا۔

اُس نے کہا۔ ”اخبار میں یہ پڑھکر ہمیں بڑی خوشی ہوئی کہ بھارت میں چین کے لئے ایک خاص آندولن ہوا اور ’ناہوان چھوڑو‘ دن منایا گیا، اس سے بھی یہ ظاہر ہے کہ بھارت کی جنتا چھلی جنتا کو پیار کرتی ہے اور اس کی مدد کرتی ہے۔“

”میری بڑی اچھا ہے“ ہو چین شونے چائے کے خالی پیالے میں چائے ڈالتے ہوئے کہا کہ۔ ”بھارت کی مہیلاؤں سے ملوں اور اُن سے بھارت کی استریوں کے بارے میں جانکاری حاصل کروں۔ بھوشیہ میں شاید بھارت جانے اور بھارت کی مہیلاؤں سے ملنے کا موقع ملے۔“ جس طرح پیار سے وہ باتیں کر رہی تھی، جس سنبھ سے کبھی ہاتھ میں ہاتھ لیکر، کبھی گلے میں ہاتھ ڈالکر وہ مجھے سب کچھ بتا رہی تھی اُس سے اُس تھوڑے سے سمنے میں ہی مجھے لگنے لگا کہ میں کسی اجنبی سے نہیں اپنی کسی پردیخت سہیلی سے بات کر رہی ہوں۔ مجھے وشواس ہو گیا کہ وہ گہبیر ہوتے ہوئے بھی خوشدل ہے، وچار شیل ہوتے ہوئے بھی ملنسار ہے۔

آجکل ہو چین شونے کا کاربہ چھتر کانی ہوا ہے۔ وہ کئی سلسٹھاؤں کی ممبر ہے۔ اس سمنے وہ ’کل چین مزدور نیدریشن‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی ممبر ہے، چین کے ’لوک سنگ‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی بھی ممبر ہے، اور ’کل چین مہیلا نیدریشن‘ کی کینڈریہ کمیٹی کی ممبر ہے۔ ہو چین شو کو جنتا اور سرکار کی طرف سے بہت سمان ملا۔ 1951 اکتوبر دیوس کے بعد سے وہ چینی جنتا کی ’صلاح مشورہ کمیٹی‘ کی ممبر بنا دی گئی۔ 1952 میں اُسے چینی ’ٹریڈ یونین‘ کے پرنیڈھی کے روپ میں سوربیت روس بھیجا گیا۔

ہر مئی دیوس اور اکتوبر دیوس پر وہ منچ پر جاکر جنتا کے سامنے بولنے لگی۔ 1954 میں وہ چین کی لوک پرنیڈھی سبھا (چینی پارلیمنٹ) کی ممبر چنی گئی۔

جب میں نے ہو چٹنی شو سے کہا کہ اپنے چٹنی کی کوئی سب سے بڑی گھٹنا بتائے تو اس کی آنکھیں چمکے لگیں اور وہ بولی—”ہیں تو ہر دن ایک گھٹنا رہا ہے، پر چٹنی میں ماؤ سے ملاقات ہونا میرے چٹنی کی سب سے بڑی گھٹنا ہے۔ ستمبر ۱ مہینہ تھا۔ میرے کارخانے میں نئے طریقے سے کام شروع کر دیا گیا تھا۔ ایک دن ہمارے کارخانے کے ادھیکاری نے اگر ایک ہار ہوئے۔ مجھ سے کہا کہ:—”یہ چٹنی میں ماؤ کی چٹنی ہے“ میں پیننگ ہلا رہی تھی، میں خوشی اور آسچرہ سے اواک رہ گئی۔ کچھ کہہ نہ سکی۔ اس پس کے میرے ساتھی بڑے خوش ہوئے، مجھے گھبراہٹ اور کہہ لے کہ ”ہم سب کی طرف سے چٹنی میں ماؤ سے کہتے کہ ہم لوگ ضرور دیہی کی پیداوار دھاریتے۔“

اس نے کہا:—”پھر میں گھر واپس آئی، ماما پتا کو بتایا، ماما خوشی کے مارے رونے لگی۔ پتا نے پوچھا چٹنی میں ماؤ کے لئے کیا ہیئت لپکاؤ گی؟“ میں نے کہا—”میں میں جو باتیں ہیں وہی اُن سے کہوں گی، وہی میری اُن کے لئے ہیئت ہو گی، دوسرے ہی دن میں پیننگ کے لئے روانہ ہو گئی۔ اسے میں سوچتی جاتی تھی کہ چٹنی میں ماؤ سے کسی طرح اتنا چیت کرنا چاہئے۔“

اس نے کہا:—”پھر میں گھر واپس آئی، ماما پتا کو بتایا، ماما خوشی کے مارے رونے لگی۔ پتا نے پوچھا چٹنی میں ماؤ کے لئے کیا ہیئت لپکاؤ گی؟“ میں نے کہا—”میں میں جو باتیں ہیں وہی اُن سے کہوں گی، وہی میری اُن کے لئے ہیئت ہو گی، دوسرے ہی دن میں پیننگ کے لئے روانہ ہو گئی۔ اسے میں سوچتی جاتی تھی کہ چٹنی میں ماؤ سے کسی طرح اتنا چیت کرنا چاہئے۔“

اس نے کہا:—”پھر میں گھر واپس آئی، ماما پتا کو بتایا، ماما خوشی کے مارے رونے لگی۔ پتا نے پوچھا چٹنی میں ماؤ کے لئے کیا ہیئت لپکاؤ گی؟“ میں نے کہا—”میں میں جو باتیں ہیں وہی اُن سے کہوں گی، وہی میری اُن کے لئے ہیئت ہو گی، دوسرے ہی دن میں پیننگ کے لئے روانہ ہو گئی۔ اسے میں سوچتی جاتی تھی کہ چٹنی میں ماؤ سے کسی طرح اتنا چیت کرنا چاہئے۔“

”وہ دن میں بھلا نہیں سکتی“ ہو چٹنی شو کہتی رہی—”اس دن کا دُشہ ہمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے۔ میں خوشی سے کانپ رہی تھی اور وشواس نہیں ہو رہا تھا کہ چٹنی کی دیکھی اور پڑت جنتا کو خوشحالی کا جیون دینے والے ماؤ سے۔ تنگ مجھ سے بات کر رہے ہیں۔ انہوں نے مجھ سے جو کہا اس کا ایک ایک شہد مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک قیمتی سبق ہے۔“

”وہ دن میں بھلا نہیں سکتی“ ہو چٹنی شو کہتی رہی—”اس دن کا دُشہ ہمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے۔ میں خوشی سے کانپ رہی تھی اور وشواس نہیں ہو رہا تھا کہ چٹنی کی دیکھی اور پڑت جنتا کو خوشحالی کا جیون دینے والے ماؤ سے۔ تنگ مجھ سے بات کر رہے ہیں۔ انہوں نے مجھ سے جو کہا اس کا ایک ایک شہد مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک قیمتی سبق ہے۔“

”وہ دن میں بھلا نہیں سکتی“ ہو چٹنی شو کہتی رہی—”اس دن کا دُشہ ہمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے۔ میں خوشی سے کانپ رہی تھی اور وشواس نہیں ہو رہا تھا کہ چٹنی کی دیکھی اور پڑت جنتا کو خوشحالی کا جیون دینے والے ماؤ سے۔ تنگ مجھ سے بات کر رہے ہیں۔ انہوں نے مجھ سے جو کہا اس کا ایک ایک شہد مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک قیمتی سبق ہے۔“

”وہ دن میں بھلا نہیں سکتی“ ہو چٹنی شو کہتی رہی—”اس دن کا دُشہ ہمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے۔ میں خوشی سے کانپ رہی تھی اور وشواس نہیں ہو رہا تھا کہ چٹنی کی دیکھی اور پڑت جنتا کو خوشحالی کا جیون دینے والے ماؤ سے۔ تنگ مجھ سے بات کر رہے ہیں۔ انہوں نے مجھ سے جو کہا اس کا ایک ایک شہد مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک قیمتی سبق ہے۔“

”وہ دن میں بھلا نہیں سکتی“ ہو چٹنی شو کہتی رہی—”اس دن کا دُشہ ہمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے۔ میں خوشی سے کانپ رہی تھی اور وشواس نہیں ہو رہا تھا کہ چٹنی کی دیکھی اور پڑت جنتا کو خوشحالی کا جیون دینے والے ماؤ سے۔ تنگ مجھ سے بات کر رہے ہیں۔ انہوں نے مجھ سے جو کہا اس کا ایک ایک شہد مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک قیمتی سبق ہے۔“

”وہ دن میں بھلا نہیں سکتی“ ہو چٹنی شو کہتی رہی—”اس دن کا دُشہ ہمیشہ آنکھوں کے آگے ناچا کرتا ہے۔ میں خوشی سے کانپ رہی تھی اور وشواس نہیں ہو رہا تھا کہ چٹنی کی دیکھی اور پڑت جنتا کو خوشحالی کا جیون دینے والے ماؤ سے۔ تنگ مجھ سے بات کر رہے ہیں۔ انہوں نے مجھ سے جو کہا اس کا ایک ایک شہد مجھے یاد ہے اور وہ میرے لئے ایک قیمتی سبق ہے۔“

ہو چن شو پہلے سے پڑی تھی، پر کارخانے کے ٹوٹی کے کھانے میں ہمیشہ جاتی تھی اور وہاں پڑھتی تھی۔ اپنے کام کے بارے میں اور اپنے انہوئوں کے بارے میں اس نے کئی لکھ لکھ ہیں۔ اب تک اس کی یہ چار پستکیں بھی نکل چکی ہیں:—

1. "پیکنگ کی ڈायری."
2. "سویات روس کی ڈायری."
3. "خوشحالی کا راستہ."
4. "ہو چن شو کا نیا طریقہ."

جب ہو چن شو نے یہ کتاوبے لکھیں تب اسے لکھنے میں بڑی کٹینائی ہوتی تھی۔ کیونکہ وہ بہت کم چینی انٹر جاتی تھی۔ "پیکنگ کی ڈायری" تو وہ صرف بولتی تھی اور دوسرے لکھتے تھے۔ سوویت روس کی ڈायری" اس نے خود لکھی۔ کتاب لکھنے کے لئے اس نے اپنی سیدھا کے لئے ڈایری میں کچھ نشان دہا لئے تھے۔ ان نشانوں اور کچھ اکشروں کی مدد سے وہ لکھتی رہی۔ کئی بار ایسا بھی ہوا کہ نشان ہٹا کر بھول گئی اور اپنا لکھا علما پڑھ جاتی تھی۔ مگر بعد میں اس نے بڑی جلدی ترقی کی اور اب وہ اچھی طرح لکھ پڑھ سکتی ہے۔

اپنی پستکیں اس نے مجھے بھیج دی ہیں۔ ان پستکیں کے دیکھتے ہی ہو چن شو کی یاد تازہ ہو جاتی ہے۔ اپنے انہوئوں کا لکھا ہو چن شو کا ایک خاص شوق ہے۔ اس کے علاوہ اسے کھیل کود میں بھی بڑی دلچسپی ہے۔ بالکھٹ بال، والی بال، آدی خوب کھلتی ہے۔ سواستہ کے لئے روز کسرت کرتی ہے۔ اس کے علاوہ پڑھنا، سنہما، نائک آدی دیکھنا بھی اسے بہت پسند ہے۔ لیکن سرہم ہو چن شو کے شبدوں میں—"سب سے زیادہ تو مجھے اپنا سوت کا کلم اور ادھرین پسند ہے۔" چن کے سنہما اور نائکوں میں کسی طرح کی بھی اٹھلتا نہیں ہوتی۔

بات کرتے کرتے چینی دواہ قانون کی بات ہونے لگی۔ وہ بولی:—"نہ چین کا ویاہ کانون تھوڈے سے شادوں میں چینی مہیلاؤں کے अधिकारों کا کانون ہے۔ یہ قانون ہماری راج تھک، ساماجک اور آرتھک آزادی کی گارنٹی کرتا ہے" یہ کہتے کہتے وہ زور سے کھکھک کر ہنس پڑی۔ ہو چن شو ابھی اربواہت ہے۔

ایک ایک کھڑی پر نظر گئی۔ 6 بج رہا تھا، اس لئے میں اس سے پھر کبھی ملنے کا وعدہ کر کے اٹھ کھڑی ہوئی۔ اور گھر لوٹ آئی۔

12 فروری کی شام تھی جب میں ہو چن شو سے ملی تھی۔ اس بھولے مسکراتے چہرے اور مڑا سا طبیعت نے ہمیشہ کے لئے اپنی چھاپ مہرے دل پر انکس کر دی ہے۔

1. پیکنگ کی ڈایری۔"
2. سوویت روس کی ڈایری۔"
3. خوشحالی کا راستہ۔"
4. ہو چن شو کا نیا طریقہ۔"

بات کرتے کرتے چینی دواہ قانون کی بات ہونے لگی۔ وہ بولی:—"نہ چین کا ویاہ کانون تھوڈے سے شادوں میں چینی مہیلاؤں کے अधिकारों کا کانون ہے۔ یہ قانون ہماری راج تھک، ساماجک اور آرتھک آزادی کی گارنٹی کرتا ہے" یہ کہتے کہتے وہ زور سے کھکھک کر ہنس پڑی۔ ہو چن شو ابھی اربواہت ہے۔

بات کرتے کرتے چینی دواہ قانون کی بات ہونے لگی۔ وہ بولی:—"نہ چین کا ویاہ کانون تھوڈے سے شادوں میں چینی مہیلاؤں کے अधिकारों کا کانون ہے۔ یہ قانون ہماری راج تھک، ساماجک اور آرتھک آزادی کی گارنٹی کرتا ہے" یہ کہتے کہتے وہ زور سے کھکھک کر ہنس پڑی۔ ہو چن شو ابھی اربواہت ہے۔

بات کرتے کرتے چینی دواہ قانون کی بات ہونے لگی۔ وہ بولی:—"نہ چین کا ویاہ کانون تھوڈے سے شادوں میں چینی مہیلاؤں کے अधिकारों کا کانون ہے۔ یہ قانون ہماری راج تھک، ساماجک اور آرتھک آزادی کی گارنٹی کرتا ہے" یہ کہتے کہتے وہ زور سے کھکھک کر ہنس پڑی۔ ہو چن شو ابھی اربواہت ہے۔

12 فروری کی شام تھی جب میں ہو چن شو سے ملی تھی۔ اس بھولے مسکراتے چہرے اور مڑا سا طبیعت نے ہمیشہ کے لئے اپنی چھاپ مہرے دل پر انکس کر دی ہے۔

حال ہی میں چین کے ہمارے ایک سینما دکھا۔ کس نام کا 'ساٹ کروڈ جناتا کا پران'۔ اس میں چینی کی نمائندگی سما (پارلیمنٹ) میں نئے قانون پر بحث کی گئی تھی۔ دوسرے بڑے بڑے نمائندوں کے ساتھ ہم نے ایک نوجوان لڑکی کو بھی ملج پر سے بٹھائ دیا۔ وہ سنا "ہو چن شو" میرے پاس بیٹھ کر ایک مگر نے کہا، اور مجھے اس دن کی گھٹنا یاد آگئی جب جتنا رشو دیا گیا میں نے اس سے ملاقات کی تھی۔ ایک آدرہ چینی مزدور ہونے کے ناطے وہ مزدور پر تنہی کے روپ میں پارلیمنٹ کی ممبر چن لی گئی۔ اس سلسلے میں اس کی عمر کچھ اسی سال کی ہے۔

حال ہی میں چین کے ہمارے ایک سینما دکھا۔ نام تھا "ساٹ کروڈ جناتا کا پران"۔ اس میں چینی کی نمائندگی سما (پارلیمنٹ) میں نئے قانون پر بحث ہوتی ہوئی دکھائی گئی تھی۔ دوسرے بڑے بڑے نمائندوں کے ساتھ ہم نے ایک نوجوان لڑکی کو بھی ملج پر سے بٹھائ دیا۔ وہ سنا "ہو چن شو" میرے پاس بیٹھ کر ایک مگر نے کہا، اور مجھے اس دن کی گھٹنا یاد آگئی جب جتنا رشو دیا گیا میں نے اس سے ملاقات کی تھی۔ ایک آدرہ چینی مزدور ہونے کے ناطے وہ مزدور پر تنہی کے روپ میں پارلیمنٹ کی ممبر چن لی گئی۔ اس سلسلے میں اس کی عمر کچھ اسی سال کی ہے۔

ہو چن شو کے چھوٹے سے بچپن سے پتا چلتا ہے کہ نئے چین میں ایک غریب سے غریب گھر میں پیدا ہوئی گئی تھی۔ جو دیکھ کے آزاد ہونے سے پہلے کچھ خاتونوں میں سے جلتے ہوئے کوئلے جلتی پھرتی تھا، موقع ملنے پر کس طرح اپنی سوج سے کارخانے کے اندر پیداوار کو بڑھا سکتی ہے، کم پڑھ سکتی ہے اور تھوڑے ہی دنوں میں اس چھوٹی سی عمر میں چین کی پارلیمنٹ کی ممبر بن سکتی ہے۔ میں اُدھر لکھ چکی ہوں کہ اس کا چہرہ اب بھی ویسا ہی سیدھا، سرل، اور محنتی ہے اور لاکھوں چینی لڑکیوں کی طرح بھارت سے آئے شیش پریم ہے۔

700 PAGES,
32 ILLUSTRATIONS
2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE

Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known

—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happening in New China can do no better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter...brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi

کتابیں



کتابیں

1. میر راجاؤں کے بادشاہ

2. اکبر الہ آبادی

دونوں کتابیں الہ آباد لا جنرل پریس کی छपी हुई हैं. दोनों के सम्पादक हैं डाक्टर सैयद येजाज हुसेन. दोनों की कीमत ढाई-ढाई रुपया है. पहली में 287 सफे हैं और दूसरी में हैं 160.

मिर तकी मिर, जैसा कि किताब के नाम से जाहिर होता है, राजाओं के बादशाह थे. उनका जमाना वह जमाना था जब उत्तर भारत के लोगों ने न अलग अलग कलचर की खाइयाँ खोदी थीं और न हिन्दी उर्दू की दीवारें खड़ी की थीं. मिर की जमान बड़ी सहूल, आसानी से समझ में आने वाली मगर साथ ही साथ क्वालों की गहराई लिये हुए है. संग्रह के शुरू में 45 सफों में मिर की खिन्दीगी और शायरी का परिचय दिया गया है. संग्रह में मिर की दीवानों में से चुनी हुई राजाओं संकलित की गई हैं. कुछ मसनवियाँ भी दी गई हैं और कुछ रवाइयाँ भी.

मिर तकी सन् 1724 ई० में पैदा हुए थे और कहा जाता है कि सन् 1810 ई० में मरे. यह वह जमाना था जब मुराल बादशाहत खतम हो रही थी और अंग्रेजी राज का सितारा उभर रहा था. उस बदलते हुए जमाने और बदलती हुई दुनिया का मिर पर असर पड़ना लाजमी था. सारा देश फ्रडस की सी हालतों से गुजर रहा था. एक गाँव का जिक्र करते हुए मिर लिखते हैं—

चार छप्पर कहीं चमारों के सो भी टूटे गिरे बिचारों के
दूदी फूटी कोई हवेली है सो भी मैदान में अकेली है
एक-दो मुँह से पके हैं बाँ जब हो-हो गए हैं लबे-जाँ
लोग ऐसे मकान सब ऐसे ऐसी जगह न उचटे दिल कैसे
और जो चार घर नजर आए उनकी खूबी खुले वहीं जाए
इ भी कोली चमार थे कोई फाकों से जोरबार थे कोई
सुरतें काली काली रुखे से सारे कंगाल और भूके से

मिर दिल्ली, मथुरा, भरतपुर, इलाहाबाद और लखनऊ हर जगह गये मगर लखनऊ में ही उन्होंने दम तोड़ा. जब तक जेबे आत्म सम्मान लेकर जिये. कभी किसी के आगे न झुकना और न सम्मान कम किया. उनके शिष्यों में इन्द् मुसलमान सभी थे. अपने मजहबी उसूलों के बारे में खूद लिखते हैं—

1. मिर रजलों के बादशाह

2. अकबर अल्ले आदमी

दोनوں کتابیں الہ آباد لا جنرل پریس کی छपी ہوئی ہیں. دونوں کے سپادک ہیں ڈاکٹر سید اعجاز حسین. دونوں کی قیمت تھائی تھائی روپیہ ہے. پہلی میں 287 صفحے ہیں اور دوسری میں ہیں 160.

میر تقی میر، جیسا کہ کتاب کے نام سے ظاہر ہوتا ہے، رزلوں کے بادشاہ تھے. ان کا زمانہ وہ زمانہ تھا جب اتر بھارت کے لوگوں نے نہ الگ الگ کلچروں کی کہانیاں کہودی تھیں اور نہ ہندی اردو کی دیواریں کھڑی کی تھیں. میر کی زبان بڑی سہل، آسانی سے سمجھ میں آنے والی مگر ساتھ ہی ساتھ خیالوں کی گہرائی لہئے ہوئے ہے. سنگرہ کے شروع میں 45 صفحوں میں میر کی زندگی اور شاعری کا پریچے دیا گیا ہے. سنگرہ میں میر کے دیوانوں سے چلی ہوئی رزلوں سنگت کی گئی ہیں. کچھ مثلیاں بھی دی گئیں ہیں اور کچھ رباعیاں ہیں.

میر تقی سن 1724ع میں پیدا ہوئے تھے اور کہا جاتا ہے سن 1810ع میں مرے. یہ وہ زمانہ تھا جب مغل بادشاہت ختم ہو رہی تھی اور انگریزی راج کا ستارہ اُبھر رہا تھا. اُس بدلتے ہوئے زمانے اور بدلتی ہوئی دنیا کا میر پر اثر پڑنا لازمی تھا. سارا دیس قحط کی سی حالتوں سے گذر رہا تھا. ایک گلوں کا ذکر کرتے ہوئے میر لکھتے ہیں.

چار چہر کہیں چاروں کے سو بھی توئے گرے بچاروں کے
ٹوٹی پھوٹی کوئی حویلی ہے سو بھی میدان میں اکیلی ہے
ایکدو مردے سے پڑے ہیں واں جب ہو گئے ہیں وہ اب جاں
لوگ ایسے مکان سب ایسے ایسی جگہ نہ آجئے دل کہسے
اور جو چار گھر نظر آئے ان کی خوبی کھلے وہیں جائے
وہ بھی کوئی چمار تھے کوئی قاتلوں سے زوربار تھے کوئی
مورتیں کالی کالی روکھے سے سارے کنگال اور بھوکے سے

میر دلی، مٹھرا، پرتھور، الہ آباد اور لکھنؤ ہر جگہ گئے، مگر لکھنؤ میں ہی انھوں نے دم توڑا. جب تک جہنم آتم سلمان لیکن جیتے. کبھی کسی کے آگے نہ سر جھکایا اور نہ سلمان کم کیا. ان کے شہسوں میں ہندو مسلمان سبھی تھے. اپنے مذہبی اصولوں کے بارے میں وہ خود لکھتے ہیں—

میر کے دینے مگر کب کو کیا پڑھتے ہو جن نے تو—
کراہ کر آئی، دیر میں بیٹا کب کا ترکہ اسلام کیا
خود اپنے شہر کے مٹا لیا میر ساہب فرماتے ہیں—

پڑھتے پڑھتے گلیوں میں ان رختوں کو لوگ
مٹاتے رہے گی یاد یہ باتیں ہماری

میر کا کہنا جب تک ہندوستان کے لوگوں میں کبھی کا
تک چاہ رہے گی میر کی ہمیشہ قدر کی جائے گی۔

انمول غزلوں، مثالیوں اور رباعیوں سے یہ سنگرہ ہوا پڑا
مشکل شہدوں کے جگہ جگہ آسان محلہ بھی دیکھ رہا ہے۔

دوسرا سنگرہ مشہور شاعر اکبر الہ آبادی کی کہتاؤں کا ہے۔
برہمنیہ رس کے شاعر تھے۔ ان کا ہنسہ رس اس قدر اچھا
تا تھا کہ آج تک اس سے پڑھیا اور پڑھنے والے کوئی دوسرا
عزاد نہیں کر پا یا۔ سنگرہ کے شروع میں شاعر کی ایک چھوٹی
چھوٹی دی گئی ہے اور 45 صفحہ کی ایک بڑھکا ہے جس
میں اکبر اور ان کی شاعری اور اردو شاعری میں وینگ اور
سہ کے اوپر روشنی ڈالی گئی ہے۔ موجودہ سنگرہ میں اکبر
چلی ہوئی شاعری دی ہوئی ہے۔ ان میں چھوٹے چھوٹے اور
نظمیں دونوں شامل ہیں۔ ایک ملی جلی ہندوستانی
چتر اکبر کے من کو بھائی نہیں اور آخری وقت تک وہ اس
صدا بلند کرتے رہے۔ دے لکھتے ہیں—

یہ بولے رو کے پیر اور گویا
دھرم دنیا سے اٹھا اور گیا
ہندو مسلم ایک ہیں دونوں
یعنی یہ دونوں ایشیائی ہیں
ہم وطن ہم زبان و ہم قسمت
کہیں نہ کہیں کہ بھائی بھائی ہیں

ایک دوسری جگہ —

ینایات مکرر پے فرماتے ہیں شہنشاہ ہرمان دونوں
مؤافق اپنے اپنے باتے ہیں میرا چلن دونوں
ترانے میرے ہم آہنگ دیر و کعبہ ہیں یکساں
زبان پر میری موزوں ہوتی ہے حمد و بھجن دونوں

ہندی دنیا کی یہ ایک عمدہ کوشش ہے کہ اردو شاعروں
چیزیں دیوناگری حروف میں چھپیں تاکہ ہندی پڑھنے والے اردو
شاعری کی لذت و متہاس کا سوا لے سکیں۔ یہ دونوں کتابیں اسی
شہنشاہ کا نتیجہ ہیں۔ ڈاکٹر اعجاز حسین خود اردو کے ایک
چھ شاعر ہیں اور پرہیزگار و شہداء میں اردو کے پروفیسر ہیں۔
یہ یوگیت سہانہ کی نگرانی میں یہ سنگرہ پرکاشت کئے
گئے ہیں۔ ہم اس پرہیزگار کا سواکت کرتے ہیں۔

ہماری آزادی

سچا اور شکتی نہیں، सेवा اور त्याग

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी ने आजादी हासिल होने के बाद, अपने एक प्रार्थना प्रवचन में कहा था—“राजनैतिक आजादी किसी भी मुल्क की आजादी का एक अंग है. हिन्दुस्तान ने वह हासिल कर ली. अंगरेज यहाँ से चले गये. मगर अभी तो हमारी मंजिल शुरू हुई है. हमें तो अभी सामाजिक आजादी और आर्थिक आजादी और हासिल करनी हैं. ये तीनों आजादी मिलने पर ही देश पूरी तरक्की कर सकेगा. जब तक ये दोनों आजादी हमें और न मिलें हमें आराम से नहीं बैठना है, हमें दूने जोरा और मेहनत से काम करना है.”

गान्धी जी चाहते थे कि कांग्रेस ही इन दोनों आजादियों को हासिल करने का जरिया बने. वह काम कैसे हो जब तक उसका विधान न बदले. गान्धी जी ने ही सन् 1920 और 1934 में जरूरत के मुताबिक कांग्रेस के विधान में तब्दीलियाँ की थीं ताकि कांग्रेस एक संघर्ष करने वाली, क्रान्तिकारी जमात की हैसियत से देश को आजादी दिलाने का जरिया बन सके और वह काम उसने बखूबी अन्जाम दिया. सन् 1920 से पहले कांग्रेस देश में चाँदी के पड़े लिखे लोगों, बड़े बड़े बकीलों, बैरिस्टर्स और रईसों की जमात थी. सन् 1920 के बाद वह निचले मध्यम वर्ग के लोगों के हाथ में आई जिनमें बहुत बड़ी तादाद शहरियों की थी. 1925 में रचनात्मक कामों को, ग्रामसेवा को, ग्रामोद्योगों को कांग्रेस के काम का जुड़ा बनाया गया और इस तरह गान्धी जी ने कांग्रेस को ठेठ मुल्क की जड़ों तक, यानी गाँवों तक पहुँचाने की कोशिश की. 1934 के विधान के जरिये उन्होंने उस कोशिश को और गहराई तक पहुँचाने की प्रज्वीक की. स्वराज्य हासिल होने के बाद वे चाहते थे कांग्रेस का ढाँचा बदल कर ऐसा कर दिया जाय कि वह नारा लगाने वालों, जुलूस निकालने वालों, तक्रारें करने वालों के बजाय निस्पृह, त्यागी, सामाजिक और आर्थिक आजादी की मिसाल खुद अपने निजी जीवन में उतारने वाले

सना اور شکتی نہیں، سیوا اور تباک

راشد پتا مہاتما گاندھی نے آزادی حاصل ہونے کے بعد اپنے ایک پرارتنہ پرچن میں کہا تھا—”راج نہیک آزادی کسی ملک کی آزادی کا ایک انگ ہے. هندستان نے وہ حاصل لی. انگریز یہاں سے چلے گئے. مگر ابھی تو ہماری منزل روع ہوئی ہے. ہمیں تو ابھی سماجک آزادی اور آرتھک دی اور حاصل کرنی ہیں. یہ تینوں آزادی ملنے پر ہی دیں ری توفی کر سکیگا. جب تک یہ دونوں آزادی ہمیں اور نہ ہیں ہمیں آرام سے نہیں بیٹھنا ہے، ہمیں دوئے جوش اور حنت سے کام کرنا ہے.”

گاندھی جی چاہتے تھے کہ کانگریس ہی ان دونوں آزادیوں حاصل کرنے کا ذریعہ بنے. وہ کام کیسے ہو جب تک اس کا ہان نہ بدلا. گاندھی جی نے ہی سن 1920 اور 1925 میں ضرورت کے مطابق کانگریس کے ودھان میں تبدیلیاں تھیں تاکہ کانگریس ایک سنگموش کرنے والی، کرانتیکاری ماعت کی حیثیت سے دیں کو آزادی دلانے کا ذریعہ بن سکے. وہ کام اس نے بخوبی انجام دیا. سن 1920 سے پہلے کانگریس دیں میں چوٹی کے بڑے لکے اوگوں، بڑے بڑے وکیلوں، رستروں اور رئیسوں کی جماعت تھی. سن 1920 کے بعد وہ چلے مدھیم ورگ کے لوگوں کے ہاتھ میں آئی جن میں بہت ب تعداد شہریوں کی تھی. 1925 میں رجٹانک کاموں، گرام سیوا کو، گراموادیوگوں کو کانگریس کے کام کا جز بنایا گیا. اس طرح گاندھی جی نے کانگریس کو ٹھیک ملک کی جزوں سے، یعنی گلوں تک پہونچانے کی کوشش کی. 1934 کے ہان کے ذریعہ انہوں نے اس کوشش کو اور گہرائی تک رنچانے کی تجویز کی. سواراجہ حاصل ہونے کے بعد وہ اتم تھے کانگریس کا تھانچہ بدل کر ایسا کر دیا جائے وہ نمرہ لگائے والوں، جلوس نکالنے والوں، تقریریں لے والوں کے بجائے نرسپرہ، تباکی، سماجک اور آرتھک دی کی مثال خود اپنے نجی جیون میں اُتارنے والے

रोग का वह सही निदान नहीं था इसलिये हर इलाज कांग्रेस को सेहत देने में नाकाफी साबित हुआ. जनता के

دردگ کا وہ صحیح ندان نہیں تھا اس لئے ہر علیج کانگریس
کو صحت دینے میں ناکافی ثابت ہوا۔ چلتا ہے

विश्व में यह बात बैठती सी जा रही है कि कांग्रेस रास्ता भटक गई है. आई. सी. एस. अफसरों, आंकड़ा-शास्त्रियों, सेक्रेटेरियट की फाइलों, प्राइवेट सेक्रेटरियों और पर्सनल असिस्टेंटों की कृतारों, सुनहली बर्दी पेटी से लैस चपरासियों, अपटुडेट ही लक्स मांटरो, एअर कंडीशन्ड हवेलियों ने मिलकर उसके नेताओं के दृष्टिपथ पर एक धुन्ध सा, एक कोहरा सा फैला रखा है. कांग्रेस की नेताशाही त्याग के युग के बाद भोग के युग से गुजर रही है. जब दुर्वासा ही मेनका पर रीझ गये तब कलियुगी त्यागियों की भला क्या बिसात ! मगर दुर्वासा और मेनका के संयोग से पैदा हुई थी शकुन्तला, किन्तु मंत्रियों और अफसरशाही के संयोग से अनेकानेक जारज सन्तानें—कंट्रोल, ब्लैक-मार्केट, करप्शन, रिश्वतखोरी, सिफारिश आदि पैदा हुईं, सेक्रेटेरियट के पालनों में ये भूलीं और देश की पूँजीशाही ने इन्हें स्तनपान कराया. जनता ने स्वयं अपने साहस के बल इन पूतनाओं और ताड़काओं का बध करने की कोशिश की, मगर वह भी कुछ थकी हुई सी बेबस नजर आती है.

हिर फिर कर उसकी नजरें जवाहरलाल की तरफ जाती हैं. मगर अकेले जवाहरलाल क्या करें ? आखिर वह इनसान हैं और उन्होंने सब कुछ सीखा मगर अपने गुरु से वह कला नहीं सीखी कि मिट्टी के पुतलों में कैसे जान डाली जानो है ? पतित से पतित इनसान को नैतिकता की सीढ़ी से कैसे ऊँचा उठाया जा सकता है ?

जवाहरलाल भी हैरान और परेशान हैं. जनता अपने लाभ की योजनाओं में खुद कोई दिलचस्पी नहीं लेती—पेसी उन्हें शिकायत है. कभी कभी तो यह शिकायत उनकी तकरीरों से बरबस फूट पड़ती है. मगर जिस योजना के बनाने में जनता की राय और मशविरा न लिया गया हो उस योजना के लिये जनता में उत्साह की लहर कैसे दौड़ सकती है ? जनता का उत्साह और सहयोग हासिल करने का रामबाण नुस्खा गान्धी जी ने बताया था. उन्होंने कहा था—“जनता की सेवा के लिये सबसे पहले हमें सकेदपोशी की अकड़ छोड़ना होगा. हमें समाज की सबसे नीची सीढ़ी पर जाकर बैठना होगा जहाँ गरीब भंगी बैठा है. जब हम अपने को उतना नम्र बना लेंगे तब हम जनता के कृपापात्र बन सकेंगे. तब जनता अपना दिल खोल कर हमारे आगे रखेगी. जब वह देखेगी कि हम उसी के विचारों को अपनी बानी में बोलते हैं तब हम उसके सच्चं प्रतिनिधि बनेंगे.” एक दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा था—“सत्ता और संगठन को बश में करने की चिन्ता न करो, जनता को बश में करो. अगर जनता बश में हो जायगी तो सत्ता और संगठन आपके हुये तुम्हारे पीछे फिरेंगे.”

आज देश की मुसीबतों का मूल इसमें है कि शासक

दिल में ये बात बैठती सी जा रही है कि कांग्रेस रास्ता भटक गई है. आई. सी. एस. अफसरों, आंकड़ा-शास्त्रियों, सेक्रेटेरियट की फाइलों, प्राइवेट सेक्रेटरियों और पर्सनल असिस्टेंटों की कृतारों, सुनहली बर्दी पेटी से लैस चपरासियों, अपटुडेट ही लक्स मांटरो, एअर कंडीशन्ड हवेलियों ने मिलकर उसके नेताओं के दृष्टिपथ पर एक धुन्ध सा, एक कोहरा सा फैला रखा है. कांग्रेस की नेताशाही त्याग के युग के बाद भोग के युग से गुजर रही है. जब दुर्वासा ही मेनका पर रीझ गये तब कलियुगी त्यागियों की भला क्या बिसात ! मगर दुर्वासा और मेनका के संयोग से पैदा हुई थी शकुन्तला, किन्तु मंत्रियों और अफसरशाही के संयोग से अनेकानेक जारज सन्तानें—कंट्रोल, ब्लैक-मार्केट, करप्शन, रिश्वतखोरी, सिफारिश आदि पैदा हुईं, सेक्रेटेरियट के पालनों में ये भूलीं और देश की पूँजीशाही ने इन्हें स्तनपान कराया. जनता ने स्वयं अपने साहस के बल इन पूतनाओं और ताड़काओं का बध करने की कोशिश की, मगर वह भी कुछ थकी हुई सी बेबस नजर आती है.

हर पहर कर उस की نظरों जवाहर लाल की तरफ जाती हैं. मगर अकेले जवाहर लाल क्या करें ? आखिर वह इनसान हैं और उन्होंने सब कुछ सीखा मगर अपने गुरु से वह कला नहीं सीखी कि मिट्टी के पुतलों में कैसे जान डाली जानो है ? पतित से पतित इनसान को नैतिकता की सीढ़ी से कैसे ऊँचा उठाया जा सकता है ?

जवाहर लाल भी हैरान और परेशान हैं. जनता अपने लाभ की योजनाओं में खुद कोई दिलचस्पी नहीं लेती—पेसी उन्हें शिकायत है. कभी कभी तो यह शिकायत उनकी तकरीरों से बरबस फूट पड़ती है. मगर जिस योजना के बनाने में जनता की राय और मशविरा न लिया गया हो उस योजना के लिये जनता में उत्साह की लहर कैसे दौड़ सकती है ? जनता का उत्साह और सहयोग हासिल करने का रामबाण नुस्खा गान्धी जी ने बताया था. उन्होंने कहा था—“जनता की सेवा के लिये सबसे पहले हमें सकेदपोशी की अकड़ छोड़ना होगा. हमें समाज की सबसे नीची सीढ़ी पर जाकर बैठना होगा जहाँ गरीब भंगी बैठा है. जब हम अपने को उतना नम्र बना लेंगे तब हम जनता के कृपापात्र बन सकेंगे. तब जनता अपना दिल खोल कर हमारे आगे रखेगी. जब वह देखेगी कि हम उसी के विचारों को अपनी बानी में बोलते हैं तब हम उसके सच्चं प्रतिनिधि बनेंगे.” एक दूसरे अवसर पर उन्होंने कहा था—“सत्ता और संगठन को बश में करने की चिन्ता न करो, जनता को बश में करो. अगर जनता बश में हो जायगी तो सत्ता और संगठन आपके हुये तुम्हारे पीछे फिरेंगे.”

आज देश की मुसीबतों का मूल इसमें है कि शासक

سچا اور شکتی پر ریکے ہوئے ہیں۔ لیکن اور سچا کی भावना उनके हृदय से निकल गई है। काँग्रेस का संगठन आज काँग्रेस के पालियामेन्टरी जुझ का अर-खरीद गुलाम है। उसमें नया खून बनना बन्द हो गया है। पुराने नेता अपने निजी स्वार्थों के लिये एम. एल. ए. की कतारों से लेकर मंत्रियों तक मोर्चाबन्दी किये हुये हैं। बनी लोग जिन्होंने चोर बाजारी में पैसा पैदा किया है अपनी बैलियों के जोर पर काँग्रेस में प्रवेश पा रहे हैं। पुराने निस्पृह सेवक संस्था से गिराव-बाजियों के जरिये निकाले जा रहे हैं। धनहीन काँग्रेस कर्मियों के लिये आज सेवा के सब दरवाजे बन्द हैं।

इस कशमकश में जनता की सेवा करने का समय और कुरसत किसे ? भंडे, नारे, जुलूस, दिवस, मेम्बरी, चुनाव, पार्टी, एट-होम, मानपत्र, थेली—इन्हीं के इर्द गिर्द काँग्रेस संगठन का चक्र तेजी से घूम रहा है, मगर न संगठन आगे बढ़ता है, न जनता आगे बढ़ती है और न देश आगे बढ़ता है।

हमें बंगाल के प्रसिद्ध गोपाल भांड का क्रिस्ता याद आता है। कुछ उत्साही लोगों ने नौका चलाने की होड़ की ठानी। कई दल मैच में शामिल हुये। सारी रात की होड़ थी। सब ने चप्पू सन्हाले और छप ! छप छपा ! छप ! की खोरदार आवाजों से कान गूँजने लगे। सब एक दूसरे से आगे बढ़ने के ख्याल से चप्पू चला रहे थे। रात भर बिना थके, बिना झपकी लिये लोग चप्पू चला रहे थे। जब सबेरा हुआ, अंधेरा मिटा तो लोगों को बड़ी हैरानी हुई कि सारी रात चप्पू चलाने के बावजूद नावें जहाँ की तहाँ खड़ी हैं। एक इंच भी आगे नहीं बढ़ीं। बात यह थी कि लोग खूंटों से नावों की रस्सी खोलना ही भूल गये थे। नतीजा यह हुआ कि सारी मेहनतों के बावजूद सारी पार्टियाँ जहाँ की तहाँ खड़ी रहीं, हालांकि अंधेरे में सब यह समझते थे कि हम इनकलाबी प्रगति के साथ मंजिले मकसूद तक पहुँचने के लिये औरों से बाजी मार रहे हैं।

गोपाल भांड का यह क्रिस्ता आज की हमारी राजनैतिक पार्टियों के ऊपर हर्फ बहर्फ सच उतरता है। सब पार्टियाँ सच और शक्ति की भुखी हैं, भोग के लिये सब के जी मचल रहे हैं। सेवा और त्याग की भावना से कोई काम नहीं कर रहा, चाहे वह पी. एस. पी. हो, कम्युनिस्ट पार्टी हो, जनसंघ हो, अकाली दल हो, द्रविड़ खजगाम हो वा रोडल्ल कास्ट फेडरेशन हो। सब के सब सच्चा हवियाने के लिये व्याकुल हैं। वही नारे, वही भंडे, वही जुलूस, वही हाय हाय ! जैसे नाग-नाथ वैसे साँपनाथ। जनता की सेवा की भावना से सैकड़ों मील दूर। मन में यही चाहिरा कि कब काँग्रेस का दम निकले और कब हम मंत्रियों की कुरसियों पर जा बिराजें। सब खोरदार तरीके से अंधेरे में नाव चला रहे हैं, मगर सबने स्वाव और कुदरती की खूँटी में अपनी प्रगति की रस्सी बाँध रखी है ! (कर नाव बढ़े तो कैसे बढ़े ? हाँ दिला

सत्ता और शक्ति पर रिके होते हैं। त्याग और सेवा की भावना उन के हृदय से निकल गئی है। काँग्रेस का संकल्प आज काँग्रेस के पार्लियामेन्टरी जुझ का अर-खरीद गुलाम है। उस में नया खून बनना बन्द हो गया है। पुराने नेता अपने निजी स्वार्थों के लिये एम. एल. ए. की कतारों से लेकर मंत्रियों तक मोर्चाबन्दी किये हुये हैं। बनी लोग जिन्होंने चोर बाजारी में पैसा पैदा किया है अपनी बैलियों के जोर पर काँग्रेस में प्रवेश पा रहे हैं। पुराने निस्पृह सेवक संस्था से गिराव-बाजियों के जरिये निकाले जा रहे हैं। धनहीन काँग्रेस कर्मियों के लिये आज सेवा के सब दरवाजे बन्द हैं।

اس کہکاش میں چلتا کی سیوا کرنے کا سب سے اور فرصت ہے ؟ چھانسنے، نعرے، جلسوں، دیہوں، مومدوں، چٹاؤ، پارٹی، اہم امور، مان ریٹر، تھیلی، اینڈین کے ارد گرد کانگریس سنگٹوں کا چکر تیزی سے گھوم رہا ہے، مگر نہ سنگٹوں آگے بڑھتا ہے، نہ چٹاؤ آگے بڑھتی ہے اور نہ دیہی آگے بڑھتا ہے۔

ہمیں بنگال کے پرسنہ گوپال بھانڈ کا قصہ یاد آتا ہے۔ کچھ افساھی لوگوں نے نوا چلانے کی ہوڑ کی تھائی۔ ٹٹی دکل سہج میں شامل ہوئے۔ ساری رات کی ہوڑ تھی۔ سب نے چپو سنہالے اور چپ ! چپ چپ ! چپ کی زوردار آوازیں سے کل گونجنے لگے۔ سب ایک دوسرے سے آگے بڑھنے کے خیال سے چپو چلا رہے تھے۔ رات بھر بنا تھکے، بنا چپکی لٹے لوگ چپو چلا رہے تھے۔ جب سویرا ہوا، اندھیرا مٹا تو لوگوں کو بڑی حیرانی ہوئی کہ ساری رات چپو چلانے کے باوجود ناویں جہاں کی تھیں کھڑی تھیں۔ ایک اینج بھی آگے نہیں بڑھیں۔ بات یہ تھی کہ لوگ کھونٹوں سے ناؤں کی رسی کھولنا ہی بھول گئے تھے۔ نتیجتاً یہ ہوا کہ ساری محنتوں کے باوجود ساری پارٹیاں جہاں کی تھیں کھڑی تھیں حالانکہ اندھیرے میں سب یہ سمجھتے تھے کہ ہم انقلابی پرگتی کے ساتھ منزل مقصود تک پہنچنے کے لئے اوروں سے بازی مار رہے ہیں۔

گوپال بھانڈ کا یہ قصہ آج کی ہماری راجنیتک پارٹیوں کے اوپر حرف بحرف سچ اُترتا ہے۔ سب پارٹیاں سنا اور شکتی کی بھوکے ہیں، بھوک کے لئے سب کے جی مچل رہے ہیں۔ سیوا اور تباہ کی بھاؤنا سے کوئی کام نہیں کر رہا، چاہے وہ پی۔ ایس۔ پی۔ ہو، کمیونسٹ پارٹی ہو، جن سنگ ہو، اکالی دل ہو، دروید کھنگام ہو یا شیدولڈ کلسٹ فیڈریشن ہو۔ سب کے سب سنا مٹھانے کے لئے دباکل ہیں۔ وہی نعرے، وہی چھانسنے، وہی چلپے، وہی ہاتھ ہاتھ ! جیسا ناگ ناتھ دھسا سائپ ناتھ ! چٹا کی سیوا کی بھاؤنا سے سکڑوں میل دور۔ من میں بھی خوراکھی کہ کب کانگریس کا دم نکلے اور کب ہم منکریوں کی کرسیوں پر جا دراجیں۔ سب زوردار طریقے سے اندھیرے میں ناؤ چلا رہے ہیں مگر سب نے سوارتہ اور خود غرضی کی کھونٹی میں اپنی پرگتی کی رسی باندھ رکھی ہے ! پھر ناؤ بڑھے تو کسے بڑھے ؟ غلغل

بہارے کو بچے ہی یہ سمجھتے رہیں کہ یونگی دتہ پر سب سے اچھے
بھنگر بازی مار رہے ہیں۔

۱۔ پھر فرما ہند سنوے تو کیسے سنوے ؟ ہند اپنے کو ہند روپ
میں گڑھ تو کیسے گڑھ ؟ دیس آکے بڑھ تو کیسے بڑھ ؟

بچہ جی کا بتایا ایک ہی مول منتر ہے۔ سستا اور
شکنتی سے نہیں، کیا اور سوا سے۔

برتھی سامراج واد کی جو سب سے بھینکر مصیبت تھی
 رتنہ میں ملی وہ ہے۔ نوکر شاہی۔ نوکر ہو کر مالک کا دھم
 پورے کی نہتی ! یوں کہنے کو ہمارا دیہ لوگ منتڑ ہے ۔ لوگ
 منتڑ کا اُرتہ ہے جتنا کے ہاتھوں میں راج کی باگدور ہونا ۔
 لیکن یہ بات صرف ایک دن کے لئے۔ چٹاؤ کے دن کے لئے۔
 ہی صحیح ہے ۔ ہالی پانچ برس تو سیوک ہی سوامی بنا رہتا
 ہے ۔ اربوں گھروں کی اسکیمیں بنا جلتا رہی مالک سے پوچھ
 یا صلح مشورہ کٹہ پاس کر لی جاتی ہیں ۔ نئے نئے کروں کا
 بچہ اُس کے سر پر مزہ دیا جاتا ہے ۔ منتڑیوں اور جتنا کے
 بیچ میں انسہر شاہی کا دور دورہ چل رہا ہے ۔ جہاں جلتا نے
 چوں ۔ چہڑ کی ' مالک نے سیوک سے کچھ جواب طلب کرتے
 کی گستاخی کی تو بات بات پر لڑتی ' گولی ' ٹیٹریس سے
 اُس کا سواکت ہونے لگتا ہے ۔ جلتا بھوکھی ہے مگر سیوک
 چمچچاتا ' چمچچاتا ہانا شو پہن کر گھومتے ہیں ۔ مالک کے
 بچوں کو پڑھنے کا ٹکاتہ نہیں سیوک کے بچے انگلینڈ ۔ امریکہ
 میں مالک کے دھن سے پڑھتے جاتے ہیں ۔ مالک ننگا ہے پر
 سیوک ریشمی بھ شرت پہن کر گھومتے ہیں ۔ سوامی جلتی
 بالو میں بدل چلتا ہے مگر سیوک تکی لکس موٹروں میں
 گھومتا ہے ۔ مالک جھونپڑی میں رہتا ہے مگر سیوک
 ایئر کولڈ ہیلڈ حویلیوں میں رہتے ہیں ۔ مالک کے بچے دوا کے
 بغیر تڑپ تڑپ کر مر جاتے ہیں ' مگر سیوک کے زکام کو دور کرنے
 کے لئے سول سرجن اور بڑے بڑے ڈاکٹر ہاتھ باندھے کھڑے رہتے
 ہیں اور گھنٹے گھنٹے بعد ہیلٹھ ہوٹلن نکالتے ہیں ! آخر یہ
 کس پرکار کا سیوک سوامی کا رشتہ ہے ؟ اور اگر آج جلتا سیوک
 کی پوجناؤں میں کوئی دلچسپی نہیں لیتی تو جواہر لال جی
 جو کہ جلتا کے سچے سیوک اور ہمدرد ہیں ' انہیں جلتا کی
 دلی کیفیت کا وشلیشن ' چہان بین کرنا چاہئے ؛ جلتا کے
 سیوکوں کے طرز عمل کو انہیں بدلنا چاہئے ؛ حکومت کے تعالّیچے
 میں سدھار کرنا چاہئے ؛ جلتا کے سوامتو کو جلتا کے ہاتھوں میں
 دینا چاہئے ؛ نوکر شاہی کو سماپت کرنا چاہئے ؛ جلتا اور
 شاسکوں کے بیچ رہن سہن کے استر کی کھائی کر پائنا چاہئے ؛
 کانگریس کو جن سیوکوں کی سچی جملعت بلانا چاہئے ؛ ملی
 جلی حکومت بنانے دیہ کی سہوا کرنی چاہئے ؛ اور شاسکوں کو
 سیکہ دینی چاہئے کہ دیہ کے کلہان کا راستہ ستا اور ہوگ
 میں نہیں ' سہوا اور تھاک میں ہے ۔

—وشومنهو لئانك والقدس

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساहितيه

हजरत मोहम्मद और इस्लाम

लेखक—गण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस्लाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

حضرت محمد اور اسلام

लेखक—पंडित सनंद लाल, मूल्य—तीन روپيه
اسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھائیوں میں اس سے
سندر کوئی دوسری پستک نہیں

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

लेखक—पंडित सनंद लाल, मूल्य—डेढ़ روپيه

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

مہاتما زرتشت اور ایرانی سنسکرتی

लेखक—शुशुम्भर नाथ पान्दे, कीमत—दو روپيه

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

یہودی دھرم اور سامی سنسکرتی

लेखक—शुशुम्भर नाथ पान्दे, कीमत—दो روپيه

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

پراچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

लेखक—शुशुम्भर नाथ पान्दे, कीमत—दो روپيه

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

سومر بابل اور اسوریائی پراچین سنسکرتی

लेखक—शुशुम्भर नाथ पान्दे, कीमत—दो روپيه

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

پراچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

लेखक—शुशुम्भर नाथ पान्दे, कीमत—दो روپيه

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

گنگا سے گوमती تک

(پرگتی شیل کہانی سنڈره)

लेखक—शरी مجیب رضوی, कीमत—दो روپيه

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डॉक्टर अख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

آگ اور آنسو

(بھائیوں سماجک کہانیاں)

लेखक—डॉक्टर अख्तर حسین رائے پوری, कीमत—डेढ़ روپيه

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आजाद, कीमत—डेढ़ रुपया

قرآن اور دھارمک मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आजाद, कीमत—डेढ़ روپيه

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय किराऊ, कीमत—तीन रुपया

جھنگار

(پرگتی شیل कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय किराऊ, कीमत—तीन روپيه

मिलने का पता

मिलने का पता

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

145 مٹھی گنج، الہ آباد

हिन्दी घर

ہندی گھر

کلتور پر ہر نگرہ کی کیناویں ملنے
کا ایک بڑی کنڈر—پاٹک ہندی، ۛڈ،
آگریجی کی آپنی من-پسند کیناویں
کے لیے ہمیں لکھیں۔

کلیچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے
ایک بڑا کینڈر—پاٹک ہندی
رو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے
لے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کیناویں

مہاتما گاندھی کی برسی

(ہندی اور ۛڈ میں)

لکھک: گاندھی-پاٹک کے گاندھی
نیدان: آری پاتک کے گاندھی
صفحہ 225، قیمت دو روپے

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور ۛڈ میں)

لکھک: گاندھی-پاٹک کے گاندھی
نیدان: آری پاتک کے گاندھی
صفحہ 225، قیمت دو روپے

گاندھی بابا

(گاندھی کے لیے ہندی اور ۛڈ میں)

لکھک: گاندھی-پاٹک کے گاندھی
نیدان: آری پاتک کے گاندھی
صفحہ 225، قیمت دو روپے

گاندھی بابا

(گاندھی کے لیے ہندی اور ۛڈ میں)

لکھک: گاندھی-پاٹک کے گاندھی
نیدان: آری پاتک کے گاندھی
صفحہ 225، قیمت دو روپے

گیتا اور کران

(275 صفحہ، دو روپے)

ہندی مسلمان ایکٹا

(100 صفحہ، دو روپے)

مہاتما گاندھی کے ولیدان سے سبق

(قیمت دو روپے)

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

(قیمت دو روپے)

بنگال اور اُس سے سبق

(قیمت دو روپے)

گیتا اور کران

(275 صفحہ، دو روپے)

ہندی مسلمان ایکٹا

(100 صفحہ، دو روپے)

مہاتما گاندھی کے ولیدان سے سبق

(قیمت دو روپے)

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

(قیمت دو روپے)

بنگال اور اُس سے سبق

(قیمت دو روپے)

ہینڈوستانی کلتور سوسائٹی

145 مٹھونج ایلہاواڈ

ہندوستانی کلیچر سوسائٹی

145 مٹھونج ایلہاواڈ

اس نمبر کے خاص ایکڑ

ہندوستان اور ایران کا سمبندھ

—ڈاکٹر تارا چند

—پنڈت تارا چند

”نیا چین“ کے نام

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

انیسویں صدی کے ایک فقیر کی ڈیواری کی ڈیواری کی ڈیواری

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

ڈاکٹر بھگوان داس اور رتن داس

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

—پنڈت سندھ لال

کلتور سوسائٹی، ایلانہاوا



1955

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai

Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only

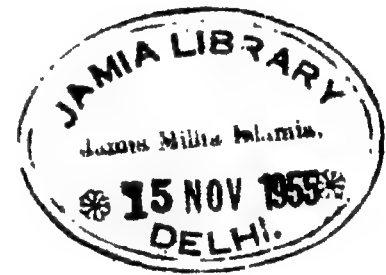
Can be had from —

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

ہندوستان

نمبر 4 نمبر 20 جلد 20 جلد



اکتوبر 1955

ہندوستانی کلچر سوسائٹی ہندوستانی کلچر سوسائٹی

145 سوڈین، دہلی

145، مہی گنج، لاہور

کیا کس سے

صفحہ

کس سے

1. ہندوستان اور ایران کا سہولہ
—ڈاکٹر ساراچند ... 193 ...
2. "نئے چین" کے نام
—پंडित सुन्दरलाल ... 206 ...
3. انیسویں صدی کے ایک نظیر کی ڈاٹری
—پंडित सुन्दरलाल ... 211 ...
4. ہو بہن غل 'آدش مجدر' کیسے بنی؟
—भीमती प्रभा एम० ए० ... 216 ...
5. ماہممد ساہب کے کچھ उपदेश
—अनुवादक श्री मुजीब रिजवी ... 221 ...
6. डा. भगवानदास और वर्ण व्यवस्था
—भाई रघुपति सहाय 'किराक' ... 224 ...
7. तपेदिक का टीका
—श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी ... 231 ...
8. कुछ कितारें— ... 241 ...
9. हमारी राय— ... 244 ...

नये चीन को मुबारकबाद !; यह क्यों ?; दुनिया
की माताओं की कामेस—पंडित सुन्दरलाल .

نئے چین کو مبارکباد !; یہ
کیوں ?; دنیا کی مائوں کی
کامےس—پंडित सुन्दरलाल .

पुरانے زمانے سے اب تک ہندوستان اور ایران کا سمبندھ

پورانے زمانے سے اب تک ہندوستان اور ایران کا سمبندھ

[ایران میں 16 اگست سن 55ء کو ایک ہندو- ایرانی کلچرل ایسوسی ایشن کی بنیاد رکھی گئی۔ اُس موقع پر ایران میں بھارت کے راج دوت اور ”نیا ہند“ کے ایڈیٹر ڈاکٹر تارا چند نے جو تقریر کی وہ نیچے دی جاتی ہے۔]

[ایران میں 16 اگست سن 55ء کو ایک ہندو- ایرانی کلچرل ایسوسی ایشن کی بنیاد رکھی گئی۔ اُس موقع پر ایران میں بھارت کے راج دوت اور ”نیا ہند“ کے ایڈیٹر ڈاکٹر تارا چند نے جو تقریر کی وہ نیچے دی جاتی ہے۔]

ہندوستان اور ایران ایشیا کے ایسے دو देश ہیں جنہیں قدرت نے ایک دوسرے کے پاس پاس بसाया ہے۔ دونوں کے پہاڑوں کے سلسلے اور پہلو ہوا سمندر کبھی بھی دونوں طرف سے لوگوں کے میل جول کو نہیں روک سکے۔ ان پہاڑوں کی رکاوٹوں کی وجہ سے دونوں طرف کے سامنے اور پریمی لوگ اور بھی زیادہ ایک دوسرے کی طرف کھینچتے رہے ہیں۔ جب سے انسان کی تاریخ شروع ہوئی ہے اُس کے پہلے سے آج تک لگاتار قافلے کے قافلے زمین کے اور پانی کے راستے پہاڑوں، جنگلوں، ریگستانوں اور سمندر کو پار کرتے ہوئے ہر طرف سے بڑھتے چلے آتے رہے ہیں۔

ہندوستان اور ایران ایشیا کے ایسے دو देश ہیں جنہیں قدرت نے ایک دوسرے کے پاس پاس بसाया ہے۔ دونوں کے پہاڑوں کے سلسلے اور پہلو ہوا سمندر کبھی بھی دونوں طرف سے لوگوں کے میل جول کو نہیں روک سکے۔ ان پہاڑوں کی رکاوٹوں کی وجہ سے دونوں طرف کے سامنے اور پریمی لوگ اور بھی زیادہ ایک دوسرے کی طرف کھینچتے رہے ہیں۔ جب سے انسان کی تاریخ شروع ہوئی ہے اُس کے پہلے سے آج تک لگاتار قافلے کے قافلے زمین کے اور پانی کے راستے پہاڑوں، جنگلوں، ریگستانوں اور سمندر کو پار کرتے ہوئے ہر طرف سے بڑھتے چلے آتے رہے ہیں۔

ہندوستان اور ایران کے بیچ آنے جانے کی یہ کہانی ہزاروں برس کی پुरانی کہانی ہے۔ ان دونوں دیشوں کا یہ سمبندھ کیوں پرانا ہی نہیں ہے، یہ اتنا گہرا ہے اور انسانی کلچر کے ہر پہلو پر اس طرح چھایا ہوا ہے کہ اسے پوری طرح بیان کرنے کے لئے بہت سی جلدیں بھی ناکافی ہونگی۔

ہندوستان اور ایران کے بیچ آنے جانے کی یہ کہانی ہزاروں برس کی پورانی کہانی ہے۔ ان دونوں دیشوں کا یہ سمبندھ کیوں پرانا ہی نہیں ہے، یہ اتنا گہرا ہے اور انسانی کلچر کے ہر پہلو پر اس طرح چھایا ہوا ہے کہ اسے پوری طرح بیان کرنے کے لئے بہت سی جلدیں بھی ناکافی ہونگی۔

آج ان دونوں ملکوں کی اس کلچر کے کیوں ایک پہلو کا مختصر سا حال میں آپ کے سامنے پیش کرونگا۔ میں نے اپنے آج کے مطلب کے لئے مذہب کا پہلو چنا ہے کیونکہ مذہب ہر آدمی کے لئے بھی اور پوری سماجی زندگی کے لئے بھی، دونوں کے لئے بڑی گہری سے گہری اہمیت رکھتا ہے، کسی بھی قوم کی آتما کی نہری اُمنکیں اور انسانیت اُن کے مذہب پر گہکتی ہوئی ہیں۔

آج ان دونوں ملکوں کی اس کلچر کے کیوں ایک پہلو کا مختصر سا حال میں آپ کے سامنے پیش کرونگا۔ میں نے اپنے آج کے مطلب کے لئے مذہب کا پہلو چنا ہے کیونکہ مذہب ہر آدمی کے لئے بھی اور پوری سماجی زندگی کے لئے بھی، دونوں کے لئے بڑی گہری سے گہری اہمیت رکھتا ہے، کسی بھی قوم کی آتما کی نہری اُمنکیں اور انسانیت اُن کے مذہب پر گہکتی ہوئی ہیں۔

آج میں یہ دکھانا چاہتا ہوں کہ ہندوستان اور ایران ایک دوسرے کے کیوں پڑوسی ہی نہیں ہیں، ان دونوں ملکوں کی آتما میں بھی ایک دوسرے کے بہت نکتہ وہی ہیں اور ہیں۔ یہ دونوں قومیں ایک ہی نسل سے ہیں۔ ان کی بھاشاؤں، ان کے دھارمک آئینوں اور دھرم مذہب کی طرف ان دونوں ہی سے کے رخ میں بھی ہمیشہ بہت بڑی مماثلت رہی ہے۔

آج میں یہ دکھانا چاہتا ہوں کہ ہندوستان اور ایران ایک دوسرے کے کیوں پڑوسی ہی نہیں ہیں، ان دونوں ملکوں کی آتما میں بھی ایک دوسرے کے بہت نکتہ وہی ہیں اور ہیں۔ یہ دونوں قومیں ایک ہی نسل سے ہیں۔ ان کی بھاشاؤں، ان کے دھارمک آئینوں اور دھرم مذہب کی طرف ان دونوں ہی سے کے رخ میں بھی ہمیشہ بہت بڑی مماثلت رہی ہے۔

معلوم ہوتا ہے کہ ان دو ملکوں کے لوگوں نے لگ بھگ ایک ساتھ ایک ہی وقت میں انسانیت کی تخلیق کی۔

معلوم ہوتا ہے کہ ان دو ملکوں کے لوگوں نے لگ بھگ ایک ساتھ ایک ہی وقت میں انسانیت کی تخلیق کی۔

میں پہلے تب کرنی شروع کی۔ یہ دونوں ملک عرب ساگر کے دوسروں پر ہیں۔ پچھم کے سرے پر کارون ندی، دکھائی زاگروس میں سے بہتی ہوئی اور ان مہدائوں میں سے ہوتی ہوئی جہاں ایران کی سب سے پہلی سیہتاؤں نے جنم لیا تھا، ایران کی کھاری میں جا کر گرتی ہے۔ پورب میں سندھ ندی جس کا نکاس ہمالیہ کی برفالی چوٹیوں سے ہے، پنجاب اور سندھ کے مہدائوں کو سیلاب کرنی ہوئی کسی زمانے میں کچھ کی کھاری میں جا کر گرتی تھی۔ کارون اور سندھ دونوں پہاڑوں کے پتھروں اور طرح طرح کی اُپجائو مٹی کو اپنے ساتھ تھکھلتی ہوئی ہمیشہ اپنا راستہ بدلتی اور ان دونوں ملکوں کے الگ الگ حصوں کو اُپجائو بناتی رہی ہیں۔

عرب ساگر کے ان دونوں سروں پر انسانی تہذیب ساتھ ساتھ شروع ہوئی۔ دونوں جگہ ساتھ ساتھ شہر آباد ہوئے۔ کھیتی باڑی، پشوپالن اور دھات کی چیزوں کے بنانے کے ساتھ دونوں جگہ انسان ایک بہت بڑے درجے تک قدرت کی غلطی سے ایک ساتھ آزاد ہوا۔ دولت اور تجارت، سماجک سنسٹھائیں، راج سرکار، علم اور ہنر دونوں جگہ پلے پھولے اور دونوں جگہ کی سیہتاؤں کو ترقی دینے لگے۔ پچھم میں تخت جمشید، (پرسی پولس)، شوش، کاشان اور تھاونڈ۔ اُتر میں آستراباد اور اناؤ جیسے بہت سے پراچین ایرانی شہروں کی کھدائی سے تانبہ، پتھر، کانسا، سونا، جواہرات اور مٹی کے وہ برتن ملے ہیں جن سے اُس زمانے کی ایرانی تہذیب اور اُس کی ترقی کی منزلوں کا پتہ چلتا ہے۔ ٹھیک اُسی زمانے کی اُسی طرح کی چیزیں موہن جودارو، ہڑپا اور سندھ ندی کے اُس پاس کے اور مقاموں کی کھدائی میں ملی ہیں۔ دونوں طرف کی ان چیزوں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ یہ دونوں سیہتاؤں کئی کئی ملتی جلتی تھیں اور ان دونوں نے ایک دوسرے سے کسی قدر لیا تھا۔ ایلام میں شوش اور انزان کے راج کاجی سمندھ اور وہاں کی راج کاجی سنسٹھائیں ہڑپا اور موہن جودارو کے راج کاجی سمندھوں اور سنسٹھاؤں سے بے حد ملتی جلتی ہیں۔

ایلام اور ہڑپا دونوں کی اُس زمانے کی حکومتیں راج پروہتوں یا پروہت راجاؤں کے ہاتھوں میں تھیں۔ دونوں جگہ وہی پروہت اور وہی راجا ہوتے تھے۔ دونوں جگہ لوگ بہت سے دیوی دیوتاؤں کی پوجا کرتے تھے۔ دونوں جگہ ان بہت سے دیوی دیوتاؤں کے اوپر ایک سب سے بڑا دیوتا مانا جاتا تھا جو ان سب کا راجا سمجھا جاتا تھا اور جو کسی پہاڑ کے شکر پر رہتا تھا۔ دونوں جگہ سورج اور چاند کی پوجا ہوتی تھی، چل اور نل کے دیوتاؤں کی پوجا ہوتی تھی، پریم کی دیوی اور سلتان اُنہتی کی دیوی کی پوجا ہوتی تھی۔ ماں یعنی دیوی ماتا کی پوجا ہوتی تھی۔ دونوں جگہ کچھ جانوروں اور درختوں کو بھی پاک مانا

عرب ساگر کے ان دونوں سروں پر انسانی تہذیب ساتھ ساتھ شروع ہوئی۔ دونوں جگہ ساتھ ساتھ شہر آباد ہوئے۔ کھیتی باڑی، پشوپالن اور دھات کی چیزوں کے بنانے کے ساتھ دونوں جگہ انسان ایک بہت بڑے درجے تک قدرت کی غلطی سے ایک ساتھ آزاد ہوا۔ دولت اور تجارت، سماجک سنسٹھائیں، راج سرکار، علم اور ہنر دونوں جگہ پلے پھولے اور دونوں جگہ کی سیہتاؤں کو ترقی دینے لگے۔ پچھم میں تخت جمشید، (پرسی پولس)، شوش، کاشان اور تھاونڈ۔ اُتر میں آستراباد اور اناؤ جیسے بہت سے پراچین ایرانی شہروں کی کھدائی سے تانبہ، پتھر، کانسا، سونا، جواہرات اور مٹی کے وہ برتن ملے ہیں جن سے اُس زمانے کی ایرانی تہذیب اور اُس کی ترقی کی منزلوں کا پتہ چلتا ہے۔ ٹھیک اُسی زمانے کی اُسی طرح کی چیزیں موہن جودارو، ہڑپا اور سندھ ندی کے اُس پاس کے اور مقاموں کی کھدائی میں ملی ہیں۔ دونوں طرف کی ان چیزوں سے صاف پتہ چلتا ہے کہ یہ دونوں سیہتاؤں کئی کئی ملتی جلتی تھیں اور ان دونوں نے ایک دوسرے سے کسی قدر لیا تھا۔ ایلام میں شوش اور انزان کے راج کاجی سمندھ اور وہاں کی راج کاجی سنسٹھائیں ہڑپا اور موہن جودارو کے راج کاجی سمندھوں اور سنسٹھاؤں سے بے حد ملتی جلتی ہیں۔

جاتا تھا جیسے سائر، سائپ، شہر وغیرہ۔ ہر شہر ہر گاؤں اور ہر گھر کا اپنا ایک الگ چھوٹا سا مندر ہوتا تھا جس میں ان دیوی دیوتاؤں کی مٹی یا پتھر کی چوٹی چوٹی مورتیاں ہوتی تھیں۔

بڑے بڑے مندر جو آگرہ یا لکھنؤ کا ہر کھلائے بے چاروں طرف اونچی اونچی دیواروں سے گھیرے ہوتے تھے۔ ان کے اندر بڑے بڑے چبوترے ہوتے تھے۔ ٹکی ٹکی مندر ایوان ہوتے تھے جن تک پہنچنے کے لئے اونچی اونچی سڑکیاں ہوتی تھیں۔ ان کے چاروں طرف اونچے مینار ہوتے تھے۔ یہ بالکل قلعہ کی طرح ہوتے تھے اور ان مندروں میں پیشمار دولت اور لاکھوں من فٹہ جمع رہتا تھا۔

ایلام اور سندھ دونوں کے علاقے پر رومیت راجاؤں کے ہاتھوں میں ایک زبردست شکنجے میں کسے رہتے تھے۔ سارا سماج پورے رسترواجوں کے تنگ سانچوں میں جکڑا ہوا تھا۔ کسی کو اس سے باہر نکلنے یا کوئی نئی بات کرنے کی اجازت نہیں تھی۔

نئی جگہ ایک سا ہوا۔ دونوں جگہ کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ایلام اور سندھ دونوں کے باشندوں پر ایک سی آفروتہ ڈٹی۔ ایلام اور سندھ دونوں پر اسی سے بڑا بڑا آریہ ہملابروں نے، جو بھوکے پر سوار اور لوہے کے ہتھیار لیے ہوئے تھے، ڈھاکا بول دیا۔ انہوں نے ان دونوں ملکوں کو روند ڈالا اور انہیں جیت کر اپنے آدھیں کر لیا۔ دھیرے دھیرے پورے باشندے اور نئے حملہ آور دونوں کی نسلیں ایک دوسرے میں رمل کر ایک ہو گئیں۔ یہی آجکل کے ایرانیوں اور ہندوستانیوں کے پرکھے تھے۔ ان کی نسل ایک تھی، بولی ایک تھی، دھرم ایک تھا اور کلچر ایک تھی۔

ہی پیدا ہونے نہ دیتی تھی کہ پرکرتی کی فطرت کی کہیں
حدیں بھی ہیں یا آبادی کے مقابلہ میں کہیں ویرانی بھی ہے۔

پھر دنیا میں کہیں بھی کوئی بھی پرورتین کیوں نہ ہو
شروع کے سانچے کی چھاپ اُس پر برابر دھتی ہی ہے۔

ایران کے پیرامبر زرتشت کے سواروں سے پہلے ایرانیوں
کا جو ماحول تھا، جو کچھ تبدیلیوں کے ساتھ بعد کے ہخامنشی اور
ساسانی زمانوں میں بھی قائم رہا، وہ ہندوستانی آریوں کے ویدک
مذہب سے بے حد ملتا ہوا تھا۔ اُس سے بھی ادھک دھیان
دینے کی بات یہ ہے کہ زرتشت نے دھرم کو جو نیا روپ دیا وہ
اپنے ہر پہلو میں صاف صاف یہ بتا رہا ہے کہ وہ اور ویدک
دھرم دونوں ایک ہی خاندان سے ہیں۔ زرتشت نے پرانی
نئی پیچیدگیوں، جٹل ریت رواجوں اور آندھ وشواسوں کو
ہٹاکر جہوں کی سادگی اور چلن کی پاکیزگی پر زور دیا۔
انہوں نے آدمی کے نیکی کے جہوں کے لئے صاف صاف اور سیدھے
سیدھے قاعدے بنا دیئے اور حدیں قائم کر دیں۔

آریوں کی کتاب وید اور زرتشت کی کتاب اوستا دونوں
یہی اعلان کرتی ہیں کہ خدا، ایشور ایک ہے۔ وید میں
لکھا ہے کہ:—”وہ ایک ہے، ویدوان لوگ اسے اس طرح طرح سے
بیان کرتے ہیں۔“ اوستا کے مطابق ”آہورمز (ایشور) ہی
اس سارے وشو کا بنانے والا اور ساری زندگی کا مالک ہے۔“

ایران کی آریہ دھرمک کتابوں کا آسور ورن وہی ہے جو
ایران میں آہورمز کا آسور ورن ہے۔ یہ بھی ایک عجیب بات ہے کہ ویدوں
میں ورن کو ’آسور‘ کہا گیا ہے حالانکہ بعد کے سامتیہ میں ’آسور‘
کا مطلب دائم یعنی دیوتاؤں کا دشمن ہوتا ہے۔

ویدوں کے مطابق ورن ”اس ساری دنیا کا بنانے والا، قائم
رکھنے والا اور رکشا کرنے والا ہے اور سروگیہ (علم) ہے۔ وہی زمین
اور آسمانوں کا بنانے والا ہے، اسی نے آسمان کے اندر تاروں اور اُن
کی چالوں کو قائم کیا ہے اور جل اور تھل کو پھیلا کر اُن میں
جانداروں کو بسایا ہے۔ وہی سب کچھ جاننے والا اور سب کا حامی
ہے۔ وہ بھوت، بھوشیہ اور ورتہان (ماضی، مستقبل اور حال)
سب کو جانتا ہے۔ وہ سوا کے راستوں اور اُس میں اڑنے والے
پرندوں اور سمندر میں چلنے والے جہازوں سب کے راستوں
کو جانتا ہے۔ وہ آدمی کے پلک کی چھلکیوں کو بھی گن لیتا
ہے۔ وہ دنیاؤں کا رکشک اور مالک ہے۔ وہ سب چیزوں کو
دیکھتا ہے۔“

”اگر میں اُر کر دور سے دور کے آسمان پر بھی پہنچ
جاؤں تب بھی میں آسور ورن کے راج سے باہر نہیں نکل
سکتا۔ آسمان سے بیٹھے ہونے اس کے دوت (فرشتے)

ایران کے پیرامبر زرتشت کے سواروں سے پہلے ایرانیوں کا جو ماحول تھا، جو کچھ تبدیلیوں کے ساتھ بعد کے ہخامنشی اور ساسانی زمانوں میں بھی قائم رہا، وہ ہندوستانی آریوں کے ویدک مذہب سے بے حد ملتا ہوا تھا۔ اُس سے بھی ادھک دھیان دینے کی بات یہ ہے کہ زرتشت نے دھرم کو جو نیا روپ دیا وہ اپنے ہر پہلو میں صاف صاف یہ بتا رہا ہے کہ وہ اور ویدک دھرم دونوں ایک ہی خاندان سے ہیں۔ زرتشت نے پرانی نئی پیچیدگیوں، جٹل ریت رواجوں اور آندھ وشواسوں کو ہٹاکر جہوں کی سادگی اور چلن کی پاکیزگی پر زور دیا۔ انہوں نے آدمی کے نیکی کے جہوں کے لئے صاف صاف اور سیدھے سیدھے قاعدے بنا دیئے اور حدیں قائم کر دیں۔

ایران کی آریہ دھرمک کتابوں کا آسور ورن وہی ہے جو ایران میں آہورمز کا آسور ورن ہے۔ یہ بھی ایک عجیب بات ہے کہ ویدوں میں ورن کو ’آسور‘ کہا گیا ہے حالانکہ بعد کے سامتیہ میں ’آسور‘ کا مطلب دائم یعنی دیوتاؤں کا دشمن ہوتا ہے۔

ویدوں کے مطابق ورن ”اس ساری دنیا کا بنانے والا، قائم رکھنے والا اور رکشا کرنے والا ہے اور سروگیہ (علم) ہے۔ وہی زمین اور آسمانوں کا بنانے والا ہے، اسی نے آسمان کے اندر تاروں اور اُن کی چالوں کو قائم کیا ہے اور جل اور تھل کو پھیلا کر اُن میں جانداروں کو بسایا ہے۔ وہی سب کچھ جاننے والا اور سب کا حامی ہے۔ وہ بھوت، بھوشیہ اور ورتہان (ماضی، مستقبل اور حال) سب کو جانتا ہے۔ وہ سوا کے راستوں اور اُس میں اڑنے والے پرندوں اور سمندر میں چلنے والے جہازوں سب کے راستوں کو جانتا ہے۔ وہ آدمی کے پلک کی چھلکیوں کو بھی گن لیتا ہے۔ وہ دنیاؤں کا رکشک اور مالک ہے۔ وہ سب چیزوں کو دیکھتا ہے۔“

ایران کی آریہ دھرمک کتابوں کا آسور ورن وہی ہے جو ایران میں آہورمز کا آسور ورن ہے۔ یہ بھی ایک عجیب بات ہے کہ ویدوں میں ورن کو ’آسور‘ کہا گیا ہے حالانکہ بعد کے سامتیہ میں ’آسور‘ کا مطلب دائم یعنی دیوتاؤں کا دشمن ہوتا ہے۔

ویدوں کے مطابق ورن ”اس ساری دنیا کا بنانے والا، قائم رکھنے والا اور رکشا کرنے والا ہے اور سروگیہ (علم) ہے۔ وہی زمین اور آسمانوں کا بنانے والا ہے، اسی نے آسمان کے اندر تاروں اور اُن کی چالوں کو قائم کیا ہے اور جل اور تھل کو پھیلا کر اُن میں جانداروں کو بسایا ہے۔ وہی سب کچھ جاننے والا اور سب کا حامی ہے۔ وہ بھوت، بھوشیہ اور ورتہان (ماضی، مستقبل اور حال) سب کو جانتا ہے۔ وہ سوا کے راستوں اور اُس میں اڑنے والے پرندوں اور سمندر میں چلنے والے جہازوں سب کے راستوں کو جانتا ہے۔ وہ آدمی کے پلک کی چھلکیوں کو بھی گن لیتا ہے۔ وہ دنیاؤں کا رکشک اور مالک ہے۔ وہ سب چیزوں کو دیکھتا ہے۔“

ویدوں کے مطابق ورن ”اس ساری دنیا کا بنانے والا، قائم رکھنے والا اور رکشا کرنے والا ہے اور سروگیہ (علم) ہے۔ وہی زمین اور آسمانوں کا بنانے والا ہے، اسی نے آسمان کے اندر تاروں اور اُن کی چالوں کو قائم کیا ہے اور جل اور تھل کو پھیلا کر اُن میں جانداروں کو بسایا ہے۔ وہی سب کچھ جاننے والا اور سب کا حامی ہے۔ وہ بھوت، بھوشیہ اور ورتہان (ماضی، مستقبل اور حال) سب کو جانتا ہے۔ وہ سوا کے راستوں اور اُس میں اڑنے والے پرندوں اور سمندر میں چلنے والے جہازوں سب کے راستوں کو جانتا ہے۔ وہ آدمی کے پلک کی چھلکیوں کو بھی گن لیتا ہے۔ وہ دنیاؤں کا رکشک اور مالک ہے۔ وہ سب چیزوں کو دیکھتا ہے۔“

”اگر میں اُر کر دور سے دور کے آسمان پر بھی پہنچ جاؤں تب بھی میں آسور ورن کے راج سے باہر نہیں نکل سکتا۔ آسمان سے بیٹھے ہونے اس کے دوت (فرشتے)

ہماری طرف اپنی ہزاروں آنکھوں سے دنیا کو ہر وقت دیکھ رہے ہیں۔“

وہ دن کھل آسمانوں کے گناہوں کو ہی نہیں دیکھتا اور لوگوں کے دلوں کے گہرے سے گہرے پھیسوں کو ہی نہیں جانتا۔ ”وہ دیا اور پریم کا بھی ایشور ہے۔“ اس دنیا میں اور اگلی دنیا میں دونوں جگہ وہ اپنے بھکتوں کی خبر رکھتا ہے۔ وہ اُن سب پر دیا کرتا ہے اور اُن کے گناہ معاف کر دیتا ہے جو ان شبدوں میں اُس سے پرارتھنا کرتے ہیں۔ ”اے ایشور! اگر میں نے اپنے کسی پیارے ساتھی یا نائے دار کے ساتھ کوئی برائی کی ہے، یا اپنے کسی بھائی یا پڑوسی کے ساتھ، یا اپنے کسی ہم وطن کے ساتھ یا کسی اجنبی کے ساتھ، تو اُس کے لئے تو میرا وہ گناہ معاف کر دے!“

”وہ اُس دنیا میں لوگوں کا مہتر ہے۔ سب سے ملتا ہے۔ اور اس کے بعد اُس دنیا میں، جو اُن لوگوں کے رہنے کی جگہ ہے، جن پر اُس کی نعمتوں میں اور جہاں نیک روحوں کے لئے ایک زندگی کے بعد دوسری زندگی آتی رہتی ہے، اور ہر آگے کی زندگی پہلے کی زندگی سے زیادہ بھر پور اور بلند ہوتی ہے، اُس دنیا کا بھی وہی مالک ہے۔“

زندگی کے انبساط ایشور، خدا یعنی ایشور، مزد کے دو صاف روپ ہیں جو ایشور مزد نام سے ظاہر ہیں۔ ایشور کی حیثیت سے وہ ساری جان کا یعنی سب روحوں کا مالک ہے اور مزد کی حیثیت سے وہ ساری مادی دنیا کا بنانے والا ہے۔ ”ایشور مزد سرور شگتی مان یعنی قادر مطلق ہے، وہی سب کا انصاف کرنے والا ہے، وہ عقل کل ہے، وہ سب سے اونچا اور سب سے بڑا ہے، وہ سب پر حاوی ہے۔ اُس کے من کے اندر سب چیزوں کی یاد موجود ہے۔ وہ سب سے بڑے دل میں وہ گواہ کی طرح موجود ہے، اُس کی یاد اور مہر سب دھونڈتے ہیں۔ جو اُس سے روشنی چاہتے ہیں انہیں اُس سے روشنی ملتی ہے۔ اُسی نے دنیا کو بنایا ہے، وہی اُس میں پھر پھر جان ڈالتا ہے۔ وہ سچائی کی دنیا میں باس کرتا ہے، اُس کا پریم سب جانداروں، آدمیوں اور جانوروں کو اپنے دائرے کے اندر گھیرے ہوئے ہے۔“

ویدوں کے اندر دن کی جتنی تعریفیں گنائی گئی ہیں وہ لگ بھگ سب اوستا کے اندر ایشور مزد کی تعریفیں بتائی گئی ہیں۔

ویدوں کے اندر بڑھاپے کی جتنی تारीفیں گناہیں گئی ہیں وہ لگ بھگ سب اوستا کے اندر ایشور مزد کی تारीفیں بتائی گئی ہیں۔

اوستا میں ”آرمیہ سپندوں“ کا بھی ذکر آتا ہے جس کا مطلب پاک روچیں ہے۔ کہیں پر انہیں ایشور مزد کی کھول صفتوں یعنی اُس کے گن بتایا گیا ہے اور کہیں اُس کے سہوک یا اُس کی شکتیاں یا اُس کے ایک ایک روپ کہا گیا ہے۔ ویدوں میں بھی تھیک اِس طرح سے ایشور دن کے سہوکوں اور شکتیوں کا بیان ہے۔

“अमेश स्पन्द” दो तरह के हैं—एक वह जिनका सम्बन्ध क्रिया यानी फल से है और दूसरे वह जिनका सम्बन्ध भाव यानी जगत् से है. इनमें पहले का सम्बन्ध अहुर से है और दूसरे का मज्द से. इनमें सब से ऊपर ‘अशा’ है. वेद में ‘अशा’ का नाम ‘ऋत’ रखा गया है, दोनों बिलकुल एक हैं.

अवस्था में अशा का मतलब है दुनिया की तरतीब, कुरबत का वह कानून जो दुनिया को चलाता है और हमेशा एक सा रहता है और अहुर मज्द की वह इच्छा जो लोगों के सारे सदाचार के कानून की नींव है. अशा ही सच्चाई और धर्म का कानून है.

वेदों में “ऋत” का मतलब है तीन तरह का कानून—एक जड़ यानी मादे का कानून जिससे दुनिया का माही रूप कायम रहता है, दूसरा कुरबानी का कानून, और तीसरा नेकी यानी सदाचार का कानून. “ऋत ही के जरिये सूरज सुबह को निकलता है और बारह महीने के अन्दर आसमान में अपना चक्कर पूरा करता है. ऋत ही के जरिये अग्नि यानी आग लोगों की हवन में चढ़ाई हुई चीजों को देवताओं तक पहुंचा देती है. ऋत बुराई से रोकता है और नेकी का हुक्म देता है. ऋत ही सच्चाई है, ऋत ही धर्म है.”

अवस्था के दूसरे अमेश स्पन्दों के भी रूप वेदों के अन्दर मिलते हैं.

बहुत से हिन्दुस्तानी देवी देवताओं का अवस्था में जिक्र आता है. वेदों के आदित्य अवस्था के स्पन्द मैनु हैं. वेदों का ‘मित्र’ और ईरानी ‘मित्र’ दोनों बिलकुल एक हैं. पर न जाने कैसे वेदों का ‘इन्द्र देवता’ अवस्था का ‘इन्द्र दानव’ यानी इन्द्र शैतान हो गया. वेदों का वृत्राहन ईरान का बिरित्राघन है.

ईरानी किताब गाथा में तीन ‘एज्द’ का जिक्र है. उनमें से एक आज़र है, जो पहलवी ज़बान में आतश हो गया और आजकल की ईरानी में आतश हो गया. आज़र वही देवता है जिसे वेदों में अग्नि यानी आग कहा गया है. वेदों के अनुसार अग्नि कई तरह की होती है, आसमानी भी और ज़मीनी भी. “अग्नि बिजली की तरह आसमान में पैदा होती है और दो लकड़ियों की रगड़ से उसी तरह निकल सकती है जिस तरह दो प्रेमियों के मेल से. यह अग्नि बादलों से उतर कर पानी में जाती है, पानी से निकल कर पौधों में जाती है और पौधों से आग की लौ और धुँए की शकल में उठकर फिर बादलों में पहुंच जाती है. यही आदमी के अन्दर हरावर उसकी यानी जान है. यही जानवरों और परिन्दों के अन्दर गरमी है. सब दोपायों और चौपायों में यही जान है. यही अमर जीवन यानी हयाते अबदी का मरकज है.”

ईरानी आज़र के पांच रूप हैं:—(1) बरषीस वह (बहराम), (2) बहु करयाना (जानदारों के अन्दर की गरमी)

“अमेश स्पन्द” दो तरह के हैं—एक वह जिन का सम्बन्ध क्रिया यानी फल से है और दूसरे वह जिन का सम्बन्ध भाव यानी जगत् से है. इनमें पहले का सम्बन्ध अहुर से है और दूसरे का मज्द से. इनमें सब से ऊपर ‘अशा’ है. वेद में ‘अशा’ का नाम ‘ऋत’ रखा गया है, दोनों बिलकुल एक हैं.

ओस्ता में अशा का مطلب है दुनिया की तरतीब, कुरबत का वह कानून जो दुनिया को चलाता है और हमेशा एक सा रहता है और अहुर मज्द की वह इच्छा जो लोगों के सारे सदाचार के कानून की नींव है. अशा ही सच्चाई और धर्म का कानून है.

वेदों में “ऋत” का मतलब है तीन तरह का कानून—एक जड़ यानी मादे का कानून जिससे दुनिया का माही रूप कायम रहता है, दूसरा कुरबानी का कानून, और तीसरा नेकी यानी सदाचार का कानून. “ऋत ही के जरिये सूरज सुबह को निकलता है और बारह महीने के अन्दर आसमान में अपना चक्कर पूरा करता है. ऋत ही के जरिये अग्नि यानी आग लोगों की हवन में चढ़ाई हुई चीजों को देवताओं तक पहुंचा देती है. ऋत बुराई से रोकता है और नेकी का हुक्म देता है. ऋत ही सच्चाई है, ऋत ही धर्म है.”

ओस्ता के दूसरे अमेश स्पन्दों के भी रूप वेदों के अन्दर मिलते हैं.

बहुत से हिन्दुस्तानी देवी देवताओं का अवस्था में जिक्र आता है. वेदों के आदित्य अवस्था के स्पन्द मैनु हैं. वेदों का ‘मित्र’ और ईरानी ‘मित्र’ दोनों बिलकुल एक हैं. पर न जाने कैसे वेदों का ‘इन्द्र देवता’ अवस्था का ‘इन्द्र दानव’ यानी इन्द्र शैतान हो गया. वेदों का वृत्राहन ईरान का बिरित्राघन है.

ईरानी किताब गाथा में तीन ‘एज्द’ का जिक्र है. उनमें से एक आज़र है, जो पहलवी ज़बान में आतश हो गया और आजकल की ईरानी में आतश हो गया. आज़र वही देवता है जिसे वेदों में अग्नि यानी आग कहा गया है. वेदों के अनुसार अग्नि कई तरह की होती है, आसमानी भी और ज़मीनी भी. “अग्नि बिजली की तरह आसमान में पैदा होती है और दो लकड़ियों की रगड़ से उसी तरह निकल सकती है जिस तरह दो प्रेमियों के मेल से. यह अग्नि बादलों से उतर कर पानी में जाती है, पानी से निकल कर पौधों में जाती है और पौधों से आग की लौ और धुँए की शकल में उठकर फिर बादलों में पहुंच जाती है. यही आदमी के अन्दर हरावर उसकी यानी जान है. यही जानवरों और परिन्दों के अन्दर गरमी है. सब दोपायों और चौपायों में यही जान है. यही अमर जीवन यानी हयाते अबदी का मरकज है.”

ईरानी आज़र के पांच रूप हैं:—(1) बरषीस वह (बहराम), (2) बहु करयाना (जानदारों के अन्दर की गरमी)

ईरानी आज़र के पांच रूप हैं:—(1) बरषीस वह (बहराम), (2) बहु करयाना (जानदारों के अन्दर की गरमी)

(3) برہمنیستا (بھ گارمی جو دو لکھائیوں کے رگھنے سے پیدا ہوتی ہے)، (4) بھجیستا (بجلی) اور (5) سہیستا (بھ آگ جو ہمیشہ سے ہمیشہ تک قائم رہتی ہے)۔

بدوں کے پوجا پاٹ میں اور ابھستا کے پوجا پاٹ میں دونوں میں سے کسی میں مہیروں کے یا مورتیوں کے لیے کوئی جگہ نہیں ہے۔ ہر گھڑی کا یانی ہر خانہ دار کا چاہے وہ راجا ہو یا معمولی آدمی، یہ فرض ہے کہ وہ ہر وقت اپنے گھر میں آگ کو قائم رکھے اور اُس میں یکہ کرتا رہے۔ بدیں میں جسے یکہ کہا گیا ہے اُسی کو اوستا میں یسن کہا گیا ہے۔ جو لوگ ان یکوں یا یسنوں میں پروہت کا کام کرتے ہیں ان کے دونوں میں ایک ہی سے نام ہیں—جیسے 'ہوتار'، 'زونا'، 'آہرون'، 'آہرون'، 'کریا اکن' کے کاؤس۔

اور بھی بہت سی ملتی جلتی چیزیں ہیں۔ بدیں کا مذہب اور اوستا کا مذہب دونوں ایسے لوگوں کے مذہب ہیں جو جنوں کو خوشی اور اُمنگ کے ساتھ دیکھتے تھے۔ دونوں اوستھی زندگی اور نیکی کے اصولوں کے سچے کھوجی تھے۔ دونوں نے اس اصول کو پالیا تھا کہ سب کا خدا یعنی ایشور ایک ہے۔ دونوں یہ مانتے تھے کہ ایشور کی روشنی سب کو مدد دیتی ہے اور جو اُس سے فائدہ اُٹھاتا ہے اُسے اُزلت سم کے مقام تک پہنچا دیتی ہے۔ دونوں کو اس بات پر پکا وشواس تھا کہ یہ ساری دنیا ایک ایسے اچھے قانون کے سہارے چل رہی ہے جو ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ تک رہے گا۔

اور بھی بہت سی ملتی جلتی چیزیں ہیں۔ بدیں کا مذہب اور اوستا کا مذہب دونوں ایسے لوگوں کے مذہب ہیں جو جنوں کو خوشی اور اُمنگ کے ساتھ دیکھتے تھے۔ دونوں اوستھی زندگی اور نیکی کے اصولوں کے سچے کھوجی تھے۔ دونوں نے اس اصول کو پالیا تھا کہ سب کا خدا یعنی ایشور ایک ہے۔ دونوں یہ مانتے تھے کہ ایشور کی روشنی سب کو مدد دیتی ہے اور جو اُس سے فائدہ اُٹھاتا ہے اُسے اُزلت سم کے مقام تک پہنچا دیتی ہے۔ دونوں کو اس بات پر پکا وشواس تھا کہ یہ ساری دنیا ایک ایسے اچھے قانون کے سہارے چل رہی ہے جو ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ تک رہے گا۔

زمنے کے ساتھ ساتھ دونوں جگہ تبدیلیاں ہوئیں، ایران اور ہندستان دونوں پہر سے تنگ نگاہ پروہتوں کے جال میں پھنس گئے۔ دونوں جگہ مذہب پر کیول اوردی ریت رواج کی چیز رہ گیا۔ مذہب کی روح دونوں جگہ پر کم ہو گئی۔ سچائی کی جگہ اندھ وشواسوں نے پھر لے لی اور لوگوں کی نئی نئی دچکا کرنے اور ترقی کرنے کی شکی مٹ کر سب کیول رسوم پرستی میں پھنس کر رہ گئے۔

اُس گدے پانی کو پہر سے صاف کر کے مذہب کی شروع کی پاکیزگی کو پہر سے واپس لانے کے لئے ایران میں کوئی نیا مہابوہی پیدا نہیں ہوا۔ ہندستان میں خوش قسمتی سے گوتم بدھ نے جنم لیا۔ گوتم بدھ نے ریت رواجوں اور اندھ وشواسوں کے بوجھ سے لوگوں کو آزاد کر کے انہیں پہر سے اپدیش دیا کہ وہ اس طرح کی نیکی اور سچائی کی زندگی بسر کریں جس میں ان کا اس دنیا میں بھی بھ ہو اور آنا کے ہمیشہ کے جنوں میں بھی کھان ہو۔

اس کے بعد باہر سے پہر ایک ایسی آمد آئی جس نے ہندستان اور ایران دونوں کو پہر سے ایک کر دیا۔

اور بھی بہت سی ملتی جلتی چیزیں ہیں۔ بدیں کا مذہب اور اوستا کا مذہب دونوں ایسے لوگوں کے مذہب ہیں جو جنوں کو خوشی اور اُمنگ کے ساتھ دیکھتے تھے۔ دونوں اوستھی زندگی اور نیکی کے اصولوں کے سچے کھوجی تھے۔ دونوں نے اس اصول کو پالیا تھا کہ سب کا خدا یعنی ایشور ایک ہے۔ دونوں یہ مانتے تھے کہ ایشور کی روشنی سب کو مدد دیتی ہے اور جو اُس سے فائدہ اُٹھاتا ہے اُسے اُزلت سم کے مقام تک پہنچا دیتی ہے۔ دونوں کو اس بات پر پکا وشواس تھا کہ یہ ساری دنیا ایک ایسے اچھے قانون کے سہارے چل رہی ہے جو ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ تک رہے گا۔

زمنے کے ساتھ ساتھ دونوں جگہ تبدیلیاں ہوئیں، ایران اور ہندستان دونوں پہر سے تنگ نگاہ پروہتوں کے جال میں پھنس گئے۔ دونوں جگہ مذہب پر کیول اوردی ریت رواج کی چیز رہ گیا۔ مذہب کی روح دونوں جگہ پر کم ہو گئی۔ سچائی کی جگہ اندھ وشواسوں نے پھر لے لی اور لوگوں کی نئی نئی دچکا کرنے اور ترقی کرنے کی شکی مٹ کر سب کیول رسوم پرستی میں پھنس کر رہ گئے۔

اُس گدے پانی کو پہر سے صاف کر کے مذہب کی شروع کی پاکیزگی کو پہر سے واپس لانے کے لئے ایران میں کوئی نیا مہابوہی پیدا نہیں ہوا۔ ہندستان میں خوش قسمتی سے گوتم بدھ نے جنم لیا۔ گوتم بدھ نے ریت رواجوں اور اندھ وشواسوں کے بوجھ سے لوگوں کو آزاد کر کے انہیں پہر سے اپدیش دیا کہ وہ اس طرح کی نیکی اور سچائی کی زندگی بسر کریں جس میں ان کا اس دنیا میں بھی بھ ہو اور آنا کے ہمیشہ کے جنوں میں بھی کھان ہو۔

اس کے بعد باہر سے پہر ایک ایسی آمد آئی جس نے ہندستان اور ایران دونوں کو پہر سے ایک کر دیا۔

اس کے بعد باہر سے پہر ایک ایسی آمد آئی جس نے ہندستان اور ایران دونوں کو پہر سے ایک کر دیا۔

اس کے بعد باہر سے پہر ایک ایسی آمد آئی جس نے ہندستان اور ایران دونوں کو پہر سے ایک کر دیا۔

دیا۔ شیکندر نے ہخامنشی سامراج کو مٹا کر سکاہت
اگرچہ کے بڑے مہمانرواؤں کے لیے راستہ کھول دیا کہ وہ اپنے نئے مذہب کا
پیغام ہندوستان سے لے جا کر پچھلی دنیا کے دیہاتوں تک پہنچا
سکیں۔ مقدون (سر) اور جندھون (آمو) ندیوں کے کناروں
سے لے کر ہرمزنگ تک پوری ایران ہندو مشنریوں اور ہندو
بھائیوں سے بھر گیا۔ سندھ سے لے کر سیستان تک ہندو ملحد اور
مٹھ کھڑے ہو گئے۔ اشوک کے بعد اُس کے جانشین راجاؤں نے
یہی اس مذہب کو قبول کر لیا اور اُسے اپنے یہاں کے تمام لوگوں
میں پھیلایا۔

ایران میں جو گرمی اور جوش ان تہذیبوں سے پیدا
ہوا اُس سے ایک عجیب طرح کا نیا سنگم، ایک نئی طرح کی
ترکیب پیدا ہوئی جس میں زرتشتی دھرم، عیسائی دھرم اور
ہندو دھرم تینوں اکٹرا کر مل گئے۔ اس نئے مذہب کا نام 'مانی'
مذہب تھا۔

مہاتما مانی ایران کے اندر ایک اس مہذبہ کی پتلی
کے زمانے میں 14 اپریل سن 216ء کو پیدا ہوئے۔ کہا جاتا ہے
کہ وہ اپنی پچھلی ہندوستان گئے اور وہاں دو سال رہ کر وہاں کے
دھرموں کو سمجھتے اور سمجھاتے رہے۔ اُس کے بعد ایران جا کر
آپنے اپنے دھرم کو روپ دیا اور اُس کا پرچار شروع کیا۔
9 اپریل سن 243ء کو وہ پیروز کی معرفت ایران کے بادشاہ شاہپور
سے ملے اور انہوں نے شاہ پور کو قریب قریب اپنے مذہب کا پیرو
بنا لیا۔ لیکن آخر کار پرانے مذہب کے منہ پر وہیں کاہل ہوا
رہا اور سن 277ء میں مانی کو بڑی بددستی کے ساتھ سولی پر
چڑھا دیا گیا۔

مہاتما مانی کے وچار منشیہ جہوں اور اُس کے مقصد کے
بارے میں بنیاداً ہندو وچار تھے۔ اُن کا کہنا تھا کہ یہ دنیا دہم
کی گھاٹی ہے، آدمی کا جہوں قدرتی طور پر درد اور رنج کا
جہوں ہے۔ اُس سے چھٹکارا پانے کی اچھا آدمی میں ایک قدرتی
اچھا ہے۔ چھٹکارا، مکتی یا نجات کا ایک ہی طریقہ ہے اور وہ
ہے تیاگ یعنی اپنے نفس کو پوری طرح قابو میں کرنا، جس کا
آخری نتیجہ خدا یعنی اپنے الگ وجود کو مٹا ڈالنا ہے۔ یہی
نجات ہے۔

چونکہ ہر آدمی اپنا زبردست تیاگ نہیں کر سکتا اس
لئے مانی نے انسانوں کو دو جماعتوں میں تقسیم کیا—ایک
خاص چم ہونے آدمی یعنی بھگت اور دوسرے معمولی انسان
جنہیں وہ مستمعین یعنی سننے والے کہتے تھے۔ خاص چم ہونے لوگوں
کو تین طرح کی پرکھا کرنی پڑتی تھی جنہیں تین مہربیاں کہا جاتا
تھا۔ ان میں پہلی مہربیہ پر مہر لگانا تھا جس کا مطلب تھا گوشت

لڑنے اور شہر سے دُور رہنا۔ دوسری اپنے ہاں پر سحر لگانا یا یاہی کوئی ایسا کام نہ کرنا جس سے کسی دوسرے کو دُور نہ رہے۔ تیسری اپنے دِل پر سحر لگانا یا یاہی ہر قسم کے شہرانی کاموں یاہی ہندی سحر سے پرہیز۔

مہاتما مانی کا مذہب بہت دنوں ایران میں رہا اور دُور دُور کے ملکوں میں بھی پہنچا۔ لیکن ایرانی قوم نے قوم کی حیثیت سے کبھی اسے نہ اپنا یا۔ پر اس کے بعد زرتشتی دھرم بھی بہت دنوں تک ایران میں نہ چل سکا۔ تہذیب ہی دنوں میں اسلام اُس سارے علاقے میں پھیل گیا۔

اگرچہ ایرانیوں نے اسلام قبول کر لیا پھر بھی ایران کی پرانی کلچر باہر کے اثرات کے سامنے نہیں جھکی۔ اُس کے خلاف ایران کی پرانی کلچر نے اسلامی دنیا کے اداروں، اُس کے وچاروں، اُس کے رخ، اُس کے سائنس اور اُس کے فلسفہ پر اپنی پوری چھاپ لگائی۔

اگرچہ ایرانیوں نے عربوں نے ایک مرتبہ ایران کو فتح کر لیا۔ اُسی وقت سے ایران کی پرانی روح پھر سے جاگنی شروع ہو گئی۔ قدرتی طور پر اُس نئی تحریک کا گہوارہ بھی پوری ایران خاص کر خراسان ہی تھا۔ یہ علاقہ ہندو اور ہندو وچاروں میں قبول ہوا تھا۔ اُس لئے یہ لازمی تھا کہ ایرانی کلچر کے پھر سے چمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ہندوستانی وچاروں کی چھاپ دکھائی دے۔

اٹھویں صدی میں عربوں نے ایک مرتبہ ایران کو فتح کر لیا۔ اُسی وقت سے ایران کی پرانی روح پھر سے جاگنی شروع ہو گئی۔ قدرتی طور پر اُس نئی تحریک کا گہوارہ بھی پوری ایران خاص کر خراسان ہی تھا۔ یہ علاقہ ہندو اور ہندو وچاروں میں قبول ہوا تھا۔ اُس لئے یہ لازمی تھا کہ ایرانی کلچر کے پھر سے چمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ہندوستانی وچاروں کی چھاپ دکھائی دے۔

اٹھویں صدی میں عربوں نے ایک مرتبہ ایران کو فتح کر لیا۔ اُسی وقت سے ایران کی پرانی روح پھر سے جاگنی شروع ہو گئی۔ قدرتی طور پر اُس نئی تحریک کا گہوارہ بھی پوری ایران خاص کر خراسان ہی تھا۔ یہ علاقہ ہندو اور ہندو وچاروں میں قبول ہوا تھا۔ اُس لئے یہ لازمی تھا کہ ایرانی کلچر کے پھر سے چمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ہندوستانی وچاروں کی چھاپ دکھائی دے۔

اٹھویں صدی میں عربوں نے ایک مرتبہ ایران کو فتح کر لیا۔ اُسی وقت سے ایران کی پرانی روح پھر سے جاگنی شروع ہو گئی۔ قدرتی طور پر اُس نئی تحریک کا گہوارہ بھی پوری ایران خاص کر خراسان ہی تھا۔ یہ علاقہ ہندو اور ہندو وچاروں میں قبول ہوا تھا۔ اُس لئے یہ لازمی تھا کہ ایرانی کلچر کے پھر سے چمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ہندوستانی وچاروں کی چھاپ دکھائی دے۔

خون اور شراب سے پورا پرہیز۔ دوسری اپنے ہاں پر سحر لگانا یا یاہی کوئی ایسا کام نہ کرنا جس سے کسی دوسرے کو دُور نہ رہے۔ تیسری اپنے دِل پر سحر لگانا یا یاہی ہر قسم کے شہرانی کاموں یاہی ہندی سحر سے پرہیز۔

مہاتما مانی کا مذہب بہت دنوں ایران میں رہا اور دُور دُور کے ملکوں میں بھی پہنچا۔ لیکن ایرانی قوم نے قوم کی حیثیت سے کبھی اسے نہ اپنا یا۔ پر اس کے بعد زرتشتی دھرم بھی بہت دنوں تک ایران میں نہ چل سکا۔ تہذیب ہی دنوں میں اسلام اُس سارے علاقے میں پھیل گیا۔

اگرچہ ایرانیوں نے اسلام قبول کر لیا پھر بھی ایران کی پرانی کلچر باہر کے اثرات کے سامنے نہیں جھکی۔ اُس کے خلاف ایران کی پرانی کلچر نے اسلامی دنیا کے اداروں، اُس کے وچاروں، اُس کے رخ، اُس کے سائنس اور اُس کے فلسفہ پر اپنی پوری چھاپ لگائی۔

اٹھویں صدی میں عربوں نے ایک مرتبہ ایران کو فتح کر لیا۔ اُسی وقت سے ایران کی پرانی روح پھر سے جاگنی شروع ہو گئی۔ قدرتی طور پر اُس نئی تحریک کا گہوارہ بھی پوری ایران خاص کر خراسان ہی تھا۔ یہ علاقہ ہندو اور ہندو وچاروں میں قبول ہوا تھا۔ اُس لئے یہ لازمی تھا کہ ایرانی کلچر کے پھر سے چمکنے کے ساتھ ساتھ اُس پر ہندوستانی وچاروں کی چھاپ دکھائی دے۔

فارسی زبان کے سب سے پہلے روپ دینے والے حنفی بادشاہی سے لیکر رودکی تک سب پرور کے دھننے والے تھے۔ رودکی کو سلطان اشعرہ کہا جاتا ہے۔ وہ سمرقند کے پاس ایک گاؤں میں پیدا ہوا تھا۔ محمود غزنوی کے دربار کے شاعر جیسے ذہنی، عنصری، جو ممکن ہے دامغان کا رہنے والا رہا ہو، عسجدی، ملو چہری، آسدی وغیرہ خراسان یا سیستان کے رہنے والے تھے۔ اُس زمانے کا سب سے بڑا فارسی شاعر فردوسی، جس نے پراچین ایران کی شان کو پھر سے چمکا کر اُمر کو دیا، طوس کا رہنے والا تھا۔

پراچین ایرانی کلچر کی یہ بیداری کھول شہر شاعری تک ہی محدود نہیں رہی۔ فارابی، ابن سینا، ابو ریحان، ابھرومی جیسے بڑے بڑے وچارک اور فلاسفہ اُسی علاقے کے رہنے والے تھے۔

تصوف یعنی اسلامی فلسفہ ویدانت کے پھول سب سے پہلے اُسی علاقے میں کھلے۔ شروع کے صوفیوں میں سے زیادہ تر خراسان کے تھے۔ ابراہیم ازم، احمد خذویہ، ابو علی شہیق، حاتم عاصم، یحییٰ بن معاذ سب بلخ کے رہنے والے تھے۔ فضل بن یاز مو کے رہنے والے تھے۔ معروف کرخی، عبدالعزیز نوری، بشر حافی، ہانذید ہستامی، ابو بکر شہلی سب خراسان کے مختلف حصوں کے رہنے والے تھے۔

تصوف کے اصولوں کو سب سے پہلے خراسانیوں نے
طوس کے رہنے والے ابو نصر سراج نے کتاب المصنف
نہی۔ ابو الحسن الہمدانی نے جو غزنہ کا رہنے والا تھا، کشف
المحجوب لکھی۔ طوس کے رہنے والے الفزالی نے جو اسلامی
زندگی کا سب سے بڑا حکیم اور عالم مانا جاتا ہے، تصوف کے
اوپر بے شمار عالمانہ کتابیں لکھیں۔ آخر میں عبدالرحمن
نیرالدین چلی نے لوائح نام کی وہ بے نظیر کتاب لکھی جو
اسلمی تصوف کی سب سے زیادہ ہر دل عزیز کتاب مانی
جاتی ہے۔

ایک تصوف کی سب سے بڑی قیسم خدمت خراسان
کے ابن صوفی، سنتوں اور شاعروں نے کی۔ فریدالدین عطار جس
نے مطلق الطور لکھا، ابوالمجد سلانی جس نے حقیقۃ الحقیقت
لکھی۔ اور ان سب میں بزرگ سادت، جو تصوف کے فلسفے کے
سرتاج مانے جاتے ہیں، مولانا جلال الدین رومی ہلنڈی نے اپنی
مشہور مثنوی لکھی۔

لیکن تصوف کی سب سے بڑی کرامت خلدیمت خراسان
کے ابن صوفی، سنتوں اور شاعروں نے کی۔ فریدالدین عطار جس
نے مطلق الطور لکھا، ابوالمجد سلانی جس نے حقیقۃ الحقیقت
لکھی۔ اور ان سب میں بزرگ سادت، جو تصوف کے فلسفے کے
سرتاج مانے جاتے ہیں، مولانا جلال الدین رومی ہلنڈی نے اپنی
مشہور مثنوی لکھی۔

یہ بھی قدرتی تھا کہ پوری ایران کا وہی حصہ جو ہندستان
کے دھرمک وچاروں سے آوت پرور ہو چکا تھا اسلام کے آنے کے
بعد ایرانی کلچر کی بیداری اور اسلامی تصوف کا سب سے بڑا گہوارہ
ثابت ہوا۔ ہلنڈی کا رہنے والا خالد، جو ہندو نووہار کے سب
سے بڑے پروہت (پرمکھ) کے خاندان سے تھا، عباسی خلیفوں
کا 'پرمکی وزیر' ہوا۔ اُس نے اسلامی سلطنت کو حقیقی ایرانی
روپ دینے میں بہت زبردست حصہ لیا۔ خالد ہی نے عباسی
خلیفوں کے دربار میں بہت سی سنسکرت اور پہلوی کتابوں کا
عربی میں ترجمہ کرایا۔

یہ بھی قدرتی تھا کہ پوری ایران کا وہی حصہ جو ہندستان
کے دھرمک وچاروں سے آوت پرور ہو چکا تھا اسلام کے آنے کے
بعد ایرانی کلچر کی بیداری اور اسلامی تصوف کا سب سے بڑا گہوارہ
ثابت ہوا۔ ہلنڈی کا رہنے والا خالد، جو ہندو نووہار کے سب
سے بڑے پروہت (پرمکھ) کے خاندان سے تھا، عباسی خلیفوں
کا 'پرمکی وزیر' ہوا۔ اُس نے اسلامی سلطنت کو حقیقی ایرانی
روپ دینے میں بہت زبردست حصہ لیا۔ خالد ہی نے عباسی
خلیفوں کے دربار میں بہت سی سنسکرت اور پہلوی کتابوں کا
عربی میں ترجمہ کرایا۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

ان سب چیزوں کی طرف دھیان دلانے کے لئے زیادہ وقت
کی ضرورت ہے۔ اب میں صرف تھوڑے سے میں مولانا روم کی
مشہور مثنوی کا ذکر کروں گا اور یہ دیکھنا چاہوں گا کہ مولانا روم کے
وچاروں اور ہندستانی فلسفہ ویدانت کے وچاروں میں کتنی
گہری مماثلت ہے۔

مولانا ”محدث الہجود“ کے مائلہ والے تھے جس کا مطلب ہے کہ سوائے خدا کے اور کوئی چمڑے ہی نہیں، ہستی جو دکھائی دیتا ہے سب فریب یعنی دھوکھا ہے۔

مثبتی میں لکھا ہے:—

”حق یعنی اصلیت ایک ہی وجود ہے اور خلق یعنی دنیا میں جو چیزیں دکھائی دیتی ہیں وہ ایسی ہی ہیں جیسے رسی ایک ہو اور اُس میں جگہ جگہ سیکڑوں گڑے لگتی چلاں۔ ایک حقیقت کا ہزاروں جگہ دکھائی دینا اُس حقیقت کو ہزاروں نہیں کر دیتا۔ یہ سب کھول گنتی کا پتھر ہے۔ خدا کی وحدانیت ایک سمندر ہے، جس میں ایک اور دو کا سوال ہی نہیں ہوتا۔ اُس سمندر کے اندر موتی، مچھلی اور لہریں سب سمندر ہی کے روپ اور سمندر ہی سمندر ہیں۔“

ہندو فلسفہ میں خدا کی باہت "ایکم ایادوتھم" کہا گیا ہے۔ جس کا مطلب ہے۔ ایک ہی ہے اور دوسرا کوئی ہے ہی نہیں۔

بہکوت گیتا میں لکھا ہے :—

”وہ آتما سب دیوی شکلیوں میں سب سے اول اور سب سے پر اچھن ہے، اس وشو میں جو کچھ ہے سب اُسی کے اندر ہے۔“

میراتا روم لکھتے ہیں :—

”نہ اُس کا کوئی اشارہ مل سکتا ہے، نہ وہ ظاہر ہو سکتا ہے، نہ کسی کو اُس کا علم ہو سکتا ہے، نہ کسی کو اُس کا نشان مل سکتا ہے۔ عقل اُس کو سوچ سکتی یا بیان میں لا سکتی کی قابلیت نہیں رکھتی۔ وہ نہ آگے ہے نہ پیچھے، نہ نیچے ہے نہ اوپر، وہ نزدیک سے نزدیک ہے، پھر بھی نہ اُس کی کوئی کیفیت بیان کی جاسکتی ہے اور نہ وہ قیاس یعنی گمان میں آسکتا ہے۔“

ہندستان کے فلسفے کی کتابیں کہتی ہیں:—

”وہ، آنرچلیریہ ہے یعنی اُسے کسی بھی شعبوں میں بیان نہیں کیا جاسکتا۔ نہ انہی اُسے دیکھ سکتی ہے، نہ زبان بیان کر سکتی ہے، نہ خیال اُس تک پہنچ سکتا ہے۔“

”پریم آتا“ کا مطلب ٹھیک وہی ہے جو ”ذات مطلق“ کا۔
 مولانا روم لکھتے ہیں—”خدا دنیا میں ایسا ہی ہے جیسے
 ”چلچلے کے اندر مکھن (روغن اندر دوغ)“۔ آپنشدوں میں
 لکھا ہے کہ—”پریم آتا دنیا میں اِس طرح رہا ہوا ہے جیسے
 مٹی میں نمک۔“

(2) دنیا کا وچار—

शुक्रवार '५५

میلانا روم لکھتے ہیں :-

”یہ جہان نفی (نہیں) ہے، تو اگر اصلیت کو ڈھونڈنا چاہتا ہے تو اس کے اندر ڈھونڈ جو ہے۔ جتنی صورتیں دکھائی دیتی ہیں وہ سب صفر (شونہ) ہیں۔ حقیقت (اصلیت) شدوں میں نہیں، معنی میں ہے۔ ہم سب عدم (نہیں) ہیں، ہمارا وجود ایک دھوکا ہے۔ خدا وجود مطلق ہے۔ اکیلے اسی کا وجود ہے۔ شکل کیوں جسموں کے لئے ہے اور معنی کے سامنے جسم کیوں نام ہی نام ہیں۔ ہم سب ایک ہیں۔ سارا وجود ایک موتی کی طرح ہے، نہ کوئی سر ہے اور نہ کوئی پیڑ، یا یوں کہا جائے کہ سب ایک ہی موتی تھا، جیسے ایک آفتاب۔ وہ پانی کی طرح صاف تھا، اس میں کوئی گرہ نہ تھی، وہ نور ہی نور تھا۔ جب اس سے صورتیں نکلیں تو وہ اس طرح ظاہر ہوئیں جس طرح الگ لگ ساٹھ آنکھ کو دکھائی دیتے ہیں۔“

ہندوستان کے فلاسفے کی کتابوں میں لکھا ہے :-

”یہ سارا विश्व माया سے پیدا हुआ ہے۔ یہ سب ایک دھوکا ہے، اسکا کوئی وجود نہیں، یہ دنیا کی دھوکا ہے۔ پرانا یعنی برہمنہ ہی اصلیت ہے۔ باقی سب سائے کی طرح دھوکا ہے۔ شروع میں کیوں وہی وہ تھا—ایک جس کے کوئی آنگ یا حصہ نہ تھے، جس میں کوئی فرق نہ تھا، جو آنا ہی آنا تھا، جو اپنی ہی روشنی سے روشن تھا، جو روشنی ہی روشنی تھا۔ اسی نے پرکری یعنی غیر آنا کو روشن کیا جس سے ساٹھ بنے اور ہزاروں لاکھوں روپ بنے۔ اس طرح یہ وشو وجود میں آیا۔“

(3) آدمی کا بیچارہ:

میلانا روم کے متابیک آدمی کی جان یا آتما اس پریتم خودا کی آتما کا کبھی ایک پرستار یا آتما ہے۔ لیکن آتما نور ہی نور ہے۔ میلانا لکھتے ہیں :-

”جس طرح جان کا پرتو یعنی عکس جسم پر پڑتا ہے اسی طرح میری جان بھی کھول اس پریتم کا کھول ایک عکس ہے۔ یہ جان نور ہی نور ہے اور جسم رنگ اور بو ہے۔ تو اس رنگ و بو سے ہٹ جا، اسے چھوڑ دے اور مت کہ کوئی بھی دوسرا یا غیر ہے۔“

میلانا کے متابیک آدمی کی رُخ شروع میں ایک سوئی ہوئی حالت میں تھی۔ لیکن جیوں جیوں اسے مارکیت یا جہان حاصل ہوتا گیا وہ اپنی اصلیت کو سمجھتی گئی۔ میلانا لکھتے ہیں :-

”آدمی جب سوچا ہوا ہوتا ہے تو اس کی روح آفتاب کی طرح آسمان پر چمکتی ہے اور وہ خود پہلوں میں لپٹا رہتا ہے۔ اے میرے دل! جب کہ معرفت یعنی گہان ہی جان کی پہچان ہے تو جس کو جھٹکا

میلانا روم لکھتے ہیں :-

”یہ جہان نفی (نہیں) ہے، تو اگر اصلیت کو ڈھونڈنا چاہتا ہے تو اس کے اندر ڈھونڈ جو ہے۔ جتنی صورتیں دکھائی دیتی ہیں وہ سب صفر (شونہ) ہیں۔ حقیقت (اصلیت) شدوں میں نہیں، معنی میں ہے۔ ہم سب عدم (نہیں) ہیں، ہمارا وجود ایک دھوکا ہے۔ خدا وجود مطلق ہے۔ اکیلے اسی کا وجود ہے۔ شکل کیوں جسموں کے لئے ہے اور معنی کے سامنے جسم کیوں نام ہی نام ہیں۔ ہم سب ایک ہیں۔ سارا وجود ایک موتی کی طرح ہے، نہ کوئی سر ہے اور نہ کوئی پیڑ، یا یوں کہا جائے کہ سب ایک ہی موتی تھا، جیسے ایک آفتاب۔ وہ پانی کی طرح صاف تھا، اس میں کوئی گرہ نہ تھی، وہ نور ہی نور تھا۔ جب اس سے صورتیں نکلیں تو وہ اس طرح ظاہر ہوئیں جس طرح الگ لگ ساٹھ آنکھ کو دکھائی دیتے ہیں۔“

ہندوستان کے فلسفے کی کتابوں میں لکھا ہے :-

”یہ سارا विश्व माया سے پیدا हुआ ہے۔ یہ سب ایک دھوکا ہے، اس کا کوئی وجود نہیں، یہ دنیا کی دھوکا ہے۔ پرانا یعنی برہمنہ ہی اصلیت ہے۔ باقی سب سائے کی طرح دھوکا ہے۔ شروع میں کیوں وہی وہ تھا—ایک جس کے کوئی آنگ یا حصہ نہ تھے، جس میں کوئی فرق نہ تھا، جو آنا ہی آنا تھا، جو اپنی ہی روشنی سے روشن تھا، جو روشنی ہی روشنی تھا۔ اسی نے پرکری یعنی غیر آنا کو روشن کیا جس سے ساٹھ بنے اور ہزاروں لاکھوں روپ بنے۔ اس طرح یہ وشو وجود میں آیا۔“

(3) آدمی کا بیچارہ:

میلانا روم کے مطابق آدمی کی جان یعنی آتما اس پریتم خدا کی آتما کا کھول ایک پرتو یعنی عکس ہے۔ لیکن آتما نور ہی نور ہے۔ میلانا لکھتے ہیں :-

”جس طرح جان کا پرتو یعنی عکس جسم پر پڑتا ہے اسی طرح میری جان بھی کھول اس پریتم کا کھول ایک عکس ہے۔ یہ جان نور ہی نور ہے اور جسم رنگ اور بو ہے۔ تو اس رنگ و بو سے ہٹ جا، اسے چھوڑ دے اور مت کہ کوئی بھی دوسرا یا غیر ہے۔“

میلانا کے مطابق آدمی کی روح شروع میں ایک سوئی ہوئی حالت میں تھی۔ لیکن جیوں جیوں اسے معرفت یعنی گہان حاصل ہوتا گیا وہ اپنی اصلیت کو سمجھتی گئی۔ میلانا لکھتے ہیں :-

”آدمی جب سوچا ہوا ہوتا ہے تو اس کی روح آفتاب کی طرح آسمان پر چمکتی ہے اور وہ خود پہلوں میں لپٹا رہتا ہے۔ اے میرے دل! جب کہ معرفت یعنی گہان ہی جان کی پہچان ہے تو جس کو جھٹکا

نیا دنیا

کلاسیکی فنون یا ہونر میں، ساہتیہ میں، کلاسیک میں، جدید اور سماجی جیندگی میں، فنی تاملیر میں، گزشتہ کلاسیک کے ہر پہلو میں ہندوستان اور ایران کے مہل جوں کی ہزاروں مثالیں دی جاسکتی ہیں۔

یہ قصہ بہت لمبا ہے۔ لیکن مجھے آپ کو اب بہت زیادہ نہیں روکنا چاہیئے۔

آسمان ہرکے سے خالی ہو گئی اور راجہ (رہسہ) آسمانی بادلی ہے، سائنس کی پوجی ختم ہو گئی اور سائنس آسمانی ہے۔

یہ قصہ بہت لمبا ہے۔ لیکن مجھے آپ کو اب بہت زیادہ نہیں روکنا چاہیئے۔

زبان حرفوں سے خالی ہو گئی اور راجہ (رہسہ) آسمانی بادلی ہے، سائنس کی پوجی ختم ہو گئی اور سائنس آسمانی ہے۔

سہیا دیکا "نیا چین" کے نام

سہیا دیکا "نیا چین" کے نام

بہتی منورما،

بہتی منورما،

توہارا 12-8-55 کا پتر ملا۔ تو جاننئی ہو میں تو ایشور کا اور دھرم کا ماننے والا ہوں۔ پرانیوں میں کچھ کہانیاں بڑی سندر ملتی ہیں۔ ایک یہ ہے:—

توہارا 12-8-55 کا پتر ملا۔ تم جانتی ہو میں تو ایشور کا اور دھرم کا ماننے والا ہوں۔ پرانیوں میں کچھ کہانیاں بڑی سندر ملتی ہیں۔ ایک یہ ہے:—

ایک راجہ تھا۔ اُس کا ایک باغ تھا۔ باغ میں دو مالی تھے۔ وہ دونوں مالی دو طبیعتوں کے تھے۔ ایک مالی کا کام یہ تھا کہ روز صبح جب راجہ صاحب کے اُٹھ کر محل سے نکلے اور باغ کی سیر کو جائے گا سہی اُٹا تو وہ مالی محل کے دوار پر پہنچ جاتا۔ راجہ صاحب کے نکلتے ہی وہ دھرتی چھو کر اُنہیں پرنام کرتا۔ اُن کی اور اُن کے پرورجوں کی استوتی گن کرتا۔ استوتی گن کرتے کرتے وہ اُن کے پیچھے پیچھے ہو لیتا۔ اور جب تک راجہ صاحب باغ کی سیر کرتے رہتے وہ ساتھ ساتھ رہکر بھی کرتا رہتا۔ لوتکر جب راجہ صاحب محل میں پرورجوں کرتے تو وہ پھر دھرتی چھو کر اُنہیں پرنام کرتا اور دن بھر آرام کرتا۔ شام کو پھر جب راجہ صاحب کے سیر کا سہی اُٹا وہ پھر محل کے دوار پر پہنچ جاتا اور یہی سب کرتا۔ راجہ صاحب کے محل میں چلے جانے پر پھر آکرات بھر آرام سے سوتا۔ دوسرا مالی بہت سویرے اُٹ کر اُسی سہی سے باغ کے پھروں اور پودھوں کی

ایک راجہ تھا۔ اُس کا ایک باغ تھا۔ باغ میں دو مالی تھے۔ وہ دونوں مالی دو طبیعتوں کے تھے۔ ایک مالی کا کام یہ تھا کہ روز صبح جب راجہ صاحب کے اُٹھ کر محل سے نکلے اور باغ کی سیر کو جائے گا سہی اُٹا تو وہ مالی محل کے دوار پر پہنچ جاتا۔ راجہ صاحب کے نکلتے ہی وہ دھرتی چھو کر اُنہیں پرنام کرتا۔ اُن کی اور اُن کے پرورجوں کی استوتی گن کرتا۔ استوتی گن کرتے کرتے وہ اُن کے پیچھے پیچھے ہو لیتا۔ اور جب تک راجہ صاحب باغ کی سیر کرتے رہتے وہ ساتھ ساتھ رہکر بھی کرتا رہتا۔ لوتکر جب راجہ صاحب محل میں پرورجوں کرتے تو وہ پھر دھرتی چھو کر اُنہیں پرنام کرتا اور دن بھر آرام کرتا۔ شام کو پھر جب راجہ صاحب کے سیر کا سہی اُٹا وہ پھر محل کے دوار پر پہنچ جاتا اور یہی سب کرتا۔ راجہ صاحب کے محل میں چلے جانے پر پھر آکرات بھر آرام سے سوتا۔ دوسرا مالی بہت سویرے اُٹ کر اُسی سہی سے باغ کے پھروں اور پودھوں کی

تجارتی کتبہ انجینئری پاس لڑکے کام کی تلاش میں دھار دھار کی
تھوکریں کھاتے پھر رہے ہیں۔

گہسواہی تلسی داس جی کا 'رام راج' کا آدرش—جس کے لئے گاندھی جی پڑچین تھے—وہاں اتھوٹ نکٹ دکھائی دے رہا ہے۔ یہاں ہم سے دور بھاگتا ہوا معلوم ہوتا ہے۔ اور 'رام راج' وہیں ہوتا ہے جہاں دھرم کا راج ہو۔ پتو دھرم استو مروتہ ہم صدیوں سے پڑھتے سنتے آئے ہیں۔

اس سب کے اندر کت بہارتیہ روشن شاستر کے انوسار اس پرتوہی پر منوشہ کا سب سے ہوا دھرم سب کے اندر اپنے کو اور اپنے اندر سب کو دیکھا ہے۔ ہمارے آپنشد اور گیتا ہار ہار اسی بات کو دہراتے ہیں، دھرتی کے سب منشیوں سے بھید بھاؤ اٹھا کر، سنسار کی ساری چلتا کو ایک سوتر میں باندھنے کا کام آج ادھیاتمک درشتی سے سب سے پرتو کام ہے۔ کمزور اور ہلوان اچھے اور بڑے، دنیا کے سب دھرموں اور سب آندولنوں میں ہوتے ہیں۔ پر آج مانو سماج کو ایک کرنے کا کام، دنیا کی نیچے دی ہوئی لوہوں چلتا کو ملا کر ایک کرنے کا کام، کوئی آندولن اننی اچھی طرح اور اپنے زوروں کے ساتھ نہیں کر رہا ہے جتنا دنیا کا کمونسٹ آندولن۔ اسی ایک آندولن کے ساتھ راشٹروں راشٹروں اور ’ال‘ پیلے، گورے، کالے کے بھید مٹتے جا رہے ہیں۔ دیکنگ کے سب سے بڑے ہال میں—”آسمان کے نیچے سب ایک ہے“ سوئے سنڈر اکشروں میں لکھا ہوا دیکھ کر اور پھر اس پر ساتھ کے چھلی دوستوں کی قہقہہ ٹپپنی سن کر مجھے اور میرے ساتھیوں کو ایک ہار آشا بلدی کہ سرشتی کے اس باغ میں بھی—

انڈیہ بہری بسلت رت

این قانون و مہم

اُس اسیکو جو جاتی کے بچوں کو جو دو ہزار برس تک
روسی عیسائی دھرم کے سورن یک میں بھی سدا جنگلی اور
اسبھیہ کہلاتی رہی اور تھی اور مدھوہ ایشیا کی نیم جنگلی
قوموں کے لوگوں کو موسکو کے وشدیالیہ میں گورے یورپیوں کے
ساتھ کدھے سے کدھا ملا کر پڑھتے، پروفیسری کرتے اور ایک کلب کی
طرح پریم کے ساتھ رہتے دیکھ کر کس کا ہر دماغ گدگد نہ ہو اُٹھے گا۔
اپنے دیش کو پچاس برس تک دھیلان سے دیکھنے اور اس عمر
میں باہر کی آدھی دنیا کو دیکھنے کے بعد مجھے اِس میں
کوئی بھی سندیہ نہیں کہ کسی دیش وشہش کی کمیونسٹ
پارٹی کے لوگ، چاہے سمجھدار ہوں یا ناسمجھ، اچھے ہوں یا
برے، پر دنیا کا کمیونسٹ آندولن، اُنیک دوشوں کے ہوتے ہوئے
ہی، اِس یک کا سب سے بڑا آدھیاتک آندولن ہے، اور
بھارتیہ آدھیاتک نگاہ سے مجھے روس سے بھی چہن ادھک
بھارا ہے۔

ایک اور دھرم کے نام پر اپنے یہاں کے تھوکنوں میں سڑے گئے
انہو دشواہوں، پانکھنوں اور روڑھی پوجا کو دیکھ کر اور

नया हिन्द

दुसरी ओर बाहर की कम्युनिस्ट कहलाने वाली दुनिया को देखकर मुझे बार बार गांधी जी के वह बड़े भरे शब्द याद आते हैं जो उन्होंने सन् 1924 में दिल्ली में जगह जगह के हिन्दू मुस्लिम वर्गों की खबरों को सुनकर कहे थे—“मुझसे क्या पूछते हो ? मैं तो यह कहने को तैयार हूँ कि ये सब के सब नास्तिक हो जायें तो अच्छा—इनके न मानने से कोई छुड़ा थोड़े ही मिट जायेगा—पर ये आदमी तो बनें।”

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नए चीन और नए भारत को एक दूसरे के निकट लाने की कोशिश इस समय इन दोनों देशों की और इंसानी कौम की सब से बड़ी सेवा है। हमें बहुत जल्दी अपने देश को जिधर ले जाना है उसमें भी हमें इस दोस्ती और एक दूसरे की जानकारी से बहुत कुछ मदद मिल सकती है।

इसलिये, बेटी मनोरमा ! मैं तुम्हारी छोटी सी पत्रिका “नया चीन” का दिल से स्वागत करता हूँ, उसकी उन्नति चाहता हूँ और तुम्हें इस नेक काम के लिए बधाई देता हूँ।

तुमने लेख चाहा है, मुझे और लेख लिखने का समय तो नहीं मिलेगा।

खुश रहो।

सन्देश तुम्हारा,
सुन्दरलाल।

नया चीन

दुसरी ओर बाहर की कम्युनिस्ट कहलाने वाली दुनिया को देखकर मुझे बार बार गांधी जी के वह बड़े भरे शब्द याद आते हैं जो उन्होंने सन् 1924 में दिल्ली में जगह जगह के हिन्दू मुस्लिम वर्गों की खबरों को सुनकर कहे थे—“मुझसे क्या पूछते हो ? मैं तो यह कहने को तैयार हूँ कि ये सब के सब नास्तिक हो जायें तो अच्छा—इनके न मानने से कोई छुड़ा थोड़े ही मिट जायेगा—पर ये आदमी तो बनें।”

इसमें कोई सन्देह नहीं कि नए चीन और नए भारत को एक दूसरे के निकट लाने की कोशिश इस समय इन दोनों देशों की और इंसानी कौम की सब से बड़ी सेवा है। हमें बहुत जल्दी अपने देश को जिधर ले जाना है उसमें भी हमें इस दोस्ती और एक दूसरे की जानकारी से बहुत कुछ मदद मिल सकती है।

इसलिये, बेटी मनोरमा ! मैं तुम्हारी छोटी सी पत्रिका “नया चीन” का दिल से स्वागत करता हूँ, उसकी उन्नति चाहता हूँ और तुम्हें इस नेक काम के लिए बधाई देता हूँ।

तुमने लेख चाहा है, मुझे और लेख लिखने का समय तो नहीं मिलेगा।
खुश रहो।

सन्देश तुम्हारा,
सुन्दरलाल।

700 PAGES,

32 ILLUSTRATIONS

2 COLOURED MAPS

“CHINA TODAY”

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE

Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language...the most objective in approach and comprehensive in treatment.
—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known
—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.
—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happening in New China can do no better than to study it.
—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.
—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of man and matter...brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.
—Vigil, Delhi.

پیشکش مندرجہ ذیل

(پہلے نمبر سے آگے)

(20)

پیشکش مندرجہ ذیل

(پہلے نمبر سے آگے)

(20)

ایک دن توحید ارتہات ایکشورواد کے وشٹہ میں بات چیت شروع ہوئی۔ کہلہ لکھ مہاں سچ پوچھو تو توحید (ارتہات ایکشور کو ایک کہنا) بھی شریک (ایکشور کے ساتھ کسی کو شریک کرنا) ہے۔ ایکشور کو ایک کہنا ہی آئے سہما کے اندر ہاندھنا ہے جب کہ وہ اذیت ہے اور اُس کی کوئی سہما یا سنگھیا نہیں۔ وہ سہما اور سنگھیا دونوں سے پرے ہے۔ اِس لئے اُسے ایک کہنا بھی ٹھیک نہیں اور اگر یہ کہو کہ تو اُن کے اندر کل ہو اللہ ہو احد، ارتہات ایکشور ایک ہے، یہ کہیں کہا گیا ہے تو اِس کا جواب یہ ہے کہ بات کہلہ کے لئے اِس سے بہتر کوئی شہدائے نہیں۔ بدی منشیہ سب کو چھوڑ چھوڑ کر ایک کے سر ہو رہے تو کہا ہی اچھی بات ہے اور بدی اِس سے اوپر اُٹھ کر ایک سے بھی پاک صاف ہو جاوے تو پھر کیا ہی کہلہ میں۔

ہمیں اِس سلسلہ میں ایک کہانی یاد آئی۔ مہاتما دتاترے نے 24 کرو ٹکے تھے جن میں سے ایک بھڑبھڑکن تھی۔ یہ بھڑبھڑکن جب اپنی سسرال گئی تو اُسے ٹوڈنے کا کام دیا گیا۔ ہاتھوں میں چوڑیاں پہنے تھیں۔ اُسے اچھا آئی کہ مہاری چوڑیوں کی جھنگر سسرال کے مردوں کے گل میں بڑبڑکی۔ یہ سوچ کر اُس نے دونوں ہاتھوں سے ایک ایک چوڑی توڑ دی۔ پھر بھی آواز بائی رہی۔ اُس نے دونوں ہاتھوں کی ایک ایک چوڑی اور توڑ دی۔ ہوتے ہوتے دونوں ہاتھوں میں کیول ایک ایک چوڑی رہ گئی۔ اُس سسٹے جھنگر بالکل بند ہو گئی۔ دتاترے نے اِس کہلنا سے ایکشورواد کی شکشا پائی اور اِس اِستری کو اپنا کرو مانا۔ کلتو ہمارے نزدیک تو بدی یہ ایک ہی توڑ دی جائے تو بالکل بھڑبھڑا صاف ہو جائے۔ اصلی ادویت یہی ہے کہ ادویت کے بھاؤ کو سمجھنے کے لئے ادویت کے وچار کو بھی ملنا دینا چاہئے۔

ہمیں اِس سلسلہ میں ایک کہانی یاد آئی۔ مہاتما دتاترے نے 24 گورو کیے تھے جن میں سے ایک بھڑبھڑکن تھی۔ یہ بھڑبھڑکن جب اپنی سسرال گئی تو اُسے ٹوڈنے کا کام دیا گیا۔ ہاتھوں میں چوڑیاں پہنے تھیں۔ اُسے اچھا آئی کہ مہاری چوڑیوں کی جھنگر سسرال کے مردوں کے گل میں بڑبڑکی۔ یہ سوچ کر اُس نے دونوں ہاتھوں سے ایک ایک چوڑی توڑ دی۔ پھر بھی آواز بائی رہی۔ اُس نے دونوں ہاتھوں کی ایک ایک چوڑی اور توڑ دی۔ ہوتے ہوتے دونوں ہاتھوں میں کیول ایک ایک چوڑی رہ گئی۔ اُس سسٹے جھنگر بالکل بند ہو گئی۔ دتاترے نے اِس کہلنا سے ایکشورواد کی شکشا پائی اور اِس اِستری کو اپنا کرو مانا۔ کلتو ہمارے نزدیک تو بدی یہ ایک ہی توڑ دی جائے تو بالکل بھڑبھڑا صاف ہو جائے۔ اصلی ادویت یہی ہے کہ ادویت کے بھاؤ کو سمجھنے کے لئے ادویت کے وچار کو بھی ملنا دینا چاہئے۔

ہمیں اِس سلسلہ میں ایک کہانی یاد آئی۔ مہاتما دتاترے نے 24 گورو کیے تھے جن میں سے ایک بھڑبھڑکن تھی۔ یہ بھڑبھڑکن جب اپنی سسرال گئی تو اُسے ٹوڈنے کا کام دیا گیا۔ ہاتھوں میں چوڑیاں پہنے تھیں۔ اُسے اچھا آئی کہ مہاری چوڑیوں کی جھنگر سسرال کے مردوں کے گل میں بڑبڑکی۔ یہ سوچ کر اُس نے دونوں ہاتھوں سے ایک ایک چوڑی توڑ دی۔ پھر بھی آواز بائی رہی۔ اُس نے دونوں ہاتھوں کی ایک ایک چوڑی اور توڑ دی۔ ہوتے ہوتے دونوں ہاتھوں میں کیول ایک ایک چوڑی رہ گئی۔ اُس سسٹے جھنگر بالکل بند ہو گئی۔ دتاترے نے اِس کہلنا سے ایکشورواد کی شکشا پائی اور اِس اِستری کو اپنا کرو مانا۔ کلتو ہمارے نزدیک تو بدی یہ ایک ہی توڑ دی جائے تو بالکل بھڑبھڑا صاف ہو جائے۔ اصلی ادویت یہی ہے کہ ادویت کے بھاؤ کو سمجھنے کے لئے ادویت کے وچار کو بھی ملنا دینا چاہئے۔

نہستہ من ہرے ہستی بس توری،
چو یکی نہ ہون کھا باشد دوتی۔

نہستہ من ہرے ہستی بس توری،
چو یکی نہ ہون کھا باشد دوتی۔

اُرتہات—میں ہوں ہی نہیں، جو کچھ ہے بس تو ہی ہے۔
جب اُرتی ہی نہ رہی تو دوتی کہل رہ سکتی ہے ؟

اُرتہات—میں ہوں ہی نہیں، جو کچھ ہے بس تو ہی ہے۔
جب اُرتی ہی نہ رہی تو دوتی کہل رہ سکتی ہے ؟

एक दिन जब मैं सेवा में उपस्थित हुआ तो गुरु जी ने एक पद सुनाया—

आप लगाना आप में और आप ही दूँदुनहार,
और होवे तो पाइये यह तो आपही आप.

यह पद सुनाकर गुरु जी कहने लगे कि अद्वैत के इस मुकाम पर अज्ञान या सबाब, पाप या पुण्य कुछ बाकी नहीं रहता.

ज्ञान ध्यान सब उठ गयो, सभा भई सब सुख,
ऊँच नीच अन्तर नहीं, नहीं पाप नहीं पुन.

एक आदमी ने उस समय प्रश्न किया कि महाराज जब पाप पुण्य नहीं तब बहिरत और दोखल क्यों है ? उत्तर दिया कि है भी और नहीं भी है. अगर दुई है तो सब कुछ है और नहीं तो कुछ भी नहीं.

एक दिन कहने लगे कि कबीर बड़े सच्चे अद्वैतवादी थे. जब उनके अद्वैत की खबर रैदास तक पहुँची तो रैदास ने कबीर के पास यह पद लिखाकर भेजा, क्योंकि रैदास सगुण के उपासक थे, जिन्हें सूफी परिभाषा में 'अहले सिकात' कहते हैं और कबीर निर्गुण के उपासक थे, जिन्हें 'अहले जात' कहते हैं—

मा त्रिगुनी बाप जुलाहा, पूत भये ब्रह्मज्ञानी,
आदि अन्त की जाने नार्हीं, अपने मन की ठानी;
जुलहे नहीं नैनहित मोरे रे.

इसका उत्तर कबीर ने इस प्रकार भेजा—

ब्रह्मज्ञान बिन ब्रह्मतत्व बिन, काया शुद्ध न होई,
पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक, दूजे और न कोई;
चमरे नहीं नैनहित मोरे रे.

होते होते एक दिन दोनों की भेंट हुई. दोनों में ज्ञान चर्चा की ठहरी. कबीर ने अपनी भक्ति को उत्तम बताया, रैदास ने अपने मार्ग के उच्चतर होने का दावा किया. अब निर्णय हो तो कैसे ? रैदास सगुण के सच्चे उपासक तो थे ही, उन्होंने रामचन्द्र जी को याद किया. तुरन्त घांड़े पर सवार होकर धनुष बाण हाथ में लिए रामचन्द्र आ उपस्थित हुए और कहा कि—“ए कबीर ! रैदास की बात क्यों नहीं मानता ?” कबीर ने उत्तर दिया—“महाराज ! आप सीता जी की चौकसी करें. इस मामले में दखल न दीजिए. बात नीत मेरी और इनकी है, हम दोनों भुगत लेंगे.” रामचन्द्र जी चुप होकर दूर खड़े हो गए. तब रैदास ने कृष्ण जी को याद किया. वह भी गरुड़ पर सवार, सिर पर मुकट लगाए, मुख पर मुरली धरे सामने आ गए और कबीर को समझाने

एक दिन जब मैं सेवा में उपस्थित हुआ तो गुरु जी ने एक पद सुनाया—

आप लगाना आप में और आप ही दूँदुनहार,
और होवे तो पाइये यह तो आपही आप.

यह पद सुनाकर गुरु जी कहने लगे कि अद्वैत के इस मुकाम पर अज्ञान या सबाब, पाप या पुण्य कुछ बाकी नहीं रहता.

ज्ञान ध्यान सब उठ गयो, सभा भई सब सुख,
ऊँच नीच अन्तर नहीं, नहीं पाप नहीं पुन.

एक आदमी ने उस समय प्रश्न किया कि महाराज जब पाप पुण्य नहीं तब बहिरत और दोखल क्यों है ? उत्तर दिया कि है भी और नहीं भी है. अगर दुई है तो सब कुछ है और नहीं तो कुछ भी नहीं.

एक दिन कहने लगे कि कबीर बड़े सच्चे अद्वैतवादी थे. जब उनके अद्वैत की खबर रैदास तक पहुँची तो रैदास ने कबीर के पास यह पद लिखाकर भेजा, क्योंकि रैदास सगुण के उपासक थे, जिन्हें सूफी परिभाषा में 'अहले सिकात' कहते हैं और कबीर निर्गुण के उपासक थे, जिन्हें 'अहले जात' कहते हैं—

मा त्रिगुनी बाप जुलाहा, पूत भये ब्रह्मज्ञानी,
आदि अन्त की जाने नार्हीं, अपने मन की ठानी;
जुलहे नहीं नैनहित मोरे रे.

इसका उत्तर कबीर ने इस प्रकार भेजा—

ब्रह्मज्ञान बिन ब्रह्मतत्व बिन, काया शुद्ध न होई,
पूरन ब्रह्म सकल घट व्यापक, दूजे और न कोई;
चमरे नहीं नैनहित मोरे रे.

होते होते एक दिन दोनों की भेंट हुई. दोनों में ज्ञान चर्चा की ठहरी. कबीर ने अपनी भक्ति को उत्तम बताया, रैदास ने अपने मार्ग के उच्चतर होने का दावा किया. अब निर्णय हो तो कैसे ? रैदास सगुण के सच्चे उपासक तो थे ही, उन्होंने रामचन्द्र जी को याद किया. तुरन्त घांड़े पर सवार होकर धनुष बाण हाथ में लिए रामचन्द्र आ उपस्थित हुए और कहा कि—“ए कबीर ! रैदास की बात क्यों नहीं मानता ?” कबीर ने उत्तर दिया—“महाराज ! आप सीता जी की चौकसी करें. इस मामले में दखल न दीजिए. बात नीत मेरी और इनकी है, हम दोनों भुगत लेंगे.” रामचन्द्र जी चुप होकर दूर खड़े हो गए. तब रैदास ने कृष्ण जी को याद किया. वह भी गरुड़ पर सवार, सिर पर मुकट लगाए, मुख पर मुरली धरे सामने आ गए और कबीर को समझाने

لنو۔ کबीر نے کہا—”ہے مہاراج ! آپ گویوں سے کسول کرلیجیے۔ میرا ہنکا بھگڑا ہے، بھک جاتا ہے۔“ وہ بھی اٹھ کر رہا۔ کیر دھاس نے مہادیو جی کا دھیان کیا۔ ترنت بیل پر سوار ہو کر دھان میں لٹے اور دھان دیا۔ کیر نے اٹھا کر دیا کہ—”مہاراج ! آپ پاروتی کے پاس جائیں اور ان کی خدمت میں جائیں۔ اس بات سے آپ کو کیا مطلب ؟“ مہادیو جی کو کرودہ آیا اور انہوں نے کیر کے مارنے کو ترشول اٹھایا۔ کیر ترنت ’زم‘ اڑھات ’لا‘ کھر اتر دھان ہوگئے۔ اس سٹہ ریداس کے تھیلے اٹھ دیو ہوئے—”اس ادویت اور ایک مہو کے دریا میں جہاں کیر نے ذہنی لکائی ہے ہم اور وہ سب برابر ہیں۔ یہاں ہمارا بھی کچھ پس نہیں چلتا۔“ ریداس نے کہا کہ—”مہاراج ! میں نے اپنے دھنوں آپ کی سیوا کی اور اس سٹہ کچھ نہ ہوگا تب بھوشہ میں آپ لوگوں سے کیا آسا رکھیں ؟ پس مہاراج !“ اس کے پشچات ریداس نے سب کو دھتا بھائی، کیر سے دیکھالی اور ادویت کا ماری اٹھایا۔

کیر نے کہا—”ہے مہاراج ! آپ گویوں سے کسول کرلیجیے۔ میرا ہنکا بھگڑا ہے، بھک جاتا ہے۔“ وہ بھی اٹھ کر رہا۔ کیر دھاس نے مہادیو جی کا دھیان کیا۔ ترنت بیل پر سوار ہو کر دھان میں لٹے اور دھان دیا۔ کیر نے اٹھا کر دیا کہ—”مہاراج ! آپ پاروتی کے پاس جائیں اور ان کی خدمت میں جائیں۔ اس بات سے آپ کو کیا مطلب ؟“ مہادیو جی کو کرودہ آیا اور انہوں نے کیر کے مارنے کو ترشول اٹھایا۔ کیر ترنت ’زم‘ اڑھات ’لا‘ کھر اتر دھان ہوگئے۔ اس سٹہ ریداس کے تھیلے اٹھ دیو ہوئے—”اس ادویت اور ایک مہو کے دریا میں جہاں کیر نے ذہنی لکائی ہے ہم اور وہ سب برابر ہیں۔ یہاں ہمارا بھی کچھ پس نہیں چلتا۔“ ریداس نے کہا کہ—”مہاراج ! میں نے اپنے دھنوں آپ کی سیوا کی اور اس سٹہ کچھ نہ ہوگا تب بھوشہ میں آپ لوگوں سے کیا آسا رکھیں ؟ پس مہاراج !“ اس کے پشچات ریداس نے سب کو دھتا بھائی، کیر سے دیکھالی اور ادویت کا ماری اٹھایا۔

ملا لکڑی، ٹھاکر پتھر، تھرتھ سگرے پانی،
راما کرشنا مرتے دیکھے، چاروں وید کہانی،
راما مرگئے کرشنا مرگئے، مرگئی لکھو ہائی،
اس کو سادھو کہیں نہ پوچھو، جس کو موت نہ آئی۔

دل گنت مرا علم لدوں و حوس است،
تعلیم کن اگر ترا دسترس است،
گنت کہ الف گنت دگر گنت ہیچ،
دیرخانہ اگر کس است یک حرف پس است۔

ارتھات—میرے دل نے کہا کہ مجھے برہم و دیا سیکھنے کی آکھشا ہے۔ اگر تو جانتا ہے تو مجھے شکشا دے۔ میں نے اتر دیا۔ الف۔ دل نے کہا—اس کے آگے ؟ میں نے کہا—کچھ نہیں۔ سادھان ! منشیہ کے لئے ایک اکشر کافی ہے۔

(23)

ایک دن کہہ لگے کہ ہم نے ایک مولوی سے یہ بات پوچھی کہ کلمہ ”لا الہ الا“ میں لا شبد نشیدہ آتمک ہے اور اس بات کا دیوتک ہے کہ اور بھی خدا ہیں، جن میں سے ایک کو ہم نے لیا اور اوروں کو چھوڑ دیا۔ ارتھات ایک کو مانتے ہیں، اوروں کو نہیں مانتے۔ اس میں تو بڑا ہی ’شرک‘ (بہو ایشور واد) بھرا ہوا ہے۔ یہ ادویت نہیں ہے۔ مولوی صاحب نے اتر دیا کہ بہت سے لوگوں نے اور اور خدا بھی مان رکھے ہیں۔ ہم نے کہا کہ حضرت ! پہلے تو یہ بتائے کہ قرآن

مالا لکھکڑ، ٹاکور پتھر، سیرتھ سگرے پانی،
راما کرشنا مرتے دیکھے، چاروں وید کہانی،
راما مر گئے کرشنا مر گئے، مر گئے لکھو ہائی،
اس کو سادھو کہیں نہ پوچھو، جس کو موت نہ آئی۔

دیل گنت مرا علم لدوں و حوس است،
تعلیم کن اگر ترا دسترس است،
گنت کہ الف گنت دگر گنت ہیچ،
دیرخانہ اگر کس است یک حرف پس است۔

آرتھات—میرے دل نے کہا کہ مجھے برہم و دیا سیکھنے کی آکھشا ہے۔ اگر تو جانتا ہے تو مجھے شکشا دے۔ میں نے اتر دیا۔ الف۔ دل نے کہا—اس کے آگے ؟ میں نے کہا—کچھ نہیں۔ سادھان ! منشیہ کے لئے ایک اکشر کافی ہے۔

(23)

ایک دن کہنے لگے کہ ہم نے ایک مولوی سے یہ بات پوچھی کہ کلمہ ”لا الہ الا“ میں لا شبد نشیدہ آتمک ہے اور اس بات کا دیوتک ہے کہ اور بھی خدا ہیں، جن میں سے ایک کو ہم نے لیا اور اوروں کو چھوڑ دیا۔ ارتھات ایک کو مانتے ہیں، اوروں کو نہیں مانتے۔ اس میں تو بڑا ہی ’شرک‘ (بہو ایشور واد) بھرا ہوا ہے۔ یہ ادویت نہیں ہے۔ مولوی صاحب نے اتر دیا کہ بہت سے لوگوں نے اور اور خدا بھی مان رکھے ہیں۔ ہم نے کہا کہ حضرت ! پہلے تو یہ بتائے کہ قرآن

‘لوح محفوظ’ پر کب لکھا گیا تھا ؟ جس سلسلے سے کہہ کر
قرآن لکھا گیا تھا اُس سلسلے سے کہہ کر جو دوسرا خدا ماننا ؟
مولوی صاحب نے یہ سن کر کہا کہ تم وہابی معلوم ہوئے ہو ؟
م نے کہا کہ توہم کہہ رہے ہو۔ جب ہم نے ایک سچی بات کہی اور
آپ جواب نہ دے سکے تو ہم وہابی ہو گئے !

لا بھلا ہر دو لفظے ساختند
خلاق را در دام و ہم انداختند

بمعنی—‘لا’ اور ‘بھلا’ ان دو لفظوں کو گھمکھم سنسار کو وہم
کے جال میں پھنسا رکھا ہے۔

(24)

ایک دن کہنے لگے کہ ‘سناہت’ میں اخوند عبدالغفور
ہمارے پاس بیٹھے تھے۔ انہوں نے کہا اللہ دھریہ † آیا اور ایک
پرکش کا پتہ توڑ کر اخوند صاحب کے سامنے پیش کیا اور کہنے
لگا کہ بھلا کوئی ایسا ہے جو اسے پھر جوڑ دے۔ اخوند صاحب
بولے کہ خدا تعالیٰ کو یہ سامنے ہے۔ اُس نے اُن کو دیا کہ یہ تو
خدا کے باپ سے بھی نہیں لگ سکتا۔ اخوند صاحب اُسے
گالیوں دینے لگے۔ میں نے کہا کہ صاحب ! آپ کیوں خفا ہوئے
ہیں۔ خدا تعالیٰ تو لعنہ و لعنہ یوں ہے۔ نہ خدا کا باپ ہوگا نہ
پتہ لگانیکا۔ اُسے ہکلمہ دیتے تھے۔

(24)

(25)

ایک بار سید یوحیٰ نے اپنے پتا ویدویاس سے کہا کہ میں
کیا حاصل کرنا چاہتا ہوں۔ پتا نے رائے دی کہ تم راجہ جنگ
کے پاس جاؤ۔ سید یوحیٰ جی سچے کہو جی تھے۔ چل کر راجہ کے
دروازہ پر پہنچے۔ دربانوں سے کہا کہ راجہ جنگ کو میرے
آلے کی خبر کر دو۔ راجہ کو خبر دی گئی کہ دیاس کے بیٹے
سید یوحیٰ آئے ہیں۔ راجہ نے کہا اچھا کھڑا رہنے دو۔ سات
دن کے بعد راجہ کو پھر خبر دی گئی تو کہا دوسرے دروازے پر
لو۔ وہاں بھی سات دن کھڑا رہنا پڑا۔ تیسری بار کہا کہ آئے دو۔
سید یوحیٰ جی اندر گئے تو دیکھا کہ سارا تھانہ بات دنیا داری کا موجود
ہے۔ دل میں سوچنے لگے کہ یہ تو خود جکت دیو ہاری ہے، مجھے کیا
آپدیش دینگا۔ راجہ کو اُن کی اس شکا کا پتہ لگ گیا۔ انہیں پھرا دیا۔
دوسرے دن شہر کے سب گلی کوچوں میں ناچ رنگ کرا دیا۔ پھر

(25)

* مسلمانوں کے مہر کے انوسار قرآن شریف سوشی کے
آدی میں ایہور کے یہاں ایک تختی پر لکھا گیا تھا جسے
‘لوح محفوظ’ کہتے ہیں اور وہاں قرآن اُسی سلسلے سے لکھا
اُس طرح چلا آ رہا ہے۔

† مونیوں کی ایک سہولت و شہس کا نام۔

مُصلیٰ جی کو بلایا اور ایک کٹورا دُھ سے لبا لبا کر کے بھرا دیا۔ ان کے ہاتھ پر رک کر کہا جاؤ ساری جنگ پوری کی پوری کر دو، لیکن خبردار دودھ نہ گرنے پاوے۔ دو سپاہی فٹکی تلوار لے کر ان کے ساتھ کر دیئے کہ اگر ایک ہونٹ بھی اس میں گرے تو سکھوں کے کتھے کتھے آرا دو۔ راجہ جنگ کے حکم سے وہ دونوں سپاہی سکھوں جی کو شہر کے چاروں طرف گھما لائے۔ راجہ نے پوچھا کہ دودھ تو نہیں گرا۔ سپاہیوں نے جواب دیا کہ مہاراج! اگر ایسا ہوتا تو یہ آپ کے پاس جہت کہسے پہنچتے۔ پھر راجہ نے سکھوں جی سے پوچھا کہ آج تم نے شہر میں چاروں طرف ناچ رنگ کا تماشا تو خوب دیکھا۔ انہوں نے جواب دیا کہ مہاراج! سہرے لگے تو اس کٹورے کی حفاظت جان کی ایک آنٹ تھی۔ تر تھا کہ کہیں ایک ہونٹ چھلکی اور مارا گیا، یہاں ایسی حالت میں تماشا کیا خاک دیکھتا! مجھے تو اس کٹورے کے سوائے اور کوئی چیز دکھائی ہی نہیں دی۔ اس پر راجہ جنگ نے کہا کہ جس طرح تمہاری یہ ایک گھڑی بیٹی ہے اسی طرح ہمارا ایک ایک پل بیتتا ہے۔ یہ دھن دولت اور شان شوکت ہماری نظروں میں سب بھیج ہے۔ ہمارا دھیان ہی اُس کی طرف نہیں جاتا۔ مال اسباب، سونا چاندی، بیوی بچے، یہ سب دنیا نہیں ہے، دنیا ابھور کی طرف سے بے خبر ہو جانے کا نام ہے۔ تم نے باہر کی سلطنت اور مال اور دولت کو دیکھ کر ہماری حالت کا غلط انداز لگا لیا ہے۔ اے سکھوں! اسی بات سے جو تم پر بیٹی ہے سمجھ لو کہ وہ سپاہی ہم کے دوت ہیں، کٹورہ تن ہے، دودھ من ہے اور راگ رنگ جو راستہ میں ہو رہے تھے اس اسار سنسار کے عین آرام ہیں۔ اسی طرح ہم بھی دنیا کے دھندلوں میں اس قدر سے مشغول نہیں ہوتے کہ کہیں دودھ نہ چھلک جائے یعنی دل ابھور کی یاد سے چوک کر مارا نہ جائے۔

جب کوئی ایسے من کو لگاوے،
من کے لگاؤ سے ہر پاوے۔

جیسے کابن भरत रूप जल, कर छोड़त मसकावे.
अपना प्रेम सखी से भावे, सुरति गगरि में लावे.
जैसे नटनी बद्धत बाँस पर, नटवा ढोल बजावे.
भार अपना सोल देह का, सुरत बाँस में लावे.

इसके बाद राजा जनक ने मुसलमान जी को उनकी समझ के मुताबिक ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देकर बिदा किया.

(26)

एक फकीर बटाले में रहते थे, उनका नाम था, सबराज-उल्लाह. कुछ दिनों के बाद उन्होंने अपने माथे पर तिलक लगावा, गले में जनेऊ डाला, पन्डितों का सा रहन सहन

सकंदर जी को याद आ और एक कटोरा दूध से लबा लबा कर کے ہاتھ پر رک کر کہا جاؤ ساری جنگ پوری کی پوری کر دو، لیکن خبردار دودھ نہ گرنے پاوے۔ دو سپاہی فٹکی تلوار لے کر ان کے ساتھ کر دیئے کہ اگر ایک ہونٹ بھی اس میں گرے تو سکھوں کے کتھے کتھے آرا دو۔ راجہ جنگ کے حکم سے وہ دونوں سپاہی سکھوں جی کو شہر کے چاروں طرف گھما لائے۔ راجہ نے پوچھا کہ دودھ تو نہیں گرا۔ سپاہیوں نے جواب دیا کہ مہاراج! اگر ایسا ہوتا تو یہ آپ کے پاس جہت کہسے پہنچتے۔ پھر راجہ نے سکھوں جی سے پوچھا کہ آج تم نے شہر میں چاروں طرف ناچ رنگ کا تماشا تو خوب دیکھا۔ انہوں نے جواب دیا کہ مہاراج! سہرے لگے تو اس کٹورے کی حفاظت جان کی ایک آنٹ تھی۔ تر تھا کہ کہیں ایک ہونٹ چھلکی اور مارا گیا، یہاں ایسی حالت میں تماشا کیا خاک دیکھتا! مجھے تو اس کٹورے کے سوائے اور کوئی چیز دکھائی ہی نہیں دی۔ اس پر راجہ جنگ نے کہا کہ جس طرح تمہاری یہ ایک گھڑی بیٹی ہے اسی طرح ہمارا ایک ایک پل بیتتا ہے۔ یہ دھن دولت اور شان شوکت ہماری نظروں میں سب بھیج ہے۔ ہمارا دھیان ہی اُس کی طرف نہیں جاتا۔ مال اسباب، سونا چاندی، بیوی بچے، یہ سب دنیا نہیں ہے، دنیا ابھور کی طرف سے بے خبر ہو جانے کا نام ہے۔ تم نے باہر کی سلطنت اور مال اور دولت کو دیکھ کر ہماری حالت کا غلط انداز لگا لیا ہے۔ اے سکھوں! اسی بات سے جو تم پر بیٹی ہے سمجھ لو کہ وہ سپاہی ہم کے دوت ہیں، کٹورہ تن ہے، دودھ من ہے اور راگ رنگ جو راستہ میں ہو رہے تھے اس اسار سنسار کے عین آرام ہیں۔ اسی طرح ہم بھی دنیا کے دھندلوں میں اس قدر سے مشغول نہیں ہوتے کہ کہیں دودھ نہ چھلک جائے یعنی دل ابھور کی یاد سے چوک کر مارا نہ جائے۔

جب کوئی ایسے من کو لگاوے،
من کے لگاؤ سے ہر پاوے۔

جیسے کاون भरत रूप जल, कर छोड़त मसकावे.
अपना प्रेम सखी से भावे, सुरति गगरि में लावे.
जैसे नटनी बद्धत बाँस पर, नटवा ढोल बजावे.
भार अपना सोल देह का, सुरत बाँस में लावे.

इस के बाद राजा जनक ने मुसलमान जी को उनकी समझ के मुताबिक ब्रह्म-ज्ञान का उपदेश देकर बिदा किया.

(26)

एक फकीर बटाले में रहते थे, उनका नाम था, सबराज-उल्लाह. कुछ दिनों के बाद उन्होंने अपने माथे पर तिलक लगावा, गले में जनेऊ डाला, पन्डितों का सा रहन सहन

اختیار کیا اور رنکی رام اپنا نام رکھا۔ ایک دن دوسرے مسلمانی فقیر جو شیخ کریم الدین دہریہ برہانپوری کے چیلوں میں سے تھے، اُن سے ملنے ہالہ آنے اور پوچھا کہ آپ کا نام کیا ہے اور یہ کیا تھنک ہے؟ اُنہوں نے جواب دیا کہ سہنت کا مطلب ہے رنگ اور اللہ کی جگہ پر ہم نے رام بدل دیا۔ یعنی سہنت اللہ کی جگہ اب ہمارا نام رنکی رام ہے۔ یہ سب سن کر اُس نے ثنوت کے ساتھ رنکی رام سے کہا کہ تم نے اسلام اور ہندو دھرم میں کیا فرق دیکھا جو ایک قہد سے نکل کر دوسری قہد میں جا پہنچے؟ اگر نکلا تھا تو دونوں ہی سے نکلے ہوتے۔ ہم تو سمجھتے تھے کہ تم مہد (ادبیت والی) ہو۔ تم تو ابھی ہندو اور مسلمان ہی کے پھر میں پڑے ہو۔ یہ کہہ کر چل دیئے اور اُن کے پاس نہ ٹہرے۔

(باقی فیر)

(ہاتی پر)

ہو چین شو 'آدرش مزدور' کیسے بنی؟

شریمتی پرہیا ایم۔ اے۔ ہندی ادبیات کا پیننگ
یونیورسٹی پیننگ، چین

ہو چین شو 'آدرش مزدور' کیسے بنی؟
ہندی ادبیات کا پیننگ

ہو چین شو 'آدرش مزدور' کیسے بنی یہ ایک دلچسپ کہانی ہے۔ 12 فروری '55 کو جب مجھے اُس سے ملاقات کرنے کا موقع ملا تو اُس نے مجھے تفصیل سے بتایا۔ اُسے اسی کی رہائی سنائی۔

”جب میں پہلی بار چینگ ناو کی نمبر 6 کپڑا میل میں گئی اور مشین دیکھی تو قہر گئی۔ مگر مہلے ہمت سے کام لیا۔ پچیس سالہوں کے ساتھ میں گراخانے کی ورکشاپ میں کام سیکھنے لگی۔ شروع میں بڑی کھلائی ہوئی، پر میں براہ نہیں ہوئی اور دن پر دن ادھک من لگا کر کم سیکھتی رہی۔ راستہ میں ہر سٹے مورا ڈھیان اُنہ کام پر ہی رہتا تھا۔ سوت ٹولہ پر فوراً اُسے ملا لیا ایک خاص کا (ٹینک) ہے، مگر اُس سٹے اِس کے لئے کوئی خاص طریقہ نہ تھا۔ میں گراخانے سے گھر واپس آتی پر ڈھیان گراخانے میں ہی رہتا تھا۔ گھر میں ما تا جی کے چرخہ کے کچے سے سوت سے جوڑنے کا अभ्यास کرتی۔ اس तरह کا अभ्यास करते करते मेरी उंगलियां फूल जाती थीं. अक्सर आधी रात से ही नींद खुल जाती और मैं दिन होने का इन्तजार करती जिससे कारखाने आकर अपना अभ्यास कर सकूँ.

”جب میں پہلی بار چینگ ناو کی نمبر 6 کپڑا میل میں گئی اور مشین دیکھی تو قہر گئی۔ مگر مہلے ہمت سے کام لیا۔ پچیس سالہوں کے ساتھ میں گراخانے کی ورکشاپ میں کام سیکھنے لگی۔ شروع میں بڑی کھلائی ہوئی، پر میں براہ نہیں ہوئی اور دن پر دن ادھک من لگا کر کم سیکھتی رہی۔ راستہ میں ہر سٹے مورا ڈھیان اُنہ کام پر ہی رہتا تھا۔ سوت ٹولہ پر فوراً اُسے ملا لیا ایک خاص کا (ٹینک) ہے، مگر اُس سٹے اِس کے لئے کوئی خاص طریقہ نہ تھا۔ میں گراخانے سے گھر واپس آتی پر ڈھیان گراخانے میں ہی رہتا تھا۔ گھر میں ما تا جی کے چرخہ کے کچے سے سوت سے جوڑنے کا अभ्यास کرتی۔ اس तरह का अभ्यास करते करते मेरी उंगलियां फूल जाती थीं. अक्सर आधी रात से ही नींद खुल जाती और मैं दिन होने का इन्तजार करती जिससे कारखाने आकर अपना अभ्यास कर सकूँ.

انتظار کرتی جس سے گراخانے جا کر اپنا अभ्यास کر سکوں۔

“ایک دن آجائک مہینے سوت ملا لیا۔ عام طور سے کئی مہینے کے بعد اس کام کا آہٹاس ہو یا تا ہے۔ پر میں کچھ بھی نہیں میں اچھی طرح سوت ملانے لگی۔ اس لئے جب کام کرتا تھا تو دوسرے ساتھیوں کو 200 اسپنڈل اور مجھے 300 اسپنڈل دی گئیں۔ 300 اسپنڈل پر اچھی طرح کام کرتے دیکھ لیکر وہی 400 اسپنڈل مجھے دے دی گئیں۔

“تین ماہ بعد سوت ملانے کا کام ختم ہوا اور ٹریڈنگ کا سیکر آیا۔ 1950 میں تین سال کے تیسرے دن میں پہلی بار میں کام پر گئی۔ میں رات کی پالی میں کام کرنے کے لیے جونی گئی۔ مگر رات میں کام کرنا ہے تو دن میں آرام کرنا چاہئے تھا، پر کام ملانے سے میں اتنی خوش تھی کہ مجھے نیند نہ آئی۔ میں گھر میں ٹھہر ہی نہ سکی۔ اسی دن تین سال کے آپلکھ میں گر خالے میں ایک چھنی ٹانگ ہوا۔ میں اسے دیکھ گئی۔ ٹانگ تھا 'لیو ہولن'—ایک 15 سال کی بہادر لڑکی کی کہانی تھی جو کومنگانگ فوج سے لڑتے لڑتے شہید ہو گئی تھی۔ اس کے لئے چھتر میں ماڑے کہا ہے 'اس کا جہیز مہان تھا اور اس کی موت شاندار'۔ اس کہانی کا مہرے دل پر بہت پریاؤ ہوا اور مہینے میں میں کہا—'لیو ہولن!—میں آپ سے سبق لوں گی۔

“رات کو کام پر گئی مگر دن میں نہ سوتے اور عادت نہ ہونے کے کارن 12 بجے رات تک جاگتی رہی۔ اس کے بعد چھنی لگ گئی۔ اس سیمے میں سے ایک سوت ٹوٹ گیا اور بہت سے روٹی پھل گئی۔ مشین کی آواز سے میں جگ نو گئی پر انسپکٹر نے مجھے چیتاؤنی دی۔ مجھے اپنی اساو دھالی پر بڑا دکھ ہوا۔ کام ختم ہوتے ہی میں گھر واپس آئی اور برابر روٹی رہی۔ میں نے بہت پوچھا پر میں نے کارن نہ بتایا۔ مجھے تو تھا کہ بڑی مشکل سے تو گر خالے میں کام ملا اور اب اپنی ہی لپرواہی کے کارن شاید نکال دی جائیگی۔ اسی سیمے میں لیوہولن کی یاد آگئی۔ میں نے سوچا کہ رولے سے کیا ناپیدہ ؟ ہمت کر کے سدھار کرنا چاہئے۔ اس وچار سے مجھے بڑی شانتی ملی اور نیند آگئی۔

“دوسرے دن سوت سے بہت پہلے گر خالے گئی۔ مشین کو صاف کیا اور کام میں لگ گئی۔ پورے سیمے میں بڑی سترک رہی۔ اس دن کوئی خاص گھٹنا نہیں ہوئی۔

“اپنے انویسٹمنٹ کے ساتھ ساتھ میں گر خالے کے پرانے مزدوروں سے ان کے انویسٹمنٹ بھی پوچھتی اور اس سے نتیجہ نکالتی اس کے آگوسار کام کرتی۔ دھیرے دھیرے سوت ملانے کے کام میں لڑتی ہوئی۔ اس کام میں ترقی ہوتے دیکھ مجھے تین چار لوگوں کے ساتھ دوسرے ورکشاپ میں بھیج دیا گیا۔ ہم سبکو میں بڑا تر لگا۔ سوچا—شاید ہم نے کچھ غلطی کی ہے اس سے ہمیں یہاں سے ہٹا دیا جا رہا ہے۔ مگر بعد میں ہمیں اصلی کارن معلوم ہو گیا۔ نئی ورکشاپ نمبر 3 میں ہو رہی تھی اس لئے سے کام کرتے تھی۔

“ایک دن آجائک مہینے سوت ملا لیا۔ عام طور سے کئی مہینے کے بعد اس کام کا آہٹاس ہو یا تا ہے۔ پر میں کچھ بھی نہیں میں اچھی طرح سوت ملانے لگی۔ اس لئے جب کام کرتا تھا تو دوسرے ساتھیوں کو 200 اسپنڈل اور مجھے 300 اسپنڈل دی گئیں۔ 300 اسپنڈل پر اچھی طرح کام کرتے دیکھ لیکر وہی 400 اسپنڈل مجھے دے دی گئیں۔

“تین ماہ بعد سوت ملانے کا کام ختم ہوا اور ٹریڈنگ کا سیکر آیا۔ 1950 میں تین سال کے تیسرے دن میں پہلی بار میں کام پر گئی۔ میں رات کی پالی میں کام کرنے کے لیے جونی گئی۔ مگر رات میں کام کرنا ہے تو دن میں آرام کرنا چاہئے تھا، پر کام ملانے سے میں اتنی خوش تھی کہ مجھے نیند نہ آئی۔ میں گھر میں ٹھہر ہی نہ سکی۔ اسی دن تین سال کے آپلکھ میں گر خالے میں ایک چھنی ٹانگ ہوا۔ میں اسے دیکھ گئی۔ ٹانگ تھا 'لیو ہولن'—ایک 15 سال کی بہادر لڑکی کی کہانی تھی جو کومنگانگ فوج سے لڑتے لڑتے شہید ہو گئی تھی۔ اس کے لئے چھتر میں ماڑے کہا ہے 'اس کا جہیز مہان تھا اور اس کی موت شاندار'۔ اس کہانی کا مہرے دل پر بہت پریاؤ ہوا اور مہینے میں میں کہا—'لیو ہولن!—میں آپ سے سبق لوں گی۔

“رات کو کام پر گئی مگر دن میں نہ سوتے اور عادت نہ ہونے کے کارن 12 بجے رات تک جاگتی رہی۔ اس کے بعد چھنی لگ گئی۔ اس سیمے میں سے ایک سوت ٹوٹ گیا اور بہت سے روٹی پھل گئی۔ مشین کی آواز سے میں جگ نو گئی پر انسپکٹر نے مجھے چیتاؤنی دی۔ مجھے اپنی اساو دھالی پر بڑا دکھ ہوا۔ کام ختم ہوتے ہی میں گھر واپس آئی اور برابر روٹی رہی۔ میں نے بہت پوچھا پر میں نے کارن نہ بتایا۔ مجھے تو تھا کہ بڑی مشکل سے تو گر خالے میں کام ملا اور اب اپنی ہی لپرواہی کے کارن شاید نکال دی جائیگی۔ اسی سیمے میں لیوہولن کی یاد آگئی۔ میں نے سوچا کہ رولے سے کیا ناپیدہ ؟ ہمت کر کے سدھار کرنا چاہئے۔ اس وچار سے مجھے بڑی شانتی ملی اور نیند آگئی۔

“دوسرے دن سوت سے بہت پہلے گر خالے گئی۔ مشین کو صاف کیا اور کام میں لگ گئی۔ پورے سیمے میں بڑی سترک رہی۔ اس دن کوئی خاص گھٹنا نہیں ہوئی۔

“اپنے انویسٹمنٹ کے ساتھ ساتھ میں گر خالے کے پرانے مزدوروں سے ان کے انویسٹمنٹ بھی پوچھتی اور اس سے نتیجہ نکالتی اس کے آگوسار کام کرتی۔ دھیرے دھیرے سوت ملانے کے کام میں لڑتی ہوئی۔ اس کام میں ترقی ہوتے دیکھ مجھے تین چار لوگوں کے ساتھ دوسرے ورکشاپ میں بھیج دیا گیا۔ ہم سبکو میں بڑا تر لگا۔ سوچا—شاید ہم نے کچھ غلطی کی ہے اس سے ہمیں یہاں سے ہٹا دیا جا رہا ہے۔ مگر بعد میں ہمیں اصلی کارن معلوم ہو گیا۔ نئی ورکشاپ نمبر 3 میں ہو رہی تھی اس لئے سے کام کرتے تھی۔

“1950 کا مہرے دیس آیا۔ کارخانے میں بھس شروع ہوئی۔ بیسویں سال “پیداوار کا بڑا ہوا اور مشین کی صفائی۔“ مجھے معلوم ہوا کہ روز شام کو اندھیری مچانے کریکے اور دیکھنے کی کسی کی مشین سے نکلی روٹی باہر نکل کر خراب ہوئی۔ اس لئے کم سے کم روٹی خراب ہونا چاہئے یہ کارخانے کا نمونہ ہو گیا۔ میں نے بھی اس مقابلے میں بڑے افسانے سے بھاگ لیا۔ مہرے مقابلے لنگ آئے سن نام کی ایک بڑی سے ہوا۔ روز ایک آدمی کتنی کم روٹی خراب کرنا ہے اس کا مقابلہ تھا۔ پہلے تو ہر آدمی کی مشین سے کئی پونڈ روٹی خراب ہو جاتی تھی پھر اس مقابلے میں رشیدی سادھائی کے کارن ایک آدمی کی مشین سے صرف دو پونڈ روٹی خراب ہوئی تھی۔

“اس سبب میں سوچا کرتی تھی کہ کیسے کوئی اچھا طریقہ نکالا جائے جس سے روٹی کم سے کم خراب ہو۔ میں نے دیکھا کہ مزدور بار بار یہاں سے وہاں اور وہاں سے یہاں دور دور کر سوت ملایا کرتے ہیں اس لئے ہمیشہ بہت ویسٹ دکھائی دیتے ہیں اور جب مشین بہت کندی ہو جاتی ہے تبھی صفائی کرتے ہیں۔ اس سے سبب بہت لگتا ہے۔ میں نے سوچا کیا دونوں کا کام ایک ساتھ نہیں ہو سکتا یعنی کیا ایسا طریقہ نہیں ہو سکتا جس سے سوت ملانے کا کام اور مشین کی صفائی کا کام ایک ساتھ چلتا رہے۔ تجربے کے طور پر یہاں وہاں دورے کے بجائے میں جلدی جلدی گھوم گھوم کر سوت ملانے لگی اور ساتھ ہی مشین کی صفائی کا کام کرنے کی کوشش کرتے لگی۔ پوری مشین کو میں جلدی جلدی گھوم گھوم کر دھیان پرورک دیکھتی رہتی اور اگر سوت نہیں ٹوٹتا تو صفائی کا کام کرتی رہتی۔ اس سے آرمی میں بڑی کٹھنائی ہوئی یہاں تک کہ کبھی کبھی جلدی سے سوت ملانے میں مہوری آنکھیاں مشین سے چھو جاتیں اور کٹ جاتیں۔ کبھی کبھی کلائی میں چوٹ آ جاتی۔ مگر اس سے میں نے اپنا تجربہ نہیں چھوڑا۔ تھوڑے دنوں کے بعد ایک نوبت صاف دکھائی دیئے لگا۔ مجھے خود ایسا لگا کہ میں دوسرے مزدوروں کی طرح پریشان نہیں رہتی۔ ایک دم کام ختم ہونے کے بعد روٹی خراب ہونے کی قللا کی کٹی تو مہوری مشین سے کھول 5 اؤنس روٹی خراب ہوئی تھی۔ جب کہ دوسرے مزدور ایک بار میں 27 اؤنس روٹی خراب کرتے تو مجھ سے صرف 5 اؤنس روٹی خراب ہوتی تھی۔ یہ تعداد مہوری مشین پر روز روز ایک سی رہی۔

“دوسرے مزدور ساتھیوں نے میرے اوپر آوا جائے کسینی شروع کی۔ اس سے مجھے بہت دھڑکا۔ کبھی کبھی میں سوچتی تھی کہ پہلے کے ہی طریقے سے کام کروں، کارخانے کے یونک سب کے ممبروں نے بھی میرے اوپر آوا جائے کسینی۔ پر یونک سب کی پرہان بھیانک بھان شولن نے ایک سبھا کی اور مزدوروں کے اس بھارت کی نیندا کی۔ ساتھ ہی انہوں نے مجھے بھی اس بھارت کیا۔ مہرے افسانے پر جوتا ہو گیا۔

“1950 کا مہرے دیس آیا۔ کارخانے میں بھس شروع ہوئی۔ بیسویں سال “پیداوار کا بڑا ہوا اور مشین کی صفائی۔“ مجھے معلوم ہوا کہ روز شام کو اندھیری مچانے کریکے اور دیکھنے کی کسی کی مشین سے نکلی روٹی باہر نکل کر خراب ہوئی۔ اس لئے کم سے کم روٹی خراب ہونا چاہئے یہ کارخانے کا نمونہ ہو گیا۔ میں نے بھی اس مقابلے میں بڑے افسانے سے بھاگ لیا۔ مہرے مقابلے لنگ آئے سن نام کی ایک بڑی سے ہوا۔ روز ایک آدمی کتنی کم روٹی خراب کرنا ہے اس کا مقابلہ تھا۔ پہلے تو ہر آدمی کی مشین سے کئی پونڈ روٹی خراب ہو جاتی تھی پھر اس مقابلے میں رشیدی سادھائی کے کارن ایک آدمی کی مشین سے صرف دو پونڈ روٹی خراب ہوئی تھی۔

“اس سبب میں سوچا کرتی تھی کہ کیسے کوئی اچھا طریقہ نکالا جائے جس سے روٹی کم سے کم خراب ہو۔ میں نے دیکھا کہ مزدور بار بار یہاں سے وہاں اور وہاں سے یہاں دور دور کر سوت ملایا کرتے ہیں اس لئے ہمیشہ بہت ویسٹ دکھائی دیتے ہیں اور جب مشین بہت کندی ہو جاتی ہے تبھی صفائی کرتے ہیں۔ اس سے سبب بہت لگتا ہے۔ میں نے سوچا کیا دونوں کا کام ایک ساتھ نہیں ہو سکتا یعنی کیا ایسا طریقہ نہیں ہو سکتا جس سے سوت ملانے کا کام اور مشین کی صفائی کا کام ایک ساتھ چلتا رہے۔ تجربے کے طور پر یہاں وہاں دورے کے بجائے میں جلدی جلدی گھوم گھوم کر سوت ملانے لگی اور ساتھ ہی مشین کی صفائی کا کام کرنے کی کوشش کرتے لگی۔ پوری مشین کو میں جلدی جلدی گھوم گھوم کر دھیان پرورک دیکھتی رہتی اور اگر سوت نہیں ٹوٹتا تو صفائی کا کام کرتی رہتی۔ اس سے آرمی میں بڑی کٹھنائی ہوئی یہاں تک کہ کبھی کبھی جلدی سے سوت ملانے میں مہوری آنکھیاں مشین سے چھو جاتیں اور کٹ جاتیں۔ کبھی کبھی کلائی میں چوٹ آ جاتی۔ مگر اس سے میں نے اپنا تجربہ نہیں چھوڑا۔ تھوڑے دنوں کے بعد ایک نوبت صاف دکھائی دیئے لگا۔ مجھے خود ایسا لگا کہ میں دوسرے مزدوروں کی طرح پریشان نہیں رہتی۔ ایک دم کام ختم ہونے کے بعد روٹی خراب ہونے کی قللا کی کٹی تو مہوری مشین سے کھول 5 اؤنس روٹی خراب ہوئی تھی۔ جب کہ دوسرے مزدور ایک بار میں 27 اؤنس روٹی خراب کرتے تو مجھ سے صرف 5 اؤنس روٹی خراب ہوتی تھی۔ یہ تعداد مہوری مشین پر روز روز ایک سی رہی۔

“دوسرے مزدور ساتھیوں نے میرے اوپر آوا جائے کسینی شروع کی۔ اس سے مجھے بہت دھڑکا۔ کبھی کبھی میں سوچتی تھی کہ پہلے کے ہی طریقے سے کام کروں، کارخانے کے یونک سب کے ممبروں نے بھی میرے اوپر آوا جائے کسینی۔ پر یونک سب کی پرہان بھیانک بھان شولن نے ایک سبھا کی اور مزدوروں کے اس بھارت کی نیندا کی۔ ساتھ ہی انہوں نے مجھے بھی اس بھارت کیا۔ مہرے افسانے پر جوتا ہو گیا۔

”میرے پاس ہے یہ ایک دوسری کام کرنی ہے۔ وہ بھی اکثر سچے پر طبع کس دیتی تھی۔ اس کے ایک چھوٹا بچہ تھا اور اس بچے کو دیکھ کر وہ کئی بار باہر جاتی تھی۔ اس سٹم میں اپنی مشین کے ساتھ ساتھ اس کی مشین کی بھی دیکھ بھال کرتی تھی۔ اس طرح ایک بار میں آٹھ سو اسپنڈل کی دیکھ بھال میں کر لیتی تھی۔ اس لئے بعد میں تھلٹ روپ سے 600 اسپنڈل مجھے سونپ دی گئیں۔ اس طرح جب میں دوسروں کی مدد کرتی تو لوگوں کے طبع بھی کم ہو گئے۔“

”ہر سال کی طرح اس سال بھی اہلکاروں نے مزدوروں کے لئے انریژن اور طریقوں پر سبھا کی اور اس بار مہرے طریقہ پر بھی وچار کیا۔ راد واد ہونے کے بعد مہرے انریژن کا نتیجہ نکالا گیا۔‘تین طوح کی محنت‘ یعنی ہاتھ کی محنت، ہاؤں کی محنت اور آنکھوں کی محنت۔ یہ نتیجہ اخباروں میں چھاپا گیا۔ بعد میں کارخانے کے سب لوگ مہرے طریقہ سے کام کرنے لگے۔ مگر اثر ٹھیک نہیں ہوا کیونکہ مزدور دن بھر بیست و پریشان رہتے اور بہت تھک جاتے تھے اور روٹی کی درآمدی بھی ہوتی رہتی تھی۔ اس سے ظاہر ہوا کہ یہ طریقہ بچہ ٹھیک نہیں ہے۔ لیکن میں خود تو بڑے آرام سے کام کرتی ہی اور روٹی بھی کم خراب ہوتی تھی اس لئے کارخانے میں ہر سے مہرے طریقہ پر وچار ہوا اور پہلے ہی کی طرح نتیجہ نکالا گیا‘ وہی تین محنت۔ لیکن اس سے مزدور پرہیز نہیں کرتے۔“

”اس کے بعد کل چین ٹیکسٹائل ٹریڈ یونین کے پیدوار بھاگ کے آپ ملاری چو۔ سو۔ نو۔ لئے انریژن اور طریقوں و سمجھنے کے لئے سویم چھنگتاؤ آئے۔ ہمارے کارخانے میں ایک خاص کمیٹی بنائی گئی۔‘ہو چین شو کے طریقہ کی ادھین لیتی‘ 4 جون 1951 کو اس کمیٹی کے سب ممبر میرا کام دیکھنے آئے۔ اس سٹم میں دل میں بہت گہرائی تھی‘ لیکن سب لوگوں کو بہت تعجب ہوا کہ میں کرم کے ساتھ اور بڑی آسانی کے ساتھ کام کرتی ہوں۔ چار دن تک میرا کام دیکھنے کے بعد 8 جون 1951 کو مہرے طریقہ کے سبب میں ایک سبھا لی گئی۔ سبھا میں خاص خاص سوالوں پر بحث ہوئی اور یہ نتیجہ نکالا گیا کہ میں ایک خاص ڈھنگ اور کرم کے نمونہ مشین پر اپنا سٹم بانٹتی ہوں اس سے مجھے کئی گھنٹائی میں ہوتی۔ اہلکاروں کی رائے میں یہ طریقہ ٹھیک تھا۔ سب سے پہلے ہنگتاؤ کے سرکاری ٹیکسٹائل کارخانے نمبر 1 میں ایک پرگتی شیل مزدوروں کے دل نے اسے لاکو کیا۔ جس کی پروہان ای۔ سو۔ ان۔ تھیں۔ دوسروں کو سکھانے کے لئے میں لی سو ان کے ساتھ کام کرنے لگی۔ کارخانے کے اور مزدور دیکھتے آتے تھے پر انہیں رشوائیں نہیں ہوتا تھا لیکن جب لی سو ان کے دل نے اس طریقہ

کے अनुसार سہولیاتا پورے کام کر دیا گیا تو دوسرے مزدوروں کو بھی شمول ہو گیا۔ اسی کے بعد چنگٹو کے دوسرے کارخانوں میں بھی مزدوروں نے اس طریقے کے انیسار کام کیا اور اسی سال یعنی مئی 1951 میں دوسرے درجے کا یعنی پورے چنگٹو کا ”آدھی مزدور“ اعلان کر دیا گیا۔

”مہرے طریقے پر اب اندھکریوں کو پکا وشول ہو گیا : چنگٹو کے ٹیکسٹائل کارخانوں کے بعد اب وہ اس طریقے کو دیہ کے دوسرے ٹیکسٹائل کارخانوں میں بھی لاگو کرنا چاہتے تھے۔ اس لئے اگست 1951 میں چنگٹو میں ٹیکسٹائل ایڈمنسٹریٹیشن بورڈ نے چنگٹو کے ٹیکسٹائل ملوں کے کرمچاریوں کی ایک سبھا کی اور مہرے طریقے پر ایک دوسرے نے اپنے الیہو سٹائم اور ایلی ایلی رائے بتائی۔ اس مہنگ میں تل چن ٹیکسٹائل ٹریڈ یونین کے پردھان چون ساؤ من نے حساب لگایا کہ اگر ”ہوچین شو طریقے“ سے کام لیا جائے تو سارے دیہ میں ایک سال میں 44460 یونٹ سوت کی پیداوار ہو سکتی ہے اور روٹی کی پہلوی میں سے 86 فیصدی روٹی بچائی جاسکتی ہے۔

”ستمبر 1951 میں میں اپنے برائے کارخانے واپس آگئی اور اپنے نئے طریقے سے کام شروع کر دیا۔

”اب سب لوگ بڑی خوشی اور وشواس کے ساتھ مجھے سہوگ دیتے اور مہرے طریقے کے انیسار کام کرتے تھے۔ اس سہ سارے دیہ کے لئے مہرا طریقہ منظور کیا جا چکا تھا۔ اسی سہ مجھے پہلے درجے کا یعنی پورے دیہ کا ”آدھی مزدور“ گھشت کر دیا گیا۔“

”ستمبر 1951 میں میں اپنے برائے کارخانے واپس آگئی اور اپنے نئے طریقے سے کام شروع کر دیا۔

”اب سب لوگ بڑی خوشی اور وشواس کے ساتھ مجھے سہوگ دیتے اور مہرے طریقے کے انیسار کام کرتے تھے۔ اس سہ سارے دیہ کے لئے مہرا طریقہ منظور کیا جا چکا تھا۔ اسی سہ مجھے پہلے درجے کا یعنی پورے دیہ کا ”آدھی مزدور“ گھشت کر دیا گیا۔“

ابنہا بھ نہیں جس کی آنکھ پھوٹ گئی ہے۔
ابنہا وہ ہے جو اپنے دوش تھانکتا ہے۔

—گاندھی جی

—گاندھی جی

موہممد ساہب کے کچھ उपदेश

محمّد صاحب کے کچھ اُپدیشی

ابن ماجہ—میری مریضی

ابن ماجہ—میری مریضی

موہممد ساہب نے کہا :—”تو میں سے کسی کو جب کسی مردہ کا جنازہ جانا دکھائی دے اور تم اس کے ساتھ نہ چلو تو تمہیں اس سے تک اپنی جگہ پر کھڑا رہنا چاہئے جب تک کہ وہ جنازہ نکل نہ جائے یا اسے نیچے اتار کر نہ رکھ دیا جائے۔“

محمّد صاحب نے کہا:—”تم میں سے کسی کو جب کسی مردہ کا جنازہ جانا دکھائی دے اور تم اس کے ساتھ نہ چلو تو تمہیں اس سے تک اپنی جگہ پر کھڑا رہنا چاہئے جب تک کہ وہ جنازہ نکل نہ جائے یا اسے نیچے اتار کر نہ رکھ دیا جائے۔“

—امامیر بن ربیع: بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، تیرمیزی، نسائی

—امامیر بن ربیع: بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، تیرمیزی، نسائی

موہممد ساہب کے پاس سے ایک جنازہ گزرا اور وہ کھڑے ہو گئے۔ ان سے کسی نے کہا—”یہ تو ایک یہودی کا جنازہ تھا۔“

محمّد صاحب کے پاس سے ایک جنازہ گزرا اور وہ کھڑے ہو گئے۔ ان سے کسی نے کہا—”یہ تو ایک یہودی کا جنازہ تھا۔“

—ابن ماجہ: بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، تیرمیزی، نسائی

—عبدالرحمان بن ابولہول: بخاری، مسلم،

موہممد ساہب نے کہا:—”اے آدم کی اولاد! تمہارے لئے یہ زیادہ اچھا ہے کہ جنگلی بھی دولت یا سامان تمہارے پاس گزارے سے زیادہ ہو وہ تم اپنے ہاتھ سے دوسروں کو دے دو اور یہ تمہارے لئے برا ہے کہ اس دولت یا سامان کو تم اپنے پاس چھوڑ دے۔“

محمّد صاحب نے کہا:—”اے آدم کی اولاد! تمہارے لئے یہ زیادہ اچھا ہے کہ جنگلی بھی دولت یا سامان تمہارے پاس گزارے سے زیادہ ہو وہ تم اپنے ہاتھ سے دوسروں کو دے دو اور یہ تمہارے لئے برا ہے کہ اس دولت یا سامان کو تم اپنے پاس چھوڑ دے۔“

—ابن ماجہ: بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، تیرمیزی، نسائی

—ابوعمامہ: مسلم، ترمذی،

موہممد ساہب نے کہا:—”روکنا رکھنے، چاکاٹ (دان) دینے اور نماز پڑھنے سے بھی بدکار جو چیز ہے کیا وہ میں تمہیں بتاؤں؟ وہ چیز ہے لوگوں میں میل بڑھانا، کیونکہ سچ یہ ہے کہ یہود اس چکاٹ کو ختم کر دیتی ہیں جس کے سہارے انسانی سماج زندہ ہے۔“

محمّد صاحب نے کہا:—”روزہ رکھنے، ذکا (دان) دینے اور نماز پڑھنے سے بھی بدکار جو چیز ہے کیا وہ میں تمہیں بتاؤں؟ وہ چیز ہے لوگوں میں میل بڑھانا، کیونکہ سچ یہ ہے کہ یہود اس چکاٹ کو ختم کر دیتی ہیں جس کے سہارے انسانی سماج زندہ ہے۔“

—ابن ماجہ: بخاری، مسلم، ابوداؤد، ترمذی، نسائی، تیرمیزی، نسائی

—ابوداؤد: ابوداؤد، ترمذی،

موہممد ساہب نے یہ بھی کہا کہ:—”میرے کہنے کا یہ مطلب نہیں ہے کہ یہود کی خشکی سے سو کے بال اُڑ جائے ہیں، مگر مطلب یہ ہے کہ یہود سے دین کی جو حالت نکلتی جاتی ہے۔“

محمّد صاحب نے یہ بھی کہا کہ:—”میرے کہنے کا یہ مطلب نہیں ہے کہ یہود کی خشکی سے سو کے بال اُڑ جائے ہیں، مگر مطلب یہ ہے کہ یہود سے دین کی جو حالت نکلتی جاتی ہے۔“

—تیرمیزی

—ترمذی

موہممد ساہب نے کہا کہ :—”یوسیبت میں پدے کسی آبادی کو جو کوئی سستلی دےوا ہے اسکو بسلامت سے بکیت کلا ملایا ہے۔“

—ابن مسعود: تیرمیزی

موہممد ساہب نے کہا کہ :—”سچ یہ ہے کہ کوئی بھی آبادی اسلام کا یاہی سچے سنااتن دین کا پالان کرنےوالا نہیں کہا جا سکتا جب تک کہ اسکو سب پکوسی اسکو بکیتاچاروں سے پوری ترہ سترکیت نہ ہوں۔“

—ابن مسعود: ابھماد: بھکھی

موہممد ساہب نے کہا کہ :—”اس زمین پر خدایا کی مصلوک (سٹریٹ) کے ساتھ جو کوئی نکریت سے پش آتا ہے وہ خدایا کے ساتھ نکریت کا دیکھار کرتا ہے۔“

—ابوبکر: تیرمیزی

پیرامبر سے کہا گیا کہ :—”آپ سترکوں یاہی مورتی بوجھوں کے درونہ خدایا سے پراپتہا کیجئے اور انہیں بدعا دیجئے۔“ پیغمبر نے جواب دیا :—”میں سب کے لئے رحمت بنا کر بھوجا گیا ہوں کسی کو بد دعا دیئے کے لئے دنیا میں نہیں آیا۔“

—ابو ہریرہ: مسلم

ابوبکر اپنے کسی ظلم کو گالی دے رہے تھے۔ اسی سبب پیغمبر اذہر سے آئے۔ پیغمبر نے ابوبکر سے کہا :—”کیا کوئی سچا اور نیک آدمی کہی کسی کو گالی دیتا ہے؟ کہی کے خدایا کی قسم! ہرگز نہیں۔“ ابوبکر نے اسی دن اپنے سب غلوں کو آزاد کر دیا اور آکر پیغمبر سے کہا :—”میں آئندہ ایسا کہی نہیں کرونگا۔“

—عائشہ: بھتی

موہممد ساہب نے کہا کہ :—”جو کوئی بھی چاہتا ہے کہ قیامت کے دن کی باتلاؤں (اذیتوں) سے خدایا سے بچائے اسے چاہئے کہ اگر اس کا کوئی قرضدار کٹھنائی میں ہے تو وہ اسے مہات دے یا اس کا قرضہ صاف کر دے۔“

—مسلم

میں نے پیرامبر سے پوچھا :—”نہی کیا ہے اور گناہ کیا ہے؟“ انہوں نے جواب دیا :—”سب کے ساتھ بکھلا کرنا نہی ہے، اور جو چیز تمہارے دل میں کھٹکے اور تم اسے دوسروں پر ظاہر کرنا نہ چلو وہی گناہ ہے۔“

—مسلم: ترمیزی

مोہम्मاد صاھب نے کہا :—”نیکوئی کے ساتھ بھلائی کرنے والا آدمی کےवल अपने उस बरताव के कारन ही नमाय रोजे के पाबन्द आदमियों का मरतबा हासिल कर लेता है.

—अबुदुर्दा: सिरमिकी

मोहम्मद साहब ने कहा :—”कानून में जिन चीजों की इजाजत है उनमें से अगर किसी चीज से अस्लाह को सबसे ज्यादा नफरत है तो वह तलाक है.”

—अबुदाऊद

मोहम्मद साहब ने कहा :—”ऐ मौज ! जमीन की सतह पर अस्लाह ने कोई ऐसी चीज पैदा नहीं की जो गुलामों को आजाद करने के मुकाबले में अस्लाह को ज्यादा प्यारी हो. और अस्लाह ने रूप जमीन पर ऐसी कोई चीज पैदा नहीं की जिससे वह तलाक से ज्यादा नफरत करता हो.”

—मौज बिन जबल

मोहम्मद साहब ने कहा :—”नशा सारे गुनाहों की जड़ है.”

—हुदैफह : राखिन

मोहम्मद साहब ने कहा :—”दूसरों से हसद करने से अपने को बचाओ, क्योंकि सचमुच हसद नेकी को ऐसे ही खा जाता है जैसे आग लकड़ी को हضم कर जाती है.”

—अबु हरैरा: अबुदाऊद

पैराम्बर ने कहा :—जिस किसी के पास बारबरदारी के जानवर उसकी जरूरत से ज्यादा हैं उसे चाहिये कि उनमें से कुछ उस आदमी को दे दे जिसके पास कोई जानवर नहीं. और जिसके पास जरूरत से ज्यादा सामान है उसे चाहिये कि कुछ उसे दे दे जिसके पास कुछ नहीं.” पैराम्बर ने और बहुत सी चीजों का एक एक कर इसी तरह शिक्र किया. इससे पता चला कि जरूरत से ज्यादा किसी चीज को रखने का हमको कोई हक नहीं.

—अबुसईद : मुसलिम; अबुदाऊद

محمد صاحب نے کہا :—”مسلموں دوسروں کے ساتھ لچھا برتاؤ کرنے والا آدمی اپنے اُس برتاؤ کے کارن ہی نماز روزے پاکے بلند آدمیوں کا مرتبہ حاصل کر لیتا ہے.”

—ابودرداء: ترمذی

محمد صاحب نے کہا :—”قانون میں جن چیزوں کی اجازت ہے ان میں سے اگر کسی چیز سے اللہ کو سب سے زیادہ نفرت ہے تو وہ طلاق ہے.

—ابوداؤد

محمد صاحب نے کہا :—”لے موز ! زمین کی سطح پر اللہ نے کوئی ایسی چیز پیدا نہیں کی جو ظموں کو آزاد کرنے کے مقابلہ میں اللہ کو زیادہ پیاری ہو. اور اللہ نے رونہ زمین پر ایسی کوئی چیز پیدا نہیں کی جس سے وہ طلاق سے زیادہ نفرت کرتا ہو.”

—موزین جبل

محمد صاحب نے کہا :—”نشہ سارے گناہوں کی جڑ ہے.”

—حدیفہ: شزن

محمد صاحب نے کہا :—”دوسروں سے حسد کرنے سے اپنے کو بچاؤ، کیونکہ سچ سچ حسد نیکی کو ایسے ہی کھا جاتا ہے جیسے آگ لکڑی کو ہضم کر جاتی ہے.”

—ابوہریرہ: ابوداؤد

پیغمبر نے کہا :—جس کسی کے پاس باربرداری کے جانور اُس کی ضرورت سے زیادہ ہیں اُسے چاہئے کہ اُن میں سے کچھ اُس آدمی کو دے دے جس کے پاس کوئی جانور نہیں. اور جس کے پاس ضرورت سے زیادہ سامان ہے اُسے چاہئے کہ کچھ اُسے دے دے جس کے پاس کچھ نہیں.” پیغمبر نے اور بہت سی چیزوں کا ایک ایک طرح ذکر کیا. اِس سے پتہ چلا کہ ضرورت سے زیادہ کسی چیز کو رکھنے کا ہم کو کوئی حق نہیں ہے.

—ابوسعد: مسلم; ابوداؤد

भाई रघुपति सहाय 'किराक'

بھائی دھوپتی سہائے 'نراق'

[پڑھ ڈا॰ بگوانداس کے لکھ "نیا ہند" میں
 لکھتے رہے ہیں۔ وہ سب بڑے بڑے دھرموں کی بنیادی
 کے ماننے والے ہیں۔ وہ الگ الگ دھرموں کے اور
 ریت و راجوں کو کم اور ان سب کے ان بنیادی اصولوں کو
 ایک مہم دیتے ہیں جو سب دھرموں میں لگ بھگ
 ایک سے ہیں۔ یہی ان کے دھرم کے لئے لکھنے کا خاص
 مقصد رہا ہے۔ انہوں نے سمجھ کر اور پرہیزگار "ہندوستانی
 کلچر سوسائٹی" اور "نیا ہند" سب دھرموں کی ایک
 میں وشواسی رہے ہیں اور ہیں۔ ہندوؤں کی آجکل کی
 جنم سے جاتی کو اور ہر طرح کی چھوچھوت کو ڈاکٹر
 بھگوان داس بالکل غلط مانتے ہیں اور اُس کے خلاف ہیں۔
 جنم کی ان سیکڑوں جاتوں کی جگہ چار ورنوں کا اصول
 ان کے لکھنے اور وچاروں کا قبول ایک پہلو ہے۔ ان کے
 ان چار ورنوں کا جام سے کوئی سبب نہیں ہے نہ ان میں
 ہندو، مسلمان، عیسائی آدمی کا کوئی فرق رہ جاتا ہے۔
 ساری دنیا اور سارا مانو سماج اُس میں سما جاتا ہے۔
 ان کے اس اصول کے انوسار آئسٹائن اور ہرنرڈشا ویسے ہی
 دیکے براہمن تھے جیسے ہمارے کے پندت شوکار شاستری۔
 ان کے ان ورنوں کا جیسے جنم سے یا دھرم سے کوئی سبب
 نہیں ویسے ہی بھلا شادی سے بھی کوئی سبب نہیں۔
 ان کے انوسار ان کی ورن ویسٹھا نئی دیواریں کھڑی کرکے
 والی چیز نہیں، دیواریں توڑنے والی چیز ہے۔ ان کی
 ورن ویسٹھا کوئی چیز یا تھوس چیز نہیں ہے۔ وہ دہر کی
 طرح لچھلی ہے۔ ان کے چار ورنوں میں اونچ نیچ کا
 بھی کوئی سوال نہیں۔ ان کے انوسار آدمی جب چاہے
 اپنے سونپاؤ اور پھم کے انوسار اپنا 'ورن' بھی بدل
 سکتا ہے، ٹھیک جس طرح کپوٹسٹ سمجھے جانے والے دیہوں
 میں کوئی مزدور 'کپور' یا 'ورکر' جب چاہے ہوگتا حاصل
 کرکے 'پروفیسر' یا پارلیمنٹ کا ممبر بن سکتا ہے اور
 اپنے کو مزدور، 'کپور' یا 'ورکر' کہے میں اسے کبھی
 اہمیت محسوس نہیں ہوتی۔ ہمارے متر شری دھوپتی
 سہائے 'نراق' بھی بہت اُن کے خیال، صاف صاف
 کہ اور ترقی پسند دھوکا ہیں۔ ان کی اتنی بات
 ہمیں بالکل ٹھیک معلوم ہوتی ہے کہ اب وہ سنہ
 آ رہا ہے اور آنا چاہئے جب دنیا کا لگ بھگ

[پڑھ ڈا॰ بگوانداس کے لکھ "نیا ہند" میں
 لکھتے رہے ہیں۔ وہ سب بڑے بڑے دھرموں کی بنیادی
 کے ماننے والے ہیں۔ وہ الگ الگ دھرموں کے اور
 ریت و راجوں کو کم اور ان سب کے ان بنیادی اصولوں کو
 ایک مہم دیتے ہیں جو سب دھرموں میں لگ بھگ
 ایک سے ہیں۔ یہی ان کے دھرم کے لئے لکھنے کا خاص
 مقصد رہا ہے۔ انہوں نے سمجھ کر اور پرہیزگار "ہندوستانی
 کلچر سوسائٹی" اور "نیا ہند" سب دھرموں کی ایک
 میں وشواسی رہے ہیں اور ہیں۔ ہندوؤں کی آجکل کی
 جنم سے جاتی کو اور ہر طرح کی چھوچھوت کو ڈاکٹر
 بھگوان داس بالکل غلط مانتے ہیں اور اُس کے خلاف ہیں۔
 جنم کی ان سیکڑوں جاتوں کی جگہ چار ورنوں کا اصول
 ان کے لکھنے اور وچاروں کا قبول ایک پہلو ہے۔ ان کے
 ان چار ورنوں کا جام سے کوئی سبب نہیں ہے نہ ان میں
 ہندو، مسلمان، عیسائی آدمی کا کوئی فرق رہ جاتا ہے۔
 ساری دنیا اور سارا مانو سماج اُس میں سما جاتا ہے۔
 ان کے اس اصول کے انوسار آئسٹائن اور ہرنرڈشا ویسے ہی
 دیکے براہمن تھے جیسے ہمارے کے پندت شوکار شاستری۔
 ان کے ان ورنوں کا جیسے جنم سے یا دھرم سے کوئی سبب
 نہیں ویسے ہی بھلا شادی سے بھی کوئی سبب نہیں۔
 ان کے انوسار ان کی ورن ویسٹھا نئی دیواریں کھڑی کرکے
 والی چیز نہیں، دیواریں توڑنے والی چیز ہے۔ ان کی
 ورن ویسٹھا کوئی چیز یا تھوس چیز نہیں ہے۔ وہ دہر کی
 طرح لچھلی ہے۔ ان کے چار ورنوں میں اونچ نیچ کا
 بھی کوئی سوال نہیں۔ ان کے انوسار آدمی جب چاہے
 اپنے سونپاؤ اور پھم کے انوسار اپنا 'ورن' بھی بدل
 سکتا ہے، ٹھیک جس طرح کپوٹسٹ سمجھے جانے والے دیہوں
 میں کوئی مزدور 'کپور' یا 'ورکر' جب چاہے ہوگتا حاصل
 کرکے 'پروفیسر' یا پارلیمنٹ کا ممبر بن سکتا ہے اور
 اپنے کو مزدور، 'کپور' یا 'ورکر' کہے میں اسے کبھی
 اہمیت محسوس نہیں ہوتی۔ ہمارے متر شری دھوپتی
 سہائے 'نراق' بھی بہت اُن کے خیال، صاف صاف
 کہ اور ترقی پسند دھوکا ہیں۔ ان کی اتنی بات
 ہمیں بالکل ٹھیک معلوم ہوتی ہے کہ اب وہ سنہ
 آ رہا ہے اور آنا چاہئے جب دنیا کا لگ بھگ

ہر انسان تھوڑے تھوڑے گھلتیوں کے لئے دو دروں کی مانسک، آرہک، سپاہچک اور شاپریک سب طرح کی سیواؤں میں حصہ لیتا اور سب طرح کی سیواؤں کا آئندہ لیتا۔ تب ہی مانفوا سچے مچے کھل سہ کی۔ کسی لیتے کے کسی پتھرکا میں پرکاشت ہونے کا یہ مطلب نہیں ہوتا کہ پتھرکا یا اُس کا سپہادک لیتھک کے سب وجہوں سے سمیت ہے۔ اس لئے ہم سہرہی بھائی رگھوپتی سہانہ 'فراق' کا یہ لیتے نیچے دیتے ہوں—سپہادک۔]

میں اُن بہت سے لیکھوں کو دھیان سے پڑھتا رہا ہوں جو پوجہ، ڈاکٹر بھکوان داس کے قلم سے 'نیا ہند' میں نکلتے رہے ہیں، اور جنہوں نے اُنہوں نے ورن ویستہا کو نیلے، وگھان، ملو وگھان اور نیلے کے آئینہ سار بتایا ہے۔ میں جس نیکے پر پورنچا ہوں اُسے نہروے شبدوں میں نیچے دیتا ہوں۔

اب وہ زمانہ آچکا ہے جب سو فیصدی آبادی کو اچھی طرح سے پڑھا لکھا بنا دیا جائے۔ ایسا ہونے کے بعد سو فیصدی لوگوں میں کیا کیا صلاحیت آجائیں گی؟ مادری زبان میں سادھارن سے سادھارن آدمی ہنر کی اِلٰہی اور اورتیسی، مہابھارت، رامین، منوسمرتی، فردوسی کا شاہنامہ، سعدی کی گلستان، مہاتما گاندھی کی کتابیں، شہسہر کے فائیک، کالی داس کے نائک، یونان، فرانس اور دوسرے دیشوں کے نائک، دنیا بھر کے سفرنامے، مشہور چھوٹے چھوٹے دنیا بھر کے مشہور آپنیاس، ساروجنک یا عام فہم وکیاں، دنیا بھر کی کہانیاں اور خود مادری زبان میں جو اچھی شاعری ہوئی ہے، اُس کا بہت بڑا حصہ، رتہ اور سمجھ سکیگا۔ وہ زمانہ بھی شروع ہو چکا ہے جب چھاتی پہاڑ، کمر توڑ یا شریر کو تھکا دینے والی محنت کا بھار مشینیں اٹھالیں گی۔ اِستِان سے پوچھا گیا کہ جب ورگ مین سماج، یا ایسا سماج جس میں طبقے نہ ہوں، قائم ہو جاویگا تو کیا سب لوگ فلم کے سرزما بن جائیں گے؟ اِستِان نے جواب دیا کہ سب لوگ انجینیر بن جائیں گے لیکن آپنی پسند کے مطابق قام کے سورماؤں کی رچنوں کا اُند اٹھا سکیں گے۔ جس طرح کی کتابیں کو میں اُپر گنوا چکا ہوں اُنہیں جب پڑھ کر سب لوگ سمجھ سکیں گے اور شریو یا ہاتھ پاؤں کو کڑی محنت سے چھٹکارا مل جاویگا، تو شودر کون رہ جاویگا؟ اِس کے ساتھ ہی ساتھ ایٹم یا پرمانو شمکی کے جگ میں معمولی سے معمولی آدمی تو وہ تمام سکھ اور سودھائیں حاصل ہو جاویں گی جو تہرزے سے سمہن لوگوں تک آج محدود ہیں۔ ایسی دشا میں شودر کون رہ جاویگا؟ اِس بات کو شری رویندر ناتھ ٹیکور، ایچ۔ جی۔ ویلس، سامیوئل کے اور دوسرے وچارک اچھی طرح سمجھ گئے تھے۔ شری رویندر ناتھ ٹیکور جانی بانی کے ہی نہیں گن - کرم - مہاؤ کے انوسار

بہارِ بھارت کے بھی خلاف تھے۔ پوجیہ ڈاکٹر بھگوان داس نے اس مسئلہ پر اپنے لکھنؤ میں سماج واد اور سامیتوان کی چرچا ہی کی ہے۔ فریدون ہے کہ سماج واد اور سامیتوان کے ساتھ ساتھ دن دوسٹھا کو قائم نہیں رکھا جاسکتا۔ جب پورا سماج پڑھا لکھا ہوگا، سمیٹوں یا خوشحال ہوگا اور چھاتی ہزار محنت سے بچ جاویگا تو کوئی شوقر کیسے رہیگا؟ جب پیٹو یا سر پر ہوجے لہ کر چلنے کے بدلے ہیل گاڑی پر ہوجے لہنا شروع کیا گیا اور بعد کو مال گاڑیوں اور موٹر ٹرکوں پر ہوجے لہنے لگا یا کرینوں، ڈوارائنیں ہوجے اٹھنے لگا، یعنی جب ہوجے لہکر چلنے والا گاڑی وان بن گیا، کرین کا آپریٹر بن گیا، ٹرک ڈرائیور یا انجن ڈرائیور بن گیا تو وہ شوقر نہیں رہا حالانکہ سماج کی سیوا وہ اب بھی کر رہا ہے۔ پھر جب ہر آدمی سنسار سہائیت پڑھنے لہیگا اور کئی گنا زیادہ مزدوری بھی پائے لہیگا اور وہ سب آرام اور آسائش، سکھ اور سوبدھائیں بھی سدہ ادھیکار یا پیدائشی حق کی طرح حاصل کرلیگا، جو آج کھول مٹی ہر آدمیوں کو نصیب نہیں، تو وہ شوقر نہیں رہے جاویگا۔ انگریزی شد لیبرر یا فارسی شد مزدور بھی اُس پر لگو نہیں ہونگے۔

پوجیہ ڈاکٹر بھگوان داس نے اس مسئلہ کو سوہاؤ سے ہی دولت کمانے والا یا ویشیہ سمجھتے تھیں۔ نئی سیہیتا میں دوسروں سے مزدوری یا محنت کرا کے کسی کو پونجی پکی ہندہ نہیں دیا جانیگا۔ دھن پیدا کرنا سب کا پیدائشی کام ہوگا۔ بڑی بڑی تاجرانے پंचायत یا نی ہکومت کے ہاتھ میں ہونگی۔ دلالوں، آڑھتوں، سٹہ ہازوں اور مل مالکوں کے دن اب لہنے والے ہوں گے۔ جیسے جیسے حکومت ضروری تعلیم دیکر لوگوں کو اس قابل بنانی جائیگی کہ یہ زمہواری پونجی پکیوں کے ہاتھ سے لے لی جائے ویسے ویسے یہ تبدیلی سماج کے جیون میں آئی جائیگی۔ یہ بھی سوچنے کی بات ہے کہ خونچہ لگنے والے، پٹریوں پر درکن لگنے والے، بان اور مونگ پھلی بیجے والے، اپنا رکشا یا یکہ رکھ کر چلنے والے، ہنکر، موچی وغیرہ جو کسی کی ٹہل یا سیوا نہیں کرتے اور تھوڑا بہت دھن بھی کما لیتے تھیں، کیا یہ سب لوگ انہیں آرہوں میں ویشیہ تھیں جن آرہوں میں ٹاٹا، ہڑا، ڈالیمیا، چھپوریا وغیرہ؟ ہندر نچانے والے، سنپیرے، ہالو نچانے والے، ہانمٹی کا پٹارا لہکر گھومنے والے، یہ سب بھی تو کسی کی مزدوری نہیں کرتے۔ رنکریز، سنار، دھنیا، بڑھئی، لوہار، حکام (جو کھول ویسے لہکر ہال کاتھ تھیں) ملح، مچھوئے، چڑمار، پھوری لگنے والے، ہیرپٹہ کیا یہ سب انہیں ہاڑوں میں ویشیہ تھیں جن میں راجہ موتی چند ویشیہ تھے؟ کیا راجہ موتی چند یا ہڑو نے جو محولتھن سماج کی کین وہ

کوئی پंचایات (جس میں کئی طرح کے کام کرنے والے شریک ہوں) یا کوئی سرکاری مزدگما یا سرکاری کرمچاری تانخواہ پا کر نہیں کر سکتے؟ تو کیر ویشی راء کا کیا ارہ ہے؟ اور ان لوگوں کو آپ کیا کہیں گے جو وکیل ہیں، زمیندار ہیں، پروفیسر ہیں، ڈپٹی کلکٹر ہیں، تھانہ دار ہیں، فوجی انسپریں، ایکٹر ہیں، پینٹر ہیں، سائیکسٹکار ہیں لیکن کمپنیوں میں حصہ لیکر ڈیویڈنڈ اور منافع بھی کاتے ہیں؟ یہ لوگ سب ویشیہ ہیں یا کچھ اور؟

فرج کر لیجیے کیکسی یرا میں کول ریلوے کمپنیاں مہاجن چلا رھے ہیں۔ خان کا کام بھی مہاجنوں کے ہاٹھ میں ہے۔ سرکاری کرایہ اور پولیس کو کس سامان اور کین ویشوں کی ضرورت پڑتی ہے وہ سب مہاجنوں سے مول لیے جاتے ہیں۔ لائے کے کارخانے، ہر ڈال کی خانے، موٹروں کے کارخانے اور دوسرے سب بڑے بڑے کارخانے مہاجنوں کے ہاٹھ میں ہیں۔ بیک بھی مہاجنوں کے ہاٹھ میں ہے، تو یہ مہاجن اور ان کے سماءواہی یا سامیہ وادی دیش میں یا ملی جلی آرٹیک پرائی یا مالی انتظام والے دیشوں میں یہ سب کار بار سرکاری ملکیت ہوں اور ہلدھی ہوئی تانخواہ پائے والے سرکاری کرمچاری یا قوم یہ سب کار بار چلا رھے ہوں، تب یہ سرکاری ملازم یا کرمچاری اور ان ویشگوں کے منسٹر، عامل، یا چھتری، ہو جائیں گے کیونکہ یہ سارا کار بار اب حکومت کر رھی ہے۔ اس کا مطلب یہ نکلا کہ ایک ہی کام کرنے والے، ایک ہی طرح کی لیاقت رکھنے والے کہیں چھتری کہلائے اور کہیں ویشیہ۔ جب ہی۔ این، ڈیلیو، ریلوے کہنی کو یا اسپیریل بینک کو بھارت سرکار نے لے لیا تھا یا جب کانپور کے پارھاؤس کو کہنی سے بھارت سرکار نے لے لیا تو ان کے سب کرمچاری چھتری بجاتے ویشیہ سے چھتری ہو گئے! اس یگ کی حکومت، حکومت کم کرتی ہے، انتظام زیادہ کرتی ہے۔

دہلی کی حکومت اور صوبوں کی حکومت کی وزارتوں پر ایک نظر ڈالیں۔ مولانا ابولکلام آزاد ودوان اور دھرمماچاریہ ہونے کے ناٹے براہمن ہیں اور شاسک ہونے کے ناٹے کھتری۔ پندت کالاش ناٹھ کاٹجی سبماٹھ اور بکالاک کے پشے کے ناٹے براہمن تھے اور ڈیفنس منیسٹر ہونے کے ناٹے بے کھتری بن گئے۔ پندت جواہرلال بھی ریسٹر (براہمن) سے پل مارتے کھتری بن گئے۔ ایک آدھ اور مثالیں لیجئے۔ سورگیت شری رمیش چندر دت بڑے بھاری شاسک (حاکم) تھے، اور انھک آپنیاس، راماین اور مہابھارت کا انگریزی کریتا میں انوان، ارٹھ شاسٹر پر بستکیں بھی حاکم ہوتے ہونے لکھتے رھے یعنی ایک ہی سٹھ وے براہمن بھی تھے اور چھتری بھی تھے۔ سورگیت شری سی۔ وائی

دلی کی حکومت اور صوبوں کی حکومت کی وزارتوں پر ایک نظر ڈالیں۔ مولانا ابولکلام آزاد ودوان اور دھرمماچاریہ ہونے کے ناٹے براہمن ہیں اور شاسک ہونے کے ناٹے کھتری۔ پندت کالاش ناٹھ کاٹجی سبماٹھ اور بکالاک کے پشے کے ناٹے براہمن تھے اور ڈیفنس منیسٹر ہونے کے ناٹے بے کھتری بن گئے۔ پندت جواہرلال بھی ریسٹر (براہمن) سے پل مارتے کھتری بن گئے۔ ایک آدھ اور مثالیں لیجئے۔ سورگیت شری رمیش چندر دت بڑے بھاری شاسک (حاکم) تھے، اور انھک آپنیاس، راماین اور مہابھارت کا انگریزی کریتا میں انوان، ارٹھ شاسٹر پر بستکیں بھی حاکم ہوتے ہونے لکھتے رھے یعنی ایک ہی سٹھ وے براہمن بھی تھے اور چھتری بھی تھے۔ سورگیت شری سی۔ وائی

دلی کی حکومت اور صوبوں کی حکومت کی وزارتوں پر ایک نظر ڈالیں۔ مولانا ابولکلام آزاد ودوان اور دھرمماچاریہ ہونے کے ناٹے براہمن ہیں اور شاسک ہونے کے ناٹے کھتری۔ پندت کالاش ناٹھ کاٹجی سبماٹھ اور بکالاک کے پشے کے ناٹے براہمن تھے اور ڈیفنس منیسٹر ہونے کے ناٹے بے کھتری بن گئے۔ پندت جواہرلال بھی ریسٹر (براہمن) سے پل مارتے کھتری بن گئے۔ ایک آدھ اور مثالیں لیجئے۔ سورگیت شری رمیش چندر دت بڑے بھاری شاسک (حاکم) تھے، اور انھک آپنیاس، راماین اور مہابھارت کا انگریزی کریتا میں انوان، ارٹھ شاسٹر پر بستکیں بھی حاکم ہوتے ہونے لکھتے رھے یعنی ایک ہی سٹھ وے براہمن بھی تھے اور چھتری بھی تھے۔ سورگیت شری سی۔ وائی

دلی کی حکومت اور صوبوں کی حکومت کی وزارتوں پر ایک نظر ڈالیں۔ مولانا ابولکلام آزاد ودوان اور دھرمماچاریہ ہونے کے ناٹے براہمن ہیں اور شاسک ہونے کے ناٹے کھتری۔ پندت کالاش ناٹھ کاٹجی سبماٹھ اور بکالاک کے پشے کے ناٹے براہمن تھے اور ڈیفنس منیسٹر ہونے کے ناٹے بے کھتری بن گئے۔ پندت جواہرلال بھی ریسٹر (براہمن) سے پل مارتے کھتری بن گئے۔ ایک آدھ اور مثالیں لیجئے۔ سورگیت شری رمیش چندر دت بڑے بھاری شاسک (حاکم) تھے، اور انھک آپنیاس، راماین اور مہابھارت کا انگریزی کریتا میں انوان، ارٹھ شاسٹر پر بستکیں بھی حاکم ہوتے ہونے لکھتے رھے یعنی ایک ہی سٹھ وے براہمن بھی تھے اور چھتری بھی تھے۔ سورگیت شری سی۔ وائی

نیتامنی سہادک تھے راج نیتی کے پلذت تھے اور منسٹر بھی بن گئے۔ بعد کو پھر سہادک بن بیٹھے۔ گنڈسٹن گریک سہایتہ کا پلذت تھا، تیزی اوجھہ کوئی کا اپنیاسکار تھا اور یہ دونوں انگلستان کے مکہہ منتری بھی بن گئے۔ لینن دھورندھر ودوان ہوتا ہوا اپنے یگ کا سب سے بڑا چہتری نکلا یعنی 'عالم' بھی تھا اور عامل بھی۔ مہا کوی گئے کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ جہاں وہ رہتا تھا وہاں سے مہلوں تک اس کے سرینکا کوئی کرباری آدمی نہیں تھا۔ ملٹن سیکریٹری تھا کراسویل کا۔ ارسطو منتری تھا سکندر کا۔ سہزور نے مہان دھرم شاستر لکھا۔ نیپولین نے منو اسمرتی سے تکر لینہ والا نالوں بنا یا۔ آپ 'عالم' اور عامل کی تقسیم کہاں گئی؟ نئے روس میں بیسویں ہزار آدمی مزدور سے ملوں کے منجیر، سینا پتی اور مہان شاکس بن بیٹھے۔ یہی چین میں بھی ہوا ہے۔ انہاس نے اور سماج کی ترقی نے عالم، عامل، تاجر اور مزدور کے بھید بھاؤ کو توڑ پھڑ کر رکھ دیا۔

چہتری کس کو کہا جائے؟ اگر کسی سماج میں دو تین کروڑ آدمی 'سویہاؤ' سے چہتری ہیں تو گویا اس دیش میں فوج، پولس، جہازی سینک، ہوائی سینک، چہترے اور بڑے شاکس این میں کسی کی تعداد گھٹائی یا بڑھائی نہیں جاسکتی۔ روس میں حال میں شاید پانچ لاکھ سینک فوج سے ہٹا کر کارخانوں میں لگا دیئے گئے ہیں، گویا چہتری سے شہر بنا دیئے گئے ہیں۔ ہٹلر کو روس کے جن فوجیوں اور کوروں نے پیچھے ڈھکیل دیا، چیانگ کائی شہک کو، میکازہر کو اور چا پانی حملہ آوروں کو جن چینوں نے چین سے نکال کر دیش کی رکشا کی ان میں دس پندرہ فیصدی ہی باغیہہ نوجی تھے۔ باقی سب کسان اور مزدور تھے اور دیش رکشا کا کام ختم کر کے پھر کسان، مزدور اور کاریگر بن گئے۔ لڑائی ہو یا شامس، اینٹی کرپشن آندریں ہو یا کھیتی اور کارخانوں کا بڑے پیمانوں پر انتظام ہو، حکومت کے ایسے ہی سینکڑوں کاموں کے لئے پورے سماج کے آزاد سہدگ اور سوچے بوجھ اور تجربے کی ضرورت پڑتی ہے۔ منوشہہ سادھارن طور پر ناگزیر ہوتے ہیں، عالم، عامل، تاجر اور مزدور نہیں ہوتے۔ فنی شکشا لوگوں کو ایک نفا نہیں ہٹائیگی۔ کسی کو لکیر کا فقیہ نہیں ہٹائیگی، بلکہ کسی طرح کی صلاحیتیں دینے والی (Multipurpose Education) ہوگی۔ آبادی کا بڑا حصہ کسے کام کر سکے گا یا یوں کہہ کی ایک کام چھوڑ کر دوسرا کام کر سکے گا۔ اور نئے سماج میں سب لوگ ہر روز کھیت کے منورنجانوں یا مشینوں میں بھی سمٹے ہٹائیں گے۔ مہی پھر حکومت کرنے والے لوگوں کے انتظام اور راج

نیتامنی سہادک تھے راج نیتی کے پلذت تھے اور منسٹر بھی بن گئے۔ بعد کو پھر سہادک بن بیٹھے۔ گنڈسٹن گریک سہایتہ کا پلذت تھا، تیزی اوجھہ کوئی کا اپنیاسکار تھا اور یہ دونوں انگلستان کے مکہہ منتری بھی بن گئے۔ لینن دھورندھر ودوان ہوتا ہوا اپنے یگ کا سب سے بڑا چہتری نکلا یعنی 'عالم' بھی تھا اور عامل بھی۔ مہا کوی گئے کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ جہاں وہ رہتا تھا وہاں سے مہلوں تک اس کے سرینکا کوئی کرباری آدمی نہیں تھا۔ ملٹن سیکریٹری تھا کراسویل کا۔ ارسطو منتری تھا سکندر کا۔ سہزور نے مہان دھرم شاستر لکھا۔ نیپولین نے منو اسمرتی سے تکر لینہ والا نالوں بنا یا۔ آپ 'عالم' اور عامل کی تقسیم کہاں گئی؟ نئے روس میں بیسویں ہزار آدمی مزدور سے ملوں کے منجیر، سینا پتی اور مہان شاکس بن بیٹھے۔ یہی چین میں بھی ہوا ہے۔ انہاس نے اور سماج کی ترقی نے عالم، عامل، تاجر اور مزدور کے بھید بھاؤ کو توڑ پھڑ کر رکھ دیا۔

چہتری کس کو کہا جائے؟ اگر کسی سماج میں دو تین کروڑ آدمی 'سویہاؤ' سے چہتری ہیں تو گویا اس دیش میں فوج، پولس، جہازی سینک، ہوائی سینک، چہترے اور بڑے شاکس این میں کسی کی تعداد گھٹائی یا بڑھائی نہیں جاسکتی۔ روس میں حال میں شاید پانچ لاکھ سینک فوج سے ہٹا کر کارخانوں میں لگا دیئے گئے ہیں، گویا چہتری سے شہر بنا دیئے گئے ہیں۔ ہٹلر کو روس کے جن فوجیوں اور کوروں نے پیچھے ڈھکیل دیا، چیانگ کائی شہک کو، میکازہر کو اور چا پانی حملہ آوروں کو جن چینوں نے چین سے نکال کر دیش کی رکشا کی ان میں دس پندرہ فیصدی ہی باغیہہ نوجی تھے۔ باقی سب کسان اور مزدور تھے اور دیش رکشا کا کام ختم کر کے پھر کسان، مزدور اور کاریگر بن گئے۔ لڑائی ہو یا شامس، اینٹی کرپشن آندریں ہو یا کھیتی اور کارخانوں کا بڑے پیمانوں پر انتظام ہو، حکومت کے ایسے ہی سینکڑوں کاموں کے لئے پورے سماج کے آزاد سہدگ اور سوچے بوجھ اور تجربے کی ضرورت پڑتی ہے۔ منوشہہ سادھارن طور پر ناگزیر ہوتے ہیں، عالم، عامل، تاجر اور مزدور نہیں ہوتے۔ فنی شکشا لوگوں کو ایک نفا نہیں ہٹائیگی۔ کسی کو لکیر کا فقیہ نہیں ہٹائیگی، بلکہ کسی طرح کی صلاحیتیں دینے والی (Multipurpose Education) ہوگی۔ آبادی کا بڑا حصہ کسے کام کر سکے گا یا یوں کہہ کی ایک کام چھوڑ کر دوسرا کام کر سکے گا۔ اور نئے سماج میں سب لوگ ہر روز کھیت کے منورنجانوں یا مشینوں میں بھی سمٹے ہٹائیں گے۔ مہی پھر حکومت کرنے والے لوگوں کے انتظام اور راج

پاٹ کے دین گئے۔ آرمیوں کا پربانی راجن اور پورانی
بہاؤں ویاہتا ساہ ساہ نہی چل سکتے۔

رہی آرمیوں کی بات۔ اس لکھ کے شوروں میں مینے بتایا ہے
تو کسیدی لوگ سانسار ساہلیت کو پد اور سامک سکتے
ہیں۔ تو کیا ساہلیت، برہم، ویاہتا کی کتاہیں لکھنے والے
آرمیوں ہیں اور انہیں سامک کر آند لینے والے شوروں ہیں؟ مہاتما
مالاڑا نے تو ایسی چیز کو کلا یا سہیہ مانا ہی نہیں جسے
کسان مزدور نہ سمجھ سکیں۔ مہاتما مالاڑا کے بیان میں توڑا سا
مہاتما ہو سکتا ہے لیکن بنیادی طور پر ان کے بیان کو ٹھیک
ماننا پڑیگا۔ لیکن برہمن اور پانک شوروں کے کیسے ہو سکتا ہے؟
سب میں رچانک شکی نہیں ہوتی۔ لیکن یہ بھی کہا گیا
ہے کہ لندن کے جن سادھارن شیکسپیر کے ناٹکوں کو ایک ایک
آئے کا ٹکٹ لیکر دیکھتے تھے۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ جب جب
وہ ناٹک دیکھتے تھے اچھی طرح اس کا آند لینے تھے تو
اس سٹے ان کی آتماہیں شیکسپیر کی آتما کو چو لیتی تھیں۔
لندن کے یہ ”شوروں“ Groundlings کہلاتے تھے۔ اسی طرح
جو بہت کشل ٹیکنالوجسٹ ہے یا سورتی نرمانا ہے۔ یا چتر
کار ہے یا سرجن انہوں ناٹک کے آند لے لیں آپ کہا کہیں؟ کیور
چو لے تھے، روناڈاس موچی تھے، سدا قصائی تھے، پلاو داس
کیور تھے، سپائی نرنا عینک بناتا تھا اور سانسار کامہان دارشک
تھا۔ سقراط، آتم گیانی اور سپاہی تھا، دورناچارہ دندر دہا
میں نہیں تھے، کرشن، سماج میں ان کا کوئی بھی کام رہا ہو
لیکن گیٹا کے گیانیہور تھے، رابرٹ ہرنس کسان تھا، ان سب
کو کس ورن میں رکھا جائے؟

انٹ میں میں یہی کہونگا کہ ورن ویوسٹا ایک ایسی
تہذیب اور ایک ایسے سماجی انتظام کی پیداوار ہے جس میں
دس، پندرہ فیصدی آدمیوں کو سک اور آرام سے رہنے کے لئے اسی
نوع فیصدی آدمی جانکر توڑ محنت کرتے تھے اور دردر بھی تھے۔
یہ اہم، مشین اور سامیہ واد کا یک ہے۔ اسی یک میں جب
اس کی سمہاونائیں یا امکانات پورے ہونگے تو روزی کمال
کے لئے کسی کو چوبیس گھنٹے میں گھنٹے دو گھنٹے سے ادھک
کام نہ کرنا پڑیگا اور وہ کام بھی بہت ہلکا ہوگا۔ باقی سٹے میں
سبھی لوگ ”کاویہ“ ساہلیت یا ادب کے دوسرے روپ دگیان اور
انہک ودیاؤں سے دلچسپی لینگے۔ کیور برہمن، چہتری اور ویشہ
کہہ جانے والے بہت کم لوگ ہونگے۔ شوروں کوئی ہوگا ہی نہیں۔ ایسی
ملی چلی لیاقت والے سب ہونگے جس میں برہمن، چہتری اور ویشہ
کے گن-کرم، سپاہی ملے ہوئے ہوں۔ ایسا ہو کر ہی سمہتا یا تہذیب
کا مقصد پورا ہوگا۔ آدمی ہیشہ سے نہیں پہچانا جائیگا بلکہ
نرسٹ کے لکھوں میں وہ کیا کرتا ہے اس سے پہچانا

ہاتھ کے دن گئے۔ آرمی کا پربانی شامن اور پورانی ورن ویوسٹا
ساتھ ساتھ نہیں چل سکتے۔

رہی برہمنوں کی بات۔ اس لکھ کے شروع میں مہاتما بتا یا
ہے سو فیصدی لوگ سانسار ساہلیت کو پد اور سامک سکتے ہیں۔
تو کیا ساہلیت، دھرم، وگیان کی کتابیں لکھنے والے برہمن ہیں
اور انہیں سمجھ کر آند لینے والے شوروں ہیں؟ مہاتما مالاڑا
نے تو ایسی چیز کو کلا یا سہیہ مانا ہی نہیں جسے کسان مزدور
نہ سمجھ سکیں۔ مہاتما مالاڑا کے بیان میں توڑا سا مہاتما
ہو سکتا ہے لیکن بنیادی طور پر ان کے بیان کو ٹھیک ماننا
پڑیگا۔ لیکن برہمن اور پانک شوروں کے کیسے ہو سکتا ہے؟
سب میں رچانک شکی نہیں ہوتی۔ لیکن یہ بھی کہا گیا
ہے کہ لندن کے جن سادھارن شیکسپیر کے ناٹکوں کو ایک ایک
آئے کا ٹکٹ لیکر دیکھتے تھے۔ یہ بھی کہا گیا ہے کہ جب جب
وہ ناٹک دیکھتے تھے اچھی طرح اس کا آند لینے تھے تو
اس سٹے ان کی آتماہیں شیکسپیر کی آتما کو چو لیتی تھیں۔
لندن کے یہ ”شوروں“ Groundlings کہلاتے تھے۔ اسی طرح
جو بہت کشل ٹیکنالوجسٹ ہے یا سورتی نرمانا ہے۔ یا چتر
کار ہے یا سرجن انہوں ناٹک کے آند لے لیں آپ کہا کہیں؟ کیور
چو لے تھے، روناڈاس موچی تھے، سدا قصائی تھے، پلاو داس
کیور تھے، سپائی نرنا عینک بناتا تھا اور سانسار کامہان دارشک
تھا۔ سقراط، آتم گیانی اور سپاہی تھا، دورناچارہ دندر دہا
میں نہیں تھے، کرشن، سماج میں ان کا کوئی بھی کام رہا ہو
لیکن گیٹا کے گیانیہور تھے، رابرٹ ہرنس کسان تھا، ان سب
کو کس ورن میں رکھا جائے؟

انٹ میں میں یہی کہونگا کہ ورن ویوسٹا ایک ایسی
تہذیب اور ایک ایسے سماجی انتظام کی پیداوار ہے جس میں
دس، پندرہ فیصدی آدمیوں کو سک اور آرام سے رہنے کے لئے اسی
نوع فیصدی آدمی جانکر توڑ محنت کرتے تھے اور دردر بھی تھے۔
یہ اہم، مشین اور سامیہ واد کا یک ہے۔ اسی یک میں جب
اس کی سمہاونائیں یا امکانات پورے ہونگے تو روزی کمال
کے لئے کسی کو چوبیس گھنٹے میں گھنٹے دو گھنٹے سے ادھک
کام نہ کرنا پڑیگا اور وہ کام بھی بہت ہلکا ہوگا۔ باقی سٹے میں
سبھی لوگ ”کاویہ“ ساہلیت یا ادب کے دوسرے روپ دگیان اور
انہک ودیاؤں سے دلچسپی لینگے۔ کیور برہمن، چہتری اور ویشہ
کہہ جانے والے بہت کم لوگ ہونگے۔ شوروں کوئی ہوگا ہی نہیں۔ ایسی
ملی چلی لیاقت والے سب ہونگے جس میں برہمن، چہتری اور ویشہ
کے گن-کرم، سپاہی ملے ہوئے ہوں۔ ایسا ہو کر ہی سمہتا یا تہذیب
کا مقصد پورا ہوگا۔ آدمی ہیشہ سے نہیں پہچانا جائیگا بلکہ
نرسٹ کے لکھوں میں وہ کیا کرتا ہے اس سے پہچانا

جائیگا۔ جیہاں ہر کلا بن جائیگا جسکا کلاکار ہر آدمی ہوگا۔ اور جیہاں کے کلاکاروں میں براہمن، چھتری، ویشیہ اور شودر کا بھد نہ ہوگا۔

جب ہٹلر کی فوج نے روس پر حملہ کیا تو کئی جگہوں سے روسی فوج کو ہٹلر کے سپاہی ہٹلر کی جلدی میں ہزاروں کی تعداد میں اپنے ہٹلر اور سامان چھڑ گیا جن میں کتابیں بھی تھیں۔ ان ہٹلر سے روسی ہٹلر میں ارسطو کی کتابیں، سائنس کی انیک کتابیں، دشن کی انیک کتابیں، شیکسپیر اور دوسرے شاعروں کی کئی کتابیں ہر امد ہون۔ یہ دیکھ کر جرمن فوجی افسروں نے کہا کہ اس قوم کو ہم فتح نہیں کر سکتے۔ ورن ویسٹا کو مٹا کر یہ قوم اور یہ قومی زندگی بڑی کئی ہے نہ کہ ورن ویسٹا کے نظام کو مان کر۔ مزاجوں اور طبیعتوں میں براہمن، چھتری، ویشیہ اور شودر کا فرق نہیں ہونا بلکہ فرق یہ ہوتا ہے کہ کسی کو شاعری پسند ہے، کسی کو فلسفہ پسند ہے، کسی کو اپنیاس پسند ہے، کسی کو سائنس اور ان میں بھی خاص خاص قسم کی رجحانیں۔ ورن ویسٹا مثلاً پر ہی یہ فرق قائم رہینگے۔ جہاں سب پڑھ لکھ ہونگے، کئی سمجھدار ہونگے، سماج میں سب کے برابر حیثیت رکھنے والے آدمی ہونگے، خوشحال ہونگے، ہانہ پاؤں کی کڑی محنت سے آزاد ہونگے، زندگی کی ضرورتوں کے لئے جس سماج میں ہر ایک کو بہت کم کم کرنا پڑیگا، ایسے سماج میں ورن ویسٹا کی کہاں ضرورت؟

سماجی جیہاں میں میں ایک کام کرنے کی یوگتہ رکھتا ہوں، تم کوئی دوسرا کام کرنے کی یوگتہ رکھتے ہو۔ تم دیش کا شاسن کر سکتے ہو، میں پورے جوتوں کی مرمت کر سکتا ہوں۔ لیکن اس سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ تم مجھ سے بڑے ہو۔ میں دیش کا شاسن نہیں کر سکتا تو تم بھی جوتوں کی مرمت نہیں کر سکتے۔ میں جوتوں کی مرمت کرنے میں کشل ہوں اور تم وید پڑھتے ہیں۔ لیکن یہ کوئی وجہ نہیں کہ تم میرے سر پر پاؤں رکھو۔

—سوامی ویوکانند

سوامی ویوکانند

تپه‌دیک کا टीका

تپ دق کا ٹیکہ

میں بھارتی راجاگوپالاچاری

شہری چکرورتی راجا گوپالا چاری

س टीके की कोई साईसी बुनियाद नहीं

اس ٹیکہ کی کوئی سائنسی بنیاد نہیں

میں اس বিষय की जितनी जितनी जांच करता हूँ और जितना जितना उस पर रौर करता हूँ उतना उतना ही मेरा विश्वास और अधिक पक्का होता जाता है कि इस बड़े माने पर बी० सी० जी० के टीके लगाने का काम 'नीम कीम खतरण जान' वाली चीज है और इस टीके के लिये कोई सच्ची साईसी बुनियाद है ही नहीं. अधिकतर तो इससे किसी तरह का कोई फायदा नहीं होता और काफ़ी सूरतों में इससे नुक़सान होता है. जिन सूरतों में इससे नुक़सान होता है उनमें कह दिया जाता है कि जिस आदमी को टीके ने नुक़सान हुआ है उसमें 'बीमारी का मुक़ाबला करने की शक्ति पहले ही से कम थी.' भारत में इस टीके का काम जिस तरह बड़े पैमाने पर चलाया जा रहा है उसमें सारी बातें ब्रतर्नाक और अनाद्विपन की हैं. दूसरे सभ्य देशों में जहां जहां यह टीका आजमाया गया है बड़ी बड़ी अहतियातें रती जाती थीं. भारत के बच्चों पर आज उसी तरह के जरये किये जा रहे हैं जिस तरह के जंग के बाद नीम गंगली और पराधीन क़ौमों के अन्दर इन इलाक़ों में किये गये थे जो जंग से वीरान और बरबाद हो गये थे. सरकार की तरफ़ से बार बार कहा जा रहा है और अख़बारों में नेकल रहा है कि इस साल इतने लाख बच्चे तपेदिक के ब्रतर से सदा के लिये बचा दिये गये और अगले दो साल के अन्दर इतने करोड़ और बच्चे बचा दिये जायेंगे, वीरान. इस बारे में जनता में जो प्रोपेगैंडा किया जाता है वह बहुत शंख का है. क्योंकि तपेदिक के हामी बड़े से बड़े डाक्टरों का दावा केवल इतना ही है कि टीका लगने के दो साल तक बच्चे का तपेदिक नहीं होगा और दो साल के अन्दर भी अगर कहीं जोर का तपेदिक फैल गया और बच्चे को कहीं से लग गया तो उस हालत में भी टीका उसे नहीं बचा सकेगा और इस दो साल की भीआद को बढ़ाने के लिये दोबारा टीका लगाने का भी कोई सवाल नहीं होता. सब डाक्टरों की यह साफ़ राय है कि दोबारा बी० सी० जी० का टीका लगाना खतरनाक होगा. डाक्टरों-डाक्टरों की राय में क़र्क़ इस बात पर है कि शुरू के यानी पहले एक टीके से भी सचमुच कुछ फायदा होता है या नहीं, या फायदे की जगह और च़ल्टा नुक़सान होता है. इसलिये अब हमें खुब अपना बचा नुक़सान सोचना है.

मैं इस दृष्टि की جتنی جتنی جانچ کرتا ہوں اور جتنا اُس پر غور کرتا ہوں اتنا اتنا ہی میرا یہ وشولس اور ادھک بکا ہوتا جاتا ہے کہ اس بڑے پیمانے پر بی۔ سی۔ جی کے ٹیکہ لگانے کا کام 'نیم حکیم خطرہ جان' والی چیز ہے اور اس ٹیکہ کے لئے کوئی سچی سائنسی بنیاد ہے ہی نہیں. ادھک تر تو اس سے کسی طرح کا کوئی فائدہ نہیں ہوتا اور کافی صورتوں میں اس سے نقصان ہوتا ہے. جن صورتوں میں اس سے نقصان ہو جاتا ہے ان میں کہہ دیا جاتا ہے کہ جس آدمی کو ٹیکہ سے نقصان ہوا ہے اُس میں 'بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی پہلے ہی سے کم تھی' بھارت میں اس ٹیکہ کا کام جس طرح بڑے پیمانے پر چلایا جا رہا ہے اُس میں ساری باتیں خطرناک اور انبازی ہیں کی ہیں. دوسرے سببہ دیشوں میں جہاں کہیں یہ ٹیکہ آزمایا گیا ہے بڑی بڑی احتیاطیں ہرتی جاتی ہیں. بھارت کے بچوں پر آج اُسی طرح کے تجربے کئے جا رہے ہیں جس طرح کے جنگ کے بعد نیم جنگلی اور پرانہین قوموں کے اندر ان علاقوں میں کئے گئے تھے جو جنگ سے ویران اور برباد ہو گئے تھے. سرکار کی طرف سے بار بار کہا جا رہا ہے اور اخباروں میں نکل رہا ہے کہ اس سال اتنے لاکھ بچے تپ دق کے خطرے سے سدا کے لئے بچا دیئے گئے اور اگلے دو سال کے اندر اتنے کرور اور بچے بچا دیئے جائیں گے. وغیرہ. اس بارے میں جتنا میں جو پروپےگنڈا کیا جاتا ہے وہ بہت دعوے کا ہے. کیونکہ تپ دق کے حامی بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کا دعویٰ قبول آتا ہی ہے کہ ٹیکہ لگنے کے دو سال تک بچے کو تپ دق نہیں ہوگا اور دو سال کے اندر بھی اگر کہیں زور کا تپ دق پھول گیا اور بچے کو کہیں سے لگ گیا تو اُس حالت میں بھی ٹیکہ اُسے نہیں بچا سکے گا اور اس دو سال کی مہاد کو بڑھانے کے لئے دو بارہ ٹیکہ لگانے کا بھی کوئی سوال نہیں ہوتا. سب ڈاکٹروں کی یہ صاف رائے ہے کہ دوبارہ بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگانا خطرناک ہوگا. ڈاکٹروں - ڈاکٹروں کی رائے میں فرق اس بات پر ہے کہ شروع کے پہلے ایک ٹیکہ سے بھی سچے سچے کچھ فائدہ ہوتا ہے یا نہیں' یا فائدہ کی جگہ اور اتنا نقصان ہوتا ہے. اس لئے اب ہمیں خود اپنا نفع نقصان سوچنا ہے.

یہ چیز سارے راسخوں کے جہوں کے ساتھ سمجھنے کی ہے۔
 جب بڑے بڑے ودیوں ڈاکٹروں کی رائے اس میں ایک دوسرے
 نہیں ملتی تو ایک ایسی بات نہیں ہے جس میں بہرمت
 آپسٹ یعنی ڈاکٹروں کی گنتی پر اس کا فیصلہ چھوڑ دیا
 جائے۔ سائنس جب تک کہ میدانوں میں بڑھتی تو سائنسدانوں
 رائیں الگ الگ ہوتی ہیں۔ ایسے معاملوں میں جہاں عام
 ملتا پر اس کا اثر نہ پڑتا ہو وہاں ہم سائنس دانوں پر یہ بات
 چھوڑ سکتے ہیں کہ وہ خود اپنے مت بھد کو طے کر لیں۔ لیکن
 یہاں عام جنتا کی بھائی یا برائی، ان کی زندگی اور موت پر
 اس کا اثر پڑتا ہو تو ہم اس طرح کا فیصلہ قبول سائنس دانوں
 نہیں چھوڑ سکتے۔

میں نے پورا विश्वास ہے کہ بھدین آنے والا ہے کہ جب
 دنیا کے سب سائنس دان بی۔ سی۔ جی۔ کی باہت اس نتیجے پر
 پہنچ جائیں گے کہ اس سے کوئی فائدہ نہیں ہے، وہ اپنے اس
 فیصلے کا اعلان کر دیں گے، بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے لگانا چھوڑ دیں گے
 اور اُسے قبول جائیں گے۔ لیکن بھارت میں چونکہ سرکار کا تندرستی
 کا محکمہ اس خلاف سائنس کلم کی طرف اپنا سارا دن ڈال
 رہا ہے اس لئے یہاں کے سائنس دانوں کے اس ٹیکے کو چھوڑ دینے
 میں دیر لگے گی۔ اس بوجھ سارے ملک کے اندر نامورے بچوں
 اور ہمارے اچھے سے اچھے ہونہار بچوں کے اندر جان بوجھ کر
 اتنے بڑے پیمانے پر ایک ایسی بیماری کے زندہ کڑے داخل
 کئے جا رہے ہیں جو مہلک سے مہلک بیماریوں میں سے ہے۔
 نئی بڑے سے بڑے اور مشہور سائنس دان یہ کہہ چکے ہیں کہ انہیں
 اس کا بہت بڑا تر ہے کہ آدمی کے جسم کے اندر پہنچ کر یہ
 کڑے تھوڑے ہی دنوں کے بعد کیا کچھ نہیں بن سکیں گے اور
 کھا کچھ نہیں کر سکیں گے۔ یہ جب لاکھوں اور کروڑوں آدمیوں
 پر اس کا اثر پڑتا ہے اور اتنی تیزی کے ساتھ اتنے بڑے پیمانے پر
 ٹیکے لگائے کی وجہ سے ایک سے دوسرے کو بیماری لگنے کا موقع
 رہتا ہے تو یہ خطرہ اور بھی بڑھ جاتا ہے۔

اس ٹیکے کے لگانے کی غرض یہ بتائی جاتی ہے کہ بچوں
 کو تپدق کی بیماری نہ ہونے پادے۔ اول تو بھارت میں
 بچوں کے تپدق سے مرنے کے جو آئکڑے ہمیں عام طور پر بتائے
 جاتے ہیں وہ ٹھیک آئکڑے نہیں ہیں۔ وہ قبول اندازے سے تیار
 کر لئے گئے ہیں۔ دوسری بات کہ یہ بیماری پلٹک یا وبا
 کی طرح اس طرح ہے آج تک کہی پھولی اور نہ پھیلے گی
 کہ اس سے کسی کے لئے یہ جائز ہو جائے کہ وہ سب
 بچوں کے جسموں کے اندر ایک اس طرح کا زہر داخل
 کر دے جس کی باہت ابھی تک یہ ثابت نہیں ہوا
 ہے کہ وہ نقصان نہیں کرتا۔ اس ٹیکے کے لئے جو دعویٰ
 کیا جاتا ہے وہ بھی یہ نہیں ہے کہ اس سے بچے

ضرورت تہدیق سے بچا ہی رہے گا۔ بچہ دھم کی جو
تہذیب بہت اُمید دلائی جاتی ہے وہ بھی اُدھک سے
اُدھک دو سال کے اندر دلائی جاتی ہے۔ اُن سب
باتوں پر وچار کرتے ہوئے اُدنی اِس نتیجے پر پہنچے بغیر
نہیں رہ سکتا کہ یہ ٹیکے لگانے کا کم جو چلایا جا رہا ہے یہ
بالکل غلط ہے۔

جب اسی طرح کا کلمہ اُنہم دہرے پیمانے پر کہا جاتا ہے تو اُس میں ایک بہت بڑی بات یہ ہو جاتی ہے کہ وہ لوگ، جن کی بات کا لوگوں پر اثر پڑتا ہے، اُس کوشش میں لگے رہتے ہیں کہ ادھک تر جنتا کے اندر اُس بیماری کا تر پیدا ہو جاوے۔ ہر آدمی کے اندر ہر بیماری کا مقابلہ کرنے کی ایک درجہ تک قدرتی شکتی ہوتی ہے۔ ہر جب یہ تر پھیل جاتا ہے تو لوگوں کے اندر سے وہ تر اُس شکتی کو کم کر دیتا ہے۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ جو لوگ ابھی تک اپنے اندر کی شکتی سے اپنے کو بیماری سے بچانے رکھتے تھے اب وہ بیماری کے شکار ہو جاتے ہیں۔ ایک دوسرا بڑا نتیجہ اِس طرح کی تحریک کا یہ بھی ہوتا ہے کہ تپ دق کو سچ میچ قابو میں رکھنے کے جو دوسرے ادھک کُرآمد طریقے ہیں ان کی طرف سے لوگ بے پرواہ ہو جاتے ہیں۔

ہی۔ سی۔ جی کا طریقہ اصلی سائنسی علاج کے طریقے کے
 بھی خلاف ہے۔ ایک درجے تک یہ کچھ کچھ ہومیوپیتھی سے
 ملتا ہے۔ اس کا اصول یہ ہے کہ بیماری کا علاج کرنے کے لئے اُن
 چیزوں کو ہی جن سے بیماری پیدا ہوتی ہے، ہلکی मात्रا میں
 جسم کے اندر داخل کر دیا جائے۔ ہی۔ سی۔ جی کے اس
 اصول میں اور ہومیوپیتھی کے اصلی اصول میں فرق یہ ہے کہ
 ہومیوپیتھی آدمی کے جسم کے اندر کبھی کوئی ایسی چیز داخل
 نہیں کرتا جو جسم کے اندر پہنچ کر بچے دے اور بڑھے۔ ہی۔
 سی۔ جی والا اس طرح کے زندہ کھڑے کئی بڑی मात्रا میں
 آدمی کے جسم کے اندر داخل کر دیتا ہے جو پھر یہی اُس جسم
 سے باہر نہیں نکلتے بلکہ اندر رہ کر بچے دے دے کر خوب
 بڑھتے رہتے ہیں اور ہمیشہ کے لئے اُس جسم کو اپنا گھر
 بنا لیتے ہیں۔

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ بی. سی. جی کے ٹیکہ کی حمایت کرنے والے یہ دعویٰ نہیں کرتے کہ اُس سے کسی بیماری کا علاج ہو سکتا ہے۔ اُن کا دعویٰ صرف یہ ہے کہ اِس ٹیکہ کے لگ جانے سے جن کے تھکے لگایا جائیگا، اُن میں سے کچھ لوگ ایک بہت تیز رفتاری سے عرصے تک کے لئے ممکن ہے بیماری سے بچے رہیں۔ یعنی—اگر انہیں بیماری ابھی تک نہیں ہوئی ہے تو امید کی جاتی ہے کہ کچھ عرصہ تک اور نہ ہو۔ مگر یہ اِس لئے دھڑکاؤ پر رہا ہے کہہنا کہ کچھ اچھے بڑے لکھ لوگوں نے اس پر یہ اعتراض

کیا ہے کہ میں اسی چیز کا وردہ نہیں کرتا ہوں کہ جس سے کچھ بیمار اپنی بیماری سے اچھے ہو سکیں۔ بی۔ سی۔ جی کسی بیمار کی بیماری کو دور نہیں کرتا۔ اس کی یہ فرضی نہیں ہے۔

نیم حکیم یا انی حکیم ہمیشہ جان کے لیے خطرناک ہوتا ہے، چاہے وہ آج کل کا ساہسی نیم حکیم ہو اور چاہے پرانی چال کا دھانیسی نیم حکیم۔ پرانی چال کے نیم حکیم سے بچنا آسان ہوتا ہے لیکن نئی چال کے نیم حکیم سے بچنا مشکل پڑ جاتا ہے۔ کیونکہ یہ نیا نیم حکیم اپنی غلط بات کے سمرتبہ میں بڑے بڑے موٹے شدید اور سائنسی فقرے استعمال کرتا ہے۔ کوئی جھوٹا اگر پورا جھوٹا ہو تو اس کا مقابلہ کرنا آسان ہوتا ہے لیکن جس میں کچھ جھوٹ اور کچھ سچ ملا ہوا ہو اس سے اپنا مشکل ہو جاتا ہے۔

اس طرح کے نیم ڈاکٹر یا انی سائنسدان پہلے کوئی اصول نکال بیٹھتے ہیں جو کہیں لگتا ہے اور کہیں نہیں لگتا اور پھر جہاں وہ نہیں لگتا وہاں بھی اسے زبردستی تھپنے کی کوشش کرتے ہیں۔ اور پھر اگر کہیں غلطی نکل آتی ہے تو اپنی بات کی پیچ میں پڑ کر ضد کرتے ہیں۔ بی۔ سی۔ جی۔ کا اصول سیدھا سادا یہ ہے کہ جس طرح کے زہر یا جس طرح کے کیڑوں سے کوئی بیماری پیدا ہوتی ہے اسی طرح کے زہر یا اسی طرح کے کیڑوں کو اگر ہم خود باہر سے لے کر جسم کے اندر داخل کر دیں تو جسم پر اس بیماری کے حملے سے بچ جاتا ہے۔ کہا یہ جاتا ہے کہ اس زہر یا ان کیڑوں کے جسم میں داخل ہوتے ہی جسم ان کے مقابلے کی تیاری کرتا ہے۔ ٹھیک اسی طرح جس طرح ہر معمولی بیماری میں بھی جسم خود بخود بیماری کے مقابلے کی کوشش کرتا ہے۔ لیکن تپدق کی صورت میں اس اصول کو لگانا بالکل غلط ہے کیونکہ تپدق ہوجانے پر جسم کے اندر کوئی ایسی نئی چیز یا نئی طرح کے کیڑے خود بخود پیدا نہیں ہوتے جو بیماری کا مقابلہ کریں۔ اس کے جواب میں بی۔ سی۔ جی۔ کے حاسی ہمیں بتاتے ہیں کہ بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگالے سے ٹیکہ کی جگہ جو پیدا آتی ہے یا بخار آجاتا ہے اس سے یہ پتا چلتا ہے کہ جسم اندر سے بیماری کا مقابلہ کرنے کی تیاری کر رہا ہے۔ یہ غلط دلیل دہکر وہ چاہتا ہے کہ ہم ان سب خطروں کو اپنے سر پر لے لیں جو اس ٹیکہ سے ہمیشہ کے لئے پیدا ہو جاتے ہیں اور وہ بھی صرف دو برس تک بچے رہنے کی توفیق نہیں دیتے۔

اب ایک دلیل آنکروں کی دہ جاتی ہے کہ کتلیں کے ٹیکہ اور کتلیں کو نقصان ہوا اور کتلیں کو نہیں ہوا۔ یہ آنکروں سے دھوکے کے ہیں۔ ان سے ادھک سے

نیم حکیم یا انی حکیم ہمیشہ جان کے لیے خطرناک ہوتا ہے، چاہے وہ آج کل کا ساہسی نیم حکیم ہو اور چاہے پرانی چال کا دھانیسی نیم حکیم۔ پرانی چال کے نیم حکیم سے بچنا آسان ہوتا ہے لیکن نئی چال کے نیم حکیم سے بچنا مشکل پڑ جاتا ہے۔ کیونکہ یہ نیا نیم حکیم اپنی غلط بات کے سمرتبہ میں بڑے بڑے موٹے شدید اور سائنسی فقرے استعمال کرتا ہے۔ کوئی جھوٹا اگر پورا جھوٹا ہو تو اس کا مقابلہ کرنا آسان ہوتا ہے لیکن جس میں کچھ جھوٹ اور کچھ سچ ملا ہوا ہو اس سے اپنا مشکل ہو جاتا ہے۔

اس طرح کے نیم ڈاکٹر یا انی سائنسدان پہلے کوئی اصول نکال بیٹھتے ہیں جو کہیں لگتا ہے اور کہیں نہیں لگتا اور پھر جہاں وہ نہیں لگتا وہاں بھی اسے زبردستی تھپنے کی کوشش کرتے ہیں۔ اور پھر اگر کہیں غلطی نکل آتی ہے تو اپنی بات کی پیچ میں پڑ کر ضد کرتے ہیں۔ بی۔ سی۔ جی۔ کا اصول سیدھا سادا یہ ہے کہ جس طرح کے زہر یا جس طرح کے کیڑوں سے کوئی بیماری پیدا ہوتی ہے اسی طرح کے زہر یا اسی طرح کے کیڑوں کو اگر ہم خود باہر سے لے کر جسم کے اندر داخل کر دیں تو جسم پر اس بیماری کے حملے سے بچ جاتا ہے۔ کہا یہ جاتا ہے کہ اس زہر یا ان کیڑوں کے جسم میں داخل ہوتے ہی جسم ان کے مقابلے کی تیاری کرتا ہے۔ ٹھیک اسی طرح جس طرح ہر معمولی بیماری میں بھی جسم خود بخود بیماری کے مقابلے کی کوشش کرتا ہے۔ لیکن تپدق کی صورت میں اس اصول کو لگانا بالکل غلط ہے کیونکہ تپدق ہوجانے پر جسم کے اندر کوئی ایسی نئی چیز یا نئی طرح کے کیڑے خود بخود پیدا نہیں ہوتے جو بیماری کا مقابلہ کریں۔ اس کے جواب میں بی۔ سی۔ جی۔ کے حاسی ہمیں بتاتے ہیں کہ بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگالے سے ٹیکہ کی جگہ جو پیدا آتی ہے یا بخار آجاتا ہے اس سے یہ پتا چلتا ہے کہ جسم اندر سے بیماری کا مقابلہ کرنے کی تیاری کر رہا ہے۔ یہ غلط دلیل دہکر وہ چاہتا ہے کہ ہم ان سب خطروں کو اپنے سر پر لے لیں جو اس ٹیکہ سے ہمیشہ کے لئے پیدا ہو جاتے ہیں اور وہ بھی صرف دو برس تک بچے رہنے کی توفیق نہیں دیتے۔

اب ایک دلیل آنکروں کی دہ جاتی ہے کہ کتلیں کے ٹیکہ اور کتلیں کو نقصان ہوا اور کتلیں کو نہیں ہوا۔ یہ آنکروں سے دھوکے کے ہیں۔ ان سے ادھک سے

آدمک بھی معلوم ہوتا ہے کہ بی . سی . جی . کے حامیوں کا
کتنا اثر ہے اور اُن کے کتنے دھڑے ہیں ۔

میں پھر کہتا ہوں کہ بی۔سی۔جی۔ خطرناک ٹیم حکام سے
میں ڈانٹر نہیں ہوں۔ لیکن میں کھول کر اور شک کی بات نہیں کر
رہا ہوں۔ میں جو کچھ کہ رہا ہوں وہ سبھیہ دنیا کے بہت سے
بڑے بڑے اور مشہور ڈانٹروں کی صاف صاف رائے کے آدھار پر
کہہ رہا ہوں۔ جو ہندستانی ڈانٹر سرکار کی 'ہیلٹہ منسٹری' لے
بی۔سی۔جی۔ کے آئیکہ اگلے اور اُس کی تعریفیں کرنے کے
لئے' رکھے ہیں اُن میں بڑے سے بڑے ڈانٹر بھی اُنہ بڑے اور
مشہور ڈانٹر نہیں ہیں جنہ دنیا کے وہ ڈانٹر جن کے تجربوں اور
جن کی رائے کے آدھار پر میں اِس نتیجے پر پہنچا ہوں کہ
نپندھ کے زندہ کھڑوں کا ٹیکہ اِس طرح سب بچوں کے لگانا
غلط ہے اور اِسے بندی کر دینا چاہئے۔

بدقسمتی سے سرکار کی چٹائی ہوئی کسی بھی بات کا جو لوگ ورودھ کرتے ہیں انہیں ہمارے آجکل کے اخبار بھی زیادہ جگہ دینے یا اُن کی بات جتنا تک پہنچانے کے لئے بہت آدھک تیار نہیں ہوتے چاہے اُن کی بات کتنی بھی سچی کہیں نہ ہو اور جتنا کے لئے کتنی بھی ضروری اور مفید کہیں نہ ہو ۔ مہری غرض کوئی راج کاجی غرض نہیں ہے ۔ اخبار جب کہیں کرپا کر کے مہری اس رشہ کی تقریروں یا سہرے لکھ ہوئے بیان چھاپ دیتے ہیں تب بھی جتنے ڈاکٹروں کے حوالے میں دیتا ہوں اُن سب کو وہ اپنے اخبار میں جگہ نہیں دے پاتے ۔ اسی لئے مجھے یہ چھوٹا سا لکھ نکالنا پڑا ۔ اِس میں میں کچھ بڑے بڑے ڈاکٹروں کی رائے دے رہا ہوں ۔ اپنی بات میں نے کم سے کم کہی ہے ۔

اس ٹیم سے تعلق ہو کر پھیلنے لگے ہیں

پروفیسر ہیف بی . سی . جی . کے ٹیکہ کے ایک بہت بڑے حامی تھے . انکلوڈ کے ”لینسٹ“ (Lancet) اخبار میں بی . سی . جی . کے پکھ میں پروفیسر ہیف کا ایک لیکھ نکلا . 5 مارچ سن 1955 کے ”لینسٹ“ میں پروفیسر ہیف کے جواب میں ڈاکٹر آر . سی . ویسٹر کا ایک خط شائع ہوا . اس خط میں ڈاکٹر ویسٹر نے در باتوں پر زور دیا ہے . پہلی یہ کہ مارچ سن 1955 تک پچیس سال سے اوپر کے فحشروں کے بعد بھی ”کوئی آنکڑہ اس بات کے ثبوت میں نہیں ملتا کہ بی . سی . جی . کے ٹیکہ کے لکھ سے آدمی کے اندر نپاتی کی بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکتی بڑھ جاتی ہے .“ انہوں نے اس خط میں یہ بھی لکھا ہے کہ اس ٹیکہ سے کوئی فائدہ ہوتا ہے اس پر ابھی بہت سے بڑے ڈاکٹروں کو شک ہے . دوسری بات انہوں نے اس خط میں یہ دہاتی ہے کہ بی . سی . جی . کے ٹیکہ کے لکھ سے اس جگہ

کی مثال جو یہود تھی ہے اُس کی ثابتیت یہ ہے کہ وہ یہودنا ہو کر یہ ثابت نہیں کرنا کہ جس کے قریب لگا ہے وہ تعلق سے اب بچا ہی ہے۔

ڈاکٹر وبسٹر نے اِس خطّہ میں لکھا ہے کہ پروفیسر ہیف نے
 یہی اپنے بیان میں اِس بات کو مانا ہے کہ آنکروں سے اِس
 بات کا ثبوت نہیں ملتا کہ بی . سی . جی . کے ٹیکے سے آدمی
 میں بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکی بڑھ جاتی ہے . ٹیکہ لگنے
 سے کھال کا پھیند اُنا ہرگز یہ ثابت نہیں کرتا کہ آدمی میں
 بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکی بڑھ گئی ہے . ڈاکٹر وبسٹر نے
 کئی بیماریوں کا ذکر کیا ہے جن میں اِسی طرح کے ٹیکے لگانے اور
 کال کے پھیند آنے سے آدمی کے اندر بیماری کا مقابلہ کرنے کی
 شکی بڑھنے کا کوئی سمجھنا نہیں ہوتا اور کوئی بھی یہ نہیں
 مانتا کہ اُن بیماریوں کے ٹیکے سے بیماری کا مقابلہ کرنے کی شکی
 کسی میں بڑھتی ہے . ڈاکٹر وبسٹر نے لکھا ہے کہ :— ”کیا
 سچ میچ ہمارے لئے یہ انصاف کی بات ہے کہ ہم بچوں کے ماں
 باپ سے یہ کہیں کہ وہ اپنے بچوں کے اِس طرح کے ٹیکے
 دیں جن میں کچھ صورتوں میں ٹیکہ کی جگہ پھیند آوے اور
 تھوڑی بہت تکلیف ہو جاوے اور ساتھ ہی تھوڑا یا بہت اِس بات
 کا خطرہ بھی ہو کہ جس کے ٹیکہ لگایا گیا ہے اُسے سچ میچ وہی
 بیماری ہو جاوے“ اور یہ اُس صورت میں جب کہ ٹیکے کے اچھے
 نتیجوں کا ہمیں کوئی پکا علم نہیں ہے ؟“

انہوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ: ”ہمیں یاد ہے کہ ایسکرائٹ
نیوز (ایک طرح کا بخار) کے اسی طرح کے ٹیکے لگانے کا
بیس سال ہونے کای خطبہ چلا تھا۔ اب میں سمجھتا ہوں وہ
ٹیکہ بالکل غلط ثابت ہو چکا اور چھوڑ دیا گیا۔ ہمیں یہ بھی یاد
ہے کہ نوکر کھانسی کے لئے بھی اسی طرح کے ٹیکے لگائے گئے
لیکن نے کسی سہ بہت جوش دکھایا تھا۔ پھر اب سب مان گئے
کہ وہ چارہ بھی بالکل بیکار تھی۔“

وہ لکھتے ہیں کہ:—”یہ بات سب مانتے ہیں کہ بہت سے بڑے بڑے ہوشیار ڈاکٹر بی. سی. جی. کے بارے میں لب شک کرتے رہے ہیں اور حال میں ان شک کرنے والوں کی آواز بڑھتی جا رہی ہے۔ اس کا کسی کے پاس کوئی جواب نہیں ہے۔ قذافی شہر کے پینڈروں کی بربادی کے سب سے بڑے ڈاکٹر مہنگلشی نے لکھا ہے کہ سن 1947ء سے لے کر سن 1951ء تک ان کے شہر میں نہایت سے مہنگلشی بہت گھٹ گئیں۔ پھر وہاں اس عرصے میں بی. سی. جی. کا ٹیکہ نہیں لگایا گیا تھا۔ دوسرے ہی اکتھاپ کے طریقے نام میں لے کر کہتے تھے۔“

19 مارچ سن 1955ء "فلسفہ" میں ایک اور مشہور

ڈاکٹر ڈاکٹر جی. ای. لانسٹن نے لکھا ہے کہ—“ڈاکٹر ہائسٹر کی یہ رائے بالکل درست ہے کہ کھال کے پیہد آنے سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ آدمی آئندہ تپدق سے بچا رہے گا۔” وہ لکھتے ہیں کہ “بی. سی. جی. کے ٹیکہ کے خلاف ڈاکٹر ہائسٹر کی یہ دلیل بڑی پکی اور ایسی دلیل ہے جسے کوئی کھٹ نہیں سکتا۔” انہیں نے کہا ہے کہ—“ایک تیسرے ڈاکٹر، ڈاکٹر براؤنکی (Brownke) نے یہ دہرایا ہے کہ بہت سے لوگوں کے ایک طرف ٹیکہ کی جگہ کی کھال خوب پیہد بھی جاتی ہے اور ساتھ ہی دوسری طرف اُس کے بعد پیہد سے گل کر تپدق سے ختم بھی ہو جاتے ہیں۔ کھال کے پیہد آنے سے جب بیماری سے بچت نہیں ہوتی تو یہ بہت بڑی چیز ہے۔”

ڈاکٹر لانسٹن نے یہ بھی لکھا ہے کہ خود پروفیسر ہیف نے یہ صاف لکھا ہے کہ—“بی. سی. جی. کے ٹیکہ سے تپدق کے بالکل نئے سرے سے پیدا ہونے یا نہ ہونے پر کوئی اثر نہیں پڑ سکتا۔” اب یہ کہہ سکتا بہت مشکل ہے کہ بی. سی. جی. سے نفع کی اُمید زیادہ ہے یا نقصان کی اور آدمی کے بچے رہنے کی اُمید زیادہ ہے یا بیمار ہو کر مرنے کی۔ وہ لکھتے ہیں کہ پروفیسر ہیف نے خود اِس بات کو مانا ہے کہ—“بی. سی. جی. کے ٹیکہ سے شاید سب سے بڑا نقصان یہ ہوتا ہے کہ بہت سے دیشوں میں معمولی جلتا کو یہ غلط شواہس ہو جاتا ہے کہ وہ اب تپدق سے بچے رہینگے۔ ہمیں اپنے کو اِس دھوکے میں نہیں رکھنا چاہئے کہ ٹیکہ سے کھال کے پیہد آنے یعنی ٹیکہ کا جاد پر ایک خاص اثر ہونے سے اور تپدق سے بچے رہنے سے کچھ بھی سمجھ رہے ہیں۔”

16 مئی سن 1952 کے “لانسٹ” میں ڈاکٹر کیرول ای. پالمر ڈی. (Dr. Carroll E. Palmer M. D.) نے، جو کاپن ہیگن ٹی. وی. ریسرچ ٹیم کے ہیڈ ہیں، لکھا ہے کہ:—“لیکن آجکل تپدق کے بڑے سے بڑے ماحیروں میں بھی اس بات پر بہت متامعہ ہے کہ تپدق کے ٹیکہ کے کھال پر ایک خاص اثر ہونے یا نہ ہونے کا اصلی مطلب کیا ہوتا ہے۔ ہمارا گمان اِس بارے میں اتنا ادھورا ہے کہ ہمارے دذختر نے خاصی طور پر اِسی بات کا پتہ لگانے کی کوشش کی ہے کہ بی. سی. جی. کے ٹیکہ کا کھال پر جو اثر ہوتا ہے اُس کا کیا مطلب ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ بات اب ظاہر ہو چکی ہے کہ بی. سی. جی. کے ٹیکہ کی بہت عام طور پر ہم جو کچھ جانتے تھے اور جو کچھ ہم نے مان رکھا تھا وہ سب پہلیاں تھا۔ جو باتیں ہم ٹھیک سمجھتے تھے جب وہی غلط نکلیں تو اِس ٹیکہ کے اُن بڑے بڑے تپدقوں کی بہت اہمی

ڈاکٹر ڈاکٹر جی. ای. لانسٹن نے لکھا ہے کہ—“ڈاکٹر ہائسٹر کی یہ رائے بالکل درست ہے کہ کھال کے پیہد آنے سے یہ ثابت نہیں ہوتا کہ آدمی آئندہ تپدق سے بچا رہے گا۔” وہ لکھتے ہیں کہ “بی. سی. جی. کے ٹیکہ کے خلاف ڈاکٹر ہائسٹر کی یہ دلیل بڑی پکی اور ایسی دلیل ہے جسے کوئی کھٹ نہیں سکتا۔” انہیں نے کہا ہے کہ—“ایک تیسرے ڈاکٹر، ڈاکٹر براؤنکی (Brownke) نے یہ دہرایا ہے کہ بہت سے لوگوں کے ایک طرف ٹیکہ کی جگہ کی کھال خوب پیہد بھی جاتی ہے اور ساتھ ہی دوسری طرف اُس کے بعد پیہد سے گل کر تپدق سے ختم بھی ہو جاتے ہیں۔ کھال کے پیہد آنے سے جب بیماری سے بچت نہیں ہوتی تو یہ بہت بڑی چیز ہے۔”

ڈاکٹر لانسٹن نے یہ بھی لکھا ہے کہ خود پروفیسر ہیف نے یہ صاف لکھا ہے کہ—“بی. سی. جی. کے ٹیکہ سے تپدق کے بالکل نئے سرے سے پیدا ہونے یا نہ ہونے پر کوئی اثر نہیں پڑ سکتا۔” اب یہ کہہ سکتا بہت مشکل ہے کہ بی. سی. جی. سے نفع کی اُمید زیادہ ہے یا نقصان کی اور آدمی کے بچے رہنے کی اُمید زیادہ ہے یا بیمار ہو کر مرنے کی۔ وہ لکھتے ہیں کہ پروفیسر ہیف نے خود اِس بات کو مانا ہے کہ—“بی. سی. جی. کے ٹیکہ سے شاید سب سے بڑا نقصان یہ ہوتا ہے کہ بہت سے دیشوں میں معمولی جلتا کو یہ غلط شواہس ہو جاتا ہے کہ وہ اب تپدق سے بچے رہینگے۔ ہمیں اپنے کو اِس دھوکے میں نہیں رکھنا چاہئے کہ ٹیکہ سے کھال کے پیہد آنے یعنی ٹیکہ کا جاد پر ایک خاص اثر ہونے سے اور تپدق سے بچے رہنے سے کچھ بھی سمجھ رہے ہیں۔”

16 مئی سن 1952 کے “لانسٹ” میں ڈاکٹر کیرول ای. پالمر ڈی. (Dr. Carroll E. Palmer M. D.) نے، جو کاپن ہیگن ٹی. وی. ریسرچ ٹیم کے ہیڈ ہیں، لکھا ہے کہ:—“لیکن آجکل تپدق کے بڑے سے بڑے ماحیروں میں بھی اس بات پر بہت متامعہ ہے کہ تپدق کے ٹیکہ کے کھال پر ایک خاص اثر ہونے یا نہ ہونے کا اصلی مطلب کیا ہوتا ہے۔ ہمارا گمان اِس بارے میں اتنا ادھورا ہے کہ ہمارے دذختر نے خاصی طور پر اِسی بات کا پتہ لگانے کی کوشش کی ہے کہ بی. سی. جی. کے ٹیکہ کا کھال پر جو اثر ہوتا ہے اُس کا کیا مطلب ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ یہ بات اب ظاہر ہو چکی ہے کہ بی. سی. جی. کے ٹیکہ کی بہت عام طور پر ہم جو کچھ جانتے تھے اور جو کچھ ہم نے مان رکھا تھا وہ سب پہلیاں تھا۔ جو باتیں ہم ٹھیک سمجھتے تھے جب وہی غلط نکلیں تو اِس ٹیکہ کے اُن بڑے بڑے تپدقوں کی بہت اہمی

ہم کہا کہ سب سے پہلے اس کے ٹھیک ٹھیک معلوم کرنے کا اور ثابت کرنے کا یہی سب سے پہلا قدم ہے۔“

اسکا मतलब یہ ہے کہ تپیدق اور उसके टीके की साईसी ब्लोज में लगी हुई दुनिया की एक बहुत बड़ी डाक्टरी संस्था भी अभी तक इस टीके की बाबत कोई अच्छी बात नहीं कह सकती और उसके बुरे नतीजों से डرتी है۔

آدمی کے جیسم میں جڑھریلے کیڈوں کو داخل کر دینا بہت بُرا ہے

لندن یونیورسٹی کے ڈاکٹری کے پروفیسر پروفیسر جیمس مینڈلے نے رائل سوسائٹی آف میڈیسن کے سامنے بیان دیتے ہوئے کہا :—“ساہنسی نیاہ سے اس بات میں کسی طرح کا شک نہیں کیا جاسکتا کہ چاہے ہم کسی بھی پہلو سے دیکھیں کسی آدمی کے جسم میں اس طرح کے زہریلے کیڈوں کو داخل کر دینا جو بدن کے اندر جا کر بچے دے سکتے ہیں اور بڑے ہو سکتے ہیں، بہت ہی بُری بات ہے۔ جب یہ کیڑے بڑے جاتے ہیں تو ہم کسی طرح یہ اندازہ نہیں لگا سکتے کہ روگی کے اندر جو کیڑے داخل کئے گئے تھے وہ کس ماترا میں تھے۔ نتیجے پر پھر ہمارا کوئی قابو نہیں رہتا اور نتیجے اُنہی بڑے پیدا ہو سکتے ہیں کہ جن کا ہمیں کوئی اندازہ نہیں ہو سکتا۔“

پروفیسر وان پیرکے (Prof. Von Pirquet) نے، جو اپنے زمانے کے بہت بڑے ماهر ڈاکٹر مانے جاتے تھے، سن 1930 میں کہا تھا :—“اس طرح کے ٹیکے سے تپدق کے کیڑے بدن کے اندر اپنی ہستیاں بناسکتے ہیں جس کے نتیجوں کا ہمیں پہلے سے کوئی اندازہ نہیں ہو سکتا۔ اس طرح کی خطرناک کڑوائی کو نہ پسند کیا جاسکتا ہے اور نہ برداشت کیا جاسکتا ہے۔“

امریکا کے ڈاکٹر جے۔ وائی۔ رینی (J. W. Rainey) نے لکھا ہے :—“ہم پہلے یہ سمجھتے تھے کہ بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکا بیماری کا جواب ہو سکتا ہے، لیکن ٹائیس اخبار کے میڈیکل سیکشن میں پڑے سے بڑے امریکی ڈاکٹروں نے یہ رائے ظاہر کی ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے جو خطرے پیدا ہو سکتے ہیں اُن کا نہ ابھی تک ہم پورا اندازہ لگا سکتے ہیں اور نہ انہیں روک سکتے ہیں۔“

اوپر کی ٹھیک سی رائے ان لوگوں کے جواب کے لئے تھی جن جو بھارت کی ہیلتھ منسٹری کی طرف سے ماهر ہونے کا دعویٰ کرتے ہیں اور ہیلتھ منسٹری کو صلاح دیتے ہیں۔

امریکا کے بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کی رائے بی۔ سی۔ جی۔ کے خلاف

امریکا میں بی۔ سی۔ جی۔ کے بڑے سے بڑے حامیوں میں ڈاکٹر مایرس (Dr. Myers) کا نام آتا ہے۔

اس کے جواب کے لئے کہی

اس کا صحت مطلب یہ ہے کہ تپدق اور اس کے ٹیکے کی سائنسی کھوج میں لگی ہوئی دنیا کی ایک بہت بڑی ڈاکٹری سنسٹھا ابھی تک اس ٹیکے کی بابت کوئی اچھی بات نہیں کہہ سکتی اور اس کے بڑے نتیجوں سے ڈرتی ہے۔

آدمی کے جسم میں زہریلے کیڈوں کو داخل کر دینا بہت بُرا ہے

لندن یونیورسٹی کے ڈاکٹری کے پروفیسر جیمس مینڈلے نے رائل سوسائٹی آف میڈیسن کے سامنے بیان دیتے ہوئے کہا :—“سائنسی نگاہ سے اس بات میں کسی طرح کا شک نہیں کیا جاسکتا کہ چاہے ہم کسی بھی پہلو سے دیکھیں کسی آدمی کے جسم میں اس طرح کے زہریلے کیڈوں کو داخل کر دینا جو بدن کے اندر جا کر بچے دے سکتے ہیں اور بڑے ہو سکتے ہیں، بہت ہی بُری بات ہے۔ جب یہ کیڑے بڑے جاتے ہیں تو ہم کسی طرح یہ اندازہ نہیں لگا سکتے کہ روگی کے اندر جو کیڑے داخل کئے گئے تھے وہ کس ماترا میں تھے۔ نتیجے پر پھر ہمارا کوئی قابو نہیں رہتا اور نتیجے اُنہی بڑے پیدا ہو سکتے ہیں کہ جن کا ہمیں کوئی اندازہ نہیں ہو سکتا۔“

پروفیسر وان پیرکے (Prof. Von Pirquet) نے، جو اپنے زمانے کے بہت بڑے ماهر ڈاکٹر مانے جاتے تھے، سن 1930 میں کہا تھا :—“اس طرح کے ٹیکے سے تپدق کے کیڑے بدن کے اندر اپنی ہستیاں بناسکتے ہیں جس کے نتیجوں کا ہمیں پہلے سے کوئی اندازہ نہیں ہو سکتا۔ اس طرح کی خطرناک کڑوائی کو نہ پسند کیا جاسکتا ہے اور نہ برداشت کیا جاسکتا ہے۔“

امریکا کے ڈاکٹر جے۔ وائی۔ رینی (J. W. Rainey) نے لکھا ہے :—“ہم پہلے یہ سمجھتے تھے کہ بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکا بیماری کا جواب ہو سکتا ہے، لیکن ٹائیس اخبار کے میڈیکل سیکشن میں پڑے سے بڑے امریکی ڈاکٹروں نے یہ رائے ظاہر کی ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے جو خطرے پیدا ہو سکتے ہیں اُن کا نہ ابھی تک ہم پورا اندازہ لگا سکتے ہیں اور نہ انہیں روک سکتے ہیں۔“

امریکا کے بڑے سے بڑے ڈاکٹروں کی رائے بی۔ سی۔ جی۔ کے خلاف

امریکا میں بی۔ سی۔ جی۔ کے بڑے سے بڑے حامیوں میں ڈاکٹر مایرس (Dr. Myers) کا نام آتا ہے۔

تجزیہ کے بعد ڈاکٹر مائرس خود اس بارے میں اپنی کتابوں پر پورے ہیں :-

"(1) بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے آبادی تپہدق سے بچا رہتا ہے اس بات پر بڑا اثر نہیں کیا جا سکتا۔

"(2) جن جانوروں کے بی۔ سی۔ جی۔ لگایا گیا ہے انہیں یہ ٹیکہ تپہدق سے نہیں بچا سکا۔ امریکا کے جانوروں کے ڈاکٹروں نے کافی تجزیہ کرنے کے بعد یہ معلوم کیا ہے کہ مہریشوں میں تپہدق کو روکنے کے کام میں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ بالکل بے اثر رہا۔

"(3) پچیس سال سے اوپر ہونے والوں کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگاتے ہوئے اس عرصہ میں دنیا بھر کے اندر ستر لاکھ سے زائد لوگوں کے ٹیکے لگ چکے ہیں۔ اگر بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ سچے سچے بڑا کارگر ہوتا تو اس کے کافی ثبوت اب تک ہمارے سامنے آگئے ہوتے۔ لیکن جن قوموں میں یہ ٹیکہ بہت پائیدار استعمال کیا گیا ہے ان میں نہ تپہدق کی بیماری پر اس کے اچھے اثر کا ثبوت ملتا ہے اور نہ تپہدق سے موتوں پر اس کا کوئی اچھا اثر ہمیں دیکھنے کو ملتا ہے۔ اس کے خلاف انہی کے جن حصوں میں بی۔ سی۔ جی۔ ابھی تک نہیں لگایا گیا ان میں تپہدق سے بیمار بھی کم پڑے ہیں اور مرے بھی کم ہیں۔

"(4) یہ بات ثابت نہیں ہوئی ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے نقصان نہیں ہوتا۔ کوئی یہ ثابت نہیں کر سکا کہ جو کڑے دسی کے جسم میں داخل کر دیئے جاتے ہیں وہ ہرگز نہیں ہرگز زہر نہیں دیتے اور دھیرے دھیرے خطرناک نہیں ہوجاتے۔

"(5) اس ٹیکے کے کارآمد ہونے کی بات جو نئیجیہ پہلے نیکالے گئے تھے وہ غلط اور بے بنیاد باتوں سے نکالے گئے تھے۔

"(6) جنہیں ایک مرتبہ تپہدق ہو چکا ہوگا وہ ان کی بات بھی یہ بھروسے سے نہیں کیا جاسکتا کہ انہیں دوبارہ یہ بیماری نہیں ہوگی۔

"(7) اگر یہ ٹیکہ بڑے پیمانے پر لگائے جاتے رہے تو آجکل جو ہم لوگ تپہدق کا آزمائشی ٹیکہ لگاتے ہیں وہ بھی بڑے اکل بے کار ہو جائے گا اور تپہدق کے روک تھام کے جو طریقے اب تک بہت کارگر بھی ہو سکتے ہیں انہیں بھی ہم کو بھینس کر لے سوتا نام کے غلطیوں میں دوڑ دوڑ کر تپہدق کی بیماری خاص کر بچوں میں روک دی گئی ہے اور یہ بنا بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے کے ہوا ہے۔ یہ کامیابی ان زیادہ اچھے اور کارگر طریقوں سے ہونی چاہیے جن سے پہلے کام میں آتے رہے ہیں۔

"(8) اگر ہم بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے پر زور دیتے رہیں اس بات کا تر ہے کہ لوگوں کو یہ غلط بھروسہ نہ لگے کہ چھپک کے ٹیکے کی طرح بی۔ سی۔ جی۔ کا

تجزیہ کے بعد ڈاکٹر مائرس خود اس بارے میں اپنی کتابوں پر پورے ہیں :-

"(1) بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے آدمی تپہدق سے بچا رہتا ہے اس بات پر بھروسہ نہیں کیا جاسکتا۔

"(2) جن جانوروں کے بی۔ سی۔ جی۔ لگایا گیا انہیں یہ ٹیکہ تپہدق سے نہیں بچا سکا۔ امریکا کے جانوروں کے ڈاکٹروں نے کافی تجزیہ کرنے کے بعد یہ معلوم کیا ہے کہ مہریشوں میں تپہدق کو روکنے کے کام میں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ بالکل بے اثر رہا۔

"(3) پچیس سال سے اوپر ہونے والوں کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگاتے ہوئے اس عرصہ میں دنیا بھر کے اندر ستر لاکھ سے زائد لوگوں کے ٹیکے لگ چکے ہیں۔ اگر بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ سچے سچے بڑا کارگر ہوتا تو اس کے کافی ثبوت اب تک ہمارے سامنے آگئے ہوتے۔ لیکن جن قوموں میں یہ ٹیکہ بہت پائیدار استعمال کیا گیا ہے ان میں نہ تپہدق کی بیماری پر اس کے اچھے اثر کا ثبوت ملتا ہے اور نہ تپہدق سے موتوں پر اس کا کوئی اچھا اثر ہمیں دیکھنے کو ملتا ہے۔ اس کے خلاف انہی کے جن حصوں میں بی۔ سی۔ جی۔ ابھی تک نہیں لگایا گیا ان میں تپہدق سے بیمار بھی کم پڑے ہیں اور مرے بھی کم ہیں۔

"(4) یہ بات ثابت نہیں ہوئی ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے نقصان نہیں ہوتا۔ کوئی یہ ثابت نہیں کر سکا کہ جو کڑے دسی کے جسم میں داخل کر دیئے جاتے ہیں وہ ہرگز نہیں ہرگز زہر نہیں دیتے اور دھیرے دھیرے خطرناک نہیں ہوجاتے۔

"(5) اس ٹیکے کے کارآمد ہونے کی بات جو نئیجیہ پہلے نیکالے گئے تھے وہ غلط اور بے بنیاد باتوں سے نکالے گئے تھے۔

"(6) جنہیں ایک مرتبہ تپہدق ہو چکا ہوگا وہ ان کی بات بھی یہ بھروسے سے نہیں کیا جاسکتا کہ انہیں دوبارہ یہ بیماری نہیں ہوگی۔

"(7) اگر یہ ٹیکہ بڑے پیمانے پر لگائے جاتے رہے تو آجکل جو ہم لوگ تپہدق کا آزمائشی ٹیکہ لگاتے ہیں وہ بھی بڑے اکل بے کار ہو جائے گا اور تپہدق کے روک تھام کے جو طریقے اب تک بہت کارگر بھی ہو سکتے ہیں انہیں بھی ہم کو بھینس کر لے سوتا نام کے غلطیوں میں دوڑ دوڑ کر تپہدق کی بیماری خاص کر بچوں میں روک دی گئی ہے اور یہ بنا بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے کے ہوا ہے۔ یہ کامیابی ان زیادہ اچھے اور کارگر طریقوں سے ہونی چاہیے جن سے پہلے کام میں آتے رہے ہیں۔

"(8) اگر ہم بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے پر زور دیتے رہیں اس بات کا تر ہے کہ لوگوں کو یہ غلط بھروسہ نہ لگے کہ چھپک کے ٹیکے کی طرح بی۔ سی۔ جی۔ کا

ڈیکا بھی اُنہی بیماری سے بچا سکتا ہے۔ ابھی تک وی۔ سی۔ جی۔ کے ڈیکے پر اس کے لیے ذرا بھی ہراسہ نہیں کیا جاسکتا۔“

کچھ ڈاکٹروں کا یہ بھی خیال ہے کہ ای۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ صرف اُن ڈاکٹروں، نرسوں اور اُن ٹیکنوں کو لگنا چاہیے جو اسپتالوں میں کام کرتے ہیں اور تہذیب کے بھاروں کی دیکھ رہے اور سوا کرتے ہیں۔

ڈاکٹر جے۔ ای۔ مائرس نے 18 اگست سن 1951 کے جرنل آف دی امریکن میڈیکل ايسوسيئیشن میں وی۔ سی۔ جی۔ کے ڈیکے پر بہت زبردست حملہ کیا ہے۔ ان کی دو دلیلیں خاص ہیں۔ پہلی یہ کہ اس ٹیکہ سے جو ایک چھوٹا سا شروع کا تہذیب کا حملہ آدمی پر ہو جاتا ہے اس سے مرکز یہ نتیجہ نہیں نکلا جاسکتا کہ اس آدمی کو پھر یہ بیماری نہیں ہوسکتی یا بہت زیادہ زور کے ساتھ نہیں ہوسکتی۔ دوسرے اُن کا کہنا ہے کہ اس ٹیکہ کا ایک یہ نتیجہ بھی ہونا ہے کہ آدمی تہذیب سے بچنے کے دوسرے زیادہ کارآمد طریقوں کی طرف سے پرورہ ہو جاتا ہے۔ اُن کا یہ بھی صاف صاف خیال ہے کہ جن بچوں کو کافی اچھا کھانا اور شادی دینے والا کھانا نہیں ملتا انہیں ای۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکہ سے سب سے زیادہ نقصان ہوسکتا ہے۔

ای۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے آدمی کی جان لے سکتے ہیں

ہمارے देश میں ایک طرف سے سب بچوں کے وی۔ سی۔ جی۔ کا ڈیکا لگانے کا کام جاری ہے۔ اس سے بیماری کے پھیلنے کا خطرہ نیچے کی باتوں سے مالاوم ہوتا ہے۔

سن 1955 کی بپی ہنگلینڈ کی گلیکسو لیبوریٹریز کی ایک کتاب میں لکھا ہے:—”جاہل ہے کہ ڈیکا لگانے کے لیے کیڑوں کا جو ویکسین تیار کیا جاتا ہے اس میں اس بات کا بہت تر رہتا ہے کہ کیڑے اور بڑے جانوریں۔ خاصکر ای۔ سی۔ جی۔ کے ویکسین میں خطرناک قسم کے کیڑے بڑے ہو سکتے ہیں۔ اسے روکنے کے لیے ویکسین کی تیاری میں بہت بڑی احتیاط کی ضرورت ہے۔ یہاں ایک اور مشکل آپوتی ہے وہ یہ کہ تہذیب کے کیڑے جس طرح دھیرے دھیرے بڑھتے ہیں، چاہے شہم کی نلی کے اندر اور چاہے آدمی یا جانور کے بدن کے اندر“ اس سے ویکسین کو بچا ہوا مان سکتے ہیں جو ہلکے سے لیکر بارہ ہفتے تک لگ جاتے ہیں اور ویکسین کا قاعدہ یہ ہے کہ ویکسین تیار ہوتے ہی دو یا تین ہفتے کے اندر کلم میں آجائے چلتے۔ پہلی اس خطرے سے بچ سکتے ہیں یا نہیں ہو ہی نہیں سکتا۔“

[پاکستان]

[پاکستان]

کتابچہ

'The Story Of My Life'—by M. K. Gandhi.

چھاپنے والے نوجھون پبلشنگ ہاؤس، احمدآباد؛ صفحہ 208؛ قیمت ایک روپیہ آٹھ آنے؛ زبان انگریزی۔

مہاتما گاندھی کی انگریزی آتم کہانی کو شری بہارتن کماریا نے 170 صفحہ میں اس خوبی کے ساتھ مختصر کیا ہے کہ دلچسپی اور زبان دونوں کی خوبصورتی ذرا بھی نہیں گھٹی ہے۔ کتاب کے آخر میں ڈاکٹر سی۔ این۔ جوتشی نے 38 صفحہ میں کتاب سے تعلق رکھنے والے گرامر کے سبق دیئے ہیں۔ گاندھی جی کی آتم کہانی کا یہ چھوٹا ایڈیشن خاص طور پر ودیارتھوں کے لئے تیار کیا گیا ہے۔ بیٹائی اسکول اور انٹرمیڈیٹ درجوں کے طالب علموں کے لئے یہ کتاب بڑے کام کی، ششماپرد (سبق آموز) اور ان کے گھرانے کو پڑھانے والی ثابت ہوگی۔

Ashram Observances in Action—by M. K. Gandhi.

چھاپنے والے اوپر کے؛ صفحہ 151؛ قیمت ایک روپیہ۔ گجراتی سے انگریزی ترجمہ کرنے والے وال جی، گوند جی دیسائی۔

دکھن افریقہ سے ہی گاندھی جی نے سماجی جھون کی بنیاد ڈالنے کے لئے آشرم قائم کرنے اور اس میں بہت سے خاندانوں کے ایک ساتھ ملکر رہنے کی پرمہرا قائم کی۔ الگ الگ دھوم مانتے والے، الگ الگ جاتی والے، الگ الگ رنگ والے کیسے پریم، سداچار اور مچھلی جیوندگی بیٹاتے ہوئے سب ایک ساتھ ملکر رہ سکتے ہیں یہ آشرم اسی مقصد سے گاندھی جی نے قائم کئے تھے۔ دکھن افریقہ میں فنکس آشرم، احمدآباد میں پہلے کوچرب اور بعد میں ساہرمئی آشرم، اور اُس کے بعد وردھا کے پاس سیواگرام آشرم گاندھی جی کے کھنڈر بنے۔

ان آشرم میں رہنے والے آشرم واسیوں کے لئے انہوں نے زندگی کے کچھ بنیادی اصول بتائے تھے۔ وہ تھے سادگی پر آگہ، پڑاٹھنا یعنی عبادت، اہلسا یا پریم، برہمچریہ یعنی نفس کشی، استیتھ یعنی اپنے حق یعنی ضرورت سے زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سمجھنا چاہے وہ پانی ہی کیوں نہ ہو، شرم دان یعنی جو محنت کرے اسی کو

دکھن افریقہ سے ہی گاندھی جی نے سماجی جھون کی بنیاد ڈالنے کے لئے آشرم قائم کرنے اور اُس میں بہت سے خاندانوں کے ایک ساتھ ملکر رہنے کی پرمہرا قائم کی۔ الگ الگ دھوم مانتے والے، الگ الگ جاتی والے، الگ الگ رنگ والے کیسے پریم، سداچار اور مذہبی زندگی بتاتے ہوئے سب ایک ساتھ ملکر رہ سکتے ہیں یہ آشرم اسی مقصد سے گاندھی جی نے قائم کئے تھے۔ دکھن افریقہ میں فنکس آشرم، احمدآباد میں پہلے کوچرب اور بعد میں ساہرمئی آشرم، اور اُس کے بعد وردھا کے پاس سیواگرام آشرم گاندھی جی کے کھنڈر بنے۔

ان آشرم میں رہنے والے آشرم واسیوں کے لئے انہوں نے زندگی کے کچھ بنیادی اصول بتائے تھے۔ وہ تھے سادگی پر آگہ، پڑاٹھنا یعنی عبادت، اہلسا یا پریم، برہمچریہ یعنی نفس کشی، استیتھ یعنی اپنے حق یعنی ضرورت سے زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سمجھنا چاہے وہ پانی ہی کیوں نہ ہو، شرم دان یعنی جو محنت کرے اسی کو

ان آشرم میں رہنے والے آشرم واسیوں کے لئے انہوں نے زندگی کے کچھ بنیادی اصول بتائے تھے۔ وہ تھے سادگی پر آگہ، پڑاٹھنا یعنی عبادت، اہلسا یا پریم، برہمچریہ یعنی نفس کشی، استیتھ یعنی اپنے حق یعنی ضرورت سے زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سمجھنا چاہے وہ پانی ہی کیوں نہ ہو، شرم دان یعنی جو محنت کرے اسی کو

—विश्वम्भरनाथ पांडे

گندھی جی کے گہارے دوت سستہ، پریم یا اہلسا، برہمچریہ،
ایریکریہ (دولت پر نجی مالکانہ چھوڑنا) استیہ (ضرورت سے
زیادہ کسی چیز کو لینے کو چوری سمجھنا) شوپر شرم، اسواہ
انہے (نڈرتا)، سرو دھرم سبھاؤ، اسوشٹائون اور سودیشی
— گندھی جی کے سماج والی ڈھانچے کے بنیادی اصول تھے ۔
گندھی جی علی اصول والی تھے ۔ جو دوسروں کو کہتے تھے
اے پہلے خود اپنی زندگی میں اتارتے تھے ۔ اِس نقطہ نظر سے
یہ کتاب بڑے کام کی ہے ۔ ہماری سفارشی ہے کہ ہر پڑھے لکھے
ہندستانی کو یہ کتاب، سماج واد کا اصلی مول آئینے کے لئے،
ضرور پڑھنی چاہیئے ۔

— شومېرناتو پانډے .

Rs. 780

—National Herald, Lucknow.

—Leader, Allahabad.

—Blitz, Bombay

—Bharat Jyoti, Bombay

—Indian Express, Madras

—Vigil, Delhi.

ہماری ہمارا راہ

نہ چین کو مبارکباد !

نئے چین کو مبارکباد !

1 اکتوبر سن 1955 کو چین میں نئے چینی لوک راج (پیپلس ریپبلک آف چین) کی چھٹی سال-گیرہ بڑی دھوم دھام سے منائی گئی۔ دنیا کے سب سوشلسٹ ریپبلکوں نے چین کے شاموں اور نیٹاؤں کو بدھائی دی۔ بھارت کے راجپوت اور پردهان منتری نے بھی چین کے راجپوت اور پردهان منتری کو اس شہر آسور پر بدھائی کے سلیبی بھیجے۔ بھارت چین منتری سنگھ کے پریسیڈنٹ نے دلی سے چین بھارت منتری سنگھ کے پریسیڈنٹ کو پیکنگ میں بدھائی کا تار بھیجا اور انہیں شواہس دلایا کہ بھارت کی جنتا دنیا میں شانتی قائم رکھے اور دنیا کے دوسرے دیشوں کی جنتا کو آزاد اور خوشحال کرنے کی کوششوں میں چینی جنتا کا ہمیشہ پورا پورا ساتھ دے گی۔

ان چھ برس کے اندر نئے چین نے جہوں کے ہر میدان میں جو زبردست ترقی کی ہے وہ دنیا بھر پر آجائے ہوئی ہے۔ یہاں آئے دھرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ نئے چین نے دنیا کے لوگوں کو اور ان لوگوں کو بھی جنہیں نئے چین کے ارادوں پر کسی طرح کے شک تھے یہ ثابت کر دیا کہ نیا چین کسی سے لڑنا نہیں چاہتا۔ وہ سب دیشوں اور سب لوگوں کے ساتھ شانتی اور دوستی سے رہنا چاہتا ہے۔ چین اور بھارت کے نیٹاؤں نے مل کر وہ پانچ اونچے سدھانت دنیا کے سامنے رکھے جو آج پانچ شہل کے نام سے مشہور ہیں، جنہیں ایک دوسرے کے بعد دنیا کے سب دیش اپنی انٹر راشتہ رشتہ کے بنیادی اصول ماننے جارہے ہیں، اور جنہوں نے بتا دیا کہ کمیونسٹ چین ان سب دیشوں کے ساتھ مترقا سے رہنا چاہتا ہے جو اس کے ساتھ مترقا سے رہنا چاہیں۔ اس میں چین کی نظروں میں کمیونسٹ اور غیر کمیونسٹ، مارکسسٹ اور غیر مارکسسٹ کا کوئی فرق نہیں۔

کوریاء میں ان پچھلی ملکوں کی فوجوں نے جن کی لوسروں پر حکومت کرنے کے دھن اور شعلی سے بھجوا لائے اٹھانے کی ناپاک لالسا ابھی ختم نہیں ہوئی ہے

ان چھ برس کے اندر نئے چین نے جہوں کے ہر میدان میں جو زبردست ترقی کی ہے وہ دنیا بھر پر آجائے ہوئی ہے۔ یہاں آئے دھرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ نئے چین نے دنیا کے لوگوں کو اور ان لوگوں کو بھی جنہیں نئے چین کے ارادوں پر کسی طرح کے شک تھے یہ ثابت کر دیا کہ نیا چین کسی سے لڑنا نہیں چاہتا۔ وہ سب دیشوں اور سب لوگوں کے ساتھ شانتی اور دوستی سے رہنا چاہتا ہے۔ چین اور بھارت کے نیٹاؤں نے مل کر وہ پانچ اونچے سدھانت دنیا کے سامنے رکھے جو آج پانچ شہل کے نام سے مشہور ہیں، جنہیں ایک دوسرے کے بعد دنیا کے سب دیش اپنی انٹر راشتہ رشتہ کے بنیادی اصول ماننے جارہے ہیں، اور جنہوں نے بتا دیا کہ کمیونسٹ چین ان سب دیشوں کے ساتھ مترقا سے رہنا چاہتا ہے جو اس کے ساتھ مترقا سے رہنا چاہیں۔ اس میں چین کی نظروں میں کمیونسٹ اور غیر کمیونسٹ، مارکسسٹ اور غیر مارکسسٹ کا کوئی فرق نہیں۔

کوریاء میں ان پچھلی ملکوں کی فوجوں نے جن کی لوسروں پر حکومت کرنے کے دھن اور شعلی سے بھجوا لائے اٹھانے کی ناپاک لالسا ابھی ختم نہیں ہوئی ہے

وہاں کے بارے میں ہمیں یہ خبر دے رہی تھی کہ کوریانوں نے کوریانوں کے لڑاکا کر فاکھا بٹانا چاہا۔ کوریانوں کے بھادور سپاہیوں نے انکا ہتھ کر مٹا دیا۔ نئے چین نے اس وقت تک داخل نہیں دیا جب تک کہ لڑائی چین کی سرحد تک نہیں پہنچ گئی اور نئے چین کی مدد سے ہر سہ ماہی کے دشمنوں کی نگاہیں کوریانوں پر ہی نہیں چین پر بھی لگی ہوئی ہیں۔ دیکھتے دیکھتے لڑائی کا پلڑا پلٹا۔ ٹھیک اُس جیت کے سہ ماہی جب دنیا کے دوسرے شانتی پر دیشوں نے، جن میں بھارت خاص تھا، چاہا کہ کوریا کا معاملہ شانتی کے ساتھ طے ہو جاوے اور چین کو اس کی اُٹا دلائی تو چین نے اپنے ہاتھ لڑائی سے کھینچ لئے۔ کوریا کی لڑائی کو بند کرنے میں چین کا حصہ سب سے زبردست، چین کے یہی کو بڑھانے والا اور نئے چین کی آسن پسندی کا بہت بڑا ثبوت ہے۔

ہند چین (انڈو چائنا) کی لڑائی کو بند کرنے میں چین اور بھارت دونوں نے مل کر جو حصہ لیا ہے وہ ان دونوں دیشوں کے لئے بڑے گورو کی چیز ہے۔

تائیوان (فارموسا) چین کے شہر کا ایک ٹکڑا ہے۔ کسی بھی بھارت کی قوم کا وہاں داخل دینا اور اُسے اپنا فوجی اڈا بنانے دیکھنا انتہائی اہم ہے۔ تائیوان کے آپدروہوں کو، جو تائیوان کے ریلوے والے نہیں ہیں، چینی مہادیپ سے ہار کر اور بھاگ کر غہروں کی کڑیوں کے سایہ میں وہاں پر پناہ لئے ہوئے ہیں۔ باہر میں کو لینا نئے چین کے لئے یانیں ہاتھ کا کھیل تھا اور تائیوان اور وہاں کی جیتا کو آزاد کرنا نئے چین کا فرض بھی ہے۔ پھر بھی نئے چین نے تائیوان کی لڑائی سے فی الحال اپنا ہاتھ کھینچ لیا اس لئے تاکہ دنیا کی جیتا جنگ کی ہرادی سے بچی رہے، تائیوان کا یہ معاملہ بھی صلح صفائی ہی سے طے ہو سکے اور سب ملکوں کے بیچ شانتی اور دوستی قائم رہ سکے۔

دنیا کی آنترواٹری کانفرنسوں میں کراس کر جانیوا میں اور بانڈنگ میں نئے چین کے نےتاہوں نے دنیا بھر پر یہ اُجاگر کر دیا کہ وہ نیا چین جس نے کچھ سال پہلے دنیا کی سب سے بڑی سامراجی طاقتوں سے لوہا لے کر اپنی ساٹھ کروڑ جنیتا کو سچی آجاتی دیا دیا ہے وہی نیا چین شانتی کا سب سے بڑا دشمن بھی ہے۔ ایشیا کا سب سے شکتی شالی دیش اور دنیا کے سب سے اہم شکتی شالی دیشوں میں سے ایک ہونے ہونے بھی وہ دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ امن اور دوستی سے رہنا چاہتا ہے۔ یہی کارن ہے کہ نئے چین اور

تائیوان (فارموسا) چین کے شہر کا ایک ٹکڑا ہے۔ کسی بھی بھارت کی قوم کا وہاں داخل دینا اور اُسے اپنا فوجی اڈا بنانے دیکھنا انتہائی اہم ہے۔ تائیوان کے آپدروہوں کو، جو تائیوان کے ریلوے والے نہیں ہیں، چینی مہادیپ سے ہار کر اور بھاگ کر غہروں کی کڑیوں کے سایہ میں وہاں پر پناہ لئے ہوئے ہیں۔ باہر میں کو لینا نئے چین کے لئے یانیں ہاتھ کا کھیل تھا اور تائیوان اور وہاں کی جیتا کو آزاد کرنا نئے چین کا فرض بھی ہے۔ پھر بھی نئے چین نے تائیوان کی لڑائی سے فی الحال اپنا ہاتھ کھینچ لیا اس لئے تاکہ دنیا کی جیتا جنگ کی ہرادی سے بچی رہے، تائیوان کا یہ معاملہ بھی صلح صفائی ہی سے طے ہو سکے اور سب ملکوں کے بیچ شانتی اور دوستی قائم رہ سکے۔

دنیا کی آنترواٹری کانفرنسوں میں کراس کر جانیوا میں اور بانڈنگ میں نئے چین کے نےتاہوں نے دنیا بھر پر یہ اُجاگر کر دیا کہ وہ نیا چین جس نے کچھ سال پہلے دنیا کی سب سے بڑی سامراجی طاقتوں سے لوہا لے کر اپنی ساٹھ کروڑ جنیتا کو سچی آجاتی دیا دیا ہے وہی نیا چین شانتی کا سب سے بڑا دشمن بھی ہے۔ ایشیا کا سب سے شکتی شالی دیش اور دنیا کے سب سے اہم شکتی شالی دیشوں میں سے ایک ہونے ہونے بھی وہ دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ امن اور دوستی سے رہنا چاہتا ہے۔ یہی کارن ہے کہ نئے چین اور

دنیا کی آنترواٹری کانفرنسوں میں کراس کر جانیوا میں اور بانڈنگ میں نئے چین کے نےتاہوں نے دنیا بھر پر یہ اُجاگر کر دیا کہ وہ نیا چین جس نے کچھ سال پہلے دنیا کی سب سے بڑی سامراجی طاقتوں سے لوہا لے کر اپنی ساٹھ کروڑ جنیتا کو سچی آجاتی دیا دیا ہے وہی نیا چین شانتی کا سب سے بڑا دشمن بھی ہے۔ ایشیا کا سب سے شکتی شالی دیش اور دنیا کے سب سے اہم شکتی شالی دیشوں میں سے ایک ہونے ہونے بھی وہ دنیا کے سب دیشوں کے ساتھ امن اور دوستی سے رہنا چاہتا ہے۔ یہی کارن ہے کہ نئے چین اور

وہاں کے لوگوں کا مان اور ان کے ساتھ ہم آواز دنیا بھر میں بڑھتا جا رہا ہے۔

اس سب کے ساتھ ساتھ نئے چین کے لوگوں نے اپنے دیش کے اندر کے چین کو اس طرح اُپر اُٹھایا ہے، جس طرح دیش کی آرتھک اوسٹا کو سدھارا ہے، کروڑوں چنٹا کے سدچار کو اُوندھا کیا ہے، سارے دیش سے بیگانہ بھینکی، چوری اور دہرائی کو مٹا کر اُسے ایک بڑا باغ بنا دیا ہے اُس کی دوسری مثال دنیا کے ابھی تک کے انہاس میں آسانی سے نہیں مل سکتی۔

ایشیا اور آفریقہ کے اُن دیشوں کے لئے جو ابھی تک غریب سے کچھ نہ کچھ دیے ہوئے اور انسانی ترقی کی دوز میں پھنسے ہوئے ہیں نیا چین سب سے بڑا آدرش اور سب سے بڑا سہارا ہے۔ دنیا کی چنٹا کو ایک کرنے کے لئے نیا چین آج سب سے بڑی شکتی دکھائی دیتا ہے۔ کارن یہ ہے کہ نیا چین "چنٹا کا چین" ہے۔ دنیا کی چنٹا ایک ہے۔ کالی یا گوری، لال یا پیلی چنٹا کہیں بھی ایک دوسرے سے لڑنا نہیں چاہتی۔ چنٹا میں پریم ہے۔ چنٹا میں ہی چلارہن ہیں۔ چنٹا میں اننت شکتی چھپی ہوئی ہے۔ وہ شکتی اب تیزی کے ساتھ جاگتی جا رہی ہے اور دنیا کو ایک کرتی جا رہی ہے۔ ان سب باتوں میں جو بھاؤ، جو وچار اور جو اُمتیں چینی چنٹا کے اندر جاگ چکی ہیں وہی بھارت کی چنٹا کے دلوں میں ہلرے مار رہی ہیں۔ یہ دونوں پرلے دیش سچے سے سچے معنی میں ادھیاتم پردھان دیش ہیں۔ دونوں کی پچھلی اندھیری صدیوں کی بہت کچھ کالہ دھل چکی ہے، باقی دھلتی جا رہی ہے۔ دونوں پر انسانی سماج کو اُس کے لکھن تک پہنچانے کے لئے زبردست ذمہ داری ہے۔ اِس لئے ہم "نیا ہند" پروار کی طرف سے نئے چین کی چنٹا کو اُن کی اِس چھٹی سال گرہ کے اوسر پر دل سے بھائی دیتے ہیں، ہماری دلی آچھا ہے کہ چین کے لئے یہ دن ہزاروں سال تک بڑھتی ہوئی شان اور چمک دمک کے ساتھ بار بار آتا رہے۔ ہماری یہ بھی آچھا ہے کہ مانو سماج کی سچی سیوا کے لئے ہندستان اور چین کی دوستی ہمیشہ ہمیشہ کے لئے قائم رہے !

1. 10. '55

—سندھ لال

—سندھ لال

1. 10. '55

یہ کیوں ؟

دیش میں سرکاری طرف سے تپدیق کے 'ڈیکے کا کام' جیسے بی. سی. جی. کا ڈیکہ کہا جاتا ہے بڑا بڑا جاری ہے۔ خاص کر اسکولوں کے اندر جگہ جگہ ایک طرف سے سب بچوں کے یہ ڈیکے لگائے جا رہے ہیں۔ دیش کے کچھ علاقوں

یہ کیوں ؟

دیش میں سرکاری طرف سے تپدیق کے 'ڈیکے کا کام' جیسے بی. سی. جی. کا ڈیکہ کہا جاتا ہے بڑا بڑا جاری ہے۔ خاص کر اسکولوں کے اندر جگہ جگہ ایک طرف سے سب بچوں کے یہ ڈیکے لگائے جا رہے ہیں۔ دیش کے کچھ علاقوں

نے اس ٹیکے کا بیرونی کیا۔ ان میں دو خاص نام عربی میں راجہ گنڈا چاری اور شری دتھیا ہمارے کے ہیں۔ راجا جی کے بیان اور بیٹھن اس وقت پر سماچار پتروں میں چھپ چکے ہیں۔ سرکاری افسروں نے اس بیرونی کی کوئی پرواہ نہیں کی۔ یہاں تک کہ کچھ سرکاری افسروں اور راجا جی کے بیچ تھوڑی بہت بحثا بحثی بھی ہوئی۔ دیہی کے کلمے بڑے بڑے ڈاکٹروں نے راجا جی کا سہرتیں کیا۔ راجا جی نے اپنے ایک بیان میں کہا ہے کہ سرکار نے کسی سرکار کے ذریعہ دیہی کے ڈاکٹروں 'خاص کر سرکاری نوکروں کو' یہ ہدایت کی ہے کہ وہ دیہی کے معمولی اخباروں کے اندر اس وقت پر اپنی رائے ظاہر نہ کریں اور اگر انہیں کچھ کہنا ہی ہو تو سائنسی تھنک سے سائنسی پتربنگوں کے اندر کہیں۔ راجا جی کا کہنا ہے کہ اس پر بہت سے ڈاکٹروں کو قہر ہو گیا کہ اگر وہ سرکار کی پالیسی کے خلاف ہی۔ سی۔ جی کے ٹیکے پر کوئی رائے ظاہر کریں کہ تو ان کا رجسٹریشن چھین سکتا ہے۔ بھارت سرکار کی ہیلتھ منسٹر راج کماری امرت کور نے پارلیمنٹ کے اندر کہا کہ راجا جی کا یہ کہنا کہ ڈاکٹروں پر اس طرح کا دباؤ ڈالا گیا ہے غلط ہے۔ ہم اس بارے میں قبول اتنا ہی کہہ سکتے ہیں کہ سچ کئی طرح کے ہوتے ہیں۔ عدالتی یا قانونی 'سچ ایک الگ چیز ہے' سرکار یا راجا جی سچ دوسری چیز ہے اور معمولی جلتا کا سچ تیسری چیز ہے۔ راجا جی کے چہرے اور ان کی نیسوارتھتا سے بھی دیہی اچھی طرح پہچنت ہے۔ جو ہو 'انہ دنوں کی بحثا بحثی کے بعد بھی سرکار کا ٹیکہ گالے کا کلم ہے دھوکہ زوروں کے ساتھ جاری ہے' اور راجا جی جیوں کے تیوں اپنی بات پر قہر ہیں۔

حال میں راجا جی نے انگریزی میں ایک چھوٹی سی پستکا پرکاشت کی ہے جس میں انہوں نے دکھا یا ہے کہ وہ ہی۔ سی۔ جی کا وردہ نہیں کرتے ہیں۔ اس میں انہوں نے یہ بھی لکھا ہے کہ اس پستکا کے نکالنے کی انہیں ضرورت نہیں پڑی۔ ہم اس ہی۔ سی۔ جی کے معاملے میں راجا جی کی رائے سے پوری طرح سہمت ہیں۔ اس لئے ہم اپنا فرض سمجھ کر راجا جی کی پستکا کا ہندستانی انواد پانیکوں کی بیہت کر رہے ہیں۔ ہم چاہتے ہیں کہ ہمارے ادھک سے ادھک دیہی اسی سے پڑھ کر یا سن کر لاپٹا رہیں۔

14. 10. '55

—سندرلال

—سندرلال

14. 10. 55

“دُنیا کی ماتاؤں کی کانگریس”

دُنیا کو جُنگ کے اُستارے سے بچانے اور دُنیا میں امن کرایم رکھنے کے لیے جو کوششیں آج آج اُجھ اُجھ ہو رہی ہیں ان میں سے ایک بہت بڑی کوشش دُنیا بھر کی ماؤں کی وہ کانگریس ہے جو 7 جولائی 1955 سے 10 جولائی 1955

“دُنیا کی ماتاؤں کی کانگریس”

دُنیا کو جُنگ کے اُستارے سے بچانے اور دُنیا میں امن قائم رکھنے کے لیے جو کوششیں آج آج اُجھ اُجھ ہو رہی ہیں ان میں ایک بہت بڑی کوشش دُنیا بھر کی ماؤں کی وہ کانگریس ہے جو 7 جولائی 1955 سے 10 جولائی 1955

تک یورپ کے مشہور شہر لاسن میں ہوئی۔ اس کانگریس میں دنیا کے چھاسٹھ دیشوں سے، جن میں امریکہ، انگلینڈ، فرانس، روس، چین اور ہندوستان سب شامل تھے، ایک ہزار سے اوپر مائیں جمع ہوئی تھیں۔ ان میں چھبیس مہادیپوں سب دھرموں اور سب بولہوں والی مائیں موجود تھیں۔ دنیا کی تاریخ میں اپنی قسم کی یہ پہلی کانگریس تھی۔

چار دن کی بھس کے باءِ جا کسلا ون اک ہزار سے زور ماآوں نے اک رای سے دنیا کے سامنے رکلا اس کے کھ باکھ ہم نیچے دتے ہیں :—

“کھاسٹھ ملکوں اور سب مہادیپوں سے آنے والی، ابلگ ابلگ بالیوں والی، ابلگ ابلگ باریک برباس، ابلگ ابلگ ببار اور ترھ ترھ کے ساماآک ہالاک میں رھنے والی ہم اورتوں اور ماآے ہتہاس میں پھلی بار اس کانگریس میں جما ہئی ہیں۔

“ہم سب اک ہی پک کے ہراے کے ساآ جما ہئی ہیں اور بھ یھ ہے کہ اپنے بکوں کو آگ کے ہر ترھ کے کھترے سے بکابوں اور ونوں سلا اور آدن کے ساآ رنڈے رھنے کا موقع دیں۔

“یھ کانگریس آگ سے پءا ہونے والی موسیبتوں سے گؤج رھی ہے۔ دوسری بڈی آگ نے آن کرؤڈوں ماآوں کو رلائی، آن بکوں کو مٹا ڈالا اور آس ترھ دنیا کے انسانوں کو رنج اور غم میں ڈبو دیا آے۔ ہم بھول نہیں سکتیں۔ چار کرؤڑ سے اوپر آدمی اس آگ میں مرے، تین کرؤڑ سے اوپر زخمی یا ہمیشہ کے لٹے پے کار ہو گئے، کرؤڑوں پتہ ہو گئے، کرؤڑوں اس کے بعد دردن اور اکال کا شکار ہوئے۔ نہ جانے کتنی آسیدیں ٹوٹیں، کتنوں ہی قابلتیں مٹی میں مل گئیں۔ کتنے برباد ہو گئے!

“آن تمام مصیبتوں کو یاد رکھتے ہوئے ہم اس پکے ارادے کے ساآ جمع ہوئی ہیں کہ اب ہم نئی آگ نہ ہونے دینگے۔ ہم نے یہاں ایک دوسرے کو جان اور پہچان لیا ہے۔ ہمیں ایک دوسرے سے پءار ہے۔ ہم نے اس بات کو بھی دیکھ لیا ہے کہ ہم ماؤں میں کتنی بڑی شکتی چھپی ہوئی ہے۔ جو چیزیں ہم میں ایک دوسرے سے فرق کرتی ہیں وہ تچے اور چوٹی ہیں، جو ہمیں ایک دوسرے سے ملاتی ہیں وہ آہم اور بڑی ہیں۔ ہم اس بات کو اچھی طرح سمجھ گئی ہیں کہ کوئی آگ نہیں ہے کہ دنیا کی اک اک قومیں ایک دوسرے کی دشمن بن کر رھیں۔ یہ دنیا کافی بڑی ہے، اس میں سب کے لیے کھجائھی ہے۔ سب ملکر امن سے رہ سکتے ہیں۔

“لیکن دنیا میں جب تک اک اک ملک ہتھیاروں کی دوز میں ایک دوسرے سے بھڑنے کی کوشش کرتے رھتے، جب تک اک اک فوجی دل اور اکھارے بھ

تک یورپ کے مشہور شہر لاسن میں ہوئی۔ اس کانگریس میں دنیا کے چھاسٹھ دیشوں سے، جن میں امریکہ، انگلینڈ، فرانس، روس، چین اور ہندوستان سب شامل تھے، ایک ہزار سے اوپر مائیں جمع ہوئی تھیں۔ ان میں چھبیس مہادیپوں سب دھرموں اور سب بولہوں والی مائیں موجود تھیں۔ دنیا کی تاریخ میں اپنی قسم کی یہ پہلی کانگریس تھی۔

چار دن کی بحث کے بعد اپنا جو فیصلہ ان ایک ہزار سے اوپر مائوں نے ایک رائے سے دنیا کے سامنے رکھا اس کے کچھ واکہ ہم نیچے دیتے ہیں:—

چھاسٹھ ملکوں اور سب مہادیپوں سے آئے والی، اک اک بولہوں والی، اک اک دھارمک وشواس، اک اک وچار اور طرح طرح کے ساماآک حالات میں رھنے والی ہم عورتیں اور مائیں انہاس میں پہلی بار اس کانگریس میں جمع ہوئی ہیں۔

”ہم سب ایک ہی پکے ارادے کے ساآ جمع ہوئی ہیں اور وہ یہ ہے کہ اپنے بچوں کو آگ کے ہر طرح کے خطرے سے بچادیں اور انہیں سکھ اور آدن کے ساآ رنڈے رھنے کا موقع دیں۔

”یہ کانگریس آگ سے پیدا ہونے والی مصیبتوں سے گونج رھی ہے۔ دوسری بڑی آگ نے جن کرؤڑوں ماؤں کو رلائی، جن بچوں کو مٹا ڈالا اور جس طرح دنیا کے انسانوں کو رنج اور غم میں ڈبو دیا آے۔ ہم بھول نہیں سکتیں۔ چار کرؤڑ سے اوپر آدمی اس آگ میں مرے، تین کرؤڑ سے اوپر زخمی یا ہمیشہ کے لٹے پے کار ہو گئے، کرؤڑوں پتہ ہو گئے، کرؤڑوں اس کے بعد دردن اور اکال کا شکار ہوئے۔ نہ جانے کتنی آسیدیں ٹوٹیں، کتنوں ہی قابلتیں مٹی میں مل گئیں۔ کتنے برباد ہو گئے!

”آن تمام مصیبتوں کو یاد رکھتے ہوئے ہم اس پکے ارادے کے ساآ جمع ہوئی ہیں کہ اب ہم نئی آگ نہ ہونے دینگے۔ ہم نے یہاں ایک دوسرے کو جان اور پہچان لیا ہے۔ ہمیں ایک دوسرے سے پءار ہے۔ ہم نے اس بات کو بھی دیکھ لیا ہے کہ ہم ماؤں میں کتنی بڑی شکتی چھپی ہوئی ہے۔ جو چیزیں ہم میں ایک دوسرے سے فرق کرتی ہیں وہ تچے اور چوٹی ہیں، جو ہمیں ایک دوسرے سے ملاتی ہیں وہ آہم اور بڑی ہیں۔ ہم اس بات کو اچھی طرح سمجھ گئی ہیں کہ کوئی آگ نہیں ہے کہ دنیا کی اک اک قومیں ایک دوسرے کی دشمن بن کر رھیں۔ یہ دنیا کافی بڑی ہے، اس میں سب کے لیے کھجائھی ہے۔ سب ملکر امن سے رہ سکتے ہیں۔

”لیکن دنیا میں جب تک اک اک ملک ہتھیاروں کی دوز میں ایک دوسرے سے بھڑنے کی کوشش کرتے رھتے، جب تک اک اک فوجی دل اور اکھارے بھ

ہیں، جب تک ایک دوسرے کی ہینسا کی جاتی رہے گی اور جگہ کا پریوینکٹا کیا جاتا رہے گا، جب تک پेटمی ہتھیار جما ہوتے رہیں اور ان کے ہتھیار بڑھتے رہیں، جب تک الگ الگ سرکاروں کے دوسرے کو سمجھنے اور ایک دوسرے پر بھروسہ کرنے کی کوشش نہیں کریں گی، تب تک دنیا کے امن کو خطرہ بنا رہے گا۔

”ہر آدمی کو یہ حق ہے کہ وہ آزاد زندگی بسر کرے اور دوسرے کی قومی آزادی کی بھی عزت کرے۔ امن کیوں اسی طرح قائم رہ سکتا ہے۔“

”آج ہم نے یہ جان لیا ہے کہ جگہ ضروری نہیں ہے۔ جنگ کو روکا جا سکتا ہے اور امن قائم رکھا جا سکتا ہے۔“

”دنیا کے کچھ لوگوں نے ارادہ کیا اور کر رہا ہے کہ دونوں جنگ رک گئی۔“

”پالنگ کانفرنس میں جو دس اصول قائم کئے گئے ان میں سے ایک یہ ہے کہ ایک دوسرے کا نظام رکھنے والے دیہات ہی ملکر امن سے رہ سکتے ہیں۔“

”آسٹریا کے صلح نامے سے ثابت ہے کہ دنیا کے سب سوالوں کا حل مل سکتا ہے۔“

”ہتھیار بندی کے سوال پر سمجھوتہ صاف ممکن دکھائی دے رہا ہے۔“

”ہم عورتیں آدمی انسانی قوم ہیں۔ اپنے بچوں کی طرف اور دنیا کے سب لوگوں کی طرف ہماری ہی ذمہ داری ہے۔“

”سب دیشوں کی ماؤں سے ہمارا کہنا ہے کہ ماؤں! یہ دنیا بھر کی ماؤں کی کانگریس تمہیں پریم اور ایکٹا کا سلیش ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ بچوں کے پیدا کرنے، بڑے پالنے اور بڑے آبادی بنانے میں کتنا بھگت لگتا ہے اور کتنی محنت کرنی پڑتی ہے۔ ہم اپنے بچوں کو جیون دیتی ہیں، ہم اُس جیون کو برباد ہوتے نہیں دیکھنا چاہتیں۔“

”ہم جنگ نہیں ہونے دینگے۔“

”ہماری یہ مانگ ہے کہ ایک ہی ہتھیاروں کا ہٹا ہٹا جائے اور جو ہیں اُن کو نشٹ کر دیا جائے۔“

”ہم یہ برداشت نہیں کر سکتیں کہ جب کہ پشمار انسان ہتھیاروں میں نہیں پاسکتے اُنہیں اور کہیں روپیہ جنگ کی تیاروں میں پھونکا جائے۔“

”ہتھیار اور ہتھیاروں کی دور ختم ہوئی چاہئے۔“

”ہماری یہ مانگ ہے کہ جو روپیہ ہتھیاروں کے ہٹانے میں خرچ کیا جاتا ہے وہ مکاتوں، اسپتالوں، اسکولوں، گھنٹا خانوں کے بنانے میں اور ہمارے بچوں کو جیون کا سہ پھونچانے میں خرچ کیا جائے۔“

”ہم جنگ کا پریوینکٹا کیا جاتا رہے گا، جب تک ایک ہی ہتھیار جمع ہوتے رہیں اور اُن کے ہتھیار بڑھتے رہیں، جب تک ایک الگ سرکاریں ایک دوسرے کو سمجھنے اور ایک دوسرے پر بھروسہ کرنے کی کوشش نہیں کریں گی، تب تک دنیا کے امن کو خطرہ بنا رہے گا۔“

”ہر آدمی کو یہ حق ہے کہ وہ آزاد زندگی بسر کرے اور دوسرے کی قومی آزادی کی بھی عزت کرے۔ امن کیوں اسی طرح قائم رہ سکتا ہے۔“

”آج ہم نے یہ جان لیا ہے کہ جنگ ضروری نہیں ہے۔ جنگ کو روکا جا سکتا ہے اور امن قائم رکھا جا سکتا ہے۔“

”دنیا کے کچھ لوگوں نے ارادہ کیا اور کر رہا ہے کہ دونوں جنگ رک گئی۔“

”پالنگ کانفرنس میں جو دس اصول قائم کئے گئے ان میں سے ایک یہ ہے کہ ایک دوسرے کا نظام رکھنے والے دیہات ہی ملکر امن سے رہ سکتے ہیں۔“

”آسٹریا کے صلح نامے سے ثابت ہے کہ دنیا کے سب سوالوں کا حل مل سکتا ہے۔“

”ہتھیار بندی کے سوال پر سمجھوتہ صاف ممکن دکھائی دے رہا ہے۔“

”ہم عورتیں آدمی انسانی قوم ہیں۔ اپنے بچوں کی طرف اور دنیا کے سب لوگوں کی طرف ہماری ہی ذمہ داری ہے۔“

”سب دیشوں کی ماؤں سے ہمارا کہنا ہے کہ ماؤں! یہ دنیا بھر کی ماؤں کی کانگریس تمہیں پریم اور ایکٹا کا سلیش ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ بچوں کے پیدا کرنے، بڑے پالنے اور بڑے آبادی بنانے میں کتنا بھگت لگتا ہے اور کتنی محنت کرنی پڑتی ہے۔ ہم اپنے بچوں کو جیون دیتی ہیں، ہم اُس جیون کو برباد ہوتے نہیں دیکھنا چاہتیں۔“

”ہم جنگ نہیں ہونے دینگے۔“

”ہماری یہ مانگ ہے کہ ایک ہی ہتھیاروں کا ہٹا ہٹا جائے اور جو ہیں اُن کو نشٹ کر دیا جائے۔“

”ہم یہ برداشت نہیں کر سکتیں کہ جب کہ پشمار انسان ہتھیاروں میں نہیں پاسکتے اُنہیں اور کہیں روپیہ جنگ کی تیاروں میں پھونکا جائے۔“

”ہتھیار اور ہتھیاروں کی دور ختم ہوئی چاہئے۔“

”ہماری یہ مانگ ہے کہ جو روپیہ ہتھیاروں کے ہٹانے میں خرچ کیا جاتا ہے وہ مکاتوں، اسپتالوں، اسکولوں، گھنٹا خانوں کے بنانے میں اور ہمارے بچوں کو جیون کا سہ پھونچانے میں خرچ کیا جائے۔“

”جب تک ہمارا یہ وعدہ پورا نہیں ہوگا ہم چین نہیں چھوڑیں گے۔“

”سب देशوں کی औरتوں سے ہمارا کہنا ہے بھنوں! ہم یہ نہیں چاہتے کہ ہمارے سب کے بچے ایک دوسرے کو قتل کریں۔ ہم اپنے بچوں کو سکھانا چاہتے ہیں کہ وہ سب دیشوں اور سب قوموں کے لوگوں سے پیار کریں۔ ہم اس بات کی اجازت نہیں دیتے کہ ہمارے بچوں کو ایک دوسرے سے نفرت اور ایک دوسرے کے ساتھ بدتمیزی کا پرتاؤ سکھا کر ان کے دلوں اور دماغوں کو گندہ کیا جائے۔“

”سب بچے چاہے وہ گورے ہوں، یا پیلے، یا کالے، برابر ہیں۔ سب کے برابر کے حقوق ہیں۔ سب کو جان پیاری ہے۔ سب کی رक्षा ہونی چاہی ہے۔“

”ہماری کانگریس نے یہ دیکھا دیا ہے کہ تمام دنیا کی औरتوں ایک دوسرے کی मित्र ہیں۔“

”ہم یہ प्रतिज्ञا کرتے ہیں کہ ہم مل کر رہیں گے۔ اور اپنے بچوں کو جنگ سے بچانے کے لئے، ہتھیار بندی کرانے کے لئے اور دنیا کی تمام قوموں میں دوستی کرانے کے لئے بار بار ملتی رہیں گے۔“

”ہمارے کروڑوں ہاتھ ساری زمین پر फैل کر انسانی دوستی اور انسانی مصلحت کو مضبوط کرتے رہیں گے۔“

یہ اعلان 10 جولائی سن 1955 کو لاہور میں دنیا کی مائوں کی کانگریس میں ایک رائے سے پاس ہوا۔ اس اعلان کی مکتبہ دنیا کے بڑے بڑے دیشوں کی سرکاروں کو اور یو۔ این۔ او۔ کے دفتر کو بھیجی گئی۔ مائوں کی ایک استھانی کمیٹی بھی مادی گئی جس کا کام ہوا دنیا بھر کی مائوں میں دوستی کو بڑھانا اور مضبوط کرنا اور دنیا بھر کے بچوں کو جنگ کے خطرے سے بچانے دیکھنا۔

ہم اس کانگریس کی تجویز کرنے والی اور اس میں شریک ہونے والی دنیا بھر کی سب مائوں اور بھنوں کو دل سے بھاڑ دیتے ہیں۔ آج تک امن کے لئے جتنی کوششیں کی گئی ہیں اور کی جا رہی ہیں ان میں سب سے مبارک، سب سے زبردست اور سب سے شہ نسلبد یہی کوشش ہے۔ نمبرنی میں لکھا ہے:—”جہاں نارین کی پوجا ہوتی ہے وہاں دھرتا آکر باس کرتے ہیں۔“ محمد صاحب کی ایک شہر حدیث ہے:—”اس میں شک نہیں کہ جنت مائوں کے قدموں کے نیچے رہتی ہے۔“ اس شہ لکھن کے باوجود ہم پورا یقین ہے کہ دنیا اب کئی جنگ کے خطرے میں نہیں رہ سکتی۔

”جب تک ہمارا یہ وعدہ پورا نہیں ہوگا ہم چین نہیں چھوڑیں گے۔“

”سب دیشوں کی औरتوں سے ہمارا کہنا ہے بھنوں! ہم یہ نہیں چاہتے کہ ہمارے سب کے بچے ایک دوسرے کو قتل کریں۔ ہم اپنے بچوں کو سکھانا چاہتے ہیں کہ وہ سب دیشوں اور سب قوموں کے لوگوں سے پیار کریں۔ ہم اس بات کی اجازت نہیں دیتے کہ ہمارے بچوں کو ایک دوسرے سے نفرت اور ایک دوسرے کے ساتھ بدتمیزی کا پرتاؤ سکھا کر ان کے دلوں اور دماغوں کو گندہ کیا جائے۔“

”سب بچے چاہے وہ گورے ہوں، یا پیلے، یا کالے، برابر ہیں۔ سب کے برابر کے حقوق ہیں۔ سب کو جان پیاری ہے۔ سب کی رक्षा ہونی چاہی ہے۔“

”ہماری کانگریس نے یہ دیکھا دیا ہے کہ تمام دنیا کی औरتوں ایک دوسرے کی मित्र ہیں۔“

”ہم یہ प्रतिज्ञا کرتے ہیں کہ ہم مل کر رہیں گے۔ اور اپنے بچوں کو جنگ سے بچانے کے لئے، ہتھیار بندی کرانے کے لئے اور دنیا کی تمام قوموں میں دوستی کرانے کے لئے بار بار ملتی رہیں گے۔“

”ہمارے کروڑوں ہاتھ ساری زمین پر پھیل کر انسانی دوستی اور انسانی مصلحت کو مضبوط کرتے رہیں گے۔“

یہ اعلان 10 جولائی سن 1955 کو لاہور میں دنیا کی مائوں کی کانگریس میں ایک رائے سے پاس ہوا۔ اس اعلان کی مکتبہ دنیا کے بڑے بڑے دیشوں کی سرکاروں کو اور یو۔ این۔ او۔ کے دفتر کو بھیجی گئی۔ مائوں کی ایک استھانی کمیٹی بھی مادی گئی جس کا کام ہوا دنیا بھر کی مائوں میں دوستی کو بڑھانا اور مضبوط کرنا اور دنیا بھر کے بچوں کو جنگ کے خطرے سے بچانے دیکھنا۔

ہم اس کانگریس کی تجویز کرنے والی اور اس میں شریک ہونے والی دنیا بھر کی سب مائوں اور بھنوں کو دل سے بھاڑ دیتے ہیں۔ آج تک امن کے لئے جتنی کوششیں کی گئی ہیں اور کی جا رہی ہیں ان میں سب سے مبارک، سب سے زبردست اور سب سے شہ نسلبد یہی کوشش ہے۔ نمبرنی میں لکھا ہے:—”جہاں نارین کی پوجا ہوتی ہے وہاں دھرتا آکر باس کرتے ہیں۔“ محمد صاحب کی ایک شہر حدیث ہے:—”اس میں شک نہیں کہ جنت مائوں کے قدموں کے نیچے رہتی ہے۔“ اس شہ لکھن کے باوجود ہم پورا یقین ہے کہ دنیا اب کئی جنگ کے خطرے میں نہیں رہ سکتی۔

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرٹک साहित्य

हजरत मोहम्मद और इसलाम

लेखक—परिचित मुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस नाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हजरत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—परिचित मुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

मुमर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आजाद, कीमत—डेढ़ रुपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फ़िराक, कीमत—तीन रुपया

मिलने का पता

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—پنڈت سندھ لال، مولاہ—تین روپیہ
اسلام کے پیغمبر کے سمبندھ میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اس سے
سندھ کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکھک—پنڈت سندھ لال، مولاہ—ڈیڑ روپیہ

مہاتما زرتشت اور ایرانی سنسکرتی

لیکھک—دشومہر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

یہود دھرم اور سامی سنسکرتی

لیکھک—دشومہر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

پراچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—دشومہر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

سمیر بابل اور اسوریائی پراچین سنسکرتی

لیکھک—دشومہر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

پراچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—دشومہر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

گنگا سے گوتمی تک

(پرگتی شیل کہانی سنڈرہ)

لیکھک—شری محیب رضوی، قیمت—دو روپیہ

آگ اور آنسو

(بھارتیوں سماجک کہانیاں)

لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری، قیمت—ڈیڑ روپیہ

قرآن اور دھارمک متبھید

لیکھک—مولانا ابوالکلام آزاد، قیمت—ڈیڑ روپیہ

جھنکار

(پرگتی شیل کہانیاں کا سنڈرہ)

لیکھک—زنگویہتی سہائے فراق، قیمت—تین روپیہ

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

145 مئی گانج دھارم آباد 145 مئی گانج دھارم آباد

हिन्दी घर

ہندی گھر

کلیچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر۔ ہاٹیک ہندی 'ردو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

تاجپر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر۔ ہاٹیک ہندی 'ردو' انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

(ہندی اور اردو میں)

لکھک—گاندھیباد کے مانے جانے

لکھک—گاندھیباد کے مانے جانے

بیڈان : شری منڈر آلی سارنٹا

بیڈان : شری منڈر علی سوختہ

سکے 225، کرمیت دو روپیہ

صفحہ 225، قیمت دو روپیہ

— : 0 : —

— : 0 : —

گاندھی بابا

گاندھی بابا

(بچوں کے لیے بہت دلچسپ کتاب)

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)

لکھک—کدسیا جیدی

لکھک—کدسیہ زیدی

بھمیکا—پنڈت جواہرلال نہرو

بھمیکا—پنڈت جواہر لال نہرو

موتا کاغذ، موتا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں

موتا کاغذ، موتا ٹائپ، بہت سی رنگین تصویریں

دام دو روپیہ

دام دو روپیہ

— : 0 : —

— : 0 : —

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور کوران

گیتا اور کوران

275 سکے، دام ڈاڑھ روپیہ

275 صفحہ، دام تھانی روپیہ

ہندو مسلم اکیتا

ہندو مسلم اکیتا

100 سکے، دام بارہ آنے

100 صفحہ، دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیڈان سے سبق

مہاتما گاندھی کے بلیڈان سے سبق

کرمیت بارہ آنے

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

کرمیت چار آنے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

بنگال اور اُس سے سبق

کرمیت دو آنے

قیمت دو آنے

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

145 مڈوگنج ایلہاواڈ

145 مٹی گنج الہ آباد

نیا حصہ

اس نمبر کے خاص لیکھ

اس نمبر کے خاص لیکھ

دوم اور راج نیتی

—ڈاکٹر بھوپندر ناتھ دت

—ڈاکٹر بھوپندر ناتھ دت

میل مینا پ کا संगम—بंगال

میل ملاپ کا سنگم—بنگال

—ڈاکٹر لتی ف دتتری

—ڈاکٹر لطیف دتتری

ایم. اے. اے. قی. فل. ایم. اے. ڈی. فیل.

وام نام دھن جاکو! (ایکانکی نائک) (एकांकी नाटक)

—شری سادھو ٹی. ایل. وشنو لائی

تپے دیکھ کا ٹیکہ

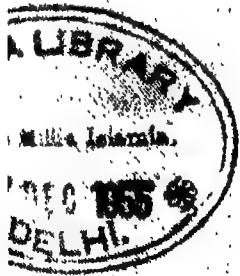
—شری چکرورثی راجا گوبالا چاری

دوستی اور تلچری سہوگ کی راہ پر

—شری ولیدیمیر یاگورلیو

اس کے علاوہ

دیس بیہس کے مسئلوں پر ہماری راہ میں ضروری سمپاد کی نوٹ



روستانی کپڑے سائے الیکو



نئی کولچر سوسائٹی، ایلاہاباد

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)
Mahatma Bhagwan Din
Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law
Pandit Sundarlal
Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai
Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-
Foreign Rs. 10/-
Single Copy As. /10/- only

Can be had from —

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

ہندوستان کا ادب و فن

نمبر 5 نمبر جلد 20 جلد



نومبر 1955

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

ہندوستانی کلچر سوسائٹی

145 مودی گنج، لکھنؤ

145 مودی گنج، لکھنؤ

نومبر 1955 نمبر

کيا کيس سے	صفحہ	کيا کيس سے
1. کریان جانری (کوبتا)		1. کلہان جانری (کوبتا)
—بھی گونبنت مہتا	... 251 ...	—شروی گنونت مہتا
2. بھرم اور راجنیتی		2. دھرم اور راج نہتی
—ڈاکٹر بھوپندرناث دت	... 253 ...	—ڈاکٹر بھوپندرناث دت
3. مہل ملاپ کا سنگم—بنگال		3. مہل ملاپ کا سنگم—بنگال
—ڈاکٹر لاتیف دھتری ایم۔ اے، ڈی۔ فل۔	266 ...	—ڈاکٹر لطیف دھتری ایم۔ اے، ڈی۔ فل۔
4. رام نام دھن جاکو ! (ایکاکی ناٹک)		4. رام نام دھن جاکو ! (ایکاکی ناٹک)
—بھی ساधु ڈی۔ ایل۔ بکھانی	... 270 ..	—شروی سادھو ڈی۔ ایل۔ بکھانی
5. رکتانترتا کی یاترا کی تیسری پیڈی		5. سوتنتر کی یاترا کی تیسری پیڈی
—لکھک—بھی مگن بائی دےسائی		—لکھک—شروی مگن بھائی دیسائی
—انوبادک—کنوभाई नानालाल पटेल	... 274 ...	—انوبادک—کنو بھائی نانالال پٹیل
6. تپدیق کا ٹیکا		6. تپدیق کا ٹیکا
—بھی بکرवती राजागोपालाचारी	... 277 ...	—شروی چکرवती राजागोपालाचारी
7. بھرمماد ساہب کی کج ہدیہیں		7. محمد صاحب کی کچھ حدیثیں
—انوبادک بھی مونی راجبھی	... 293 ...	—انوبادک شروی محمد راجبھی
8. دوستی اور کلچری سہیوگ کی راہ پر		8. دوستی اور کلچری سہیوگ کی راہ پر
—بھی بلیویمیر ماکوبلےب	... 299 ...	—شروی بلیویمیر ماکوبلےب
9. ہمارا رای		9. ہمارا رائے
—بھی بولگانین اور بھی کوشابےب भारत		—شروی بولگانین اور شروی کوشابےب भारत
—میں—سندرلال		—میں—سندرلال

کلیان جاتری

کلیان جاتری

شی گوننت مہتا

شی گوننت مہتا

ہر ہر بڑے دین ہٹا رہا ہر ہر گئے مارا;
"دے دو ہم کو بھٹی اپنی کرتا ہوں بٹوارا!"
بھٹی، کرتا ہوں بٹوارا!

کون ہے دہلا پتلا ہوتا لمبی دارھی والا؟
لاٹھی تھامے ڈنگ چلتا چھوٹی دھوتی والا؟
باپو کی پرچائیں کا سا کس نے روپ سٹوارا؟
ہاں، کس نے روپ سٹوارا!

کھا کھتا ہے سب کے آگے اُڑتی ذلّتوں والا؟
"میں بھی ایک تونہارا بیٹا، میں بھی دھتسے والا!"
"دے دو تم کو میرا دھتسا"—کھڑکے ہاتھ پٹارا!
بھٹی، کھڑکے ہاتھ پٹارا!

ایکڑ چھتیس کوٹی بھٹی ہری بھٹی اہلی;
"سپتہم دھتسا کرو ہٹالے مرادو میری مٹولی!"
آواز دی آواز لیتی ہوتا سٹوارا سٹوارا!
ہاں، ہوتا سٹوارا سٹوارا!

کیوں چاہے ہے بھٹی ہماری بھٹی کا مٹوالا;
آپ، ہوا اور دھرتی کا ہے ہر کوئی حق والا.
ایک نظر سے سب کو دیکھے سب کا سرجن ہارا.
بھٹی، سب کا سرجن ہارا!

کڑکوں، مچھروں، دھتھیوں اور دین دلت کا پھارا;
بھٹس، مٹھتاجوں، مٹھتاجوں کی آٹھوں کا تارا!
مٹھتاجوں کی مٹھتاج رہا ہر-ہر مٹھتاج ہارا!
ہاں، ہر-ہر مٹھتاج ہارا!

کون یگانا کون یگانا؟ سب کو گئے لگانا!
انسانی اٹلس کا دیکھو کیسا ناٹا ہانا!
روشن کرتی ہے بھارت کو نو پرکاش کی دھارا!
بھٹی، نو پرکاش کی دھارا!

در در کہو دین دلا کہو کہو گونچہ نورا;
"دے دو ہم کو بھٹی اپنی کرتا ہوں بٹوارا."
بھٹی، کرتا ہوں بٹوارا!

کون ہے دہلا پتلا ہوتا لمبی دارھی والا؟
لاٹھی تھامے ڈنگ چلتا چھوٹی دھوتی والا؟
باپو کی پرچائیں کا سا کس نے روپ سٹوارا؟
ہاں، کس نے روپ سٹوارا!

کھا کھتا ہے سب کے آگے اُڑتی ذلّتوں والا؟
"میں بھی ایک تونہارا بیٹا، میں بھی دھتسے والا!"
"دے دو تم کو میرا دھتسا"—کھڑکے ہاتھ پٹارا!
بھٹی، کھڑکے ہاتھ پٹارا!

ایکڑ چھتیس کوٹی بھٹی ہری بھٹی اہلی;
"سپتہم حصہ کرو حوالہ ہردو سوری جھولی!"
آزادی انگریزی لیتی ہوتا سٹوارا سٹوارا!
ہاں، ہوتا سٹوارا سٹوارا!

کیوں چاہے ہے بھٹی ہماری بھٹی کا مٹوالا;
آپ، ہوا اور دھرتی کا ہے ہر کوئی حق والا.
ایک نظر سے سب کو دیکھے سب کا سرجن ہارا.
بھٹی، سب کا سرجن ہارا!

کڑکوں، مچھروں، دھتھیوں اور دین دلت کا پھارا;
بھٹس، مٹھتاجوں، مٹھتاجوں کی آٹھوں کا تارا!
مٹھتاجوں کی مٹھتاج رہا ہر-ہر مٹھتاج ہارا!
ہاں، ہر-ہر مٹھتاج ہارا!

کون یگانا کون یگانا؟ سب کو گئے لگانا!
انسانی اٹلس کا دیکھو کیسا ناٹا ہانا!
روشن کرتی ہے بھارت کو نو پرکاش کی دھارا!
بھٹی، نو پرکاش کی دھارا!

बत का उसको ध्यान नहीं है धुन है मानवता की
देख रहा है सब जग उसमें ऐसी माँकी बाँकी !
मात्सी और समाजी काया चला पलटने हारा !
हाँ, चला पलटने हारा !

बर बैठे गंगाजी आईं फिर काहे की देरी ?
मुँह ना मोड़ो, बिज ना तोड़ो, आशा लगी घनेरी !
डोल रहा है डगर-डगर बाबन रूपी बनजारा !
बाबन रूपी बनजारा !

गाँव-गाँव गोकुल बन जाये प्रामोद्योग बढ़ाओ;
सर्वोदय कल्याण मार्ग में आओ क्रवम मिलाओ !
जीवन-लक्ष्मी पार लगेगी रामहि खेबन हारा !
भई, रामहि खेबन हारा !

भूमि, प्राम, सम्पत्ति दान से नया समाज बनेगा;
बर्गहीन, शोषण बिहीन बह चिन्ता सभी हरेगा !
भारत की किस्मत का तारा सन्त बिनोबा प्यारा !
भई, सन्त बिनोबा प्यारा !

‘دھن کا اُس کو دھانی نہیں ہے دھن ہے ماہرہ کی
دیکھ رہا ہے سب جگ اُس میں ایسی جانکی بانکی !
ماں اور سماجی کایا چلا پلٹنے ہارا !
ہاں، چلا پلٹنے ہارا !

‘کھر بیٹھے گنگا جی انہیں پور کھ کی دیری ?
‘منہ نا موڑو، ‘دل نا توڑو‘ آشا لگی گھنیری !
‘ڈول رہا ہے ڈگر، ڈگر باؤں روپی بنجارا !
‘باؤں روپی بنجارا !

‘گلوں گلوں گوکل بن جاتے گرامدیوگ بڑھاؤ !
‘سرودیکھ کلان مارگ مہن او قدم ملو !
‘جیون لکشمی پار لکھی رام ہی کہیں ہارا !
‘بہئی، رام ہی کہیں ہارا !

‘یہوسی، گرام، سپتی دان سے نیا ساج بلیکا !
‘ورگ ہیں، شوشن دھین وہ چلتا سبھی ہریکا !
‘بھارت کی قسمت کا تارا سنت ونوبا پھارا !
‘بہئی، سنت ونوبا پھارا !

700 PAGES,
32 ILLUSTRATIONS
2 COLOURED MAPS

“CHINA TODAY”

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE

Rs. 7 8 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language...the most objective in approach and comprehensive in treatment.
—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be widely known
—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.
—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happening in New China can do no better than to study it.
—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.
—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of man and matter...brings to light the mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.
—Vigil, Delhi.

ڈاکٹر مہیندر ناتھ دت

ڈاکٹر مہیندر ناتھ دت

آج اس لیکچر میں جو ہائیں میں کہہ جا رہا ہوں اس سے بہت سے پانٹھوں کے دل میں بے صبری پیدا ہوگی۔ لیکچر اس لئے بدنام ہے کہ وہ 'نئی باتیں کہتا ہے' اور خاص طور پر ہندوؤں کے بارے میں انتہاس کے خلاف بات کہتا ہے۔ یہ بات میں سن 1925 سے سنتا آ رہا ہوں کہ لیکچر بہت برس تک وڈیو میں رہ کر اشتعال دہا دیا سیکھر اس دیکھ میں اس کا پرچار کر رہا ہے۔ پہلے لیکچر اس الزام کا راز نہیں سمجھ پایا۔ اُنہسویں صدی میں جو کتابیں انکستان میں چھپیں وہ اس سلسلے تک کلکتہ وشدیالکے کے گئے کا پھندا بنی ہوئی تھیں جب کہ لیکچر نے یورپ اور امریکہ میں بیسویں شتাবدی میں تعلیم پائی ہے۔ اسی لئے شاید لیکچر اور کچھ پانٹھوں کے بیچ میں کھائی پیدا ہوگئی ہے۔

اس انوشٹان (Phenomenon) کے متعلق لیکچر کے پاس ایک نظر ہے۔ شری پرستہ ناتھ چودھری (بیرل) نے زمہداری پرتھا کا ذکر کرتے ہوئے کہا تھا—”آجکل کی ارتھ نیتک (اقتصادی) ویوستھا دیکھ کر لوگ سوچیں کہ یہ بنگال کی ہمیشہ کی ویوستھا ہے۔ وہ یہ سمجھ لے پانٹھ کہ موجودہ ارتھ نیتک ویوستھا انگریزوں کی رچی ہوئی ہے۔ کوئی بھی سماج اپنی ارتھ نیتی کے اوپر کھڑا رہتا ہے۔ موجودہ بھارت کی ارتھ نیتی انگریزی حکومت نے رچی تھی اور اسے مضبوط کیا تھا۔ ہمارے سامنے تو انگریزوں کی بنائی ہوئی تصویر ہی ہے۔ عام چلتا کے سامنے یہ تصویر رہتی ہے۔ اسی لئے انگریزوں تھا یورپیہ عالموں نے بھارت کے سماج، دھرم، ارتھ نیتی، انتہاس اسی وشہوں کے اوپر جو وچار ظاہر کئے ہیں انہیں کو ہم بھارت، اسہوں نے بنا کسی ورودھ کے ’ویدک اور سناتن‘ مانکر گئے سے اتار لیا ہے اور انہیں اپنے پرکھوں کے گارنامے ماننے لگے ہیں۔“ ہاں دو چار کھوجوں اور چھان بین کرنے والوں کے اوپر یہ الزام نہیں لگایا جاسکتا۔ بلکہ انہیں کی کھوجوں کی بنا پر بھارت کے انتہاس کا نہا روپ نہر رہا ہے۔ اصل بات یہ ہے کہ لمبی غلطی نے بھارت واسہوں کے دل اور دماغ پر پردہ ڈال دیا تھا۔ وہ گزرے زمانے کے اپنے بڑی اور اپنی کلچر کو بھول گئے تھے۔ پرانے زمانے کے وجہتوں کا قاعدہ تھا کہ کسی ملک کو جیتنے کے

آج اس لیکچر میں جو ہائیں میں کہہ جا رہا ہوں اس سے بہت سے پانٹھوں کے دل میں بے صبری پیدا ہوگی۔ لیکچر اس لئے بدنام ہے کہ وہ 'نئی باتیں کہتا ہے' اور خاص طور پر ہندوؤں کے بارے میں انتہاس کے خلاف بات کہتا ہے۔ یہ بات میں سن 1925 سے سنتا آ رہا ہوں کہ لیکچر بہت برس تک وڈیو میں رہ کر اشتعال دہا دیا سیکھر اس دیکھ میں اس کا پرچار کر رہا ہے۔ پہلے لیکچر اس الزام کا راز نہیں سمجھ پایا۔ اُنہسویں صدی میں جو کتابیں انکستان میں چھپیں وہ اس سلسلے تک کلکتہ وشدیالکے کے گئے کا پھندا بنی ہوئی تھیں جب کہ لیکچر نے یورپ اور امریکہ میں بیسویں شتাবدی میں تعلیم پائی ہے۔ اسی لئے شاید لیکچر اور کچھ پانٹھوں کے بیچ میں کھائی پیدا ہوگئی ہے۔

اس انوشٹان (Phenomenon) کے متعلق لیکچر کے پاس ایک نظر ہے۔ شری پرستہ ناتھ چودھری (بیرل) نے زمہداری پرتھا کا ذکر کرتے ہوئے کہا تھا—”آجکل کی ارتھ نیتک (اقتصادی) ویوستھا دیکھ کر لوگ سوچیں کہ یہ بنگال کی ہمیشہ کی ویوستھا ہے۔ وہ یہ سمجھ لے پانٹھ کہ موجودہ ارتھ نیتک ویوستھا انگریزوں کی رچی ہوئی ہے۔ کوئی بھی سماج اپنی ارتھ نیتی کے اوپر کھڑا رہتا ہے۔ موجودہ بھارت کی ارتھ نیتی انگریزی حکومت نے رچی تھی اور اسے مضبوط کیا تھا۔ ہمارے سامنے تو انگریزوں کی بنائی ہوئی تصویر ہی ہے۔ عام چلتا کے سامنے یہ تصویر رہتی ہے۔ اسی لئے انگریزوں تھا یورپیہ عالموں نے بھارت کے سماج، دھرم، ارتھ نیتی، انتہاس اسی وشہوں کے اوپر جو وچار ظاہر کئے ہیں انہیں کو ہم بھارت، اسہوں نے بنا کسی ورودھ کے ’ویدک اور سناتن‘ مانکر گئے سے اتار لیا ہے اور انہیں اپنے پرکھوں کے گارنامے ماننے لگے ہیں۔“ ہاں دو چار کھوجوں اور چھان بین کرنے والوں کے اوپر یہ الزام نہیں لگایا جاسکتا۔ بلکہ انہیں کی کھوجوں کی بنا پر بھارت کے انتہاس کا نہا روپ نہر رہا ہے۔ اصل بات یہ ہے کہ لمبی غلطی نے بھارت واسہوں کے دل اور دماغ پر پردہ ڈال دیا تھا۔ وہ گزرے زمانے کے اپنے بڑی اور اپنی کلچر کو بھول گئے تھے۔ پرانے زمانے کے وجہتوں کا قاعدہ تھا کہ کسی ملک کو جیتنے کے

बाद वे वहाँ के पुस्तकालयों को जला डालते थे. इसका मकसद यह होता था कि उस देश वाले अपने बचपन और गुणों जमाने की अपनी महानता को भूल जायें. लेकिन अंगरेज हाकिमों ने यहाँ दूसरी नीति अपनाई. उन्होंने हिन्दुस्तान के ऊपर क्रयामी हुकूमत करने के खयाल से उसकी कस्बों को समझने की कोशिशें शुरू कीं. वे पंडितों और मौलवीयों की शरण में गये. पुरानी धूल भरी पोथियों की गर्द झाड़कर पंडितों ने अंगरेज हाकिमों के सामने पेश किया. अंगरेज विद्वान उनको पढ़कर इस नीति पर पहुँचे कि हिन्दुस्तानी सिर्फ मजहबी पागल हैं. उन्हें देश और राजनीति की कोई जानकारी न थी. कहा है—'मुस्ला की दीव मस्जिद तक', वही हालत हमारे पंडितों की विद्या की थी. मसल्ले जमाने के हिन्दुस्तान में प्रतिक्रियावादी (तनज्जुली पसन्द) पुरोहितों ने जो निबन्ध लिखे उन्हें पंडित लोग धर्म और समाज के सम्बन्ध में प्रामाणिक (मुस्तनद) मानकर इनकी इफ्जल करने लगे. देशी भाषाओं में लिखी रामायण और महाभारत के क्रिस्ते कहानियाँ इतिहास और राजनीति की प्रामाणिक पुस्तक मानी जाने लगीं और उस दिन तक मानी जाती रहीं.

जो भी हो, काल का पहिया घूमता गया. दूर दक्खिन भारत से एक एक कर प्राचीन पोथियाँ हूँ हूँ कर रोशनी में लाई जाने लगीं. उन पोथियों के देखने के बाद इतिहास के सुताल्लिक हमारी राय में भी तब्दीली होने लगी. हम अपने बचपन से ही चाणक्य नाम के एक शक्स का नाम सुनते आ रहे थे. लेकिन बीसवीं सदी में एक दिन सबेरे अखानक 'कौटिल्य की अर्थनीति' नामक एक मोटी राजनैतिक पुस्तक रोशनी में आई. इस पुस्तक ने देशी और विलायती पंडितों के महल को ढा दिया. विलायती पंडितों ने सम्मल कर कहा—'यह मुक्काबलेतन बाद की फिताब है.' पहली बात तो यह है कि जो भारतीय पेड़ के नीचे बैठकर नाक दाब कर 'मौ' 'मौ' करते थे वे क्या कूट राजनीतिक पुस्तक लिखेंगे! इसके बाद भारतीय इतिहास की छान बीन करने वाले भारतीय विद्वानों ने कहा कि 'धर्म शास्त्र' भारतीयों की एक मात्र पुस्तक है, 'अर्थ शास्त्र' नाम की एक और ऊँचे दर्जे की पुस्तक है. वह धर्मशास्त्र से भी ऊँचे दर्जे की है. अर्थशास्त्र की तीन पुस्तकों के नाम हमें मिलते हैं—एक कौटिल्य की, दूसरी कामन्दक की और तीसरी शुक्रनीतिसार. इसपर बहस उठी कि कौटिल्य किस जमाने में हुआ? कामन्दक के सुताविक्र मौयों का शासन चलाने के लिये ही कौटिल्य व विष्णु गुप्त ने यह पुस्तक लिखी. उसके बाद डाक्टर काशी प्रसाद जायसवाल ने और अनेक पोथियों के नाम खोज निकाले जो आज मिलती नहीं. इसके बाद बात्स्यायन की 'काम शास्त्र' नामक पुस्तक खोजकर निकाली गई. इस पुस्तक में 'खतने' (Circumcision) का

बद में पहली के पंक्तियों को चढ़े डाले थे. इस का मकसद यह होता था कि उस देश वाले अपने बचपन और गुणों जमाने की अपनी महानता को भूल जायें. लेकिन अंगरेज हाकिमों ने यहाँ दूसरी नीति अपनाई. उन्होंने हिन्दुस्तान के ऊपर क्रयामी हुकूमत करने के खयाल से उसकी कस्बों को समझने की कोशिशें शुरू कीं. वे पंडितों और मौलवीयों की शरण में गये. पुरानी धूल भरी पोथियों की गर्द झाड़कर पंडितों ने अंगरेज हाकिमों के सामने पेश किया. अंगरेज विद्वान उनको पढ़कर इस नीति पर पहुँचे कि हिन्दुस्तानी सिर्फ मजहबी पागल हैं. उन्हें देश और राजनीति की कोई जानकारी न थी. कहा है—'मुस्ला की दीव मस्जिद तक', वही हालत हमारे पंडितों की विद्या की थी. मसल्ले जमाने के हिन्दुस्तान में प्रतिक्रियावादी (तनज्जुली पसन्द) पुरोहितों ने जो निबन्ध लिखे उन्हें पंडित लोग धर्म और समाज के सम्बन्ध में प्रामाणिक (मुस्तनद) मानकर इनकी इफ्जल करने लगे. देशी भाषाओं में लिखी रामायण और महाभारत के क्रिस्ते कहानियाँ इतिहास और राजनीति की प्रामाणिक पुस्तक मानी जाने लगीं और उस दिन तक मानी जाती रहीं.

जो भी हो, काल का पहिया घूमता गया. दूर दक्खिन भारत से एक एक कर प्राचीन पोथियाँ हूँ हूँ कर रोशनी में लाई जाने लगीं. उन पोथियों के देखने के बाद इतिहास के सुताल्लिक हमारी राय में भी तब्दीली होने लगी. हम अपने बचपन से ही चाणक्य नाम के एक शक्स का नाम सुनते आ रहे थे. लेकिन बीसवीं सदी में एक दिन सबेरे अखानक 'कौटिल्य की अर्थनीति' नामक एक मोटी राजनैतिक पुस्तक रोशनी में आई. इस पुस्तक ने देशी और विलायती पंडितों के महल को ढा दिया. विलायती पंडितों ने सम्मल कर कहा—'यह मुक्काबलेतन बाद की फिताब है.' पहली बात तो यह है कि जो भारतीय पेड़ के नीचे बैठकर नाक दाब कर 'मौ' 'मौ' करते थे वे क्या कूट राजनीतिक पुस्तक लिखेंगे! इसके बाद भारतीय इतिहास की छान बीन करने वाले भारतीय विद्वानों ने कहा कि 'धर्म शास्त्र' भारतीयों की एक मात्र पुस्तक है, 'अर्थ शास्त्र' नाम की एक और ऊँचे दर्जे की पुस्तक है. वह धर्मशास्त्र से भी ऊँचे दर्जे की है. अर्थशास्त्र की तीन पुस्तकों के नाम हमें मिलते हैं—एक कौटिल्य की, दूसरी कामन्दक की और तीसरी शुक्रनीतिसार. इसपर बहस उठी कि कौटिल्य किस जमाने में हुआ? कामन्दक के सुताविक्र मौयों का शासन चलाने के लिये ही कौटिल्य व विष्णु गुप्त ने यह पुस्तक लिखी. उसके बाद डाक्टर काशी प्रसाद जायसवाल ने और अनेक पोथियों के नाम खोज निकाले जो आज मिलती नहीं. इसके बाद बात्स्यायन की 'काम शास्त्र' नामक पुस्तक खोजकर निकाली गई. इस पुस्तक में 'खतने' (Circumcision) का

तत्त्वज्ञ है, वह दिव्य ज्ञान उठ गया और पश्चिम ने भी
 इसको स्वीकार रखा, इसके बाद महाकवि माता के 18
 नाटकों को दक्षिण भारत के विद्वानों ने खोज निकाला। इन
 नाटकों से उस समय के भारतीय समाज, रामचन्द्र के युद्ध
 और महाभारत में वर्णित व्यापार के मुताबिक एक नई
 तस्वीर पाठकों के सामने रखी, इसके बाद दक्षिण भारत
 और तिब्बत में 'आर्य मन्जुश्रीमूलकल्प' नामक एक इतिहास
 की पोथी प्रकाश में आई, इसके पहले तिब्बती लामा तारा-
 नाथ राय की लिखी 'भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास' नामक
 पुस्तक खोज निकाली गई और उसका अंगरेजी में तर्जुमा
 भी हुआ, इन सब ज्ञान बीन और खोजों से पढ़े लिखे
 हिन्दुस्तानियों की धारणा अपने देश के इतिहास और
 कल्चर के मुताबिक बदली, भारतीय इतिहास और संस्कृति
 पर लिखी एक दूसरी पुस्तक 'बोस्तान' जिसे एक बौद्ध
 विद्वान ने लिखा है जिसका जर्मन में तो अनुवाद हो गया
 लेकिन जो इस देश में अज्ञात रही, इसके बाद बंगाली
 विद्वान मधुरक्षित द्वारा लिखी एक अर्थनीति 'सम्बन्धी
 पुस्तक का तिब्बती अनुवाद हाथ लगा, इस देश के लोगों
 को इस पुस्तक का भी ज्ञान नहीं है, बहुत सी पुस्तकें अभी
 तक खोजकर ढूँढ़ी जा रही हैं, बहुत सी ज्ञान ज्ञान पोथियाँ
 एक दम से, मालूम होता है, नष्ट हो गई—जैसे बृहस्पति और
 शुक्राचार्य की 'रघुनीति' सम्बन्धी पुस्तक, जिन्होंने संस्कृत
 भाषा में रामायण और महाभारत पढ़ा है वे जानते हैं कि
 किस प्रकार योधा लोग बार बार बृहस्पति और शुक्राचार्य
 की दोहाई लेकर युद्ध का संचालन करते थे, अगर 'रघुनीति'
 पर ये पुस्तकें खोजकर ढूँढ़ी जा सकें तो भारतीयों के युद्ध
 कौशल को लेकर जो उपहास किया जाता है उससे हमें
 निजात मिल जाती,

नारद और कात्यायन की लिखी पुस्तकें भी आज तक लाइव्ही के अँधेरे में पड़ी हुई हैं। एक जर्मन पण्डित ने कहीं से 'नारद स्मृति' की एक कापी खोजकर उसका जमन भाषा में तरजुमा किया है, किन्तु कात्यायन स्मृति अब तक प्रकाश में नहीं आई। एक बार कलकत्ता विश्वविद्यालय के स्मृति के अध्यापक ने लेखक से दुख के साथ कहा था—“देखा, कात्यायन और नारद की स्मृतियाँ अभीन में दबी पड़ी हैं।” लेखक ने जवाब दिया—“नारद स्मृति इतनी ज्यादा चरम पन्थी (radical) है कि आज का भारत भी उसकी शिक्षा को बरदाश्त न कर सकेगा।”

इसका कारण क्या है ? जब राजशाक्ति और पुरोहितों की शक्ति एक साथ मिलकर हिन्दुओं के हृदय पर बड़ी बैठी थी तब इन सब पुस्तकों से जनता की आँखें खोलने की क्या जरूरत थी ? (ब्राह्मण्य, तारक, कात्यायन विधवा-विवाह, पलाक (Diverce) और फिर से विवाह करने की व्यवस्था

اُنہیں ہے۔ وہ رواج آج آگے گیا اور پختوں نے بھی اس کو چھپا کر رکھا۔ اس کے بعد مہاروی بھاس کے 13 نائکوں کو دکن بھارت کے ودوائوں نے کھوج لگا۔ انہیں نائکوں سے اس سب کے بھارتیہ سماج، رام چندر کے بدھ اور مہابھارت میں ورنٹ ویاپار کے متعلق ایک نئی تصویر پانٹھوں کے سامنے رکھی۔ اس کے بعد دکن بھارت اور تبت میں 'اریہ منچوشری مول کلپ' نامک ایک ایتھاس کی پرتوی پرکاش میں آئی۔ اس کے پہلے تبتی لاما تارا ناتھ وانہ کی انھی بھارت میں بودھ دھرم کا ایتھاس نامک پستک کھوج نکائی گئی اور اس کا انگریزی میں ترجمہ بھی ہوا۔ ان سب چھان بین اور کھوجوں سے پڑھے لکھے ہندستانوں کی دھارنا اپنے دیہی کے ایتھاس اور کلچر کے متعلق بدلی۔ بھارتیہ ایتھاس اور سلسکرتی پر انھی ایک دوسری پستک 'ہوستان' جسے ایک بودھ ودوان نے لکھا ہے جس کا جرمن میں تو انووان ہو گیا لیکن جو اس دیہی میں اگیات رہی۔ اس کے بعد ہنگالی ودوان مہوہریشٹ دوارا لکھی ایک اربہ تبتی سمبندھی پستک کا تبتی انووان ہوا۔ اس دیہی کے لوگوں کو اس پستک کا بھی گیلان نہیں ہے۔ بہت سی پستکیں ابھی تک کھوج کر قمعونڑھی جارہی ہیں۔ بہت سی خاصی خاص پوتھیاں ایک دم سے 'مہارم ہوتا ہے' نشٹ ہو گئیں—جیسے برہمہپتی اور شکر اچاریہ کی 'زن تبتی' سمبندھی پستک۔ جنہوں نے سنسکرت بھاشا میں واسین اور مہابھارت پڑھا ہے وہ جانتے ہیں کہ کس پرکار بودھا لوگ بار بار برہمہپتی اور شکر اچاریہ کی دیوہانی دیکر بدھ کا سدچال کرتے تھے۔ اگر 'زن تبتی' پر یہ پستکیں کھوج کر قمعونڑھی جاسکیں تو بھارتوں کے بدھ توتل کو لیکر جو ایتھاس لکھا جاتا ہے اس سے ہمیں نجات مل جانی۔

ناراد اور کانہاین کی لکھی پستکیں بھی آج تک اعلیٰ کے استادوں میں پڑی ہوئی ہیں۔ ایک جرمن پندت نے کہیں سے 'نارادسمرتی' کی ایک کاپی بوج کر اس کا جرمن بھاشا میں ترجمہ کیا ہے۔ دندو کانہاین سمرتی اب تک پرکاش میں نہیں آئی۔ ایک بار ملکتہ رشودیلوہ نے 'سمرتی کے استعارے' کے نام سے دہلی کے ساتھ لکھا تھا۔ کانہاین اور ناراد کی 'سمرتیاں' زمین میں دبی پڑی ہیں۔" لکھک نے جواب دیا — "نارادسمرتی اپنی زیادہ چرم پڑھی (radical) ہے نہ آج کا بھارت بھی اس کی شکشا کو برداشت نہ کر سکیگا۔"

اِس کا کارن کیا ہے ؟ جب راج شکتی اور پروہتوں کی شکتی ایک ساتھ ملکر ہندوؤں کے ہر مذہم پر چڑھی بیٹھی تھی تب اِن سب پسندوں سے جنگا کی انکھیں کھولنے کی کیا ضرورت تھی ؟ ('چانکھہ' نارد' کانیاہن ودھوا رواہ' ملاق (Divorce) اور پھر سے رواہ کرنے کی وجہ سے)

کے ساتھ राजनीति का क्या जोगाजोग है. जिस तरह मंगले जमाने में बार-बार निबन्धकारों ने हमारे इतिहास को माफ़ूस ब्रह्म से रखा, उसी तरह आज भी राजनीतिक पुरोहित मंथी के हाथ से बचाकर हमें भारत के इतिहास के यथार्थ स्वरूप को सामने रखना है.

अंगरेजी में एक कहावत है कि, "Religion follows the flag" यानी धर्म राजराजि के पीछे-पीछे चलता है. पुराने जमाने से लेकर हाल तक जमाने का वही दस्तूर रहा है. जतना जिस शासन के मातहत रहती है उसी शासन के बीच में अपनी जिंदगी में स्फूर्ति पाने के लिये राजा का ही धर्म महसूस करती है.

हम बंगाल को ही लें. कितनी ही बार बंगाल के लोगों ने अपने मजहब को बदला है. मिस्र और ईरान में भी यही अनुष्ठान (Phenomenon) रहा है. तारीख को अगर आप घटाकर देखें तो पता चलेगा कि किसी देश को जीत कर विजेता हारे हुये लोगों का धर्म नष्ट कर देते हैं. उसके पश्चात् उनकी भाषा में तब्दीली करने की कोशिश करते हैं. पुराने जमाने में ईरानी विजेता कुब (Cyrus the Great) बेबीलोन को जीत करके वहां के मन्दिर की देव-मूर्ति लेकर अपनी राजधानी परसूपोलि ले आया था. उसके लड़के कैम्बिसस ने मिस्र को जीतकर वहां के मन्दिर के पवित्र नन्दी का बध किया था. सिकन्दर ने ईरान को जीत कर पारसियों की धर्म पुस्तकों को नष्ट करवा दिया था. अरबों ने उत्तर-पश्चिम भारत के अन्दर कंधार नगर को जीतकर मणि-मणिक्यों से जड़ी हुई बुद्ध मूर्ति को नष्ट कर दिया था. उसके बाद ईरानी और तुर्क मुसलमानों ने भारत के हिस्सों को विजय करके बुद्ध और दूसरी बौद्ध समूह की मूर्तियों को विध्वंस किया था. बामिया (अफगानिस्तान) की गुफा में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं ने भागकर खोतन में शरण ली. उन्हीं की कोशिशों से पूर्वी तुर्किस्तान (मौजूदा सिकियांग) और पश्चिम चीन की (हजार बुद्धों की गुफा) में अद्भुत मूर्ति कला ने जन्म लिया. यह मूर्ति कला भारत के इतिहास की गुप्त काल की कला का बहुत सुन्दर नमूना है. इसके बाद के तुर्क आक्रमणों के फलस्वरूप अफगानिस्तान के हिरात से लेकर पूर्वी बंगाल के चटगाम तक बहुत से पूजाघर धूल में बिखर गये. कहते हैं कान्य-कुब्ज नगर में 10 हजार मन्दिर थे. कान्यकुब्ज नगर की खूबसूरती को देखकर महमूद गजनवी हैरान रह गया. उसने कान्यकुब्ज के नमूने पर गजनवी का शहर आबाद करने की योजना बनाई. इसीलिये वह यहाँ से बहुत से कारीगरों को ले गया. गजनवी के हमले के पश्चात् उत्तर भारत की सैकड़ों बरस बसी हुई मराहूर राजधानी कान्यकुब्ज (कमौज) आज सुनसान नगरी बन गई है. दो-एक जगह मिट्टी के डेर

साले राज फिती का क्या जोड़ा जाय. जिस तरह मंगले जमाने में बार-बार निबन्धकारों ने हमारे इतिहास को माफ़ूस ब्रह्म से रखा, उसी तरह आज भी राजनीतिक पुरोहित मंथी के हाथ से बचाकर हमें भारत के इतिहास के यथार्थ स्वरूप को सामने रखना है.

अंगरेजी में एक कहावत है कि, "Religion follows the flag" यानी धर्म राजराजि के पीछे-पीछे चलता है. पुराने जमाने से लेकर हाल तक जमाने का वही दस्तूर रहा है. जतना जिस शासन के मातहत रहती है उसी शासन के बीच में अपनी जिंदगी में स्फूर्ति पाने के लिये राजा का ही धर्म महसूस करती है.

हम बंगाल को ही लें. कितनी ही बार बंगाल के लोगों ने अपने मजहब को बदला है. मिस्र और ईरान में भी यही अनुष्ठान (Phenomenon) रहा है. तारीख को अगर आप घटाकर देखें तो पता चलेगा कि किसी देश को जीत कर विजेता हारे हुये लोगों का धर्म नष्ट कर देते हैं. उसके पश्चात् उनकी भाषा में तब्दीली करने की कोशिश करते हैं. पुराने जमाने में ईरानी विजेता कुब (Cyrus the Great) बेबीलोन को जीत करके वहां के मन्दिर की देव-मूर्ति लेकर अपनी राजधानी परसूपोलि ले आया था. उसके लड़के कैम्बिसस ने मिस्र को जीतकर वहां के मन्दिर के पवित्र नन्दी का बध किया था. सिकन्दर ने ईरान को जीत कर पारसियों की धर्म पुस्तकों को नष्ट करवा दिया था. अरबों ने उत्तर-पश्चिम भारत के अन्दर कंधार नगर को जीतकर मणि-मणिक्यों से जड़ी हुई बुद्ध मूर्ति को नष्ट कर दिया था. उसके बाद ईरानी और तुर्क मुसलमानों ने भारत के हिस्सों को विजय करके बुद्ध और दूसरी बौद्ध समूह की मूर्तियों को विध्वंस किया था. बामिया (अफगानिस्तान) की गुफा में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं ने भागकर खोतन में शरण ली. उन्हीं की कोशिशों से पूर्वी तुर्किस्तान (मौजूदा सिकियांग) और पश्चिम चीन की (हजार बुद्धों की गुफा) में अद्भुत मूर्ति कला ने जन्म लिया. यह मूर्ति कला भारत के इतिहास की गुप्त काल की कला का बहुत सुन्दर नमूना है. इसके बाद के तुर्क आक्रमणों के फलस्वरूप अफगानिस्तान के हिरात से लेकर पूर्वी बंगाल के चटगाम तक बहुत से पूजाघर धूल में बिखर गये. कहते हैं कान्य-कुब्ज नगर में 10 हजार मन्दिर थे. कान्यकुब्ज नगर की खूबसूरती को देखकर महमूद गजनवी हैरान रह गया. उसने कान्यकुब्ज के नमूने पर गजनवी का शहर आबाद करने की योजना बनाई. इसीलिये वह यहाँ से बहुत से कारीगरों को ले गया. गजनवी के हमले के पश्चात् उत्तर भारत की सैकड़ों बरस बसी हुई मराहूर राजधानी कान्यकुब्ज (कमौज) आज सुनसान नगरी बन गई है. दो-एक जगह मिट्टी के डेर

ہماری پوری تاریخ کو نظر کرتے دکھائی دے گی۔
دھار آج افغانستان کا حصہ بن گیا ہے اور اُس کے پرانے شاندار
پہاڑی قلعے برباد ہو چکے ہیں۔

یہی آج اتر بھارت کے رہنے والے ایک اہم مسرت جانی
ہیں۔ چوتھے شکاریوں نے ہمارے دیہے پر دھڑوں کے سیدی
نہلے ہوئے تھے، لیکن بھارت واسیوں کے لئے سندر ہاتھ تک
عہدہ قرار نہیں گئی۔ سرور پرانی ٹینک گولہ میں لگا ہوا کہ
مگت میں سندر پھرا فی مقلعی رہیگی۔ گہت بگ کے بعد
ج شکلی اور پردھوں کی شکلی نے اکٹھا ہو کر بھارت کے جن
نہوں کو لنگڑا بنا دیا تھا۔ اُس کے بعد اس دیہے کے اوپر
دیشوں کے آکرمن شروع ہو گئے اور اُن آکرمنوں کے پل سروپ
ارتھ سراج ہے جس اور پدم ہو گیا۔ ویشی ایتھس لکھا
اںہی نے لکھا کہ بھارت واسیوں کی یہی دین ہیں دشا
واہاوگ دشا ہے اور ہیشہ کی دشا ہے۔ اُنہوں نے لکھا کہ
بارتھ ایک نیم جنگلی قوم ہے۔ اُن لوگوں کو نہ ٹھیک سے کھانا
تا ہے، نہ ٹھیک سے کپڑے پہننا آتا ہے، نہ انہیں بچھونے کا
تعمال آتا ہے اور نہ اچھے مکانوں میں رہنا آتا ہے۔ ویشیوں
ہی انہیں چوتھ - چوتھ پہننا سکھایا۔ پاؤں میں بوت جوتا
پہننا سکھایا۔ پلو، پرائٹھا، سنج کباب، حلوہ کھانا سکھایا اور
یساری دور کرنے کے لئے حکیمی اوشدھی کا دیہار کرنا سکھایا۔

اور ہم لوگ ہاھا کر کرتے ہوئے کہہ لے یہی ہماری ویدک
ریہ سہیتا ہے۔ چتر پروہت ورگ، اپنی ذاتی خود غرضیوں
نے لئے بھارتیہ سہیتا کے بارے میں جس کا اُس سمہ 'ہندو
میسرٹی' نام پر لکھا تھا، طرح طرح کی غلط اطلاعات چلتا کو
ہلے لگا۔ اسی لئے کلک بھٹ نے ویدک شبد 'شکر' کی دیاکھا
ہی۔ وہ 'واہلیک' (بلخ) دیہے میں پیدا ہوئے والی ایک
بیزوی ہے۔ اُسے براہمن نہیں کھائینگے لیکن شونہر اُسے کھاسکتے
ہے۔ شکر کے 'سہمن' کا رواج جاری کیا، لیکن رگولندن نے
دعویٰ کیا کہ یہ ویدک دھان ہے۔ یہ بھی کہا کہ لہا کوٹ
(ویدک-آٹکا) چوتھ، چپکن، 'اڑو' بھٹ، جوتا وغیرہ یوں
نے ایجاد کئے ہیں اور اب بھی موزہ لوگ ایسا وشواس کرتے
ہیں۔ راماین میں جہاں جہاں 'پرہچھود' شبد آتا ہے اُسی
کی دیاکھا لوچن گوسوامی نے کی کہ اُس کا مطلب 'الکار' ہے۔
وہ اُنہی پندتوں نے اعلان کیا کہ پلو، کباب اور پرائٹھا آدمی کھانے
کی دستوریں یوں اور ویشیوں کی دین ہیں۔ انگریزی دشا
کے پندت کی لکھی ہوئی مشہور کتاب 'ادب اردو' (History
of Urdu Literature) میں لکھا کہ 'پوری' لفظ ہم
نے پرتگالیوں کے پلس سے پایا۔ اُن دیہے مانہہ وششت
پندتوں کی موزہکتا سے پڑا ہوا ہوں باتوں کی ناپ تول کوئی کرے گا ؟
ہ پندت ہیں کہ موزہ ہیں اُس کا فیصلہ کون کرے گا ؟

پہلے لوگ کہتے ہیں کہ 'چاندوگہ' آپس میں ساتویں صدی پہلے لکھا گیا۔ چاندوگہ آپس میں لکھا ہے کہ ہدی کوئی بدھیمان پکر سنگان حاصل کرنا چاہتا ہے تو آئے 'اکھ پاودن' ارنہات سائکر کے مائس کے ساتھ چاول رانہکر لکھا نا چاہیئے! پلاؤ کا موجودہ سنسکرت نام 'پلان' ہے لیکن پرانی سنسکرت کتابوں میں پلاؤ کے لئے 'پلودن' اور 'پودن' مائس نام استعمال کیئے گئے ہیں۔ عرب دیس میں چاول پیدا نہیں ہوتا۔ ایران میں سکندر کے وقت سے چاول کا آہات (import) شروع ہوا۔ سنسکرت 'وریس' شبد سے پارسی 'وریس' (Vries) وغیرہ نام فارسی، عربی، سیرین اور ارسلی زبانوں میں لیا گیا۔ * بعد میں وریس شبد سے ہی بروریہ، Riz، بروریہ، Rice، Reis، وغیرہ شبد بنائے گئے۔ اسی طرح 'شولہ مائس' یعنی سوخ کباب، 'آلہت مائس' یعنی شامی کباب (نومہ مائس کا ہوا)، اور پھلوں کے ساتھ پلاؤ کھانے کا ذکر چرک کے شاستر میں ہے۔ اسی طرح پورو داس، 'پروٹھا' روٹی آج کل کی روٹی کے لئے استعمال ہوتے ہیں۔ سندھیا اور نندو کے ایتھاسک سنسکرت کرتہ 'رام چرت' میں روٹیکا شبد کا آلائے آیا ہے۔ اوپر لکھے حوالوں سے اردو ایتھاسک اور پنڈتوں کی عقل کی ناپ چوٹ کی جا سکتی ہے۔

بنگالا میں ایک کھاوت ہے—'ہاچی' پاؤں اور اس کے اوپر ویس-کوکا۔' اسی طرح ہمارے کئی ویس-کوکا کے پنڈتوں کا کہنا ہے کہ भारतीय आर्य उत्तरी यूरोप से आये۔ किन्तु मैं जानता हूँ कि बर्लिन विश्वविद्यालय के पंडितों ने नार्डिक (Nordic) की परिभाषा देते हुये कहा है कि नार्डिक यानी लाल मुँह और भरे बाल वाले लोग ही आर्य हैं۔ कुछ विश्वविद्यालयों के अध्यापकों का कहना है कि ब्राह्मण लोग ही नार्डिकों के वंशधर हैं۔ इन्हीं विद्वानों के मुताबिक मछली भात खाने वाले बंगाली कम्बोडिया (असल में कम्बूजिया) के रहने वाली 'मन-खेमर' जाति की सन्तान हैं۔ पराधीनता के अभि-शाप के रूप में हमारे विद्वानों के ये विचार भारतीय इतिहास और संस्कृति के लिये बेहद जहरीले साबित हो सकते हैं۔ जर्मनी के ओयारबर्क विश्वविद्यालय के संस्कृत के अध्यापक डा॰ फान ग्लासेनाफ (जो तीन बार भारत आ चुके हैं) ने लेखक की एक पुस्तक की समालोचना करते हुये लिखा था—You give importance to Nazi propaganda (तुम नाझियों के प्रचार को अहमियत देते हो)۔ इसका जबाब देते हुये लेखक ने लिखा था—'पहले युद्ध के बाद हमारे कुछ भारतीय विद्यार्थी पढ़ने के लिये बर्लिन गये थे۔ ये ही लोग भारत लौटने पर ऊपर के अद्भुत मत को 'वैज्ञानिक मत' कहकर प्रचार करने लगे۔' पता नहीं इन

پنڈت لوگ کہتے ہیں کہ 'چاندوگہ' آپس میں ساتویں صدی پہلے لکھا گیا۔ چاندوگہ آپس میں لکھا ہے کہ ہدی کوئی بدھیمان پکر سنگان حاصل کرنا چاہتا ہے تو آئے 'اکھ پاودن' ارنہات سائکر کے مائس کے ساتھ چاول رانہکر لکھا نا چاہیئے! پلاؤ کا موجودہ سنسکرت نام 'پلان' ہے لیکن پرانی سنسکرت کتابوں میں پلاؤ کے لئے 'پلودن' اور 'پودن' مائس نام استعمال کیئے گئے ہیں۔ عرب دیس میں چاول پیدا نہیں ہوتا۔ ایران میں سکندر کے وقت سے چاول کا آہات (import) شروع ہوا۔ سنسکرت 'وریس' شبد سے پارسی 'وریس' (Vries) وغیرہ نام فارسی، عربی، سیرین اور ارسلی زبانوں میں لیا گیا۔ * بعد میں وریس شبد سے ہی بروریہ، Riz، بروریہ، Rice، Reis، وغیرہ شبد بنائے گئے۔ اسی طرح 'شولہ مائس' یعنی سوخ کباب، 'آلہت مائس' یعنی شامی کباب (نومہ مائس کا ہوا)، اور پھلوں کے ساتھ پلاؤ کھانے کا ذکر چرک کے شاستر میں ہے۔ اسی طرح پورو داس، 'پروٹھا' روٹی آج کل کی روٹی کے لئے استعمال ہوتے ہیں۔ سندھیا اور نندو کے ایتھاسک سنسکرت کرتہ 'رام چرت' میں روٹیکا شبد کا آلائے آیا ہے۔ اوپر لکھے حوالوں سے اردو ایتھاسک اور پنڈتوں کی عقل کی ناپ چوٹ کی جا سکتی ہے۔

بنگالا میں ایک کھاوت ہے—'ہاچی' پاؤں اور اس کے اوپر ویس-کوکا۔' اسی طرح ہمارے کئی ویس-کوکا کے پنڈتوں کا کہنا ہے کہ भारतीय आर्य उत्तरी यूरोप से आये۔ किन्तु मैं जानता हूँ कि बर्लिन विश्वविद्यालय के पंडितों ने नार्डिक (Nordic) की परिभाषा देते हुये कहा है कि नार्डिक यानी लाल मुँह और भरे बाल वाले लोग ही आर्य हैं۔ कुछ विश्वविद्यालयों के अध्यापकों का कहना है कि ब्राह्मण लोग ही नार्डिकों के वंशधर हैं۔ इन्हीं विद्वानों के मुताबिक मछली भात खाने वाले बंगाली कम्बोडिया (असल में कम्बूजिया) के रहने वाली 'मन-खेमर' जाति की सन्तान हैं۔ पराधीनता के अभि-शाप के रूप में हमारे विद्वानों के ये विचार भारतीय इतिहास और संस्कृति के लिये बेहद जहरीले साबित हो सकते हैं۔ जर्मनी के ओयारबर्क विश्वविद्यालय के संस्कृत के अध्यापक डा॰ फान ग्लासेनाफ (जो तीन बार भारत आ चुके हैं) ने लेखक की एक पुस्तक की समालोचना करते हुये लिखा था—You give importance to Nazi propaganda (तुम नाझियों के प्रचार को अहमियत देते हो)۔ इसका जबाब देते हुये लेखक ने लिखा था—'पहले युद्ध के बाद हमारे कुछ भारतीय विद्यार्थी पढ़ने के लिये बर्लिन गये थे۔ ये ही लोग भारत लौटने पर ऊपर के अद्भुत मत को 'वैज्ञानिक मत' कहकर प्रचार करने लगे۔' पता नहीं इन

* Hen kultur phlanfen des ostens.

اقتصادی اور اجتماعی مصلحتوں کا پرچار کر کے دنیا کی لگائوں میں بہترین راستوں کے سامان کے ساتھ کھڑا کرنے میں بہت حد تک کامیاب ہو گیا۔ حاصل ہوتا ہے؟ لیکن ایک بار مشورہ دیا کہ ایک انہاس کے ادھیانک سے پرچار۔ "ان ۲ سر پر کے ادھیانک مصلحتوں کے پرچار میں ان کا مقصد ہے؟" انہوں نے جواب دیا۔ "جس آرٹ نہتی یا اختصاوت کی جس ہوا میں یہ پھلے پھولے اُس سے یہ باہر نہیں نکل پا رہے۔" اس صاف مطلب یہ ہے کہ یہ لوگ اپنے ان مصلحتوں کو ظاہر کر کے چاکری کے لئے انگریزوں کی خوشامد کر رہے تھے اور اس قدر سے کہیں انگریز پر واپس نہ آجائے یہ اپنا سر نہیں بدل رہے۔ لیکن کی یہ بات سن کر انہاس کے ادھیانک خاموش رہ گئے۔

بات صاف ہے۔ انگریز اب واپس آئے سے رہے۔ اس لئے دوسرا راستہ پھر نو اپنی تقدیر کی آزمائش کرو۔ مسلمانوں کی حکومت جب ختم ہوئی تو ان کے سہم کے پرچلت آچار، چار، بوجھ اور بھارا دھارا کو دیہی لے چھوڑ دیا۔ مذہب کی سماجک وابستہ نہ تو ویدک تھی اور نہ سائنس تھی۔ اسی طرح آجکل کی سماجک وابستہ اور کرم وکس انگریزی سائنس وابستہ کی دس سالہ بندوبست تھی۔ پورے بھارت میں انگریز سائنس نے پہلے زمینداروں اور تعلقداروں کی سرشتی کی۔ پھر بشچس شمشاد دیکر انہیں نوکریاں دیں۔ پھر ان کے لئے ڈاکٹر، وکیل اور مختار کے پیشے کھول کر سماج میں ایک مدھم دھم بکھار کیا۔ اُس کے بعد کل کارخانے اور ریل پٹ بنا کر ایک مزدوروں کا گروہ تیار کیا۔ انگریزی سائنس کی یہی سماج وابستہ تھی جو بھارت کو ان کے سمہرک میں پڑا دیتی ہوئی۔ نئی آرٹ نہتی کی وابستہ سے سماج کا نئے روپ میں گھون ہوا۔ نئے آچار اور وبھار جاری ہوئے۔ نئے واناورن میں پیدا ہو کر نئے سماج میں نئی شکشا پا کر لوگ اپنے پرکھوں اور ان کی منسکرتی کے مول سرور کو کھرجانے لگے۔ اسی کے پھل سرورب نیا سلسلہ انڈولن (Reformation) اور پھر چاکرن (Renaissance) کا آندولن چلا۔ اسی کے ذریعہ نئے بھارت کی بنیادیں پڑیں۔

دنیا کا یہ چرنتن نیم ہے کہ حکومت کرنے والا گروہ اپنی خردفرہیں کو پورا کرنے کے لئے شاست ورج کو اپنی وچار دھارا، اپنی چننا دھارا، اپنے آچار وبھار اور اپنے دماغی رجحان کے موافق بناتا ہے۔ یہ کسی مطلب باز کی ہر نہیں ہے بلکہ سماج شاستریوں دوارا مانا ہوا اصول ہے۔ اسلئے ہم نے دیکھا ہے کہ دھرم دھرم ہم میں سے بہت سے شوشکشت ہندستانی اپنے میں پراں میں 'گاہ انگریز' بن گئے ہیں۔ میکالہ کی پرشمن کوئی سچ ثابت ہو رہی ہے۔ ہم نے باہری

ادھیانک اور اجتماعی مصلحتوں کا پرچار کر کے دنیا کی لگائوں میں بہترین راستوں کے سامان کے ساتھ کھڑا کرنے میں بہت حد تک کامیاب ہو گیا۔ حاصل ہوتا ہے؟ لیکن ایک بار مشورہ دیا کہ ایک انہاس کے ادھیانک سے پرچار۔ "ان ۲ سر پر کے ادھیانک مصلحتوں کے پرچار میں ان کا مقصد ہے؟" انہوں نے جواب دیا۔ "جس آرٹ نہتی یا اختصاوت کی جس ہوا میں یہ پھلے پھولے اُس سے یہ باہر نہیں نکل پا رہے۔" اس صاف مطلب یہ ہے کہ یہ لوگ اپنے ان مصلحتوں کو ظاہر کر کے چاکری کے لئے انگریزوں کی خوشامد کر رہے تھے اور اس قدر سے کہیں انگریز پر واپس نہ آجائے یہ اپنا سر نہیں بدل رہے۔ لیکن کی یہ بات سن کر انہاس کے ادھیانک خاموش رہ گئے۔

بات صاف ہے۔ انگریز اب واپس آئے سے رہے۔ اس لئے دوسرا راستہ پھر نو اپنی تقدیر کی آزمائش کرو۔ مسلمانوں کی حکومت جب ختم ہوئی تو ان کے سہم کے پرچلت آچار، چار، بوجھ اور بھارا دھارا کو دیہی لے چھوڑ دیا۔ مذہب کی سماجک وابستہ نہ تو ویدک تھی اور نہ سائنس تھی۔ اسی طرح آجکل کی سماجک وابستہ اور کرم وکس انگریزی سائنس وابستہ کی دس سالہ بندوبست تھی۔ پورے بھارت میں انگریز سائنس نے پہلے زمینداروں اور تعلقداروں کی سرشتی کی۔ پھر بشچس شمشاد دیکر انہیں نوکریاں دیں۔ پھر ان کے لئے ڈاکٹر، وکیل اور مختار کے پیشے کھول کر سماج میں ایک مدھم دھم بکھار کیا۔ اُس کے بعد کل کارخانے اور ریل پٹ بنا کر ایک مزدوروں کا گروہ تیار کیا۔ انگریزی سائنس کی یہی سماج وابستہ تھی جو بھارت کو ان کے سمہرک میں پڑا دیتی ہوئی۔ نئی آرٹ نہتی کی وابستہ سے سماج کا نئے روپ میں گھون ہوا۔ نئے آچار اور وبھار جاری ہوئے۔ نئے واناورن میں پیدا ہو کر نئے سماج میں نئی شکشا پا کر لوگ اپنے پرکھوں اور ان کی منسکرتی کے مول سرورب نیا سلسلہ انڈولن (Reformation) اور پھر چاکرن (Renaissance) کا آندولن چلا۔ اسی کے ذریعہ نئے بھارت کی بنیادیں پڑیں۔

دنیا کا یہ چرنتن نیم ہے کہ حکومت کرنے والا گروہ اپنی خردفرہیں کو پورا کرنے کے لئے شاست ورج کو اپنی وچار دھارا، اپنی چننا دھارا، اپنے آچار وبھار اور اپنے دماغی رجحان کے موافق بناتا ہے۔ یہ کسی مطلب باز کی ہر نہیں ہے بلکہ سماج شاستریوں دوارا مانا ہوا اصول ہے۔ اسلئے ہم نے دیکھا ہے کہ دھرم دھرم ہم میں سے بہت سے شوشکشت ہندستانی اپنے میں پراں میں 'گاہ انگریز' بن گئے ہیں۔ میکالہ کی پرشمن کوئی سچ ثابت ہو رہی ہے۔ ہم نے باہری

دُنیا کو آنگرےآں کے ہاتھ سے دیکھنا شروع کیا۔ ڈاکٹر راجندر لال میٹرا اور راجندر لال میٹرا کے زمانے میں معلوم ہوتا ہے کہ آنگرےآں کی ہتھیاری طاقت نے انہیں یہ خیال ملا تھا کہ انہیں ہندوستان کو اپنی مرضی کے موافق بنانا ہے۔ اس لیے انہوں نے ہندوستان کی تمام سرکاری اور نجی زمینوں کو اپنی ملکیت میں شامل کر لیا۔ اس کے نتیجے میں ہندوستان کی تمام زمینیں ان کے قبضے میں آ گئیں۔ انہوں نے ہندوستان کی تمام سرکاری اور نجی زمینوں کو اپنی ملکیت میں شامل کر لیا۔ اس کے نتیجے میں ہندوستان کی تمام زمینیں ان کے قبضے میں آ گئیں۔ انہوں نے ہندوستان کی تمام سرکاری اور نجی زمینوں کو اپنی ملکیت میں شامل کر لیا۔ اس کے نتیجے میں ہندوستان کی تمام زمینیں ان کے قبضے میں آ گئیں۔

دوسرا سبب یہ ہے کہ ہمارے دل میں یہ بات بیٹھ گئی ہے کہ جب تک غلام جاتی حاکموں کی 'ہاں' میں 'ہاں' نہ ملتا ہے تب تک اس کی دنیاوی ترقی نہیں ہو سکتی۔ نوکر پیشہ لوگ اپنی نوکری میں آزاد خیالی دیکھ کر کیسے ترقی کر سکتے ہیں؟ جس نے اپنے من اور اپنے دیش کو آزاد کرنے کا ہوا دیکھا ہے یا تو اندمان میں نورس ملے اور یا پھانسی کا تختہ ملے۔ یہ انکھوں کے آنچالے پن کا ویسا تھا۔ اسی لئے جب بھارت کے چلتا چھتر میں دیکھان کی ترقی جب حکومت کے ماتحت ہوئی تب اپنی سیدھا کے مطابق 'ہاں' میں 'ہاں' کہنے ہی میں بھارتیہ ودوانوں نے شریک اور پریکس سمجھا۔ اس لئے ہمارے جتنے بھی ودوان تھے ویدک، پراکیتھاسک اور بھارتیہ سبھیتا اور سلسکرتی کے پرکھتہ پنڈت وہ سب 'ہاں' میں 'ہاں' ملنے کی نیتی سے اوپر نہ اٹھ سکے۔ 'کرنا کی اچھا کے مطابق کرم' اس اصول کو کسی نے بڑی طرح سمجھا نہیں۔ جب تک نوکر ہیں تب تک شاکر درگ سے پرتی کول اپنی کوئی رائے ظاہر کرنے میں نوکری کے اوپر سلکٹ آسکتا تھا۔ جنہوں نے فرگوسن کے مت کے خلاف راجندر لال میٹر کی پستک پڑھی ہے وہی اس سمیسا کو ٹھیک ٹھیک سمجھ سکتے ہیں۔ * خوش قسمتی سے راجندر لال سرکاری تھاکر نہیں تھے مگر تب بھی وہ 'ہنگامی بابہ' تھے۔

ایک موجودہ مثال دیکر اس پرسنگ کو بند کرونگا۔ پچھلے مہابد سے پہلے ایک نوجوان کھرجی کے ساتھ 'سندھو کی

دیکھیں فرگوسن کی بدھ گیا وشنہ کی پستک۔

دیکھیں فرگوسن کی بدھ گیا وشنہ کی پستک۔

دیکھیں فرگوسن کی بدھ گیا وشنہ کی پستک۔

* دیکھیں فرگوسن کی بدھ گیا وشنہ کی پستک۔

‘ماتریالیسٹک سمبھتا’ کو लेकर لکھک کی آالوچنا
 اکسر ہوتی یی۔ وے کھتے یے—“دکھا مہاراشی ! ہمارے
 ہی دشا کے لگ، ہمارا ہی دکا پسا پاکر موہن-
 جو-دکو کے سمبھنڈ مں مٹھیا باتں بولتے ہں۔ کینٹو اموک
 نے اک بات کھی یی۔ وںہوںے کھا تا کی ‘کیا کرے ماری،
 چاکری مں جو ہں۔’ باد مں مںے وںسے کھا کی ‘اموک مہا-
 راشی نے (وھ اب سوا مں ہں) جو آپسے اس سمبھنڈ
 مں کھا تا کیا مںے وںسے سمارا-پاٹوں مں پرکاشیت کر
 سکتا ہں ؟ وںہوںے جواہر دیا—“وھ آج جیویت نہاں
 ہں۔ آپ اگر کھڑے ہوں گے تو وے وںسکا پرتیواد نہ
 کر سکیں گے۔ وںہوںے مومسے یھ بات نیجی تیر پر کھی یی،
 کھپانے کے لیے نہاں۔” فیر کھا یھ تو بہت پہلے کھا تا
 اور یھ بات آگرےج ویدانوں کے کانوں مں نہاں پڈی۔ مںے
 باد مں سسما کی یھ نوجوان خوجی مہاراشی مں سر-
 کاری چاکری کے فیر مں ہں اور اپنے نام کے ساٹھ کوڈ
 اسی بات روشنی مں نہاں لانا چاہتے جس سے اُن کے راستہ مں
 سرکاری نوکری مالم مں دندا پڑے۔ انہیں کوجی مہاشے نے
 ایک اور دوسرے سجن سے بھی جو سندھوسہیٹا کے بارے مں
 انوسلہان کا کام کرتے ہں، سن 1948 مں کہا کہ، “میں نے
 بیوپلنڈ دت سے جھوٹی بات کہی تھی کہ فلاں شخص نے مجھ
 سے یہ بات کہی۔” اِن سجن نے جواب دیا—“اب تو
 انگریز نہاں۔ ہں۔ دے کا کوئی سبب بھی نہاں۔ اب آپ
 سچی بات کہہ سکتے ہں۔ آگے اس کے بارے مں سچی
 بات کہنے کے تو ؟”

ویراویڈالای کے اڈیاپکوں کی جب یھ ہالٹ ہئی تو
 فیر ہارت کے ساڈارن اڈیٹاس کے سمبھنڈ مں سچی باتوں
 کی جانکاری اور کھاں ملیکی؟ ہمارے دیمار کے ہر اک
 سل (Cell) کے وچ مں اب تک ویراچمان ہئی ! اسلیے
 ہر نہی ایتہاسک سچا کی بات سونکر ہمارے دشا کے
 لگ وچ کٹتے ہں اور کھتے ہں یھ—“نہی بات !”

اسلیے کھا ہئی “ڈرم راجنیتی کا اک جوج ہئی۔” جسا
 راکھ ہوتا ہئی وسا ہی وںسکا ڈرم ہوتا ہئی۔ راجنیتی راکھ
 کے ہر اڈم مں انورپ اسر ڈالتی ہئی۔ راجنیتی کو کھوڈ
 کر ڈرم نہاں کھڈا ہو سکتا۔ آکاشاواणी یا نی راب کی
 آواہ اور نی اڈنٹ اڈلہام سے ڈرم کا سیرجن ہوا
 اور وںسے سچ کر لگوں نے اورن کھول کر لیا۔ یھ
 انیتہاسک اور گپاڈیوں کی کھانی ہئی۔ اسلیے پورانے
 جمانے مں راجاؤں کو ڈرم کا یا نی ‘وڑا اڈم کا نیامک
 اور چالک’ (ڈرمپال، ویراہال—دکھو پراکر وڈن
 کا سائیلک) کھکر پکارا جاتا تا۔

ڈرم چو کی سیاسات کا اک جوج ہئی اسلیے انویا-
 ہیوں کی راجنیتی ساسک کے ڈرم کا رپ لے لیتی ہئی۔ د-
 اسل ڈرم راکھ کو چلانے والا اک یڈر ہوتا ہئی۔ ہینڈ-
 ستان مں بار بار اسکی مسال دکھنے کو ملتی ہئی۔

پراکھاسک سولہ کو لیکر لیکر کی آولٹ اکثر ہوتی ہئی۔
 وے کہتے ہں—“دکھا مہاشے ! ہمارے ہی دشا کے لگ
 ہمارا ہی دکا پسا پاکر موہن-جو-دکو کے سمبھنڈ مں
 مٹھیا باتں بولتے ہں۔ کٹو امک نے ایک بات کہی تھی۔ انہوں
 نے کہا تھا کہ ‘کھا کرہں پھانی’ چاکری مں جو ہں ؟ بعد
 مں مہلے اُن سے کہا کہ امک مہاشے نے (وھ اب سورگ مں
 ہں) جو آپ سے اس سمبھنڈ مں کہا تھا کھا مں اُسے
 ساچار پکروں مں پرکاشیت کر سکتا ہوں ؟ انہوں نے جواب دیا
 —“وہ آج جیویت نہاں۔ آپ اگر کھڑے ہوں گے تو وے
 وںسکا پرتیواد نہ کر سکیں گے۔ انہوں نے مجھ سے یہ بات
 نجی طور پر کہی تھی، چھالنے کے لئے نہاں۔” پھر کہا یہ تو
 بہت پہلے کہا تھا اور یہ بات انگریز ویدانوں کے کانوں مں
 نہاں پڈی۔ مہلے بعد مں سسما کی یہ نوجوان کوجی مہاشے
 بھی سرکاری چاکری کے پھیر مں ہوں اور اپنے نام کے ساٹھ کوڈ
 اسی بات روشنی مں نہاں لانا چاہتے جس سے اُن کے راستہ مں
 سرکاری نوکری مالم مں دندا پڑے۔ انہیں کوجی مہاشے نے
 ایک اور دوسرے سجن سے بھی جو سندھوسہیٹا کے بارے مں
 انوسلہان کا کام کرتے ہں، سن 1948 مں کہا کہ، “میں نے
 بیوپلنڈ دت سے جھوٹی بات کہی تھی کہ فلاں شخص نے مجھ
 سے یہ بات کہی۔” اِن سجن نے جواب دیا—“اب تو
 انگریز نہاں۔ ہں۔ دے کا کوئی سبب بھی نہاں۔ اب آپ
 سچی بات کہہ سکتے ہں۔ آگے اس کے بارے مں سچی
 بات کہنے کے تو ؟”

ویراویڈالای کے اڈیاپکوں کی جب یہ حالت ہئی تو پھر
 ہارت کے ساڈارن اڈیٹاس کے سمبھنڈ مں سچی باتوں کی
 جانکاری اور کھاں ملیکی؟ ہمارے دماغ کے ہر ایک سل (Cell)
 کے بیچ مں اب تک ویراچمان ہئی ! اس لیے ہر نئی ایتہاسک
 سچائی کی بات سن کر ہمارے دشا کے لگ چونک اٹھتے
 ہں اور کہتے ہں—“نئی بات !”

اسی لئے کہا ہئی “ڈرم راج نیکی کا ایک جز ہئی۔” جسا
 راکھ ہوتا ہئی وسا ہی اُس کا ڈرم ہوتا ہئی۔ راج نیکی راکھ
 کے ہر انگ مں انورپ اثر ڈالتی ہئی۔ راج نیکی کو کھوڈ
 کر ڈرم نہاں کھڈا ہو سکتا۔ آکاشاواणी یعنی غیب کی آواز اور
 نیرہانت اڈم سے ڈرم کا سرجن ہوا اور اُسے سچ کر لوگوں نے
 نوراً دیول کر لیا۔ یہ ایتہاسک اور کھوڑوں کی کہانی ہئی۔ اسی
 لئے پورانے زمانے مں راجاؤں کو ڈرم کا یعنی ویراڈم کا نیامک
 اور چالک (ڈرم پال) وکرہ پال—دکھو پراکر وڈن کا
 نام لیکہ) کہہ کر پکارا جاتا تھا۔

ڈرم چونکہ ساسک کا ایک جز ہئی اس لئے انویاہوں
 کی راج نیکی ساسک کے ڈرم کا رپ لے لیتی ہئی۔
 داسل ڈرم راکھ کو چلانے والا ایک یڈر ہوتا ہئی۔
 ہندستان مں بار بار اس کی مثال دیکھنے کو ملتی ہئی۔

राजनीति को ठीक से समझने के लिये धर्म को उसी तरह गढ़ा जाता है, अगर इस मसले को हम मथार्यवादी मुस्लिम नज़र से देखें तो हमें दिखाई देगा कि छान्दोग्य उपनिषद् के पांचाल राज प्रवाहन जैवाली के समय से लेकर अंगरेज़ी राज के बहुत तक इसकी नज़ीरें मिलेंगी, राजा और राष्ट्र की मुविवा के मुताबिक ही धर्म अपना रूप गढ़ता है, अशोक ने अपने मत के अनुसार राष्ट्र के गठन का प्रयत्न किया, बंगाल के सूर, बर्मन और सेन राजाओं ने प्राचीन बौद्ध संस्कृति को जड़मूल से उखाड़कर उसकी जगह ब्राह्मणवाद को अपनाया, इस समाने में भवदेव भट्ट ने नई स्मृति चलाई और जीभूतब्राह्मण 'दाय भाग' नामक नये आईन के प्रयोक्ता थे, ये सब मिसालें इस सामाजिक सचाई की गवाह हैं, इसके बाद हम देखते हैं कि बंगाल में हुसेन-शाह सत्यपीर (हिन्दुओं के सत्यनारायण) की पूजा जारी करते हैं व उसके पृष्ठ पोषक बनते हैं, उसके बाद अकबर द्वारा अपने नये धर्म देने इलाही का प्रचार होता है, फिर औरंगजेब खबरदस्ती जनता के ऊपर अपना धर्म लादने की कोशिश करता है, फिर हम देखते हैं कि दिल्ली दरबार में रानी बिकटोरिया को 'भारत की साम्राज्ञी' कहकर पुकारा जाता है और अंगरेज सरकार केवश चन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द और सय्यद अहमद को मिलाकर एक सार्वजनीन धर्म संगठित करने की कोशिश करती है,* इन सब मिसालों से इसी समाजी उसूल पर रोशनी पड़ती है कि एक राष्ट्र, एक राजा, एक नेशन, एक धर्म—यही हमेशा से साम्राज्यवादियों की कामना रही है, यह कोई नई बात नहीं है, इतिहास उसे बार बार दोहरा रहा है.

इन तथ्यों से स्पष्ट है कि राजनीति के क्षेत्र से धर्म को अलग नहीं किया जा सकता, जैसी राजनीति होगी उसी तरह धर्म का क्रम विकास और रूप होगा। बुनियादी तौर पर सब धर्म Anthropological religion होते हैं यानी जातियों की अभिव्यक्ति के साथ धर्म का भी विवर्तन होता है, जो लोग धर्म को ईश्वर कृत या इलहामी मानते हैं उनसे पूछा जा सकता है कि काल की दूरबीन लेकर बहुत दूर गुजरे हुये जमाने से अब तक यदि नजर दौड़ाई जाय तो दिखाई देगा कि आज जिसे ईश्वर प्रेरित, इलहामी या अपौरुषेय, और ऋषियों द्वारा बताया निर्भ्रान्त सत्य कहा जाता है वह दूर जमाने के एक बीज का ही तरक्की किया हुआ रूप है। इस पर उसी बीज की छाप होती है, रिगवेद के यज्ञ के 'ब्रह्मा' (सायण ने इस शब्द के सात अर्थ किये हैं) बाद में सृष्टि के बनाने वाले ब्रह्मा के रूप में पूजे जाने लगे, बाद में ब्रह्मा ने 'शत ब्रह्मा' व 'सहस्र ब्रह्मा' के रूप बहुलेश से उपदेश सुना, फिर उपनिषदों में

راجہ نیہنی کو ٹھیک سے چلانے کے لئے دھرم کو اسی طرح
 گڑھا جاتا ہے۔ اگر اِس مسئلے کو ہم ہمارے توانی نقطہ نظر
 سے دیکھیں تو ہمیں دکھائی دےگا کہ چھاندو گتہ آپشن کے
 پانچواں راجہ پرواھن جیواالی کے سمنے سے لیکر انگریزی
 راجہ کے وقت تک اِس کی نظائریں ملتی ہیں۔ راجہ
 اور راشٹر کی سویدھا کے مطابق ہی دھرم اپنا روپ گڑھتا
 ہے۔ اشوک نے اپنے مت کے انوسار راشٹر کے گھن کا پریتن کیا۔
 ہنگال کے سرور ہرمین اور سین راجاؤں نے پراچین بودھ سلسلہ
 کو جڑ مول سے اکھاڑ کر اُس کی جگہ براھمن وان کو اپنایا۔
 اِس زمانے میں بہودیریت نے نئی اسمرتی چلائی اور جیہوت
 واھن 'دائے بھاگ' نامک نئے آئین کے پرنیتا تھے۔ یہ سب
 مثالیں اُس سماجک سچائی کی گواہ ہیں۔ اِس کے
 بعد ہم دیکھتے ہیں کہ ہنگال میں حسین شاہ ستیہ پیر (ہندوں
 کے ستیہ ناراین) کی پوجا جاری کرتے ہیں و اُس کے پرستار
 پوشک بنتے ہیں۔ اُس کے بعد اکبر دوارا اپنے نئے دھرم دین
 اِلہی کا پرچار ہوتا ہے۔ پھر اورنگ زیب زبردستی جنتا کے
 اُپر اپنا دھرم لادنے کی کوشش کرتا ہے۔ پھر ہم دیکھتے ہیں کہ
 دلی دربار میں رانی وڈھریا کو 'بھارت کی سامراجی' کہہ کر پکارا
 جاتا ہے اور انگریز سرکار کیشو چندر سمن، 'سامی دھانند اور
 سید احمد کو ملا کر ایک سارو جنھن دھرم سنگتھ کرتے ہی
 کوشش کرتی ہے۔ اِن سب مثالوں سے اِسی سماجی اصول پر
 روشنی پڑتی ہے کہ ایک 'راشٹر' ایک 'راجا' ایک 'نیشن' ایک
 دھرم—یہی ہمیشہ سے سامراجیہ وادیوں کی کامنا رہی ہے۔ یہ
 کوئی نئی بات نہیں ہے۔ اِنھاس اُسے بار بار دہرا رہا ہے۔

ان تہیوں سے صاف ہے کہ راج نیتی کے چھپرے سے دھرم کو الگ نہیں کیا جا سکتا۔ جیسی راج نیتی ہوگی اسی طرح دھرم کا کرم وکس اور روپ ہوگا۔ بنیادی طور پر سب دھرم Anthropological religion ہوتے ہیں یعنی جاتوں کی آپہونکتی کے ساتھ دھرم کا بی بی وپورن ہوتا ہے، جو لوگ دھرم کو ایشور کرت یا الہامی مانتے ہیں ان سے پوچھ جا سکتا ہے کہ کل کی دورپیں لیکر بہت دور گزرے ہوئے زمانے سے اب تک دی نظر دورانی جائے تو دکھائی دیتا کہ آج جسے ایشور پرورت، الہامی یا آپوروشرفہ اور رشموں دورا بتایا نرپرانت ستیہ کہا جاتا ہے وہ دور زمانے کے ایک ہیج کا ہی ترقی کیا ہوا روپ ہے۔ اس پر اسی ہیج کی چوہ ہوتی ہے۔ وگرب کے یکہ کے 'برہما' (ساین نے اس شبد کے سات اوتہ کئے ہیں) بعد میں سرشتی کے بنائے والے برہما کے روپ میں پوچے جانے لگے۔ بعد میں برہما نے 'شبت برہما' وسپر برہما کے روپ بدھ دیو سے آپدیہیں سنا۔ پھر آنشبدوں میں

برہما 'برہما' کے پد پر پڑھتے ہیں اور آنت میں ساتویں کے अभिराप से ब्रह्मा अपने पद से पदच्युत होकर ब्रह्मा का भारत से लोप हो जाता है.*

इसी तरह प्रागैतिहासिक जमाने का Yave यहूदी कौम का सर्वशक्तिमान 'जेहोवा' (Jehovah) हो जाता है. इसी तरह सेमेटिक जातियों के रेगिस्तान में 'एलि,' 'एल,' 'एलियन' और उसके बाद वही कुरान में 'अल्लाह' बन जाते हैं. भगवान की धारणा का यही जातितात्त्विक (enthrological) रूप है. वैदिक 'भग' देवता ही बाद में सृष्टि कर्ता भगवान बन गये. रूस में इनकी Bugus नाम से पूजा होती है. जैसे जैसे कौम की राजनीति का चक्र घूमता है वैसे वैसे क्रिया कांड, ध्यान धारणा और भगवान के रूप की अभिव्यक्ति होती है. इसी नुस्ते नजर से हम आर्यों की राजनीतिक और समाजनीतिक प्रगति पर जरा गौर करें. आर्यों की जातिगत संस्कृति को जरा देखें. आर्य सोमरस पीने वाले, हल्दी रंग की डाढ़ी वाले, और हल्दी रंग के कपड़े पहनने वाले और उनके नेता 'हरित' (हल्दी रंग के) घोड़े पर सवार इन्द्र हैं जिन्होंने सम्बर असुर को ध्वंस किया. वही पुराणों के इन्द्र बनकर वैश्य और असुरों के हाथों पराजित होते हैं. इसका सबब क्या है? इसका सबब यह है कि आर्यों के नेता इन्द्र की हैसियत अब बेहद घट गई थी, उसके सर पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर बैठा दिये गये थे. इन्द्र खाली स्वर्ग का इन्तजाम करने वाला रह गया. इन्द्र को बार बार पराजित होने वाला दिखाकर भिमूति की प्रतिष्ठा जो क्रायम करनी थी. स्वर्ग के ऊपर भी और दूसरे लोकों की कल्पना करके इन्द्र का दर्जा बेहद घटा दिया गया. 'महेश्वर,' महाभारत के मुताबिक, सबसे बड़ा देवता बन जाता है. (वाकाटक और भारशिबों के वक्त महेश्वर की पूजा सबसे प्रधान पूजा ऐलान की गई). लेकिन गुप्तों के जमाने में विष्णु की पूजा सबसे मुख्य पूजा करार दी गई.

यह भी देखा जाता है कि हर जमाने में हुकूमत करने वाले समाज को अपनी राय का बनाने के लिये धर्म पुस्तकें तैयार कराते हैं और नये नये क्रिया कांड और आचार व्यवहार जारी करते हैं. चण्डाशोक ने 'धर्माशोक' बनकर स्त्रियों से सम्बन्धित कई आचार व्यवहार बदले. बुद्ध की जिनदगी को लेकर तरह तरह की जात्राएँ, और क्रीड़ा प्रदर्शन जारी किये गये. (जिस तरह ईसा की जिनदगी को लेकर Passion play शुरू किये गये). वाकाटक और भारशिबों के समय भारत में शिव के मन्दिर बनाने जाने लगे; ब्राह्मणों को प्रामदान मिलने लगा; यज्ञ वगैरह फिर से जारी किये गये और शिव को लेकर अनेक पुराण लिखे गये.

बहुत गुप्ते हुये जमाने के इतिहास में न जाकर अगर हम बंगाल के इतिहास पर ही नजर डालें तो देखेंगे कि बौद्ध

برہما 'یوم برہم' کے پد پر پڑھتے ہیں اور آنت میں ساتویں کے अभिराप से ब्रह्मा अपने पद से पदच्युत होकर ब्रह्मा का भारत से लोप हो जाता है.*

اسی طرح پراگیتھاسک زمانے کا Yave یہودی قوم کا سرشکتمان 'جہووا' (Jehovah) ہو جاتا ہے. اسی طرح سیمٹک جاتوں کے ریگستان میں 'ایلی,' 'ایل,' 'ایلین' اور اُس کے بعد وہی قرآن میں اللہ بن جاتے ہیں. یھوان کی دھارنا کا یہی جاتاتیوک (enthrological) روپ ہے. ویدک 'یوک' دیوتا ہی بعد میں سرشتی کرتا یھوان بن گئے. روس میں ان کی Bugus نام سے پوجا ہوتی ہے. جیسے جیسے قوم کی راج نیکی کا چکر گھومتا ہے ویسے ویسے کربا کاڈ' دھیان دھارنا اور یھوان کے روپ کی ابھیربکتی ہوتی ہے. اسی نقطہ نظر سے ہم آریوں کی راج نیکی اور سماجک پرکلی پر ذرا غور کریں. آریوں کی جاتیگت سنسکرتی کو ذرا دیکھیں. آریہ سوم رس پینے والے; ہلدی رنگ کی دارھی والے اور ہلدی رنگ کے کپڑے پہننے والے اور ان کے نیٹا 'ہرت' (ہلدی رنگ کے) گھوڑے پر سوار اندر میں جلیوں نے سمیر اسور کو دھونس کیا. وہی پوانوں کے اندر بن کر دیتے اور اسوروں کے ہاتھوں پر راجت ہوتے ہیں. اس کا سبب کیا ہے? اسی کا سبب یہ ہے کہ آریوں کے نیٹا اندر کی حیثیت اب بے حد گھٹ گئی تھی; اُس کے سر پر برہما' وشنو اور مہیشور بیٹھا دیئے گئے تھے. اندر خالی سورگ کا انتظام کرنے والا رہ گیا. اندر کو بار بار پر راجت ہونے والا دکھا کر تریمورتی کی پرستشہا جو قائم کرنی تھی. سورگ کے اوپر بھی اور دوسرے لوگوں کی کاہنا کر کے اندر کا درجہ بے حد گھٹا دیا گیا. 'مہیشور' مہاہارت کے مطابق سب سے بڑا دیوتا بن جاتا ہے. (واکاک اور بہارشیوں کے وقت مہیشور کی پوجا سب سے پردھان پوجا اعلان کی گئی). لیکن گہنوں کے زمانے میں وشنو کی پوجا سب سے مکھیہ پوجا قرار دی گئی.

یہ بھی دیکھا جاتا ہے کہ ہر زمانے میں حکمت کرنے والے سماج کو اپنی رائے کا بنانے کے لئے دھرم پستکیں تیار کرتے ہیں اور نئے نئے کربا کاڈ اور آچار ویہار جاری کرتے ہیں. چنڈلشوک نے 'دھرماسوک' بن کر استریوں سے سلطنت کئی آچار ویہار بدلے. بدھ کی زندگی کو لیکر طرح طرح کی جاترائیں اور کریوا پرریشن جاری کئے گئے. (جس طرح عیسوی کی زندگی کو لیکر Passion Play شروع کئے گئے). واکاک اور بہارشیوں کے سامنے بہارت میں شو کے مندر بنائے جاتے تھے; براہمنوں کو کرام دان ملنے لگا; یکہ وغیرہ پیر سے جاری کئے گئے اور شو کو لیکر ان کے پران لکھے گئے.

بہت گذرے ہوئے زمانے کے ایتھاس میں نہ جاکر اگر ہم بنگال کے ایتھاس پر ہی نظر ڈالیں تو دیکھتے کہ ہند

[बाक़ी फिर]

[باقی ہے]

ڈاکٹر لاتیف دفتری ایم. اے. ڈی. فیل.

ڈاکٹر لطیف دفتری ایم. اے. ڈی. فیل.

کریب آٹھ صدیوں تک بنگال مسلمانوں کی حکومتوں کے ماتحت رہا۔ اس سارے زمانے میں بنگال کے ہندو-مسلمان ایک دوسرے سے مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔ بنگال کے ہندووں نے بنگال میں ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

نسیر شاہ نے بنگال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325ء سے 1365ء تک حکومت کی۔ اس کے بعد بنگال کے ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

نسیر شاہ نے بنگال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325ء سے 1365ء تک حکومت کی۔ اس کے بعد بنگال کے ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

نسیر شاہ نے بنگال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325ء سے 1365ء تک حکومت کی۔ اس کے بعد بنگال کے ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

نسیر شاہ نے بنگال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325ء سے 1365ء تک حکومت کی۔ اس کے بعد بنگال کے ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

نسیر شاہ نے بنگال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325ء سے 1365ء تک حکومت کی۔ اس کے بعد بنگال کے ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

نسیر شاہ نے بنگال پر چالیس برس تک یعنی سن 1325ء سے 1365ء تک حکومت کی۔ اس کے بعد بنگال کے ہندو مسلمانوں کے ساتھ مل کر جلتے رہے۔ آپسی باہمی چارے کے ساتھ رہتے رہے۔ کبھی کبھی کوئی تاجدار بنگال کی گہری پرستش پر بھ اپنی تاجدار سے بنگال کے ہندووں کو زیادہ نہیں پہنچانے میں کامیاب نہ ہو سکا۔

سکندر گجرات کی ایک کتب خانہ سے سکندر کے دوسرے
کتابوں کے بارے میں بھی یہ حد پر بات ہوئے۔ سکندر کے
موجود اور سنیاتی پراگم خاں نے کوہنڈ پر مشہور کو پرتسائن
دیگر مہابھارت کا سنسکرت سے ہنگام میں 'شوری پور' تک ترجمہ
کروایا۔ اس طرح ہنگام ہاشا میں پہلی بار جنگ کو مہابھارت
حاصل ہوا۔ پراگم چنگاؤں کا موجود تھا 'جہاں وہ لگ چک
ایک سوانہ میں شامک کی حیثیت سے حکومت کرتا تھا۔ پراگم کا
یوگہ پتر اور سرو دھرم سمجھائی تھا۔ چوٹہ خاں نے کوہنڈ
پر مشہور کے ادھر سے کام کو پورا کرنے کے لئے شوری کرشن ندی
کو نہایت کیا۔ شوری کرشن ندی نے مہابھارت کے انوک کے پہلے
ادھائے میں کھلے دل سے ان مسلمان شامکوں کی بازی
تعریف کی ہے۔

سکندر حسین شاہ کی اس مثال سے سوانہ کے دوسرے ائمہ
کو سمجھائی اور درباری بھی یہ حد پر بات ہوئے۔ سکندر کے
موجود اور سنیاتی پراگم خاں نے کوہنڈ پر مشہور کو پرتسائن
دیگر مہابھارت کا سنسکرت سے ہنگام میں 'شوری پور' تک ترجمہ
کروایا۔ اس طرح ہنگام ہاشا میں پہلی بار جنگ کو مہابھارت
حاصل ہوا۔ پراگم چنگاؤں کا موجود تھا 'جہاں وہ لگ چک
ایک سوانہ میں شامک کی حیثیت سے حکومت کرتا تھا۔ پراگم کا
یوگہ پتر اور سرو دھرم سمجھائی تھا۔ چوٹہ خاں نے کوہنڈ
پر مشہور کے ادھر سے کام کو پورا کرنے کے لئے شوری کرشن ندی
کو نہایت کیا۔ شوری کرشن ندی نے مہابھارت کے انوک کے پہلے
ادھائے میں کھلے دل سے ان مسلمان شامکوں کی بازی
تعریف کی ہے۔

سورگہ دنیہ چندر سن نے 'جن کی ہستک ہنگام ہاشا
اور ہنگام ساتھ کے اہلس پر بہت مستند مانی جاتی ہے'
لہا ہے۔

"ہنگام ہاشا کو ساتھ کے درجہ تک پہنچانے میں کئی
اتروں نے کام کیا ہے' جن میں نسندہ ایک سب سے ادھک
مہادیون پر ہوا مسلمانوں کا ہنگام وچہ کرنا تھا۔ بدی ہندو
راجاؤں کا ادھکار بنا رہتا تو ہنگام ہاشا کو راج دربار تک
پہنچانے کا مشکل سے ہی موقع مل سکتا تھا۔"

راجا کلس کے اترادھکاری نے اسلام مت سوچکر کیا اور
کرتھواس دربارا سنسکرت سے ہنگام میں رامین کا انوک کرانے کا
انتظام کیا۔ ایک دوسرے مسلمان امرا علول نے ملک محمد
چانسی کی ہندی ہستک پیمات کا ہنگام میں انوک کیا۔
علول نے اور بھی انیک فارسی کتابوں کا ہنگام میں انوک کیا ہے۔
دنیہ چندر سن لکھتے ہیں۔

اس طرح کی بے حد مثالیں ملتی ہیں جن میں کہ
مسلمان سمراتوں اور سرداروں نے سنسکرت اور فارسی کے
کرتھوں کا اپنی اور سے ہنگام میں ترجمہ کروایا اور دوسروں کو
اس طرح کے کاموں میں مدد دی۔ جب کہ ہنگام کے بلوان
مسلمان بادشاہوں نے دنیہ کی ہاشا کو اپنے درباروں میں یہ اوج
استعمال دیا ہے تو قدرتی طور پر ہندو راجاؤں نے ان کا انوسرن
کیا۔ اس طرح ہندو راجاؤں کے درباروں میں ہنگام کی
نہایتی کا رواج مسلمان بادشاہوں کی دیکھ دیکھی شروع ہوا۔

تہ صرف ہاشا اور سامجک دائرہ میں ہی سنسکرت
میل جول کی یہ دھارا بہ رہی تھی بلکہ دھرمک چہتر میں

سکندر گجرات کی ایک کتب خانہ سے سکندر کے دوسرے
کتابوں کے بارے میں بھی یہ حد پر بات ہوئے۔ سکندر کے
موجود اور سنیاتی پراگم خاں نے کوہنڈ پر مشہور کو پرتسائن
دیگر مہابھارت کا سنسکرت سے ہنگام میں 'شوری پور' تک ترجمہ
کروایا۔ اس طرح ہنگام ہاشا میں پہلی بار جنگ کو مہابھارت
حاصل ہوا۔ پراگم چنگاؤں کا موجود تھا 'جہاں وہ لگ چک
ایک سوانہ میں شامک کی حیثیت سے حکومت کرتا تھا۔ پراگم کا
یوگہ پتر اور سرو دھرم سمجھائی تھا۔ چوٹہ خاں نے کوہنڈ
پر مشہور کے ادھر سے کام کو پورا کرنے کے لئے شوری کرشن ندی
کو نہایت کیا۔ شوری کرشن ندی نے مہابھارت کے انوک کے پہلے
ادھائے میں کھلے دل سے ان مسلمان شامکوں کی بازی
تعریف کی ہے۔

سورگہ دنیہ چندر سن نے 'جن کی ہستک ہنگام ہاشا
اور ہنگام ساتھ کے اہلس پر بہت مستند مانی جاتی ہے'
لہا ہے۔

"ہنگام ہاشا کو ساتھ کے درجہ تک پہنچانے میں کئی
اتروں نے کام کیا ہے' جن میں نسندہ ایک سب سے ادھک
مہادیون پر ہوا مسلمانوں کا ہنگام وچہ کرنا تھا۔ بدی ہندو
راجاؤں کا ادھکار بنا رہتا تو ہنگام ہاشا کو راج دربار تک
پہنچانے کا مشکل سے ہی موقع مل سکتا تھا۔"

راجا کلس کے اترادھکاری نے اسلام مت سوچکر کیا اور
کرتھواس دربارا سنسکرت سے ہنگام میں رامین کا انوک کرانے کا
انتظام کیا۔ ایک دوسرے مسلمان امرا علول نے ملک محمد
چانسی کی ہندی ہستک پیمات کا ہنگام میں انوک کیا۔
علول نے اور بھی انیک فارسی کتابوں کا ہنگام میں انوک کیا ہے۔
دنیہ چندر سن لکھتے ہیں۔

اس طرح کی بے حد مثالیں ملتی ہیں جن میں کہ
مسلمان سمراتوں اور سرداروں نے سنسکرت اور فارسی کے
کرتھوں کا اپنی اور سے ہنگام میں ترجمہ کروایا اور دوسروں کو
اس طرح کے کاموں میں مدد دی۔ جب کہ ہنگام کے بلوان
مسلمان بادشاہوں نے دنیہ کی ہاشا کو اپنے درباروں میں یہ اوج
استعمال دیا ہے تو قدرتی طور پر ہندو راجاؤں نے ان کا انوسرن
کیا۔ اس طرح ہندو راجاؤں کے درباروں میں ہنگام کی
نہایتی کا رواج مسلمان بادشاہوں کی دیکھ دیکھی شروع ہوا۔

History of Bengali Language and Literature p. 10.

Ibid pp. 13, 14.

हिन्दू और मुसलमान दोनों एक-दूसरे के बेहद नजदीक आ रहे थे। वैष्णव धर्म के इतिहास में मुसलमान वैष्णव सन्तों की मिसालें बेहद मरी पड़ी हैं। बारहवीं सदी के बंगाल में, हिन्दुओं का मुसलमानों की दरगाहों में मिठाई चढ़ाना, कुरान पढ़ना और मुसलमानों के त्याहार मनाना और इसी तरह मुसलमानों का हिन्दुओं के धार्मिक रिवाजों की ओर झमेली आदर दिखलाना एक आम बात थी। इसी मेल जाल में से बंगाल के अन्दर एक नये देवता की पूजा शुरू हुई जिसे 'सत्य पीर' कहते थे। हिन्दू और मुसलमान दोनों सत्यपीर की पूजा करते थे। कहा जाता है कि सम्राट हुसैन शाह इस नए पन्थ का संस्थापक था।

पन्द्रहवीं सदी के आखीर में बङ्गाल में महाप्रभु चैतन्य का जन्म हुआ। चैतन्य के जन्म से पहले की हालत बयान करते हुये विनेशचन्द्र सेन लिखते हैं—

“ब्राह्मणों का प्रभुत्व बहुत तकलीफदेह हो गया था। जाति भेद ने शिकंजे की तरह समाज की गर्दन को जकड़ रखा था.....नीची जातियों के लोग ऊँची जातियों के लोगों के कुल्मों के नीचे आहें भर रहे थे। इन ऊँची जाति के लोगों ने नीची जाति वालों के लिये विद्या के दरवाजे बन्द कर रखे थे। इन लोगों के लिये अधिक ऊँचे जीवन में प्रवेश करने की मनाही थी और, नये पौराणिक धर्म पर इस तरह ब्राह्मणों का ठेका हो गया था मानो वह कोई बाजारू चीज हो।”†

महाप्रभु चैतन्य ने इस हालत पर गम्भीरता से विचार किया। घर-बार छोड़कर वे देशाटन के लिये निकले। अनेक साधुओं और फकीरों के साथ उनकी ज्ञान चर्चा हुई। चैतन्य के जीवन चरित्र का रचयिता कृष्णदास लिखता है कि वृन्दावन में चैतन्यने कई महीने एक मुसलमान फकीर के साथ धर्म चर्चा की। जदु भट्टाचार्य लिखता है—

“चैतन्य के जीवन की अनेक घटनायें ऐसी हैं जिनसे यह बात पूरी तरह साफ हो जाती है कि चैतन्य को मुसलमानों से बेहद प्रेम था。”*

चैतन्य ने गुरु की सेवा और भक्ति का उपदेश दिया। जातिभेद की जबरदस्त मुखालफत की। ब्राह्मणों के कर्म कार्यों को त्याज्य बताया। चैतन्य के शिष्यों में हिन्दू और मुसलमान, ऊँची जाति और नीची जाति के लोग, सभी शामिल थे। चैतन्य अपने सभी शिष्यों में हरिदास को सबसे अधिक प्यार करते थे। हरिदास पहले एक मुसलमान फकीर थे, बाद में वैष्णव साधु हो गये। चैतन्य 'चरितामृत' में बिजुली खाँ और दूसरे पठानों के वैष्णव धर्म कुबूल करने का भी जिक्र है। मुसलमान शासक चैतन्य को ईश्वर का अवतार समझते

हिन्दू और मुसलमान दोनों एक-दूसरे के बेहद नजदीक आ रहे थे। वैष्णव धर्म के इतिहास में मुसलमान वैष्णव सन्तों की मिसालें बेहद मरी पड़ी हैं। बारहवीं सदी के बंगाल में, हिन्दुओं का मुसलमानों की दरगाहों में मिठाई चढ़ाना, कुरान पढ़ना और मुसलमानों के त्याहार मनाना और इसी तरह मुसलमानों का हिन्दुओं के धार्मिक रिवाजों की ओर झमेली आदर दिखलाना एक आम बात थी। इसी मेल जाल में से बंगाल के अन्दर एक नये देवता की पूजा शुरू हुई जिसे 'सत्य पीर' कहते थे। हिन्दू और मुसलमान दोनों सत्यपीर की पूजा करते थे। कहा जाता है कि सम्राट हुसैन शाह इस नए पन्थ का संस्थापक था।

पन्द्रहवीं सदी के आखर में बङ्गाल में महाप्रभु चैतन्य का जन्म हुआ। चैतन्य के जन्म से पहले की हालत बयान करते हुये विनेशचन्द्र सेन लिखते हैं—

“ब्राह्मणों का प्रभुत्व बहुत तकलीफदेह हो गया था। जाति भेद ने शिकंजे की तरह समाज की गर्दन को जकड़ रखा था.....नीची जातियों के लोग ऊँची जातियों के लोगों के कुल्मों के नीचे आहें भर रहे थे। इन ऊँची जाति के लोगों ने नीची जाति वालों के लिये विद्या के दरवाजे बन्द कर रखे थे। इन लोगों के लिये अधिक ऊँचे जीवन में प्रवेश करने की मनाही थी और, नये पौराणिक धर्म पर इस तरह ब्राह्मणों का ठेका हो गया था मानो वह कोई बाजारू चीज हो।”†

महाप्रभु चैतन्य ने इस हालत पर गम्भीरता से विचार किया। घर-बार छोड़कर वे देशाटन के लिये निकले। अनेक साधुओं और फकीरों के साथ उनकी ज्ञान चर्चा हुई। चैतन्य के जीवन चरित्र का रचयिता कृष्णदास लिखता है कि वृन्दावन में चैतन्यने कई महीने एक मुसलमान फकीर के साथ धर्म चर्चा की। जदु भट्टाचार्य लिखता है—

“चैतन्य के जीवन की अनेक घटनायें ऐसी हैं जिनसे यह बात पूरी तरह साफ हो जाती है कि चैतन्य को मुसलमानों से बेहद प्रेम था。”*

चैतन्य ने गुरु की सेवा और भक्ति का उपदेश दिया। जातिभेद की जबरदस्त मुखालफत की। ब्राह्मणों के कर्म कार्यों को त्याज्य बताया। चैतन्य के शिष्यों में हिन्दू और मुसलमान, ऊँची जाति और नीची जाति के लोग, सभी शामिल थे। चैतन्य अपने सभी शिष्यों में हरिदास को सबसे अधिक प्यार करते थे। हरिदास पहले एक मुसलमान फकीर थे, बाद में वैष्णव साधु हो गये। चैतन्य 'चरितामृत' में बिजुली खाँ और दूसरे पठानों के वैष्णव धर्म कुबूल करने का भी जिक्र है। मुसलमान शासक चैतन्य को ईश्वर का अवतार समझते

† Ibid.

‡Hindu Castes and Sects, by Jadu Bhattacharya, p. 464.

یہ مذہب کھنڈ میں ایک قاضی کا حال دیا ہوا ہے جو چیتنہ کو 'ایشور' کہہ کر پکارتا تھا۔

چیتنہ کے سپردائے کی ایک شاخ کا نام 'کرتاہج' تھا۔ اُس کے سناستہ ایک کرتا ہا کو ایک مسلمان فقیر نے ہی پالا تھا۔ اس سپردائے کے آچاریوں میں کئی ہندو اور مسلمان ہوئے ہیں۔ یہ لوگ کپور ایک ایشور ہی آپاسنا کرتے تھے، دن میں پانچ بار گرومنتر جپتے تھے، مانس مدیرا سے پوہیز کرتے تھے، شکرور کو پوتر دن مانتے تھے اور جات-پانت، ہندو-مسلمان عیسائی اور اونچ نیچ میں کوئی بھد نہ کرتے تھے۔

بنگال کے سمکالین ہندو گرتھوں—'شونہ پوران'، 'دھرم پوجا پدھتی'، 'دھرم گجن' اور 'باد جننی' بتاتے ہیں کہ بڑے بڑے گرتھوں کی طرف غصہ اور بدامنی کی پہلونا اور مسلمانوں کے پرتی صحبت کے پہاڑ بھرے ہوئے ہیں۔ ان ہندو گرتھوں سے پتہ چلتا ہے کہ اُس سٹے کے ہنگالی مسلمان مانس سے پوہیز کرتے تھے۔ ایک جگہ لکھا ہے—

“خوکڈ مزارب کی طرف مٹھ کئے لودا سے دھما مائتا ہے۔

“کوئی اٹلاہ کی پوجا کرتا ہے، کوئی اٹلی کی اور کوئی مامڈ سارے کی۔

“میاں کسی جھو کی ہٹھا نہیں کرتا اور نہ مردار کھاتا ہے۔

“جاٹ پانت کے ہندو اب دھیرے دھیرے ٹوٹ جائینگے کیونکہ دیکھو ہندو کتب کے اندر ایک مسلمان ہے۔“

مسلمان جو پہلے کرتا کے ساتھ ایک خدا کی عبادت کرتے تھے دھیرے دھیرے ہندوؤں کے دھرمک اثر میں آکر کالی، شہلا، سوسنی، شو، وٹلو آدی انیک دیوتاؤں کی آپاسنا کرنے لگے۔

مشاہور وجہ شمسورغازی کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ ایک مرتبہ اُسے سینہ میں بھگوتی کالی نے درشن دیا اور کہا—“دیکھو! تیرا راج والہ مہری پوجا عبادت کرتے ہیں۔ بدی تم بھی مہری آپاسنا کرو گے اور مجھ پر ہلی چڑھاؤ گے تو اُس کے عوض میں تمہیں ور دونگی کہ تم آسانی کے ساتھ جنگ میں فتہیابی حاصل کرو۔“ دوسری بار پھر دیوی نے شمسور کو درشن دیکر اپنی وہی مانگ دہرائی۔ اس پر غازی نے کرتے کرتے دیوی سے کہا—“آپ ہندوؤں کی دیوی ہیں اور میں مسلمان ہوں، تب آپ کیسے میری پوجا قبول کرینگے؟“ دیوی نے اُسے براہمنی دوارا پوجا کرنے کے لئے راضی کیا اور پربنام سروپ وہ اپنے سبھی بدھوں میں وجئی ہوا۔

بھگوتی مہری کی طرف منہ ٹٹے خدا سے دعا مانگتا ہے۔

“کوئی اللہ کی پوجا کرتا ہے، کوئی علی کی اور کوئی سموند سانہی کی۔

“میاں کسی جھو کی ہٹھا نہیں کرتا اور نہ مردار کھاتا ہے۔

“کوئی اللہ کی پوجا کرتا ہے، کوئی علی کی اور کوئی سموند سانہی کی۔

“میاں کسی جھو کی ہٹھا نہیں کرتا اور نہ مردار کھاتا ہے۔

“جاٹ پانت کے ہندو اب دھیرے دھیرے ٹوٹ جائینگے کیونکہ دیکھو ہندو کتب کے اندر ایک مسلمان ہے۔“

مسلمان جو پہلے کرتا کے ساتھ ایک خدا کی عبادت کرتے تھے دھیرے دھیرے ہندوؤں کے دھرمک اثر میں آکر کالی، شہلا، سوسنی، شو، وٹلو آدی انیک دیوتاؤں کی آپاسنا کرنے لگے۔

مشاہور وجہ شمسورغازی کے بارے میں کہا جاتا ہے کہ ایک مرتبہ اُسے سینہ میں بھگوتی کالی نے درشن دیا اور کہا—“دیکھو! تیرا راج والہ مہری پوجا عبادت کرتے ہیں۔ بدی تم بھی مہری آپاسنا کرو گے اور مجھ پر ہلی چڑھاؤ گے تو اُس کے عوض میں تمہیں ور دونگی کہ تم آسانی کے ساتھ جنگ میں فتہیابی حاصل کرو۔“ دوسری بار پھر دیوی نے شمسور کو درشن دیکر اپنی وہی مانگ دہرائی۔ اس پر غازی نے کرتے کرتے دیوی سے کہا—“آپ ہندوؤں کی دیوی ہیں اور میں مسلمان ہوں، تب آپ کیسے میری پوجا قبول کرینگے؟“ دیوی نے اُسے براہمنی دوارا پوجا کرنے کے لئے راضی کیا اور پربنام سروپ وہ اپنے سبھی بدھوں میں وجئی ہوا۔

‘ہمام یا تار پنہی’ نامک ایک سمکالیان بنگالا مرنھ کے مسلمانان لکھک نے اپنی پستک سرسبئی دےوی کی پراپنا سے شروع کی ہے۔ ایک دوسرا لکھک کریمولا اپنے مرنھ ‘یا رنی وصال’ میں دیرانی دیوشو کی استوتی کرتا ہے۔ ‘جمل دل و ام’ نامک پستک کا کوئی افتاب الدین اپنے نایک سے سہت رشہوں کی پوجا کرتا ہے۔ ایک دوسرے لکھک حمید اللہ کی پستک ‘بھلو اسلدری’ میں براہمن لوگ قران کی مدد سے شبہ مہورت نکالتے ہیں۔ ‘پدوں’ کا رچنیتا پرسدھ کوئی کرم علی اپنے انیک کویتاؤں کو رادھا اور کرشن کو بھینک کرتا ہے۔ مسلمانوں کا ایک فرقہ لکشمی کی آپسنا کے کھت کا گا کر ہی اپنا پھٹ پالتا تھا۔ یہ لوگ اب تک یہی کرتے ہیں۔

یہ کچھ مثالیں ہیں جن سے اُس زمانے کے ہنگال کے ہندو مسلمانوں کے سانسکرت میل جول کے جیون پر تہزی سی روشنی پڑتی ہے۔

یہ کچھ مثالیں ہیں جن سے اُس زمانے کے ہنگال کے ہندو مسلمانوں کے سانسکرت میل جول کے جیون پر تہزی سی روشنی پڑتی ہے۔

یہ کچھ مثالیں ہیں جن سے اُس زمانے کے ہنگال کے ہندو مسلمانوں کے سانسکرت میل جول کے جیون پر تہزی سی روشنی پڑتی ہے۔

رامناما دن جا کو !

دام نام دھن جا کو !

ساڈھ ڈی. ایل. بکسانی

ساڈھو ٹی. ایل. وسواتی

[عکاںکی ناٹک]

[ایکانکی ناٹک]

پاتر:

گورو نانک (گورو بننے سے پہلے)
کالو—گورو نانک کے پیتا
غریب—کالو کا نوکر
خریدار—غریب، ایاہج، فقہر آدمی
درشیہ پہلا

ستھان—کالو کے घर کا ایک کمرہ

[کالو اور غریب دونوں آپس میں باتیں کر رہے ہیں۔
باتیں کرتے کرتے کالو گورو نانک کو آواچ دیتا ہے۔
نانک بھی مائے رکھتے ہوئے کمرے میں داخل ہوتے ہیں۔ ان کی آنکھیں
جکجک ہو رہی ہیں، مائے دل کی گہرائی میں کوئی
روشن نظارہ دیکھ رہے ہیں۔ کالو چنکت اور کچھ غصہ میں پورا
ہوا دکھائی دیتا ہے۔]

کالو—نانک ! تیرے तरीکوں سے میں بہت پریشان ہوگیا
ہوں ! میری سمجھ میں نہیں آتا کہ میں تیرا کیا کروں !

پتہ:

گرونانک (گورو بننے سے پہلے)
کالو—گرونانک کے پیتا
غریب—کالو کا نوکر
خریدار—غریب، ایاہج، فقہر آدمی
درشیہ پہلا
استھان—کالو کے گھر کا ایک کمرہ

[کالو اور غریب دونوں آپس میں باتیں کر رہے ہیں۔
باتیں کرتے کرتے کالو گرونانک کو آواز دیتا ہے۔ ننانک دھیمے
پاؤں رکھتے ہوئے کمرے میں داخل ہوتے ہیں۔ ان کی آنکھیں
جکجک ہو رہی ہیں، مائے دل کی گہرائی میں کوئی
روشن نظارہ دیکھ رہے ہیں۔ کالو چنکت اور کچھ غصہ میں پورا
ہوا دکھائی دیتا ہے۔]

کالو—نانک ! تیرے طریقوں سے میں پریشان ہوگیا
ہوں ! میری سمجھ میں نہیں آتا کہ میں تیرا کیا کروں !

नानक—(गाने लगते हैं)—

नानक—(गाने लगते हैं)—

साधो यह तन मिथ्या जानो !

سادھو یہ تن مٹیا جانو !

या भीतर जो राम बसत है, साँचो ताहि पिछानो ॥

یا بہتر جو رام بست ہے، سانچو تہی پچھانو .

यह जग है सम्पति सुपने की, देख कहा पेड़ानो ।

یہ جگ ہے سہمی سہنے کی، دیکھ کہا پیڑانو .

संग तिहारे कछू न चाले, ताहि कहा लपटानो ॥

سنگ تہارے کچھو نہ چالے، تہی کہا لپٹانو .

अस्तुति निंदा दोऊ परिहरि, हरि-कीरति उर आनो ।

استوتی نندا دوؤ برہری، ہری کیرتی ار آنو .

जन 'नानक' सब ही में पूरन, एक पुरुष भगवानो ॥

جن 'نانک' سب ہی میں پورن، ایک پورس بھگوانو .

कालू—(गरीब से)—नानक को तलबएडी ले जाओ !

کالو—(غریب سے)—نانک کو تلوٹدی لے جاؤ ! وہاں

वहाँ इसके लिये एक आटे की दुकान खोल देना; यह पैसा

اِس نے لئے ایک آٹے کی دوکان کھول دینا; یہ پیسہ لو (روٹے

लां (रुपये की थैली देता है) और इसे खुश रखना, और

کی تھیلی دیتا ہے) اور اُسے خوش رکھنا، اور یہ دیکھتے رہنا کہ

यह देखते रहना कि इसका रोजगार ठीक से चल रहा है.

اِس کا روزگار ٹھیک سے چل رہا ہے .

गरीब—हाँ सरकार !

غریب—ہاں سرکار !

[गरीब नानक को ले जाता है. नानक उसके साथ

[غریب نانک کو لے جاتا ہے . نانک اُس کے ساتھ بھجن

भजन गाते हुये जाते हैं.]

गाते ہوئے جاتے ہیں .]

दृश्य दूसरा

درشہ دومرا

स्थान—आटे की दुकान

استان—آٹے کی دوکان .

[नानक दुकान में बैठे हुये हैं. एक गरीब और अगहिज आदमी वहाँ से गुजरता है. नानक तराजू में आटा तोलते हुये उसे बुलाते हैं.]

[نانک دوکان میں بیٹھے ہوئے ہیں . ایک غریب اور اباغیج آدمی وہاں سے گذرنا ہے . نانک ترازو میں آٹا تولتے ہوئے اُسے بلاتے ہیں .]

नानक—क्यों भाई ! तुम तो बहुत बूढ़े, गरीब और भूखे मालूम होते हो ? लां यह आटा लो (तराजू उसकी तरफ बढ़ाते हैं), इसकी तुम्हें कोई क़ामत न देनी पड़ेगी ! लां इसे लो और अल्लाह के गुन गाओ !

نانک—کیوں بھائی ! تم تو بہت بوڑھے، غریب اور بھوکے معلوم ہوتے ہو ؟ لا یہ آٹا لو (ترازو اُس کی طرف بڑھاتے ہیں)، اِس کی تمہیں کوئی قیمت نہ دینی پڑیگی ! لا اسے ! اور اللہ کے گن گائو !

(फिर एक दूमरे कक़ीर को बुलाकर)—

(پھر ایک دوسرے فقیر کو بلاکر)—

लां भाई यह आटा तुम्हारे लिये है ! यह मेरी मोहब्बत की सौगात कुबूल करो कक़ीर ! और लोगों को अल्लाह की नियामतों की बात बताओ !

لو بھائی یہ آٹا تمہارے لئے ہے ! یہ میری محبت کی سوغات قبول کرو فقیر ! اور لوگوں کو اللہ کی نعمتوں کی بات بتاؤ !

(फिर एक बूढ़ी भिखमंगन को गांद में बचवा लिये हुए देखकर)—

(पھر ایک بوڑھی بھیمنگن کو گوند میں بچھا لئے ہوئے دیکھکر)—

लां मेरी माँ ! यह आटा तुम्हारे और तुम्हारे इस देवता जैसे सुकुमार छौने के लिये है ! जाओ उसी ईश्वर की महिमा का बखान करो !

لو میری ماں ! یہ آٹا تمہارے اور تمہارے اِس دیوتا جیسے سுகمار چھلے کے لئے ہے ! جاؤ اُسی ایشور کی سہما کا بھان کرو ! (پھر ایک غریب مسلمان کو دیکھکر)—

(फिर एक गरीब मुसलमान को देखकर)—

بھائی ! تیرے اندر بھی اُسی اللہ کا ظہور ہے ! اُس اللہ کا جو سب کے اندر ہے اور سب جس کے اندر ہیں !

भाई ! तेरे अन्दर भी उसी अल्लाह का ज़हूर है ! उस अल्लाह का जो सब के अन्दर है और सब जिसके अन्दर है !

हिन्दू जपते राम नाम, मुसलमान खुदाय,

ہندو جپتے رام نام، مسلمان خدا نام،

इक्को राम रहीम है, मन में देखो लाय ।

اِکو رام رحیم ہے، من میں دیکھو لائے .

ऐ मेरे भाई, इस आटे से अपनी फोली भरलो, अपना मुँह उस परवरदिगार की तरफ उठाओ; और उसी के पाक नाम का सुभिरन करो !

اے میرے بھائی، اِس آٹے سے اپنی جھولی بھر لو، اپنا منہ اُس پروردگار کی طرف اٹھاؤ؛ اور اُسی کے پاک نام کا سمرن کرو !

(गरीब लौटकर जब दूकान पर आता है तो वहाँ भीड़ को खड़ा पाता है और नानक से कहता है)—

गरीब—तुम्हारी दूकान पर तो खरीदारों की भीड़ है. आज तो तुमने काफ़ी कमाया होगा. तुम्हारे बाप यह जान कर बहुत खुश होंगे.

नानक—मैं जानता हूँ मेरा वह पिता बहुत खुश होगा; पिता ! जिसने मुझे यहाँ भेजा है !

गरीब—अब तक तुमने कितना कमाया ?

नानक—इतना कि जिसे मैं बयान नहीं कर सकता !

गरीब—कितना ? लाओ देखूँ तुम्हारा सन्दूक ?

(सन्दूक खोलकर देखता है ता उसे छूछा पाता है)

हैं ! रुपये कहाँ हैं ?

नानक—मेरा खजाना इन आँखों से नहीं दिखाई देता !

गरीब—नानक, भइया ! बता दा रुपये कहाँ हैं, नहीं तो मैं तुम्हारे बाप से जाकर शिकायत करूँगा.

नानक—त्याग के बने मेरे रुपये हैं ! अपरिग्रह मेरी दौलत है ! तर्क दुनिया ही ज़िन्दगी की सब से बड़ी कमाई है ! और राम नाम ही सबा लेन देन है !

(वह फिर आटा तोल तोल कर गरीबों को मुफ्त देते हुये गाते हैं)—

जो नर दुख में दुख नहीं माने.

सुख सनेह अरु भय नहीं जाके, कंचन माटी जाने.

नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना,

हर्ष सोक तें रहै नियारो, नाहिं मान अभिमाना.

आसा मनसा सकल त्यागि के, जग तें रहे निरासा,

काम क्रोध जेहि परसें नाहिंन, तेहि घट ब्रह्म निबासा.

गुरु-किरपा जेहि नर पै कीन्हीं, तिन यह जुगति पिछानी,

नानक लीन भयो गोबिन्द सों, ज्यों पानी संग पानी.

गरीब-- (बहुत दुखी होकर), नानक, तुम तो बिलकुल पागल हो गये हो !

नानक—धन्य हैं ऐसे पागल ! और नियामत है यह पागल पन ! क्योंकि ये पागल असहायों और दुखियों में, उस सारी दुनिया के शाहशाह को देखते हैं जा नाना रूप और नाना भेदों में पृथ्वी में व्याप्त है ! धन्य हैं, धन्य हैं ऐसे पागल ! वे दौलत गरीबों में बाँट देते हैं और उसके नाम का महिमा कः बखान करते हैं !

दृश्य तीसरा

[नानक गाते हैं और आटा बाँटते हैं और गाते हैं. दूसरे दिन दूकान बन्द हो जाती है, आटा बचा ही नहीं जिसे गरीबों में बाँटा जाता. गरीब कालू के पास जाकर "पागल" नानक की शिकायत करता है और कालू बेहद लाल पीला हुआ आता है.]

(गरीब लौट कर जब दुकान पर आता है तो वहाँ भीड़ को खड़ा पाता है और नानक से कहता है)—

गरीब—तुम्हारी दुकान पर तो खरीदारों की भीड़ है. आज तो तुमने काफ़ी कमाया होगा. तुम्हारे बाप यह जान कर बहुत खुश होंगे.

नानक—मैं जानता हूँ मेरा वह पिता बहुत खुश होगा; पिता ! जिसने मुझे यहाँ भेजा है !

गरीब—अब तक तुमने कितना कमाया ?

नानक—इतना कि जिसे मैं बयान नहीं कर सकता !

गरीब—कितना ? लाओ देखूँ तुम्हारा सन्दूक ?

(सन्दूक खोलकर देखता है तो उसे छूछा पाता है)

हैं ! रुपये कहाँ हैं ?

नानक—मेरा खजाना इन आँखों से नहीं दिखाई देता !

गरीब—नानक, भइया ! बता दो रुपये कहाँ हैं, नहीं तो मैं तुम्हारे बाप से जाकर शिकायत करूँगा.

नानक—त्याग के बने मेरे रुपये हैं ! अपरिग्रह मेरी दौलत है ! तर्क दुनिया ही ज़िन्दगी की सब से बड़ी कमाई है ! और राम नाम ही सबा लेन देन है !

(वह फिर आटा तोल तोल कर गरीबों को मुफ्त देते हुये गाते हैं)—

जो नर दुख में दुख नहीं माने.

सुख सनेह अरु भय नहीं जाके, कंचन माटी जाने.

नहिं निन्दा नहिं अस्तुति जाके, लोभ मोह अभिमाना,

हर्ष सोक तें रहै नियारो, नाहिं मान अभिमाना.

आसा मनसा सकल त्यागि के, जग तें रहे निरासा,

काम क्रोध जेहि परसें नाहिंन, तेहि घट ब्रह्म निबासा.

गुरु-किरपा जेहि नर पै कीन्हीं, तिन यह जुगति पिछानी,

नानक लीन भयो गोबिन्द सों, ज्यों पानी संग पानी.

गरीब-- (बहुत दुखी होकर), नानक, तुम तो बिलकुल पागल हो गये हो !

नानक—धन्य हैं ऐसे पागल ! और नियामत है यह पागल पन ! क्योंकि ये पागल असहायों और दुखियों में, उस सारी दुनिया के शाहशाह को देखते हैं जा नाना रूप और नाना भेदों में पृथ्वी में व्याप्त है ! धन्य हैं, धन्य हैं ऐसे पागल ! वे दौलत गरीबों में बाँट देते हैं और उसके नाम का महिमा कः बखान करते हैं !

दृश्य चौथा

[नानक गाते हैं और आटा बाँटते हैं और गाते हैं. दूसरे दिन दुकान बन्द हो जाती है, आटा बचा ही नहीं जिसे गरीबों में बाँटा जाता. गरीब कालू के पास जाकर "पागल" नानक की शिकायत करता है और कालू बेहद लाल पीला हुआ आता है.]

कालू—तुमने मेरी खिन्दीगी तल्लू कर दी नानक ! तुमने अपने खान्दान का नाम बुझा दिया नानक ! तुमने नवाब की नौकरी से इनकार किया, मैंने तुम्हें यह दूकान कर दी। लेकिन तुमने दे देकर दूकान का भी सकाया कर दिया !

नानक—पिता जी ! अपने इस अमान बेटे पर खफा न होइये ! यह देना ही सब से बड़ा पाना है पिता जी ! क्योंकि बीथड़ों में लिपटे हुये इन दुखियों के बेश में ही वह सारे जगत का राजा आता है !

कालू—लेकिन तुमने तो मेरी सारी दौलत लुटा दी !

नानक—मैंने यह सब उसी परम पिता के नाम पर किया जिसने मुझे यहाँ भेजा है।

कालू—मैंने तुम्हें कमाने के लिये भेजा था, लुटाने के लिये नहीं !

नानक—मुहब्बत की राह में कोई चीज नहीं लुटती पिता जी ! वह दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है। सच्चाई के महल में इसका लेखा जोखा होकर भण्डार लगता जाता है।

कालू—पागलचन्द ! तुम मुझे अमीर से गरीब कर दोगे !

नानक—धन्य हैं वे गरीब, क्योंकि उनके पास रामनाम की अथाह दौलत है !

कालू—नयाँ बकवास करते हो। तुम्हें कोई नहीं समझा बुझा सकता। चलो वापस। व्यापार रोजगार तुम्हारे बस का नहीं है !

नानक—पिता जी ! राम नाम ही मेरा व्यापार है ! दुखियों से ही मेरा लेन देन है ! उन्हीं के हृदय के भीतर जो सतमंजला महल है वहीं ईश्वर वास करता है और जब उसकी मेहर होती है तो वह हमारे दिलों की गाँठ खोलकर हमें त्याग में जो रहस्यमय सत्य छिपा हुआ है उसके दर्शन कराता है !

कालू—तुमने मेरी खिन्दीगी तल्लू कर दी नानक ! तुमने अपने खान्दान का नाम बुझा दिया नानक ! तुमने नवाब की नौकरी से इनकार किया, मैंने तुम्हें यह दूकान कर दी। लेकिन तुमने दे देकर दूकान का भी सकाया कर दिया !

नानक—पिताजी ! अपने इस अमान बेटे पर खफा न होइये ! यह देना ही सब से बड़ा पाना है पिताजी ! क्योंकि बीथड़ों में लिपटे हुये इन दुखियों के बेश में ही वह सारे जगत का राजा आता है !

कालू—लेकिन तुमने मेरी सारी दौलत लुटा दी !
नानक—मैंने यह सब उसी परम पिता के नाम पर किया जिसने मुझे यहाँ भेजा है।

कालू—लेकिन तुमने तो मेरी सारी दौलत लुटा दी !

नानक—मुहब्बत की राह में कोई चीज नहीं लुटती पिताजी ! वह दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती है। सच्चाई के महल में इसका लेखा जोखा होकर भण्डार लगता जाता है।

कालू—पागलचन्द ! तुम मुझे अमीर से गरीब कर दोगे !

नानक—धन्य हैं वे गरीब, क्योंकि उनके पास रामनाम की अथाह दौलत है !

कालू—नयाँ बकवास करते हो। तुम्हें कोई नहीं समझा बुझा सकता। चलो वापस। व्यापार रोजगार तुम्हारे बस का नहीं है !

नानक—पिताजी ! राम नाम ही मेरा व्यापार है ! दुखियों से ही मेरा लेन देन है ! उन्हीं के हृदय के भीतर जो सतमंजला महल है वहीं ईश्वर वास करता है और जब उसकी मेहर होती है तो वह हमारे दिलों की गाँठ खोलकर हमें त्याग में जो रहस्यमय सत्य छिपा हुआ है उसके दर्शन कराता है !

स्वतंत्रता کی यात्रا کی تیسری پیڑی

سوئٹزرا کی یاترا کی تیسری پیڑی

(1885 سے 1920)

بھائی مگن مارے دےسائی

سن 1885ء، ہینریکس نیشنل کانگریس کی تپا پنا کا بربھ تھا۔ یڈاں تک پڈڈتے پڈڈتے بھارت کی سوتنرتتا کی یاترا کی دو پیڈیاں پوری ڈڈے اور تیسری نئی پیڈی شورو ڈڈے جیسا کہ سکتے ہیں۔

دوسری پیڈی کے بوجوں نے ملکر اس سستھا کی تپا پنا کی۔ اس سمنے ان لوگوں کو اس بات کا خیال تک نہ ڈڈا کہ یہ سستھا آگے چل کر بھارت کو سوتنرت کرلے مبن کلہاب ثابت ہوگی۔ قوم، چلتی، بھرم، بھاشا اتپادی کسی بھی پرکر کے بھید بھاؤ کے بھنا سب ہندستانی اور ہندو ہت چننگ ائمہ دیھ واسی—خاص طور پر انگریز بھی—اس مبن شامل ہو سکتے تھے۔ اس پرکار کی استپا پنا کرلے واہ اس سمنے کے تپنا ورگ لے اس کے ذریعہ نیا ہند کیسا ڈڈا اس کی ایک مرنی روپا ریکھا دیھ کی، جس نئی سستھا کا یہ وچار اس کا ایک مستقل اٹھی ڈھا ہے۔

شروع کے بھس سالن مبن—1885 سے 1905 تک—اس سستھا کا جو کاربہ ہوا، اس کے مدبن پر اور اس کے فیصلوں پر غور کریں تو اس مبن سے بھت دلچسپ سامگری حاصل ہو سکتی ہے۔ اس بارے مبن ایک خاص دھیان مبن لینے جیسی بات یہ ہے کہ کام کاج کی تپتی ریتی اور ادبشوں کے بارے مبن بھس سال کے آمد نوئی خاص الگ درشتی یا بکھ صاف نہیں ہوئے تھے۔ جس سائنس تپتی اور ادبشہ کو لینکر دوسری پیڈی چلی تھی، عام طور پر اس کو منظور کر کے کام چلایا گیا۔ دیھ کے بھاری مقصد اور اس کے حاصل کرلے کے بارے مبن بھی، 1905 کے بعد ہی ایسا صاف بھید نظر آئے لگا۔ سوراج یاترا کی تیسری پیڈی اسی بھید پر کڑی ہوئی دھانی دیگی ہے۔

اس بھید سے منشا نرم اور گرم، یا جھال اور مبال پڈوں اور نڈرتے نڈرتے کی پیدادشا سے ہے۔ ہند اور انگلینڈ کے اکتھ ڈولے مبن دونوں کی بھائی کا ایشوریہ سکوت ہے—یہی بھاون موال بکھ کی تپو ہے۔ ہند ایک براچھن الگ راشٹر ہے اور اس کے انوروپ آسے اپلی پرشتھا حاصل کرنی چاہئے، اس پرکار ہی بھاون اور پرتکھا، جھال بکھ کی تپو ہے۔ پارلیمنٹری طریقہ سے مبن کم کر کے آگے چلنا چاہئے۔ یہ موال بکھ کی تپو ہے۔

شروع کے بھس سالن مبن—1885 سے 1905 تک—اس سستھا کا جو کاربہ ہوا، اس کے مدبن پر اور اس کے فیصلوں پر غور کریں تو اس مبن سے بھت دلچسپ سامگری حاصل ہو سکتی ہے۔ اس بارے مبن ایک خاص دھیان مبن لینے جیسی بات یہ ہے کہ کام کاج کی تپتی ریتی اور ادبشوں کے بارے مبن بھس سال کے آمد نوئی خاص الگ درشتی یا بکھ صاف نہیں ہوئے تھے۔ جس سائنس تپتی اور ادبشہ کو لینکر دوسری پیڈی چلی تھی، عام طور پر اس کو منظور کر کے کام چلایا گیا۔ دیھ کے بھاری مقصد اور اس کے حاصل کرلے کے بارے مبن بھی، 1905 کے بعد ہی ایسا صاف بھید نظر آئے لگا۔ سوراج یاترا کی تیسری پیڈی اسی بھید پر کڑی ہوئی دھانی دیگی ہے۔

اس بھید سے منشا نرم اور گرم، یا جھال اور مبال پڈوں اور نڈرتے نڈرتے کی پیدادشا سے ہے۔ ہند اور انگلینڈ کے اکتھ ڈولے مبن دونوں کی بھائی کا ایشوریہ سکوت ہے—یہی بھاون موال بکھ کی تپو ہے۔ ہند ایک براچھن الگ راشٹر ہے اور اس کے انوروپ آسے اپلی پرشتھا حاصل کرنی چاہئے، اس پرکار ہی بھاون اور پرتکھا، جھال بکھ کی تپو ہے۔ پارلیمنٹری طریقہ سے مبن کم کر کے آگے چلنا چاہئے۔ یہ موال بکھ کی تپو ہے۔

اس بھید سے منشا نرم اور گرم، یا جھال اور مبال پڈوں اور نڈرتے نڈرتے کی پیدادشا سے ہے۔ ہند اور انگلینڈ کے اکتھ ڈولے مبن دونوں کی بھائی کا ایشوریہ سکوت ہے—یہی بھاون موال بکھ کی تپو ہے۔ ہند ایک براچھن الگ راشٹر ہے اور اس کے انوروپ آسے اپلی پرشتھا حاصل کرنی چاہئے، اس پرکار ہی بھاون اور پرتکھا، جھال بکھ کی تپو ہے۔ پارلیمنٹری طریقہ سے مبن کم کر کے آگے چلنا چاہئے۔ یہ موال بکھ کی تپو ہے۔

اس بھید سے منشا نرم اور گرم، یا جھال اور مبال پڈوں اور نڈرتے نڈرتے کی پیدادشا سے ہے۔ ہند اور انگلینڈ کے اکتھ ڈولے مبن دونوں کی بھائی کا ایشوریہ سکوت ہے—یہی بھاون موال بکھ کی تپو ہے۔ ہند ایک براچھن الگ راشٹر ہے اور اس کے انوروپ آسے اپلی پرشتھا حاصل کرنی چاہئے، اس پرکار ہی بھاون اور پرتکھا، جھال بکھ کی تپو ہے۔ پارلیمنٹری طریقہ سے مبن کم کر کے آگے چلنا چاہئے۔ یہ موال بکھ کی تپو ہے۔

कौमी भेद का जन्म भी इसी युग में साफ साफ देखने को मिला. किरायाधाराना मताधिकार इस समय की खोज थी. आरा खां जैसे नेताओं ने अपनी अलग मुस्लिम संस्था की स्थापना की. इससे हिन्द की जन जागृति और उसकी स्वराज्य-यात्रा में एक नया सिलसिला शुरू हुआ. हिन्दी-उर्दू भाषा इत्यादि की कड़वी बहस तथा हिन्दुवाद का जन्म भी इस युग में हो चुका था, यह साफ तौर से बताया जा सकता है.

कौमी-एकता एक महान राष्ट्रीय कार्य है, यह बात साफ होती गई. कांग्रेस के लिये तो वह एक रचनात्मक कार्य माना गया.

यह ठीक है कि इस युग में जिस कौमीयत के फलसफे की चर्चा और फैलाव हुआ, उसकी भाषना खास तौर पर हिन्दू धर्म की भाषा और भावों में थी. लेकिन जान बूझ कर ऐसा हुआ था ऐसा नहीं कहा जा सकता, वह तो स्वाभाविक ही था. फिर भी वह एक ध्यान देने योग्य बात जरूर है. कांग्रेस के मंच पर तो सब कौमों के लोग सर्वधर्म की यानी सच्चे स्वराज्य धर्म की गरज से इकट्ठे होते थे, और एकता के लिये कोशिश करते थे.

ऐसे महान् पराक्रमी युग का असर अंग्रेज हाकिमों पर पड़ना लाजमी था. राजकीय सुधार होने लगे. गोरो का 'शुक्रभार' जिसे कहा जाता है ऐसा सूत्र अनुभव में आने लगा. राष्ट्रीय अभिमान का ठेस पहुंचे ऐसा भी कुछ इस पीढ़ी के अंग्रेज हाकिमों के बर्ताव में देखने को मिलता है. अंग्रेज राज्य और हिन्द की प्रजा अब एक दूसरे के आमने सामने है, ऐसा भाव आहिस्ता आहिस्ता सरकार में आने लगा. वं कौमों का इकट्ठा होना ईश्वरीय संकेत है, पढ़े लिखे लोगों का ऐसा फलसफा अब कमजोर होने लगा. उसमें जाने अनजाने अंगरेज हाकिम भी वजह होने लगे. हिन्द अब आजादी चाहता है, यह नारा जार पकड़ने लगा. देशाभिमान, देशभक्ति और उसके लिये तकलीफें बरदाश्त करना, इत्यादि गुण उस बातावरण में दाखिल हो गये.

इस युग में एक ऐशियाई देश—जापान—का जो उत्थान देखने को मिला, उसने एक भारी प्रेरणा का काम किया. गोरे राष्ट्र के साथ हरीभायी की जा सकती है, यह ज्ञान खुददारी को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ.

सन् 1914 के जंग का असर इस पीढ़ी की सबसे बड़ी आखिरी घटना कही जा सकती है. उसके खतम होने के साथ ही नई पीढ़ी का और नये युग का भी उदय होता है. यह चौथी पीढ़ी, गांधी जी की पीढ़ी या 'गांधी युग' है. इस पीढ़ी ने स्वराज्य-यात्रा की आखिरी मंजिल तै की. इसका विचार हम आगे करेंगे.

अनुवादक:—कनुभाई नानलाल पटेल

कौमी भेद का जन्म भी इसी युग में साफ साफ देखने को मिला. किरायाधाराना मताधिकार इस समय की खोज थी. आरा खां जैसे नेताओं ने अपनी अलग मुस्लिम संस्था की स्थापना की. इससे हिन्द की जन जागृति और उसकी स्वराज्य-यात्रा में एक नया सिलसिला शुरू हुआ. हिन्दी-उर्दू भाषा इत्यादि की कड़वी बहस तथा हिन्दुवाद का जन्म भी इस युग में हो चुका था, यह साफ तौर से बताया जा सकता है.

कौमी-एकता एक महान राष्ट्रीय कार्य है, यह बात साफ होती गई. कांग्रेस के लिये तो वह एक रचनात्मक कार्य माना गया. यह ठीक है कि इस युग में जिस कौमीयत के फलसफे की चर्चा और फैलाव हुआ, उसकी भाषना खास तौर पर हिन्दू धर्म की भाषा और भावों में थी. लेकिन जान बूझ कर ऐसा हुआ था ऐसा नहीं कहा जा सकता, वह तो स्वाभाविक ही था. फिर भी वह एक ध्यान देने योग्य बात जरूर है. कांग्रेस के मंच पर तो सब कौमों के लोग सर्वधर्म की यानी सच्चे स्वराज्य धर्म की गरज से इकट्ठे होते थे, और एकता के लिये कोशिश करते थे.

ऐसे महान् पराक्रमी युग का असर अंग्रेज हाकिमों पर पड़ना लाजमी था. राजकीय सुधार होने लगे. गोरो का 'शुक्रभार' जिसे कहा जाता है ऐसा सूत्र अनुभव में आने लगा. राष्ट्रीय अभिमान का ठेस पहुंचे ऐसा भी कुछ इस पीढ़ी के अंग्रेज हाकिमों के बर्ताव में देखने को मिलता है. अंग्रेज राज्य और हिन्द की प्रजा अब एक दूसरे के आमने सामने है, ऐसा भाव आहिस्ता आहिस्ता सरकार में आने लगा. वं कौमों का इकट्ठा होना ईश्वरीय संकेत है, पढ़े लिखे लोगों का ऐसा फलसफा अब कमजोर होने लगा. उसमें जाने अनजाने अंगरेज हाकिम भी वजह होने लगे. हिन्द अब आजादी चाहता है, यह नारा जार पकड़ने लगा. देशाभिमान, देशभक्ति और उसके लिये तकलीफें बरदाश्त करना, इत्यादि गुण उस बातावरण में दाखिल हो गये.

इस युग में एक ऐशियाई देश—जापान—का जो उत्थान देखने को मिला, उसने एक भारी प्रेरणा का काम किया. गोरे राष्ट्र के साथ हरीभायी की जा सकती है, यह ज्ञान खुददारी को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुआ.

सन् 1914 के जंग का असर इस पीढ़ी की सबसे बड़ी आखिरी घटना कही जा सकती है. उसके खतम होने के साथ ही नई पीढ़ी का और नये युग का भी उदय होता है. यह चौथी पीढ़ी, गांधी जी की पीढ़ी या 'गांधी युग' है. इस पीढ़ी ने स्वराज्य-यात्रा की आखिरी मंजिल तै की. इसका विचार हम आगे करेंगे.

अनुवादक:—कनुभाई नानलाल पटेल

تپیدیک کا टीका

تپیدق کا ٹیکہ

श्री चक्रवर्ती राजागोपालाचारी

(पिछले नम्बर से आगे)

شری چक्रवर्ती राजागोपालाचारी

[بچیلے نمبر سے آگے]

امریکا کے ڈاکٹروں نے سیکڑوں تاجر بے کر کے اس خطرے کو سمجھا ہے۔ ان سب تاجروں کو ہم یہاں نہیں دے سکتے۔ ان سے پتہ چلتا ہے کہ یہ ٹیکہ کتنا خطرناک ہو سکتا ہے اور ہے۔ امریکہ کے جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسیوسییشن میں اس طرح کے تجربے چھپتے رہے ہیں۔

اب ہم سن 1954 میں اور سن 1955 کے بڑے بڑے میڈیکل پتہ پتہ ٹیکوں سے کچھ گھٹناؤں بیان کرتے ہیں۔ ان بیانوں میں سے تکنیکی ڈاکٹری باتیں اور بڑے بڑے ڈاکٹری لہجہ ڈھونڈ دیے گئے ہیں۔

27 نومبر 1954 کے جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسیوسییشن میں لکھا ہے کہ ڈینمارک کے ایک لڑکے کو پانچ برس کی عمر میں بی۔سی۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا۔ ٹیکہ لگنے کے دو ہفتے کے اندر اسے بہت خطرناک قسم کا تپیدق شروع ہو گیا اور دو سال کے اندر وہ اس بیماری سے مر گیا۔ بیماری کیس طرح پیدا ہوئی اور بڑی اس کی تفصیل وہاں دی ہوئی ہے۔ یہ صاف دیکھا گیا کہ تپیدق کے جو کچھ لڑکے کے اندر پہلے اور چھپوں نے آخر میں اس کی جان لے لی وہ بی۔سی۔ جی کے ہی کچھ تھے۔

اس گھٹنا کے بارے میں جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسیوسییشن میں لکھا ہے کہ:—”اس گھٹنا سے ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ بی۔سی۔ جی کے ٹیکے سے جو کچھ جسم کے اندر داخل کئے جاتے۔ وہ اس سے آدمی کو اس طرح کا تپیدق ہو سکتا ہے جو اس کی جان لے لے۔“

ایک دوسری گھٹنا 13 نومبر سن 1954 کے جرنل آف دی امریکن میڈیکل اسیوسییشن میں یہ چھپی ہے:—”ہالینڈ میں ساڑھے چوبیس برس کی عمر کے ایک آدمی کے داہنے بازو پر بی۔سی۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا۔ ٹیکہ کی جگہ پھوٹ آئی جس کا مطلب یہ لیا جاتا ہے کہ یہ ٹیکہ کے کارگر اور سہل ہونے کی خاص پہچان ہے۔ سال بھر کے بعد اس آدمی کے داہنی طرف ایک ہورا نکلا۔ پورے کو چیر دیا گیا۔ اگلے ساڑھے چار برس کے اندر اس آدمی کو طرح طرح کی بیماریاں آئیں۔ بائیں ہاتھ سوجا، جانگھ پر دم میں اور جگہ جگہ بھڑے نکلے اور پورے پورے خراب ہوئے۔ اب بڑے بڑے ڈاکٹروں نے اس کا اچھی طرح سے امتحان کیا۔ آخر پہلا

کھوکھا نیکالنے کے ساڑھے چار برس کے اندر बी० सी० जी० का टीका लगाने के साढ़े पांच बरस के अन्दर वह आदमी तरह तरह की बीमारियों में मुबतिला होकर मर गया. इस बीच समय समय पर उसकी पीप व खून वगैरा का जो इस्तदान लिया गया तो बी० सी० जी० के टीके के कीड़े उसमें साफ साफ मिले. इस घटना पर अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन के जरनल में डाक्टरों ने वह साफ राय दी है कि:—
“आहिर है कि बी० सी० जी० के टीके से आदमी के जिस्म में और खून में इस तरह का मवाद फैल सकता है और उसके शरीर में बहुत सी इस तरह की बीमारी के कीड़ों की बस्तियां बन सकती हैं जिन से उस आदमी की मौत हो जाये.”

सन् 1954 के अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन के जरनल में अलग तारीखों अलग एडीटर के नाम तीन खत छपे हैं. इन तीनों खतों को मिलाकर पढ़ने की जरूरत है. हम उन तीनों का खुलासा नीचे देते हैं.

पहला खत 3 जुलाई सन् 1954 के जरनल में छपा है. इस खत में किसी आदमी ने एडीटर से पूछा है कि एक नौजवान लड़के को तपेदिक का आचमाइशी टीका लगाया गया. टीके की जगह नहीं फफदी तो अब उस आदमी का तपेदिक से बचाये रखने के लिये बी० सी० जी० का टीका लगाना मुनासिब है या नहीं ?

यह याद रखने की बात है कि आम तौर पर आदमी के पहले तपेदिक का आचमाइशी टीका लगाया जाता है यह देखने के लिये कि उसे तपेदिक है या नहीं और फिर अगर मालूम हो कि तपेदिक नहीं है तो बी० सी० जी० का टीका लगाया जाता है.

एडीटर ने इस खत का जो जवाब दिया वह भी जरनल के उसी नम्बर में छपा है. एडीटर का जवाब यह है कि:—

“यह बात कि उस आदमी के बी० सी० जी० का टीका लगाना ठीक होगा या नहीं बिलकुल हालात पर निर्भर है. अगर वह आदमी एक मामूली शहरी है, चलता फिरता है और खास तौर पर तपेदिक से या तपेदिक के मरीजों से उसका संबंध नहीं आता तो बी० सी० जी० का टीका लगाने की जरूरत नहीं है. अगरचे टीका लगाने से कोई खास नुकसान भी नहीं होगा, लेकिन अगर आचमाइशी टीके में उसके टीके की जगह नहीं फफदी और तपेदिक के बीमारों से उसको मिलना जुलना पड़ता है यानी उसके घर के अन्दर तपेदिक के मरीज हैं, या वह कोई ऐसा काम करता है जिसमें उसे तपेदिक के मरीजों से मिलना पड़ता है तो उसे बी० सी० जी० का टीका लगवा लेना चाहिये.”

इस पर एडीटर के पास बड़े-बड़े डाक्टरों के दो जोरदार खत और आए. इनमें पहला खत 4 सितम्बर सन् 1954 के जरनल में छपा है और अमरीका के मशहूर डाक्टर,

पेरो लकले के साढ़े चार बरस के अन्दर बी० सी० जी० का टीका लगाने के साढ़े पांच बरस के अन्दर वह असी तरह की बीमारियों में मुबतिला हो कर मर गया. इस बीच समय समय पर उसकी पीप व खून वगैरा का जो इस्तदान लिया गया तो बी० सी० जी० के टीके के कीड़े उसमें साफ साफ मिले. इस घटना पर अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन के जरनल में डाक्टरों ने यह साफ राय दी है कि:—“आहिर है कि बी० सी० जी० के टीके से आदमी के जिस्म में और खून में इस तरह का मवाद फैल सकता है और उसके शरीर में बहुत सी इस तरह की बीमारी के कीड़ों की बस्तियां बन सकती हैं जिन से उस आदमी की मौत हो जाये.”

सन् 1954 के अमरीकन मैडिकल एसोसियेशन के जरनल में अलग तारीखों अलग एडीटर के नाम तीन खत छपे हैं. इन तीनों खतों को मिलाकर पढ़ने की जरूरत है. हम उन तीनों का खुलासा नीचे देते हैं.

पहला खत 3 जुलाई सन् 1954 के जरनल में छपा है. इस खत में किसी आदमी ने एडीटर से पूछा है कि एक नौजवान लड़के को तपेदिक का आचमाइशी टीका लगाया गया. टीके की जगह नहीं फफदी तो अब उस आदमी का तपेदिक से बचाये रखने के लिये बी० सी० जी० का टीका लगाना मुनासिब है या नहीं ?

यह याद रखने की बात है कि आम तौर पर आदमी के पहले तपेदिक का आचमाइशी टीका लगाया जाता है यह देखने के लिये कि उसे तपेदिक है या नहीं और फिर अगर मालूम हो कि तपेदिक नहीं है तो बी० सी० जी० का टीका लगाया जाता है.

एडीटर ने इस खत का जो जवाब दिया वह भी जरनल के उसी नम्बर में छपा है. एडीटर का जवाब यह है कि:—

“यह बात कि उस आदमी के बी० सी० जी० का टीका लगाना ठीक होगा या नहीं बिलकुल हालात पर निर्भर है. अगर वह आदमी एक मामूली शहरी है, चलता फिरता है और खास तौर पर तपेदिक से या तपेदिक के मरीजों से उसका संबंध नहीं आता तो बी० सी० जी० का टीका लगाने की जरूरत नहीं है. अगरचे टीका लगाने से कोई खास नुकसान भी नहीं होगा, लेकिन अगर आचमाइशी टीके में उसके टीके की जगह नहीं फफदी और तपेदिक के बीमारों से उसको मिलना जुलना पड़ता है यानी उसके घर के अन्दर तपेदिक के मरीज हैं, या वह कोई ऐसा काम करता है जिसमें उसे तपेदिक के मरीजों से मिलना पड़ता है तो उसे बी० सी० जी० का टीका लगवा लेना चाहिये.”

इस पर एडीटर के पास बड़े-बड़े डाक्टरों के दो जोरदार खत और आए. इनमें पहला खत 4 सितम्बर सन् 1954 के जरनल में छपा है और अमरीका के मशहूर डाक्टर,

ڈاکٹر مائرس (Dr. J. A. Myers M. D.) کا لکھا ہوا ہے۔ ڈاکٹر مائرس دنیا بھر میں تپیدق کے بڑے سے بڑے ماهر ڈاکٹروں میں گنے جاتے ہیں۔ ان کے خط کا خلاصہ یہ ہے:—

جناب ایڈیٹر صاحب،

آپ کے 3 جولائی سن 1954 کے انک میں سرفا 949 پر 410 سی0 جی0 کے ٹیکے کے بارے میں کسی کا ایک سوال اور آپ کا جواب چھپا ہے۔ آپ نے اپنے جواب میں یہ کہا ہے کہ اس ٹیکہ سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوگا۔ اس بات کو کہ بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوتا بہت سے ڈاکٹر بہت دنوں سے غلط بتا رہے ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ ان کے اس غلط بتانے کے جو کڑوں میں ان میں سے کچھ آپ کے ہاتھوں کو بھی معلوم ہوئے چاہئیں۔

بی0 سی0 جی0 کا آجکل کا टीका سن 1921 میں دو ڈاکٹروں نے شروع کیا تھا جن کے نام کالمیٹ (Calmette) اور گورین (Goerin) تھے۔ ان دونوں کے نام پر وہ کیڑا جس کا ٹیکہ لگایا جاتا ہے بی0 سی0 جی0 کہلاتا ہے۔ ان دونوں ڈاکٹروں نے اس ٹیکے کے کیڑے کو تپیدق کی بیماری کے لیے تیار کیا اور سن 1924 میں یہ اعلان کیا کہ ٹیکہ کی خاص غرض کے لئے جو کیڑے انہوں نے تیار کئے ہیں ان میں زور اور زہر دونوں اتنے کم ہو گئے ہیں کہ آدمی کے یا جانور کے جسم میں ان سے تپیدق پیدا نہیں ہو سکتا۔ لیکن اُس وقت سے اب تک جگہ جگہ دواخانوں میں جو کیڑے اس ٹیکہ کے لئے تیار کئے گئے ہیں اور تیار کئے جارہے ہیں ان میں اور سن 1924 کے ان کیڑوں میں بہت گہرا فرق پڑ گیا ہے۔ خود ان دونوں ڈاکٹروں کے دواخانوں میں جو کیڑے اس کام کے لئے اب تیار کئے جارہے ہیں وہ بھی اب پہلے والے کیڑے نہیں رہے۔ اُس کے علاوہ دو دواخانوں میں تیار کئے ہوئے کیڑے بھی ایک دوسرے سے نہیں ملتے۔ ہم نے اس طرح کے تیار کئے ہوئے جتنے کیڑوں کو دیکھا ہے ہر ایک میں بچائے اُس طرح کے کیڑے کے جو ڈاکٹر کالمیٹ نے تیار کیا تھا ہمیں کئی طرح کے بیماریوں کے کیڑے ملتے ہیں۔ اس سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے کے لئے جو کیڑے تیار کئے جارہے ہیں وہ ڈاکٹر کالمیٹ کے وقت سے اب تک بے حد بدل گئے ہیں اور ساتھ ہی ایک دواخانے کے تیار ہوئے کیڑے دوسرے دواخانوں کے تیار ہوئے کیڑوں سے بالکل الگ ہیں۔ کوئی دو آپس میں نہیں ملتے۔ شاید ان تبدیلیوں کے کارن ہی پچھلے پچیس برس کے اندر جن آدمیوں یا جن جانوروں کے بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے لگائے گئے ہیں ان میں خطرناک صورتیں پیدا ہوتی دکھائی دی ہیں۔ بہت سے لوگوں کے جن کے بی0 سی0 جی0 کا ٹیکہ لگایا تھا اُس

آپ کے 3 جولائی سن 1954 کے انک میں صفحہ 949 پر بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے کے بارے میں کسی کا ایک سوال اور آپ کا جواب چھپا ہے۔ آپ نے اپنے جواب میں یہ کہا ہے کہ اس ٹیکہ سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوگا۔ اس بات کو کہ بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوتا بہت سے ڈاکٹر بہت دنوں سے غلط بتا رہے ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ ان کے اس غلط بتانے کے جو کڑوں میں ان میں سے کچھ آپ کے ہاتھوں کو بھی معلوم ہوئے چاہئیں۔

جناب ایڈیٹر صاحب،

آپ کے 3 جولائی سن 1954 کے انک میں سرفا 949 پر بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے کے بارے میں کسی کا ایک سوال اور آپ کا جواب چھپا ہے۔ آپ نے اپنے جواب میں یہ کہا ہے کہ اس ٹیکہ سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوگا۔ اس بات کو کہ بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوتا بہت سے ڈاکٹر بہت دنوں سے غلط بتا رہے ہیں۔ میں سمجھتا ہوں کہ ان کے اس غلط بتانے کے جو کڑوں میں ان میں سے کچھ آپ کے ہاتھوں کو بھی معلوم ہوئے چاہئیں۔

بی0 سی0 جی0 کا آجکل کا ٹیکہ سن 1921 میں دو ڈاکٹروں نے شروع کیا تھا جن کے نام کالمیٹ (Calmette) اور گورین (Goerin) تھے۔ انہوں دونوں کے نام پر وہ کیڑا جس کا ٹیکہ لگایا جاتا ہے بی0 سی0 جی0 کہلاتا ہے۔ ان دونوں ڈاکٹروں نے اس ٹیکے کے کیڑے کو تپیدق کی بیماری کے لیے تیار کیا اور سن 1924 میں یہ اعلان کیا کہ ٹیکہ کی خاص غرض کے لئے جو کیڑے انہوں نے تیار کئے ہیں ان میں زور اور زہر دونوں اتنے کم ہو گئے ہیں کہ آدمی کے یا جانور کے جسم میں ان سے تپیدق پیدا نہیں ہو سکتا۔ لیکن اُس وقت سے اب تک جگہ جگہ دواخانوں میں جو کیڑے اس ٹیکہ کے لئے تیار کئے گئے ہیں اور تیار کئے جارہے ہیں ان میں اور سن 1924 کے ان کیڑوں میں بہت گہرا فرق پڑ گیا ہے۔ خود ان دونوں ڈاکٹروں کے دواخانوں میں جو کیڑے اس کام کے لئے اب تیار کئے جارہے ہیں وہ بھی اب پہلے والے کیڑے نہیں رہے۔ اُس کے علاوہ دو دواخانوں میں تیار کئے ہوئے کیڑے بھی ایک دوسرے سے نہیں ملتے۔ ہم نے اس طرح کے تیار کئے ہوئے جتنے کیڑوں کو دیکھا ہے ہر ایک میں بچائے اُس طرح کے کیڑے کے جو ڈاکٹر کالمیٹ نے تیار کیا تھا ہمیں کئی طرح کے بیماریوں کے کیڑے ملتے ہیں۔ اس سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے کہ بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے کے لئے جو کیڑے تیار کئے جارہے ہیں وہ ڈاکٹر کالمیٹ کے وقت سے اب تک بے حد بدل گئے ہیں اور ساتھ ہی ایک دواخانے کے تیار ہوئے کیڑے دوسرے دواخانوں کے تیار ہوئے کیڑوں سے بالکل الگ ہیں۔ کوئی دو آپس میں نہیں ملتے۔ شاید ان تبدیلیوں کے کارن ہی پچھلے پچیس برس کے اندر جن آدمیوں یا جن جانوروں کے بی0 سی0 جی0 کے ٹیکے لگائے گئے ہیں ان میں خطرناک صورتیں پیدا ہوتی دکھائی دی ہیں۔ بہت سے لوگوں کے جن کے بی0 سی0 جی0 کا ٹیکہ لگایا تھا اُس

جگہ پر قابو اور فوڈے نیکل آئے جن سے مہینوں پہلے اور مواد بہتا رہا یہاں تک کہ ٹیکہ لگائے کے طریقہ کو کچھ بدلنا پڑا۔ اس سے تکلیف تو گھٹی لیکن پھر بھی ہر سال اس طرح کی بہت سی گھٹناؤں ہمارے سامنے آتی رہتی ہیں۔ اس طرح کے روگہوں کو جو گھاؤ اور پھوڑے ہوتے ہیں وہ بالکل اسی طرح کے ہوتے ہیں جس طرح کے تپدق کی بیماری میں ہوتے ہیں۔ بہت سے ایسے بیماروں کا چہرہ ہار کے ذریعہ علاج کرنا پڑتا ہے۔ بہت سوں کو ایسی دوائیں دینی پڑتی ہیں جن سے بیماری کے کڑے مر جائیں۔

بہت سے ایسے لوگوں کو جنہیں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا بعد میں باضابطہ تپدق ہوگیا اور ان میں سے بہت سے تپدق سے مر بھی گئے۔ پہلی مئی سن 1954 کے آپ کے رسالے میں صفحہ 61 پر سات ایسی گھٹناؤں درج ہیں جن میں بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے لوگوں کو کھال کی وہ گندی بیماری ہوگئی جسے لوپس و لکورس کہتے ہیں۔ 19 جون سن 1954 کے انک میں صفحہ 773 پر ایک بہت پکی گھٹنا دی ہوئی ہے جس میں بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے ہی آدمی کو تپدق ہوا اور اسی سے اس کی موت ہوئی۔ اس آدمی کے بیس برس کی عمر میں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا تھا۔ چھ ہفتے کے اندر وہ جگہ پھیند اٹھی۔ لگ بھگ ایک سال کے بعد بیماری کی پہلی علامتیں دکھائی دیں۔ اس کے بعد ہر بار بدن کے بہت سے حصوں میں یہاں تک کہ پھیپھڑوں اور گردن میں بھی، بیماری کے لکشن بڑھتے چلے گئے۔ دسمبر سن 1958 میں وہ آدمی تپدق سے مر گیا۔ اس کے گھاؤں کا جب امتحان لیا گیا تو ایک نہیں بہت سے گھاؤں سے بی۔ سی۔ جی۔ کے ہی کڑے ملے۔ ایسی گھٹناؤں بہت ہوچکی ہیں۔ ان سے ہمیں یہ بھی گہرا شک ہونے لگتا ہے کہ اس سے پہلے بہت سے ایسے لوگوں کو جن کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگ چکا تھا اور جنہیں اس کے بعد تپدق ہوا اور وہ تپدق سے مرے، انہیں دبی چھپی بیماری پہلے سے موجود نہیں تھی جس سے بی۔ سی۔ جی۔ انہیں نہ بچا سکی ہو بلکہ بات یہ تھی کہ انہیں بیماری ہوئی ہی بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے۔ ہر صورت بی۔ سی۔ جی۔ کے کڑوں کی بابت جو پکی اور پرامانک باتیں ہمیں معلوم ہوچکی ہیں اور اس ٹیکے سے آدمیوں اور جانوروں میں جس طرح کی بیماریاں پیدا ہو جاتی ہیں وہ ہمیں چونکا اور سادھان کردینے کے لئے کافی ہیں۔ ان کی بنا پر ہم پکی طور پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ آپ نے اپنے جواب میں جو یہ کہا ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوتا یہ بالکل غلط ہے، کہیں کوئی ایسی بات کہہ تو یہ بالکل غلط ہے۔

بہت سے ایسے لوگوں کو جنہیں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا بعد میں باضابطہ تپدق ہوگیا اور ان میں سے بہت سے تپدق سے مر بھی گئے۔ پہلی مئی سن 1954 کے آپ کے رسالے میں صفحہ 61 پر سات ایسی گھٹناؤں درج ہیں جن میں بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے لوگوں کو کھال کی وہ گندی بیماری ہوگئی جسے لوپس و لکورس کہتے ہیں۔ 19 جون سن 1954 کے انک میں صفحہ 773 پر ایک بہت پکی گھٹنا دی ہوئی ہے جس میں بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے ہی آدمی کو تپدق ہوا اور اسی سے اس کی موت ہوئی۔ اس آدمی کے بیس برس کی عمر میں بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا تھا۔ چھ ہفتے کے اندر وہ جگہ پھیند اٹھی۔ لگ بھگ ایک سال کے بعد بیماری کی پہلی علامتیں دکھائی دیں۔ اس کے بعد ہر بار بدن کے بہت سے حصوں میں یہاں تک کہ پھیپھڑوں اور گردن میں بھی، بیماری کے لکشن بڑھتے چلے گئے۔ دسمبر سن 1958 میں وہ آدمی تپدق سے مر گیا۔ اس کے گھاؤں کا جب امتحان لیا گیا تو ایک نہیں بہت سے گھاؤں سے بی۔ سی۔ جی۔ کے ہی کڑے ملے۔ ایسی گھٹناؤں بہت ہوچکی ہیں۔ ان سے ہمیں یہ بھی گہرا شک ہونے لگتا ہے کہ اس سے پہلے بہت سے ایسے لوگوں کو جن کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگ چکا تھا اور جنہیں اس کے بعد تپدق ہوا اور وہ تپدق سے مرے، انہیں دبی چھپی بیماری پہلے سے موجود نہیں تھی جس سے بی۔ سی۔ جی۔ انہیں نہ بچا سکی ہو بلکہ بات یہ تھی کہ انہیں بیماری ہوئی ہی بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے۔ ہر صورت بی۔ سی۔ جی۔ کے کڑوں کی بابت جو پکی اور پرامانک باتیں ہمیں معلوم ہوچکی ہیں اور اس ٹیکے سے آدمیوں اور جانوروں میں جس طرح کی بیماریاں پیدا ہو جاتی ہیں وہ ہمیں چونکا اور سادھان کردینے کے لئے کافی ہیں۔ ان کی بنا پر ہم پکی طور پر یہ کہہ سکتے ہیں کہ آپ نے اپنے جواب میں جو یہ کہا ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے کوئی خاص نقصان نہیں ہوتا یہ بالکل غلط ہے، کہیں کوئی ایسی بات کہہ تو یہ بالکل غلط ہے۔

(دستخط) جے۔ پی۔ مائرس ایم۔ ڈی۔ بریئر، بریئر۔

(دستخط) جے۔ اے۔ مائرس ایم۔ ڈی۔ بریئر، بریئر۔

دوسرا خت امریکا ہی کے ایک مشہور ڈاکٹر، ڈاکٹر سیمور ایم. فاربر (Dr. Seymour M. Farber M. D.) کا ہے جو سین ٹرانسکو کے اسپتال میں تپدق کے مریضوں کے خاص چارج میں ہیں۔ اُن کا خط یہ ہے :—

جناب ایڈیٹر صاحب !

3 جولائی سن 1954 کے جرنل میں صفحہ 949 پر جو آپ نے بی۔سی۔جی۔ کی ہابت ایک سوال کا جواب دیا ہے وہ مجھے کھٹکا۔ مجھے معلوم ہونا ہے کہ اُس سے پڑنے والے پر یہ پڑے گا کہ اِس چیز سے جسم بی۔سی۔جی۔ کا ٹیکہ کھا جاتا ہے توئی نقصان نہیں ہو سکتا۔ پچھلے برسوں میں بی۔سی۔جی۔ نے ٹیکوں کی تیاری کو اچھی طرح دیکھ کر اور جانوروں اور انسانوں پر اُس کے اثر کو معلوم کر کے جو جانکاری ہمیں ملی ہے وہ اتنی اہم اور اِنٹی پکی ہے کہ ہمیں مجبور ہو کر یہ کہنا پڑا ہے کہ بی۔سی۔جی۔ سے نقصان نہیں ہوتا، غلط ہے۔ لگ بھگ چالیس برس ہمیں اِس کے تجربے کرنے اور اِسے استعمال کرتے ہوئے۔ اور دنیا کے سارے حصوں میں تجربے کئے جا چکے ہیں۔ اِس سب کو سامنے رکھ کر ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ بی۔سی۔جی۔ سے نقصان نہیں ہو سکتا۔ بہت سوں کی رائے اِس ٹیکے کے خلاف ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ ہمیں اِس معاملے میں بڑی احتیاط سے کام لینا چاہئے۔

(دستخط) ایم. فاربر ایم. ڈی. وریو، وریو۔

ڈاکٹر کے آٹکڈے

بی۔سی۔جی۔ کے ٹیکے کے سمर्थن میں جو آٹکڈے دیے جاتے ہیں، خاص کر یورپ کے ملکوں میں، ان پر بھی آنکھ باند کر کے ایتبار کر لینا غلط ہے۔

ایڈینبرا کے فیکڈوں کی بیماری کے مشہور ڈاکٹر ایف. کئلر مین (Dr. F. Kellermann M. D.) نے 15 ستمبر سن 1954 کے انگلینڈ کے اخبار "میڈیکل پریس" میں لکھا ہے :—

"بی۔سی۔جی۔ کے ٹیکے کے نفاذ کو ٹیکہ ڈاکٹر کے اندازہ لگانے میں ایک بڑی مشکل ہے کہ عام طور پر پچھلے پچاس برس کے اندر دنیا کے بہت سے حصوں میں تپدق کی بیماری اور اس سے مراد بڑا بڑا بڑا ہوتا جا رہا ہے۔ اِس معاملے میں یہ بات خاص دھیان دینے کی ہے کہ امریکہ میں کچھ ریاستوں نے اپنے یہاں بی۔سی۔جی۔ کا ٹیکہ چلایا اور کچھ نے نہیں چلایا، لیکن تپدق کی بیماری اور اُس سے مراد میں بہت بڑی اور صاف صاف کمی انہیں ریاستوں میں ہوئی ہے جنہوں نے اپنے یہاں بی۔سی۔جی۔ کا ٹیکہ نہیں چلایا۔"

دوسرا خط امریکہ ہی کے ایک اور مشہور ڈاکٹر، ڈاکٹر سیمور ایم. فاربر (Dr. Seymour M. Farber M.D.) کا ہے جو سین ٹرانسکو کے اسپتال میں تپدق کے مریضوں کے خاص چارج میں ہیں۔ اُن کا خط یہ ہے :—

جناب ایڈیٹر صاحب !

3 جولائی سن 1954 کے جرنل میں صفحہ 949 پر جو آپ نے بی۔سی۔جی۔ کی ہابت ایک سوال کا جواب دیا ہے وہ مجھے کھٹکا۔ مجھے معلوم ہونا ہے کہ اُس سے پڑنے والے پر یہ پڑے گا کہ اِس چیز سے جسم بی۔سی۔جی۔ کا ٹیکہ کھا جاتا ہے توئی نقصان نہیں ہو سکتا۔ پچھلے برسوں میں بی۔سی۔جی۔ نے ٹیکوں کی تیاری کو اچھی طرح دیکھ کر اور جانوروں اور انسانوں پر اُس کے اثر کو معلوم کر کے جو جانکاری ہمیں ملی ہے وہ اتنی اہم اور اِنٹی پکی ہے کہ ہمیں مجبور ہو کر یہ کہنا پڑا ہے کہ بی۔سی۔جی۔ سے نقصان نہیں ہوتا، غلط ہے۔ لگ بھگ چالیس برس ہمیں اِس کے تجربے کرنے اور اِسے استعمال کرتے ہوئے۔ اور دنیا کے سارے حصوں میں تجربے کئے جا چکے ہیں۔ اِس سب کو سامنے رکھ کر ہم یہ نہیں کہہ سکتے کہ بی۔سی۔جی۔ سے نقصان نہیں ہو سکتا۔ بہت سوں کی رائے اِس ٹیکے کے خلاف ہے۔ اِس میں کوئی شک نہیں کہ ہمیں اِس معاملے میں بڑی احتیاط سے کام لینا چاہئے۔

(دستخط) سیمور ایم. فاربر ایم. ڈی. وریو، وریو۔

دھوکے کے آنکڑے

بی۔سی۔جی۔ کے ٹیکے کے سمर्थن میں جو آنکڑے دئے جاتے ہیں، خاص کر یورپ کے ملکوں میں، ان پر بھی آنکھ باند کر کے ایتبار کر لینا غلط ہے۔

ایڈینبرا کے فیکڈوں کی بیماری کے مشہور ڈاکٹر ایف. کئلر مین (Dr. F. Kellermann M. D.) نے 15 ستمبر سن 1954 کے انگلینڈ کے اخبار "میڈیکل پریس" میں لکھا ہے :—

"بی۔سی۔جی۔ کے ٹیکے کے نفع نقصان کا ٹیکہ ٹیکہ اندازہ لگانے میں ایک بڑی مشکل ہے کہ عام طور پر پچھلے پچاس برس کے اندر دنیا کے بہت سے حصوں میں تپدق کی بیماری اور اس سے مراد بڑا بڑا بڑا ہوتا جا رہا ہے۔ اِس معاملے میں یہ بات خاص دھیان دینے کی ہے کہ امریکہ میں کچھ ریاستوں نے اپنے یہاں بی۔سی۔جی۔ کا ٹیکہ چلایا اور کچھ نے نہیں چلایا، لیکن تپدق کی بیماری اور اُس سے مراد میں بہت بڑی اور صاف صاف کمی انہیں ریاستوں میں ہوئی ہے جنہوں نے اپنے یہاں بی۔سی۔جی۔ کا ٹیکہ نہیں چلایا۔"

ترہ کی اہلیات کے ساتھ لگایا جاتا ہے۔ ان سب چیزوں کے یہاں دہرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ ڈاکٹر بی۔ ڈامسن نے اپنے خط میں صاف باتوں میں لکھا ہے کہ :—

“اس مطلق کے کسی۔ حصے میں بھی اور کسی طرح کے لوگوں کے لئے بھی یہ ٹیکہ لازمی نہیں ہے اور نہ اس وقت ہمارا یہ کوئی ارادہ ہے کہ ہم اپنے اس ٹیکے کے پروگرام کو بڑھادیں۔”

ڈاکٹر ڈامسن نے یہ بھی لکھا ہے کہ :—

“فرانس اور سویڈن میں بھی بی۔ سی۔ جی۔ کا टीका लाजिमी नहीं है और डेनमार्क، نار्वे، سویڈن और فنلینڈ چاروں مملکتوں میں मौजूदा राय आम तौर से टीके लगाये जाने के खिलाफ है۔”

امریکا، ہی سے ‘پولینو’ کے لیے جو بچوں کی ایک بیماری ہے اور جس میں بچوں کو لکڑی مارا جاتا ہے ایک اور نیا टीका निकला था जिसे सालक वैक्सीन कहते हैं۔ इस नये टीके की तारीफ में बार बार बड़े बड़े आंकड़े दिये गये۔ यहाँ तक कि कुछ दिनों तक यह इंग्लैंड में भी चल पड़ा۔ पर अब इंग्लैंड की ब्रिटिश मेडिकल रिसर्च कौंसिल ने इस नये टीके का लगाना बिलकुल बन्द कर देने का फैसला कर लिया है क्योंकि बच्चों के इस टीके का लगाना उन्हें खतरनाक साबित हुआ۔

अब हम फिर अपने देश की तरफ आते हैं। हम सब लोगों के यह टीका क्यों लगा रहे हैं ? और ऐतराजों का छोड़कर टीके के हाथी हमें इससे क्या उम्मीद दिला रहे हैं ? वह हमें ज्यादा से ज्यादा यही उम्मीद दिला रहे हैं कि एक बहुत थोड़े से असें के लिये यानी अधिक से अधिक दो बरस के लिये हमारा बच्चा तपेदिक से बचा रहेगा और इस दो बरस के लिये भी वह पूरा भरोसा नहीं दिला सकते। इन दो बरस के बाद फिर हमें अपने को बचाने के लिये वही दूसरी तरीकें, दूसरी तरह की तालीम, खाना पीना और दूसरी तरह की अहलियातों का सहारा लेना पड़ेगा। बी० सी० जी० का असर उनके मुताबिक इससे आगे चल ही नहीं सकता।

इस टीके से नई नई बीमारियां

एक और बीमारी है जिसे इनसिफेलाइटिस (Encephalitis) कहते हैं जिसमें रोगी के दिमाग के अन्दर सूजन आजाती है। बी० सी० जी० का टीका जहाँ जहाँ लगाया गया है वहाँ वहाँ यह बीमारी भी अनेक बार दिखाई दी है। दूसरे मल्लों में यह कम लोगों का दुई है, हमारे मल्ल में ज्यादा लोगों का दुई है, जिसका कारण यह है कि हमारे देश में गरीबी अधिक है और लोगों को काफी और ठण्ड का खाने को नहीं मिलता। यह भी मालूम हुआ है कि बी० सी० जी० के टीके से इस बीमारी के पैदा होने की

طرح کی احتیاط کے ساتھ لگایا جاتا ہے۔ ان سب چیزوں کے یہاں دہرانے کی ضرورت نہیں ہے۔ ڈاکٹر بی۔ ڈامسن نے اپنے خط میں صاف باتوں میں لکھا ہے کہ :—

“اس ملک کے کسی حصے میں بھی اور کسی طرح کے لوگوں کے لئے بھی یہ ٹیکہ لازمی نہیں ہے اور نہ اس وقت ہمارا یہ کوئی ارادہ ہے کہ ہم اپنے اس ٹیکے کے پروگرام کو بڑھادیں۔”

ڈاکٹر ڈامسن نے یہ بھی لکھا ہے کہ :—

“فرانس اور سویڈن میں بھی بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لازمی نہیں ہے اور ڈنمارک، ناروے، سویڈن اور فنلینڈ چاروں ملکوں میں موجودہ رائے عام طور سے ٹیکے لگانے کے خلاف ہے۔” امریکہ ہی سے ‘پولینو’ کے لئے جو بچوں کی ایک بیماری ہے اور جس میں بچوں کو لکڑی مارا جاتا ہے ایک اور نیا ٹیکہ نکلا گیا جسے سالک ویکسین کہتے ہیں۔ اس نئے ٹیکے کی تعریف میں بار بار بڑے بڑے آنکڑے دیئے گئے۔ یہاں تک کہ کچھ دنوں تک یہ انگلینڈ میں بھی چل پڑا۔ پھر اب انگلینڈ کی برٹش میڈیکل ریسرچ کونسل نے اس نئے ٹیکے کا لگانا بالکل بند کر دینے کا فیصلہ کر لیا ہے کیونکہ بچوں کے اس ٹیکے کا لگانا انہیں خطرناک ثابت ہوا۔

اب ہم پھر اپنے دیس کی طرف آتے ہیں۔ ہم سب لوگوں کے یہ ٹیکہ بھوں لگا رہے ہیں ؟ اور اعتراضوں کو چھوڑ کر ٹیکے کے حامی ہمیں اس سے کیا امید دلا رہے ہیں ؟ وہ ہمیں زیادہ سے زیادہ یہی امید دلا رہے ہیں کہ ایک بہت تھوڑے سے عرصے کے لئے یعنی ادھک سے ادھک دو برس کے لئے ہمارا بچہ تپیدیک سے بچا رہے گا اور اس دو برس کے لئے بھی وہ پورا برس نہیں دلا سکتے۔ ان دو برس کے بعد پھر ہمیں اپنے کو بچانے کے لئے بھی دوسری ترکیبیں، دوسری طرح کی تعلیم، کھانا پینا اور دوسری طرح کی احتیاطوں کا سہارا لینا پڑے گا۔ بی۔ سی۔ جی۔ کا اثر ان کے مطابق اس سے آگے چل ہی نہیں سکتا۔

اس ٹیکے سے نئی نئی بیماریاں

ایک اور بیماری ہے جسے انسوفیلایٹیس (Encephalitis) کہتے ہیں جس میں رگی کے دماغ کے اندر سوجن آجاتی ہے۔ بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ جہاں جہاں لگایا گیا ہے وہاں یہ بیماری بھی اُنیک بار دکھائی دی ہے۔ دوسرے ملکوں میں یہ کم لوگوں کو ہوتی ہے، ہمارے ملک میں زیادہ لوگوں کو ہوتی ہے جس کا کارن یہ ہے کہ ہمارے دیس میں غربی ادھک ہے اور لوگوں کو کافی اور تھنک کا کھانے کو نہیں ملتا۔ یہ بھی معلوم ہوا ہے کہ بی۔ سی۔ جی۔ کے ٹیکے سے اس بیماری کے پیدا ہونے کی

جیتانی घटनाएँ होती हैं उनमें बहुत कम हमारे सामने आ पाती हैं. डाक्टर टापले और डाक्टर विलसन ने अपनी किताब में जिसकी चरचा हम ऊपर کر चुके हैं लिखा है कि हाल में 400 सी० जी० का टीका लगने से यह बीमारी भी अक्सर होती दिखाई दी है और इस तरह की "कई सी घटनाएँ" उनके सामने आ चुकी हैं.

डाक्टर फ्रेडरिक डब्लू. प्राइس نے अपनी किताब "ए टैक्सٹ बुک آف دی پرائمری آف میڈیسن" में लिखा है कि एक और बीमारी अक्सर इस टीके के बाद देखी गई है जो टीके लगने के सात दिन से लेकर बारह दिन के अन्दर नमूदार होती है जिसमें सर में दर्द होता है, कै आती है, एक तरह से हल्का सा लकवा हो जाता है, रोगी बक बक करने लगता है, बेहोशी आ जाती है और कभी कभी मौत भी हो जाती है. इस बीमारी से अक्सर पचास फीसदी आदमी मर जाते हैं. उन्होंने लिखा है कि इस टीके से कभी कभी कई तरह की दबी हुई बीमारियाँ चमक भी उठती हैं.

जिस बीमारी का डाक्टर फ्रेडरिक डब्लू. प्राइस ने जिक्र किया है उसमें वह लिखते हैं कि अक्सर रोगी के आँख की रोशनी भी जाती रहती है. कोइम्बटूर की जिस अभागी लड़की का हाल अखबारों में निकल चुका है उसे यही बीमारी हुई थी.

मद्रास सरकार की तहकीकाती कमेटी

उस लड़की का नाम वसंत था. जब उसका हाल कुछ डाक्टरों की राय के साथ अखबारों में छपा तो मद्रास की सरकार ने तहकीकात के लिये कुछ सरकारी डाक्टरों की एक कमेटी मुकर्रर की. उस कमेटी ने वसंत और कुछ और रोगियों का भी देखकर अपनी रिपोर्ट सरकार को दे दी. उन और रोगियों का भी कम या अधिक इसी तरह की शिकायतें थीं. उस कमेटी की रिपोर्ट शायद नहीं की गई. उसकी जगह सरकार ने एक अपना ही प्रेस नोट अखबारों में निकाल दिया कि कमेटी की रिपोर्ट से उन्हें मालूम हुआ है कि वसंत की आँखें 400 सी० जी० के टीके के कारण नहीं गई बल्कि एक और बीमारी उस इलाक़े में शायद पहले से फैली हुई थी जो वसंत को लग गई और जिसके कारण उसकी आँखें गई. इस बीमारी का नाम भी सरकार ने अपने प्रेस नोट में दिया है.

मद्रास सरकार ने जब यह कमेटी मुकर्रर की थी तब 2 जून सन् 1955 को पहले ही से ऐलान कर दिया था कि "अखबारों में जिस बच्चे की आँखें चले जाने का हाल छपा है उसकी बाबत सरकार की शुरु की तहकीकात से पता चला है कि आँखें जाने का 400 सी० जी० के टीके से कोई सम्बन्ध नहीं था, फिर भी सरकार और तहकीकात के लिये डाक्टरों की एक कमेटी मुकर्रर कर रही है."

جتنی گھنٹائیں ہوتی ہیں اُن میں بہت کم ہمارے سامنے آ پاتی ہیں. ڈاکٹر ٹاپلے اور ڈاکٹر ولسن نے اپنی کتاب میں جس کی چرچا ہم اوپر کر چکے ہیں لکھا ہے کہ حال میں سی. سی. جی کا ٹیکہ لگنے سے یہ بیماری بھی اکثر ہوتی دکھائی دی ہے اور اس طرح کی "کئی سو گھنٹائیں" اُن کے سامنے آ چکی ہیں.

ڈاکٹر فریڈرک ڈبلیو. پرائس نے اپنی کتاب "ای ٹیکسٹ بک آف دی پرائمری آف میڈیسن" میں لکھا ہے کہ ایک اور بیماری اکثر اس ٹیکے کے بعد دیکھی گئی ہے جو ٹیکہ لگنے کے سات دن سے لیکر بارہ دن کے اندر نمودار ہوتی ہے جس میں سر میں درد ہوتا ہے، قم آتی ہے، ایک طرح سے ہلکا سا اقوہ ہو جاتا ہے، روگی بک بک کرنے لگتا ہے، بے ہوشی آ جاتی ہے اور کبھی کبھی موت بھی ہو جاتی ہے. اس بیماری سے اکثر پچاس فیصدی آدمی مر جاتے ہیں. اُنہو نے لکھا ہے کہ اس ٹیکے سے کبھی کبھی کئی طرح کی دبی ہوئی بیماریاں چمک بھی اُٹھتی ہیں.

جس بیماری کا ڈاکٹر فریڈرک ڈبلیو. پرائس نے ذکر کیا ہے اُس میں وہ لکھتے ہیں کہ اکثر روگی کے آنکھ کی روشنی بھی جاتی رہتی ہے. کوئمبرٹور کی جس اُپاہنگی لڑکی کا حال اخباروں میں نکل چکا ہے اُسے بھی بیماری ہوئی تھی.

مدرسہ سرکار کی تحقیقاتی کمیٹی

اُس لڑکی کا نام وسنت تھا. جب اُس کا حال کچھ ڈاکٹروں کی رائے کے ساتھ اخباروں میں چھپا تو مدرسہ کی سرکار نے تحقیقات کے لئے کچھ سرکاری ڈاکٹروں کی ایک کمیٹی مقرر کی. اُس کمیٹی نے وسنت اور کچھ اور روگیوں کو بھی دیکھ کر اپنی رپورٹ سرکار کو دے دی. اُن اور روگیوں کو بھی کم یا ادھک اسی طرح کی شکایتیں تھیں. اُس کمیٹی کی رپورٹ شائع نہیں کی گئی. اُس کی جگہ سرکار نے ایک اپنا ہی پریس نوٹ اخباروں میں نکال دیا کہ کمیٹی کی رپورٹ سے اُنہیں معلوم ہوا ہے کہ وسنت کی آنکھیں سی. سی. جی کے ٹیکے کے کارن نہیں گئیں بلکہ ایک اور بیماری اُس علاقہ میں شاید پہلے سے پھیلی ہوئی تھی جو وسنت کو لگ گئی اور جس کے کارن اُس کی آنکھیں گئیں. اس بیماری کا نام بھی سرکار نے اپنے پریس نوٹ میں دیا ہے.

مدرسہ سرکار نے جب یہ کمیٹی مقرر کی تھی تب 2 جون سن 1955 کو پہلے ہی سے اعلان کر دیا تھا کہ "اخباروں میں جس بچے کی آنکھیں چلے جانے کا حال چھپا ہے اُس کی باہت سرکار کی شروع کی تحقیقات سے پتہ چلا ہے کہ آنکھیں جانے کا سی. سی. جی کے ٹیکے سے کوئی سبب نہیں تھا. پھر بھی سرکار اور ادھک تحقیقات کے لئے ڈاکٹروں کی ایک کمیٹی مقرر کر رہی ہے."

یہی وہ کمیٹی تھی جسکی رپورٹ نہیں جاری کی گئی پر جس سے نتیجہ وہی نکلا جو سرکار پہلے سے نکال چکی تھی۔

سرکار کے پریس نوٹ کے بعد ڈاکٹر ایل. این. انننت رامن اے. بی. کا ایک خط مدراس کے "ہینڈ" اخبار میں شائع ہوا جس میں انہوں نے لکھا ہے کہ اول تو سرکار کو چاہئے تھا کہ اس معاملے کے لئے جو تحقیقاتی کمیٹی سرکار نے مقرر کی تھی اس میں کم سے کم ایک غیر سرکاری ڈاکٹر بھی رکھا جاتا۔ دوسرے جس بیماری کا نام سرکار نے اپنے پریس نوٹ میں لیا ہے اور لکھا ہے کہ وسنت کو وہ بیماری ہوئی ہوگی اور اسی سے اس کی آنکھیں کٹیں، اس بیماری کا ڈاکٹر کی کتابوں میں آنکھوں کے جانے کے ساتھ کہیں کوئی سمبندھ نہیں ملتا۔ ڈاکٹر رامن نے بہت سی کتابوں کے نام اپنے خط میں دئے ہیں اور لکھا ہے کہ میں بہت اچھی ہونگا اگر سرکار مجھے یہ بتا دے کہ اس بیماری کا اور اس کے سے سمبندھ کس کذب میں ملتا ہے اور یہ کیسے ہوتا ہے۔

ڈاکٹر اننت رامن کے خط کا کوئی جواب سرکار کی طرف سے نہیں مل سکا۔

ڈاکٹر اننت رامن کے خط کا کوئی جواب سرکار کی طرف سے نہیں مل سکا۔

ڈاکٹر اننت رامن کے خط کا کوئی جواب سرکار کی طرف سے نہیں مل سکا۔

ایک قانونی سوال

ایک قانونی سوال

اب رہا یہ سوال کہ سب بچوں کے اس طرح کا ٹیکہ لگانا یہاں تک قانون کے اندر ہے اور اس میں کیا احتیاطیں ضروری ہیں۔ سرکار نے کوئی قانون پاس نہ کیا اور یہ اندھیکار نہیں لیا۔ کم سے کم اتنا اسے کرنا چاہئے تھا۔ کہا ابھی تک یہی جانا ہے کہ یہ ٹیکہ لازمی نہیں ہے یعنی زبردستی کسی کے نہیں لگایا جاتا، جو چاہتے ہیں انہیں لگنا ہے۔ اس معاملہ میں مجھے یہ معلوم ہوا کہ اسکول کے بچوں کے ماں باپ اگر لکھ کر اپنا اعتراض اسکول ماسٹر کے پاس نہیں بھیج دیتے تو یہ فرض کر لیا جاتا ہے کہ انہیں کوئی اعتراض نہیں ہے اور وہ چاہتے ہیں کہ ان کے بچوں کے ٹیکہ لگایا جائے۔ میں نے دیکھا کہ یہ طریقہ بالکل قانون کے خلاف ہے۔ خاص کر ایک ایسے دیس میں جس میں انہیں انہک تر ماں باپ ان پڑھ ہیں جن کے چہرے چہرے بچے اسکولوں میں پڑھتے ہیں۔ میں نے سرکار کو لکھا۔ اس نے جواب میں مدراس سرکار کے ہیلتھ منسٹر شری اے. بی. شتی کا پہلی جولائی سن 1955 کا جو خط میرے پاس آیا اس میں لکھا ہے کہ:—

"مدراس ریاست میں اسکولوں کے بچوں کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگانے کی بات جو طریقہ برتا جاتا ہے وہ یہ ہے۔ ہر اسکول میں بچوں کے پہلے تپدیک کا آجماہشی ٹیکہ اور پھر بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگانے کے لئے نارینڈھ مقرر کردی جاتی ہیں۔ پھر اسکول

"مدراس ریاست میں اسکولوں کے بچوں کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگانے کی بات جو طریقہ برتا جاتا ہے وہ یہ ہے۔ ہر اسکول میں بچوں کے پہلے تپدیک کا آجماہشی ٹیکہ اور پھر بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگانے کے لئے نارینڈھ مقرر کردی جاتی ہیں۔ پھر اسکول

کے अधिकारियों की मार्फत बच्चों के माँ बाप को उन कारीखों की पहलے سے सूचना दी जाती है और यह लिख दिया जाता है कि टीका लायिमी नहीं है. स्कूलों के अधिकारियों से कहा जाता है कि वह बच्चों के माँ बाप की रजामन्दी हासिल कर लें. जिन सरकारी अफसरों की टीके का काम सुपुर्व होता है वह फिर हेडमास्टर और स्कूल के दूसरे टीचरों से अलग अलग मिलते हैं या सब टीचरों की मीटिंग कर लेते हैं और उन्हें यह बता देते हैं कि टीका लगवाना माँ बाप की मरजी पर है और माँ बाप को पहलے से सूचना दे देना जरूरी है. जो माँ बाप इस बात पर ऐतराज करते हैं कि उनके बच्चों के बी० सी० जी० का टीका न लगाया जाये वे या तो आजमाइशी टीके के दिन अपने बच्चों को स्कूल ही नहीं भेजते या स्कूल के अधिकारियों को अपना ऐतराज लिखकर भेज देते हैं.

इस पर मैंने (श्री सी. राजगोपालाचारी) 12 जुलाई सन् 1955 के मद्रास के अखबार 'इन्डियन एक्सप्रेस' में अपना एक खत शायी कराया जिसमें लिखा है :—

“मेरे पास मद्रास के हेल्थ मिनिस्टर का पहली जुलाई का लिखा एक खत आया है जिससे मेरा यह खयाल पक्का हो गया कि जब बच्चों के माँ बाप की तरफ से कोई लिखा हुआ ऐतराज नहीं आता तो यह कर्ज कर लिया जाता है कि वह अपने बच्चे के टीका लगवाने के लिये रजामन्द हैं. असलियत यह है कि स्कूल मास्टर का ही बच्चों के जिस्म और उनकी आत्मा का पूरा मुहाफिज मान लिया जाता है. यह बात हद दर्जे कानून के खिलाफ है. सरकार के कानूनी अफसरों का कर्ज है कि इस बात को सोचें कि उन्हें सरकार को यह सलाह देनी चाहिये या नहीं कि वह इस बेजा कार्रवाई से बाज रहे.”

कोइम्बटूर की घटनाएं

जब लोगों का मालूम हुआ कि मैं इस मामले में दिल-चस्पी ले रहा हूँ तो लोगों ने कुछ घटनाएँ मुझे लिखकर भेजीं. उनमें से बहुत-सी मैं दैनिक अखबारों में शायी करा चुका हूँ ताकि सब उन्हें जान जायें. मैं कुछ घटनाएँ नीचे देता हूँ. इनमें पहली दस घटनाएँ सब कोइम्बटूर की ही हैं.

(1) श्री जी. एम. कृष्ण राजा चेटियर ने मुझे लिखा कि :—

“मेरी छै साल की एक लड़की वसंत लन्दन मिशन स्कूल कोइम्बटूर में पहली क्लास में पढ़ती थी. 18 नवम्बर सन् 1954 को उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया. उस वक्त तक वह बिलकुल तन्दुरुस्त थी और खूब बढ़ती थी. 3 दिसम्बर सन् 1954 को उसके दूसरा टीका चेचक का लगाया गया. इस दूसरे टीके के लगने के बाद मेरी लड़की अंधी हो गई. अधिकारियों ने बगैर मेरी रजामन्दी

के अधिकारियों की معرفت बच्चों के माँ बाप को उन नारिखों की पहलے से सूचना दी जाती है और ये लम दिया जा ता है के ठिके लउसी नहیں ه. اسکولن کے ادھیکاریوں سے کہا جا تا ه که وہ بچوں کے ماں باپ کی رضامندی حاصل کر لیں. جن سرکاری انسروں کو ٹیکے کا کام سپرد ہوتا ه وہ ہر ہیڈ ماسٹر اور اسکول کے دوسرے ٹیچروں سے الگ الگ ملتے هیں یا سب ٹیچروں کی میٹنگ کر لیتے هیں اور انھیں یہ بتا دیتے هیں کہ ٹیکہ لگوانا ماں باپ کی مرضی پر هے اور ماں باپ کو پہلے سے سوچنا دے دینا ضروری هے. جو ماں باپ اسی بات پر اعتراض کرتے هیں کہ اُن کے بچوں کے بی. سی. جی کا ٹیکہ نہ لگایا جائے وه یا تو آزمائشی ٹیکے کے دن اپنے بچوں کو اسکول ہی نہیں بھیجتے یا اسکول کے ادھیکاریوں کو اپنا اعتراض نہ کر بھیج دیتے هیں .

اس پر میں نے (شری سی. راجاگوپالاجاری نے) 12 جولائی سن 1955 کے مدراس کے اخبار 'انڈین ایکسپریس' میں اپنا ایک خط شائع کرایا جس میں لکھا هے :—

“میرے پاس مدراس کے ہیلتھ منسٹر کا پہلی جولائی کا لکھا ایک خط آیا هے جس سے میرا یہ خیال پکا ہو گیا کہ جب بچوں کے ماں باپ کی طرف سے کوئی لکھا ہوا اعتراض نہیں آتا تو یہ فرض کر لیا جاتا هے کہ وہ اپنے بچے کے ٹیکہ لگوانے کے لئے رضامند هیں. اصلیت یہ هے کہ اسکول ماسٹر کو ہی بچوں کے جسم اور اُن کی آتما کا پورا محافظ مان لیا جاتا هے. یہ بات حد درجے قانون کے خلاف هے. سرکار کے قانونی انسروں کا فرض هے کہ وہ اس بات کو سوچیں کہ انھیں سرکار کو یہ صلاح دینی چاہئے یا نہیں کہ وہ اس بھیجتا کاروائی سے باز رہے.”

کوامبیٹور کی گھنٹائیں

جب لوگوں کو معلوم ہوا کہ میں اس معاملے میں دلچسپی لے رہا ہوں تو لوگوں نے کچھ گھنٹائیں مجھے لکھر بھیجیں. ان میں سے بہت سی میں دینک اخباروں میں شائع کرا چکا ہوں تاکہ سب انھیں جان جائیں. میں کچھ گھنٹائیں نیچے دیتا ہوں. ان میں پہلی دس گھنٹائیں سب کوامبیٹور کی هیں .

(1) شری جی. ایم. کرشن راجاچٹنر نے مجھے لکھا کہ :—

“میری چھ سال کی ایک لڑکی وسنت لندن مشن اسکول کوامبیٹور میں پہلی کلاس میں پڑھتی تھی. 18 نومبر سن 1954 کو اُس کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا. اُس وقت تک وہ بالکل تندرست تھی اور خوب پڑھتی تھی. 3 دسمبر سن 1954 کو اُس کے دوسرا ٹیکہ، چیچک کا لگایا گیا. اس دوسرے ٹیکے کے اگلے کے بعد میری لڑکی اندھی ہو گئی. ادھیکاریوں نے بغیر میری رضامندی

کے کھول میں میرے بچے کے ٹیکے لگایے اور جلدی کی وجہ سے میرے بچے کی آؤں جاتی رہیں۔ مینے مٹکامی مٹونیسپل اٹیکا-ریوں کا ڈیان اس بات کی طرف دلاایا لیکین کچھ ن ہوا۔ مینے اس کھت کے ساتھ کومببڈر کے سینیڈری ہنسپیکٹر کی رپورٹ اور مٹیکال افسر کی رپورٹ دونوں آپکو بےز ردا ہوں۔ مٹیکے نہیں مالم کیم مینے کما کر۔ یہاں کے ڈاکٹر یہی کھتے ہیں کیم اب میرے بچے کی آؤں کا ٹیکہ لگاسکا ناممکن ہے۔“

(2) شری سی. ک. سندر راجن نے مٹیکے ایک کھت میں لکھا کیم :-

”میری ایک لڑکی سات سال کی اور ایک لڑکا دو سال کا دونوں کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکا لگایا گیا۔ تین دن کے باڈ دونوں کے سارے جسم کے اڈر فوڈے نیکل آئے۔ ہر طرف کا ہلاج کیا گیا لیکین تین مہینے تک ان دونوں کو بھوت سکت تکلیف رہی۔ انکے کھے ہنسکیشن لگایے گئے۔ تیسرے مہینے میں جانر ہ آچے۔ دونوں ابھی تک بہت کمزور چلے جاتے ہیں۔“

(3) شری اس. وردراج نے اپنے کھت میں لکھا کیم :-

”جب سے میرے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا ہے، میرے ہازو میں بہت سخت درد ہوتا ہے۔ کئی طرح کا علاج کیا پر ابھی فائڈ نہیں ہوا۔ میں بھس برس کی عمر کا جوان دسی ہوں۔ میرے ایک ماں ہے، دو بہائی ہیں اور دو بہنیں ہیں۔ کچھ خود کام کر کے سب کو پالنا پڑتا ہے۔“

(4) شری بیلا سوامی چٹکی لکھتے ہیں :-

”میری چھ برس کی لڑکی راکمینی کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکا لگایا گیا۔ اس پر اسکی آؤں جاتی رہیں۔ مٹکامی سرکاری اسپتال میں ہلاج کرایا گیا تو اسکی نڈر کچھ کچھ باپس آ گئے۔ لیکین ابھی تک بھوت کمزور ہے اور اسکا دیمایا بھی ابھی تک بیلکول ٹیک نہیں ہے۔“

(5) شری مٹی رانگمال لکھتی ہیں :-

”میری آٹارہ سال کی لڑکی سرسا کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکا لگایا گیا۔ اسی دن سے اسکے سر دھے اور گلے کی خرابی شرو ہو گئی۔ کچھ دینوں تک ایک مٹکامی ڈاکٹر سے ہلاج کرایا گیا۔ پھر اسی ڈاکٹر کے ہانے پر ہم اس لڑکی کو سرکاری اسپتال کے آنکے کے سرجن کے پاس لے گئے۔ آؤں کے سرجن نے کھا کیم اسکی آؤں میں کای خرابی نہیں ہے۔ ہم فیر پورانے ڈاکٹر کے پاس آ گئے۔ اسکے ہلاج سے کچھ بڈا-سا فایدا مالم ہوا۔ سر کا دھے اور کھ ہونا فیر بھی جاری رہا۔ ہم فیر ایک آؤں کے اسپتال میں گئے۔ وہاں اسکے ہانک لگا دی گئی۔ عینک لگانے سے سر درد اور بڑھ گئے۔ اس کے بعد ہم اسے پھر پہلے ہی والے سرکاری اسپتال میں لے گئے۔ یہاں وہ لڑکی مر گئی۔“

(6) شری ک. اس. گاراڈیا سٹی نے لکھا کیم :-

”میرے چھ سال کے لڑکے سیم سندریم کے بی۔ سی۔ جی۔

کے اسکول میں میرے بچے کے ٹیکے لگائے اور اسی کی جہ سے میرے بچے کی آؤں جاتی رہیں۔ میں نے مٹکامی مٹونیسپل اڈیکاریوں کا ڈیان اس بات کی طرف دلائی لیکن کچھ نہ ہوا۔ میں اس خط کے ساتھ راکمینی کے سینڈری انسپیکٹر کی رپورٹ اور مٹیکال انسپیکٹر کی رپورٹ دونوں آپ کو بھیج رہا ہوں۔ مجھے نہیں معلوم کیم میں اس معاملے میں اور کیا کروں۔ یہاں کے ڈاکٹر یہی کہتے ہیں کیم اب میرے بچے کی آؤں کا ٹیکہ لگاسکا ناممکن ہے۔“

(2) شری سی. ک. سندر راجن نے مجھے ایک خط میں لکھا کیم :-

”میری ایک لڑکی سات سال کی اور ایک لڑکا دو سال کا دونوں کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا۔ تین دن کے بعد دونوں کے سارے جسم کے اڈر پوڈے نیکل آئے۔ ہر طرح کا علاج کیا گیا لیکن تین مہینے تک ان دونوں کو بہت سخت تکلیف رہی۔ ان کے کئی انسپیکشن لگائے گئے۔ تیسرے مہینے میں جانر ہ آچے۔ دونوں ابھی تک بہت کمزور چلے جاتے ہیں۔“

(3) شری ایس. وردراج نے اپنے خط میں لکھا کیم :-

”جب سے میرے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا ہے، میرے ہازو میں بہت سخت درد ہوتا ہے۔ کئی طرح کا علاج کیا پر ابھی فائڈ نہیں ہوا۔ میں بھس برس کی عمر کا جوان دسی ہوں۔ میرے ایک ماں ہے، دو بہائی ہیں اور دو بہنیں ہیں۔ کچھ خود کام کر کے سب کو پالنا پڑتا ہے۔“

(4) شری بیلا سوامی چٹکی لکھتے ہیں :-

”میری چھ برس کی لڑکی راکمینی کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا۔ اس پر اس کی آؤں جاتی رہیں۔ مٹکامی سرکاری اسپتال میں علاج کرایا گیا تو اس کی نظر کچھ کچھ باپس آ گئی۔ لیکن وہ ابھی تک بہت کمزور ہے اور اس کا باغ بھی ابھی تک بالکل ٹیک نہیں ہے۔“

(5) شری مٹی رانگمال لکھتی ہیں :-

”میری آٹارہ سال کی لڑکی سرسا کے بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ لگایا گیا۔ اسی دن سے اس کے سر درد اور گلے کی خرابی شروع ہو گئی۔ کچھ دنوں تک ایک مٹکامی ڈاکٹر سے علاج کرایا گیا۔ پھر اسی ڈاکٹر کے ہانے پر ہم اس لڑکی کو سرکاری اسپتال کے آنکے کے سرجن کے پاس لے گئے۔ انکے کے سرجن نے کھا کیم اس کی آؤں میں کوئی خرابی نہیں ہے۔ ہم پھر پورانے ڈاکٹر کے پاس آئے۔ اس کے علاج سے کچھ نہ بڈا فائڈ معلوم ہوا۔ سر کا درد اور دھے ہونا پھر بھی جاری رہا۔ ہم پھر ایک آنکے کے اسپتال میں گئے۔ وہاں اس کے عینک لگا دی گئی۔ عینک لگانے سے سر درد اور بڑھ گئے۔ اس کے بعد ہم اسے پھر پہلے ہی والے سرکاری اسپتال میں لے گئے۔ یہاں وہ لڑکی مر گئی۔“

(6) شری ک. اس. گاراڈیا سٹی نے لکھا کیم :-

”میرے چھ سال کے لڑکے سیم سندریم کے بی۔ سی۔ جی۔

کا टीکا لگایا گیا۔ اس کے ہاتھ سے پیپ آنے لگی۔ تین مہینے تک اسے تکلیف رہی۔ اس کے بعد اس نے ایک مہینہ تک ایک ڈاکٹر سے دوا لی تب وہ اچھا ہو گیا۔ لیکن ابھی تک کمزور چل جاتا ہے۔“

(7) श्री वाई. आर. नारायण स्वामी ने लिखा है :—

“मेरे लड़के जैरथ के पिछली नवम्बर में बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था। उसी वक्त से पीप पड़ गई जो अभी तक अच्छी नहीं हुई। मैंने हर तरह की दवाएँ कीं लेकिन अभी तक वह अच्छा नहीं हुआ।”

(8) श्री टी. एन. रामाचारी ने लिखा है कि :—

“मेरी तीन साल की लड़की भालुमती के जब से बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था तब से ही उस जगह पर एक फोड़ा बन गया है जिससे पीप आती रहती है। वह फोड़ा अभी तक अच्छा नहीं हुआ। लड़की हर वक्त दर्द से चिल्लाती रहती है। हम उसे कई डॉक्टरों के पास ले गये, हेडकार्टर्स अस्पताल में भी ले गये और मदुराई अस्पताल में भी ले गये लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।”

(9) श्री सबन्ना गोंडन ने लिखा है :—

“मेरी दस साल की बच्ची पुनम्माल के बी० सी० जी० का टीका लगाया गया। उससे उसे बुखार आ गया। एक डॉक्टर से उसका इलाज कराया। वह एक हफ्ते के अन्दर मर गई।”

(10) श्री बी. कुप्पू स्वामी ने लिखा है कि :—

“मेरे भाई बी. राम कृष्णन के, जिसकी उम्र साढ़े चार साल की है, बी० सी० जी० का टीका लगाया गया। उस जगह पर उसके फोड़ा बन गया। हेडकार्टर्स अस्पताल में एक हफ्ते इलाज कराया गया। कोई फायदा नहीं हुआ। एक दूसरे डॉक्टर से इलाज कराया। उससे भी कोई फायदा नहीं हुआ। आज तक वह फोड़ा वैसा ही है और उससे पीप बहती रहती है।”

मैं लिख चुका हूँ कि ऊपर की दस की दस घटनाएँ सब एक ही जगह की यानी कोइमबटूर के शहर की हैं।

कुछ और खत

9 जुलाई सन् 1955 के हिन्दुस्तान टाइम्स में त्रुचि के डॉक्टर आर-सम्बशिवन एम. बी. बी. एस. का एक खत छपा है जिसमें लिखा है कि :—

“मेरे इलाज में आजकल एक चौदह बरस का लड़का है जो मेरा अपना पांता है और जिसकी तन्दुरुस्ती बिलकुल बरबाद हो गई है। सन् 1954 में उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया था। टीका लगाने के दस दिनों तक उसकी तन्दुरुस्ती अच्छल दर्जे की थी—बहुत अच्छा मजबूत जिस्म, खूब शक्ति और बीमारियों का नजदीक न फटकने देने वाला। उसे बहुत

का ठीक लगाना था। اس کے ہاتھ سے پیپ آنے لگی۔ تین مہینے تک اسے تکلیف رہی۔ اس کے بعد اس نے ایک مہینہ تک ایک ڈاکٹر سے دوا لی تب وہ اچھا ہو گیا۔ لیکن ابھی تک کمزور چل جاتا ہے۔“

(7) شری وائی. آر. نارائن سوامی نے لکھا ہے :—

“میرے لڑکے جے رتھ کے پچھلی نومبر میں بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا تھا۔ اسی وقت سے پیپ پڑ گئی جو ابھی تک اچھی نہیں ہوئی۔ میں نے ہر طرح کی دوائیں کیں لیکن ابھی تک وہ اچھا نہیں ہوا۔“

(8) شری ٹی. این. رامہ چاری نے لکھا ہے کہ :—

“میری تین سال کی لڑکی بھانومتی کے جب سے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا تھا تب سے ہی اس جگہ پر ایک پھوڑا بن گیا ہے جس سے پیپ آتی رہتی ہے۔ وہ پھوڑا ابھی تک اچھا نہیں ہوا۔ لڑکی ہر وقت درد سے چلاتی رہتی ہے۔ ہم اسے کئی ڈاکٹروں کے پاس لے گئے، ہیڈ کوارٹرس اسپتال میں بھی لے گئے اور مدورائی اسپتال میں بھی لے گئے لیکن کوئی فائدہ نہیں ہوا۔“

(9) شری سبنا گوندن نے لکھا ہے :—

“میری دس سال کی بچی پونممال کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا۔ اس سے اسے بخار آ گیا۔ ایک ڈاکٹر سے اس کا علاج کرایا۔ وہ ایک ہفتے کے اندر مر گئی۔“

(10) شری وی. کپپو سوامی نے لکھا ہے کہ :—

“میرے بھائی وی. رام. کرشنن کے، جس کی عمر ساڑھے چار سال کی ہے، بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا۔ اس جگہ پر اس کے پھوڑا بن گیا۔ ہیڈ کوارٹرس اسپتال میں ایک ہفتے علاج کرایا گیا۔ کوئی فائدہ نہیں ہوا۔ ایک دوسرے ڈاکٹر سے علاج کرایا۔ اس سے بھی کوئی فائدہ نہیں ہوا۔ آج تک وہ پھوڑا ویسا ہی ہے اور اس سے پیپ بہتی رہتی ہے۔“

میں تم چکا ہوں کہ اوپر کی دس کی دس کہانیاں سب ایک ہی جگہ کی یعنی کواہیمبٹور کے شہر کی ہیں۔

کچھ اور خط

9 جولائی سن 1955 کے ہندوستان ٹائمز میں تروچی کے ڈاکٹر آر. سب شون ایم. بی. بی. ایس. کا ایک خط چھپا ہے جس میں لکھا ہے کہ :—

“میرے علاج میں آجکل ایک چودہ برس کا لڑکا ہے جو میرا اپنا پوتا ہے اور جس کی تندرستی بالکل برباد ہو گئی ہے۔ سن 1954 میں اس کے بی. سی. جی. کا ٹیکہ لگایا گیا تھا۔ ٹیکہ لگانے کے وقت تک اس کی تندرستی بالکل اول درجے کی تھی—بہت اچھا مضبوط جسم، خوب شکتی اور بیماروں کو نزدیک لے پہنچانے دینے والا۔ اسے بہت

اچھا کھانا دیا جاتا تھا۔ اکلنے کے پہلے وہ خوب کھلکا تھا۔ ٹیکہ مکھ کے سیمے سے ہی اُس کا بدن پھپھندا شروع ہو گیا۔ لال لال چمکتیلیں بگڑ گئیں۔ تب سے اب تک اُس کے شریر کے الگ الگ بھاگوں پر چوڑے بڑے پوزے برابر نکلتے رہتے ہیں۔ یہ پوزے معمولی تھنگ سے اور معمولی سیمے کے اندر اچھے نہیں ہوتے حالانکہ علاج ٹھیک ٹھیک ہوتا رہتا ہے۔ اب کچھ پوزوں پر سے کھرنٹ اُتر گئے ہیں۔ لیکن کھرنٹوں کے نیچے بھی پیالے کی شکل کے پوزے بنے ہوئے ہیں جن میں چاروں طرف دالے سے بنتے رہتے ہیں۔ دوسری خاص بات ان پوزوں کی یہ ہے کہ جب کہ معمولی پوزوں میں سونے پوزے تک ہی رہتی ہے ان پوزوں میں پوزوں کے چاروں طرف کئی اٹیچ تک سوجن اور دم پیدا رہتا ہے۔ جو بھی ہو، میں اپنی سی پوری کوشش کر رہا ہوں کہ اُس بچے کو پھر سے تندرست کر دوں۔“

دھراڈون سے مہی ویجائن پرکاش لکھتے ہیں :—

”میں نے ’ہندوستان ٹائمز‘ میں آپ کے لکھ اور کھت اس ویسے کے پدے ہیں کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے کتنا نقصان ہونا ہے۔ اُنہیں پڑھ کر مجھے ساہس ہوا کہ آپ جیسے بڑے آدمی کو حدود اپنے بیٹے جے دیو کا حال لکھوں۔ جے دیو کی عمر تھوڑی سال کی ہے۔ ساہو رام ہاروسکتوری اسکول دھراڈون میں وہ آٹھویں کلاس میں پڑھتا تھا۔ لگ بھگ ایک سال ہوا اسکول میں اُس کے بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا۔ تب ہی سے اُس کی تندرستی گرنی شروع ہو گئی، یہاں تک کہ اُس کے پوپا پوزے خراب ہو گئے اور خون میں زہر پیدا ہو گیا۔ اُسے کھانسی اور دمہ ہوا۔ مجھے ڈر ہے کہ اُسے تپیدیک ہو گیا ہے۔ اُس کا وزن گھٹا جا رہا ہے۔ اب تک اُس کا بارہ پونڈ وزن گھٹ چکا ہے۔ میں اُسے چنڈی گڑھ علاج کے لئے لے گیا۔ وہاں وہ ایک مہینے سے اوپر ڈرنل تی بھاتیو آو۔ بی۔ ای۔ افسر آہ سی۔ ایس۔ چیرف میڈیکل انسپکٹر چنڈی گڑھ کے علاج میں رہا۔ ڈرنل تیوایا نی بھی یہی رائے ہے کہ اُسے تپیدیک ہے۔ میں بہت دنوں وہاں کے علاج کا خوچ برداشت نہیں کر سکتا تھا۔ اُس لئے میں اُسے دھراڈون لے گیا۔ وہاں اُسے کوئی فائیدہ بھی نہیں ہوا۔ یہاں اسکول کے ہیڈ ماسٹر کی صلاح سے اور ہیڈ ماسٹر کی چھٹی نے کہ میں اُسے دھراڈون کے سول سرجن کے پاس لے گیا۔ سول سرجن نے کوئی پروا نہیں کی اور نہ مہوے لڑکے کا ذاتی امتحان کیا۔ میں پھر ایک دوسرے آدمی کی معرفت سول سرجن کے پاس گیا۔ اُس بار اسپتال میں میں نے سولہ روپیہ اُن کی فیس بھی دے دی۔ اُنہوں نے مہوے لڑکے کو تھوڑا سا ریکم لیکر ایک نرسنگ لکھ لیا۔ اب میں سول سرجن ہی کی دوا دے رہا ہوں۔ سول سرجن نے بھی مجھ سے یہی کہا کہ ممکن ہے مہوے لڑکے کو یہ تکلیف بی۔ سی۔ جی کے کارن ہی ہوئی ہو۔“

اچھا کھانا دیا جاتا تھا۔ اسکول کے کھیل وہ خوب کھلکا تھا۔ ٹیکہ مکھ کے سیمے سے ہی اُس کا بدن پھپھندا شروع ہو گیا۔ لال لال چمکتیلیں بگڑ گئیں۔ تب سے اب تک اُس کے شریر کے الگ الگ بھاگوں پر چوڑے بڑے پوزے برابر نکلتے رہتے ہیں۔ یہ پوزے معمولی تھنگ سے اور معمولی سیمے کے اندر اچھے نہیں ہوتے حالانکہ علاج ٹھیک ٹھیک ہوتا رہتا ہے۔ اب کچھ پوزوں پر سے کھرنٹ اُتر گئے ہیں۔ لیکن کھرنٹوں کے نیچے بھی پیالے کی شکل کے پوزے بنے ہوئے ہیں جن میں چاروں طرف دالے سے بنتے رہتے ہیں۔ دوسری خاص بات ان پوزوں کی یہ ہے کہ جب کہ معمولی پوزوں میں سونے پوزے تک ہی رہتی ہے ان پوزوں میں پوزوں کے چاروں طرف کئی اٹیچ تک سوجن اور دم پیدا رہتا ہے۔ جو بھی ہو، میں اپنی سی پوری کوشش کر رہا ہوں کہ اُس بچے کو پھر سے تندرست کر دوں۔“

دھراڈون سے شری ویجائن پرکاش لکھتے ہیں :—

”میں نے ’ہندوستان ٹائمز‘ میں آپ کے لکھ اور کھت اس ویسے کے پدے ہیں کہ بی۔ سی۔ جی۔ سے کتنا نقصان ہونا ہے۔ اُنہیں پڑھ کر مجھے ساہس ہوا کہ آپ جیسے بڑے آدمی کو حدود اپنے بیٹے جے دیو کا حال لکھوں۔ جے دیو کی عمر تھوڑی سال کی ہے۔ ساہو رام ہاروسکتوری اسکول دھراڈون میں وہ آٹھویں کلاس میں پڑھتا تھا۔ لگ بھگ ایک سال ہوا اسکول میں اُس کے بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگایا گیا۔ تب ہی سے اُس کی تندرستی گرنی شروع ہو گئی، یہاں تک کہ اُس کے پوپا پوزے خراب ہو گئے اور خون میں زہر پیدا ہو گیا۔ اُسے کھانسی اور دمہ ہوا۔ مجھے ڈر ہے کہ اُسے تپیدیک ہو گیا ہے۔ اُس کا وزن گھٹا جا رہا ہے۔ اب تک اُس کا بارہ پونڈ وزن گھٹ چکا ہے۔ میں اُسے چنڈی گڑھ علاج کے لئے لے گیا۔ وہاں وہ ایک مہینے سے اوپر ڈرنل تی بھاتیو آو۔ بی۔ ای۔ افسر آہ سی۔ ایس۔ چیرف میڈیکل انسپکٹر چنڈی گڑھ کے علاج میں رہا۔ ڈرنل تیوایا نی بھی یہی رائے ہے کہ اُسے تپیدیک ہے۔ میں بہت دنوں وہاں کے علاج کا خوچ برداشت نہیں کر سکتا تھا۔ اُس لئے میں اُسے دھراڈون لے گیا۔ وہاں اُسے کوئی فائیدہ بھی نہیں ہوا۔ یہاں اسکول کے ہیڈ ماسٹر کی صلاح سے اور ہیڈ ماسٹر کی چھٹی نے کہ میں اُسے دھراڈون کے سول سرجن کے پاس لے گیا۔ سول سرجن نے کوئی پروا نہیں کی اور نہ مہوے لڑکے کا ذاتی امتحان کیا۔ میں پھر ایک دوسرے آدمی کی معرفت سول سرجن کے پاس گیا۔ اُس بار اسپتال میں میں نے سولہ روپیہ اُن کی فیس بھی دے دی۔ اُنہوں نے مہوے لڑکے کو تھوڑا سا ریکم لیکر ایک نرسنگ لکھ لیا۔ اب میں سول سرجن ہی کی دوا دے رہا ہوں۔ سول سرجن نے بھی مجھ سے یہی کہا کہ ممکن ہے مہوے لڑکے کو یہ تکلیف بی۔ سی۔ جی کے کارن ہی ہوئی ہو۔“

ایک بدقسمت خلیا افسر کا خاتمہ

اب میں نیچے ایک ایسے آدمی کا خط دے رہا ہوں جس نے خط میں اپنا نام اور پتا لکھ دیا ہے اور جو سرکار کے اذیت خلیا-افسر کے پد پر ہے۔ اس نے مجھے لکھا ہے کہ:—

”آپ نے یہ بہت اچھا کیا کہ گھبرنا اور بھاری کے ساتھ نپٹنے کے بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے کے اس طرح اندھا دھند سب کے لگائے جانے کا وردہ کیا اور اُسے آپ برا کہہ رہے ہیں۔ میں ایک باپ ہوں جو اسی بی۔ سی۔ جی کی بدولت اپنا گیارہ برس کا سندھ بیٹا ہو چکا ہوں۔ میرا بیٹا سن 1951 میں یہاں ایک پرائمری اسکول میں پڑھتا تھا۔ بی۔ سی۔ جی کے حامیوں اور پرچارکوں نے اُس اسکول میں ٹیکہ لگائے جانے کا پرہیز کیا۔ میرا بیٹا یہ کہہ کر اسکول کے کھانڈ سے بھاگ آیا کہ ”میں ہذا اپنے باپ کی اجازت کے یہ ٹیکہ نہیں لکوا سکتا“ نہیں تو مہرے باپ مجھے مارینگے۔ اُسے زبردستی پکڑ کر کھینچ کر اندر لے جا یا گیا اور ٹیکہ لگا دیا گیا۔ اُس کے شاید خصرہ نکلنے والی تھی۔ چونکہ یہ پانچویں دن اُس کے خصرہ نکل آئی۔ اُسے زور کا بخار آ گیا۔ اُس کا ٹمپریچر ایک سو نو تک پہنچ گیا۔ اسے مہلنگائیٹمز اور نیمنیہ بھی ساتھ ساتھ ہو گئے۔ دوسرے دن یعنی 4 اپریل سن 1951 کو وہ مر گیا۔ اُس کی موت مہری پتنی کی موت کے ٹھیک ایک سال بعد ہوئی۔ میری پتنی کی موت دوسری بیماری کے کارن ہوئی تھی۔ اس طرح مجھے ہر دھری مصیبت آئی۔ بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگنے سے پہلے میرا لڑکا خوب تندرست تھا اور کھیلنا تھا۔ لیکن اور باپوں کو چھوڑ دیجئے، جسے یہ کہ ٹیکہ لگائے سے پہلے مانتا پتا سے اجازت لے لینا ضروری ہے اس ٹیکے کے لگائے میں یہ بھی نہیں دیکھا جاتا کہ بچوں کو کوئی لگنی بیماری تو ہونے والی نہیں ہے۔ میں چاہتا ہوں اور بھوکاں سے پرارتھا کرتا ہوں کہ آپ کو بڑی عمر دے اور تندرست رکھے تاکہ آپ بے گناہ بچوں کے اوپر اُن غیر ضروری اور اندھا دھند ٹیکوں کے خلاف لڑ سکیں۔“

میں اس آدمی کا نام اس لئے نہیں دے رہا ہوں کہ وہ سرکاری نوکر ہے اور ایسا نہ ہو کہ نام دینے سے اس اُپاکے باپ پر ایک تیسری مصیبت آئے۔

کچھ اور گھٹنائیں

نیچے کی گھٹنائیں 12 جولائی سن 1955 کے مدراس کے اخبار ”انڈین ایکسپریس“ میں چھپ چکی ہیں:—

1—بیلگاپٹ کے شری ان. کھننہ سوامی پیلے کے 18 سال کے بٹے بال سوبرمینین کے اسکول میں بی۔ سی۔ جی

اب میں نیچے ایک ایسے آدمی کا خط دے رہا ہوں جس نے خط میں اپنا نام اور پتا لکھ دیا ہے اور جو سرکار کے اذیت خلیا-افسر کے پد پر ہے۔ اس نے مجھے لکھا ہے کہ:—

”آپ نے یہ بہت اچھا کیا کہ گھبرنا اور بھاری کے ساتھ نپٹنے کے بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے کے اس طرح اندھا دھند سب کے لگائے جانے کا وردہ کیا اور اُسے آپ برا کہہ رہے ہیں۔ میں ایک باپ ہوں جو اسی بی۔ سی۔ جی کی بدولت اپنا گیارہ برس کا سندھ بیٹا ہو چکا ہوں۔ میرا بیٹا سن 1951 میں یہاں ایک پرائمری اسکول میں پڑھتا تھا۔ بی۔ سی۔ جی کے حامیوں اور پرچارکوں نے اُس اسکول میں ٹیکہ لگائے جانے کا پرہیز کیا۔ میرا بیٹا یہ کہہ کر اسکول کے کھانڈ سے بھاگ آیا کہ ”میں ہذا اپنے باپ کی اجازت کے یہ ٹیکہ نہیں لکوا سکتا“ نہیں تو مہرے باپ مجھے مارینگے۔ اُسے زبردستی پکڑ کر کھینچ کر اندر لے جا یا گیا اور ٹیکہ لگا دیا گیا۔ اُس کے شاید خصرہ نکلنے والی تھی۔ چونکہ یہ پانچویں دن اُس کے خصرہ نکل آئی۔ اُسے زور کا بخار آ گیا۔ اُس کا ٹمپریچر ایک سو نو تک پہنچ گیا۔ اسے مہلنگائیٹمز اور نیمنیہ بھی ساتھ ساتھ ہو گئے۔ دوسرے دن یعنی 4 اپریل سن 1951 کو وہ مر گیا۔ اُس کی موت مہری پتنی کی موت کے ٹھیک ایک سال بعد ہوئی۔ میری پتنی کی موت دوسری بیماری کے کارن ہوئی تھی۔ اس طرح مجھے ہر دھری مصیبت آئی۔ بی۔ سی۔ جی کا ٹیکہ لگنے سے پہلے میرا لڑکا خوب تندرست تھا اور کھیلنا تھا۔ لیکن اور باپوں کو چھوڑ دیجئے، جسے یہ کہ ٹیکہ لگائے سے پہلے مانتا پتا سے اجازت لے لینا ضروری ہے اس ٹیکے کے لگائے میں یہ بھی نہیں دیکھا جاتا کہ بچوں کو کوئی لگنی بیماری تو ہونے والی نہیں ہے۔ میں چاہتا ہوں اور بھوکاں سے پرارتھا کرتا ہوں کہ آپ کو بڑی عمر دے اور تندرست رکھے تاکہ آپ بے گناہ بچوں کے اوپر اُن غیر ضروری اور اندھا دھند ٹیکوں کے خلاف لڑ سکیں۔“

میں اس آدمی کا نام اس لئے نہیں دے رہا ہوں کہ وہ سرکاری نوکر ہے اور ایسا نہ ہو کہ نام دینے سے اس اُپاکے باپ پر ایک تیسری مصیبت آئے۔

کچھ اور گھٹنائیں

نیچے کی گھٹنائیں 12 جولائی سن 1955 کے مدراس کے اخبار ”انڈین ایکسپریس“ میں چھپ چکی ہیں:—

چنگل پٹ کے شری این کرشن سوامی پیلے کے 18 سال کے بیٹے بال سوبرمینین کے اسکول میں بی۔ سی۔ جی

का टीका लगाया गया। यह पिछले मार्च-अप्रैल की बात है। बाल सुबरमनियन चौथी क्लास में पढ़ता था तब ही से उसकी तन्दुरुस्ती गिरती जा रही है। अब वह अबसर कैं करता रहता है, सर में सख्त दर्द रहता है, आँख की रोशनी बहुत खराब हो गई है, चक्कर आते रहते हैं, कभी-कभी बेहोश हो जाता है, दिमाग झुझ-झुझ खराब हो चला है, कभी-कभी बोलना बन्द हो जाता है, बयान कम होता जा रहा है, वह अपने मां बाप का इकलौता लड़का है, मां बाप बहुत परेशान हैं, 3 जुलाई से उसे इलाज के लिये सरकारी अस्पताल में दाखिल कर दिया गया है।

2—माइकल एन्थनी अब ओथ कैम्प पूना के फौजी अस्पताल में है, उसे बी० सी० जी० का टीका लगाया गया, तपेदिक हो गया, नौकरी से जाता रहा और अब अस्पताल में बहुत बीमार है, जब उसके टीका लगाया गया तब वह बंगलौर के एक फौजी दफ्तर में काम कर रहा था, इससे पहले वह बिलकुल तन्दुरुस्त था, उसके घर में कभी किसी को तपेदिक नहीं हुआ था, उसने मुझे (श्री राजागोपालाचारी को) एक बहुत दुख और गुस्से से भरा हुआ खत लिखा है कि यह विदेशी “दुनिया भर के तन्दुरुस्ती के माहिर” बन कर आते हैं, उनके सामने ही उसके टीका लगाया गया था।

3—श्री एम. एस. फकीर कोइमबदूर के एक बीड़ी के कारखाने में मजदूरी करता है, उसके एक ढाई बरस के बच्चे के 18 दिसम्बर सन् 1954 को बी० सी० जी० का टीका लगाया गया, आँख की रोशनी खराब हो गई और तन्दुरुस्ती गिरती गई

लोदी कालोनी दिल्ली से श्री प्रीतसिंह ने 20 जुलाई सन् 1955 को मुझे यह खत लिखा :—

“मैं नीचे आपको इस बात का पूरा हाल लिख रहा हूँ कि मेरे बेटे पर बी० सी० जी० के टीके का किस तरह बुरा असर पड़ा, मेरे लड़के का नाम उदयवीर सिंह है, उसकी उम्र साढ़े नौ साल की थी वह उस वक्त बहुत तन्दुरुस्त था, अगस्त सन् 1953 में स्कूल में उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया, हमारी बदकिस्मती से अगले दिन ही उसके एक तरह कि गिल्टियाँ निकल आईं और गदन पर सूजन आ गई, मैंने एक होम्योपैथिक डाक्टर को दिखाया, उसके इलाज से बच्चे को बहुत आराम मिला, पर ठीक एक साल के बाद वही चीज फिर और ज्यादा जोर के साथ निकल आई, अब मेरे बच्चे की हालत खतरनाक हो गई, 8 सितम्बर सन् 1954 को मैंने नई दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में उसका एक्सरे कराया, एक्सरे से मालूम हुआ कि बायें फेफड़े में तपेदिक हो गया है और फेफड़ों के बीच की गिल्टियाँ बढ़ गई हैं, लड़के को नई दिल्ली के इरविन

का ठिके लगाया गया, ये पच्चेस मार्च अप्रैल की बात है, बाल सुबरमनियन चौथी क्लास में पढ़ता था तब ही से उसकी तन्दुरुस्ती गिरती जा रही है, अब वह अक्षर्य करता रहता है, सर में सख्त दर्द रहता है, आँख की रोशनी बहुत खराब हो गई है, चक्कर आते रहते हैं, कभी-कभी बेहोश हो जाता है, दिमाग झुझ-झुझ खराब हो चला है, कभी-कभी बोलना बन्द हो जाता है, बयान कम होता जा रहा है, वह अपने मां बाप का इकलौता लड़का है, मां बाप बहुत परेशान हैं, 3 जुलाई से उसे इलाज के लिये सरकारी अस्पताल में दाखिल कर दिया गया है।

2—मानकल इन्तनी अब ओन्डे कैम्प पूना के नोजी अस्पताल में है, उसे बी० सी० जी० का टीका लगाया गया, तपेदिक हो गया, नौकरी से जाता रहा और अब अस्पताल में बहुत बीमार है, जब उसके टीका लगाया गया तब वह बंगलौर के एक फौजी दफ्तर में काम कर रहा था, इससे पहले वह बिलकुल तन्दुरुस्त था, उसके घर में कभी किसी को तपेदिक नहीं हुआ था, उसने मुझे (श्री राजागोपालाचारी को) एक बहुत दुख और गुस्से से भरा हुआ खत लिखा है कि यह विदेशी “दुनिया भर के तन्दुरुस्ती के माहिर” बन कर आते हैं, उनके सामने ही उसके टीका लगाया गया था।

3—श्री एम. एस. फकीर कोइमबदूर के एक बीड़ी के कारखाने में मजदूरी करता है, उसके एक ढाई बरस के बच्चे के 18 दिसम्बर सन् 1954 को बी० सी० जी० का टीका लगाया गया, आँख की रोशनी खराब हो गई और तन्दुरुस्ती गिरती गई, लोदी कालोनी दिल्ली से श्री प्रीतसिंह ने 20 जुलाई सन् 1955 को मुझे यह खत लिखा :—

“मैं नीचे आपको इस बात का पूरा हाल लिख रहा हूँ कि मेरे बेटे पर बी० सी० जी० के टीके का किस तरह बुरा असर पड़ा, मेरे लड़के का नाम उदयवीर सिंह है, उसकी उम्र साढ़े नौ साल की थी वह उस वक्त बहुत तन्दुरुस्त था, अगस्त सन् 1953 में स्कूल में उसके बी० सी० जी० का टीका लगाया गया, हमारी बदकिस्मती से अगले दिन ही उसके एक तरह कि गिल्टियाँ निकल आईं और गदन पर सूजन आ गई, मैंने एक होम्योपैथिक डाक्टर को दिखाया, उसके इलाज से बच्चे को बहुत आराम मिला, पर ठीक एक साल के बाद वही चीज फिर और ज्यादा जोर के साथ निकल आई, अब मेरे बच्चे की हालत खतरनाक हो गई, 8 सितम्बर सन् 1954 को मैंने नई दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में उसका एक्सरे कराया, एक्सरे से मालूम हुआ कि बायें फेफड़े में तपेदिक हो गया है और फेफड़ों के बीच की गिल्टियाँ बढ़ गई हैं, लड़के को नई दिल्ली के इरविन

ہسپتال میں بے جا گیا۔ وہاں پوری طرح امتحان ہوا۔ 18 ستمبر سن 1954 کو انہوں نے کہا کہ گردن میں تپدق کی گتلیاں ہیں۔ انہوں نے طاقت کی دوائیں اور ویتھین کھانے کی صلاح دی اور آئرا راپولٹ کرنوں کا علاج بتایا۔ یہ سب علاج ہو چکے کے بعد بھی ابھی تک وہ پوری طرح ٹھیک نہیں ہوا۔ ہمارے گھر میں آج تک کوئی کسی کو تپدق نہیں ہوا تھا۔ اس معاملے میں ہمیں کافی پریشانی ہوئی اور زیر بار ہونا پڑا۔ یہ سب بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے کی بدولت۔ کئی برس سے یہ ٹیکے اتنے آندھا دھندلی سے لگایا جا رہا ہے کہ اثر اس سے جو فائدہ سوچا جاتا ہے اس کی نسبت نقصان زیادہ ہوتا ہے۔ سرکار کو سمجھانے کی ضرورت ہے۔ اس سب کی روک تھام ہونی چاہئے۔“

ہمارے بچوں پر خतरناک تاجر با

یہ بڑی سی کتاب ابھی انگریزی میں چھپ ہی رہی تھی کہ مڈن پبلی کے یونیٹن میران ڈیوہرکولوسس ہسپتال کے سوپرنٹنڈنٹ ڈاکٹر فریڈمڈ مولر نے اپنے سینیٹوریئم کے کام کی چرچا کرتے ہوئے یہ بیان دیا کہ:—“بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکا کھانے کے بعد بچوں کو تپدق کی بیماری سے بچا سکتا ہے، اس پر جب تک ابھی کافی وقت نہ نکل جائے اور نتیجہ تو نہ دیکھ لیں تب تک ابھی ہم کچھ نہیں کہہ سکتے۔“ یہ ایک بہت ہی تجربے کا اور ذمہ دار ڈاکٹر کا بیان ہے، جس میں شہدوں کو تول تول کر رکھا گیا ہے۔ ہمارے لئے یہ کافی اترہ رکھتا ہے۔ یہ بات ہانکل پکی ہے کہ ہندوستان میں بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے لگانے کی جو یہ تحریک چل رہی ہے یہ کسی بیماری کو روکنے کا کوئی آزمایا ہوا طریقہ نہیں ہے، یہ ایک بڑے پیمانے پر ہمارے بچوں پر ایک خطرناک تجربہ کیا جا رہا ہے، جسے کسی طرح جائز نہیں کہا جا سکتا۔

ہمارے بچوں پر خطرناک تجربہ

یہ چھوٹی سی کتاب ابھی انگریزی میں چھپ ہی رہی تھی کہ مڈن پبلی کے یونیٹن میران ڈیوہرکولوسس ہسپتال کے سوپرنٹنڈنٹ ڈاکٹر فریڈ مولر نے اپنے سینیٹوریئم کے کام کی چرچا کرتے ہوئے یہ بیان دیا کہ:—“بی۔ سی۔ جی۔ کا ٹیکہ انہیں تپدق کی بیماری سے بچا سکتا ہے، اس پر جب تک ابھی کافی وقت نہ نکل جائے اور نتیجہ تو نہ دیکھ لیں تب تک ابھی ہم کچھ نہیں کہہ سکتے۔“ یہ ایک بہت ہی تجربے کا اور ذمہ دار ڈاکٹر کا بیان ہے، جس میں شہدوں کو تول تول کر رکھا گیا ہے۔ ہمارے لئے یہ کافی اترہ رکھتا ہے۔ یہ بات ہانکل پکی ہے کہ ہندوستان میں بی۔ سی۔ جی کے ٹیکے لگانے کی جو یہ تحریک چل رہی ہے یہ کسی بیماری کو روکنے کا کوئی آزمایا ہوا طریقہ نہیں ہے، یہ ایک بڑے پیمانے پر ہمارے بچوں پر ایک خطرناک تجربہ کیا جا رہا ہے، جسے کسی طرح جائز نہیں کہا جا سکتا۔

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

محمد صاحب کی کچھ حدیثیں

کिसی نے محمد صاحب سے پوچھا: ”اے اللہ کے رسول! ایمان کیا ہے؟“ پیغمبر نے جواب دیا: ”جب کسی نیک کام کرنے سے تمہیں خوشی ہو، اور برا کام کرنے سے تمہیں دکھ ہو تب سمجھو کہ تم ’مومن‘ یعنی ایمان والے ہو۔“ اُس آدمی نے پھر پوچھا: ”اور گناہ کیا ہے؟“ انہوں نے جواب دیا: ”جب کوئی چیز اندر ہی اندر تمہیں کوجئی ہو تو اُسے مت کرو۔“

—ابو امامہ، احمد۔

محمد صاحب نے کہا: ”سچ مچ اُس آدمی کا کوئی ایمان نہیں جو کسی کے ساتھ رشوائی کھات کرنا ہے، اور اُس کا کوئی دین نہیں جو اپنے وعدوں کو پورا نہیں کرتا۔“

—انس، بیہقی۔

میں نے پوچھا: ”اسلام کیا ہے؟“ پیغمبر نے جواب دیا: ”زبان کو پاک رکھنا اور مہمان کی स्वातिर کرنا۔“

میں نے پوچھا: ”ایمان کیا ہے؟“ پیغمبر نے جواب دیا: ”سچ کرنا اور دوسروں کے ساتھ بھلائی کرنا۔“

—امرو، احمد۔

محمد صاحب نے کہا: ”دوسروں کو دکھ پہونچانے سے اپنے کو روکنا ایمان ہے؛ مومن کو چاہئے کہ کسی کو دکھ نہ پہونچائے۔“

—ابو ہریرہ، ابو داؤد۔

محمد صاحب نے کہا: ”جو آدمی جھوٹ بولنا نہیں چھوڑتا اور جو اسی طرح کے دوسرے برے کاموں سے باز نہیں آتا اُس کے کھانا اور پانی چھوڑ کر روزہ رکھنے کی اللہ کو کوئی ضرورت نہیں ہے۔“

—ابو ہریرہ، بخاری۔

محمد صاحب نے کہا: ”تم سے پہلے جو قومیں ہوئی ہیں وہ اس لئے برباد ہوئیں کہ جب اُن میں سے کسی بڑے گھرانے کا آدمی چوری کرتا تھا تو وہ اُسے سزا نہیں دیتے تھے، اور جب اُن میں سے کوئی کمزور یا غریب آدمی چوری کرتا تھا تو اُسے وہ سزا دیتے تھے۔ اللہ کی

کرم ! چوری کر لے والی چائے محمد کی بیٹی ناطقہ ہی کہیں نہ ہو۔ میں اُس کے ہاتھ کاٹ لوں گا۔“

—آیسا، بخاری: مسلم: ابوداؤد: ترمذی: نسائی: نساہ۔

محمد صاحب نے کہا: —”تم میں سے کسی کو اتنا بیوقوف نہیں ہونا چاہئے کہ وہ کہے کہ —”میں لوگوں کے ساتھ رہوں گا، اگر لوگ میرے ساتھ بھلائی کریں تو میں اُن کے ساتھ بھلائی کروں گا، اور وہ اگر میرے ساتھ برائی کریں تو میں اُن کے ساتھ برائی کروں گا۔“ اِس کے خلاف تمہیں اِس طرح سمجھ سے کام لینا چاہئے کہ اگر لوگ تمہارے ساتھ نیکی کریں تو تم بھی اُن کے ساتھ نیکی کرو اور وہ اگر تمہارے ساتھ برائی کریں تو تم اُن کے ساتھ برائی کر لے سے بچو۔“

—حذیفہ، ترمذی۔

محمد صاحب نے کہا: —”سچ مچ کسی بھی پیشوا یا لیڈر کے لیے یہ زیادہ اچھا ہے کہ وہ غلطی سے کسی کو معاف کر دے بجائے اِس کے کہ وہ غلطی سے کسی کو سزا دے۔“

—آیسا، ترمذی: نسائی: نساہ۔

محمد صاحب نے کہا: —”موسىٰ نے اللہ سے پوچھا: —”اے میرے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا: —”اے اللہ! تیری نذر میں تیرے بندوں میں سب سے زیادہ عزت کے قابل کون ہے؟“ اللہ نے جواب دیا: —”وہ جس میں بدلہ لینے کی شکی ہے اور پھر بھی وہ معاف کر دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا:—”سب مظلوم (پراپی) اللہ کا ہیں اور اس کلمہ میں اللہ کو سب سے زیادہ پیارا وہ ہے اللہ کے اس کلمہ کے ساتھ پہلائی کرتا ہے۔“

—انس اور عبداللہ، بیہقی۔

محمد صاحب نے کہا:—”اے ابوذر! کسی بھی نیک کام کو حیکارہ کی نیگاہ سے نہ دیکھا جائے تو اس کی نیگاہ سے قبول اس کو ہونا ہی کیوں نہ ہو۔“

—ابوذر، بخاری، مسلم، ترمذی۔

محمد صاحب نے کہا:—”بھوکوں کو خانا خیلانا، بیماروں کو دیکھنے جاننا اور غلاموں اور قیدیوں کو آزاد کرو۔“

—ابو موسیٰ، بخاری، ابوداؤد۔

محمد صاحب نے کہا:—”کیامت کے دن اللہ کہے گا: اے آدمی! میں ہمارا اور تو مجھے دیکھنے نہیں آیا، اے آدمی! تو تو ساری دنیا کا مالک ہے، میں تجھے دیکھنے کیسے آسکتا تھا؟“ اللہ کہے گا: کیا تجھے یہ معلوم نہیں کہ میرے بندوں میں سے فلاں بندہ بیمار تھا اور تو اسے دیکھنے نہیں گیا؟ کیا تو یہ نہیں جانتا تھا کہ اگر تو اسے دیکھنے جاتا بلاتک تجھے اس کے پاس پانا؟“ اللہ پھر کہے گا: اے آدمی! میں نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تو نے مجھے نا نہیں دیا تھا، اے آدمی! جواب دے گا: اے میرے اللہ! تو ساری دنیا کا مالک ہے میں تجھے کھانا کیسے دے سکتا؟“ اللہ کہے گا: کیا تو یہ نہیں جانتا تھا کہ میرے فلاں بندے نے تجھ سے کھانا مانگا تھا اور تو نے اسے کھانا نہیں دیا تھا؟“ تو یہ نہیں جانتا تھا کہ اگر تو اسے کھانا دیتا تو بلاشک وہ نا مجھے پہنچتا؟“ اللہ پھر کہے گا: اے آدمی! میں نے تجھ سے پانی مانگا تھا اور تو نے مجھے پانی نہیں دیا، اے آدمی! جواب دے گا: اے میرے اللہ تو تو ساری دنیا کا مالک ہے میں تجھے پانی کیسے دے سکتا تھا؟“ اللہ کہے گا: میرے فلاں بندے نے تجھ سے پانی مانگا تھا اور تو نے اسے پانی نہیں دیا، بلاتک اگر تو اسے پانی پہنچے کو دیتا تو پانی مجھے پہنچتا۔“

—ابو ہریرہ، مسلم۔

محمد صاحب نے کہا:—”نیک بیچارہ ہی اچھی عبادت کرتا ہے۔“

—ابو ہریرہ، ابوداؤد: احمد۔

مورماد ساہب نے کہا:—“اگر مومن کو یہ معلوم ہو جائے کہ اللہ اُس کے گناہوں کی کیا سزا دے گا تو کوئی مومن جنت کی آشا نہ رکھگا اور اگر کافر کو یہ معلوم ہو جائے کہ اللہ کتنا رحیم ہے تو کوئی کافر جنت سے نا امید نہیں ہوگا۔“

—ابو ہریرہؓ بخاری: مسلم۔

—انوارک مجیب رضوی

—انوارک مجیب رضوی

—انوارک مجیب رضوی

آوارا شاعر !

آوارا شاعر !

شری علی اکبر امیری

شری علی اکبر امیری

بابو صاحبان! پرنام! ارے! آپ لوگ خاموش کیوں ہیں؟ پرنام کا اترتہ نہیں جانتے؟ جس زبان کو ہماری حکومت نے سرکاری زبان بنایا ہے، اُسے جانتا تو ہر بھارتی کا فرض ہے۔ خیر نہ جانو سہی، لاکھوں میں آپ دونوں کے نمبر شامل ہو گئے تو کیا ہو گیا؟

بابو صاحبان! پرنام! ارے! آپ لوگ خاموش کیوں ہیں؟ پرنام کا اترتہ نہیں جانتے؟ جس زبان کو ہماری حکومت نے سرکاری زبان بنایا ہے، اُسے جانتا تو ہر بھارتی کا فرض ہے۔ خیر نہ جانو سہی، لاکھوں میں آپ دونوں کے نمبر شامل ہو گئے تو کیا ہو گیا؟

مجبے دیکھو، انگریزی، بنگلا، مراٹھی، گجراتی، سندھی، اردو، فارسی، ہندی یہ سبھی زبانیں جانتا ہوں۔ مگر کسی بھی زبان کا ”ڈپلوما ہولڈر“ (Diploma-holder) نہیں ہوں۔ ویسے ہی ایک ایک کر کے سیکھ لی تھی۔ انتہا یہ کہ اردو کا شاعر بھی ہوں۔ ”جوش“ ملیح آبادی نہیں، ”مخدوم“ محی الدین بھی نہیں اور ”الطاف“ مشہدی تو ہوں ہی نہیں بلکہ ایک معمولی شاعر ہوں۔ صنعتی کاری بھی جانتا ہوں۔ ان تمام فنون کے جاننے کے باوجود بھی آج صبح سے بھوکا ہوں۔ ارے! آپ لوگ چونک کیوں گئے؟ اس لئے کہ میں آپ سے کچھ مانگوں گا؟ اطمینان رکھئے صاحبان، میں آپ سے کچھ بھی نہیں مانگوں گا۔

مجبے دیکھو، انگریزی، بنگلا، مراٹھی، گجراتی، سندھی، اردو، فارسی، ہندی یہ سبھی زبانیں جانتا ہوں۔ مگر کسی بھی زبان کا ”ڈپلوما ہولڈر“ (Diploma-holder) نہیں ہوں۔ ویسے ہی ایک ایک کر کے سیکھ لی تھی۔ انتہا یہ کہ اردو کا شاعر بھی ہوں۔ ”جوش“ ملیح آبادی نہیں، ”مخدوم“ محی الدین بھی نہیں اور ”الطاف“ مشہدی تو ہوں ہی نہیں بلکہ ایک معمولی شاعر ہوں۔ صنعتی کاری بھی جانتا ہوں۔ ان تمام فنون کے جاننے کے باوجود بھی آج صبح سے بھوکا ہوں۔ ارے! آپ لوگ چونک کیوں گئے؟ اس لئے کہ میں آپ سے کچھ مانگوں گا؟ اطمینان رکھئے صاحبان، میں آپ سے کچھ بھی نہیں مانگوں گا۔

آج اتوار ہے۔ شہر کی لگ بھگ سبھی درکانیں بند ہیں۔ چھٹی جو ہے نا؟ اور میں نے بھی اپنے پوٹ کو چھٹی دے رکھی ہے۔ آپ لوگ اس پارک میں شاید تعریض کے لئے آئے ہیں۔ میں بھی اسی غرض سے آیا ہوں۔ آپ لوگوں کو اس جگہ بیٹھے دیکھ کر خیال ہوا۔ چلو کچھ دیر باتیں سے دل بہلائیں۔ جان پہچان نہیں تو کیا ہوا؟ ایسا تعارف آپ خود کرالیں گے۔ یعنی کہ ادیبوں کی زبان میں اپنی قلبی آپ خود بجا لینگے۔ ارے! آپ لوگ ہنسے ہیں۔ ہنسنے صاحب! خوب ہنسنے۔ مجھے اُس کی پروا نہیں۔ شاید

آج اتوار ہے۔ شہر کی لگ بھگ سبھی درکانیں بند ہیں۔ چھٹی جو ہے نا؟ اور میں نے بھی اپنے پوٹ کو چھٹی دے رکھی ہے۔ آپ لوگ اس پارک میں شاید تعریض کے لئے آئے ہیں۔ میں بھی اسی غرض سے آیا ہوں۔ آپ لوگوں کو اس جگہ بیٹھے دیکھ کر خیال ہوا۔ چلو کچھ دیر باتیں سے دل بہلائیں۔ جان پہچان نہیں تو کیا ہوا؟ ایسا تعارف آپ خود کرالیں گے۔ یعنی کہ ادیبوں کی زبان میں اپنی قلبی آپ خود بجا لینگے۔ ارے! آپ لوگ ہنسے ہیں۔ ہنسنے صاحب! خوب ہنسنے۔ مجھے اُس کی پروا نہیں۔ شاید

آپ لوگ مجھے نیم پاگل سمجھتے ہیں۔ پورا پاگل ہی سمجھتے! آخر شاعر جو ہے؟

ہوں! میں اپنا تعارف کرانا تو بھول ہی گیا۔ یوں ہی اینٹی بینڈی بکتا جا رہا ہوں۔ میں ایک عریف خاندان کا چشم و چراغ ہوں۔ دہلی میوی جند ہوئی ہے، یعنی کہ جائے پیدائش۔ جب سے عوش سنبھلا اپنے آپ کو آزادی کا رسبا پایا۔ سن 1947ء سے پہلے میرے ولولہ اُرنے جوان تھے کہ کچھ بوجھ نہیں۔ میں نے حصول آزادی میں جات توڑ کٹھن کی۔ اس سلسلے میں مجھے جیل بھی بھیجا گیا۔ جیل میں چکی پیسٹ پیسٹے صاحب شاعروں میں چھالے پڑ گئے اور جو ”مہذب لوگ“ میرے ساتھ جیل بھیجے گئے، انہیں جیل میں بھی ریلوے کوارٹرمینٹ کی طرح ”ڈسٹ گلاس“ ملی اور بھات آزاد ہونے کے بعد انہیں جاگیریں بھی دی گئیں۔ لیکن میں؟ ایک معمولی انسان جو ٹھہرا۔ میری بساط ہی کیا؟

پھر بھی مجھے اننی خوشی تو ضرور ہے کہ کچھ نہ سہی، ہندستان آزاد تو ہو گیا۔ میں اپنی فکر کروں ہی کیوں؟ میں دن میں ایک دو دہشت کے لئے بھوکھا بھی رہوں تو کیا بکڑ گیا جب کہ انگلستان انسانیت پرستہ کی ”پاک فضا“ میں دن بھر بھوکھے پڑے رہتے ہیں۔ کبھی نہیں سے کچھ مل گیا تو کھاتے ہیں۔ اُن کا ایسا کرنا سائنس کی رو سے تھوک ہی تو ہے۔ پیسٹ کے لئے زیادہ کھانا معدے کی خرابی کا باعث بنتا ہے اور...

کیا کہا؟ میرا پیشہ؟ صاحب! یوں ہی در بدر کی ٹھوکریں دھانا پھرتا ہوں، جیسے آجکل کے گریجویٹ اور ڈبل ایم. اے. نوکری کی تلاش میں مارے مارے پھرتے ہیں۔ انہیں نوکری دینا بھی نون صاحب؟ وہ تو نوکری میں نواب گیری کرنا چاہتے ہیں۔ خود کردہ را علاجے نیست۔ میں ٹھہرا ایک آوارہ شاعر۔ یوں تو آجکل کے ادیب اور شاعر میں بہت بڑے ادب فروش ہوتے ہیں مگر میری خوداری مجھے یہ ہنر نہیں دیتی۔ اگر میں ادب فروش بننا بھی چاہوں تو کوئی میری رچنائیں اپنے پرچے میں شائع نہیں کریگا۔ کیونکہ میری شاعری خشک ہے جس میں ونکیٹی نہیں، عربانیت نہیں اور ایسی چیز نہیں جسے ہمارے پائٹھک چاہتے ہیں۔ آخر ایک معمولی شاعر جو ٹھہرا۔ اور اُس کے علاوہ...

آن..... یہ ریڈیو پر کونسا ریکارڈ بچ رہا ہے؟ ”آجا میرے بالما نہرا انتظار ہے۔“ نہ جانے ہمارے فلمی شاعر ایسے گانے کیوں لکھتے ہیں؟ پھر یہی اِس میں اُن بیچاروں کا کیا قصور ہے۔ فلمی ناخداؤں کی مرضی ہے۔ وہ جیسا چاہتے ہیں فلمی شاعر اُسی طرح لکھتے ہیں۔ یہی کیا کم ہے کہ عربی اور فحش فلمیں بنانے میں ہماری موجودہ فلم انڈسٹری دوسرے ممالک سے بازی لے گئی ہے۔ ہماری حکومت کو خوں بھی اِس بات کا فطر ہے کہ اینٹرٹینمنٹ ٹیکس (entertainment tax) لاہوں گے

हिसाब में जमा हो जाता है. मैं पूछता हूँ क्या रूप और चीन में फ़िल्मी सनश्चत से इतनी आमदनी हांती है ? ख़ूब अकड़ते हैं अपनी सयाही पालिसी पर.....

क्या कहा ? मैं बड़ा दिलचस्प आदमी हूँ ? शुक्रिया साहब, बेवकूफ कहने के बजाय दिलचस्प आदमी का खिताब दिया। कोई बात नहीं अगर आप मुझे बेवकूफ भी कह देते तो मेरा बिगड़ता ही क्या ? बिगड़ने की तो खूब रही, अब्बल तो मुझे गुस्सा ही नहीं आता, आखिर किसी पर गुस्सा करके भी क्या फायदा ? गुस्सा तो वह लोग करते हैं। जनके पास धन-दौलत की इफ़रात है, जिनके मातहत कई नौकर-चाकर काम करते हैं और जिनकी तोंदें बनस्पति धी से बने लजीज खानों से मोटी रहती हैं, न मेरे पास दौलत है, न नौकर और न ही मैं बनस्पति धी से बनी कोई चीज खाता हूँ, बनस्पति धी—सुना है इससे बनी चीज बहुत ही अच्छी और बहुत हा मजेदार हाती है, आखिर हमारी सरकार से सरटी/फ़केंट हासिल की हुई चीज जा ठहरी !, बकौल कसे यह और बात है कि “बनस्पति धी के इस्तेमाल से तीसरी पुस्त में औलाद अंगी पैदा होने लगती है, तीसरी पुस्त—जहन्नुम में जाये, हमें क्या और हमारी सरकार का क्या !

अरे, आप लोग उठने लगे ? शायद चाय पीने का वक्त आ गया. मैं चाय पीने का आदी नहीं हूँ साहब. हूँ ! चाय में रक्खा ही क्या है ? अगर एक प्याली चाय के पैसं रहे तो एक रुखी सूखी रोटी खा लेता हूँ. चबन्नी रही तो एक वक्त का खाना मिल जाता है, चाहे अर्ध-पेट ही क्यों न हो. इस वक्त तो जेब बिल्कुल “एम्पटी” (empty) है. न आज रुखी सूखी रोटी ही मिलेगी और न ही आधापेट खाना !

ऐं, यह क्या ? अठन्नी ! मुझे माफ़ कीजिये साहब, मैं शरीब ज़रूर हूँ मगर भिखारी नहीं, आवारा शायर हूँ, बेकस हूँ, मेरा दुनिया में कोई नहीं, दर बदर की ठोकरें खाता फिरता हूँ, फिर भी खुदा र हूँ, अठन्नी देकर आप शायद मेरी खुशारी को ठेस पहुँचाना चाहते हैं, आप इस अठन्नी के बत्तीस पाव आने बत्तीस भिखारियों में बाँट दीजिये साहब,

अच्छा साहब, तसलीम ! आपकी निवाजिश का
शुक्रिया.

حساب میں جمع ہو جاتا ہے۔ میں پوچھتا ہوں کیا روس اور چین میں فسی صحت سے اتنی آمدنی ہونی ہے ؟ خوب اکتے ہیں اپنی سیاسی پالیسی پر.....

کیا کیا ؟ میں بڑا دلچسپ آدمی ہوں ؟ شکریہ صاحب،
 بیوقوف کہنے کے بجائے دلچسپ آدمی کا خطاب دیا۔ کوئی
 بات نہیں۔ اگر آپ مجھے بیوقوف بھی کہہ دیتے تو میرا ہکڑا
 ہی کیا ؟ بکڑے کی تو خوب رہی، اول تو مجھے غصہ ہی
 نہیں آتا۔ آخر کسی پر غصہ کر کے بھی کیا فائدہ ؟ غصہ تو وہ
 لوگ کرتے ہیں جن کے پاس دھن دولت کی افراط ہے، جن کے
 ماتحت کئی نوکر چاکر کام کرتے ہیں اور جن کی توندیں
 ہلستی گئی سے ہلے لڈیڈ کھانوں سے موٹی رہتی ہیں۔ نہ
 میرے پاس دولت ہے، نہ نوکر اور نہ ہی میں ہلستی گئی
 سے ہلی کوئی چیز کھاتا ہوں۔ ہلستی گئی—سنا ہے اس سے
 ہلی چیز بہت ہی اچھی اور بہت ہی مزیدار ہوتی ہے۔ آخر
 ہماری سرکار سے سرٹیفکیٹ حاصل کی ہوئی چیز جو ٹھہری !
 بقول کیسے یہ اور بات ہے کہ ”ہلستی گئی کے استعمال سے تیسری
 پشت میں اولاد اندھی پیدا ہونے لگتی ہے۔“ تیسری پشت—
 جہنم میں جائے، ہمیں کیا اور ہماری سرکار کو کیا !

اے، آپ لوگ اُتھئے لکے ؟ شاہد چائے پیئے کا وقت آگیا ۔
 میں چائے پیئے کا عادی نہیں ہوں صاحب ۔ ہوں ! چائے میں
 دکھا ہی کیا ہے ؟ اگر ایک پہالی چائے کے پیسے رہے تو ایک
 روکھی سوکھی روٹی کھا لیتا ہوں ۔ چوٹی رہی تو ایک وقت کا
 کھانا مل جاتا ہے، چائے آدھ ہٹ ہی کہوں نہ ہو ۔ اِس وقت
 نو حبیب بالکل ”ایمپٹی“ (empty) ہے ۔ نہ آج روکھی
 سوکھی روٹی ہی ملیگی اور نہ ہی آدھ ہٹ کھانا !

اپس، یہ کیا؟ اٹھنی! مجھے معاف کیجئے صاحب۔ میں غریب ضرور ہوں، مگر بھکاری نہیں۔ آوارہ شاعر ہوں، بے گس ہوں، میرا دنیا میں کوئی نہیں، دریدر کی تھوکریں کھانا پھرتا ہوں، پھر بھی خوددار ہوں۔ اٹھنی دیکر آپ شاید مہری خودداری کو ٹھیس پہنچانا چاہتے ہیں۔ آپ اس اٹنی کے ہتھس پاؤ اُڑے ہتھس بھکاریوں میں ہاتھ دیکھئے صاحب۔

اچھا صاحب، تسلیم! آپکی فوازش کا شکریہ۔

دوستی اور کلچری سہوگامی راہ پر

دوستی اور کلچری سہوگامی راہ پر

میری ولفیمیر یا کوہلیو

میری ولفیمیر یا کوہلیو

ہندوستان کے دریا اس دیہ کی بھومی کو دھوتے ہوئے اور
ہاں کے آبجائو میدانوں میں ہر سال نئی جان ڈالتے ہوئے
ماہ ہند مہاساگر میں آنکٹ جل اُتھلتے رہتے ہیں۔ روس کے
بڑے دریا بیچ روس سے جنم لیکر دکھن کے گرم سمندروں
میں یا اُتر کے برٹیلے مہاساگر میں اپنے کو خالی کرتے رہتے ہیں۔

روس کے دریا چاروں طرف کو بہتے ہیں اور کون جانے
کہاں ہمارے گنگا جمل کی ایک بڑی روس کے وولگا (Volga)
(Yenisse) یا یینسیسی (Yenissi) نदी کی ایک بڑی کے
ساتھ مل کر اس بڑی دریا میں مل جاتی ہو جو سب مہادہوں کے کناروں
پر دھرتی بھتی ہے اور جس کی تری ساری دنیا کو چھو
یتی ہے۔

ان دونوں دیہوں کی ایک ایک کلچریں بے حد
انداز اور مالا مال ہیں۔ ان میں سے ہر ایک کی بابت بہت
چھ کہا جاسکتا ہے۔ ان کے باہری رنگ روپ الگ الگ ہیں۔
یہ ایک ایک قومی کلچریں مل کر ایک دوسرے کو مالا مال
رتی ہیں اور ایک دوسرے کی کمی کو پورا کرتی ہیں۔ اس
بعد ہمارے کلچر اور روس کی کلچر دونوں اپنے سنہ
نکتے ہوئے رنگوں کو ایک دوسرے کے اندر تانے بانے کی طرح
لا کر ایک ایسا سنہرے گلدستہ بنادیتی ہیں جیسے ہم ساری
انسانی قوم کے لئے ایک ملی جلی کلچر یعنی انسانی کلچر
ماتو سنسکرتی کہہ سکتے ہیں۔

نہرو نے اپنی کتاب "دیسکوری آف انڈیا" میں
لیکھا ہے—"پورانے زمانے میں ہندوستان کا یہی مہرکا
رہا ہے کہ وہ دوسری کلچروں کا स्वागत کر کے انہیں اپنے
میں ملاتا رہا ہے۔ آج اس کی ضرورت ہے۔ کیونکہ کل ہم دنیا بھر کی اُس
بہت کی طرف بڑھنے والے ہیں جہاں پہنچ کر سب ایک ایک
شعروں کی ایک ایک کلچریں ساری انسانی قوم کی ایک
متراشقریبہ کلچر میں مل کر ایک ہو جائیں گی۔ اس لئے ضروری
ہے کہ ہمیں جہاں سے بھی اچھی باتیں، علم، جانکاری، دوستی
پر سہوگ مل سکے ہم اُس کا स्वागत کریں اور جو بڑے بڑے
م ساری انسانی قوم کے ہلے کے ہیں ان میں ہم سب کے
اتھ مل کر کوشش کریں۔"

ہندوستان کے دریا اس دیہ کی بھومی کو دھوتے ہوئے اور
ہاں کے آبجائو میدانوں میں ہر سال نئی جان ڈالتے ہوئے
ماہ ہند مہاساگر میں آنکٹ جل اُتھلتے رہتے ہیں۔ روس کے
بڑے دریا بیچ روس سے جنم لیکر دکھن کے گرم سمندروں
میں یا اُتر کے برٹیلے مہاساگر میں اپنے کو خالی کرتے رہتے ہیں۔

روس کے دریا چاروں طرف کو بہتے ہیں اور کون جانے
کہاں ہمارے گنگا جمل کی ایک بڑی روس کے وولگا (Volga)
(Yenisse) یا یینسیسی (Yenissi) نदी کی ایک بڑی کے
ساتھ مل کر اس بڑی دریا میں مل جاتی ہو جو سب مہادہوں کے کناروں
پر دھرتی بھتی ہے اور جس کی تری ساری دنیا کو چھو
یتی ہے۔

ان دونوں دیہوں کی ایک ایک کلچریں بے حد
انداز اور مالا مال ہیں۔ ان میں سے ہر ایک کی بابت بہت
چھ کہا جاسکتا ہے۔ ان کے باہری رنگ روپ الگ الگ ہیں۔
یہ ایک ایک قومی کلچریں مل کر ایک دوسرے کو مالا مال
رتی ہیں اور ایک دوسرے کی کمی کو پورا کرتی ہیں۔ اس
بعد ہمارے کلچر اور روس کی کلچر دونوں اپنے سنہ
نکتے ہوئے رنگوں کو ایک دوسرے کے اندر تانے بانے کی طرح
لا کر ایک ایسا سنہرے گلدستہ بنادیتی ہیں جیسے ہم ساری
انسانی قوم کے لئے ایک ملی جلی کلچر یعنی انسانی کلچر
ماتو سنسکرتی کہہ سکتے ہیں۔

نہرو نے اپنی کتاب "دیسکوری آف انڈیا" میں
لیکھا ہے—"پورانے زمانے میں ہندوستان کا یہی مہرکا
رہا ہے کہ وہ دوسری کلچروں کا स्वागत کر کے انہیں اپنے
میں ملاتا رہا ہے۔ آج اس کی ضرورت ہے۔ کیونکہ کل ہم دنیا بھر کی اُس
بہت کی طرف بڑھنے والے ہیں جہاں پہنچ کر سب ایک ایک
شعروں کی ایک ایک کلچریں ساری انسانی قوم کی ایک
متراشقریبہ کلچر میں مل کر ایک ہو جائیں گی۔ اس لئے ضروری
ہے کہ ہمیں جہاں سے بھی اچھی باتیں، علم، جانکاری، دوستی
پر سہوگ مل سکے ہم اُس کا स्वागत کریں اور جو بڑے بڑے
م ساری انسانی قوم کے ہلے کے ہیں ان میں ہم سب کے
اتھ مل کر کوشش کریں۔"

بھارت کے پردھان منتری کی اس کتب کا روسی ترجمہ اس سال نکل چکا ہے ۔ روس نے وہیں نے ان راہیں کو پڑھا ۔ ہر روسی نہرو کی اس بات کے ساتھ سمیت ہے ۔ سوویت روس کے لوگوں کے دل اور دماغ اور بھارت کے لوگوں کے دل اور دماغ اس بات کے لئے پوری طرح کھلے ہوئے ہیں کہ ہم بھائی بھائی کی طرح ایک دوسرے سے وچاروں اور روحانی سچائیوں کا نین دین کریں ۔

لیکن اے ہمیں یہ تعلیم دی تھی کہ حقیقی سہولت
لچر کی تعمیر اس سمے تک نہیں کی جاسکتی جب تک
ہم اس ساری روحانی دولت سے اپنے کو مالا مال نہ کر لیں
جو انسانی قوم نے آج تک پیدا کی ہے۔ اس لئے ہم قہر
وہم کے بیچ بڑے سے بڑے پیمانے پر کلچری لین دین کے
حق میں ہیں۔ ہمیں یہ دہائی دے رہا ہے کہ اس سے نہ
پہلے الگ الگ دیشوں اور الگ الگ قوموں کی اپنی اپنی
اشوریہ سنسکرتیاں ہی اور ادھک مالا مال ہونگی، بلکہ ہم
ایک دوسرے کو بھی ادھک اچھی طرح سمجھ سکیں گے اور
دیشوں دیشوں کے بیچ دوستی بڑے سکھ کی ۔

سوویت یونین اور بھارت کے بیچ مٹرنا اور ہر طرح کے
بھڑوک کے سمبندھ قائم ہو چکے ہیں۔ ہمارے کلچری فائنے
بہتے جارہے ہیں۔ ہمارا ایک دوسرے کے ساتھ سمبندھ کیوں
بانی باتوں میں ہی نہیں عملی کاموں میں بھی گہرا اور
ضبط ہوتا جا رہا ہے۔

اِس سال جنوری میں بھارت سرکار کی دعوت پر بھارت پہنچ کر مجھے بڑی خوشی ہوئی تھی۔ ہمارے ڈیپلیکیشن کے مینا روسی شاعر ایلکسئی سرکوف (Alexi Surkov) نے۔ ایک کلچرل ڈیپلیکیشن تھا۔ ہم اِس پیمے وشراس کو لیکر وِس واپس آئے کہ بھارت کے لوگوں کے دل سوویت روس کے لوگوں کے ساتھ متروکا کے بھاؤں سے بھرے ہوئے ہیں بھارت کے لوگ روس کے ساتھ متروکا کے بھاؤں سے بھرے ہوئے ہیں بھارت کے لوگ وِس کے لوگوں کے ساتھ کلچری سہدوگ کو بڑھانا اور ادھک مضبوط کرنا چاہتے ہیں۔ واکس (Voks) نامی روسی سنسٹیر کے ایک کام کرنے والے کی حیثیت سے مجھے یہاں آکر اپنے ساتھیوں سے ارب بار یہ دھکار سنائی بڑی کہ ہماری سنسٹیر اور روس کے لوگوں نے بیچ ایسی مہل جول اور کلچری لین دین کی بڑھتی ہوئی مانگوں کو پورا کرنے کے لئے کافی کام نہیں کر رہی ہے۔

ایک ہندوستانی کہات ہے کہ ہزار بار سننے سے ایک بار
 دیکھنا اُدھک اچھا ہے۔ تجربہ اُس بات کو ثابت کرتا ہے کہ
 یک دوسرے کو سمجھنے کا اور وچاروں کے لین دین کا سب سے
 چھا طریقہ ایک دوسرے سے ملنا ہے۔ بھارت واسیوں کی رہبر دست
 لچری دولت کو اور ان کی امولیتھ اور پراچین پیترک روحانی
 مہیتی کو ہم نے اپنی آنکھوں سے دیکھا۔ اپنے دیہے واپس آکر ہم نے

اخباروں میں، جلسوں میں، بھارتیہ جہوں کی اور اپنے بھارتیہ دوستوں کی چرچا کی۔ اور ہم اس بات کی کوشش کر رہے ہیں کہ اس سے کہیں ادھک بڑے پیمانے پر ہمارے دونوں دیشوں کی زبردست کلچریں ایک دوسرے سے مل کر ایک دوسرے کو اور ادھک مالا مال کر سکیں۔

سوویت روس کے لوگ بڑے پیار کے ساتھ بھارت کے کلچری دوتوں کا स्वागत کرتے ہیں۔ اس سال ابھی تک کلچری کام کرنے والوں کے اگلا با وائیسیس ڈیلیگیشن بھارت سے سوویت روس آیا چو کے ہیں۔ انمیں بھارت کی پارلیمنٹ کے ممبروں کا ڈیلیگیشن، کئی ٹریڈ یونین ڈیلیگیشن، ڈاکٹروں کا ڈیلیگیشن، اخبار نویسوں کا ڈیلیگیشن اور سائنس دانوں کا ڈیلیگیشن سب شامل ہیں۔ جنہوا میں ایسی شکتی کے شائق مئے آپوگوں کے بارے میں سائنس دانوں کی جو کانفرنس ہوئی تھی اس کے 'چیرمین' شری اے۔ جی۔ بھابھا بھارت کے سائنس دانوں کے ڈیلیگیشن کے نیما تھے۔

ادھر سے بھارت نے آٹھ ڈیلیگیشن اسی عرصہ میں سوویت روس سے بلائے۔ ان میں روسی سائنس دانوں کا ڈیلیگیشن، کلچری ڈیلیگیشن، ڈاکٹروں کا ڈیلیگیشن اور وکیلوں کا ڈیلیگیشن سب شامل تھے۔

ماسکو میں ہمیں معلوم ہے کہ روس کے مہاکوی پوریکن (Pushkin) کی کویتا "جی:سیا:جی" (Gypsies) کا آ. ڈبلیو. آ. آ. نے ہندی بھاشا میں انواڈ کیا ہے اور بھارت میں چپ گیا ہے۔ پوریکن وائیسیس سدی کا روس کا سب سے بڈا کوی تھا۔ روسا جناتا وئے سب سے آدھک چاہتا اور پسند کرتی تھی۔ آ رنے سمی ک روس کے ہالاتا وئے بھوت ہی چمکتے وئے ڈا: سے آپنی کویتا آؤں میں بیاں کیے ہیں۔ ہمیں اس بات کی بڈی کھوشی ہے کہ بھارت کے پڈنے والے آ پوریکن کی رچنا آؤں سے باکریک ہا جانیے۔

بھارتیہ ساہتیہ اور بھارتیہ کلا کے سونہرے یوگ کے سب سے چمکتے وئے تارے، زبردست کلاکار اور ناٹککار مہاکوی کالیڈاس کے ناٹک "شکنتلا" کا روسی میں انواڈ ہا چکا ہے اور اسی سال روس میں شائع ہو چکا ہے۔ کرشن چندر اور ملک راج اند کی کہانیاں اور انکی چنی ہوئی رچنائیں روس میں شائع ہو چکی ہیں۔ آئیسویں سدی کا روسی سائنس دان آئی۔ پی۔ مینایف (I. P. Minayev) آپنے سمی میں ہندوستان اور برما آیا تھا۔ روس کے بہت سے وڈوانوں کو اُس نے ہندوستان کے حالات بتائے اور ہندوستان کی بابت ادھک جانکاری حاصل کرنے کا روسیوں میں شوق پیدا کیا۔ اُس کی کتاب "ہندوستان اور برما کے سفر کا روزنامہ" روس میں پہلی بار اب شائع ہوا ہے۔ ریندر ناتھ ٹیکور کی کچھ چنی ہوئی رچنائیں کی پہلی جلد بھی روسی بھاشا میں حال میں شائع ہوئی ہے۔ اور جلدیں نکلتے والی ہیں۔

سوویت روس کے لوگ بڑے پیار کے ساتھ بھارت کے کلچری دوتوں کا स्वागत کرتے ہیں۔ اس سال ابھی تک کلچری کام کرنے والوں کے اگلا با وائیسیس ڈیلیگیشن بھارت سے سوویت روس آچکے ہیں۔ ان میں بھارت کی پارلیمنٹ کے ممبروں کا ڈیلیگیشن، کئی ٹریڈ یونین ڈیلیگیشن، ڈاکٹروں کا ڈیلیگیشن، اخبار نویسوں کا ڈیلیگیشن اور سائنس دانوں کا ڈیلیگیشن سب شامل ہیں۔ جنہوا میں ایسی شکتی کے شائق مئے آپوگوں کے بارے میں سائنس دانوں کی جو کانفرنس ہوئی تھی اس کے 'چیرمین' شری اے۔ جی۔ بھابھا بھارت کے سائنس دانوں کے ڈیلیگیشن کے نیما تھے۔

ادھر سے بھارت نے آٹھ ڈیلیگیشن اسی عرصہ میں سوویت روس سے بلائے۔ ان میں روسی سائنس دانوں کا ڈیلیگیشن، کلچری ڈیلیگیشن، ڈاکٹروں کا ڈیلیگیشن اور وکیلوں کا ڈیلیگیشن سب شامل تھے۔

ماسکو میں ہمیں معلوم ہے کہ روس کے مہاکوی پوریکن (Pushkin) کی کویتا "جی:سیا:جی" (Gypsies) کا آ. ڈبلیو. آ. آ. نے ہندی بھاشا میں انواڈ کیا ہے اور بھارت میں چپ گیا ہے۔ پوریکن وائیسیس سدی کا روس کا سب سے بڈا کوی تھا۔ روسا جناتا وئے سب سے آدھک چاہتا اور پسند کرتی تھی۔ آ رنے سمی ک روس کے ہالاتا وئے بھوت ہی چمکتے وئے ڈا: سے آپنی کویتا آؤں میں بیاں کیے ہیں۔ ہمیں اس بات کی بڈی کھوشی ہے کہ بھارت کے پڈنے والے آ پوریکن کی رچنا آؤں سے باکریک ہا جانیے۔

بھارتیہ ساہتیہ اور بھارتیہ کلا کے سونہرے یوگ کے سب سے چمکتے وئے تارے، زبردست کلاکار اور ناٹککار مہاکوی کالیڈاس کے ناٹک "شکنتلا" کا روسی میں انواڈ ہا چکا ہے اور اسی سال روس میں شائع ہو چکا ہے۔ کرشن چندر اور ملک راج اند کی کہانیاں اور انکی چنی ہوئی رچنائیں روس میں شائع ہو چکی ہیں۔ آئیسویں سدی کا روسی سائنس دان آئی۔ پی۔ مینایف (I. P. Minayev) آپنے سمی میں ہندوستان اور برما آیا تھا۔ روس کے بہت سے وڈوانوں کو اُس نے ہندوستان کے حالات بتائے اور ہندوستان کی بابت ادھک جانکاری حاصل کرنے کا روسیوں میں شوق پیدا کیا۔ اُس کی کتاب "ہندوستان اور برما کے سفر کا روزنامہ" روس میں پہلی بار اب شائع ہوا ہے۔ ریندر ناتھ ٹیکور کی کچھ چنی ہوئی رچنائیں کی پہلی جلد بھی روسی بھاشا میں حال میں شائع ہوئی ہے۔ اور جلدیں نکلتے والی ہیں۔

بھارتیہ ساہتیہ اور بھارتیہ کلا کے سونہرے یوگ کے سب سے چمکتے وئے تارے، زبردست کلاکار اور ناٹککار مہاکوی کالیڈاس کے ناٹک "شکنتلا" کا روسی میں انواڈ ہا چکا ہے اور اسی سال روس میں شائع ہو چکا ہے۔ کرشن چندر اور ملک راج اند کی کہانیاں اور انکی چنی ہوئی رچنائیں روس میں شائع ہو چکی ہیں۔ آئیسویں سدی کا روسی سائنس دان آئی۔ پی۔ مینایف (I. P. Minayev) آپنے سمی میں ہندوستان اور برما آیا تھا۔ روس کے بہت سے وڈوانوں کو اُس نے ہندوستان کے حالات بتائے اور ہندوستان کی بابت ادھک جانکاری حاصل کرنے کا روسیوں میں شوق پیدا کیا۔ اُس کی کتاب "ہندوستان اور برما کے سفر کا روزنامہ" روس میں پہلی بار اب شائع ہوا ہے۔ ریندر ناتھ ٹیکور کی کچھ چنی ہوئی رچنائیں کی پہلی جلد بھی روسی بھاشا میں حال میں شائع ہوئی ہے۔ اور جلدیں نکلتے والی ہیں۔

روسی کلاکار پ. گراسیمو (A. Gerasimov)
ہال میں بھارت آئے تھے۔ انہوں نے کچھ 'بھارتیہ چٹروں' تصویروں
اور خاکوں کا ایک سنگرہ کتاب کی شکل میں نکالا ہے۔ وہ کتاب
روس میں اتنی جلدی ہاتھوں ہاتھ پک گئی کہ پہلی ایڈیشن
بالکل ختم ہو گئی اور اب انہیں سینکڑے سینکڑے کتابوں کی دکانوں پر
بھی دیکھنے کو نہیں مل سکتی۔

یہاں کی بھارتیہ اور وہاں کی بھارتیہ کی یہاں انماہشوں کے ہونے سے بھی
بہت بڑا فائدہ ہوا ہے۔ جواہر لال نہرو نے ماسکو میں جو بھارتیہ
دستکاریوں کی نمائش کرائی یہ بڑا غصب کا خیال تھا۔ ہزاروں
ماسکونوٹسوں نے اور سوویت روس کے دولے دولے سے آئے ہونے
ہزاروں لوگوں نے اس نمائش کو دیکھا اور بھارتیہ کا اور
دستکاریوں کی ایک جیتی جاگتی تصویر ان کے سامنے آگئی۔
اس نمائش میں ہائس ہزار نمونے تھے۔ پچھلے سال وہاں
بھارتیہ چیزوں اور پتھر کی گدائی کی چیزوں کی ایک نمائش
ہوئی تھی۔ اس نمائش کے بعد ہندوستانی چیزوں کی یہ سب
سے بڑی نمائش ہے جو ماسکو میں ہوئی ہے۔ ایک اور نمائش
روس میں ہوئی جسکا نام تھا "بھارت کی کلچر اور فن" ایک
ہندوستانی بھاشاؤں کے ساتھ کی نمائش ہوئی۔ ماسکو کی یہ سب
نمائشیں اس سال بہت ہی کامیاب رہیں۔ ان کے علاوہ روس
کے اور بہت سے شہروں میں بھارت کی چیزوں کی نمائشیں
ہوئیں جیسے لینن گراڈ (Leningrad)، اڈیسار (Odessa)،
کیوبیشو (Kuibyshev)، چیلیا بینسک (Cheliabinsk)،
سورڈلوسک (Sverdlovsk)، ایوانو (Ivanovo)،
کیو (Kiev)، لور (Lvov)، تلمسی (Tbilisi)،
آ. آ. آ. (Alma Ata)، گارا گندا (Karaganda)،
گومل (Gomel)، پترو زافوڈسک (Petrozavodsk)،
ناشنند، ہانو، عشق آباد، یریدوان (Yerevan)، ریگا
(Riga)، تیلن (Tillhn) وغیرہ۔ ان سب نمائشوں کے
لئے ہدائتیں سوویت روس کے وہ آدمی دیتے تھے جو بھارت
میں ہیں۔ اور ان کی ہدایتوں کے مطابق ان شہروں اور
جگہوں کی ساروجنک سسٹمائیں وہاں کی لائبریریاں، وہاں کی
کلچری سوسائٹیاں اور وہاں کے ویدیش سمبندھی محکمہ اور
خاص خاص آدمی ان نمائشوں کا سارا سرانجام کرتے تھے۔

دوسری طرف سوویت روس کی ویدیشوں کے ساتھ کلچری
سمبندھ کی سہمائی نے اس سال نیچے لکھا انماہشوں
بھارتیہ کے:—"سوویت روس کے کھڑا مل میں کلم کرلے والے
مزدوروں کا کام اور انکا جھن"۔ "سوویت روس کی مندر
دستکاریاں"۔ "بچوں کی کتابوں اور گزروں کی نمائش"۔ "نوٹو
کی نمائش"۔ سوویت ازمبلسٹان" وغیرہ۔ یہ نمائشوں دلی کی
انتراشترہ نمائش میں حصہ لانے کے لئے بھیجی گئی ہیں۔ دلی
میں یہ روسی نمائشیں بھارت کی بھارت روس کلچرل سوسائٹی، وہاں
کی دوسری کلچر سوسائٹی، ڈاکٹر بالیگا (Dr. Baliga)، شریتمی

رائےشنری نہرو اور دوسرے ہندوستانی میٹروں کی سہائتا سے سنگت کی گئی اور سجائی گئیں۔

حال میں سوویت روس کے اندر भारत کے مشاہیر لکھکار اور ناٹککار کھاجا احمد ابوباس ہمارے مہمان ہیں۔ روس کا ایک مہمان یاتری افاناسی نیکیتین (Afanasi Nikitin) پندرہویں صدی عیسوی میں भारत آیا تھا۔ کھاجا احمد ابوباس اس زمانہ کے حالات کا نگاہ میں رہتے ہوئے افاناسی نیکیتین کے اس سفر کی ایک تصدیق پر مشتمل ہومو نیار کر رہے ہیں۔ اس پر مشتمل ہومو نیار پر روس اور भारत کے علم ہمالیہ والے مل کر भारत کے اس سفر کی روسی یادری کے سفر کی ایک فلم تیار کریں گے۔

سن 1951 میں روسی فلمکار پودوون (Pudovkin) اور روسی فلم ایکٹر چرکاساوا (Cherkassov) دونوں भारत آئے۔ اسی سال ہندوستان کے ایک ڈائریکشن جس کے میں اہم بہت چارہ ہے سوویت روس آیا۔ تب سے اب تک زندگی کے اس خاص میدان کے اندر سوویت روس کے لگاؤ کے اور भारत کے لگاؤ کے سمجھنے پر اور بہت اور ایک مضبوط ہونا چاہا ہے۔ فلا کا میدان اور سب میدانوں سے زبانہ سروریدہ اور دلچسپ ہے۔ آج ہزاروں میٹر لمبی دیوار ہو چکی ہیں جو भारत کے جہیز کو روس کے سامنے اور روس کے جہیز کو भारत کے سامنے لٹاتی رہتی ہیں اور ایک دوسرے کی بہت ایک دوسرے کی جان کاری پہناتی رہتی ہیں۔ فلم کے کی مدد سے ہں भारत کے کہوں آدمی یہ دیکھ سکے کہ روس نے اپنے ہمارے مہمان جواہر ل نہرو کا کس طرح اور کتنا زبردست سواگت کیا۔

جواہر لال نہرو کے سوویت یونین آنے سے ایک دوسرے کی جانکاری بہت بڑی اور دونوں میں دوستی اور مضبوط غرضی۔ اس سے भारत اور روس میں کلچرل سہولت کا بہت بھی آسان ہو گیا۔ ہم سوویت روس کے لوگوں کو پورا دشواری ہے کہ ابن۔ بے ہلکان اور ابن۔ ایس۔ کوشچو کے اب भारत آئے سے ہمارے بہترنا کے ہندھن اور ادسک مضبوط ہونگے اور भारत اور سوویت روس میں کلچری سمجھنے اور تیزی سے بڑھگا۔ کلچر اور ترقی کا سب سے بڑا مددگار اور دوست دنیا کا امن یعنی اس دھرتی کے سب دیشوں اور سب لوگوں میں شانتی اور بھائی چارہ ہے۔ ہمیں پورا دشواری ہے نہ ہلکان اور کوشچو کی اس جوابی भारत یارا سے ان کوششوں کو بڑی مدد ملیگی جو भारत اور روس دونوں مل کر اس عام کوشش شانتی اور بھائی چارہ کی جہت کے لئے کر رہے ہیں۔

(“نیو یارک ٹائمز” میں “سوویت یونین” سے)

مہمانی اور کلچری سہولت کی راہ پر

مہمانی اور کلچری سہولت کی راہ پر

سن 1951 میں روسی فلم کار پودوون (Pudovkin) اور روسی فلم ایکٹر چرکاساوا (Cherkassov) دونوں भारत آئے۔ اسی سال ہندوستان کے ایک ڈائریکشن جس کے میں اہم بہت چارہ ہے سوویت روس آیا۔ تب سے اب تک زندگی کے اس خاص میدان کے اندر سوویت روس کے لگاؤ کے اور भारत کے لگاؤ کے سمجھنے پر اور بہت اور ایک مضبوط ہونا چاہا ہے۔ فلا کا میدان اور سب میدانوں سے زبانہ سروریدہ اور دلچسپ ہے۔ آج ہزاروں میٹر لمبی دیوار ہو چکی ہیں جو भारत کے جہیز کو روس کے سامنے اور روس کے جہیز کو भारत کے سامنے لٹاتی رہتی ہیں اور ایک دوسرے کی بہت ایک دوسرے کی جان کاری پہناتی رہتی ہیں۔ فلم کے کی مدد سے ہں भारत کے کہوں آدمی یہ دیکھ سکے کہ روس نے اپنے ہمارے مہمان جواہر ل نہرو کا کس طرح اور کتنا زبردست سواگت کیا۔

جواہر لال نہرو کے سوویت یونین آنے سے ایک دوسرے کی جانکاری بہت بڑی اور دونوں میں دوستی اور مضبوط غرضی۔ اس سے भारत اور روس میں کلچرل سہولت کا بہت بھی آسان ہو گیا۔ ہم سوویت روس کے لوگوں کو پورا دشواری ہے کہ ابن۔ بے ہلکان اور ابن۔ ایس۔ کوشچو کے اب भारत آئے سے ہمارے بہترنا کے ہندھن اور ادسک مضبوط ہونگے اور भारत اور سوویت روس میں کلچری سمجھنے اور تیزی سے بڑھگا۔ کلچر اور ترقی کا سب سے بڑا مددگار اور دوست دنیا کا امن یعنی اس دھرتی کے سب دیشوں اور سب لوگوں میں شانتی اور بھائی چارہ ہے۔ ہمیں پورا دشواری ہے نہ ہلکان اور کوشچو کی اس جوابی भारत یارا سے ان کوششوں کو بڑی مدد ملیگی جو भारत اور روس دونوں مل کر اس عام کوشش شانتی اور بھائی چارہ کی جہت کے لئے کر رہے ہیں۔

(“نیو یارک ٹائمز” میں “سوویت یونین” سے)

श्री बुलगानिन और श्री ख.शचेव भारत में

नवम्बर 1955 में सोवियत रूस के प्रधान मंत्री श्री 'निकोलाई एलेक्जेंड्रोविच बुलगानिन और रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की सेन्टरल कमिटी के फर्स्ट सेक्रेटरी श्री निकीता सरगेयेविच ख.शचेव का भारत आना आजकल की दुनिया की शायद सबसे अधिक महत्व की घटना है.

श्री निकोलाई एलेक्जेंड्रोविच बुलगानिन सन् 1895 में एक बहुत ही गरीब घर में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी दफ्तर में एक छांटे से क्लर्क थे. बाइस साल की उमर में वह कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर बने. तब से अब तक उनका सारा जीवन कम्युनिस्ट पार्टी के साथ देश के मजदूरों की सेवा में बीता है. आज वह सोवियत रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े से बड़े नेताओं में गने जाते हैं और वहां के म.श्रमण्डल के चेयरमैन हैं.

श्री बुलगानिन केवल राज-नीतिज्ञ ही नहीं हैं, वह एक हांशियार कारीगर और एनजीनयर भी हैं. मास्को के एक विजली के कारखाने के वह मैनेजर रह चुके हैं. बंक और साहूकार के काम का भी उन्हें खासा तजरबा है. सोवियत रूस के स्टेट बंक के बंड के वह एक समय सभापति थे. कौजी कामों का भी उन्हें काफी तजरबा है. सन् 1941 से 1944 तक की जंग में वह अपने देश की कई कई कौजी कौनसिलों के मेम्बर थे.

दूसरे सज्जन श्री निकीता सरगेयेविच ख.शचेव सन् 1894 में एक छोटे से गांव में और भी आधक गरीब घर में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी खान में मजदूरी करते थे. श्री ख.शचेव का छोटी उमर से ही मजदूरी पर लगा दिया गया. बहुत दिनों वह भेड़ें चराते रहे. कई कारखानों में उन्होंने फटर का काम किया. चौबीस बरस की उमर में वह कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर हुए. सन् 1941 से 1944 तक की जंग में वह एक मामूली सपाही की हैसियत से जर्मनी की कौज से लड़े. जंग के बाद वह फिर खानों और कारखानों में मजदूरी करते रहे. मजदूर की हैसियत से ही उन्होंने एक ऐसे स्कूल में लिखना पढ़ना सीखा जो खास

शरी ब्लगानिन और शरी ख.शचेव भारत में

नवम्बर 1955 में सोवियत रूस के प्रधान मंत्री श्री 'निकोलाई एलेक्जेंड्रोविच बुलगानिन और रूस की कम्युनिस्ट पार्टी की सेन्टरल कमिटी के फर्स्ट सेक्रेटरी श्री निकीता सरगेयेविच ख.शचेव का भारत आना आजकल की दुनिया की शायद सबसे अधिक महत्व की घटना है.

श्री निकोलाई एलेक्जेंड्रोविच बुलगानिन सन् 1895 में एक बहुत ही गरीब घर में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी दफ्तर में एक छांटे से क्लर्क थे. बाइस साल की उमर में वह कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर बने. तब से अब तक उनका सारा जीवन कम्युनिस्ट पार्टी के साथ देश के मजदूरों की सेवा में बीता है. आज वह सोवियत रूस की कम्युनिस्ट पार्टी के बड़े से बड़े नेताओं में गने जाते हैं और वहां के म.श्रमण्डल के चेयरमैन हैं.

श्री बुलगानिन केवल राज-नीतिज्ञ ही नहीं हैं, वह एक हांशियार कारीगर और एनजीनयर भी हैं. मास्को के एक विजली के कारखाने के वह मैनेजर रह चुके हैं. बंक और साहूकार के काम का भी उन्हें खासा तजरबा है. सोवियत रूस के स्टेट बंक के बंड के वह एक समय सभापति थे. कौजी कामों का भी उन्हें काफी तजरबा है. सन् 1941 से 1944 तक की जंग में वह अपने देश की कई कई कौजी कौनसिलों के मेम्बर थे.

दूसरे सज्जन श्री निकीता सरगेयेविच ख.शचेव सन् 1894 में एक छोटे से गांव में और भी आधक गरीब घर में पैदा हुए थे. उनके पिता किसी खान में मजदूरी करते थे. श्री ख.शचेव का छोटी उमर से ही मजदूरी पर लगा दिया गया. बहुत दिनों वह भेड़ें चराते रहे. कई कारखानों में उन्होंने फटर का काम किया. चौबीस बरस की उमर में वह कम्युनिस्ट पार्टी के मेम्बर हुए. सन् 1941 से 1944 तक की जंग में वह एक मामूली सपाही की हैसियत से जर्मनी की कौज से लड़े. जंग के बाद वह फिर खानों और कारखानों में मजदूरी करते रहे. मजदूर की हैसियत से ही उन्होंने एक ऐसे स्कूल में लिखना पढ़ना सीखा जो खास

تیر ہر بڑی عمر کے مزدوروں کے لیے سونپا گیا تھا۔ جنگ کے آخر کے دنوں میں وہ ایک علاقے کی فوجی کونسل کے ممبر تھے۔ ستمبر سن 1938 سے وہ روس کی کمیونسٹ پارٹی کی سینٹرل کمیٹی کے فکسٹ سیکریٹری تھے، جو روسی کمیونسٹ پارٹی کا سب سے زیادہ اثر کا عہدہ ہے۔

شری بلگانتن اور شری کوشچیو دونوں لینن کے وفادار چلے گئے اور اسٹیلن کے ساتھ کام کر چکے تھے۔ ان دونوں چوٹی کے روسی نیتاؤں کے بھارت آنے کے ارادے تھے۔ لیکن انہیں اس سلسلے کی دنیا کی راجکاری حالت پر ایک نگاہ ڈالنی ہوئی۔

اس میں سندیہ نہیں کہ دنیا دھوڑے دھوڑے شانتی 'ایکٹا' سب کی آرڈی 'ترقی اور خوشحالی کی طرف بڑھ رہی ہے۔ کسی نے سوچا تھا کہ ہانڈرچن ہم نے جنم لیا اور بچہ کیا ہوا ہے کہ اس نے جنگ کو مار ڈالا۔ ایک طرح یہ ایک شبہ لکھن ہے۔ پر مارگ کی ساری ہتھیاریں ابھی دور نہیں ہوئی ہیں۔

حال میں جینیوا میں چار بڑے بڑے देशوں—امریکا، انگلینڈ، فرانس اور روس—کے بیرونہ منتریاں کی جا کانفرنس ہوئی تھی اس کے سامنے چار خیالات سب سے ایک یہ کہ جرمنی کے دونوں حصوں کو ملا کر پھر سے ایک سینیٹ آزاد جرمنی بنا دیا جائے۔ دوسرا ایٹمی ہتھیاروں کے استعمال کی ممانعت پر رضامندی اور ہائی سب طرح کے ہتھیاروں اور فوجوں کو سب دیشوں میں دھوڑے دھوڑے دم کر کے ہتھیاروں اور فوجوں کا بوجھ دنیا پر سے ہٹا لیا جائے۔ تیسرا یہ کہ یورپ کے سب راسخوں کے ملے جملے سمجھوتے سے یورپ کے امن کو سونپ دیا جائے۔ چوتھا یہ کہ یورپ میں جنگ کی سمجھوتہ کو حتم کیا جائے۔ چوتھا یہ کہ یورپ اور پچھم کے بیچ تجارت، لین دین، آنا جانا اس طرح کھول دیا جائے کہ آپس کا من مٹاؤ مٹے اور مل جلنے اور دوستی بڑھے۔

چاروں دیشوں کے بیرونہ منتریاں میں کئی دن تک کافی بات چیت ہوئی تھی۔ معلوم ہوتا تھا سب شانتی چاہتے تھے۔ کوئی جنگ نہیں چاہتا۔ لیکن پھر بھی ان چاروں میں سے کسی بات پر بھی وہ ملکر کسی فیصلے پر نہیں پہنچ سکے۔ جینیوا کی اس کانفرنس سے کوئی نیکوئی نہیں ہوئی۔ وہ ضرور بھی نہیں گئی۔ لیکن اس سے کوئی خاص نیکوئی ہی نہیں نکل سکا۔

جینیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کھول کر دیا گیا تھا۔ یہ ایک بات کافی مددگار ہے کہ اوپر جو دو شہد 'یورپ' اور 'پچھم' استعمال کیے گئے تھے ان میں 'یورپ' سے مطلب روس اور پوری یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے دیشوں سے ہے جو

جینیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کھول کر دیا گیا تھا۔ یہ ایک بات کافی مددگار ہے کہ اوپر جو دو شہد 'یورپ' اور 'پچھم' استعمال کیے گئے تھے ان میں 'یورپ' سے مطلب روس اور پوری یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے دیشوں سے ہے جو

جینیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کھول کر دیا گیا تھا۔ یہ ایک بات کافی مددگار ہے کہ اوپر جو دو شہد 'یورپ' اور 'پچھم' استعمال کیے گئے تھے ان میں 'یورپ' سے مطلب روس اور پوری یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے دیشوں سے ہے جو

جینیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کھول کر دیا گیا تھا۔ یہ ایک بات کافی مددگار ہے کہ اوپر جو دو شہد 'یورپ' اور 'پچھم' استعمال کیے گئے تھے ان میں 'یورپ' سے مطلب روس اور پوری یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے دیشوں سے ہے جو

جینیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کھول کر دیا گیا تھا۔ یہ ایک بات کافی مددگار ہے کہ اوپر جو دو شہد 'یورپ' اور 'پچھم' استعمال کیے گئے تھے ان میں 'یورپ' سے مطلب روس اور پوری یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے دیشوں سے ہے جو

جینیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کھول کر دیا گیا تھا۔ یہ ایک بات کافی مددگار ہے کہ اوپر جو دو شہد 'یورپ' اور 'پچھم' استعمال کیے گئے تھے ان میں 'یورپ' سے مطلب روس اور پوری یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے دیشوں سے ہے جو

جینیوا کی اس کانفرنس کا سمبندھ کھول کر دیا گیا تھا۔ یہ ایک بات کافی مددگار ہے کہ اوپر جو دو شہد 'یورپ' اور 'پچھم' استعمال کیے گئے تھے ان میں 'یورپ' سے مطلب روس اور پوری یورپ کے ان چھوٹے چھوٹے دیشوں سے ہے جو

کمیونسٹ یا آئری-کمیونسٹ یا روس کے ساتھ ساتھ ہیں۔ 'پچھم' سے مطلب امریکہ، انگلینڈ، فرانس اور ہالینڈ، پرتگال، جیسے دوسری طرف کے देशوں سے ہے۔ کچھ سال پہلے تک ایشیا کو پورب اور یورپ کو پچھم کہا جاتا تھا۔ آج سے پچاس سال پہلے کے روس۔ جاپان یہ میں جب اُس سٹے کا روس جاپان سے جنگ میں ہار گیا تو ایک بہت بڑے یورپیہ ودوان نے جاپان کو نیا کی اور ماننے ہوئے اور جاپان کی جوت پر سنتوں پر گت کرتے ہوئے ہی کہا تھا:—But after all the question is between the East and the West." یعنی "کچھ ہی ہو سوال یورپ اور پچھم کا ہے۔" روس اُس سٹے ایک پچھمی دیہی تھا اور انہیں اس بات کا دم تھا کہ ایک یورپی دیہی جاپان نے ایک پچھمی دیہی روس کو نہج دیا یا۔ پچاس برس کے اندر ہوا بدل گئی۔ چین اور بھارت کے ساتھ سب چھوٹے بڑے دیہوں کی آزادی کے لئے کھڑا ہونے والا روس آج ایک 'یورپی' دیہی ہے۔

سامراجشاہی کا میدان اب بھی بڑا ہے۔ ایٹلیٹ اور فرانس اپنے سامراجشاہی رہنماؤں میں آج شایبہ ہتے پکے نہیں رہے جتنا امریکا کا۔ کاروں میں ساک ہے۔ یہاں ہم کہنا چاہتے ہیں کہ ہمیں کوئی اصرار نہ ہونا اگر کچھ برسوں کے بعد ایٹلیٹ اور فرانس میں شامل کر لئے جائیں اور پچھم سے مطلب دیہی سائیکٹ راج امریکہ سے رہ جائے! یہی انگلینڈ اور فرانس امریکا کے پورب میں ہیں اور امریکا انگلینڈ اور فرانس کے پچھم میں۔ یہ ہے دنیا کے شہدوں کی گئی۔

جہاں تک ہمارا سمبندھ ہے ہم اپنے پرانے آدیش "دیوکتیم" (ساری دھرتی ایک چھوٹا سا کتب ہے) کے انوسار چاہتے ہیں کہ ساری دنیا اس یورپ اور پچھم کے بھید سے اوپر اٹھ جائے اور اس دھرتی کے سب رھنے والے ایک مانو کتب کی طرح رھنے لگیں۔

ہمیں اس بات کی بھی بڑی خوشی ہے کہ سویم شری بلگان نے دلی میں ایک بات ایسی کہی جس سے معلوم ہوتا تھا کہ وہ سوویت روس کے ایشیائی دیہی مانے جالے میں بہت خوش ہیں۔ کچھ لوگ یہ بھی سوچ رہے ہیں کہ ایشیا انریقن کانفرنس میں روس کو ایک ایشیائی دیہی کی حیثیت سے برلن کی جگہ دی جاوے۔

ایشیا، یورپ اور سب ملاکر دنیا کی شانتی کے راستے میں آج خاص خاص بڑی رکاوٹیں یہ ہیں:—

(1) ایٹمی ہتیاروں کے استعمال کی پوری پوری ممانعت کر دینے اور باقی سب طرح کے ہتیاروں اور فوجوں کو دھیرے دھیرے کم کرنے میں کچھ دیہوں کا انا کافی کرنا۔

ایٹمی ہتیاروں کے استعمال کی پوری پوری ممانعت کر دینے اور باقی سب طرح کے ہتیاروں اور فوجوں کو دھیرے دھیرے کم کرنے میں کچھ دیہوں کا انا کافی کرنا۔

جہاں تک ہمارا سمبندھ ہے ہم اپنے پرانے آدیش "دیوکتیم" (ساری دھرتی ایک چھوٹا سا کتب ہے) کے انوسار چاہتے ہیں کہ ساری دنیا اس یورپ اور پچھم کے بھید سے اوپر اٹھ جائے اور اس دھرتی کے سب رھنے والے ایک مانو کتب کی طرح رھنے لگیں۔

ہمیں اس بات کی بھی بڑی خوشی ہے کہ سویم شری بلگان نے دلی میں ایک بات ایسی کہی جس سے معلوم ہوتا تھا کہ وہ سوویت روس کے ایشیائی دیہی مانے جالے میں بہت خوش ہیں۔ کچھ لوگ یہ بھی سوچ رہے ہیں کہ ایشیا انریقن کانفرنس میں روس کو ایک ایشیائی دیہی کی حیثیت سے برلن کی جگہ دی جاوے۔

ایشیا، یورپ اور سب ملاکر دنیا کی شانتی کے راستے میں آج خاص خاص بڑی رکاوٹیں یہ ہیں:—

(1) ایٹمی ہتیاروں کے استعمال کی پوری پوری ممانعت کر دینے اور باقی سب طرح کے ہتیاروں اور فوجوں کو دھیرے دھیرے کم کرنے میں کچھ دیہوں کا انا کافی کرنا۔

(2) اس طرح کے فوجی سمجھوتے اور فوجی کٹ بندیاں جن میں ایک خاص طرح کے دیشوں کو ہی شامل کیا جاتا ہے، اس کی سب سے بڑی مثالیں یورپ میں 'نائٹو' (NATO) اور ایشیا میں 'سیٹو' (SEATO) ہیں۔ حال میں یورپ کی سوزکشا کے لئے نائٹو میں شامل ہونے کی اچھا پرکٹ کی تھی، پھر بھی اسے نہیں لیا گیا۔ جب تک اس طرح کی فوجی گتیں دنیا میں رہیں گی دنیا کی شانتی پر خطرہ بنا رہیگا۔

(3) جرمنی کے دو ٹکڑوں کا بنا رہنا اور ان میں سے ایک ٹکڑے کا نائٹو کٹ کی طرف سے ہتیاروں سے لیس کیا جانا۔ یورپ کی ہی نہیں دنیا کی شانتی کے لئے اوشک ہے کہ جرمنی کے ان دونوں حصوں کے لوگوں کو، باہر کی کڑیوں کے دباؤ یا اثر سے آزاد ہوکر، ایک سوئٹزر، سوانہمن اور سنیٹ جرمنی بنانے کا موقع دیا جائے۔

(4) ہند چین کی باہت جو سمجھوتہ روس، چین، भारत और दूसरे शान्ति प्रेमी देशों की कोशिशों से सन् 1954 में 'जनीवा' ही में हो चुका है उसके खिलाफ हिन्द चीन के कुछ लोगों का अपनी खास फौजी गुट में मिलाकर बाहर के कुछ देशों का उसमें रुकावटें डालते रहना۔ जब तक बाहर के कुछ देशों की इस तरह की दखलछन्दाजी बन्द नहीं होगी और सन् 1954 वाले जनीवा के समझौते पर ईमानदारी से अमल नहीं होगा, एशिया के उस अभाग कोने से दुनिया की शान्ति के भंग होने का खतरा बना रहेगा۔

(5) ताइवान यांनी फारمूसा में अमरीकी फौजों का जबरदस्ती डेर डाले रहना۔ ताइवान चीन के शरीर का एक अंग है। किसी बाहर का शक्ति का यह हक नहीं है कि नए चीन और ताइवान के धरलू मामले में किसी तरह का दखल दे। अमरीकी फौजें अगर ताइवान से हटा ली जावें तब नई चीनी सरकार और ताइवान के कुछ लोगों के बीच का आपसी झगडा बिना किसी तरह की लड़ाई के एक दिन में तय हो सकता है। जब तक यह नहीं होता तब तक चीन को और दुनिया के अमन का खतरा बना रहेगा۔

(6) दक्खिन कोरिया को बराबर बढावा दे देकर कोरिया के एक संयुक्त और आजाद देश बनने में कुछ लोगों का रुकावटें डालना۔ कोरिया जब तक बाहर की शक्तियों के दबाव से आजाद हाकर एक संयुक्त राष्ट्र न बन जायगा तब तक उस तरफ से चीन का, एशिया का और दुनिया की शान्ति को खतरा बना रहेगा۔

(7) जापान और दूसरे कुछ देशों में बाहर की शक्तियों के फौजी अड्डों और छात्रानियों की मौजूदगी। जब तक कि सा भी बिदेशी शक्ति के इस तरह के फौजी अड्डे जापान या

(2) इस طرح کے فوجی سمجھوتے اور فوجی کٹ بندیاں جن میں ایک خاص طرح کے دیشوں کو ہی شامل کیا جاتا ہے، اس کی سب سے بڑی مثالیں یورپ میں 'نائٹو' (NATO) اور ایشیا میں 'سیٹو' (SEATO) ہیں۔ حال میں یورپ کی سوزکشا کے لئے نائٹو میں شامل ہونے کی اچھا پرکٹ کی تھی، پھر بھی اسے نہیں لیا گیا۔ جب تک اس طرح کی فوجی گتیں دنیا میں رہیں گی دنیا کی شانتی پر خطرہ بنا رہیگا۔

(3) جرمنی کے دو ٹکڑوں کا بنا رہنا اور ان میں سے ایک ٹکڑے کا نائٹو کٹ کی طرف سے ہتیاروں سے لیس کیا جانا۔ یورپ کی ہی نہیں دنیا کی شانتی کے لئے اوشک ہے کہ جرمنی کے ان دونوں حصوں کے لوگوں کو، باہر کی فوجوں کے دباؤ یا اثر سے آزاد ہوکر، ایک سوئٹزر، سوانہمن اور سنیٹ جرمنی بنانے کا موقع دیا جائے۔

(4) ہند چین کی باہت جو سمجھوتہ روس، چین، भारत और दूसरे शान्ति प्रेमी देशों की कोशिशों से सन् 1954 में 'जनीवा' ही में हो चुका है उसके खिलाफ हिन्द चीन के कुछ लोगों का अपनी खास फौजी गुट में मिलाकर बाहर के कुछ देशों का उसमें रुकावटें डालते रहना۔ जब तक बाहर के कुछ देशों की इस तरह की दखलछन्दाजी बन्द नहीं होगी और सन् 1954 वाले जनीवा के समझौते पर ईमानदारी से अमल नहीं होगा, एशिया के उस अभाग कोने से दुनिया की शान्ति के भंग होने का खतरा बना रहेगा۔

(5) ताइवान यांनी फारमूसा में अमरीकी फौजों का जबरदस्ती डेर डाले रहना۔ ताइवान चीन के शरीर का एक अंग है। किसी बाहर का शक्ति का यह हक नहीं है कि नए चीन और ताइवान के धरलू मामले में किसी तरह का दखल दे। अमरीकी फौजें अगर ताइवान से हटा ली जावें तब नई चीनी सरकार और ताइवान के कुछ लोगों के बीच का आपसी झगडा बिना किसी तरह की लड़ाई के एक दिन में तय हो सकता है। जब तक यह नहीं होता तब तक चीन को और दुनिया के अमन का खतरा बना रहेगा۔

(6) दक्खिन कोरिया को बराबर बढावा दे देकर कोरिया के एक संयुक्त और आजाद देश बनने में कुछ लोगों का रुकावटें डालना۔ कोरिया जब तक बाहर की शक्तियों के दबाव से आजाद हाकर एक संयुक्त राष्ट्र न बन जायगा तब तक उस तरफ से चीन का, एशिया का और दुनिया की शान्ति को खतरा बना रहेगा۔

(7) जापान और दूसरे कुछ देशों में बाहर की शक्तियों के फौजी अड्डों और छात्रानियों की मौजूदगी। जब तक कि सा भी बिदेशी शक्ति के इस तरह के फौजी अड्डे जापान या

کिसی بھی دہش میں موجود ہیں دنیا کے امن کو زبردستی خطرہ ہے۔

(8) یو. این. آو. میں نہ چین جیسے ساٹھ کروڑ آدمیوں کا اچھا استھان کا نہ ملنا۔ تائیوان کی کھیتی باڑی کی سرکار کے نمائندے کو چین کا نمائندہ مانکر یو. این. آو. میں بیٹھنا ایک ایسا بڑا کھلواؤ اور آہٹ ہے کہ جب تک یہ جاری ہے نہ یو. این. آو. میں امن کی صورت قائم رہے نہ اس سے دنیا کے امن کو قائم رکھنے میں مدد مل سکتی ہے اور نہ دنیا سے جنگ کا خطرہ جاسکتا ہے۔

(9) افریقہ میں یا دنیا کے کسی حصے میں کسی دہش یا کسی قوم کے اوپر کسی بھی دہش شکنی کے شائبہ پر پھوٹنے یا دہش کا قیام دینا یا دنیا کے کسی حصے میں بھی رنگ یا نسل کے आधार پر انسانوں کے ساتھ الگ الگ طرح کا رویہ ہونا۔ دنیا میں جب تک غلامی یا اس طرح کے بے ہودہ رویے موجود ہیں تب تک دنیا کے امن کو خطرہ رہیگا۔

(9) افریقہ میں یا دنیا کے کسی حصے میں کسی دہش یا کسی قوم کے اوپر کسی بھی دہش شکنی کے شائبہ پر پھوٹنے یا دہش کا قیام دینا یا دنیا کے کسی حصے میں بھی رنگ یا نسل کے आधार پر انسانوں کے ساتھ الگ الگ طرح کا رویہ ہونا۔ دنیا میں جب تک غلامی یا اس طرح کے بے ہودہ رویے موجود ہیں تب تک دنیا کے امن کو خطرہ رہیگا۔

سوویت روس اور भारत کے رہنماؤں کے سرکاری اور غیر سرکاری بیانوں اور ابھی حال میں شری بلگائن اور شری کوشچو کے دلی کے بیانیوں سے صاف ظاہر ہے کہ اوپر کی سب باتوں میں روس اور भारत یعنی ان دونوں دہشوں کی جھلک اور ان کی سرکاری پالیسی ایک رائے ہیں۔ یہی شری بلگائن اور شری کوشچو کے भारत آنے کا سب سے بڑا مطلب ہے۔ جب تک دنیا کی شائستگی، ترقی اور مہربانی کے راستے ہی یہ سب رکاوٹیں دور نہیں ہوتیں تب تک ہمارا فرض ہے ہمارا دھرم ہے اور ہماری اور دنیا کی سلامتی اسی میں ہے کہ ہم ملکر کھڑے ہوں۔ دنیا کی جھلک کو ایک کرنے کے لئے اور دنیا کے بے لگنے کے لئے آؤدھک ہے کہ پہلے ایشیا اور افریقہ کے سارے دہش جن میں سے ادھک پروانچھنے کے کردار اُنہوں میں سے نکل چکے ہیں یا نکل رہے ہیں، ملکر کھڑے ہوں۔ ایشیا اور افریقہ کے سب دہشوں کے ملکر کھڑے ہونے کے لئے ضروری ہے کہ ایشیا کے تین سب سے بڑے دہش—روس، چین اور भारत—دنیا کے امن اور سب کے بے لگنے کے نام پر ملکر کھڑے ہوں۔ اس وہم و گمان نگاہ سے شری بلگائن اور شری کوشچو کا भारत آنا اس سلسلے کی سب سے ادھک مہم کی گھنٹا ہے۔ انہوں نے پورا رشوائس ہے نہ روس، چین اور भारत نے اس طرح ملکر کھڑے ہونے کے بعد دنیا کے امن کے راستے کی سب رکاوٹیں ایک ایک کر دور ہوجاؤں گی اور سارا مانتو سماج ایک بار سب کے بے لگنے کی ترقی اور سب کی خوشحالی کی طرف بڑھتا ہوا دکھائی دے گا۔ یہی مسئلہ گاندھی کا بتایا ہوا سرورہی کا آدھ ہے۔

24. 11. '55

—سندھ لال۔

کسی بھی دہش میں موجود ہیں دنیا کے امن کو زبردستی خطرہ ہے۔

(8) یو. این. آو. میں نہ چین جیسے ساٹھ کروڑ آدمیوں کا اچھا استھان کا نہ ملنا۔ تائیوان کی کھیتی باڑی کی سرکار کے نمائندے کو چین کا نمائندہ مانکر یو. این. آو. میں بیٹھنا ایک ایسا بڑا کھلواؤ اور آہٹ ہے کہ جب تک یہ جاری ہے نہ یو. این. آو. میں امن کی صورت قائم رہے نہ اس سے دنیا کے امن کو قائم رکھنے میں مدد مل سکتی ہے اور نہ دنیا سے جنگ کا خطرہ جاسکتا ہے۔

(9) افریقہ میں یا دنیا کے کسی حصے میں کسی دہش یا کسی قوم کے اوپر کسی بھی دہش شکنی کے شائبہ پر پھوٹنے یا دہش کا قیام دینا یا دنیا کے کسی حصے میں بھی رنگ یا نسل کے आधार پر انسانوں کے ساتھ الگ الگ طرح کا رویہ ہونا۔ دنیا میں جب تک غلامی یا اس طرح کے بے ہودہ رویے موجود ہیں تب تک دنیا کے امن کو خطرہ رہیگا۔

سوویت روس اور भारत کے رہنماؤں کے سرکاری اور غیر سرکاری بیانوں اور ابھی حال میں شری بلگائن اور شری کوشچو کے دلی کے بیانیوں سے صاف ظاہر ہے کہ اوپر کی سب باتوں میں روس اور भारत یعنی ان دونوں دہشوں کی جھلک اور ان کی سرکاری پالیسی ایک رائے ہیں۔ یہی شری بلگائن اور شری کوشچو کے भारत آنے کا سب سے بڑا مطلب ہے۔ جب تک دنیا کی شائستگی، ترقی اور مہربانی کے راستے ہی یہ سب رکاوٹیں دور نہیں ہوتیں تب تک ہمارا فرض ہے ہمارا دھرم ہے اور ہماری اور دنیا کی سلامتی اسی میں ہے کہ ہم ملکر کھڑے ہوں۔ دنیا کی جھلک کو ایک کرنے کے لئے اور دنیا کے بے لگنے کے لئے آؤدھک ہے کہ پہلے ایشیا اور افریقہ کے سارے دہش جن میں سے ادھک پروانچھنے کے کردار اُنہوں میں سے نکل چکے ہیں یا نکل رہے ہیں، ملکر کھڑے ہوں۔ ایشیا اور افریقہ کے سب دہشوں کے ملکر کھڑے ہونے کے لئے ضروری ہے کہ ایشیا کے تین سب سے بڑے دہش—روس، چین اور भारत—دنیا کے امن اور سب کے بے لگنے کے نام پر ملکر کھڑے ہوں۔ اس وہم و گمان نگاہ سے شری بلگائن اور شری کوشچو کا भारत آنا اس سلسلے کی سب سے ادھک مہم کی گھنٹا ہے۔ انہوں نے پورا رشوائس ہے نہ روس، چین اور भारत نے اس طرح ملکر کھڑے ہونے کے بعد دنیا کے امن کے راستے کی سب رکاوٹیں ایک ایک کر دور ہوجاؤں گی اور سارا مانتو سماج ایک بار سب کے بے لگنے کی ترقی اور سب کی خوشحالی کی طرف بڑھتا ہوا دکھائی دے گا۔ یہی مسئلہ گاندھی کا بتایا ہوا سرورہی کا آدھ ہے۔

—سندھ لال۔

24. 11. '55

सांस्कृतिक साहित्य

سانسکرتک ساہتیہ

हज़रत मोहम्मद और इस्लाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस्लाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

सुमेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, कीमत—डेढ़ रुपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फ़िराक़, कीमत—तीन रुपया

मिलने का पता मल्ले का बंने

حضرت محمد اور اسلام

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—تین روپیہ
اسلام کے پیغمبر کے سمبند میں بھارتیہ بھاشاؤں میں اس سے
سندر کوئی دوسری پستک نہیں

حضرت عیسیٰ اور عیسائی دھرم

لیکھک—پنڈت سندر لال، مولیہ—ڈیڑ روپیہ

ہاتما زر تھستور اور ایرانی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

یہودی دھرم اور سامی سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

اچین مصر کی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

بیل بابل اور اسوریائی پر اچین سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

راچین یونانی سبھیتا اور سنسکرتی

لیکھک—وشومبھر ناتھ پانڈے، قیمت—دو روپیہ

گنگا سے گوتمی تک

(پرگتی شیل کہانی سنڈرہ)

لیکھک—شری مجیب رضوی، قیمت—دو روپیہ

اگ اور آنسو

(بھاپورن سماجک کہانیاں)

لیکھک—ڈاکٹر اختر حسین رائے پوری، قیمت—ڈیڑ روپیہ

قرآن اور دھارمک متبھید

لیکھک—مولانا ابولکلام آزاد، قیمت—ڈیڑ روپیہ

جھنکار

(پرگتی شیل کہانیاں کا سنگره)

لیکھک—رگھوپتی سہائے فراق، قیمت—تین روپیہ

ہندستانی کلچر سوسائٹی ہندوستانی کلتچر سوسائٹی

145 منہی گنج، الہ آباد 145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद

ہندی घर

ہندی گھر

کلیچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر۔ ہاتھک ہندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

لکھک—گاندھیباد کے مانے جانے

بیڈان : شری منچر آلی، مانرنا

سکے 225، کرمیت دا رپیا

—:0:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بھوت دلچسپ کتاب)

لکھک—کرکسیا جیدی

بھمیکا—پنڈت جواہرلال نہرو

موتا کاڈ، موتا ٹائپ، بھوت-سی رنگین تصویروں

دام دا رپیا

—:0:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور کران

275 سکے، دام ڈاڈ رپیا

ہندو مسلم اکوتا

100 سکے، دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبک

کرمیت بارہ آنے

پنجاہ ہمیں کیا سیکھاتا ہے

کرمیت چار آنے

بنگال اور اوسے سبک

کرمیت دا آنے

ہندوستانی کلیچر سوسائٹی

145 مٹھوگنج ایلہاہاد

ہندی گھر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر۔ ہاتھک ہندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

ہماری نئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

لکھک—گاندھیباد کے مانے جانے

بیڈان : شری منچر آلی، مانرنا

سکے 225، کرمیت دا رپیا

—:0:—

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بھوت دلچسپ کتاب)

لکھک—کرکسیا جیدی

بھمیکا—پنڈت جواہرلال نہرو

موتا کاڈ، موتا ٹائپ، بھوت-سی رنگین تصویروں

دام دا رپیا

—:0:—

پنڈت سندرلال جی کی لکھی کتابیں

گیتا اور کران

275 سکے، دام ڈاڈ رپیا

ہندو مسلم اکوتا

100 سکے، دام بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبک

کرمیت بارہ آنے

پنجاہ ہمیں کیا سیکھاتا ہے

کرمیت چار آنے

بنگال اور اوسے سبک

کرمیت دا آنے

ہندوستانی کلیچر سوسائٹی

145 مٹھوگنج ایلہاہاد

دسمبر 1955 دسمبر

NAYA HIND

Monthly Journal of the Hindustani Culture Society

Editorial Board

Dr. Tara Chand M.A., D. Phil. (Oxon)

Mahatma Bhagwan Din

Dr. Syed Mahmud, M.A., Ph.D., Bar-at-Law

Pandit Sundarlal

Bishambhar Nath Pande

Editor-in-Charge

Bishambhar Nath Pande

Asst. Editors

Suresh Rambhai

Mujib Rizvi

Annual Subscription

Inland Rs. 6/-

Foreign Rs. 10/-

Single Copy As. /10/- only

Can be had from —

Manager, NAYA HIND

145, MUTTHIGANJ, ALLAHABAD-3.

145 'مٹھی گلج' الہ آباد

دسمبر 1955 ديسمبـر

کيا کيس سے	صفحہ	کيا کيس سے
1. ہندوستانی کلچر (ایک اُلچا)	...	309 ...
—پنڈت سندھ لال	...	319 ...
2. چینی عروج کی کہانی	...	328 ...
—شروی لی تلو	...	331 ...
3. گاندھی اور کلچر	...	336 ...
—شروی امہاشنکر فاگر ایم. اے.	...	339 ...
4. سولنٹرنا کی یاترا کی چوتھی رپڑی	...	344 ...
—شروی مکن بھائی دیسانی	...	353 ...
5. محمد صاحب کے کچھ اُپدیش
—انوادک شروی معیوب رضوی
6. دنیا بھر کی ماؤں کے نام
—شربیٹی چین کوآنگ . یو
7. کڑیوں کڑیوں کے بیچ دوستی (بھاشن)
—شروی نکیتا خورشچھیو
8. ہماری راے—
ہمارے روسی مہمان؛ راجکمار
امرتنور کے چین کے انوپر—
سندر لال؛ مسجھ کی خوبی؛ گوں
کی چاہ—سریش رام بھائی.

ہمارے روسی مہمان؛ راجکمار
امرتنور کے چین کے انوپر—
سندر لال؛ مسجھ کی خوبی؛ گوں
کی چاہ—سریش رام بھائی.

हिन्दुस्तानी कलचर

هندستانی کاچر

[एक आलोचना]

हैदराबाद की एशियाई अध्ययन समिति (Institute of Asian Studies) के डाइरेक्टर, मराहूर विद्वान, श्री भगवत शरण उपाध्याय ने अपना एक छपा हुआ अंगरेजी निबन्ध हमारे पास भेजा है, जिसका नाम है 'भारतीय संस्कृति की प्रगति' (March of Indian Culture). निबन्ध की कुछ चीजें लगभग उर्दू के शब्दों में हम नीचे देते हैं.

कलचर या संस्कृति की परिभाषा करते हुए लेखक ने लिखा है कि :—

“इतिहास की तरह कलचर या संस्कृति भी एक ऐसी चीज है जो लगातार फूजती फलती और बढ़ती रहती है और जिसका सम्बन्ध सारी दुनिया से है. कोई देरा या कोई काल ऐसा नहीं है कि जहां खड़ा होकर कोई आदमी भी यह कह सके कि इसके आगे किसी चीज से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं. कलचर के अलग अलग रूप आस पास की तब्दीलियों के साथ बदलते रहते हैं, और यह तब्दीलियां अधिकतर अलग अलग जातियों के मिलने से पैदा होती हैं. इसलिये कलचर हम सब की मिली जुली बपौती है जो हम सबकी मिली जुली कोशिश से पैदा होती है. कलचर के अलग अलग हिस्से मिलकर एक शरीर बनाते हैं, फिर यह शरीर खुद एक इकाई बन जाता है, और इस तरह की बहुत सी इकाइयां मिलकर लगातार अपने में दूसरे हिस्सों और दूसरी इकाइयों को मिलाती और समोती रहती है, यहां तक कि यह सिलमिला सारी धरती के ऊपर फैला हुआ दिखाई देता है. कलचर हम सबकी सबको देन है.”

इसके बाद लेखक ने शुरू से अब तक की दुनिया की बड़ी बड़ी सभ्यताओं, उनके विकास और एक दूसरे के साथ उनके सम्बन्ध की चरचा की है।

भारत की चर्चा करते हुए लेखक ने कहा है कि :—

“इस मामले में कोई देश प्रकृति (कुदरत) का इतना चहेता नहीं दिखाई देता जितना हिन्दुस्तान, अनगिनत जातियाँ, सभ्य और असभ्य, हमारी सरहद को पार कर इस देश में आती रहीं और यहां के समाजी ताने बाने में मिलकर एक होजाती रही हैं. हमारे समाजी ढांचे को उन सब से बल मिला है और उसकी शान और सुन्दरता बढ़ी है. सरहद सरहद के नमूने और सरहद सरहद की राकलें मिलकर

[ایک آہچتا]

حیدرآباد کی ایشیائی ادھہیں سکی (Institute of Asian Studies) کے ڈائریکٹر، مشہور ودوان، شری بہکوت شرن آبادھیائے نے اپنا ایک چہا ہوا انگریزی نبلہہ "مارے پاس ہیجا ہے، جس کا نام ہے 'ہارتے' سنسکرتی کی پرگتی" (March of Indian Culture) نبلہہ کی کچھ چہزبں لگ بھیگ انھیں کے شہدوں میں ہم نوچے دیتے ہیں ۔

کلچر یا سلسکری کی پریہاشا کرتے ہوئے لیکھک نے لکھا
 ہے کہ:—

انہاس کی طرح کلچر یا سنسکرتی بھی ایک ایسی چیز ہے جو لگانار پھولتی پھلتی اور پڑھتی رہتی ہے اور جس کا سہجندہ ساری دنیا سے ہے۔ کوئی دیہ یا کوئی کال ایسا نہیں ہے کہ جہاں کھڑا ہو کر کوئی آدمی بھی یہ کہہ سکے کہ اس کے اگے کسی چیز سے میرا کوئی سہجندہ نہیں۔ کلچر کے الگ الگ روپ اس پاس کی تبدیلیوں کے ساتھ بدلتے رہتے ہیں اور یہ تبدیلیاں اُدھکتے الگ الگ جانوروں کے ملنے سے پیدا ہوتی ہیں۔ اس لئے کلچر ہم سب کی مای جلی بیوتی ہے جو ہم سب کی مای جلی کشش سے پیدا ہوتی ہے۔ کلچر کے الگ الگ حصے ملکر ایک شریز بناتے ہیں، پھر یہ شریز خود ایک اڈائی بن جاتا ہے، اور اس طرح کی بہت سی اڈائیاں ملکر لگانار اپنے میں دوسرے حصوں اور دوسری اڈائیوں کو ملاتی اور سموتی رہتی ہے، یہاں تک کہ یہ سلسلہ ساری دھرتی کے اوپر پھیلا ہوا دکھائی دیتا ہے۔ کلچر ہم سب کی سب کو دیتا ہے۔“

اِس کے بعد لیکچر نے شروع سے اہتک کی دنیا کی بڑی بڑی 'سجہ' متاؤں ' اُن کے دکس اور ایک دوسرے کے ساتھ اُن کے سہندہ کی چرچا کی ہے .

بھارت کی چرچا کرتے ہوئے لپٹک لے کہا ہے کہ:—

”اِس معاملے میں کوئی دہی پرکرتی (قدرت) کا اثنا چھپتا نہیں دکھائی دیتا جتنا ہندستان۔ انگنت جاتیوں، سبھیہ اور اُسبھیہ، ہماری سرحد کو پار کر اِس دیش میں آتی رہیں اور یہاں کے سماجی قائلے ہائے میں ملکر ایک ہو جاتی رہی ہیں۔ ہمارے سماجی دھانچے کو اُن سب سے بل ملا ہے اور اُس کی شان اور سندھوتا بڑھی ہے۔ طرح طرح کے نمونے اور طرح طرح کی شکلوں، منکر

اس دیش کی کلچر میں سیکڑوں طرح کے نئے نئے رنگ اور نئی شان پیدا کرتے رہے ہیں۔ ہزاروں برس کے اندر انکنت جانوروں کے میل سے آجکل کی بھارتیہ سانسرتی بنی ہے۔“

لےکھ کا بیچارہ ہے کہ سندھو ندی کی پرانی سیہنٹا اور دجلہ اور فرات ندیوں کے کنارے کی پراچین سومیری سیہنٹا دونوں میں گہرا سہملاہ تھا۔

جب جب کوئی دو جاتیان اس دیش میں ملتی تھیں تو پہلی گرو میں لڑائیاں اور جھگڑے ہوتے تھے۔ پر تھوڑے ہی دنوں میں دونوں کے میل سے ایک نئی اور دونوں سے ادھک سندھ چیز پیدا ہو جاتی تھی، یہاں تک کہ دونوں کے الگ الگ وجود کا نشان تک نہ رہ جاتا تھا۔

آریہ لوگوں نے اپنے سے پہلے کے باشندوں کو لغت کے ساتھ ’کوشن‘ (کالے آدمی)، ’اناس‘ (جن کی ناک دیبی ہوئی تھی)، ’ادیو‘ (ایشور کو نہ ماننے والے)، ’ایجن‘ (یکہ نہ کرے والے)، ’ششن دیو‘ (لنگ پوجنے والے)، ’داس‘ (غلام)، ’داسیو‘ (قاتل) جیسے ناموں سے پکارا۔ اس سہنے کے آریہ ادھکتر یا تو اٹھاؤ چولہا رھتے تھے یا چھوٹی چھوٹی بستیوں میں بستے تھے۔ یہاں کے پرانے باشندے جو دروز کہلاتے تھے، بڑے بڑے شہروں میں رھتے تھے، جن کے چاروں طرف پکی اینٹوں کی اونچی دیواریں ہوتی تھیں۔ صدیوں دونوں میں لڑائیاں ہوتی رھیں۔ آخر دونوں ملکر ایک دوسرے کے رنگ میں رنگ گئے۔

دنیا کے انہاس میں انٹر کم سیہیہ جانوروں نے ادھک سیہیہ جانوروں کو جیتا ہے۔ لیکن انت میں کلچر نے معاملہ میں جیتنے والی جاتی نے ہاری ہوئی قوم کے سامنے جوا ڈال دیا۔ ایران میں آریوں کے اندر شودر جانی نہیں تھی۔ انھرو وید لکھ جانے کے سہنے تک اس دیش میں چاروں بڑی بڑی جانیوں روپ لے چکی تھیں جن میں شودر سب سے نیچے تھے۔ دروزوں اور آریوں کے مل جانے سے شودروں کی گنتی بہت بڑھ گئی۔ دروزوں کے دیونا ’شو‘ کی پوجا سارے دیش میں ہولے لی اور دھیرے دھیرے لنگ کے روپ میں سب جگہ چل پڑی۔ یوگ اور دھیان، سانت اور گمہ کی پوجا کا بھی اس سہنے رواج ہوا۔ سانت نے ندی کا روپ لیا۔ گمہ کے لئے وشیش آدر بھی آریوں نے اس دیش کے پرانے باشندوں سے سیکھا۔ دھیرے دھیرے آریوں کے بہت سے نئے نئے شہر یہاں آباد ہو گئے جن میں پشلاوتی، کشلا، ہستناپور، اندر پرستہ، کشی، ایردھیا اور مہاتل ادھک مشور رھیں۔

سورگہ شری ہال گنگا دھرتلک نے بتایا تھا کہ رگوید میں اور انھرو وید میں بہت سے منتر ایسے رھیں جن سے اس زمانے کی آریہ سیہنٹا اور سومیری سیہنٹا کے گہرے سہملاہ کا پتا چلتا ہے۔ شری بھگوت شرمن آبادھیائے کا کہا

اس دیش کی کلچر میں سیکڑوں طرح کے نئے نئے رنگ اور نئی شان پیدا کرتے رہے ہیں۔ ہزاروں برس کے اندر انکنت جانوروں کے میل سے آجکل کی بھارتیہ سانسرتی بنی ہے۔“

لےکھ کا بیچارہ ہے کہ سندھو ندی کی پرانی سیہنٹا اور دجلہ اور فرات ندیوں کے کنارے کی پراچین سومیری سیہنٹا دونوں میں گہرا سہملاہ تھا۔

جب جب کوئی دو جاتیان اس دیش میں ملتی تھیں تو پہلی گرو میں لڑائیاں اور جھگڑے ہوتے تھے۔ پر تھوڑے ہی دنوں میں دونوں کے میل سے ایک نئی اور دونوں سے ادھک سندھ چیز پیدا ہو جاتی تھی، یہاں تک کہ دونوں کے الگ الگ وجود کا نشان تک نہ رہ جاتا تھا۔

آریہ لوگوں نے اپنے سے پہلے کے باشندوں کو لغت کے ساتھ ’کوشن‘ (کالے آدمی)، ’اناس‘ (جن کی ناک دیبی ہوئی تھی)، ’ادیو‘ (ایشور کو نہ ماننے والے)، ’ایجن‘ (یکہ نہ کرے والے)، ’ششن دیو‘ (لنگ پوجنے والے)، ’داس‘ (غلام)، ’داسیو‘ (قاتل) جیسے ناموں سے پکارا۔ اس سہنے کے آریہ ادھکتر یا تو اٹھاؤ چولہا رھتے تھے یا چھوٹی چھوٹی بستیوں میں بستے تھے۔ یہاں کے پرانے باشندے جو دروز کہلاتے تھے، بڑے بڑے شہروں میں رھتے تھے، جن کے چاروں طرف پکی اینٹوں کی اونچی دیواریں ہوتی تھیں۔ صدیوں دونوں میں لڑائیاں ہوتی رھیں۔ آخر دونوں ملکر ایک دوسرے کے رنگ میں رنگ گئے۔

دنیا کے انہاس میں انٹر کم سیہیہ جانوروں نے ادھک سیہیہ جانوروں کو جیتا ہے۔ لیکن انت میں کلچر نے معاملہ میں جیتنے والی جاتی نے ہاری ہوئی قوم کے سامنے جوا ڈال دیا۔ ایران میں آریوں کے اندر شودر جانی نہیں تھی۔ انھرو وید لکھ جانے کے سہنے تک اس دیش میں چاروں بڑی بڑی جانیوں روپ لے چکی تھیں جن میں شودر سب سے نیچے تھے۔ دروزوں اور آریوں کے مل جانے سے شودروں کی گنتی بہت بڑھ گئی۔ دروزوں کے دیونا ’شو‘ کی پوجا سارے دیش میں ہولے لی اور دھیرے دھیرے لنگ کے روپ میں سب جگہ چل پڑی۔ یوگ اور دھیان، سانت اور گمہ کی پوجا کا بھی اس سہنے رواج ہوا۔ سانت نے ندی کا روپ لیا۔ گمہ کے لئے وشیش آدر بھی آریوں نے اس دیش کے پرانے باشندوں سے سیکھا۔ دھیرے دھیرے آریوں کے بہت سے نئے نئے شہر یہاں آباد ہو گئے جن میں پشلاوتی، کشلا، ہستناپور، اندر پرستہ، کشی، ایردھیا اور مہاتل ادھک مشور رھیں۔

سورگہ شری ہال گنگا دھرتلک نے بتایا تھا کہ رگوید میں اور انھرو وید میں بہت سے منتر ایسے رھیں جن سے اس زمانے کی آریہ سیہنٹا اور سومیری سیہنٹا کے گہرے سہملاہ کا پتا چلتا ہے۔ شری بھگوت شرمن آبادھیائے کا کہا

ہے کہ 'اثر' وہد کے ایک منتر میں جو دو شبد 'اثر' اور 'ب'لی' آتے ہیں وہ سومہریا کے دو مشہور راجاؤں 'ایللو' اور 'ہیللو' کے نام ہیں۔ لیکھک کا خیال ہے بھارت کی انیک ہاشاؤں میں جر ادٹہ بلائے شبد چلے ہیں وہ انہیں ایللو اور ہیللو سے بنے ہیں۔ اٹھروہد کے بہت سے جادو اور منتر پراچین بیبلونیا (بابل) کے ساتھ اور وہاں کے رواج سے لے گئے ہیں ۔

بھارت کے منتر 'شپت پتہ براہمن' میں توفان کی کہانی ہجرت نوح کے کسی توفان کی کہانی ہے جو کہا جاتا ہے عیسیٰ سے لگ بھگ تین ہزار برس پہلے بابل میں آیا تھا ۔ یہ کہانی شپت پتہ براہمن کے لکھ جانے سے کم سے کم ایک ہزار برس پہلے پراچین اسوریا میں موجود تھی ۔ سومہری سہیتہ میں اس کہانی کے ساتھ رپو سدو کا نام لیا جاتا ہے 'انجیل اور قرآن میں اسی کے ساتھ حضرت نوح کا نام لیا جاتا ہے اور سنسکرت سہیتہ میں منو کا نام لیا جاتا ہے ۔ سنسکرت سہیتہ میں لکھا ہے کہ جب اٹھ ہزار سال بعد منو کی کشتی کسی پہاڑ پر جا کر لگی اور منو نے دیکھا کہ اُن کی کشتی میں طرح طرح کے جانداروں کے جوڑے بیچ گئے ہیں جن سے سرشتی اُکے کو چل سکے تو انہوں نے بھوکاں کو دھنیا ہان دیا اور پکڑ کرنا چاہا ۔ پر انہوں نے دیکھا کہ پکڑ کرانے کے لئے پروہت اِس دیش میں نہیں تھے' تب اسوریا یعنی بابل دیش سے پروہت بلائے گئے جنہیں شپت پتہ براہمن میں 'اسور براہمن' کہا گیا ہے ۔ اسوریا کے لوگوں کو اُن دنوں اسور کہا جاتا تھا ۔

اس کے بعد بھارت میں ایرانیوں کا آنا ہوا۔ ایرانی سمرات دارا کا سندھ اور پنجہسی پنجاب تک راج تھا ۔ یہ راج سر برس سے اوپر تک رہا ۔ چانکیہ اور چندرگپت موریا نے اپنے دربار میں ایرانی طور طریقہ اور ایران کے درباری ریت رواج جاری کیئے ۔ ایران کے اثر سے ہی بھارت میں وہ کھروشتھی لہی چلی جو فارسی کی طرح داہنے سے ہائیں کو لکھی جاتی تھی ۔ سمرات اشوک کے بہت سے شلا لیکھ اسی کھروشتھی میں ہیں اور اُن میں 'بہت سے ایرانی شبد آتے ہیں ۔ پہاڑوں' چٹانوں اور اونچے اونچے کہمبروں پر اس طرح کے لیکھ یا کتبہ کھودنے کا رواج بھی' جسے سمرات اشوک نے دنیا میں اُتلا ادھک چمکایا' بھارت نے ایران سے اور ایران نے اسوریا سے لیا ۔

اُس زمانے کے بھارت کی موتی نورمان کلا پر ایران اور اُس کے اُس پاس کے دیشوں کا گہرا اثر پڑا ۔ مصر کے اندر عیسیٰ سے تین ہزار برس پہلے سائڈ کی پوجا' بابل اور اسوریا میں سائڈ کی پوجا اور بھارت میں نندی کی پوجا کا ایک دوسرے کے ساتھ گہرا سمبندھ ہے ۔ تشلا اور دوسرے استھانوں کی ہرودہ مورثیں میں ایرانی اور یونانی

بھارت کے گرتھ 'شپت پتہ براہمن' میں طوفان کی کہانی حضرت نوح کے اُسی طوفان کی کہانی ہے جو کہا جاتا ہے عیسیٰ سے لگ بھگ تین ہزار برس پہلے بابل میں آیا تھا ۔ یہ کہانی شپت پتہ براہمن کے لکھ جانے سے کم سے کم ایک ہزار برس پہلے پراچین اسوریا میں موجود تھی ۔ سومہری سہیتہ میں اس کہانی کے ساتھ رپو سدو کا نام لیا جاتا ہے 'انجیل اور قرآن میں اسی کے ساتھ حضرت نوح کا نام لیا جاتا ہے اور سنسکرت سہیتہ میں منو کا نام لیا جاتا ہے ۔ سنسکرت سہیتہ میں لکھا ہے کہ جب اٹھ ہزار سال بعد منو کی کشتی کسی پہاڑ پر جا کر لگی اور منو نے دیکھا کہ اُن کی کشتی میں طرح طرح کے جانداروں کے جوڑے بیچ گئے ہیں جن سے سرشتی اُکے کو چل سکے تو انہوں نے بھوکاں کو دھنیا ہان دیا اور پکڑ کرنا چاہا ۔ پر انہوں نے دیکھا کہ پکڑ کرانے کے لئے پروہت اِس دیش میں نہیں تھے' تب اسوریا یعنی بابل دیش سے پروہت بلائے گئے جنہیں شپت پتہ براہمن میں 'اسور براہمن' کہا گیا ہے ۔ اسوریا کے لوگوں کو اُن دنوں اسور کہا جاتا تھا ۔

اس کے بعد بھارت میں ایرانیوں کا آنا ہوا۔ ایرانی سمرات دارا کا سندھ اور پنجہسی پنجاب تک راج تھا ۔ یہ راج سر برس سے اوپر تک رہا ۔ چانکیہ اور چندرگپت موریا نے اپنے دربار میں ایرانی طور طریقہ اور ایران کے درباری ریت رواج جاری کیئے ۔ ایران کے اثر سے ہی بھارت میں وہ کھروشتھی لہی چلی جو فارسی کی طرح داہنے سے ہائیں کو لکھی جاتی تھی ۔ سمرات اشوک کے بہت سے شلا لیکھ اسی کھروشتھی میں ہیں اور اُن میں 'بہت سے ایرانی شبد آتے ہیں ۔ پہاڑوں' چٹانوں اور اونچے اونچے کہمبروں پر اس طرح کے لیکھ یا کتبہ کھودنے کا رواج بھی' جسے سمرات اشوک نے دنیا میں اُتلا ادھک چمکایا' بھارت نے ایران سے اور ایران نے اسوریا سے لیا ۔

اُس زمانے کے بھارت کی موتی نورمان کلا پر ایران اور اُس کے اُس پاس کے دیشوں کا گہرا اثر پڑا ۔ مصر کے اندر عیسیٰ سے تین ہزار برس پہلے سائڈ کی پوجا' بابل اور اسوریا میں سائڈ کی پوجا اور بھارت میں نندی کی پوجا کا ایک دوسرے کے ساتھ گہرا سمبندھ ہے ۔ تشلا اور دوسرے استھانوں کی ہرودہ مورثیں میں ایرانی اور یونانی

اکسیر भारतीय رنگ سے رنگे हुए साफ दिखाई देते हैं. चांची जैसी जगहों के 'स्तूप' हमें मिस्र के 'परेमिड' और सुमेर के 'जिगुरत' की याद दिलाते हैं. तीनों का मूल्य के साथ सम्बन्ध था.

ईसा की शुरू की सदियों में भारत के अन्दर शहर के शहर यूनानियों के आबाद थे. बहुत से दूसरे शहरों में यूनानियों के बड़े बड़े मोहल्ले थे. यूरप का दक्खिन पूरब का सारा हिस्सा, मिस्र का उत्तर का भाग और आक्सस और गंगा नदी तक सारा एशिया यूनानियों के कब्जे में था. पाटलीपुत्र (पटना) तक उनके हमले हुए. उस जमाने की लिखी हुई गागी संहिता में इन यूनानियों का 'दुष्ट विक्रान्त यवन' यानी बदमाश और बहादुर यवन कहा गया है. लिखा है कि इन लोगों के पाटलीपुत्र के एक हमले के बाद आस पास के तमाम इलाक़े से मर्द इतने अधिक मारे गए थे कि बाद में सारा काम काज औरतों को करना पड़ता था, कई कई औरतें मजबूर होकर एक मर्द से शादी करने लगी थीं और जब कभी इधर उधर अचानक कोई मर्द दिखाई दे जाता था तो औरतें उसे हैरान होकर देखती थीं. लेकिन इस कलेशाम के बाद भी जब यूनानी और हिन्दु-स्तानी मिल गए तो दोनों दूध और चीनी की तरह एक हो गए और दोनों ने मिलकर भारतीय संस्कृति की रचना की.

उस जमाने में भारत के अन्दर यूनानी डामे खेले जाते थे. यूनानी साहित्य का भारत की भाषाओं में अनुवाद होता था, और लोग उन किताबों का खूब शौक से पढ़ते थे. यूनानी भाषा का भी भारत की भाषाओं पर गहरा असर पड़ा. संस्कृत डामों में 'यवनिका' शब्द यूनानी से लिया हुआ है. भारतीय डामों पर यूनानी डामों का असर है. उस जमाने के भारतीय सिक्के बाहर करते हैं कि इस वंश के बहुत से लोग उन दिनों यूनानी और खराष्ट्रि दोनों भाषाओं को समझते थे.

भारत की ज्योतिष विद्या पर भी यूनानी ज्योतिष का बहुत बड़ा असर पड़ा. आज तक हिन्दुओं की जन्म पत्री में जो 'होराचक्र' बनता है उसमें 'होरा' वही है जो अंगरेजी शब्द 'होरास्कोप' का हारा है और दोनों मिस्र के सूर्य देवता 'होरस' से लिये गए हैं. हिन्दू विवाह के लिये सबसे शुभ लग्न जिसमें कालिदास ने शिव और पार्वती की शादी कराई है 'जामित्र' है जो यूनानी 'ज्यामेत्रान' से लिया गया है. गागी संहिता में लिखा है कि ज्योतिष विद्या का जन्म यवनों से ही हुआ और इसके लिये वह "पूज्य" है.

उससे पहले के हमारे सिक्के दूसरी शकल के होते थे. आजकल के सिक्कों की शकल हमने यूनानियों से ली. हिन्दी शब्द दाम, जिसके मानी मोल या कीमत है, यूनानी शब्द है.

अब भारतीय रत्न में रत्न हरे रत्न दिलाई दिये हैं. सान्छी जिस जगहों के 'स्तूप' हमें मिस्र के 'परेमिड' और सुमेर के 'जिगुरत' की याद दिलाते हैं. तीनों का मूल्य के साथ सम्बन्ध था.

عیسیٰ کی شروع کی صدیوں میں بھارت کے اندر شہر کے شہر یونانیوں کے آباد تھے. بہت سے دوسرے شہروں میں یونانیوں کے بڑے بڑے محلے تھے. یورپ کا دھنیں یورپ کا سارا حصہ، مصر کا اتر کا بھاگ اور آکسس اور گنگا ندی تک سارا ایشیا یونانیوں کے قبضے میں تھا. پانٹی پٹر (پٹنہ) تک ان کے حملے ہوئے. اُس زمانے کی لکھی ہوئی لکھی سنگیٹا میں ان یونانیوں کو دشت وکرائت یونہ، یعنی بدعاش اور بہادر یون کہا گیا ہے. لکھا ہے کہ ان لوگوں کے پانٹی پٹر کے ایک حملے کے بعد اُس پاس کے تمام علاقے سے مرد اُتے ادھک مارے گئے تھے کہ بعد میں سارا کلم کالج عورتوں کو کرنا پڑتا تھا، کئی کئی عورتیں مجبور ہو کر ایک مرد سے شادی کرتے لگی تھیں اور جب کبھی اندر اندر اچانک کوئی مرد دھائی دے جاتا تھا تو عورتیں اُسے سیدان ہو کر دیکھتی تھیں. لیکن اِس نال علم کے بعد جب یونانی اور ہندستانی مل گئے تو دونوں دودھ اور چھلی کی طرح ایک ہو گئے اور دونوں نے ملکر भारतीय سنسکرتی کی رچنا کی.

اُس زمانے میں بھارت کے اندر یونانی قرا مے کھیلے جاتے تھے. یونانی ساحتیہ کا بھارت کی بھاشاؤں میں انوراد ہوتا تھا اور لوگ ان کتابوں کو خوب شوق سے پڑھتے تھے. یونانی بھاشا کا بھی بھارت کی بھاشاؤں پر گہرا اثر پڑا. سنسکرت قراموں میں 'یونیکا' شبد یونانی سے لیا ہوا ہے. भारतीय قراموں پر یونانی قراموں کا اثر ہے. اُس زمانے کے भारतीय سکھ ظاہر کرتے ہیں کہ اِس دیش کے بہت سے لوگ ان دنوں یونانی اور کھروشیہ دونوں بھاشاؤں کو سمجھتے تھے.

بھارت کی جیونہی دنیا پر بھی یونانی جیونہی کا بہت بڑا اثر پڑا. آج تک ہندوؤں کی جنم پتری میں جو 'ہورا چکر' بنتا ہے اُس میں 'ہورا' وہی ہے جو انگریزی شبد 'ہوروسکوپ' کا ہارو ہے اور دونوں مصر کے سورج دیوتا 'ہورس' سے لئے گئے ہیں. ہندو رواد کے لئے سب سے شہ لکن جس میں گائیداس نے شو اور پاروتی کی شادی کرائی ہے 'جامتر' ہے جو یونانی 'زیا میتران' سے لیا گیا ہے. لکھی سنگیٹا میں لکھا ہے کہ جیونہی ودیا کا جنم یونہی سے ہی ہوا اور اِس کے لئے وہ "پوجیہ" ہیں.

اُس سے پہلے کے ہمارے سکھ دوسری شکل کے ہوتے تھے. آجکل کے سکوں کی شکل ہم نے یونانیوں سے لی. ہندی شبد 'دाम' جس کے معنی مول یا قیمت ہے، یونانی شبد ہے.

مہاتما बुद्ध थे अपने चेलों को साफ शब्दों में जना किया था कि मेरी किसी तरह की मूर्ति हरगिष न बनाना। उसी का नतीजा था कि शुरू के बौद्ध धर्म में जिसे 'हीनयान' कहा जाता है बुद्ध की कोई मूर्ति न बनती थी, और जहाँ किसी चिन्ह की जरूरत पड़ती थी तो केवल छत्र या चक्र या बोधि ध्वज की बसबीर बना दी जाती थी। लेकिन बुद्ध के मरने के कई सौ बरस बाद पहली सदी ईसवी में जब बौद्ध धर्म की महायान सम्प्रदाय कायम हुई तो बुद्ध की मूर्तियाँ भी जगह जगह बनने लगीं, यहां तक कि दुनिया में शायद जितनी बुद्ध की मूर्तियाँ बनी हैं उतनी आज तक किसी दूसरे की नहीं बनीं। शुरू से अब तक बुद्ध की इन मूर्तियों में और बौद्ध मन्दिरों में यूनानी असर साफ दिखाई देता है लेकिन वह सारा असर गहरे भारतीय रंग में रंगा हुआ है।

धीरे धीरे जीवन के हर मैदान में यूनानी और हिन्दु-स्तानी मिलकर एक हो गए। सैकड़ों यूनानियों ने वैष्णव धर्म स्वीकार किया और लाखों ने बौद्ध धर्म अपनाया।

यूनानियों के बाद शाक जाति के लोगों ने बाहर से आकर भारत के बड़े बड़े हिस्सों पर राज किया, मालवा और महाराष्ट्र तक उनकी बसातियाँ और उनकी हुकूमत थी। उनके राजाओं और यहां के राजाओं में लड़ाइयाँ भी हुईं। धीरे धीरे वह सब भी भारत के जीवन में रल मिल गए। आजकल की संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य को सबसे ज्यादा उन्नत विदेशी शक राजाओं ही न द्वा. ज्यातिष ने भी उनके जमाने में बहुत बड़ी तरक्की की। ज्यातिष का मशहूर भारतीय विद्वान बराह मिहिर खुद शाक जाति का था। उसका नाम ईरानी नाम था। यूनानी विद्वान भी उन दिनों इस देश में खूब पढ़ा जाता था।

हमारी आजकल की राष्ट्रीय पोशाक अचकन और पाजामा शुरू में शक जाति के लोगों ने इस देश में जारी की, बाद में मुगल बादशाहों ने और अबध क नवाबों ने इसे और अधिक सुन्दर रूप दिया। कुरता और शलवार की चाल भी इस देश में शक लोगों से ही आई।

भारत में 'सूर्य' की जा सब से पुरानी मूर्ति मिलती है वह पहली सदी ईसवी की बनी हुई है। उसके शरीर पर यही विदेशी कुरता, विदेशी शलवार और विदेशी चोरा दिखाई देता है। पांव में ऊँचे पंशयाइ जूते हैं, सिर पर ईरानी टोपी और कभर से खंजर लटकता हुआ। किसी हिन्दुस्तानी देवता को बससे पहले इस तरह के कपड़े नहीं पहनाए जाते थे, न इस तरह की टोपी, न इस तरह के जूते।

वैदिक धर्म में भी सूर्य की पूजा का चिक्र आता है लेकिन शकों से पहले यहां सूर्य की मूर्ति नहीं बनती थी। सूर्य की जा मूर्तियाँ धांती पहने हुए और द्रुपट्ट काले हुए मिलती

महात्मा बुद्ध ने अपने चेलों को साफ शब्दों में जना किया था कि मेरी किसी तरह की मूर्ति हरगिष न बनाना। उसी का नतीजा था कि शुरू के बौद्ध धर्म में जिसे 'हीनयान' कहा जाता है बुद्ध की कोई मूर्ति न बनती थी, और जहाँ किसी चिन्ह की जरूरत पड़ती थी तो केवल छत्र या चक्र या बोधि ध्वज की बसबीर बना दी जाती थी। लेकिन बुद्ध के मरने के कई सौ बरस बाद पहली सदी ईसवी में जब बौद्ध धर्म की महायान सम्प्रदाय कायम हुई तो बुद्ध की मूर्तियाँ भी जगह जगह बनने लगीं, यहां तक कि दुनिया में शायद जितनी बुद्ध की मूर्तियाँ बनी हैं उतनी आज तक किसी दूसरे की नहीं बनीं। शुरू से अब तक बुद्ध की इन मूर्तियों में और बौद्ध मन्दिरों में यूनानी असर साफ दिखाई देता है लेकिन वह सारा असर गहरे भारतीय रंग में रंगा हुआ है।

दूसरे दूसरे ज़मानों के हर मैदान में यूनानी और हेल्लेनिकी मूलक एक हो गئے. सैकड़ों यूनानियों ने वैष्णव धर्म स्वीकार किया और लाखों ने बौद्ध धर्म अपनाया।

यूनानियों के बाद शाक जाति के लोगों ने बाहर से आकर भारत के बड़े बड़े हिस्सों पर राज किया, मालवा और महाराष्ट्र तक उनकी बसातियाँ और उनकी हुकूमत थी। उनके राजाओं और यहां के राजाओं में लड़ाइयाँ भी हुईं। धीरे धीरे वह सब भी भारत के जीवन में रल मिल गए। आजकल की संस्कृत भाषा और संस्कृत साहित्य को सबसे ज्यादा उन्नत विदेशी शक राजाओं ही न द्वा. ज्यातिष ने भी उनके जमाने में बहुत बड़ी तरक्की की। ज्यातिष का मशहूर भारतीय विद्वान बराह मिहिर खुद शाक जाति का था। उसका नाम ईरानी नाम था। यूनानी विद्वान भी उन दिनों इस देश में खूब पढ़ा जाता था।

हमारी आजकल की राष्ट्रीय पोशाक अचकन और पाजामा शुरू में शक जाति के लोगों ने इस देश में जारी की, बाद में मुगल बादशाहों ने और अबध क नवाबों ने इसे और अधिक सुन्दर रूप दिया। कुरता और शलवार की चाल भी इस देश में शक लोगों से ही आई।

भारत में 'सूर्य' की जा सब से पुरानी मूर्ति मिलती है वह पहली सदी ईसवी की बनी हुई है। उसके शरीर पर यही विदेशी कुरता, विदेशी शलवार और विदेशी चोरा दिखाई देता है। पांव में ऊँचे पंशयाइ जूते हैं, सिर पर ईरानी टोपी और कभर से खंजर लटकता हुआ। किसी हिन्दुस्तानी देवता को बससे पहले इस तरह के कपड़े नहीं पहनाए जाते थे, न इस तरह की टोपी, न इस तरह के जूते।

वैदिक धर्म में भी सूर्य की पूजा का चिक्र आता है लेकिन शकों से पहले यहां सूर्य की मूर्ति नहीं बनती थी। सूर्य की जा मूर्तियाँ धांती पहने हुए और द्रुपट्ट काले हुए मिलती

ہے وہ سب باد کی ہے۔ جہاں تک معلوم ہوتا ہے سورج کی مورتی بنا کر پوجنے کا رواج اس देश میں شک جاتی کے لوگوں سے ہی آیا۔ ہمارے پوراں میں یہ کتا آتی ہے کہ ملتان میں جب سورج کا پہلا مندر بنایا گیا تو مورتی کی استہیا کرنے اور مورتی کی پوجا شروع کرنے کی ودھی یہاں کے کسی براہمن کو نہیں آتی تھی۔ اس لئے اس کام کے لئے بلور سے "شاک دیوہی براہمن" بلاتے گئے تھے۔ آج تک بھارت میں شاک دیوہی براہمن موجود ہیں اور اتر بھارت میں بہت سے دوسرے براہمن ان "دیوہی" براہمنوں کا چھوٹا پانی نہیں پیتے۔

شاک جاتی کے لوگوں کی بڑی بڑی تعداد بھارت کے رہنے والوں میں ملتی ہے۔ آج بھارت واسیوں کے خون میں، ان کے سادھنوں میں، ان کی کلا اور حیضان میں، اور ان کی کلچر میں وہ پوری طرح سمائی ہوئی ہے۔ ان کے بہت سے راجا اور سردار جو "شاہی" اور "شاہان شاہی" کہلاتے تھے بھارت سے نکل کر بہت دنوں تک افغانستان میں راج کرتے رہے۔ ساتھ پڑھوں تک وہ اتر پچھمی سرحد پر جم کر باہر کے حملوں سے بھارت کی رکشا کرتے رہے۔ شری بھکت شرن آپادھیائے کا کہنا ہے کہ: "سنسکرت ہماری آن کا چھوٹا گھمٹ کتنا چمک اٹھتا ہے جب ہم یہ دیکھتے ہیں کہ جس سے ہمارے پوجیہ راجا بوج اس اہلوارا کے شہر کو لوٹ رہے تھے جس کا راجا مسلمان حملہ آوروں سے لڑنے دور گیا ہوا تھا" ٹھیک اُس سے بھارت کے پچھمی بھاگ کے یہ بہادر سنسکرتی، ہندوکش کی پہاڑیوں کے نذر چڑھدار (شاک راجا) اپنی جگہ پر ڈٹے ہوئے لگاتار اتر پچھم کے ان زبردست شوروں سے لہا لیتے رہتے تھے جو بھارت پر حملہ کرنے کے لئے اُدھر بڑھتے تھے۔ انت میں وہ اس بارے کے سامنے نہ ٹھہر سکے اور بے عزتی کی زندگی بٹانے کی جگہ انہوں نے آگ میں کود کود کر اپنے کو ختم کر دیا۔"

اس میں سنسکرت نہیں اُتھائیں کے بہت سے بولے ہوئے ہلنے ہمارے لئے کافی منورجک اور شمشاد ہو سکتے ہیں۔

آج تک ویدیشی کنشک کا چلایا ہوا شاکا سموت سودیشی وکرماندیتھ کے نام پر چلے ہوئے وکرماندیتھ کے مقابلہ میں بھارت کے انہی بھاگوں میں خاص کر جنم پتروں اور پنچانگوں میں ادھک پوتر مانا جاتا ہے۔

کنشک کے راج میں مدھیہ ایشیا کا بہت سا حصہ، کشمیر، پنجاب اور اتر پردیش کا بہت سا حصہ شامل تھا۔ دھرم کے معاملے میں وہ حد درجہ کا آدار، سب دھرموں کو ایک نگاہ سے دیکھنے والا اور سب کے ساتھ ایکسا برتاؤ کرنے والا تھا۔ بودھ دھرم کی سیوا ایک اشوک کو چھوڑ کر کسی بھارتیہ راجا نے اُس سے ادھک نہیں کی۔ چین کے ساتھ بھی اُس کا گہرا سمبندھ تھا۔ پردیسی پنجاب میں چھٹیوں کی سب سے پہلی آبادی "چین مکتی" اسی کی

شاک جاتی کے لوگوں کی بہت بڑی تعداد بھارت کے رہنے والوں میں مل گئی۔ آج بھارت واسیوں کے خون میں، ان کے سادھنوں میں، ان کی کلا اور حیضان میں، اور ان کی کلچر میں وہ پوری طرح سمائی ہوئی ہے۔ ان کے بہت سے راجا اور سردار جو "شاہی" اور "شاہان شاہی" کہلاتے تھے بھارت سے نکل کر بہت دنوں تک افغانستان میں راج کرتے رہے۔ ساتھ پڑھوں تک وہ اتر پچھمی سرحد پر جم کر باہر کے حملوں سے بھارت کی رکشا کرتے رہے۔ شری بھکت شرن آپادھیائے کا کہنا ہے کہ: "سنسکرت ہماری آن کا چھوٹا گھمٹ کتنا چمک اٹھتا ہے جب ہم یہ دیکھتے ہیں کہ جس سے ہمارے پوجیہ راجا بوج اس اہلوارا کے شہر کو لوٹ رہے تھے جس کا راجا مسلمان حملہ آوروں سے لڑنے دور گیا ہوا تھا" ٹھیک اُس سے بھارت کے پچھمی بھاگ کے یہ بہادر سنسکرتی، ہندوکش کی پہاڑیوں کے نذر چڑھدار (شاک راجا) اپنی جگہ پر ڈٹے ہوئے لگاتار اتر پچھم کے ان زبردست شوروں سے لہا لیتے رہتے تھے جو بھارت پر حملہ کرنے کے لئے اُدھر بڑھتے تھے۔ انت میں وہ اس بارے کے سامنے نہ ٹھہر سکے اور بے عزتی کی زندگی بٹانے کی جگہ انہوں نے آگ میں کود کود کر اپنے کو ختم کر دیا۔"

اس میں سنسکرت نہیں اُتھائیں کے بہت سے بولے ہوئے ہلنے ہمارے لئے کافی منورجک اور شمشاد ہو سکتے ہیں۔

آج تک ویدیشی کنشک کا چلایا ہوا شاکا سموت سودیشی وکرماندیتھ کے نام پر چلے ہوئے وکرماندیتھ کے مقابلہ میں بھارت کے انہی بھاگوں میں خاص کر جنم پتروں اور پنچانگوں میں ادھک پوتر مانا جاتا ہے۔

کنشک کے راج میں مدھیہ ایشیا کا بہت سا حصہ، کشمیر، پنجاب اور اتر پردیش کا بہت سا حصہ شامل تھا۔ دھرم کے معاملے میں وہ حد درجہ کا آدار، سب دھرموں کو ایک نگاہ سے دیکھنے والا اور سب کے ساتھ ایکسا برتاؤ کرنے والا تھا۔ بودھ دھرم کی سیوا ایک اشوک کو چھوڑ کر کسی بھارتیہ راجا نے اُس سے ادھک نہیں کی۔ چین کے ساتھ بھی اُس کا گہرا سمبندھ تھا۔ پردیسی پنجاب میں چھٹیوں کی سب سے پہلی آبادی "چین مکتی" اسی کی

کنشک کے راج میں مدھیہ ایشیا کا بہت سا حصہ، کشمیر، پنجاب اور اتر پردیش کا بہت سا حصہ شامل تھا۔ دھرم کے معاملے میں وہ حد درجہ کا آدار، سب دھرموں کو ایک نگاہ سے دیکھنے والا اور سب کے ساتھ ایکسا برتاؤ کرنے والا تھا۔ بودھ دھرم کی سیوا ایک اشوک کو چھوڑ کر کسی بھارتیہ راجا نے اُس سے ادھک نہیں کی۔ چین کے ساتھ بھی اُس کا گہرا سمبندھ تھا۔ پردیسی پنجاب میں چھٹیوں کی سب سے پہلی آبادی "چین مکتی" اسی کی

ہندوستانی قلیچ

क्रायम की हुई थी. आबू और नाशपाती दोनों चीन से उसी के समय में आये. कनिष्क के जमाने के हालात को पढ़ने से मालूम होता है कि भारत की कलचर का रूप देने में चीन का भी बहुत बड़ा हिस्सा है. चीनी सम्राट 'रग' के पुत्र' कहलाते थे. उसी चाल पर कनिष्क 'देव पुत्र' कहलाता था. कनिष्क के सिक्के जिन पर कई कई धर्मों के देवी देवताओं के चित्र होते थे साबित करते हैं कि धर्म के मामले में भी उस समय चीनियों की मशहूर उदारता और उनके सर्व धर्म सम्भाव का हम पर गहरा असर पड़ा. उस जमाने की कला, चित्रकारी आदि में साफ़ अनेक देशों और अनेक धर्मों के रंग और उनकी छाप दिखाई देती है., बाद के गुप्ता युग की सारी कला उसी उदार युग की पैदावार है.

श्री भगवत् शरण का कहना है कि भारत के इतिहास में 'राष्ट्रीयता' की यानी भारत के एक राष्ट्र होने की सबसे पहली झलक हमें उस समय मिलती है जब कि विदेशी शक और कुरान बादशाहों ने जिन्हें शाही कहा जाता था सुबुक्तगीन और उसके बेटे महमूद के हमलों से भारत की रक्षा करने के लिये देश की सब शक्तियों को पहली बार मिलाने की कोशिश की. इतिहास में भारत की एकता हमें सबसे पहले उसी समय चमकती हुई दिखाई देती है.

गुप्ता युग भारत का सुनहरा युग माना जाता है. वास्तव में उस युग का सारा बड़प्पन इन ही बाहर के असरों की देन था.

हुए जाति के लोग जो सब से आखीर में भारत आए चीन की हूंग-नु जाति से सम्बन्ध रखते थे, यह वही हुए थे जिन्होंने रोमन साम्राज्य की कमर ताड़ी, यही लोग भारत के मैदानों में भी आकर बसे, चार हिन्दू जातों के अन्दर यह आसानी सेन खप सके, वह इतने शक्तिशाली थे कि उन सब ने शुद्ध बनकर रहना स्वीकार नहीं किया, इसलिये उन्हें क्षत्री मानना पड़ा, बहुत बड़े पैमाने पर आबू पहाड़ के ऊपर एक शुद्ध संस्कार हुआ, और पाँच राजपूत कुलों के नाम से जिन्हें 'अभिकुल' कहा जाता है वे सब कंसव हिन्दुओं में मिला लिये गए, कहा गया कि वे हवन कुण्ड में से पैदा हुए हैं, इस तरह यह सब सोलह आने क्षत्री हो गए, राजपूत स्त्रियों में 'जौहर' का रिवाज उन्हीं से पड़ा, 'जौहर' एक विदेशी शब्द है जिसका विकास एक इबरानी शब्द से है जिसके मानी आग और राशनी हैं.

अहीर, गूजर, जाट और राजपूत हिन्दू समाज का एक जबरदस्त अंग होते हुए भी अपने सुन्दर सुढील शरीरों और खास स्वभाव के कारण आज भी इस देश में सब से अधिक अलग चमकते हैं। कहने को यह सब विदेशी हैं।

लेखक का कहना है कि इसके बाद भारत में वह लोग आए जिन्होंने आजकल की भारत की कलचर को रूप देने

قائم کی ہوئی تھی۔ آزد اور ناشوہتی دونوں چین سے اُسی کے سم میں آئے۔ کنشک کے زمانے کے حالات کو پڑھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ بھارت کی تلچر کو روپ دینے میں چین کا بھی بہت بڑا حصہ ہے۔ چینی سمراٹ 'سورگ کے پتر' کہلاتے تھے۔ اُسی چال پر کنشک 'دیو پتر' کہلانا تھا۔ کنشک کے سم جن پر نئی کنی دھرم کے دہی دوتاؤں کے چتر ہوتے تھے ڈھت کرتے ہیں کہ دھرم کے معاملے میں بھی اُس سم چٹنوں کی مشہور آداریا اور اُن کے سر دھرم سپہاؤ کا ہم پر گہرا اثر پڑا۔ اُس زمانے کی 'لا' چتر کا ہی آدمی میں صاف انیک دیشوں اور انیک دھرم کے رنگ اور اُن کی چھاپ دکھائی دیتی ہے۔ بعد کے گھتا یک کی ساری لا اُسی آدار یک کی پیدوار ہے۔

شادی بہت شرم کا کہنا ہے کہ بھارت کے انہاس میں
 'راشتریتا' کی یعنی بھارت کے ایک 'راشتر' ہونے کی سب سے
 پہلی جہلک ہمیں اُس سہ ماہی سے ملتی ہے جب نہ وہ بڑی شک اور
 کشن بادشاہوں نے جلیہیں شاعری کہا جاتا تھا سمجھتے تھے
 اُس کے پیچھے محمود کے حملوں سے بھارت کی رکھا کرنے کے لئے
 دیہی کی سب شکایوں کو پہلی بار ملانے کی کوشش کی ۔
 انہاس وہ بھارت کی ایکنا ہمیں سب سے پہلے اُسی سہ ماہی
 چمکتی ہوئی دکھائی دیتی ہے ۔

گھٹ: یک بھارت کا سنہرا یک مانا جاتا ہے۔ راستہ میں اُس یک کا سارا ہڑپن اُن ہی ہاتھ کے اُڑوں کی دین تھا۔

ہن جاتی کے لوگ جو سب سے آخر میں بھارت آنے چوں
کی ہیونگ - نو جاتی سے سمبند رکھتے ہ۔ یہ وہی ہن تھے
جنہوں نے رومن سامراجیت کی کمزوری - یہی لوگ بھارت کے
میدانوں میں بھی آکر بسے۔ چار ہندو جاتوں کے اندر یہ آسانی
سے نہ کہیں سکے۔ وہ اپنے شکاری شاہی تھے کہ ان سب نے شہر
بن کر رہنا سونڈکار نہیں کیا۔ اس لئے انہیں چھتری ماننا پڑا۔
بہت بڑے پھالے پر ابو پہاڑ کے اُردر ایک شہری سنسکار ہوا۔
اور پانچ راجپوت نلوں کے نام سے جنہیں 'اگنی کل' کہا جاتا
ہے وہ سب کے سب ہندوؤں میں مل گئے۔ کہا گیا کہ وہ
ہرن کڈ میں سے پیدا ہوئے ہیں۔ اس طرح یہ سب سولہ آئے
چھتری ہو گئے۔ راجپوت استریوں میں 'جھر' کا رواج انہیں سے
پڑا۔ 'جھر' ایک ودیشی شہد ہے جس کا نکلس ایک عبرانی
شہد سے ہے جس کے معنی آگ اور روشنی ہیں۔

اھیر، گوجر، جات اور راجپوت ہندو سماج کا ایک زبردست
انگ ہوتے ہوئے بھی اپنے سندر، سدول شریروں اور خاص سہاؤ
کے کارن آج بھی اس دیہی میں سب سے اعلیٰ انگ چمکتے
ہیں۔ کہنے کو یہ سب ودیشی ہیں۔

لیکچر کا کہنا ہے کہ اس کے بعد بھارت میں وہ لوگ آئے جنہوں نے آجکل کی بھارت کی کلچر کو روپ دیا

میں شاہد سب سے ایک حصہ لیا۔ سن 712 عیسوی میں محمد بن قاسم کے ہاتھوں عربوں کا حملہ ہوا۔ ایک کے بعد ایک "ماتو سپہ" کو چمکائے اور بڑے میں عربوں نے سب سے ایک مسجداری کا حصہ لیا ہے۔ محمد صاحب کی مرتبہ کے لیس برس کے اندر یورپ میں سندھو ندی اور آکسس ندی سے لیکر پچھم میں اسپین پہلی انلانک مہاسگر کے کنارے تک اور اتر میں کھسپین سندھ سے لیکر دکن میں نیل ندی تک کا سارا علاقہ عربوں کے آدھن تھا۔ اس سارے علاقے میں انہوں نے سب جگہ دنیا کی خوب رکشا کی اور اس کو ایک جگہ سے لیکر دوسری جگہ پرچار کیا۔ انہوں نے یونانی فلسفہ اور یونانی وگیاں کی رکشا کی اور انہیں سارے یورپ میں پھیلا یا۔ بھارت سے گولف اور ویدک کو لیکر ان کی مدد سے انہوں نے یورپ کے گہاں کو بڑھایا۔ چین سے گانڈ اور چھاپے کی کا کو لیکر انہوں نے دنیا بھر میں پھیلا یا۔ دنیا اور وگیاں کے اس طرح پھیلنے سے بعد میں جو جو چمکار دیکھنے کو ملے وہ سب کو معلوم ہیں۔ یہ سب اچکل کی دنیا کو عربوں کی دین ہے۔

اس کے بعد جو مسلمان جانتی الگ الگ دیشوں سے بھارت میں آئے اور پس گئیں انہوں نے بھی بھارت کی ملی جلی کلچر کو روپ دیا۔ میں بہت بڑا اور گہرا حصہ لیا۔ فارسی اور عربی دونوں زبانیں اس دیش میں آکر ایک بڑے درجہ تک بھارت کے رنگ میں رنگ گئیں۔ بہت سے باہر سے آئے والے مسلمانوں نے بھارت کی بھاشاؤں اور بولوں میں لکھنا اور گویہ رچنا کرنا شروع کیا۔ اتر میں کھڑی بولی کا ایک نیا روپ سامنے آیا جسے اردو کہا جاتا ہے۔ لاتیہ اور سوندریہ نصاحت اور بلاغت میں کھڑی بولی کا یہ نیا روپ پہلے کے روپ سے کہیں بڑھ گیا۔ ہندو اور مسلمانوں دونوں نے ملکر کھڑی بولی کے اس نئے روپ کو چمکایا۔ اردو کا اسلام دھرم سے کوئی خاص سمبندھ نہیں، یہ بولی بھارت سے باہر کسی بھی دوسرے دیش میں نہیں بولی جاتی۔ یہ سب بھارت واسیوں کی ملی جلی سمپتی ہے۔ دھیرے دھیرے ہندی گدیہ سادھتہ کی رچنا میں بھی اس نے بہت بڑی مدد دی۔ اسلام کے ساتھ ساتھ مانو ایکٹا کی اپورو لکھنا نے اس دیش میں جنم لیا۔ تصنیف یعنی جہنی وچاروں نے اس دیش میں ایک نئی سماجی کرائنتی پیدا کر دی۔ کبیر، نانک اور انہک اور سنت مہاتما اسی کرائنتی کی پیدوار اور اس کے علم بردار تھے۔

طرح طرح کی کا اور کریموں میں بھی اس دیش کے اندر اسلام کے آنے کے ساتھ ساتھ ایک نئی جان پیدا ہو گئی۔ عمارتوں کے بنانے میں مہل کا اس سے تک کی سب سے

اس کے بعد جو مسلمان جانتی الگ الگ دیشوں سے بھارت میں آئے اور پس گئیں انہوں نے بھی بھارت کی ملی جلی کلچر کو روپ دیا۔ میں بہت بڑا اور گہرا حصہ لیا۔ فارسی اور عربی دونوں زبانیں اس دیش میں آکر ایک بڑے درجہ تک بھارت کے رنگ میں رنگ گئیں۔ بہت سے باہر سے آئے والے مسلمانوں نے بھارت کی بھاشاؤں اور بولوں میں لکھنا اور گویہ رچنا کرنا شروع کیا۔ اتر میں کھڑی بولی کا ایک نیا روپ سامنے آیا جسے اردو کہا جاتا ہے۔ لاتیہ اور سوندریہ نصاحت اور بلاغت میں کھڑی بولی کا یہ نیا روپ پہلے کے روپ سے کہیں بڑھ گیا۔ ہندو اور مسلمانوں دونوں نے ملکر کھڑی بولی کے اس نئے روپ کو چمکایا۔ اردو کا اسلام دھرم سے کوئی خاص سمبندھ نہیں، یہ بولی بھارت سے باہر کسی بھی دوسرے دیش میں نہیں بولی جاتی۔ یہ سب بھارت واسیوں کی ملی جلی سمپتی ہے۔ دھیرے دھیرے ہندی گدیہ سادھتہ کی رچنا میں بھی اس نے بہت بڑی مدد دی۔ اسلام کے ساتھ ساتھ مانو ایکٹا کی اپورو لکھنا نے اس دیش میں جنم لیا۔ تصنیف یعنی جہنی وچاروں نے اس دیش میں ایک نئی سماجی کرائنتی پیدا کر دی۔ کبیر، نانک اور انہک اور سنت مہاتما اسی کرائنتی کی پیدوار اور اس کے علم بردار تھے۔

طرح طرح کی کا اور کریموں میں بھی اس دیش کے اندر اسلام کے آنے کے ساتھ ساتھ ایک نئی جان پیدا ہو گئی۔ عمارتوں کے بنانے میں مہل کا اس سے تک کی سب سے

شاندار اور سب سے سندر کا تھی۔ نئے تھانگ کی مہاریں اور نئے گمبد، محرابیں، محل، قلعے اور مسجدیں، سندر مقبرے، باغ اور نئی نئی طرح کے پھل اور پھول دیس بہر میں دکھائی دیئے گئے۔ آگے کا تاج بہارت کے مستک پر جھومر کی طرح چمکے گا اور دنیا بہر کی سندر سے سندر عمارتوں میں گنا جائے گا۔ مثل چتر کا اپنے پرانے نمونے ایرانی چتر کا سے سندرنا میں کہیں بڑھ گئی۔ سنگیت میں بھی اُس زمانے کی دین اُنکی ہی گہری تھی۔ نئے راگوں اور نئی نئی لہروں نے بہارت کے سنگیت میں چار چاند لگا دیئے۔

شری بھگوت شرمن اپادھیائے کا کہنا ہے کہ سمرات اکبر کی دھارمک ادارت کو دیکھ کر ہمیں سمرات اشوک کی بہر سے یاد آ جاتی ہے۔ یہ دوسری بات ہے کہ اپنے دین الہی کے اندر سب دھرموں کی بنیادی باتوں کو ملا دیئے کی کوشش میں اکبر سمے سے شاید تین سو برس پہلے پیدا ہو گیا تھا۔ مغلوں نے ہی بہارت کی راشٹریہ پوشاک کو روپ دیا۔ روٹی اور نوا، کپڑے یہ دونوں شبد ہی باہر کے نہیں ہیں اُن کا اُپہوگ بھی ہم نے آگنک مسلمانوں سے ہی سیکھا۔ آج روٹی شبد چھاتی کے معنی میں بھی اور سادھارن بھوجن کے معنے میں بھی بہارت کے کولے کولے میں بولا جاتا ہے۔

شری بھگوت شرمن کے انوسار یورپ والوں یا انگریزوں کی دین بھی ہندوستانی کلاچر کو اتنی کم نہیں ہیں۔ ہماری آجکل کی راشٹریہ کی کلپنا، بہارت کے ایک دیس ہونے کا وچار، راجکاجی آزادی کا پریم، ہمارا آج کا سماجی جیون، ہمارے کل کارخانے، نیا دگیان، ہماری پارلیمنٹ، ہماری راجکاجی سنسٹھائیں، ہماری شکشا، ہمارا ساہتیہ اِن سب کے اندر یورپ کا اثر ہمیں صاف چمکتا ہوا دکھائی دے رہا ہے۔ یورپ والوں کی نیت میں کہیں کہیں جو کچھ برائی رہی ہو، اور برائی گئی تھی، اس میں سندیہ نہیں کہ یورپ والوں نے ہی ہمارے بہت سے پرانے خزانوں کو کھود کر ہمارے سامنے رکھا۔ انہوں نے ہی سمرات اشوک کے شالیکھوں سے ہماری جانکاری کرائی۔ سیکڑوں ہرائیوں کے ہوتے ہوئے بھی ہندوستانی کلاچر کو اُن کی دین ایک استھانی دین ہے۔

انت میں شری بھگوت شرمن اپادھیائے نے سنسار کی کلاچر کو بہارت کی دین کی چرچا کی ہے۔ انہوں نے دکھایا ہے کہ بہارت نے ہمیشہ کپلے دل سے دوسروں سے لیا ہے اور کپلے دل سے دوسروں کو دیا ہے۔ اُن کی رائے میں مہاتما بدھ کے سمے سے لیکر مہاتما گاندھی تک اور آج تک دنیا میں شاننی قائم کرنے کے لئے بہارت کے پرتن کچھ کم کرد کی چیز نہیں ہیں۔ ابھی دنیا اتنی تیزی سے بدل رہی ہے کہ اُس پر انہوں کا نگ سنا بھی کلہن ہے۔

دنیا اسنی چھوٹی ہو گئی ہے کہ ساری دنیا ہتھیلی پر رکھ کر ایک ساتھ دیکھی جاسکتی ہے۔ "دنیا کے لئے یہ ایک شبہ نہیں ہے کہ اب ہم ساری دنیا کو دیکھ سکتے ہیں اور الگ الگ ٹکڑیوں سے آپر اٹھ کر سارے مائو سماج کو اپنا کر سکتے ہیں۔ پچھم نے باہر کی ماری ترانہ کی کمال کیا ہے۔ پورب نے ماری کو بھی روحانی روپ دیا ہے۔ اب ضرورت ہے کہ یہ دونوں ملکر ایک مائو شریہ کو روپ دیں۔ یہاں اپنے ہر دے کو وشال کر کے ایک اور ضروری کام میں دنیا کو بہت بڑی مدد دے سکتا ہے۔" ہم شری بہت شریں آپادھائے کو ان کے ادار پرستوں پر بدھائی دیتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ وہ اس سے کہیں ادھک بڑے گونے کے روپ میں اپنی کوجوں اور ان کے نتیجوں کو جلد سے جلد دیہی کے سامنے رکھ سکیں۔

دنیا اسنی چھوٹی ہو گئی ہے کہ ساری دنیا ہتھیلی پر رکھ کر ایک ساتھ دیکھی جاسکتی ہے۔ "دنیا کے لئے یہ ایک شبہ نہیں ہے کہ اب ہم ساری دنیا کو دیکھ سکتے ہیں اور الگ الگ ٹکڑیوں سے آپر اٹھ کر سارے مائو سماج کو اپنا کر سکتے ہیں۔ پچھم نے باہر کی ماری ترانہ کی کمال کیا ہے۔ پورب نے ماری کو بھی روحانی روپ دیا ہے۔ اب ضرورت ہے کہ یہ دونوں ملکر ایک مائو شریہ کو روپ دیں۔ یہاں اپنے ہر دے کو وشال کر کے ایک اور ضروری کام میں دنیا کو بہت بڑی مدد دے سکتا ہے۔" ہم شری بہت شریں آپادھائے کو ان کے ادار پرستوں پر بدھائی دیتے ہیں اور چاہتے ہیں کہ وہ اس سے کہیں ادھک بڑے گونے کے روپ میں اپنی کوجوں اور ان کے نتیجوں کو جلد سے جلد دیہی کے سامنے رکھ سکیں۔

—سندرلال۔

—سندرلال۔

700 PAGES,

32 ILLUSTRATIONS

2 COLOURED MAPS

"CHINA TODAY"

BY PANDIT SUNDARLAL

PRICE

Rs. 7. 8. 0

A vivid narration of the glorious and wonderful achievements of New China...A picture of China which is both convincing and authentic...the best book that has come out so far on New China in the English language...the most objective in approach and comprehensive in treatment.

—National Herald, Lucknow.

Highly informative...throws vivid light on conditions obtaining in that country...a book which deserves to be wide'y known

—Leader, Allahabad.

Encyclopaedic...characterized by acute observation of detail as well as by...instinctive grasp of the fundamental perspective...To read it is veritably like accompanying the Mission on its thrilling voyage of discovery in New China.

—Blitz, Bombay

A mine of information which gives a picture of China as nothing else does...the best guide to New China...Those who would like to understand what is happening in New China can do not better than to study it.

—Bharat Jyoti, Bombay

The wealth of information it gives on China new and old...makes fascinating reading...is comprehensive and informative and must therefore interest all students of public affairs.

—Indian Express, Madras

China Today is an eloquent tribute to his (Pandit Sundarlal's) shrewd understanding of men and matter...brings to the lighty mighty endeavour of the Chinese People to rebuild their great nation on firm new foundations for a tomorrow which is theirs.

—Vigil, Delhi.

چینی علاج کی کہانی

چینی علاج کی کہانی

شری لی تاओ

شری لی تاओ

پ्राचीन समय में अनेक बार दवाएं तैयार करने में, उन्हें बरतने में और जर्सीही यानी चीर फाड़ की बिद्या में चीन दुनिया का रास्ता बिखता रहा है. लेकिन सामन्तशाही यानी खानदानी राजाओं और सरदारों का राज हमारे यहां इतने अधिक दिनों तक रहा कि उसके कारण जनता में बल न आ सका और हमारी प्राचीन वैद्यक बिद्या का बढ़ना रुक गया. उसके बाद हमारे राजकाजी और कलचरी जीवन पर देशी और बिदेशी सम्राजशाही का जोर रहा जिससे हमारे देश के नई तालीम पाए हुए डाक्टरों ने देश की पुरानी वैद्यक बिद्या की तरफ से बेपरवाही की.

फिर भी चीन की पुरानी वैद्यक बिद्या बराबर जारी रही. उसके अनुसार इलाज करने वाले हकीम लाखों और करोड़ों जनता की सेवा करते रहे हैं और उन्हें अच्छा करते रहे हैं. सन् 1949 से, जब से हमारा मुल्क आजाद हुआ है, बहुत से उसूल जिन्हें हमारी पुरानी वैद्यक बिद्या ने मान रखा था और उसके इलाज के तरीके साइंसी ढङ्ग से परखे जा चुके हैं और आजकल के उन्नत से उन्नत बिचारों के अनुसार ठीक साबित हो चुके हैं. इस तरह हमारी पुरानी वैद्यक बिद्या की महान उपयोगिता साबित हो चुकी है.

आजकल के चीन में पुराने ढङ्ग से इलाज करने वाले लोग और नए ढङ्ग से सीखे हुए डाक्टर दोनों मौजूद हैं. दोनों मिलकर काम करते हैं और दोनों एक दूसरे से सीखते हैं. पर चीनी वैद्यक बिद्या और बाकी दुनिया के इलाज के तरीके इन दोनों के बीच सदियों से एक खाई पैदा हो गई है. इस खाई पर जिस दिन एक पुल बन जायगा तो हमें बिश्वास है कि उससे चीनी जनता की तन्दुरुस्ती को और सारे मानव समाज की तन्दुरुस्ती दोनों को बड़ा लाभ होगा.

चीन की वैद्यक बिद्या कितनी पुरानी है इसका अन्दाजा इस बात से लग सकता है कि चीन में ईसा से तेरह सौ बरस पहले के इस तरह के लेख हड्डियों पर मिले हैं जिनमें आदमी की बहुत सी बीमारियों का जिक्र और उनका ययान बिद्या हुआ है. इसके थोड़े दिनों बाद का एक ग्रंथ The Book of Rites (रिवाजों की किताब) मौजूद है जिसमें अलग अलग रंगों के लिये दवाओं, जर्सीही, ताकत की दवाओं, शक्ति देने वाले खानों और जानवरों

प्राचीन समे में अनेक बार दوائیں تیار کرتے ہیں، برتنہ میں اور جراحی یعنی چیر پھاڑ کی دیا میں چین دنیا کو راستہ دکھاتا رہا ہے۔ لیکن سامنت شاہی یعنی خاندانی راجاؤں اور سرداروں کا راج ہمارے یہاں اتنے ادھک دنوں تک رہا کہ اس کارن چنتا میں بل نہ آسکا اور ہماری پراچین ویدیک دیا کا بڑھنا رک گیا۔ اس کے بعد ہمارے راج کلجی اور تلجوری چنوں پر دیشی اور ویشی سامراج شاہی کا زور رہا جس سے ہمارے دیش کے نئے تعلیم پائے ہوئے ڈاکٹروں نے دیش کی پرانی ویدیک دیا کی طرف سے بے پرواہی کی۔

پھر بھی چین کی پرانی ویدیک دیا برابر جاری رہی۔ اس کے انوسار علاج کرنے والے حکیم لاکھوں اور کروڑوں چنتا کی سہوا کرتے رہے ہیں اور انہیں اچھا کرتے رہے ہیں۔ سن 1949 سے جب سے ہمارا ملک آزاد ہوا ہے، بہت سے اصول جنہیں ہماری پرانی ویدیک دیا نے مان رکھا تھا اور اس علاج کے طریقہ سائنسی تھنگ سے پرکھے جا چکے ہیں اور آجکل کے آنت سے آنت وچاروں کے انوسار ٹھیک ثابت ہو چکے ہیں۔ اس طرح ہماری پرانی ویدیک دیا کی مہان آپہرگتا ثابت ہو چکی ہے۔

آجکل کے چین میں پرانے تھنگ سے علاج کرنے والے لوگ اور نئے تھنگ سے سیکھے ہوئے ڈاکٹر دونوں موجود ہیں۔ دونوں ملکر کام کرتے ہیں اور دونوں ایک دوسرے سے سیکھتے ہیں۔ پر چینی ویدیک دیا اور ہاتی دنیا کے علاج کے طریقہ ان دونوں کے بیچ صدیوں سے ایک کھائی پیدا ہو گئی ہے۔ اس کھائی پر جس دن ایک پل بن جائیگا تو ہمیں دشواری ہے کہ اس سے چینی چنتا کی تندرستی کو اور سارے مانو سماج کی تندرستی دونوں کو بہت بڑا لاہ ہوگا۔

چین کی ویدیک دیا کتنی پرانی ہے اس کا اندازہ اس بات سے لگ سکتا ہے کہ چین میں عیسوی سے تیرہ سو برس پہلے کے اس طرح کے لیکے ہڈیوں پر ملے ہیں جن میں آدمی کی بہت سی بیماریوں کا ذکر اور انکا بیان دیا ہوا ہے۔ اس کے تیرہ دنوں بعد کا ایک گرنتہ The Book of Rites (راجوں کی کتاب) موجود ہے جس میں انک الگ الگ روگوں کے لئے دواؤں، جراحی، طاقت کی دواؤں، شکتی دینے والے کھانوں اور جانوروں

کی بیماریوں کے علاج کا بیان ہے۔ اسی زمانہ کی ایک اور کتاب The Book of Odes (گیتوں کا संग) ہے جس میں سو سے زائد جڑی بوٹیوں اور دواؤں کو بیان کیا گیا ہے۔

اس کے بعد چین کے الگ الگ حصوں میں تجارت ہوتی گئی اور چینی ویدک دوا بھی تجارت کے ساتھ ساتھ دیکھ میں پہنچتی گئی۔ ان دنوں چینی وید ایک طرح کی پتھر کی چھری سے ہونے والی ہے۔ اس چھری کو ”پین شیہ“ کہتے تھے۔ روگوں کے علاج کے لئے وہ طرح طرح کی جڑی بوٹیوں کو کام میں لاتے تھے۔ دواؤں اور چھری کے علاوہ ان دنوں کے علاج کے دو طریقہ خاص طور پر بیان کرنے کی ضرورت ہے۔ ایک طریقہ میں لمبی پتلی دانت کی سونوں کے ذریعہ ان سونوں کو جسم کے اندر داخل کر کے آدمی کی سست پڑی ہوئی نسیں کو پھر سے جگایا اور ٹھوک کیا جاتا ہے۔ یہ علاج الگ الگ بیماریوں کے لئے شریک کے الگ الگ حصوں پر کیا جاتا ہے۔ اسے انگریزی میں ایکوپنچر (Acupuncture) کہتے ہیں۔ دوسرا طریقہ ہے خاص طرح کی بوٹیوں کو جلا کر ان سے جسم کے کسی خاص حصہ کو سینا۔ اس سے بھی نسیں میں جان آجاتی ہے پر ہال کو نقصان نہیں پہنچنے پاتا۔ اسے انگریزی میں موکسی بشن (Moxibustion) کہتے ہیں۔ یہ دونوں طریقہ عیسوی سے بارہ سو برس پہلے سے چلے آ رہے ہیں۔ اور آج تک چین کے سرکاری اسپتالوں تک میں بہت سے روگوں کو اچھا کرنے کے لئے کام میں لائے جاتے ہیں۔ روگوں کے علاج کے لئے شریک کی مالک ہی ان دنوں طرح طرح سے کی جاتی تھی۔

اسی سے پانچ سو برس پہلے چین میں عام وید ایک ہوتے تھے جو جنتا کا علاج کرتے تھے اور درباری وید الگ ہوتے تھے جو سمراٹ اور ان کے گھر والوں کا علاج کرتے تھے۔ روگ کا پتا ان دنوں روگی کے سانس لینے کے ڈنگ سے، اس کے چہرے کے رنگ سے، اس کے دھڑکنے سے اور اس کی آواز سے لگایا جاتا تھا۔

اسی سے پانچ سو برس پہلے چین کے ایک مشہور حکیم یون چو۔ ایچ نے دنیا میں پہلی بار نبض (ناری) سے روگ کا پتہ لگانے کا طریقہ ایجاد کیا۔ دنیا کی ویدک دوا میں یہ ایک بہت بڑا انقلاب تھا۔ نبض یعنی ناری سے روگ کے پتا لگانے کا طریقہ چھٹی صدی عیسوی میں چین سے کوریا اور وہاں سے جاپان پہنچا۔ نویں صدی عیسوی میں یہ طریقہ عرب پہنچا۔ مشہور مسلم حکیم بوعلی ابو سینا نے دسویں صدی عیسوی میں ویدک کے اوپر اپنی مشہور کتاب لکھی جس میں اس نے نبض سے روگوں کا پتا لگانے کی چھٹی کی۔ بوعلی کی یہ کتاب اٹھارہویں صدی عیسوی تک یورپ کے سب حکیموں اور

اس کے بعد چین کے الگ الگ حصوں میں تجارت ہوتی گئی اور چینی ویدک دوا بھی تجارت کے ساتھ ساتھ دیکھ میں پہنچتی گئی۔ ان دنوں چینی وید ایک طرح کی پتھر کی چھری سے ہونے والی ہے۔ اس چھری کو ”پین شیہ“ کہتے تھے۔ روگوں کے علاج کے لئے وہ طرح طرح کی جڑی بوٹیوں کو کام میں لاتے تھے۔ دواؤں اور چھری کے علاوہ ان دنوں کے علاج کے دو طریقہ خاص طور پر بیان کرنے کی ضرورت ہے۔ ایک طریقہ میں لمبی پتلی دانت کی سونوں کے ذریعہ ان سونوں کو جسم کے اندر داخل کر کے آدمی کی سست پڑی ہوئی نسیں کو پھر سے جگایا اور ٹھوک کیا جاتا ہے۔ یہ علاج الگ الگ بیماریوں کے لئے شریک کے الگ الگ حصوں پر کیا جاتا ہے۔ اسے انگریزی میں ایکوپنچر (Acupuncture) کہتے ہیں۔ دوسرا طریقہ ہے خاص طرح کی بوٹیوں کو جلا کر ان سے جسم کے کسی خاص حصہ کو سینا۔ اس سے بھی نسیں میں جان آجاتی ہے پر ہال کو نقصان نہیں پہنچنے پاتا۔ اسے انگریزی میں موکسی بشن (Moxibustion) کہتے ہیں۔ یہ دونوں طریقہ عیسوی سے بارہ سو برس پہلے سے چلے آ رہے ہیں۔ اور آج تک چین کے سرکاری اسپتالوں تک میں بہت سے روگوں کو اچھا کرنے کے لئے کام میں لائے جاتے ہیں۔ روگوں کے علاج کے لئے شریک کی مالک ہی ان دنوں طرح طرح سے کی جاتی تھی۔

اسی سے پانچ سو برس پہلے چین میں عام وید ایک ہوتے تھے جو جنتا کا علاج کرتے تھے اور درباری وید الگ ہوتے تھے جو سمراٹ اور ان کے گھر والوں کا علاج کرتے تھے۔ روگ کا پتا ان دنوں روگی کے سانس لینے کے ڈنگ سے، اس کے چہرے کے رنگ سے، اس کے دھڑکنے سے اور اس کی آواز سے لگایا جاتا تھا۔

اسی سے پانچ سو برس پہلے چین کے ایک مشہور حکیم یون چو۔ ایچ نے دنیا میں پہلی بار نبض (ناری) سے روگ کا پتہ لگانے کا طریقہ ایجاد کیا۔ دنیا کی ویدک دوا میں یہ ایک بہت بڑا انقلاب تھا۔ نبض یعنی ناری سے روگ کے پتا لگانے کا طریقہ چھٹی صدی عیسوی میں چین سے کوریا اور وہاں سے جاپان پہنچا۔ نویں صدی عیسوی میں یہ طریقہ عرب پہنچا۔ مشہور مسلم حکیم بوعلی ابو سینا نے دسویں صدی عیسوی میں ویدک کے اوپر اپنی مشہور کتاب لکھی جس میں اس نے نبض سے روگوں کا پتا لگانے کی چھٹی کی۔ بوعلی کی یہ کتاب اٹھارہویں صدی عیسوی تک یورپ کے سب حکیموں اور

ڈاکٹریں کو پکارے جاتی تھیں اور یورپی ڈاکٹری کی جوتیا کی کتاب مانی جاتی تھی۔ ہندوستان کی بھیک کی کتابوں میں توہیں صدی عیسوی سے پہلے نبض دیکھنے کا ذکر نہیں آتا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ہندوستان نے بھی نبض دیکھنے کا طریقہ چینی ہی سے لیا۔

چینی کی پورانی کتابوں میں لکھا ہے کہ اس زمانے کا ایک چینی راجہ بیمار پڑا۔ وہ بہوش ہو گیا۔ دربار کے بھیک نے کہہ دیا کہ راجہ بیمار مر چکا۔ پون چو نے نبض دیکھ کر پتا لگایا کہ راجہ ابھی زندہ ہے۔ اس نے علاج کیا اور راجہ بیمار اچھا ہو گیا۔

پون چو نے چین کی مختلف ریاستوں میں گیا۔ اس نے سب جگہ کے حکمرانوں کا مشورہ کیا۔ اس سے پہلے چین میں کئی جگہ رोगों کا علاج جادو دانوں سے کیا جاتا تھا۔ پون چو نے اس طرح کے بھیکوں کا کڑا بیروہ کیا اور سائیںسی دھڑ سے شریک کے مختلف اہنگوں اور ان کے کاموں کے انوسار علاج کے طریقے پر کتابیں لکھیں۔

ایسا سے دو ڈاڑھ سوائے برس پہلے سارے چین پر پہلی بار ایک راجہ قائم ہوا۔ چینی بھیک ویدک اب اور تیزی کے ساتھ ترقی دینی شروع کی۔ عیسوی سے چھ سو برس پہلے لی۔ چو۔ کوئی نام کے ایک چینی حکیم نے بہت سی پرانی چینی کتابوں کو دہرایا۔ ان میں ایک مشہور کتاب 'ہیوانگ می نیٹی چنگ' ہسٹریک پیڑھوں تک چینی حکیموں کو کام دیتی رہی۔ اس کتاب کی ایک خاص بات یہ ہے کہ آجکل کے نئے سے نئے قاتری اصول کے انوسار یہ کتاب روک کے پیدا ہو جانے پر اس کا علاج کرنے کی نسبت روک کے پیدا ہونے ہی کو روکنے پر ادھک زور دیتی ہے۔ اس کے انوسار آدمی کا شریک سارے وشو کا ایک حصہ ہے اور آدمی اگر بھر ہی تبدیلوں کے انوسار اپنی عادیوں کو بھی بدلتا رہے تو وہ روک سے بچتا رہ سکتا ہے۔ اس میں لکھا ہے کہ بیماری آجانے کے بعد اس کا علاج کرنا ایسا ہی ہے جیسا پیاس لگنے پر کدواں کھودنا یا لڑائی چھڑ جانے پر ہتھیار گھڑنا۔ بیماریوں کا علاج بیمار پڑنے سے پہلے ہونا چاہیے اور اس کا طریقہ ہے تھیک جیون بتانا، تھیک طرح کا کھانا کھانا، تھیک طرح سے کام اور آرام کرنا، اور اپنے دل اور دماغ دونوں کو سدا ثابت رکھنا۔

ایک اور پورانی کتاب 'شون نونگ پن تسانو چیگ' ہے جو ایسا سے لگبھگ ایک سو برس پہلے لکھی گئی۔ اس میں تین سو سے زائد دواؤں اور ان کے استعمال کی چرچا

قائریوں کو پڑھائی جاتی تھی اور یورپی قاتری کی بھادی کتاب مانی جاتی تھی۔ ہندوستان کی ویدک کی کتابوں میں توہیں صدی عیسوی سے پہلے نبض دیکھنے کا ذکر نہیں آتا۔ اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ہندوستان نے بھی نبض دیکھنے کا طریقہ چینی ہی سے لیا۔

چینی کی پورانی کتابوں میں لکھا ہے کہ اس زمانے کا ایک چینی راجہ بیمار پڑا۔ وہ بہوش ہو گیا۔ دربار کے ویدک نے کہہ دیا کہ راجہ بیمار مر چکا۔ پون چو نے نبض دیکھ کر پتا لگایا کہ راجہ ابھی زندہ ہے۔ اس نے علاج کیا اور راجہ بیمار اچھا ہو گیا۔

پون چو نے چین کی مختلف ریاستوں میں گیا۔ اس نے سب جگہ کے حکمرانوں کا مشورہ کیا۔ اس سے پہلے چین میں کئی جگہ رोगों کا علاج جادو دانوں سے کیا جاتا تھا۔ پون چو نے اس طرح کے بھیکوں کا کڑا بیروہ کیا اور سائیںسی دھڑ سے شریک کے مختلف اہنگوں اور ان کے کاموں کے انوسار علاج کے طریقے پر کتابیں لکھیں۔

عیسوی سے دو قاتری سو برس پہلے سارے چین پر پہلی بار ایک راجہ قائم ہوا۔ چینی ویدک ویدک اب اور تیزی کے ساتھ ترقی دینی شروع کی۔ عیسوی سے چھ سو برس پہلے لی۔ چو۔ کوئی نام کے ایک چینی حکیم نے بہت سی پرانی چینی کتابوں کو دہرایا۔ ان میں ایک مشہور کتاب 'ہیوانگ می نیٹی چنگ' ہسٹریک پیڑھوں تک چینی حکیموں کو کام دیتی رہی۔ اس کتاب کی ایک خاص بات یہ ہے کہ آجکل کے نئے سے نئے قاتری اصول کے انوسار یہ کتاب روک کے پیدا ہو جانے پر اس کا علاج کرنے کی نسبت روک کے پیدا ہونے ہی کو روکنے پر ادھک زور دیتی ہے۔ اس کے انوسار آدمی کا شریک سارے وشو کا ایک حصہ ہے اور آدمی اگر بھر ہی تبدیلوں کے انوسار اپنی عادیوں کو بھی بدلتا رہے تو وہ روک سے بچتا رہ سکتا ہے۔ اس میں لکھا ہے کہ بیماری آجانے کے بعد اس کا علاج کرنا ایسا ہی ہے جیسا پیاس لگنے پر کدواں کھودنا یا لڑائی چھڑ جانے پر ہتھیار گھڑنا۔ بیماریوں کا علاج بیمار پڑنے سے پہلے ہونا چاہیے اور اس کا طریقہ ہے تھیک جیون بتانا، تھیک طرح کا کھانا کھانا، تھیک طرح سے کام اور آرام کرنا، اور اپنے دل اور دماغ دونوں کو سدا ثابت رکھنا۔

ایک اور پورانی کتاب 'شون نونگ پن تسانو چیگ' ہے جو عیسوی سے تک بھگ ایک سو برس پہلے لکھی گئی۔ اس میں تین سو سے زائد دواؤں اور ان کے استعمال کی چرچا

کی گئی ہے۔ دنیا میں یہ پہلی کتاب ہے جس میں کھال کی بیماریوں کے لیے پارے اور گंधک کا استعمال بتایا گیا ہے۔ ان بیماریوں کے لیے یہ علاج عرب اور ہندستان میں اس کے ایک ہزار برس بعد چلا اور یورپ میں سولہویں صدی عیسوی سے جاری ہوا۔

دوسری صدی عیسوی میں چاؤنگ چینگ نام کے ایک حکیم نے سترہ ترہ کے بخاروں پر ایک کتاب لکھی جسکا نام 'شائنگ ہان لون' ہے۔ اسی نے वैद्यک विद्या کے بنیادی اصولوں پر ایک اور کتاب لکھی جسکا نام 'چینگ کون یا آلا لوفہ' ہے۔ ان دونوں کتابوں سے چین کی वैद्यک विद्या میں بہت بڑی ترक्की हुई۔ انमें तरह तरह کے بخاروں اور دوسری بیماریوں کے لیے अलग अलग नुसखे दिये हुए हैं۔ इसमें दुखार के इलाज के लिये, दस्त लाने के लिये, पेराब लाने के लिये, कै कराने के लिये, ठंडक पैदा करने के लिये, गरमी लाने के लिये, हाजमा ठाक करने के लिये और दस्तों को रोकने के लिये लगभग अस्सी इस तरह के नुसखे दिये हुए हैं जा आज तक चीनी डाक्टरों को बहुत बड़ा काम देते हैं और उनके इलाज के तरीकों को बुनियाद कहे जा सकते हैं। 'शौंग हान लुन' का प्रचार कोरिया और जापान में भी खूब हुआ और उसके द्वारा वहां के लोगों की तन्दुरुस्ती का बहुत बड़ा फायदा पहुँचा।

जराही यानी चार फाड़ की विद्या ने भी प्राचीन चीन में काफी तरक्की की थी। ईसा की सदी का एक मशहूर इकीम 'हुआ तां' दवा के ज़ारिये यह प्रबन्ध करके कि रागी का पीड़ा अनुभव न होने पावे, पेट के बड़े बड़े आपरेशन (Major abdominal operations) कर लेता था। अताइया के पीड़ा का इलाज करने के लिये वह कै की दवाएँ देता था और जखमों का तरह तरह का इलाज वह पानी से करता था। आदमी के तन्दुरुस्त रहने के लिये उसने एक नई तरह की कसरत ईजाद की थी जिसमें पाँच तरह के जानवरों की चालें शामिल थीं—चीता, बारहसिंगा, रीछ, बन्दर और बिड़िया। इस कसरत के ज़ारिये वह पुरानी पुरानी बीमारियों को अच्छा कर लेता था।

चीन के दुर्भाग्य से उस ज़माने के एक अन्यायी शासक ने हुआ-तां को पकड़ कर फांसी पर लटका दिया जिसके बाद उसकी लिखी हुई बहुत सी किताबें सदा के लिये नष्ट हो गईं।

इसके बाद की सदियों में बौद्ध धर्म के चीन पहुँचने के बाद प्राचीन ताओ धर्म के लोगों ने बहुत सी पुरानी चीनी वैद्यक किताबों का फिर से सम्पादन किया। बौद्ध धर्म के लोगों ने भारत की बहुत सी वैद्यक किताबों का चीनी में अनुवाद किया। जीवक और सुश्रुत की मशहूर संस्कृत किताबों का उसी समय चीनी में अनुवाद हुआ। इस तरह भारत की वैद्यक विद्या और चीनी वैद्यक विद्या दोनों चीन में मिल

की गئی ہے۔ دنیا میں یہ پہلی کتاب ہے جس میں کھال کی بیماریوں کے لیے پارے اور گंधک کا استعمال بتایا گیا ہے۔ ان بیماریوں کے لیے یہ علاج عرب اور ہندستان میں اس کے ایک ہزار برس بعد چلا اور یورپ میں سولہویں صدی عیسوی سے جاری ہوا۔

دوسری صدی عیسوی میں چاؤنگ چینگ نام کے ایک حکیم نے طرح طرح کے بخاروں پر ایک کتاب لکھی جس کا نام 'شائنگ ہان لن' ہے۔ اسی نے ویدیک ودیا کے بنیادی اصولوں پر ایک اور کتاب لکھی جس کا نام چینگ کون یا آلا لوفہ' ہے۔ ان دونوں کتابوں سے چین کی ویدیک ودیا میں بہت ترقی ہوئی۔ ان میں طرح طرح کے بخاروں اور دوسری بیماریوں کے لیے الگ الگ نسخے دیئے ہوئے ہیں۔ اس میں بخار کے علاج کے لیے دست لانے کے لیے، پوشاب لانے کے لیے، فہ کرانے کے لیے، ٹھنڈک پیدا کرنے کے لیے، گرمی لانے کے لیے، ہاضمہ ٹھیک کرنے کے لیے اور دستوں کو روکنے کے لیے لگ بھگ اسی طرح کے نسخے دیئے ہوئے ہیں جو آج تک چینی ڈاکٹروں کو بہت بڑا کام دیتے ہیں اور ان کے علاج کے طریقوں کی بنیاد کہہ جا سکتے ہیں۔ 'شائنگ ہان لن' کا پرچار کوریا اور جاپان میں بھی خوب ہوا اور اس کے دوارا وہاں کے لوگوں کی تندرستی کو بہت بڑا فائدہ پہونچا۔

جراحی یعنی چیر پھار کی ودیا نے بھی پراچین چین میں کافی ترقی کی تھی۔ عیسوی کی شروع کی صدی کا ایک مشہور حکیم 'ہوانو' دواؤں کے ذریعہ یہ پرہندہ کر کے کہ روگی کو پیرا انڈو نہ ہونے پاورے، پیٹ کے بڑے بڑے آپریشن (Major abdominal operations) کر لیتا تھا۔ انتقروں کے کھڑوں کا علاج کرنے کے لیے وہ فہ کی دوائیں دیتا تھا اور زخموں کا طرح طرح کا علاج وہ پانی سے کرنا تھا۔ آدھی کے تندرست رہنے کے لیے اس نے ایک نئی طرح کی کسرت ایجاد کی تھی جس میں پانچ طرح کی جانوروں کی چالیں شامل تھیں—چیٹا، بارہ سنگا، رچھ، بندر اور چڑیا۔ اس کسرت کے ذریعہ وہ پرانی پرانی بیماریوں کو اچھا کر لیتا تھا۔

چین کے دریاگاہ سے اس زمانے کے ایک آئینائی شاسک نے ہوانو کو پکڑ کر پھانسی پر لٹکا دیا جس کے بعد اس کی لکھی ہوئی بہت سی کتابیں سدا کے لیے نشت ہوئیں۔

اس کے بعد کی صدیوں میں ہندو دھرم کے چین پہونچنے کے بعد پراچین تاؤ دھرم کے لوگوں نے بہت سی پرانی چینی ویدیک اور کتابوں کا پھر سے سمپادن کیا۔ ہندو دھرم کے لوگوں نے ہوارٹ کی بہت سی ویدیک کتابوں کا چینی میں انواد کیا۔ چھوک اور سو شروت کی مشہور سنسکرت کتابوں کا اسی سلسلہ چینی میں انواد ہوا۔ اس طرح بھارت کی ویدیک ودیا اور چینی ویدیک ودیا دونوں چین میں مل

گئے۔ اسکا ایک نتیجہ یہ ہوا کہ عیسوی سے سو برس پہلے کی لکھی ہوئی چینی 'کتاب شین ننگ پین تساو چنگ' کو پانچ سو عیسوی کے ایک بیگ جب دہرایا گیا تو تین سو دواؤں کی جگہ اب اس میں چھ سو سے زائد دوائیں درج ہو گئیں۔

ساتویں صدی عیسوی سے نویں صدی عیسوی تک یورپ میں ابھی اندھکار (Dark ages) کا زمانہ تھا۔ بھارت ان دنوں بہت سی چوٹی چوٹی ریاستوں میں بٹا ہوا تھا۔ اس سہ ماہی ویدیک دنیا کی نگاہ سے چین دنیا کا کیلندر تھا۔ عرب، کوریا، جاپان اور دوسرے دیشوں سے بڑے بڑے دواؤں ویدیک پڑھنے کے لئے چین آتے تھے اور چوٹی حکیم تعلیم دینے کے لئے باہر کے دیشوں میں بلائے جاتے تھے۔ اس سے پہلے جاپان میں روگن کا علاج جادو ٹونوں سے ہوتا تھا۔ چینی ویدیک ویدیا نے وہاں پہونچکر لوگوں کو ان اندھ وشلوسوں سے آزاد کیا اور علاج کا ٹھیک طریقہ بتایا۔ اس نئے طریقہ کا جاپان میں بڑا آدر ہوا۔

دنیا بھر میں ویدک کا سب سے پہلا ویدیالہ (First Medical School) ساتویں صدی عیسوی کے شروع میں چین میں قائم ہوا۔ اس کا نام 'ویدیوں کا شاہی ویدیالہ' تھا۔ اٹلی کا 'سالرنو میڈیکل اسکول' اس کے دو سو برس بعد قائم ہوا، جو یورپ کا سب سے پہلا میڈیکل اسکول تھا۔ اس چینی ویدک ویدیالہ کے قائم ہونے سے پہلے کے چین کے حکیم اپنے اپنے شاگردوں کو ساتھ رکھکر ہی ویدک سکھایا کرتے تھے۔

چین کے اس شاہی ویدیالہ میں ویدک کے چار محکمے تھے جن میں ایک بیگ سارے تین سو ویدیاتھی شکشا پاتے تھے۔ ان چار محکموں میں دواؤں کے علاوہ وہ چدر پھاڑ، کن، ناک، منہ اور دانت کے روگن کا علاج، اور دوائیں ہڈیاں آدی سب سکھایا جاتا تھا۔ سرکار کی منظور کی ہوئی نتائیں پڑھائی جاتی تھیں اور ویدیاتھیں کو تین سال سے لیکر سات سال تک تعلیم دی جاتی تھی۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

چین میں روگنوں کے لئے سب سے پہلا اسپتال پانچ سو عیسوی میں قائم ہوا۔ کارن یہ تھا کہ ان دنوں چین کے شامسی پرائنٹ میں کوئی ایک بیماری پھول گئی تھی۔ اس کے بعد کی صدیوں میں اور آدھک اسپتال کھلتے گئے۔ دھیرے دھیرے راج کی طرف سے غریبوں کے لئے بہت سے اسپتال کھل گئے۔ کورھیں کے لئے ہی چین میں نئی اسپتال آئے۔

को दुहराया। इसी समय चीन में छापने की कला ईजाद हुई जिसकी बदौलत चीन का वैद्यक साहित्य देश भर में खूब फैल गया।

दसवीं सदी ईसवी से चौदहवीं सदी ईसवी तक चीन, अरब और पूरबी यूरोप के देशों में आना जाना बहुत बढ़ा। इन सब देशों में तिजारत भी खूब होने लगी। चीनी वैद्यक विद्या उन दिनों ही यूरोप पहुँची। इस आने जाने के कारण चीनी वैद्यक विद्या में भी काफी तरक्की हुई। अदरक, (चाइना रूट), कैसिया (Cassia), रुबाब (Rhubarb) चीन से दूसरे देशों को पहुँचे। चीनी वैद्यक विद्या के इस समय लगभग तेरह अलग अलग विभाग बन गए, जिनमें दवाओं का विभाग, चिर काढ़, स्त्रियों की बीमारियों, आँख, मुँह और गले की बीमारियों, बच्चों की बीमारियों, नसों को सुइयों से ठीक करना आदि आदि अलग अलग विभाग समझे जाने लगे। नसों की बीमारियों (नर्वस डिजीजेज) को सुइयों से ठीक करने का तरीका जिसे acupuncture कहते हैं चीन का पुराना तरीका है जो आज तक चीनी अस्पतालों में खूब काम में लाया जाता है। पन्द्रहवीं सदी के शुरू में चीन के बने हुए जहाज चीन से दक्खिन के देशों और यूरोप तक खूब आते जाते थे और चीनी दवाएँ उन दिनों यूरोप में खूब बिकती और इस्तेमाल की जाती थीं।

सोलहवीं सदी में चीनी हकीमों का ध्यान चेचक की बीमारी को रोकने की तरफ गया. पचास से ऊपर किताबें इस विषय पर लिखी गईं. एक खास महकमा इसी बीमारी के लिये कायम हुआ. उसी सदी में चीनी हकीमों ने चेचक का एक तरह का टीका ईजाद किया. चेचक के दानों में से मबाद निकाल कर उसे सुखा लिया जाता था और फिर उसे घा तो फुंकनी के जरिये आदमी के नथनों में पहुँचा दिया जाता था या रुई पर रखकर नथनों के ऊपर रख दिया जाता था, ताकि साँस के साथ अन्दर चला जावे. जिन लोगों के साथ यह किया जाता था वह फिर चेचक के हमले से बच जाते थे. यानी आजकल के चेचक के टीके की तरह यह भी तन्दुरुस्त आदमी को चेचक के हमले से बचाए रखने का एक तरीका था. सतरहवीं और अठारहवीं सदियों में यह तरीका सारे चीन में फैल गया. सतरहवीं सदी में रूस से कुछ हकीमों ने चीन आकर इस तरीके को सीखा. रूस से हमका रिवाज टरकी में फैला. सन् 1717 में अंग्रेजों ने इसे सुरकों से सीखा. इसके अस्सी बरस बाद यूरोप में जेनर ने गाय की चेचक के मबाद से टीका लगाने का वह तरीका निकाला जो आज तक जारी है. इस तरह आजकल के चेचक का टीका पुराने चीनी तरीके से ही निकला है और उसका एक सुधरा हुआ रूप है. दोनों का असल एक है.

सन् 1578 ईसवी में मराठूर चीनी हकीम ली शिह-चैन

کو دھو رہا ہے۔ اسی سمے چین میں چوانینگ کی کا ایجاد ہوئی جس کی بدولت چین کا ویدک ساہتیہ دیکھ ہزار میں خوب بھیل گیا۔

دسویں صدی عیسوی سے چودھویں صدی عیسوی تک
چین، عرب اور یورپی یورپ کے درمیان میں آنا جانا بہت بڑھا۔
ان سب درمیان میں تجارت بھی خوب ہونے لگی۔ چینی
وبدک دنیا ان دنوں ہی یورپ پہنچی۔ اس آئے جانے کے
کارں چینی وبدک دنیا میں بھی کافی ترقی ہوئی۔ ادراک
(چائلوٹ) 'کسیا (Cassia)'، روہارب (Rhubarb)
چین سے دوسرے درمیان کو پہنچے۔ چینی وبدک دنیا کے
اس سے لگ بھگ تیرہ الگ الگ دھاک بن گئے جن میں
دواؤں کا دھاک، چدر پھاڑ، استریوں کی بیماریاں، آنکھ، منہ
اور گلے کی بیماریاں، نسون کو سونکھوں سے ٹھیک کرنا آدی
الگ الگ دھاک سمجھے جانے لگے۔ نسون کی بیماریوں
(نروس ڈیپریز) کو سونکھوں سے ٹھیک کرنے کا طریقہ جسے
acupuncture کہتے ہیں چین کا پرانا طریقہ ہے جو آج
تک چینی اسپتالوں میں خوب کام میں لایا جاتا ہے۔ پندرہویں
صدی کے شروع میں چین کے بنے ہوئے جہاز چین سے دکن کے
درمیان اور یورپ تک خوب آتے جاتے تھے اور چینی دوائیں ان
دنوں یورپ میں خوب بکتی اور استعمال کی جاتی تھیں۔

سولہویں صدی میں چھٹی حکیموں کا دھیان چیچک کی بیماری کو روکنے کی طرف گیا۔ پچاس سے اوپر کتابیں اس وقت پر لکھی گئیں۔ ایک خاص محکمہ اس بیماری کے لئے قائم ہوا۔ اسی صدی میں چینی حکیموں نے چیچک کا ایک طرح کا ٹیکہ ایجاد کیا۔ چیچک کے دانوں میں سے مواد نکالکر اُسے ستھا لیا جاتا تھا اور پھر اُسے یا تو پھنی کے ذریعہ آدمی کے نثریوں میں پھونچا دیا جاتا تھا یا روئی پر رکھ کر نثریوں کے اوپر رکھ دیا جاتا تھا، تاکہ سانس کے ساتھ اندر چلا جاوے۔ جن لوگوں کے ساتھ یہ کیا جاتا تھا وہ پھر چیچک کے حملے سے بچ جاتے تھے۔ یعنی آجکل کے چیچک کے ٹیکہ کی طرح یہ بھی تندرست آدمی کو چیچک کے حملے سے بچانے رکھنے کا ایک طریقہ تھا۔ سترہویں اور اٹھارہویں صدیوں میں یہ طریقہ سارے چین میں پھیل گیا۔ سترہویں صدی میں روس سے کچھ حکیموں نے چین کو اس طریقہ کو سیکھا۔ روس سے اس کا رواج ترکی میں پھیلا۔ سن 1717 میں انگریزوں نے اسے ترکی سے سیکھا۔ اس کے اسی برس بعد یورپ میں جینر نے ٹیکہ کی چیچک کے مواد سے ٹیکے لگانے کا وہ طریقہ نکالا جو آج تک جاری ہے۔ اس طرح آجکل کے چیچک کا ٹیکہ پرانے چھٹی طریقہ سے ہی نکلا ہے اور اس کا ایک سدھارا ہوا روپ ہے۔ دونوں کا اصول ایک ہے۔

سنی 1578 عیسوی میں مشہور چینی حکیم لی شہ چین

نے 27 برس کی लगाاتار سوج کے باءِ چینی دواؤں پر 'پین ساسو کائو مو' نام کی کتاب لکھی۔ یہ کتاب نہ کبھی ویدک ویدیا کی دواؤں کی سب سے بڑی کتاب ہے، بلکہ آجکل کی یورپیہ ڈاکٹری میں بھی اس نے بہت بڑا حصہ لیا ہے۔ اس میں 1892 دواؤں کا ذکر ہے اور ان کے لگ بھگ دس ہزار نسخے درج ہیں۔ ان 1892 دواؤں میں سے 1094 ہسپتہ سے بنی ہیں۔ ان کی سولہ قسمیں ہیں اور سولہ کی ہر سولہ قسمیں ہیں۔ کتاب میں ان سب ہسپتہوں کے چتر بھی دیئے ہوئے ہیں۔ اس طرح ہسپتہ و گھرانہ یعنی ہائٹی کے پڑھنے میں اس کتاب سے بڑی مدد ملتی ہے۔ اس چینی کتاب کا انورڈ لاطینی، فرانسیسی، روسی، انگریزی، جرمن اور جاپانی چھ بھاشوں میں ہو چکا ہے۔

ساترہویں صدی کے آخر میں چین میں مانچو خاندان کا راج شروع ہوا۔ مانچو سمراٹوں نے ویدیشیوں کے اثر سے بچنے کے لئے باہر کے دیشوں سے تیزاارت اور آنا جانا بند کر دیا۔ یہ وہم یہاں تک بڑھا کہ جب چین کے کچھ جوتشیوں نے یورپ کی جوتھی ویدیا میں کھوج کرنا چاہا تو انہیں پالسی پر لٹکا دیا گیا یا دیہی نکالا دے دیا گیا۔ ایک یورپین عیسائی پادری نے شریرو ویدیا یعنی ایٹاتاسی پر ایک فرانسیسی کتاب کا چینی میں ترجمہ کیا تو اس کتاب کا چلن چین میں قانوناً بند کر دیا گیا۔ چینی ویدک ویدیا کی بھی اُنٹنی رک گئی۔ کبھی پرانی چیزوں پر بحثیں رہ گئیں۔ لگ بھگ تھائی سو برس کے مانچو شاسن میں چین آئے بڑھاپے کے بچائے ہر طرح کیوں بچنے ہی کو ہلتا رہا۔

یورپ کے سامراج وادی پولجی پٹیوں نے زبردستی چین کے دروازے اپنے لئے کھولائے۔ سن 1840 میں چین کی مشہور 'اڈیم جنگ' کے بعد ایسٹ انڈیا کمپنی نے چین کے دو شہروں — مکائو اور کینٹن — میں اپنے اسپتال کھولے۔ پر اس سمہ یورپ کی ڈاکٹری کسی طرح بھی چینی ڈاکٹری یا چینی ویدک ویدیا سے بڑھی ہوئی نہیں تھی۔

سن 1816 میں یورپ کی سرجری کے انڈر ایٹھر کا استعمال پہلی بار شروع ہوا۔ 1867 میں یورپ میں چیر پھار کے ساتھ نچھ نئی دوائیں استعمال ہونے لگیں جن سے زخم سڑ لے نہ پارے۔ اس کے بعد یورپ کی ویدک ویدیا نے خاص ترقی کرنی شروع کی۔ چینوں کے دلوں میں بھی یورپ کے چیر پھار کے طریقوں کی قدر بڑھی۔ لیکن چونکہ یورپ کی یہ ڈاکٹری 'اڈیم جنگ' کے ظالم حملہ آوروں کے ساتھ ساتھ آئی تھی اس لئے چینوں کے دلوں میں اس کی طرف سے شک براب رہا بنا رہا۔

ڈاکٹر سونیاٹ سین کی اشغاباई میں سن 1911 میں مانچو شاسن کا اخت ہو گیا۔ سن 1912 میں چینی

سن 1816 میں یورپ کی سرجری کے انڈر ایٹھر کا استعمال پہلی بار شروع ہوا۔ 1867 میں یورپ میں چیر پھار کے ساتھ نچھ نئی دوائیں استعمال ہونے لگیں جن سے زخم سڑ لے نہ پارے۔ اس کے بعد یورپ کی ویدک ویدیا نے خاص ترقی کرنی شروع کی۔ چینوں کے دلوں میں بھی یورپ کے چیر پھار کے طریقوں کی قدر بڑھی۔ لیکن چونکہ یورپ کی یہ ڈاکٹری 'اڈیم جنگ' کے ظالم حملہ آوروں کے ساتھ ساتھ آئی تھی اس لئے چینوں کے دلوں میں اس کی طرف سے شک براب رہا بنا رہا۔

سن 1816 میں یورپ کی سرجری کے انڈر ایٹھر کا استعمال پہلی بار شروع ہوا۔ 1867 میں یورپ میں چیر پھار کے ساتھ نچھ نئی دوائیں استعمال ہونے لگیں جن سے زخم سڑ لے نہ پارے۔ اس کے بعد یورپ کی ویدک ویدیا نے خاص ترقی کرنی شروع کی۔ چینوں کے دلوں میں بھی یورپ کے چیر پھار کے طریقوں کی قدر بڑھی۔ لیکن چونکہ یورپ کی یہ ڈاکٹری 'اڈیم جنگ' کے ظالم حملہ آوروں کے ساتھ ساتھ آئی تھی اس لئے چینوں کے دلوں میں اس کی طرف سے شک براب رہا بنا رہا۔

سن 1816 میں یورپ کی سرجری کے انڈر ایٹھر کا استعمال پہلی بار شروع ہوا۔ 1867 میں یورپ میں چیر پھار کے ساتھ نچھ نئی دوائیں استعمال ہونے لگیں جن سے زخم سڑ لے نہ پارے۔ اس کے بعد یورپ کی ویدک ویدیا نے خاص ترقی کرنی شروع کی۔ چینوں کے دلوں میں بھی یورپ کے چیر پھار کے طریقوں کی قدر بڑھی۔ لیکن چونکہ یورپ کی یہ ڈاکٹری 'اڈیم جنگ' کے ظالم حملہ آوروں کے ساتھ ساتھ آئی تھی اس لئے چینوں کے دلوں میں اس کی طرف سے شک براب رہا بنا رہا۔

سن 1816 میں یورپ کی سرجری کے انڈر ایٹھر کا استعمال پہلی بار شروع ہوا۔ 1867 میں یورپ میں چیر پھار کے ساتھ نچھ نئی دوائیں استعمال ہونے لگیں جن سے زخم سڑ لے نہ پارے۔ اس کے بعد یورپ کی ویدک ویدیا نے خاص ترقی کرنی شروع کی۔ چینوں کے دلوں میں بھی یورپ کے چیر پھار کے طریقوں کی قدر بڑھی۔ لیکن چونکہ یورپ کی یہ ڈاکٹری 'اڈیم جنگ' کے ظالم حملہ آوروں کے ساتھ ساتھ آئی تھی اس لئے چینوں کے دلوں میں اس کی طرف سے شک براب رہا بنا رہا۔

ڈاکٹر سونیاٹ سین کی اشغاباई میں سن 1911 میں مانچو شاسن کا اخت ہو گیا۔ سن 1912 میں چینی

سرکار یو آئن شہ کاٹی نے کرائیڈریوں کے ساتھ دفا کر کے دیہی کو یورپ کے سامراج وادیوں کا اور اٹھک غلم بنا دیا۔ سرکاری لوگوں میں پرانی چینی ویدک ویدیا غیر سائنسی اور بچھڑی ہوئی سمجھی جاتے تھے۔ نئے سرکاری اسکول قائم ہوئے جن میں کول یورپ کی ڈاکٹری پڑھائی جاتی تھی۔ اس کے بعد چیانگ کاٹی شیک کا زمانہ آیا۔ سن 1929 میں چیانگ کاٹی شیک نے پرانے چینی طریقے سے علاج کرنا تک غیر قانونی اعلان کر دیا۔ چینی حکیموں کے لئے اب کوئی جگہ نہ رہ گئی۔ لوگوں نے اس پر زبردست اعتراض کیا۔ چلتا کی اٹیجنا سے اور جڈا کے ساتھ ملکر تین سو چینی حکیموں نے کومن ٹانگ کی راجدھانی نانکنگ میں ایک بہت بڑا پردہشن کیا۔ کومن - ٹانگ کو کچھ جھٹکا پڑا لیکن پھر بھی وہ چینی ویدک ویدیا کے راستے میں رگارتیں ہی ڈالتے رہے، انہوں نے اسے پہنچنے نہ دیا اور یورپیہ تھنگ کے ڈاکٹروں اور پرانے تھنگ کے چینی حکیموں کو ایک دوسرے سے لڑاتے رہے۔

سن 1949 میں نئے جناتا کی سرکار کرایم ہوئی۔ اس نے اسی وقت سے یورپیہ ڈاکٹری اور چینی ویدک کے بیچ کی کھائی کو پاٹنا شروع کیا۔ سن 1950 میں چین کی پہلی ریاستی صحت کونفرنس ہوئی۔ اس نے یہ بنیادی اصول طے کیا کہ دونوں طرح کے علاج کے طریقوں سے پورا پورا نایدہ آٹھایا جاوے اور علاج کے ان طریقوں پر سب سے زیادہ زور دیا جاوے جو غریبوں، مزدوروں، کسانوں اور سپاہیوں کا بھلا کر سکیں اور جن میں روگ کے پیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے پیدا نہ ہونے پر زیادہ زور دیا جاوے۔

پچھلے سال یعنی سن 1954 میں چین کے سب سے بڑے سماچار پتر "پیپلس ڈیلی" (جن دینک) نے پورانی چینی ویدک ویدیا کی طرف سرکار کے رخ کو بالکل صاف کر دیا۔ اس نے کہا کہ چینی ویدک کے پچھلے ہزاروں سال کا تجربہ ہے، اس سارے عرصہ میں اس نے جڈا کے سوانہیہ کو ٹھیک کرنے اور ٹھیک رکھنے میں بہت بڑی مدد دی ہے۔ ساتھ ہی اس میں قدرتی طور پر کچھ کمیاں بھی ہیں جن کی وجہ سے وہ اور اٹھک نہیں بڑھ سکی۔ سرکار چاہتی ہے کہ جو چینی لوگ یورپ کی ڈاکٹری میں تعلیم پائے ہوئے ہیں وہ پرانے تھنگ کے چینی ویدیوں اور حکیموں کے ساتھ ملکر کام کریں تاکہ پرانے طریقے کی کمیاں پوری ہو سکیں، اسے سائنسی تھنگ سے چلیا جائے اور آجکل کی چینی ڈاکٹری ویدیا کا وہ ایک آرٹیکل اور خاص انگ بن جاوے۔

اسی آدھار پر سرکار نے سب جن سوانہیہ محکموں کو عملی ہدایتیں بھیج دی ہیں۔ نئی آزادی کے بعد چین کے سوانہیہ مندرائے میں پرانے چینی علاج کے طریقے کا

سرکار یو آئن شہ کاٹی نے کرائیڈریوں کے ساتھ دفا کر کے دیہی کو یورپ کے سامراج وادیوں کا اور اٹھک غلم بنا دیا۔ سرکاری لوگوں میں پرانی چینی ویدک ویدیا غیر سائنسی اور بچھڑی ہوئی سمجھی جاتے تھے۔ نئے سرکاری اسکول قائم ہوئے جن میں کول یورپ کی ڈاکٹری پڑھائی جاتی تھی۔ اس کے بعد چیانگ کاٹی شیک کا زمانہ آیا۔ سن 1929 میں چیانگ کاٹی شیک نے پرانے چینی طریقے سے علاج کرنا تک غیر قانونی اعلان کر دیا۔ چینی حکیموں کے لئے اب کوئی جگہ نہ رہ گئی۔ لوگوں نے اس پر زبردست اعتراض کیا۔ چلتا کی اٹیجنا سے اور جڈا کے ساتھ ملکر تین سو چینی حکیموں نے کومن ٹانگ کی راجدھانی نانکنگ میں ایک بہت بڑا پردہشن کیا۔ کومن - ٹانگ کو کچھ جھٹکا پڑا لیکن پھر بھی وہ چینی ویدک ویدیا کے راستے میں رگارتیں ہی ڈالتے رہے، انہوں نے اسے پہنچنے نہ دیا اور یورپیہ تھنگ کے ڈاکٹروں اور پرانے تھنگ کے چینی حکیموں کو ایک دوسرے سے لڑاتے رہے۔

سن 1949 میں نئی چلتا کی سرکار قائم ہوئی۔ اس نے اسی وقت سے یورپیہ ڈاکٹری اور چینی ویدک کے بیچ کی کھائی کو پاٹنا شروع کیا۔ سن 1950 میں چین کی پہلی ریاستی صحت کونفرنس ہوئی۔ اس نے یہ بنیادی اصول طے کیا کہ دونوں طرح کے علاج کے طریقوں سے پورا پورا نایدہ آٹھایا جاوے اور علاج کے ان طریقوں پر سب سے زیادہ زور دیا جاوے جو غریبوں، مزدوروں، کسانوں اور سپاہیوں کا بھلا کر سکیں اور جن میں روگ کے پیدا ہو جانے پر علاج کرنے کی نسبت روگوں کے پیدا نہ ہونے پر زیادہ زور دیا جاوے۔

پچھلے سال یعنی سن 1954 میں چین کے سب سے بڑے سماچار پتر "پیپلس ڈیلی" (جن دینک) نے پرانی چینی ویدک ویدیا کی طرف سرکار کے رخ کو بالکل صاف کر دیا۔ اس نے کہا کہ چینی ویدک کے پچھلے ہزاروں سال کا تجربہ ہے، اس سارے عرصہ میں اس نے جڈا کے سوانہیہ کو ٹھیک کرنے اور ٹھیک رکھنے میں بہت بڑی مدد دی ہے۔ ساتھ ہی اس میں قدرتی طور پر کچھ کمیاں بھی ہیں جن کی وجہ سے وہ اور اٹھک نہیں بڑھ سکی۔ سرکار چاہتی ہے کہ جو چینی لوگ یورپ کی ڈاکٹری میں تعلیم پائے ہوئے ہیں وہ پرانے تھنگ کے چینی ویدیوں اور حکیموں کے ساتھ ملکر کام کریں تاکہ پرانے طریقے کی کمیاں پوری ہو سکیں، اسے سائنسی تھنگ سے چلیا جائے اور آجکل کی چینی ڈاکٹری ویدیا کا وہ ایک آرٹیکل اور خاص انگ بن جاوے۔

اسی آدھار پر سرکار نے سب جن سوانہیہ محکموں کو عملی ہدایتیں بھیج دی ہیں۔ نئی آزادی کے بعد چین کے سوانہیہ مندرائے میں پرانے چینی علاج کے طریقے کا

ایک الگ محکمہ قائم ہوا۔ اس محکمہ کو اب بہت بڑھا دیا گیا ہے۔ پہلنگ میں ایک راشنریہ ایکادمی قائم ہوئی ہے جس کا کم ہی پرانی ویدک ویدیا میں پوری پوری کہوچ کرنا ہے۔ شکھائی، ناننگ، اور دوسرے شہروں میں سرکاری اسپتال کھول دیئے گئے ہیں جن میں پرانی ویدک ویدیا کے طریقے سے ہی روگیوں کا علاج کیا جاتا ہے، اور پرانے دنگ سے باریک سڈیوں کے چریے نسیں کی بیماریوں (Nervous diseases) کا علاج کیا جاتا ہے۔ پہلنگ میں ایک سنسٹھا قائم کی گئی ہے جس میں نسیں کے علاج کے اس پرانے طریقے (acupuncture) اور جڑی بوٹیوں سے داغ کر دردوں کو دور کرنے کے پرانے طریقے (Moxibustion) دونوں پر تجربے کر کے نئے نئے ڈاکٹری طریقوں سے ان کا مقابلہ کرے، اس بات کو دیکھتے ہوئے کہ بیماری اور تندرستی کا نسیں کے ساتھ کتنا گہرا سببندہ ہے، ان دونوں پرانے طریقوں کو نئے سائنسی تھنگ پر چلیا جا رہا ہے۔ نسیں کی بیماریوں کے علاج میں، پوسٹ یعنی ہاضمہ کی بیماریوں کے علاج میں اور ہاتھوں پیروں کی بیماریوں کے علاج میں ان پرانے طریقوں سے بہت اچھے اچھے نتیجے پیدا کئے جاتے ہیں۔

چین میں یورپی ڈاکٹری کے بھی اسپتال موجود ہیں۔ ان میں سے بہت سے اسپتالوں نے اپنے الگ محکمہ کھول دیئے ہیں جن میں پرانے دنگ سے ہی روگیوں کا علاج ہوتا ہے۔ ان اسپتالوں کے ادھیکاری پرانے دنگ کے چینی ڈاکٹروں کو اپنے یہاں رکھتے ہیں اور سب چیزوں میں ان سے صلاحیت کرتے ہیں۔ تھوڑے ہی دنوں میں چین کے بہت سے میڈیکل کالجوں میں پرانی ویدک کی کتابیں اور ان کے علاج کے طریقے بھی ویدیا تھوں کو پڑھائے اور سکھائے جاتے ہیں۔ پرانی چینی ویدک کی کتابیں پھر سے چھاپی جا رہی ہیں اور ہمارے نئے دنگ کے ڈاکٹر ان کتابوں کو دھیان کے ساتھ پڑھ رہے ہیں۔ چین میں دوائیں تیار کرنے کی جو سب سے بڑی سوسائٹی ہے The Chinese Pharmaceutical Society، اگلے پانچ برس کے اندر کئی سو پرانی چینی دواؤں پر تجربے کر کے انھیں ٹھیک ٹھیک تیار کرنے کی پوجنا بنا رہی ہے۔ چین میں ڈاکٹروں کی سب سے بڑی ایسوسی ایشن 'چائینیز میڈیکل ایسوسی ایشن' ہے۔ پہلے اس کے ممبر کیوں یورپین دنگ کے ڈاکٹر ہی ہوسکتے تھے۔ اب اس ایسوسی ایشن نے دیش بھر میں اپنی سب شاخوں کو ہدایت بھیج دی ہیں کہ پرانے دنگ کے تجربہ کار چینی حکیموں کو بھی اسی طرح سے ایسوسی ایشن کا ممبر بنایا جائے جس طرح نئے دنگ کے ڈاکٹروں کو۔

دونوں طرح کے ڈاکٹر چین میں ملکر کام کر رہے ہیں۔ دونوں طریقوں میں کہوچ جاری ہے۔ مقصد یہ ہے کہ دیش میں جو عام علاج کے طریقے آگے کو چلیں ان میں پرانی چینی

ایک الگ محکمہ قائم ہوا۔ اس محکمہ کو اب بہت بڑھا دیا گیا ہے۔ پہلنگ میں ایک راشنریہ ایکادمی قائم ہوئی ہے جس کا کم ہی پرانی ویدک ویدیا میں پوری پوری کہوچ کرنا ہے۔ شکھائی، ناننگ، اور دوسرے شہروں میں سرکاری اسپتال کھول دیئے گئے ہیں جن میں پرانی ویدک ویدیا کے طریقے سے ہی روگیوں کا علاج کیا جاتا ہے، اور پرانے دنگ سے باریک سڈیوں کے چریے نسیں کی بیماریوں (Nervous diseases) کا علاج کیا جاتا ہے۔ پہلنگ میں ایک سنسٹھا قائم کی گئی ہے جس میں نسیں کے علاج کے اس پرانے طریقے (acupuncture) اور جڑی بوٹیوں سے داغ کر دردوں کو دور کرنے کے پرانے طریقے (Moxibustion) دونوں پر تجربے کر کے نئے نئے ڈاکٹری طریقوں سے ان کا مقابلہ کرے، اس بات کو دیکھتے ہوئے کہ بیماری اور تندرستی کا نسیں کے ساتھ کتنا گہرا سببندہ ہے، ان دونوں پرانے طریقوں کو نئے سائنسی تھنگ پر چلیا جا رہا ہے۔ نسیں کی بیماریوں کے علاج میں، پوسٹ یعنی ہاضمہ کی بیماریوں کے علاج میں اور ہاتھوں پیروں کی بیماریوں کے علاج میں ان پرانے طریقوں سے بہت اچھے اچھے نتیجے پیدا کئے جاتے ہیں۔

چین میں یورپی ڈاکٹری کے بھی اسپتال موجود ہیں۔ ان میں سے بہت سے اسپتالوں نے اپنے الگ محکمہ کھول دیئے ہیں جن میں پرانے دنگ سے ہی روگیوں کا علاج ہوتا ہے۔ ان اسپتالوں کے ادھیکاری پرانے دنگ کے چینی ڈاکٹروں کو اپنے یہاں رکھتے ہیں اور سب چیزوں میں ان سے صلاحیت کرتے ہیں۔ تھوڑے ہی دنوں میں چین کے بہت سے میڈیکل کالجوں میں پرانی ویدک کی کتابیں اور ان کے علاج کے طریقے بھی ویدیا تھوں کو پڑھائے اور سکھائے جاتے ہیں۔ پرانی چینی ویدک کی کتابیں پھر سے چھاپی جا رہی ہیں اور ہمارے نئے دنگ کے ڈاکٹر ان کتابوں کو دھیان کے ساتھ پڑھ رہے ہیں۔ چین میں دوائیں تیار کرنے کی جو سب سے بڑی سوسائٹی ہے The Chinese Pharmaceutical Society، اگلے پانچ برس کے اندر کئی سو پرانی چینی دواؤں پر تجربے کر کے انھیں ٹھیک ٹھیک تیار کرنے کی پوجنا بنا رہی ہے۔ چین میں ڈاکٹروں کی سب سے بڑی ایسوسی ایشن 'چائینیز میڈیکل ایسوسی ایشن' ہے۔ پہلے اس کے ممبر کیوں یورپین دنگ کے ڈاکٹر ہی ہوسکتے تھے۔ اب اس ایسوسی ایشن نے دیش بھر میں اپنی سب شاخوں کو ہدایت بھیج دی ہیں کہ پرانے دنگ کے تجربہ کار چینی حکیموں کو بھی اسی طرح سے ایسوسی ایشن کا ممبر بنایا جائے جس طرح نئے دنگ کے ڈاکٹروں کو۔

دونوں طرح کے ڈاکٹر چین میں ملکر کام کر رہے ہیں۔ دونوں طریقوں میں کہوچ جاری ہے۔ مقصد یہ ہے کہ دیش میں جو عام علاج کے طریقے آگے کو چلیں ان میں پرانی چینی

ویدک کی ساری وراثت کو کھپا لیا جاوے۔ اس کام میں ابھی برسوں لگیں گے۔ لیکن جب یہ پورا ہو جائیگا تو چٹن کے لوگوں کی تندرستی کو اس سے بہت بڑا فائدہ پہونچےگا اور دنیا بھر کا ویدک دیکان اس سے اور ادھک مالا مال ہوگا۔

ویدک کی ساری وراثت کو کھپا لیا جاوے۔ اس کام میں ابھی برسوں لگیں گے۔ لیکن جب یہ پورا ہو جائیگا تو چٹن کے لوگوں کی تندرستی کو اس سے بہت بڑا فائدہ پہونچےگا اور دنیا بھر کا ویدک دیکان اس سے اور ادھک مالا مال ہوگا۔

(“چائنا ریک-سٹرکچر” سے)

(“چائنا ریکسٹرکچس” سے)

گاندھی اور کبیر

گاندھی اور کبیر

سری امبا شنکر ناگر ایم. اے.

سری امبا شنکر ناگر ایم. اے.

ان دونوں مہاپرشوں کا جینوں ایک دوسرے سے اتنا زیادہ ملتا جلتا ہے کہ ایک کے بارے میں وچار کرتے وقت دوسرے کا خیال آئے بنا نہیں رہتا۔ دونوں نے اپنے زمانے کی مانگ کو محسوس کیا تھا۔ دونوں نے وقت اور حالات کی ضرورتوں کو سمجھا تھا اور دونوں ہی عام جنتا کی مشکلوں کو رفع کرنے میں جہوں بھر لگے رہے۔ اتنا ہی نہیں، ان دونوں مہاپرشوں نے آگے بڑھکر آندھڑے میں پھٹکتے ہوئے لوگوں کو اس سسٹم سے ہٹا دیا تھا جس سسٹم انہیں اس امداد کی بڑی ضرورت تھی۔

ان دونوں مہاپرشوں کا جینوں ایک دوسرے سے اتنا زیادہ ملتا جلتا ہے کہ ایک کے بارے میں وچار کرتے وقت دوسرے کا خیال آئے بنا نہیں رہتا۔ دونوں نے اپنے زمانے کی مانگ کو محسوس کیا تھا۔ دونوں نے وقت اور حالات کی ضرورتوں کو سمجھا تھا اور دونوں ہی عام جنتا کی مشکلوں کو رفع کرنے میں جہوں بھر لگے رہے۔ اتنا ہی نہیں، ان دونوں مہاپرشوں نے آگے بڑھکر آندھڑے میں پھٹکتے ہوئے لوگوں کو اس سسٹم سے ہٹا دیا تھا جس سسٹم انہیں اس امداد کی بڑی ضرورت تھی۔

دونوں ہندو مسلم ایکٹ کے سمرتھک

دونوں ہندو مسلم ایکٹ کے سمرتھک

کبیر اور گاندھی دونوں ہی کچلے اور سٹاپے بگ کے پیرامبر تھے۔ دونوں اُچ-نیچ اور جاتی-پاؤت کے بےد کو فیکل ماننے تھے۔ دونوں نے پورانی روڈیوں اور اُپدیشواؤں کے خلیاکر آواؤں کو اٹھائی تھی۔ دھرم اور مچھب، مندر اور مسجد، ایشور اور اللہ کے نام پر لڑنے والے ہندو اور مسلمانوں میں ایکٹ قائم کرنے کے لئے تو یہ دونوں ہی مہاتما جین بھر لگے رہے۔

کبیر اور گاندھی دونوں ہی کچلے اور سٹاپے بگ کے پیرامبر تھے۔ دونوں اُچ-نیچ اور جاتی-پاؤت کے بےد کو فیکل ماننے تھے۔ دونوں نے پورانی روڈیوں اور اُپدیشواؤں کے خلیاکر آواؤں کو اٹھائی تھی۔ دھرم اور مچھب، مندر اور مسجد، ایشور اور اللہ کے نام پر لڑنے والے ہندو اور مسلمانوں میں ایکٹ قائم کرنے کے لئے تو یہ دونوں ہی مہاتما جین بھر لگے رہے۔

کبیر اگر کہتے تھے—

کبیر اگر کہتے تھے—

“ماہرے، دھ جگدیس کھائے تے آواہا۔

بھائی رہے، دونی جگدیس کھانے آئے

اٹلاہ رام کریما کسوں ہر ہجرت نام دھراہا ॥

اللہ رام کریما کیسو، ہری حضرت نام دھراہا۔

تو گاندھی بھی پراوتہا میں ایشور اللہ تھرا نام، کہ کر سب کو اسی ایکٹ کا پاٹ پڑھاتے تھے۔

تو گاندھی بھی پراوتہا میں ایشور اللہ تھرا نام، کہ کر سب کو اسی ایکٹ کا پاٹ پڑھاتے تھے۔

दोनों अछूतों के मसीहा

कबीर ने अगर—

“जात पांत पूछै नहीं कोई ।

हरि को भजै सा हरि का होई ॥

कह कर सबको भक्ति का अधिकारी माना था तो गाँधी ने युग युग से दलित अछूतों को सामाजिक कार्यों में शरीक होने का और मंदिरों में प्रवेश करने का अधिकारी करार दिया था. गाँधी अछूतों के मसीहा थे. अछूत उद्धार के जिस नेक काम को कबीर ने शुरू किया था गांधी ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर उसे पूरा कर दिखाया.

दोनों की 'करनी' और 'कथनी' में समानता

ये दोनों ही महात्मा सत्य और ज्ञान के पुजारी थे. असत्य और अज्ञान को मिटाना ही जैसे इनके जीवन का मकसद था. दोनों ही आचार और विचार की शुद्धि को व्यक्ति और समाज के लिए जरूरी मानते थे. सबसे बड़ी बात तो यह है कि इन दोनों महापुरुषों की 'करनी' और 'कथनी' में जरा सा भी भेद नहीं था. जैसा रुद करते थे वैसा ही वे दूसरों का करने के लिए कहते थे. 'करनी' के बिना 'कथनी' बिलकुल बेकार है; इस सचाई को समझ कर ही इन महापुरुषों ने अपने काम में हाथ डाला था. यही वजह है कि इनकी ज़बान में वह तासीर पैदा हुई कि जिसका वजह से न केवल इस देश का बल्कि एक युग की काया पलट हा गई. जो काम कबीर की बाणी न सालहवीं सदी में किया था वही काम इस बीसवीं सदी में महात्मा गांधी का ज़बान ने किया. इस तरह अगर हम चाहें तो गाँधी का बीसवीं सदी का कबीर भी कह सकते हैं.

दोनों अहिंसा के पुजारी

कबीर और गांधी दोनों अहिंसा के उसूल को मानते थे. जानवरों का मारकर उनका मांस खाने का वे अप्राकृतिक कहते थे. कबीर ने गोशत-जारों को इस तरह फटकारा है—

“बकरी पाती खात है,

तिसकी कादी खाल ।

जे नर बकरी खात है,

तिनका कौन हवाल ?”

“बकरी पत्ते खाती है, इस पर तो हम उसकी खाल खींच लेते हैं, जो आदमी बकरी का खाते हैं उनकी क्या दशा हागी ? जरा कल्पना तो कीजिये !”

दोनों ने भ्रम का महत्त्व बढ़ाया

इन दोनों महात्माओं ने भ्रम के महत्त्व को समझा था. कबीर अगर रात दिन सूत का ताना बुनते रहते थे तो गांधी जी भी सदा चरखे और तकली का लेकर सूत कातने में लगे रहते थे. गांधी ने अपने जीवन में जो बड़े काम किए

दुनों اچھوتوں کے مسیحا

کبیر نے اگر—

‘جات پانت پوچھ نہیں کوئی

ہری کو بھجے سو ہری کا ہوئی’

کہہ کر سب کو بھکتی کا ادھیکاری مانا تھا تو گاندھی نے یک یک سے دلت اچھوتوں کو سماجک کریں میں شریک ہونے کا اور مندروں میں پرویش کرنے کا ادھیکاری قرار دیا تھا . گاندھی اچھوتوں کے مسیحا تھے . اچھوت ادھار کے جس نیک کام کو کبیر نے شروع کیا تھا گاندھی نے اپنے پرانوں کی بازی لگا کر اُسے پورا کر دیا .

دوनों کی 'کرنی' اور 'کتنی' میں سماتنا

یہ دونوں ہی مہاتما ستیہ اور گیان کے پجاری تھے . استیہ اور گیان کو مٹانا ہی جیسے اُن کے جیوں کا مقصد تھا . دونوں ہی اچار اور وچار کی شدھی نو دیکتی اور سماج کے لئے ضروری مانتے تھے . سب سے بڑی بات تو یہ ہے کہ اُن دونوں مہا پرشوں کی 'کرنی' اور 'کتنی' میں ذرا سا بھی بھد نہیں تھا . جیسا خود کرتے تھے ویسا ہی دے دوسروں کو کرنے کے لئے کہتے تھے . 'کرنی' کے بنا 'کتنی' بالکل بھکار ہے؛ اُس سچائی کو سمجھ کر ہی اُن مہا پرشوں اپنے کام میں ہاتھ ڈالا تھا . یہی وجہ ہے کہ اُن کی زبان میں وہ تاثیر پیدا ہوئی کہ جس کی وجہ سے نہ بھول اُس دیہی کی بلکہ ایک ایک کا پلٹ سو گئی . جو کام کبیر کی ہانی نے سواریں صدی میں کیا تھا وہی کام اُس بیسویں صدی میں مہاتما گاندھی کی زبان نے کیا . اُس طرح اگر ہم چاہیں تو گاندھی نو بیسویں صدی کا کبیر بھی کہہ سکتے ہیں .

دوनों اھسا کے پجاری

کبیر اور گاندھی دونوں اھسا کے اصول کو مانتے تھے . جانوروں کو مارکر اُن کا مانس کھانے کو دے ابراثریک کہتے تھے . کبیر نے گوشت خوروں کو اِس طرح پھٹکارا ہے—

‘بکری پانی کھاتی ہے’

نس کی گاڑی کھال .

جے نر بکری کھات ہے

تن کا کون حوال ؟”

‘بکری پتہ کھاتی ہے’ اِس پر تو ہم اُس کی کھال کھینچ لیتے ہیں . جو آدمی بکری کو کھاتے ہیں اُن کی کیا دشا ہوگی ؟ ذرا کلپنا تو کیجئے !

دوनों نے شرم کا مہتو بڑھایا

اُن دونوں مہاتماؤں نے شرم کے مہتو کو سمجھا تھا . کبیر اگر رات دن سوت کا تانا بنتے رہتے تھے تو گاندھی جی بھی سدا چرخہ اور تکی کو لیکر سوت کاننے میں لگے رہتے تھے . گاندھی نے اپنے جیوں میں جو بڑے کام کئے

ہیں انہیں سے ایک یہ بھی ہے کہ انہوں نے اُبھرت شرم کی پھر سے پرستش کی۔ انگریزی سپہیتا کی چکاچوند سے لوگوں کی آنکھیں چکرا گئی تھیں۔ دماغ میں ہابوگدہ کی ایک ایسی بو بھر گئی تھی کہ لوگ ہاتھ سے کام کرنے میں اپنی توہین سمجھتے تھے۔ ایسے سمے میں گاندھی جی جہازو لیکر خود بھنگی کا کام کرنے لگے۔ جو کام سب سے نیچا سمجھا جاتا تھا اُسی سے انہوں نے شروعات کی۔ پیشوں میں جلائے کا پیشہ برا مانا جاتا تھا اُسے بھی گاندھی جی نے ایسی عزت بخشی کہ چرخہ گتنا آج سب عزت کا کام سمجھتے ہیں۔

भाषा की समस्या पर दोनों एक मत

کहाँ تک کھوں، میں تو ہر کام میں ان دونوں کو ایک پاتا ہوں۔ ہر مسئلے پر ان کے وچار اتنے ملتے جلتے نظر آتے ہیں کہ تعجب ہوئے ہٹا نہیں دیتا۔ آجکل بھاشا کا سوال ایک اہم سوال بنا ہوا ہے۔ پر اِس سوال پر بھی ان دونوں پر مرشدوں کی ایک ہی رائے تھی۔ کبیر کہا کرتے تھے—

“संस्क्रित जलकूप कबीरा,
भाषा बहता नीर।”

گاندھی جی بھی سرل اور چلتی بھاشا کے حمایتی تھے۔ وہ کہا کرتے تھے کہ بھاشا تو وچار کا وطن ہے۔ ہمیں بھاشا پر دھیان دینے سے زیادہ بھاؤ یا وچار پر دھیان دینا چاہئے۔

जीवन ही नहीं मृत्यु में भी समानता

جہوں میں ہی نہیں مرنے میں بھی سمانتا

ن کےवल जीवन में बल्कि इन दोनों महात्माओं की मृत्यु में भी मुझे तो एक अजीबा गरीब क्रिस्म की समानता दिखाई देती है۔

کبیر مگر میں جا کر مرے یہ ثابت کرنے کے لئے کہ ہندوں کا یہ خیال غلط ہے کہ کشی میں مرنے سے آدمی سرگ میں اور مگر میں مرنے سے ترک میں جاتا ہے۔ وہ ہندو مسلمانوں کے اندر وشواسوں کو متاثر اُنہیں بنیادی ایتنا قائم کرنا چاہتے تھے۔

کبیر کی مرنے کی کہانی بھی بڑی دلچسپ ہے۔ وہ مگر میں جا کر مرے۔ ان کی لاش کو لے کر ہندو مسلمان لڑنے لگے۔ ہندو ان کے شو کو جلانا چاہتے تھے اور مسلمان گڑا۔ لڑائی کی نوبت آگئی۔ تلواریں تن گئیں۔ پر جب کسی مسجددار نے کفن کو اُٹھائے دیکھا تو وہاں صرف ایک پھولوں کا ڈھیر! دونوں نے پھولوں کو اُٹھا اُٹھا ہانت لیا۔ ہندو نے کشی میں انہیں ہندو ودھی سے جلایا، مسلمانوں نے مگر میں گڑا۔

میں تو یہ کہوں گا کہ کبیر نے نہ کیوں جیتے جی بلکہ مرکز بھی ہندو مسلمانوں کو ایک کے سوتر میں باندا۔

بھاشا کی سمسیا پر بھی دونوں ایک مت

کبیر مگر میں جا کر مرے یہ ثابت کرنے کے لئے کہ ہندوں کا یہ خیال غلط ہے کہ کشی میں مرنے سے آدمی سرگ میں اور مگر میں مرنے سے ترک میں جاتا ہے۔ وہ ہندو مسلمانوں کے اندر وشواسوں کو متاثر اُنہیں بنیادی ایتنا قائم کرنا چاہتے تھے۔

“संस्कृत जल कूप कबीरा,
भाषा बहता नीर।”

گاندھی جی بھی سرل اور چلتی بھاشا کے حمایتی تھے۔ وہ کہا کرتے تھے کہ بھاشا تو وچار کا وطن ہے۔ ہمیں بھاشا پر دھیان دینے سے زیادہ بھاؤ یا وچار پر دھیان دینا چاہئے۔

जहों में ही नहीं मरने में भी समानता

ن کےवल जीवन में बल्कि इन दोनों महात्माओं की मृत्यु में भी मुझे तो एक अजीबा गरीब क्रिस्म की समानता दिखाई देती है۔

کبیر مگر میں جا کر مرے یہ ثابت کرنے کے لئے کہ ہندوں کا یہ خیال غلط ہے کہ کشی میں مرنے سے آدمی سرگ میں اور مگر میں مرنے سے ترک میں جاتا ہے۔ وہ ہندو مسلمانوں کے اندر وشواسوں کو متاثر اُنہیں بنیادی ایتنا قائم کرنا چاہتے تھے۔

کبیر کی مرنے کی کہانی بھی بڑی دلچسپ ہے۔ وہ مگر میں جا کر مرے۔ ان کی لاش کو لے کر ہندو مسلمان لڑنے لگے۔ ہندو ان کے شو کو جلانا چاہتے تھے اور مسلمان گڑا۔ لڑائی کی نوبت آگئی۔ تلواریں تن گئیں۔ پر جب کسی مسجددار نے کفن کو اُٹھائے دیکھا تو وہاں صرف ایک پھولوں کا ڈھیر! دونوں نے پھولوں کو اُٹھا اُٹھا ہانت لیا۔ ہندو نے کشی میں انہیں ہندو ودھی سے جلایا، مسلمانوں نے مگر میں گڑا۔

میں تو یہ کہوں گا کہ کبیر نے نہ کیوں جیتے جی بلکہ مرکز بھی ہندو مسلمانوں کو ایک کے سوتر میں باندا۔

स्वतंत्रता کی यात्रا کی चौथی پیढ़ی

جو کام انکے جیون نے نہ کیا وہ ان کی مرتہو نے کر دکھایا۔ آج کبیر پنہ کے مانہ والے ہندو اور مسلمان دونوں ہیں۔ اور دونوں جیون کے بنیادی اصولوں میں ایک ہیں۔

گاندھی جی نے بھی اسی ہندو مسلم ایکٹا کی خاطر اپنے پران دیئے۔ اپنے جیون کی آخری سانس تک وہ ان دونوں جاتہوں میں ایکٹا قائم کرنے کے لئے کوشش کرتے رہے۔ جیون کی ہی طرح گاندھی جی کی مرتہو بھی مہان تھی۔ وہ اُس سے مرے جب وہ پرارتہنا کر رہے تھے، رلم نام لے رہے تھے اور لوگوں کو جیونہ کا صحیح طریقہ سکھا رہے تھے۔

گاندھی جی کی مرتہو بھی کبیر کی مرتہو کی طرح سماج کے لئے بڑی پرہیزشالی ثابت ہوئی۔ اپنے ہایو کو اپنے ہاتھوں سے مارکر ہندوؤں کا نلیچہ ٹھنڈا ہوا۔ شرم سے ہندوؤں کا سر اپنے آپ جھک گیا۔ ایسا نہ ہوا ہوتا تو پتہ نہیں اُس سے جوش جان میں لوگ اور کیا کرتے!

سوئقترتا کی یاترا کی چوتھی پیڑھی

گاندھی جی نے بھی اسی ہندو مسلم ایکٹا کی خاطر اپنے پران دیئے۔ اپنے جیون کی آخری سانس تک وہ ان دونوں جاتہوں میں ایکٹا قائم کرنے کے لئے کوشش کرتے رہے۔ جیون کی ہی طرح گاندھی جی کی مرتہو بھی مہان تھی۔ وہ اُس سے مرے جب وہ پرارتہنا کر رہے تھے، رلم نام لے رہے تھے اور لوگوں کو جیونہ کا صحیح طریقہ سکھا رہے تھے۔

گاندھی جی کی مرتہو بھی کبیر کی مرتہو کی طرح سماج کے لئے بڑی پرہیزشالی ثابت ہوئی۔ اپنے ہایو کو اپنے ہاتھوں سے مارکر ہندوؤں کا نلیچہ ٹھنڈا ہوا۔ شرم سے ہندوؤں کا سر اپنے آپ جھک گیا۔ ایسا نہ ہوا ہوتا تو پتہ نہیں اُس سے جوش جان میں لوگ اور کیا کرتے!

گاندھی جی کی مرتہو بھی کبیر کی مرتہو کی طرح سماج کے لئے بڑی پرہیزشالی ثابت ہوئی۔ اپنے ہایو کو اپنے ہاتھوں سے مارکر ہندوؤں کا نلیچہ ٹھنڈا ہوا۔ شرم سے ہندوؤں کا سر اپنے آپ جھک گیا۔ ایسا نہ ہوا ہوتا تو پتہ نہیں اُس سے جوش جان میں لوگ اور کیا کرتے!

स्वतंत्रता की यात्रा की चौथी पीढ़ी

سوئقترتا کی یاترا کی چوتھی پیڑھی

श्री मगनभाई देसाई

शरी मगनभाई देसाई

दक्षिण अफ्रिका से 1915 में गांधी जी भारत आये। यूरोपीय जंग उस समय शुरू हो चुका था। भारत आने के बाद उन्होंने जो काम अपने हाथ में लिये उनमें एक खास काम रंगरूटों की भरती का था। उसके साथ ही साथ 1917 से दूसरे काम भी शुरू हुए—चंपारण और खेड़ा का सत्याग्रह अहमदाबाद की मजदूर हड़ताल, विरमगाम की नाकाबंदी इत्यादि सत्याग्रह प्रयोग थे। और उसके साथ साथ स्वतंत्रता यात्रा की नई, हमारी गिनती के मुताबिक चौथी, पीढ़ी शुरू हुई।

इस चौथी पीढ़ी को 1915 या 1920 से गिना जाय तो उसे तब से लेकर 1948 तक माना जा सकता है। मतलब यह कि वह पूरी तीस साल की पीढ़ी है कि जिसके दरमियान एक नई पीढ़ी भी पैदा हो सकती है और हुई भी है। फिर भी उस पीढ़ी ने अपनी बुजुर्ग पीढ़ी के मातहत रहकर ही काम किया है, वह अपना खुद का असर डाल सके उतनी

दक्षिण अफ्रिका से 1915 में गांधी जी भारत आये। यूरोपीय जंग उस समय शुरू हो चुका था। भारत आने के बाद उन्होंने जो काम अपने हाथ में लिये उनमें एक खास काम रंगरूटों की भरती का था। उसके साथ ही साथ 1917 से दूसरे काम भी शुरू हुए—चंपारण और खेड़ा का सत्याग्रह अहमदाबाद की मजदूर हड़ताल, विरमगाम की नाकाबंदी इत्यादि सत्याग्रह प्रयोग थे। और उसके साथ साथ स्वतंत्रता यात्रा की नई, हमारी गिनती के मुताबिक चौथी, पीढ़ी शुरू हुई।

इस चौथी पीढ़ी को 1915 या 1920 से गिना जाय तो उसे तब से लेकर 1948 तक माना जा सकता है। मतलब यह कि वह पूरी तीस साल की पीढ़ी है कि जिसके दरमियान एक नई पीढ़ी भी पैदा हो सकती है और हुई भी है। फिर भी उस पीढ़ी ने अपनी बुजुर्ग पीढ़ी के मातहत रहकर ही काम किया है, वह अपना खुद का असर डाल सके उतनी

شکست شالی یا اپنے الگ آدھی دیکھ والی نہیں تھی۔ اس طرح یہ ایک سلسلے وار یک ہوئے سے آئے ہم گاندھی یک بھی کہہ سکتے ہیں۔

اس یک کا انتہاس ہمارے دیہی کا ایک شاندار اور بہت بلند انتہاس ہے۔ اس کا صحیح مول پوروشہ کے انتہا کار آنگ سیکھ۔ اس کا اثر ساری دنیا کے انتہاس پرواہ پر بھی ہو رہا ہے، اس سے وہ حقیقت وشو انتہاس میں بھی ایک نیا باب شروع کرنے والی ثابت ہوئی ہے۔ اس کی وجہ سے نہ صرف ویدیشوں کی غلطی کا انت ہو کر بھارت کا اپنا سولتکر انتہاس پھر سے شروع ہوا ہے، بلکہ اس کہتا ہے، وشو انتہاس میں آنیسویں صدی میں جو سلسلہ ایک اور پلٹو دیوگراہ شروع ہوئے، اس میں بھی بھاری پھر بھار اور مہان کرائی کے بیج اس نے ہوئے ہیں۔

اس کرائی سے اب دنیا میں نئے سوال اور نیا پرشتہ شروع ہوتا ہے، جس کی پہلی کڑی بھارت کی سولتکرنا ہے۔ گاندھی یک کی پیڑھی نے ایسی مہان کہتا کو دیکھا، اس میں حصہ لیا اور اسے پیدا کرنے میں یہ پیڑھی خاص سبب بنی۔ سولتکرنا پھر کے چار کے پیڑھی نامہ کو مختصر میں ایک بار یاد کر کے اس کی اس چوتھی پیڑھی کے خاص خاص مدوں کو ہم دیکھیں گے۔

ہم نے اس پرکار پیڑھیوں کی چرچا کی ہے :-

پہلی پیڑھی—راجا رامموہن راء۔

دوسری پیڑھی—سن 1867 اور اس کے بعد کی سرکاری کا زمانہ۔

تیسری پیڑھی—جائتگی سے راءر سبھا کا یوگ۔ اس کے دو پرکار—جہاں اور موال۔

اس کے بعد آئے والی۔ چوتھی، پیڑھی—راشتر کی سب شکستوں کو ملا کر اکٹھا کرنے کا یک۔

[2]

اس سے کے درمیان دیہی کی آزادی کے نقطہ نظر سے دیکھتے ہوئے اسے حاصل کرنے کے لئے جو کوششیں شروع ہوئیں، ان کے اگر موئے طور پر حصہ لے جائیں، تو وہ دو تھے، ایسا بتایا جاسکتا ہے۔

(1) جنٹا کا گیلن، اس کی سبب، سدھار اور دلاس اتھادی شکستوں کے ذریعہ آگے بڑھنے کا طریقہ، جو راجا رام موہن راء سے شروع ہوا، ایسا کہا جاسکتا ہے۔

آگے چلکر یہ طریقہ بدھارنہ دیہی اتھادی گرام سے پہچانا گیا، جو آگے چلکر گاندھی یک میں شانت ستیاگرہ تک وکست ہوا۔

(2) گاندھی اربوں اور باہر کی راجہداری مدد سے لڑکر کم آگے چلنے کی کوشش۔

اس سے کے درمیان دیہی کی آزادی کے نقطہ نظر سے دیکھتے ہوئے اسے حاصل کرنے کے لئے جو کوششیں شروع ہوئیں، ان کے اگر موئے طور پر حصہ لے جائیں، تو وہ دو تھے، ایسا بتایا جاسکتا ہے۔

[2]

اس سے کے درمیان دیہی کی آزادی کے نقطہ نظر سے دیکھتے ہوئے اسے حاصل کرنے کے لئے جو کوششیں شروع ہوئیں، ان کے اگر موئے طور پر حصہ لے جائیں، تو وہ دو تھے، ایسا بتایا جاسکتا ہے۔

(1) جنٹا کا گیلن، اس کی سبب، سدھار اور دلاس اتھادی شکستوں کے ذریعہ آگے بڑھنے کا طریقہ، جو راجا رام موہن راء سے شروع ہوا، ایسا کہا جاسکتا ہے۔

آگے چلکر یہ طریقہ بدھارنہ دیہی اتھادی گرام سے پہچانا گیا، جو آگے چلکر گاندھی یک میں شانت ستیاگرہ تک وکست ہوا۔

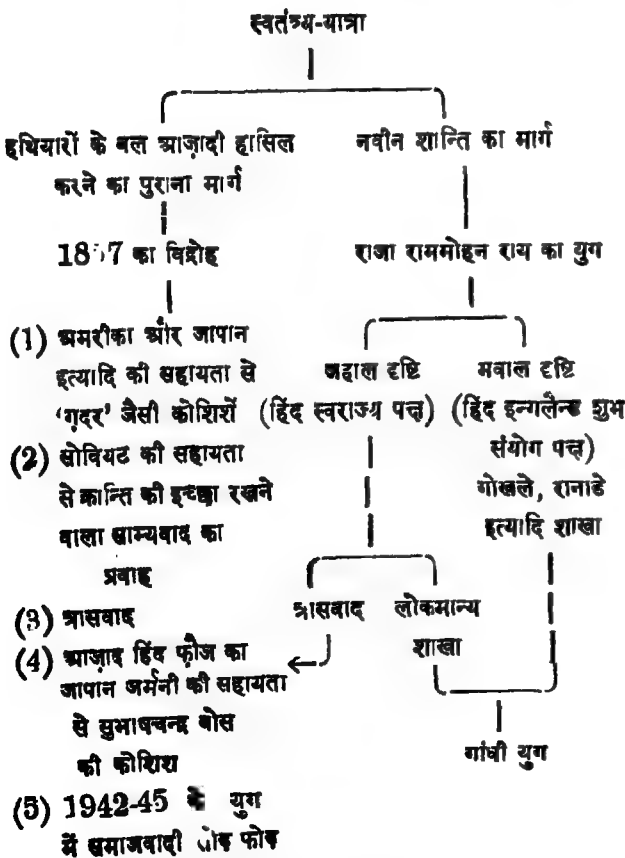
(2) گاندھی اربوں اور باہر کی راجہداری مدد سے لڑکر کم آگے چلنے کی کوشش۔

स्वतंत्रता کی यात्रا کی پانچویں پیڑھی

یہ طریقہ عیسوی سن 1757 سے 1857 تک کے سو سال میں ہوتا تھا ہے۔ 1857 کے بعد، شستر ہندی کے ہوتے ہوئے بھی، وہ ایک یا دوسرے قہنگ سے چلتا رہا ہے اور اُس کا پروا 1947 تک چلتا دکھائی دیتا ہے۔

پہلا طریقہ نیا ہے اور دوسرا طریقہ اتنا پرانا ہے، جتنا مانو سماج کا اِنہاس۔ پہلے طریقہ کی ریتی رسمیں اور اچین ہیں، ہم نے انہیں انگریزوں کے اِنہاس اور ان کے ساتھ میں سے تھا بھارت میں ان کے راجیہ تنگ کے انہیں میں سے سیکھا اور اُسے آپوگ میں لاکر گرہن کرتے گئے۔ ان بدھتوں کو بدھارنیہ بدھتوں کہیں یا لوگ شامی کی بدھتوں؛ ان کے الگ الگ روپ یا بہن بہن پرکار بتاتے ہیں۔ اِس کا کرن یہ ہے کہ اُس میں جاننا کی شکتی، ودروہ، ہتیار ہندی یا راج کرن کے داؤں پہنچوں کے راستے سے نہیں، بلکہ اُس کی سمجھ شکتی تھا سنکارت اور میل جول انہادی گنوں کے ذریعہ کلم دیتی ہے۔ گاندی جی نے اِس میں اُس کے کلمی سو روپ ستیاگرہ کا نہیں شستر چور دیا۔

آزادی کی منزل کی قسمیں اور ترکتکی विकास संबंधी इस विचार का मुख्तसار में इस तरह आलेखन किया जा सकता है—

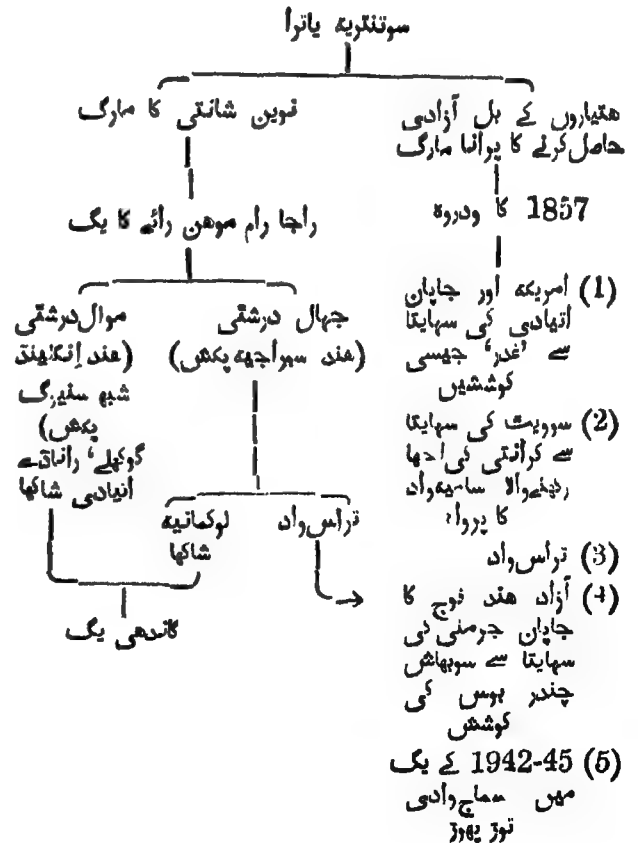


سونٹکرتا کی یاٹرا کی چوتھی پیڑھی

یہ طریقہ عیسوی سن 1757 سے 1857 تک کے سو سال میں ہوتا تھا ہے۔ 1857 کے بعد، شستر ہندی کے ہوتے ہوئے بھی، وہ ایک یا دوسرے قہنگ سے چلتا رہا ہے اور اُس کا پروا 1947 تک چلتا دکھائی دیتا ہے۔

پہلا طریقہ نیا ہے اور دوسرا طریقہ اتنا پرانا ہے، جتنا مانو سماج کا اِنہاس۔ پہلے طریقہ کی ریتی رسمیں اور اچین ہیں، ہم نے انہیں انگریزوں کے اِنہاس اور ان کے ساتھ میں سے تھا بھارت میں ان کے راجیہ تنگ کے انہیں میں سے سیکھا اور اُسے آپوگ میں لاکر گرہن کرتے گئے۔ ان بدھتوں کو بدھارنیہ بدھتوں کہیں یا لوگ شامی کی بدھتوں؛ ان کے الگ الگ روپ یا بہن بہن پرکار بتاتے ہیں۔ اِس کا کرن یہ ہے کہ اُس میں جاننا کی شکتی، ودروہ، ہتیار ہندی یا راج کرن کے داؤں پہنچوں کے راستے سے نہیں، بلکہ اُس کی سمجھ شکتی تھا سنکارت اور میل جول انہادی گنوں کے ذریعہ کلم دیتی ہے۔ گاندی جی نے اِس میں اُس کے کلمی سو روپ ستیاگرہ کا نہیں شستر چور دیا۔

آزادی کی منزل کی قسمیں اور ترقی وکس سبندی اِس وچار کا مختصر میں اِس طرح آلیکھن کیا جاسکتا ہے—



पाठक देखेंगे कि बंशवृक्ष में गांधी युग के अन्दर जहाल और मवाल पक्ष के दो अलग अलग धाराओं का संगम बताया है, मतलब यह कि गांधी जी लोकमान्य पीढ़ी और रानाडे-गोखले पीढ़ी के इकट्ठा पीढ़ीधर थे. गांधी जी ने अपनी सियासी पहचान 'गोखले मेरे सियासी गुरु हैं,' इस प्रकार की है. इन दो पक्षों में अगर कोई बुनियादी भेद है तो वह यह कि, गोखले शाखा की ऐसी मान्यता थी कि हिन्द और इंग्लैण्ड का संयोग ईश्वरदत्त शुभ वस्तु है; जबकि तिलक-शाखा की मान्यता थी कि भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और उसका स्वराज्य स्वतन्त्र ही हो सकता है. गांधी जी 1915 में जब भारत आये तब पहले मत के थे, फिर भी वे गोखले शाखा की राजकीय रीति-रस्मों के अतिरिक्त सत्याग्रह की पद्धति में भी श्रद्धा रखते थे, और उस शक्त का सफल प्रयोग करने के बाद ही भारत आये थे. उनके व्यक्तित्व और उनकी प्रतिभा का यह अंश उन्हें गोखले-राज्य कारण में शामिल होकर, उनके भारत सेवक समाज के द्वारा कार्य करने में बाधा रूप हुआ. दूसरी ओर, इस चीज के कारण तिलक-राज्यकारण-शाखा को, उसमें अपने जहाल राजकारण से कुछ नवीनता का अनुभव जरूर हुआ, लेकिन उसकी उग्रता के कारण उसमें उन्होंने सहधार्मिकता और समानता का अनुभव किया. इस प्रकार गांधी युग के प्रारम्भ में, गांधी जी में जहाल और मवाल दोनों दृष्टियों का संगम देखने को मिलता है.

इतना ही नहीं, दोनों पक्षों की कार्य-प्रणालियाँ उनके युग में एकत्र होकर एक अखंड कार्य प्रणाली के रूप में जन्म लेती हैं. इस पद्धति के लिए जिस प्रकार की रहनुमाई चाहिये वैसा ही गांधी जी की जीवन प्रतिभा पूरा करती है.

इससे क्रौम के अन्दर एक दृष्टि, एक कोशिश, तथा एक नीति-नेतृत्व बगैरह एक नये ही ढङ्ग से अपने आप पैदा होते गये. स्वराज्य प्राप्ति अब सारी जनता का पुरुषार्थ बनता है, उसके अंग उपांगों की गहराई तक जाकर वह अपना असर डालने लगता है. ऐसा ही कहना चाहिए कि शस्त्रास्त्र के परंपरागत हिंसा मार्ग को छोड़कर, प्रजा, शांति-अहिंसा मार्ग के नये प्रयोग की पूर्ण रूप से आत्माश्रय करने के लिए कमर कसती है। जग के व्यापक राज कारण पर गांधी युग का जो कुछ भी असर हुआ वह इसी कारण से हो सका है. गांधी जी का वर्णन करते हुए श्री गोखले ने कहा था कि इस व्यक्ति में भारतीय संस्कृति अपने आला दर्जे तक पहुंची है. गांधी जी के गुरु ने 1916 से भी पहले उनका जो वर्णन किया था उसे गांधी जी पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिखाते हैं. न केवल राजनीति में बल्कि भारत की

पाठक देखेंगे कि बंशवृक्ष में गांधी युग के अन्दर जहाल और मवाल पक्ष के दो अलग अलग धाराओं का संगम बताया है. मतलब यह कि गांधी जी लोकमान्य पीढ़ी और रानाडे-गोखले पीढ़ी के इकट्ठा पीढ़ीधर थे. गांधी जी ने अपनी सियासी पहचान 'गोखले मेरे सियासी गुरु हैं,' इस प्रकार की है. इन दो पक्षों में अगर कोई बुनियादी भेद है तो वह यह कि, गोखले शाखा की ऐसी मान्यता थी कि हिन्द और इंग्लैण्ड का संयोग ईश्वरदत्त शुभ वस्तु है; जबकि तिलक-शाखा की मान्यता थी कि भारत एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और उसका स्वराज्य स्वतन्त्र ही हो सकता है. गांधी जी 1915 में जब भारत आये तब पहले मत के थे, फिर भी वे गोखले शाखा की राजकीय रीति-रस्मों के अतिरिक्त सत्याग्रह की पद्धति में भी श्रद्धा रखते थे, और उस शक्त का सफल प्रयोग करने के बाद ही भारत आये थे. उनके व्यक्तित्व और उनकी प्रतिभा का यह अंश उन्हें गोखले-राज्य कारण में शामिल होकर, उनके भारत सेवक समाज के द्वारा कार्य करने में बाधा रूप हुआ. दूसरी ओर, इस चीज के कारण तिलक-राज्यकारण-शाखा को, उसमें अपने जहाल राजकारण से कुछ नवीनता का अनुभव जरूर हुआ, लेकिन उसकी उग्रता के कारण उसमें उन्होंने सहधार्मिकता और समानता का अनुभव किया. इस प्रकार गांधी युग के प्रारम्भ में, गांधी जी में जहाल और मवाल दोनों दृष्टियों का संगम देखने को मिलता है.

इतना ही नहीं, दोनों पक्षों की कार्य-प्रणालियाँ उनके युग में एकत्र होकर एक अखंड कार्य प्रणाली के रूप में जन्म लेती हैं. इस पद्धति के लिए जिस प्रकार की रहनुमाई चाहिये वैसा ही गांधी जी की जीवन प्रतिभा पूरा करती है.

इससे क्रौम के अन्दर एक दृष्टि, एक कोशिश, तथा एक नीति-नेतृत्व बगैरह एक नये ही ढङ्ग से अपने आप पैदा होते गये. स्वराज्य प्राप्ति अब सारी जनता का पुरुषार्थ बनता है, उसके अंग उपांगों की गहराई तक जाकर वह अपना असर डालने लगता है. ऐसा ही कहना चाहिए कि शस्त्रास्त्र के परंपरागत हिंसा मार्ग को छोड़कर, प्रजा, शांति-अहिंसा मार्ग के नये प्रयोग की पूर्ण रूप से आत्माश्रय करने के लिए कमर कसती है। जग के व्यापक राज कारण पर गांधी युग का जो कुछ भी असर हुआ वह इसी कारण से हो सका है. गांधी जी का वर्णन करते हुए श्री गोखले ने कहा था कि इस व्यक्ति में भारतीय संस्कृति अपने आला दर्जे तक पहुंची है. गांधी जी के गुरु ने 1916 से भी पहले उनका जो वर्णन किया था उसे गांधी जी पूर्ण रूप से सिद्ध कर दिखाते हैं. न केवल राजनीति में बल्कि भारत की

स्वतन्त्रता की यात्रा की चौथी पीढ़ी

जनता के समस्त जीवन में नया प्रकाश, नई दृष्टि, नया प्रर्थ, नयी सार्थकता और नया सिरजन इस युग में प्रकट होता है. हिन्दू की आजादी जनता की सर्वतांमुखी शक्ति ग्रह के बल पर हासिल हो सकी है, और ऐसा होने से हिन्दू के इतिहास ने अपना रुख पलटा है ।

ऊपर के वंशवृक्ष में पाठक देखेंगे कि परंपरागत हिंसा-मार्ग की धारा भी 1857 से लेकर कई शक्तियों में वक्रन के मुताबिक तबदील होकर 1945 तक चालू रही है. इस धारा में भी पीढ़ियाँ और दृष्टियाँ रही हैं. स्वतंत्र यात्रा के इतिहास में उसका भी एक अलग प्रकरण है. उस पद्धति को प्रन्त में यश प्राप्त नहीं हुआ, बाकी उसमें भी त्याग और शलिदान पूर्वक अपने आपका अर्पण करने वाले और स्वतंत्र त्याग का जलता रखने वाले देशभक्त अवश्य थे.

त्रासवाद और तोड़-फाड़ की प्रवृत्ति की भी इसके साथ गहनता की है क्योंकि उनका प्रकार हिंसाचल की परंपरागत वंचार पद्धति का था.

अनुवादक—कनुभाई नानालाल पटेल

سوتلوتا کی باترا کی چوتھی پیڑھی

جنتا کے سمست جیون مہں نیا پرکاش، نئی درشتی، نیا ارتھ، نئی ساریکھتا اور نیا سرجن اِس یگ مہں پرگٹ ہوتا ہے۔ ہند کی آزادی جنتا کی سررتومکھی شکرتی سنگرتہ کے ہل پر حاصل ہو سکی ہے، اور ایسا ہونے سے ہند کے اتھاس نے اپنا رخ پلٹا ہے۔

اُردو کے دانش ورکش میں پائیک دیکھنے کے پرمہراگت
 ہذا۔ ارگ کی دھارا بھی 1957 سے لیکر کئی شکلوں میں
 وقت کے مطابق تبدیل ہو کر 1945 تک چلا رہی ہے۔ اِس
 دھارا کی بھی پڑھنے اور درشتیاں رہی ہیں۔ سوتنتر یاترا
 کے اِتہاس میں اُس کا بھی ایک الگ پردرکن ہے۔ اُس پدھتی
 کو انت میں بش پر اپت نہیں ہوا، باقی اِس میں بھی
 تیاگ اور بلیدان پورک اپنے آپ کو اپن کرنے والے اور سوتنتر
 جیوت کو چلتا رکھنے والے دیش بہکت اوشیہ تھے۔

تونس واد اور تور پور کی پرورتی کی بھی اُس کے ساتھ
گنتی کی ہے کیونکہ اُن کا پرکار شنسا بل کی پرمہراکت وچار
پڑھتی کا تھا ۔

انوادک— کفو بھائی نانا لال پتیل

मेरे मत से कम्युनिज्म कोई बुरी चीज हो
ऐसी बात नहीं है. बुरी चीज यह है कि वह हिंसा
से लादा जाता है. मुझे कम्युनिज्म से डर बिलकुल
नहीं लगता, क्योंकि हिन्दुस्तान की हजारों बरसों
की कलचर हिंसा विरोधी है और गांधी जी ने हमारे
देश को अहिंसा की ताकत दी है. मुझे यकीन है कि
हिन्दुस्तान उसी की बदौलत बचने वाला है. मुझे यह
भी विश्वास है कि अमरीका जैसा देश डर को छोड़
कर अगर अहिंसा की ताकत को आजमा कर देखेगा,
तो वह सारी दुनिया को निडर करेगा और खुद भी
निडर बनेगा.

—विज्ञोषा

میزے مت سے کمپوزم کرنی ہری چیز ہو ایسی بات نہیں ہے۔ ہری چیز یہ ہے کہ وہ ہنسا سے لادا جانا ہے۔ مجھے کمپوزم سے تہ بالکل نہیں لگتا، کیونکہ ہندستان کی ہزاروں ہوسوں کی لچر ہنسا زور دہی ہے اور گاندھی جی نے ہم اے دیش کو ہنسا کی طاقت دی ہے۔ مجھے یقین ہے کہ ہندستان اسی کی بدولت بچنے والا ہے۔ مجھے یہ بھی وشواس ہے کہ امریکہ جیسا دیش تہ کو چھوڑ کر اگر ہنسا کی طاقت کو آزما کر دیکھیکا، تو وہ ساری دنیا کو تہ کریکا اور خود بھی تہ ینگا۔

—ونہا

محمد صاحب نے کہا: — ”نہ قبروں پر بیتور اور نہ اُن کی طرف منہ کر کے دعا مانگو۔“

— ابو مرثد الغنوی، مسلم۔

محمد صاحب نے کہا: — ”اے اللہ! مہری قبر کو بت بنا کر کوئی اُسے نہ پہنچے؛ اللہ کا زبردست کردہ اُن پر نازل ہوتا ہے جو اپنے پیغمبروں کی قبروں کو بوجھتے ہیں!“

— عطاء بن یسار، مالک۔

محمد صاحب نے کہا: — ”دو بھوکے بھڑیے اگر بھیڑوں کے کسی گلے میں چھوڑ دیئے جاویں تو وہ بھیڑوں کو اپنا برباد نہیں کر سکتے جتنا دھن اور بڑھپن کا لالچ آبادی کے دین کو برباد کر دیتا ہے۔“

— کعب بن مالک، ترمذی، داریمی۔

محمد صاحب نے کہا: — ”کوئی ظالم جنت میں داخل نہیں ہوگا۔“

— عقبہ بن عامر، ابو داؤد، احمد، داریمی۔

محمد صاحب نے کہا: — ”سب سے بڑا جہاد وہ آدمی کرنا ہے ظالم حاکم کے سامنے بھی سچی بات کہتا ہے۔“

— ابو سعید، ترمذی، ابو داؤد، ابن ماجہ، طارق بن شہاب، نسائی، احمد۔

محمد صاحب نے کہا: — ”جیسے تم ہو گئے ویسے ہی وہ ہو جائیگے جو تمہارے اوپر حاکم بنائے جائیگے۔“

— یحییٰ بن ہاشم نے یونس بن ابو اسحاق سے اور اُس نے اپنے باپ سے سنا، بیہقی۔

ایک عورت نے پیغمبر سے آکر کہا:—”میرا پیٹ بھجھ رہا ہے، میں نے اس کو کھانا دیا ہے، مگر وہ کھانا کھانے کی بجائے اس کی مشک سے لے کر اس کی ہڈی تک کھا گیا ہے، اور اب اس کے پیٹ میں درد ہے، اس کو کھانا کھانے کے لئے لے کر آ رہی ہوں، اس کو کھانا کھانے کے لئے لے کر آ رہی ہوں، اس کو کھانا کھانے کے لئے لے کر آ رہی ہوں۔“

—امرو بن شعیب، ابوداؤد۔

محمد صاحب نے کہا:—”رات کو مہمان کی सेवा اور خاتیرداری کرنا ہر مسلمان کا فرض ہے، چاہے کوئی بھی اس کے صحن میں آکر آئے۔“

میں نے پوچھا:—”اے اللہ کے رسول! ایک آدمی ہے جو جب میں سفر میں ہوتا ہوں تو میرے ساتھ مہمان کے حق کو نہیں نبھاتا، تو کیا جب وہ سفر میں ہو تو میں اسے اپنا مہمان مانوں اور اس کے ساتھ اپنے فرض کو پورا کروں؟“

پیغمبر نے جواب دیا:—”ہاں، اس کا سواکت کرو اور اس کی خاتیرداری کرو۔“

پیغمبر نے جواب دیا:—”ہاں، اس کا سواکت کرو اور اس کی خاتیرداری کرو۔“

—عوف بن مالک، ترمذی۔

محمد صاحب نے کہا:—”سچ میں آدمی کے جسم کے اندر گوشت کا ایک ٹکڑا ہے جسے دل کہتے ہیں: جب وہ ٹھیک رہتا ہے تو سارا جسم ٹھیک رہتا ہے، اور جب وہ خراب ہوتا ہے تو سارا جسم خراب ہوتا ہے۔“

—نومان بن بشیر، بخاری: مسلم: ابوداؤد: ترمذی: نسائی۔

محمد صاحب نے کہا:—”کام، کرم، لوم، موہ کے بعد دوزخ ہی آف ہے، اور دشمنوں نے بعد جدت ہے۔“

—ابوہریرہ، بخاری: مسلم۔

محمد صاحب نے کہا:—”مذائق یعنی تشوکی آدمی کی تین پہچانیں ہیں، وہ روزے رکھتا ہے اور نماز پڑھتا ہے اور سمجھتا ہے کہ میں مسلمان ہوں، پر جب بولتا ہے تو جھوٹ بولتا ہے، جب وعدہ کرتا ہے تو اسے پورا نہیں کرتا، اور جب اس پر اعتبار کیا جاتا ہے تو دغا دیتا ہے۔“

—ابوہریرہ، مسلم۔

مُحَمَّد صَاحِب نے کہا:—“ایک دن آئے گا جب ایسے لوگ پیدا ہوں گے جو دین کے نام پر دنیا کو دعو کا دینے، لوگوں کے سامنے وہ نمرقا سے بھیڑ بنے رہیں گے، ان کی زبان چینی سے ہی آدھک میٹھی ہوگی پر ان کے دل بھیڑیوں کے سے دل ہونگے۔ اللہ کہتا ہے:—’کھا وہ دھیمان نہ دینکے؟ اور مجھ پر چھوٹی تہمت لگائیں گے؟ میں اپنی قسم کھا کر کہتا ہوں میں ان ہی میں سے ایسے لوگ پیدا کر دوں گا جو ان کے لئے آنت سو جائیں گے اور ان میں جو سب سے آدھک بنے ہوئے ہوں گے وہ تمہارا جائیں گے۔“

—ابو ہریرہ، ترمذی۔

مُحَمَّد صَاحِب نے کہا:—“سچ میں آدم کی اولاد میں شیطان کا بھی زور ہے اور فرشتے کا بھی زور ہے، شیطان کا زور آدمی کو بدی کی طرف اور سچ کو جہوت بتانے کی طرف لے جاتا ہے، اور فرشتے کا زور آدمی کی نیکی کی طرف اور سچ کو سچ ماننے کی طرف لے جاتا ہے، اس لئے جو کوئی جتنا اپنے اندر فرشتے کا زور آندھو کرے اسے جاننا چاہئے کہ یہ اللہ کی طرف سے ہے، اس کے لئے اسے اللہ کا شکر گزار ہونا چاہئے، اور جو کوئی جتنا اپنے اندر شیطان کا زور آندھو کرے اسے چاہئے کہ شیطان سے بچنے کے لئے اللہ کی پناہ لے۔“

—ابن مسعود، ترمذی۔

مُحَمَّد صَاحِب نے کہا:—“جو کوئی کسی آدمی کی کسی کمچواری کو دیکھ لیتا ہے اور اسے دوسروں سے چھپانا ہے وہ اس آدمی کی طرح ہے جو کسی زندہ گزی ہوئی لڑکی کو نکال کر پھر سے پال لیتا ہے۔“

—عقبہ بن عامر، ابوداؤد۔

مُحَمَّد صَاحِب نے کہا:—“جو آدمی چیزوں کے خریدنے یا بیچنے میں یا اپنے قرضداروں سے قرضہ وصول کرنے میں نرمی سے کام لیتا ہے اللہ اس پر رحم کرے گا۔“

مُحَمَّد صَاحِب نے کہا:—“جو کوئی کسی آدمی کی کسی کمچواری کو دیکھ لیتا ہے اور اسے دوسروں سے چھپانا ہے وہ اس آدمی کی طرح ہے جو کسی زندہ گزی ہوئی لڑکی کو نکال کر پھر سے پال لیتا ہے۔“

—عقبہ بن عامر، ابوداؤد۔

مُحَمَّد صَاحِب نے کہا:—“جو آدمی چیزوں کے خریدنے یا بیچنے میں یا اپنے قرضداروں سے قرضہ وصول کرنے میں نرمی سے کام لیتا ہے اللہ اس پر رحم کرے گا۔“

مُحَمَّد صَاحِب نے کہا:—“جو آدمی چیزوں کے خریدنے یا بیچنے میں یا اپنے قرضداروں سے قرضہ وصول کرنے میں نرمی سے کام لیتا ہے اللہ اس پر رحم کرے گا۔“

—جابر، بخاری۔

—جابر، بخاری۔

—جابر، بخاری۔

دُنیا بھر کی ماؤں کے نام

دُنیا بھر کی ماؤں کے نام

شریمنی چین کوآنگ یو

شریمنی چین کوآنگ یو

[جولاہی سن 1955 میں سوئٹزرلینڈ کے شہر لاسین میں 'دُنیا بھر کی ماؤں کی پہلی کانگریس' ہوئی تھی۔ اس میں دور دور کے چھیاسٹھ دیشوں سے بارہ سو ماؤں آکر جمع ہوئی تھیں۔ چین اور ہندوستان کی کچھ ماؤں نے بھی اس میں حصہ لیا تھا۔ یہ لیکھ ایک ایسی چینی ماں کا لکھا ہوا ہے جو کسی کارن اس کانگریس میں نہیں پہونچ سکی—ایڈیٹر۔]

[جولاہی سن 1955 میں سوئٹزرلینڈ کے شہر لاسین میں 'دُنیا بھر کی ماؤں کی پہلی کانگریس' ہوئی تھی۔ اس میں دور دور کے چھیاسٹھ دیشوں سے بارہ سو ماؤں آکر جمع ہوئی تھیں۔ چین اور ہندوستان کی کچھ ماؤں نے بھی اس میں حصہ لیا تھا۔ یہ لیکھ ایک ایسی چینی ماں کا لکھا ہوا ہے جو کسی کارن اس کانگریس میں نہیں پہونچ سکی—ایڈیٹر۔]

جس سب دیشوں کی ماؤں کے نمائندے لاسین میں جمع رہے تھے میں پیننگ کے پانچویں مونسپل اسپتال کے زچہ حاکم (میڈرنٹی وارڈ) میں پڑی ہوئی تھی۔ میرے بچہ ہونے والا تھا۔ اسپتال کا وہ وارڈ مجھے بہت ہی پیارا لگتا تھا، ٹھنڈی اور شانت جگہ، سکےد بسترے، سکےد دیواریں اور سفید وردیاں پہنے ہوئے نرسیں۔ ٹھوڑی ٹھوڑی دیر کے بعد کوئی نرس دواؤں کا تاس خانہ میں آئے ٹپ ٹپ کرنی ہوئی کسی ایک زچہ کمر کی طرف جاتی ہوئی معلوم ہوتی تھی جس سے پتہ لگ جاتا تھا کہ کسی کمرے میں ایک اور نئی جان پیدا ہونے والی ہے۔ بڑی بڑی کھڑکیوں کے باہر سنہرے درختوں کی ہری کوسل شاخیں ہوا میں اُپر رہی تھیں۔ کبھی کبھی جھینگر کی آواز سنانی دے جاتی تھی۔

جس سب دیشوں کی ماؤں کے نمائندے لاسین میں جمع رہے تھے میں پیننگ کے پانچویں مونسپل اسپتال کے زچہ حاکم (میڈرنٹی وارڈ) میں پڑی ہوئی تھی۔ میرے بچہ ہونے والا تھا۔ اسپتال کا وہ وارڈ مجھے بہت ہی پیارا لگتا تھا، ٹھنڈی اور شانت جگہ، سکےد بسترے، سکےد دیواریں اور سفید وردیاں پہنے ہوئے نرسیں۔ ٹھوڑی ٹھوڑی دیر کے بعد کوئی نرس دواؤں کا تاس خانہ میں آئے ٹپ ٹپ کرنی ہوئی کسی ایک زچہ کمر کی طرف جاتی ہوئی معلوم ہوتی تھی جس سے پتہ لگ جاتا تھا کہ کسی کمرے میں ایک اور نئی جان پیدا ہونے والی ہے۔ بڑی بڑی کھڑکیوں کے باہر سنہرے درختوں کی ہری کوسل شاخیں ہوا میں اُپر رہی تھیں۔ کبھی کبھی جھینگر کی آواز سنانی دے جاتی تھی۔

2 جولائی کو میرے بچہ پیدا ہوا۔ یہ میرا چوتھا بچہ تھا۔ جب میں نے اس کا چھوٹا سا تگلی چہرہ، کالے بال اور گدگدے چھوٹے چھوٹے ہاتھ دیکھے تو میں اپنے گریہوتی رہنے کے دنوں کی ساری تلبیہیں اور بچہ پیدا ہونے کے سبب درد بھول گئی۔ میں نے اپنی آنکھ پورا کر وارڈ کی دوسری عورتوں کی طرف دیکھا۔ کئی کے ابھی ابھی اُن کا پہلا بچہ پیدا ہوا تھا۔ اور کئی کے پہلے بھی کئی بچے ہو چکے تھے۔ وہ بھی میری طرف دیکھ کے مسکرائے لگیں۔ ظاہر ہے وہ سب آنٹی ہی خوش تھیں جتنی میں۔ اور خوش کیوں نہ ہوتیں؟ بچے ہی ماؤں کی اُمیدیں ہوتے ہیں۔ بچے مانو سماج کے بھول ہوتے ہیں۔

2 جولائی کو میرے بچہ پیدا ہوا۔ یہ میرا چوتھا بچہ تھا۔ جب میں نے اس کا چھوٹا سا تگلی چہرہ، کالے بال اور گدگدے چھوٹے چھوٹے ہاتھ دیکھے تو میں اپنے گریہوتی رہنے کے دنوں کی ساری تلبیہیں اور بچہ پیدا ہونے کے سبب درد بھول گئی۔ میں نے اپنی آنکھ پورا کر وارڈ کی دوسری عورتوں کی طرف دیکھا۔ کئی کے ابھی ابھی اُن کا پہلا بچہ پیدا ہوا تھا۔ اور کئی کے پہلے بھی کئی بچے ہو چکے تھے۔ وہ بھی میری طرف دیکھ کے مسکرائے لگیں۔ ظاہر ہے وہ سب آنٹی ہی خوش تھیں جتنی میں۔ اور خوش کیوں نہ ہوتیں؟ بچے ہی ماؤں کی اُمیدیں ہوتے ہیں۔ بچے مانو سماج کے بھول ہوتے ہیں۔

اپنے بسترے میں پڑی ہوئی میں بہت کچھ سوچتی رہی۔ سب سے اہمک مجھے یہ دُچار آنا تھا کہ پہلے کے مقابلے میں ماؤں کے ساتھ چین میں اب کتنا ادھک اچھا سلوک ہوتا ہے۔ پرانے چین میں عورت ہونا کوئی مذاق

اپنے بسترے میں پڑی ہوئی میں بہت کچھ سوچتی رہی۔ سب سے اہمک مجھے یہ دُچار آنا تھا کہ پہلے کے مقابلے میں ماؤں کے ساتھ چین میں اب کتنا ادھک اچھا سلوک ہوتا ہے۔ پرانے چین میں عورت ہونا کوئی مذاق

نہیں تھا۔ ایک گھٹ میں یہ شدت آتے ہیں:—

پرانہ چہن ایک گڈھا تھا ،
اتھا بھینکر اور ملحدوس ،

عام چلتا اُس گڈھے میں کچلی جاتی تھی ،
پوسپ سے ادھک درگت عورتوں کی ہوتی تھی ۔

بات بالکل سچی ہے۔ اُن دونوں ماں باپ اپنی لڑکیوں کو ایک ایسے نام سے پکارا کرتے تھے جس کے معنی ہیں ”مال“ جس پر گھاتا ہی گھاتا ہو۔ ”بہت سی مائیں اگر اُن کے لڑکی ہوتی تھی تو پیدا ہوتے ہی اُسے پالی میں ڈبو کر مار ڈالتی تھیں۔ لڑکیاں جب بڑی ہو جاتی تھیں تو بالکل مال کی طرح بیچی اور خریدی جاتی تھیں۔ عام طور پر بچپن میں ہی اُن کی سگائی کر دی جاتی تھی۔ کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا تھا کہ جس لڑکے کے ساتھ کسی لڑکی کی سگائی کر دی جاتی تھی وہ لڑکا اگر شادی سے پہلے مر جاتا تھا تو اُس لڑکی کی شادی لڑکوں کی ایک ایسی بچی کے ساتھ کر دی جاتی تھی جس پر اُس لڑکے کا نام لکھا ہوتا تھا۔ سمجھا جاتا تھا کہ اِس طرح لڑکی کی ”شادی“ لڑکے کی روح کے ساتھ ہو گئی۔ جو لڑکیاں چھوٹی عمر میں دھوا ہو جاتی تھیں انہیں اُس زمانے کے رواج کے اندر دوسری شادی کرنے کی ہمت نہ ہو سکتی تھی۔ سب سے بڑی بات یہ تھی کہ جو مائیں چاہتی تھیں کہ اُن کے بچے ہوں انہیں قراہا جاتا تھا، کیونکہ ہر نئے بچے کا مطلب یہ تھا کہ ایک اور نئے منہ کو کھانا دینا پڑے گا۔ جو مائیں یہ چاہتی تھیں کہ اُن کے بچوں کو پہلے دن دیکھنے کو ملے اُن کی اُشاؤں کے راستے میں ایک ہزار ایک مصیبتیں تھیں۔ بھوک، سردی، بیماری اور موت تک سدا بچوں کے سامنے ناچتی رہتی تھیں۔ ماں کا جیون اُن دنوں دکھ اور چنٹاؤں سے بھرا رہتا تھا۔

اس کے بعد اِتھاس نے نیا پننا پلٹا۔ سن 1949 میں چین کے اندر جنٹا کے راج نے جنم لیا۔ ہم عورتوں کو جنہیں اُس سے پہلے نچلا جاتا تھا اور غلام بنا کر رکھا جاتا تھا، اب سماج کے اندر گرو کے ساتھ اُچت استھان ملا۔ تب سے لیکر عورتوں کو راجکاجی، مالی، ساجی اور گرہستی کے جیون میں مردوں کے ساتھ ساتھ برابر کے ادھکار ملنے لگے۔ سرکار نے عورتوں اور بچوں کی خاص طرح سے رکھا کرنی شروع کی۔ نئے چین کے ودھان میں عورتوں کے ادھکار ایسے شعبوں میں لکھے ہوئے ہیں جن کے کوئی دو اُرتہ نہیں لگائے جاسکتے۔

عورتوں کو سب طرح کی نوکریاں ملنے لگیں۔ سب دھندے اور سب کاروبار اُن کے لئے کھول دیئے گئے۔ سماچار پتروں میں آئے دن طرح طرح کی ”پہلی عورتوں“ کی چرچا ہونے لگی، جیسے—پہلی ٹریکٹر چلانے والی عورت، پہلی ہینڈ جیٹ چلانے والی عورت، پہلی ہوائی جہاز چلانے

پرانہ چہن ایک گڈھا تھا ،
اتھا بھینکر اور ملحدوس ،

عام چلتا اُس گڈھے میں کچلی جاتی تھی ،
پوسپ سے ادھک درگت عورتوں کی ہوتی تھی ۔

بات بالکل سچی ہے۔ اُن دونوں ماں باپ اپنی لڑکیوں کو ایک ایسے نام سے پکارا کرتے تھے جس کے معنی ہیں ”مال“ جس پر گھاتا ہی گھاتا ہو۔ ”بہت سی مائیں اگر اُن کے لڑکی ہوتی تھی تو پیدا ہوتے ہی اُسے پالی میں ڈبو کر مار ڈالتی تھیں۔ لڑکیاں جب بڑی ہو جاتی تھیں تو بالکل مال کی طرح بیچی اور خریدی جاتی تھیں۔ عام طور پر بچپن میں ہی اُن کی سگائی کر دی جاتی تھی۔ کبھی کبھی ایسا بھی ہوتا تھا کہ جس لڑکے کے ساتھ کسی لڑکی کی سگائی کر دی جاتی تھی وہ لڑکا اگر شادی سے پہلے مر جاتا تھا تو اُس لڑکی کی شادی لڑکوں کی ایک ایسی بچی کے ساتھ کر دی جاتی تھی جس پر اُس لڑکے کا نام لکھا ہوتا تھا۔ سمجھا جاتا تھا کہ اِس طرح لڑکی کی ”شادی“ لڑکے کی روح کے ساتھ ہو گئی۔ جو لڑکیاں چھوٹی عمر میں دھوا ہو جاتی تھیں انہیں اُس زمانے کے رواج کے اندر دوسری شادی کرنے کی ہمت نہ ہو سکتی تھی۔ سب سے بڑی بات یہ تھی کہ جو مائیں چاہتی تھیں کہ اُن کے بچے ہوں انہیں قراہا جاتا تھا، کیونکہ ہر نئے بچے کا مطلب یہ تھا کہ ایک اور نئے منہ کو کھانا دینا پڑے گا۔ جو مائیں یہ چاہتی تھیں کہ اُن کے بچوں کو پہلے دن دیکھنے کو ملے اُن کی اُشاؤں کے راستے میں ایک ہزار ایک مصیبتیں تھیں۔ بھوک، سردی، بیماری اور موت تک سدا بچوں کے سامنے ناچتی رہتی تھیں۔ ماں کا جیون اُن دنوں دکھ اور چنٹاؤں سے بھرا رہتا تھا۔

اس کے بعد اِتھاس نے نیا پننا پلٹا۔ سن 1949 میں چین کے اندر جنٹا کے راج نے جنم لیا۔ ہم عورتوں کو جنہیں اُس سے پہلے نچلا جاتا تھا اور غلام بنا کر رکھا جاتا تھا، اب سماج کے اندر گرو کے ساتھ اُچت استھان ملا۔ تب سے لیکر عورتوں کو راجکاجی، مالی، ساجی اور گرہستی کے جیون میں مردوں کے ساتھ ساتھ برابر کے ادھکار ملنے لگے۔ سرکار نے عورتوں اور بچوں کی خاص طرح سے رکھا کرنی شروع کی۔ نئے چین کے ودھان میں عورتوں کے ادھکار ایسے شعبوں میں لکھے ہوئے ہیں جن کے کوئی دو اُرتہ نہیں لگائے جاسکتے۔

عورتوں کو سب طرح کی نوکریاں ملنے لگیں۔ سب دھندے اور سب کاروبار اُن کے لئے کھول دیئے گئے۔ سماچار پتروں میں آئے دن طرح طرح کی ”پہلی عورتوں“ کی چرچا ہونے لگی، جیسے—پہلی ٹریکٹر چلانے والی عورت، پہلی ہینڈ جیٹ چلانے والی عورت، پہلی ہوائی جہاز چلانے

بالی اورت، بویرا بویرا۔ آج اورتے کارخانوں کی ڈائریکٹر ہیں، اورتے سرکاری بویر ہیں۔ آج یہ سب باتیں بیلکول مامولی ہو گئی ہیں۔

بیلی سرکار جناتا کی سرکار ہے۔ اس جناتا کی سرکار نے اورتوں اور بچوں کے لیے بڑی بڑی آجیہاں بنائے کر ڈالی ہیں۔ میں پیکنگ کے نمبر 4 سٹینڈرڈ گارنس میڈیکل سکول میں پڑاتی تھی۔ سن 1949 سے پہلے میں وہاں پڑاتی تھی۔ یہ ڈر رہتا تھا کہ جہاں کسی پڑھانے والی اورت کے ایک اور بچہ پیدا ہوا تو نہ تو کوئی وہ اورت سے الگ کر دی گئی۔ اب کوئی کے معاملے میں میں بالکل شجاعت میں۔ دوسری پڑھانے والی اسٹریٹ کی طرح مجھے بچہ پیدا ہونے کے ساتھ 56 دن کی چھٹی پوری تنخواہ پر ملتی ہے۔ اسپتال میں مجھے ایک پیسے بھی خرچ نہیں کرنا پڑتا۔ راج کی طرف سے مجھے مفت دوا اور اچھے سے اچھا علاج ملتا ہے۔ ابھی جو میرے بچے ہوا ہے وہ لڑکی ہے۔ میری اس لڑکی کا لڑکپن اس کی ماں کے لڑکپن کے مقابلے میں کہیں اب لڑکپن اور لڑکپنوں کے لئے ہزاروں نرسری ہیں۔ کلنگارٹن ہیں، پرائمری اور سیکنڈری اسکول ہیں اور کالج ہیں۔ ساری تعلیم یا تو بالکل مفت ہے اور یا نام کو تھوڑی سی فیس لی جاتی ہے۔ ان سب سسٹمز کو سرکار سے بڑی بڑی گرانٹیں ملتی ہیں۔ میری لڑکی کو ہر طرح کی تعلیم ٹھیک ٹھیک مل سکے گی۔ اپنی طبیعت اور اپنے رجحان کے انوسار وہ جس دھڑے یا جس گھر کو چاہیگی اپنا سکیمگی۔ ساراٹھی یہ کہ اپنے دیہ اور اپنے سماج کے لئے ایک ایسی ہیروئی اسٹوری بنانے کا اسے پورا پورا اوسر ملے گا۔

میں خوب جانتی ہوں کہ دنیا میں ابھی تک مٹی ہر آدمی اس طرح کے ہیں جو اپنی جیبیں بھرنے کے لئے دنیا کی جناتا کو ایک دوسرے سے لڑانا اور ایک دوسرے سے کٹوا دینا چاہتے ہیں۔ یہ مٹی ہر اورگ تر اور گہراہٹ کی سوا پیدا کر رہے ہیں اور ایک نئی بڑی جنگ کھڑی کر دینے کی فکر میں ہیں۔ بینکوں میں اپنی جمع بڑھانے کے لئے اور آدمیوں کی کارخانوں میں اپنے حصوں کی قیمت بڑھا دینے کے لئے یہ لوگ جان بوجھ کر اس طرح کی سازشیں کر رہے ہیں جن سے لاکھوں آدمی مجبور ہو کر ان کی توڑیوں کا چارہ بن جاویں اور دنیا کی عورتوں سے ان کے بچے اور ان کے بچے جن جاویں۔

میں جس وقت بیٹھی تھی یہ لکھ رہی تھی کہ میں میرے سامنے دو دن کا ایک پرانا اخبار پڑا ہوا ہے۔ اس میں لکھا ہے کہ سائیکٹ راج امریکہ میں 15 جون سے 17 جون تک ہائڈروجن بم کے حملے کا ایک پردرشن کیا گیا۔ یہ

والی عورت، دھیرہ دھیرہ۔ آج عورتیں کارخانوں کی ڈائریکٹر ہیں، عورتیں سرکاری وزیر ہیں۔ آج یہ سب باتیں بالکل معمولی ہو گئی ہیں۔

چھٹی سرکار جناتا کی سرکار ہے۔ اس جناتا کی سرکار نے عورتوں اور بچوں کے لئے بڑی بڑی عظیم باتیں کر ڈالی ہیں۔ میں پیکنگ کے نمبر 4 سٹینڈرڈ گارنس میڈیکل اسکول میں پڑھاتی تھی۔ سن 1949 سے پہلے میں وہاں پڑھاتی تھی۔ پر ان دنوں میری نوکری ہر سہ خطرے میں رہتی تھی۔ یہ تر رہتا تھا کہ جہاں کسی پڑھانے والی اورت کے ایک اور بچہ پیدا ہوا تو نہ تو کوئی وہ اورت سے الگ کر دی گئی۔ اب کوئی کے معاملے میں میں بالکل شجاعت میں۔ دوسری پڑھانے والی اسٹریٹ کی طرح مجھے بچہ پیدا ہونے کے ساتھ 56 دن کی چھٹی پوری تنخواہ پر ملتی ہے۔ اسپتال میں مجھے ایک پیسے بھی خرچ نہیں کرنا پڑتا۔ راج کی طرف سے مجھے مفت دوا اور اچھے سے اچھا علاج ملتا ہے۔ ابھی جو میرے بچے ہوا ہے وہ لڑکی ہے۔ میری اس لڑکی کا لڑکپن اس کی ماں کے لڑکپن کے مقابلے میں کہیں اب لڑکپن اور لڑکپنوں کے لئے ہزاروں نرسری ہیں۔ کلنگارٹن ہیں، پرائمری اور سیکنڈری اسکول ہیں اور کالج ہیں۔ ساری تعلیم یا تو بالکل مفت ہے اور یا نام کو تھوڑی سی فیس لی جاتی ہے۔ ان سب سسٹمز کو سرکار سے بڑی بڑی گرانٹیں ملتی ہیں۔ میری لڑکی کو ہر طرح کی تعلیم ٹھیک ٹھیک مل سکے گی۔ اپنی طبیعت اور اپنے رجحان کے انوسار وہ جس دھڑے یا جس گھر کو چاہیگی اپنا سکیمگی۔ ساراٹھی یہ کہ اپنے دیہ اور اپنے سماج کے لئے ایک ایسی ہیروئی اسٹوری بنانے کا اسے پورا پورا اوسر ملے گا۔

میں خوب جانتی ہوں کہ دنیا میں ابھی تک مٹی ہر آدمی اس طرح کے ہیں جو اپنی جیبیں بھرنے کے لئے دنیا کی جناتا کو ایک دوسرے سے لڑانا اور ایک دوسرے سے کٹوا دینا چاہتے ہیں۔ یہ مٹی ہر اورگ تر اور گہراہٹ کی سوا پیدا کر رہے ہیں اور ایک نئی بڑی جنگ کھڑی کر دینے کی فکر میں ہیں۔ بینکوں میں اپنی جمع بڑھانے کے لئے اور آدمیوں کی کارخانوں میں اپنے حصوں کی قیمت بڑھا دینے کے لئے یہ لوگ جان بوجھ کر اس طرح کی سازشیں کر رہے ہیں جن سے لاکھوں آدمی مجبور ہو کر ان کی توڑیوں کا چارہ بن جاویں اور دنیا کی عورتوں سے ان کے بچے اور ان کے بچے جن جاویں۔

میں جس وقت بیٹھی تھی یہ لکھ رہی تھی کہ میں میرے سامنے دو دن کا ایک پرانا اخبار پڑا ہوا ہے۔ اس میں لکھا ہے کہ سائیکٹ راج امریکہ میں 15 جون سے 17 جون تک ہائڈروجن بم کے حملے کا ایک پردرشن کیا گیا۔ یہ

ایک بہت بڑا پردرشن تھا جس کے گھبرے میں واشنگٹن اور نیویارک کو ملا کر 50 سے زائد شہر آگئے تھے۔ یونائیٹڈ پریس نام کی خبر دینے والی ایجنسی نے اس کی بابت لکھا ہے کہ اس طرح کا اتنا بڑا پردرشن کبھی نہیں ہوا تھا اور ”یہ ایک پھینکر پوری پوری نقل تھی جو بالکل اصل کے مطابق تھی۔“

یہ سب کیوں ہو رہا ہے؟ کیا کوئی امریکا کے اوپر ہائیڈروجن بم فینکے جا رہا ہے؟ نہیں، ہرگیز نہیں! امریکا کے کل کارخانوں کے بڑے بڑے سربراہان اور کارکنان سرما یا دار اور وہاں کے کڑی جنرل ہی ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم پر اتنے زیادہ لگے ہوئے ہیں کہ ان سے آجکل کی ٹھنڈی جنگ کو گرام گرم جنگ میں بدل دینا چاہتے ہیں۔ جو دیش امن اور جنگ کے ہمت کی طرف ہیں وہ شروع سے یہ کہہ رہے ہیں کہ ایٹمی ہتھیاروں پر بندھ لگانی چاہئے اور عام ہتھیار بھی کم نہ جاویں۔ سب مائٹن امن چاہتی ہیں۔ ہم چاہتے ہیں کہ ہمارے بچے اپنے بستروں میں شانتی سے سوئیں۔ ہم نے کبھی دوسروں کو دھمکیاں نہیں دیں، اور نہ ہم دوسروں کی دھمکیوں سے ڈرتے ہیں۔

دوسری دوسری پٹی پٹی پٹی نے جب کسی کو یہ کہتا سنا کہ کچھ لوگ ایسے بھی ہیں جو شانتی پسند نہیں کرتے اور جنگ چھیڑ دینا چاہتے ہیں تو اس نے گہرا کر مہری طرف دیکھا اور پوچھا:—”کیا ان لوگوں کے سارے بدن پر جانوروں کی طرح بال ہیں؟ کیا ان کے بڑے بڑے دانت اور تیز پنچے ہیں؟“

ہم ہنس پڑے۔ ہر سچی بات یہ ہے کہ یہ بات اتنی ہنسی کی نہیں ہے۔ مہری وہ بچی اپنے چہرے سے دماغ سے یہ سمجھتی ہے کہ ہر آدمی میں کچھ شان اور آن ہونا ضروری ہے۔ سچ سچ جو لوگ آدمیوں کے خون سے ڈالر ڈھالنا چاہتے ہیں وہ آدمی نہیں ہیں۔ وہ آدمیوں کے روپ میں درندے ہیں۔

مہرے سب سے بڑے بیٹے کا نام کانگ کانگ ہے۔ وہ اب دو برس سے اسکول جا رہا ہے اور سمجھتا ہے کہ میں کچھ جانتا ہوں۔ اس نے کہا کہ:—”اگر وہ لوگ درندے ہیں تو انہیں زنجیروں سے باندھ کر رکھا ہوگا۔ ہم یہ نہیں دیکھ سکتے کہ وہ لوگوں کو کہا جائیں۔“ اس کا کہنا بھی ٹھیک ہے۔ ہمیں ایسا کرنا ہی پڑیگا۔

ہم مانو جاتی کی مائیں ہیں۔ مائیں سدا شانتی چاہتی ہیں اور جنگ کا وردہ کرتی ہیں۔ مائیں دنیا بھر میں بچوں کو پالنے پوسنے میں لگی رہتی ہیں۔ وہ نہیں چاہتیں کہ ان کے بیٹے بیٹیاں جنگ میں مت جائیں۔ وہ نہیں چاہتیں کہ ان کے بیٹے دوسری مائوں کے بیٹوں کو کاٹیں، نہ وہ یہ چاہتی ہیں کہ دوسری مائوں کے بیٹے ان کے بیٹوں کو کاٹیں۔ جو جان پیدا کرتی ہیں انہیں کا کام جان کی رکشا کرنا ہی ہے۔

ہم ہنس پڑے۔ ہر سچی بات یہ ہے کہ یہ بات اتنی ہنسی کی نہیں ہے۔ مہری وہ بچی اپنے چہرے سے دماغ سے یہ سمجھتی ہے کہ ہر آدمی میں کچھ شان اور آن ہونا ضروری ہے۔ سچ سچ جو لوگ آدمیوں کے خون سے ڈالر ڈھالنا چاہتے ہیں وہ آدمی نہیں ہیں۔ وہ آدمیوں کے روپ میں درندے ہیں۔

مہرے سب سے بڑے بیٹے کا نام کانگ کانگ ہے۔ وہ اب دو برس سے اسکول جا رہا ہے اور سمجھتا ہے کہ میں کچھ جانتا ہوں۔ اس نے کہا کہ:—”اگر وہ لوگ درندے ہیں تو انہیں زنجیروں سے باندھ کر رکھا ہوگا۔ ہم یہ نہیں دیکھ سکتے کہ وہ لوگوں کو کہا جائیں۔“ اس کا کہنا بھی ٹھیک ہے۔ ہمیں ایسا کرنا ہی پڑیگا۔

ہم مانو جاتی کی مائیں ہیں۔ مائیں سدا شانتی چاہتی ہیں اور جنگ کا وردہ کرتی ہیں۔ مائیں دنیا بھر میں بچوں کو پالنے پوسنے میں لگی رہتی ہیں۔ وہ نہیں چاہتیں کہ ان کے بیٹے دوسری مائوں کے بیٹوں کو کاٹیں، نہ وہ یہ چاہتی ہیں کہ دوسری مائوں کے بیٹے ان کے بیٹوں کو کاٹیں۔ جو جان پیدا کرتی ہیں انہیں کا کام جان کی رکشا کرنا ہی ہے۔

ہم مانو جاتی کی مائیں ہیں۔ مائیں سدا شانتی چاہتی ہیں اور جنگ کا وردہ کرتی ہیں۔ مائیں دنیا بھر میں بچوں کو پالنے پوسنے میں لگی رہتی ہیں۔ وہ نہیں چاہتیں کہ ان کے بیٹے دوسری مائوں کے بیٹوں کو کاٹیں، نہ وہ یہ چاہتی ہیں کہ دوسری مائوں کے بیٹے ان کے بیٹوں کو کاٹیں۔ جو جان پیدا کرتی ہیں انہیں کا کام جان کی رکشا کرنا ہی ہے۔

ہم مانو جاتی کی مائیں ہیں۔ مائیں سدا شانتی چاہتی ہیں اور جنگ کا وردہ کرتی ہیں۔ مائیں دنیا بھر میں بچوں کو پالنے پوسنے میں لگی رہتی ہیں۔ وہ نہیں چاہتیں کہ ان کے بیٹے دوسری مائوں کے بیٹوں کو کاٹیں، نہ وہ یہ چاہتی ہیں کہ دوسری مائوں کے بیٹے ان کے بیٹوں کو کاٹیں۔ جو جان پیدا کرتی ہیں انہیں کا کام جان کی رکشا کرنا ہی ہے۔

ہم مانو جاتی کی مائیں ہیں۔ مائیں سدا شانتی چاہتی ہیں اور جنگ کا وردہ کرتی ہیں۔ مائیں دنیا بھر میں بچوں کو پالنے پوسنے میں لگی رہتی ہیں۔ وہ نہیں چاہتیں کہ ان کے بیٹے دوسری مائوں کے بیٹوں کو کاٹیں، نہ وہ یہ چاہتی ہیں کہ دوسری مائوں کے بیٹے ان کے بیٹوں کو کاٹیں۔ جو جان پیدا کرتی ہیں انہیں کا کام جان کی رکشا کرنا ہی ہے۔

دُنیا بھر کی ماں یہ کبھی نہیں بھول سکتی کہ دوسرے مہادیہ میں چار کروڑ سے اوپر آدمی مرے تھے جن میں بہت سے اُن کے اپنے بچے اور بچے تھے۔ ہم مائیں ایک، بیلسین اور اسپین کے اُن جیل کیمپوں کو کبھی نہیں بھولیں گے جن میں لاکھوں بچے کے تھدی رکھے جاتے تھے۔ لیڈائس شہر کے قتل عام کو ہم کبھی نہیں بھولیں گے، نہ ہم ہیروشا اور ناگاساکی پر ایٹم بم برسائے جانے کو کبھی بھولیں گے، نہ ہم حال میں جنگ کے کارن کرپا اور ویتنام کی بربادی کو بھول سکتے ہیں۔ چین کی ماؤں کو جنگ کا کافی بھینکر تجربہ ہے۔

یہ سب چیزیں ہمارے دماغوں میں ابھی تازہ ہیں۔ ایسی حالت میں دوسرے مہادیہ کے ختم ہونے کے دس برس کے اندر ہمیں ایسا لگتا ہے کہ ایک نئے مہادیہ کا خطرہ ہمارے اور ہمارے بچوں کے سامنے ہے۔

یہی کارن تھا کہ جب میں نے اسپتال میں پڑے پڑے باورلےس سے یہ خبر سنی کہ دُنیا بھر کی مائیں کی پہلی کانگریس ہونے جا رہی ہے تو جوش اور خوشی سے میرے رونگٹے کھڑے ہو گئے۔ اس کے بعد جب میں گھر واپس گئی تو میں نے اخباروں میں وہ اعلان پڑھا جو اُس کانگریس نے شائع کیا تھا۔ اُس اعلان میں یہ مانگ کی گئی تھی کہ سب ایٹمی ہتھیاروں کا استعمال بند کر دیا جائے اور اِس طرح کے سب ہتھیاروں کو نشت کر دیا جائے، ایٹمی شہتی کو شانتی کے رجحان تک کموں میں لگایا جائے، سب دیشوں میں ہتھیاروں اور فوجوں کو کم کیا جائے، اور جو روپیہ اِس طرح سے بچے اُسے سماج سیوا کے کاموں میں اور بچوں کی بھلائی کے کاموں میں لگایا جائے۔ دُنیا بھر کی مائیں نے سانجکت راشٹر سنگھ سے اور چار بڑی سرکاروں کی کانفرنس سے یہی اپیل کی ہے۔

میرا حال کا بچہ یعنی میری چوتھی لڑکی ابھی جاگ گئی ہے۔ مجھے اُسے دودھ پلانا ہے۔ میں اور میرے بچے اُس کے بسترے کی طرف جا رہے ہیں۔ وہ اپنی چھوٹی چھوٹی پیاری آنکھیں کھول کر ہمیں دیکھ رہی ہے۔ پاس کی مہج پر سے سفید چمیلی کے پھولوں کی بھینی بھینی مہک آ رہی ہے۔ سنہری مچھلیاں خوشی خوشی پاس کے تالاب میں تھر رہی ہیں۔ ہمارا دو برس کا بچہ بین بین صحن میں اُدھر اُدھر کھول رہا ہے اور خوشی سے چلا رہا ہے۔ ہر چیز جیون اور آند سے بھری ہوئی معلوم ہوتی ہے۔

میں چاہتی ہوں کہ دُنیا بھر کے بچے پھولوں کی سونگھ کا آند لیں اور بارود کی درگندہ سے بچے رہیں۔ میں چاہتی ہوں کہ ہمارے سب کے بچے جیون کے سنگھ کو انہیں کریں، جنگ کی لعنت کو نہیں۔ میں ایک معمولی چینی عورت ہوں۔ میں چار بچوں کی ماں ہوں۔ میں دُنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاہتی ہوں اور اعلان کرتی ہوں کہ لائسن کی

میں چاہتی ہوں کہ دُنیا بھر کے بچے پھولوں کی سونگھ کا آند لیں اور بارود کی درگندہ سے بچے رہیں۔ میں چاہتی ہوں کہ ہمارے سب کے بچے جیون کے سنگھ کو انہیں کریں، جنگ کی لعنت کو نہیں۔ میں ایک معمولی چینی عورت ہوں۔ میں چار بچوں کی ماں ہوں۔ میں دُنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاہتی ہوں اور اعلان کرتی ہوں کہ لائسن کی

میں چاہتی ہوں کہ دُنیا بھر کے بچے پھولوں کی سونگھ کا آند لیں اور بارود کی درگندہ سے بچے رہیں۔ میں چاہتی ہوں کہ ہمارے سب کے بچے جیون کے سنگھ کو انہیں کریں، جنگ کی لعنت کو نہیں۔ میں ایک معمولی چینی عورت ہوں۔ میں چار بچوں کی ماں ہوں۔ میں دُنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاہتی ہوں اور اعلان کرتی ہوں کہ لائسن کی

میں چاہتی ہوں کہ دُنیا بھر کے بچے پھولوں کی سونگھ کا آند لیں اور بارود کی درگندہ سے بچے رہیں۔ میں چاہتی ہوں کہ ہمارے سب کے بچے جیون کے سنگھ کو انہیں کریں، جنگ کی لعنت کو نہیں۔ میں ایک معمولی چینی عورت ہوں۔ میں چار بچوں کی ماں ہوں۔ میں دُنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاہتی ہوں اور اعلان کرتی ہوں کہ لائسن کی

میں چاہتی ہوں کہ دُنیا بھر کے بچے پھولوں کی سونگھ کا آند لیں اور بارود کی درگندہ سے بچے رہیں۔ میں چاہتی ہوں کہ ہمارے سب کے بچے جیون کے سنگھ کو انہیں کریں، جنگ کی لعنت کو نہیں۔ میں ایک معمولی چینی عورت ہوں۔ میں چار بچوں کی ماں ہوں۔ میں دُنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاہتی ہوں اور اعلان کرتی ہوں کہ لائسن کی

میں چاہتی ہوں کہ دُنیا بھر کے بچے پھولوں کی سونگھ کا آند لیں اور بارود کی درگندہ سے بچے رہیں۔ میں چاہتی ہوں کہ ہمارے سب کے بچے جیون کے سنگھ کو انہیں کریں، جنگ کی لعنت کو نہیں۔ میں ایک معمولی چینی عورت ہوں۔ میں چار بچوں کی ماں ہوں۔ میں دُنیا بھر کی ماؤں کو سلام کرنا چاہتی ہوں اور اعلان کرتی ہوں کہ لائسن کی

ماہوں کی کونگریس نے جو اعلان نکالا ہے اس سے میں پوری طرح بہت ہوں۔ مہری اپنی چوٹی سی کوششوں سے بہت کچھ نہیں ہو سکتا، پر ہدی سب دیشوں کی ماٹھیں اٹھ کر رہی ہوں اور اس کام میں لگ جاویں تو مجھے رشولس ہے کہ ہم جنگ کے خولی ہاتھ کو روک سکتے ہیں، اور اس بات کا پکا پرہلہ کر سکتے ہیں کہ ہمارے بچوں کا بھوشہ شانتی اور سکھ سے بھرا ہوا ہو۔

یہی ہم سب ملکر ہرگز ہرجاویں تو کئی ہمیں جیت نہیں سکتا۔

("پیپرس چائنا" سے)

ملوں کی کونگریس نے جو اعلان نکالا ہے اس سے میں پوری طرح بہت ہوں۔ مہری اپنی چوٹی سی کوششوں سے بہت کچھ نہیں ہو سکتا، پر ہدی سب دیشوں کی ماٹھیں اٹھ کر رہی ہوں اور اس کام میں لگ جاویں تو مجھے رشولس ہے کہ ہم جنگ کے خولی ہاتھ کو روک سکتے ہیں، اور اس بات کا پکا پرہلہ کر سکتے ہیں کہ ہمارے بچوں کا بھوشہ شانتی اور سکھ سے بھرا ہوا ہو۔

یہی ہم سب ملکر ہرگز ہرجاویں تو کئی ہمیں جیت نہیں سکتا۔

("پیپرس چائنا" سے)

کروموں کروموں کے بیچ دوستی

کروموں کروموں کے بیچ دوستی

شری نکیٹا خورشچیر

شری نکیٹا خورشچیر

[24 نومبر سن 1955 کی شام کو بمبئی میں ہندوستان-سوویت کونگریس کی طرف سے شری بولگانین اور شری نکیٹا خورشچیر کی स्वागत سभा में श्री निकिता खुरचेव का भाषण.]

[24 نومبر سن 1955 کی شام کو بمبئی میں ہندوستان-سوویت کونگریس کی طرف سے شری بولگانین اور شری خورشچیر کی स्वागत سभा میں نکیٹا خورشچیر کا بھاشن۔]

❀

❀

❀

❀

❀

❀

دوستو،

دوستو،

ہم سب دوست ہیں، کیونکہ یہ جلسہ ایک ایسی سوسائٹی کی طرف سے ہے جس کا مقصد ہی بھارت اور سوویت یونین میں دوستی کو بڑھانا اور مضبوط کرنا ہے۔

ہم سب دوست ہیں، کیونکہ یہ جلسہ ایک ایسی سوسائٹی کی طرف سے ہے جس کا مقصد ہی بھارت اور سوویت یونین میں دوستی کو بڑھانا اور مضبوط کرنا ہے۔

اپنے دوست نکولائی بولگانین کی طرح میں بھی اس سوسائٹی کے پریسیڈنٹ ڈاکٹر بالیگا کو دھنیواد دیتا ہوں۔ میں بمبئی کے گورنر شری مہتاب کو بھی دھنیہ واد دیتا ہوں کیونکہ وہ اس سوسائٹی کے کام میں مدد دیتے ہیں اور انہوں نے کہا کہ انہیں آپ کے اس ادبیت شہر میں آنے کی دعوت دی ہے۔

اپنے دوست نکولائی بولگانین کی طرح میں بھی اس سوسائٹی کے پریسیڈنٹ ڈاکٹر بالیگا کو دھنیہ واد دیتا ہوں۔ میں بمبئی کے گورنر شری مہتاب کو بھی دھنیہ واد دیتا ہوں کیونکہ وہ اس سوسائٹی کے کام میں مدد دیتے ہیں اور انہوں نے کہا کہ انہیں آپ کے اس ادبیت شہر میں آنے کی دعوت دی ہے۔

میں آپ کی ریاست کے چیف منسٹر شری دیستنی کا بھی شکریہ ادا کرتا ہوں۔ میں آپ سب کو جو ہم سے ملنے کے لئے یہاں آئے ہیں دھنیہ واد دیتا ہوں۔

میں آپ کی ریاست کے چیف منسٹر شری دیستنی کا بھی شکریہ ادا کرتا ہوں۔ میں آپ سب کو جو ہم سے ملنے کے لئے یہاں آئے ہیں دھنیہ واد دیتا ہوں۔

کرمیوں کرمیوں کے بیچ دوستی

کرمی کرمی جب باہمی بولنے لگتا ہے تو ماموریت کی بجائے سے بھ اپنے ماموریت کا ٹیک ٹیک رپ نہیں دے پاتا۔

پیدا لگتا ہے کہ اس سیمے مہرے لئے سب سے مناسب مہمیں

دوستیاں نئی طرح کی ہوتی ہیں۔ ایک دوستی وہ ہوتی ہے کہ جس میں لوگ ایک دوسرے سے کھل مکر سچ سچ دوستوں کی طرح رہتے ہیں۔ لیکن ایک طرح کی ”دوستی“ وہ بھی ہوتی ہے جس میں لوگ ایک دوسرے کے پاس پاس پڑوسوں کی طرح رہتے ہیں لیکن ایک دوسرے کو اپنے یہاں آنے کی دعوت نہیں دیتے۔ یہی حالت دیشوں اور راجدوں کی ہے۔ کچھ لوگ اگرچہ ایک ہی دھرتی پر رہتے ہیں پھر بھی ان میں سچی دوستی نہیں ہوتی۔ ایسی صورت میں آپ پسند کریں یا نہ کریں آپ کو کسی نہ کسی طرح ایک دوسرے سے نبھانا ہی پڑتا ہے۔

ہمارا مہمان نیتا لینن اس طرح کے نبھانے کو ”کو-پراجیکٹنس“ یا ”ساخ-ساخ رہنا“ کہا کرتا تھا۔

یہ ساخ ساخ رہنے کی بات بہت ہی مزے کی ہے۔ دنیا میں کچھ لوگ ایسے ہیں جو پوچھتے ہیں کہ کیا اس طرح ساخ ساخ رہنا ممکن ہے؟ مجھے لگتا ہے کہ یہ سوال ہی نہیں اٹھتا، کیونکہ اس طرح کے دیہی عمل میں ساخ ساخ رہ رہے ہیں۔ پھر بھی لوگ یہ سوال اٹھاتے رہتے ہیں۔ میں آپ سے کہا چاہتا ہوں کہ بچہ پیدا ہو یا نہ ہو یہ بات ماں باپ کے ہاتھوں میں ضرور ہے لیکن یہ بات ان کے ہاتھوں میں نہیں ہے کہ بچہ کس دن اور کس گھڑی پیدا ہو یا بچہ ویسا ہی ہو جیسا وہ چاہتے ہیں۔

انہیں کی پرگتی کو روک سکتا کیسے ممکن ہو سکتا ہے اور نئی نئی سماجی ویسٹھاؤں کی پیداوار کو بھی کون روک سکتا ہے؟ جس طرح سورج روز صبح نکلتا ہے اسی طرح برائے سماجی قہانچوں کی جگہ نئے اور ادھک پرگتی شیل قہانچوں کا پیدا ہوتے رہنا بھی ضروری ہے۔

ٹھیک اسی قہم کے انوسار ہمارے سوویت راج کا جنم ہوا۔ دنیا میں اپنے ہاتھ پاؤں سے کام کرنے والوں کا یہ پہلا راج تھا۔ یہ مزدوروں اور کسانوں کا راج ہے۔ جب یہ نیا راج پیدا ہوا تو اور سب دیشوں اور راجوں نے گہنٹے بجانر اس کا سواکت نہیں کیا۔

روس کے اندر پرانی زار شاہی کا قہانچہ بالکل کھوکھلا ہو چکا تھا اور سز چکا تھا۔ اس لئے ہمارا اکتوبر (1917) کا انقلاب لگ بھگ بڑا حرن ہوا ہی سہا ہوا کیا۔ لیکن بعد میں ہم سے یہ نہا کیا شبدوں میں نہیں اور سرکاری طور پر نہیں لیکن کاموں کے ذریعہ نہا گناہ اس سوویت راج کے پیدا ہونے کی

قہمیں قہمیں کے بیچ دوستی

کبھی کبھی جب آدمی بولنے لگتا ہے تو ہانکنا کی وجہ سے اپنے ہانکنا کو ٹھیک ٹھیک رپ نہیں دے پاتا۔

ایسا لگتا ہے کہ اس سیمے مہرے لئے سب سے مناسب مہمیں

دوستیاں نئی طرح کی ہوتی ہیں۔ ایک دوستی وہ ہوتی ہے کہ جس میں لوگ ایک دوسرے سے کھل مکر سچ سچ دوستوں کی طرح رہتے ہیں۔ لیکن ایک طرح کی ”دوستی“ وہ بھی ہوتی ہے جس میں لوگ ایک دوسرے کے پاس پاس پڑوسوں کی طرح رہتے ہیں لیکن ایک دوسرے کو اپنے یہاں آنے کی دعوت نہیں دیتے۔ یہی حالت دیشوں اور راجدوں کی ہے۔ کچھ لوگ اگرچہ ایک ہی دھرتی پر رہتے ہیں پھر بھی ان میں سچی دوستی نہیں ہوتی۔ ایسی صورت میں آپ پسند کریں یا نہ کریں آپ کو کسی نہ کسی طرح ایک دوسرے سے نبھانا ہی پڑتا ہے۔

ہمارا مہمان نیتا لینن اس طرح کے نبھانے کو ”کو-پراجیکٹنس“ یا ”ساخ-ساخ رہنا“ کہا کرتا تھا۔

یہ ساخ ساخ رہنے کی بات بہت ہی مزے کی ہے۔ دنیا میں کچھ لوگ ایسے ہیں جو پوچھتے ہیں کہ کیا اس طرح ساخ ساخ رہنا ممکن ہے؟ مجھے لگتا ہے کہ یہ سوال ہی نہیں اٹھتا، کیونکہ اس طرح کے دیہی عمل میں ساخ ساخ رہ رہے ہیں۔ پھر بھی لوگ یہ سوال اٹھاتے رہتے ہیں۔ میں آپ سے کہا چاہتا ہوں کہ بچہ پیدا ہو یا نہ ہو یہ بات ماں باپ کے ہاتھوں میں ضرور ہے لیکن یہ بات ان کے ہاتھوں میں نہیں ہے کہ بچہ کس دن اور کس گھڑی پیدا ہو یا بچہ ویسا ہی ہو جیسا وہ چاہتے ہیں۔

انہیں کی پرگتی کو روک سکتا کیسے ممکن ہو سکتا ہے اور نئی نئی سماجی ویسٹھاؤں کی پیداوار کو بھی کون روک سکتا ہے؟ جس طرح سورج روز صبح نکلتا ہے اسی طرح برائے سماجی قہانچوں کی جگہ نئے اور ادھک پرگتی شیل قہانچوں کا پیدا ہوتے رہنا بھی ضروری ہے۔

ٹھیک اسی قہم کے انوسار ہمارے سوویت راج کا جنم ہوا۔ دنیا میں اپنے ہاتھ پاؤں سے کام کرنے والوں کا یہ پہلا راج تھا۔ یہ مزدوروں اور کسانوں کا راج ہے۔ جب یہ نیا راج پیدا ہوا تو اور سب دیشوں اور راجوں نے گہنٹے بجانر اس کا سواکت نہیں کیا۔

روس کے اندر پرانی زار شاہی کا قہانچہ بالکل کھوکھلا ہو چکا تھا اور سز چکا تھا۔ اس لئے ہمارا اکتوبر (1917) کا انقلاب لگ بھگ بڑا حرن ہوا ہی سہا ہوا کیا۔ لیکن بعد میں ہم سے یہ نہا کیا شبدوں میں نہیں اور سرکاری طور پر نہیں لیکن کاموں کے ذریعہ نہا گناہ اس سوویت راج کے پیدا ہونے کی

کيا ضرورت تھی ؟ مزدوروں اور کسانوں کو حکومت اپنے ہاتھ میں لینے کا کیا حق تھا ؟

لوگوں نے یہ صرف کہا ہی نہیں انہوں نے نئے پیدا ہوئے سوویت راج کے خلاف اپنی فوجیں میدان میں اتار دیں ۔ فرانسیسیوں نے زبردستی اپنی فوجیں ہمارے اتریں کے بلذراہ پر اتاریں ۔ انگریزی فوجیں آرک اینجلز پر آدھکیں ۔ امریکی فوجیں ولینڈیا تک میں پہنچ گئیں ۔ ان سب کے پیچھے پیچھے جاپانی فوجیں بھی ہمارے خلاف پہنچ گئیں ۔ اس سب سے نتیجہ کیا نکلا یہ ساری دنیا کو اچھی طرح معلوم ہے ۔ سوویت روس کے لوگوں نے ان سب حملہ آور فوجوں کو اسی طرح کھدیز کے اپنے ملک سے باہر نکال دیا جس طرح ایک اچھی سمجھ عورت اپنے گھر سے کچرے کو جہاز بھار کر باہر پھینک دیتی ہے ۔ لیکن کچھ دیشوں کو اس سے بھی سلتھیں نہیں ہوا ۔ وہ اپنے تجربے کو دہرائنا چاہتے تھے اور اس کے لئے انہوں نے دوسرا مہادھ کھڑا کر دیا ۔ ان لوگوں نے سوویت روس کے خلاف ہٹلری جرمنی کی انگشت ہتھار بند فوجوں کو بھڑا دیا ۔

ساری دنیا اچھی طرح جانتی ہے کہ اس کا بھی نتیجہ کیا ہوا ۔ سوویت یونین نے پھر ایک بار اپنے دشمنوں پر وجہ پراپت کی ۔ اس جنگ سے کھول اٹلائی نہیں ہوا کہ سوویت یونین کمزور نہیں ہوئی بلکہ اس کی شکتی اور بڑھ گئی ۔ اس جنگ سے جو گھاؤ ہمارے لئے تھے آج سوویت یونین کے لوگوں کی کوششوں سے وہ سب گھاؤ بھر چکے ہیں اور اچھے ہو گئے ہیں ۔ پھر کے کارن ہمارا جو کاربار برباد ہو گیا تھا اسے سوویت کے لوگوں نے پھر سے ٹھیک کر لیا ہے ۔ یہاں تک کہ ہم نے کامیابی کے ساتھ جنگ کے بعد کی اپنی پہلی پینج ورشی یوجنا پوری کر لی ہے اور ہم دوسری پینج ورشی یوجنا پوری کر رہے ہیں ۔ ہمارا دیش تیزی سے بڑھ رہا ہے اور شانہ کے ساتھ بولنا چل رہا ہے ۔

لوگوں نے یہ صرف کہا ہی نہیں انہوں نے نئے پیدا ہوئے سوویت راج کے خلاف اپنی فوجیں میدان میں اتار دیں ۔ فرانسیسیوں نے زبردستی اپنی فوجیں ہمارے اتریں کے بلذراہ پر اتاریں ۔ انگریزی فوجیں آرک اینجلز پر آدھکیں ۔ امریکی فوجیں ولینڈیا تک میں پہنچ گئیں ۔ ان سب کے پیچھے پیچھے جاپانی فوجیں بھی ہمارے خلاف پہنچ گئیں ۔ اس سب سے نتیجہ کیا نکلا یہ ساری دنیا کو اچھی طرح معلوم ہے ۔ سوویت روس کے لوگوں نے ان سب حملہ آور فوجوں کو اسی طرح کھدیز کے اپنے ملک سے باہر نکال دیا جس طرح ایک اچھی سمجھ عورت اپنے گھر سے کچرے کو جہاز بھار کر باہر پھینک دیتی ہے ۔ لیکن کچھ دیشوں کو اس سے بھی سلتھیں نہیں ہوا ۔ وہ اپنے تجربے کو دہرائنا چاہتے تھے اور اس کے لئے انہوں نے دوسرا مہادھ کھڑا کر دیا ۔ ان لوگوں نے سوویت روس کے خلاف ہٹلری جرمنی کی انگشت ہتھار بند فوجوں کو بھڑا دیا ۔

ساری دنیا اچھی طرح جانتی ہے کہ اس کا بھی نتیجہ کیا ہوا ۔ سوویت یونین نے پھر ایک بار اپنے دشمنوں پر وجہ پراپت کی ۔ اس جنگ سے کھول اٹلائی نہیں ہوا کہ سوویت یونین کمزور نہیں ہوئی بلکہ اس کی شکتی اور بڑھ گئی ۔ اس جنگ سے جو گھاؤ ہمارے لئے تھے آج سوویت یونین کے لوگوں کی کوششوں سے وہ سب گھاؤ بھر چکے ہیں اور اچھے ہو گئے ہیں ۔ پھر کے کارن ہمارا جو کاربار برباد ہو گیا تھا اسے سوویت کے لوگوں نے پھر سے ٹھیک کر لیا ہے ۔ یہاں تک کہ ہم نے کامیابی کے ساتھ جنگ کے بعد کی اپنی پہلی پینج ورشی یوجنا پوری کر لی ہے اور ہم دوسری پینج ورشی یوجنا پوری کر رہے ہیں ۔ ہمارا دیش تیزی سے بڑھ رہا ہے اور شانہ کے ساتھ بولنا چل رہا ہے ۔

مجھے اکتوبر کے انقلاب کے شروع کے دن یاد ہیں ۔ مجھے اپنے یہاں کی گھریلو جنگ کی بھی یاد ہے ۔ اس سئمہ کھول ایک لیٹن دیش کے بھوشہ کو صاف صاف دیکھ سکتا تھا ۔ لیکن کو ہی اس کا اندازہ تھا کہ نیا پیدا ہوا سوویت راج تھوڑے دنوں میں کتنا شکتی شالی ہو جائیگا ۔

جو لوگ یہاں اس جلسہ میں موجود ہیں ان میں بہت بڑی تعداد دماغی کام کرنے والوں کی ہے ۔ اس سبب میں میں آپ کو اپنا اس سئمہ کا ایک تجربہ بتانا چاہتا ہوں ۔ اس زمانے کے روس کے دماغی کام کرنے والوں میں اس انقلاب کو کس نگاہ سے دیکھا گیا ۔ بہت سے دماغی کام کرنے والوں نے اس کا سراگت کیا اور وہ ایمانداری کے ساتھ لئے سوویت راج کی سہوا میں لگ گئے ۔ لیکن کچھ

میرے اکتوبر کے انقلاب کے شروع کے دن یاد ہیں ۔ مجھے اپنے یہاں کی گھریلو جنگ کی بھی یاد ہے ۔ اس سئمہ کھول ایک لیٹن دیش کے بھوشہ کو صاف صاف دیکھ سکتا تھا ۔ لیکن کو ہی اس کا اندازہ تھا کہ نیا پیدا ہوا سوویت راج تھوڑے دنوں میں کتنا شکتی شالی ہو جائیگا ۔

جو لوگ یہاں اس جلسہ میں موجود ہیں ان میں بہت بڑی تعداد دماغی کام کرنے والوں کی ہے ۔ اس سبب میں میں آپ کو اپنا اس سئمہ کا ایک تجربہ بتانا چاہتا ہوں ۔ اس زمانے کے روس کے دماغی کام کرنے والوں میں اس انقلاب کو کس نگاہ سے دیکھا گیا ۔ بہت سے دماغی کام کرنے والوں نے اس کا سراگت کیا اور وہ ایمانداری کے ساتھ لئے سوویت راج کی سہوا میں لگ گئے ۔ لیکن کچھ

دیواری کام کرنے والوں کو तरह तरह کی دلیلیں سونپنے لگیں۔ وہ سوچنے لگے کہ کیا ہونے جا رہا ہے؟ لنین نے اور کمیونسٹوں نے دہش کے شائق کا کام مچھوروں اور کسانوں کے ہاتھوں میں دے دیا ہے۔ مچھور ان پد ہیں۔ کسان ان سے بھی ادھک انہیں ہیں۔ یہ لوگ دہش کے نیتا بن گئے ہیں! اب روسی کلاچر کا کیا ہوگا؟ روسی آرٹ کی قدر کون کریگا؟ وہ روسی پیلے (ناچ) جو ساری دنیا میں مشہور تھے وہ اب سدا کے لئے ختم ہو جائیں گے۔ روسی آپٹرا (ڈراما) کی وہ تہ جو انقلاب سے پہلے اتنی زبردست ترقی کر چکی تھی اب مٹ جائیگی! اسی طرح دوسری طرح کے آرٹ، ناول اور غزلیں اب مٹ جائیں گی! کیونکہ ان کی سچی قدر کرنے والا اب نہیں رہے گا!

لیکن اتنے دنوں کے انتہاس نے ان سب شکوں کو چھوٹا ثابت کر دیا ہے۔ نئی سوویت ملچر پرانی روسی ملچر کے مقابلے میں اتنی اونچی پہنچ چکی ہے کہ دونوں میں کوئی تفرق نہیں رہی۔

آپ میں سے بہت سے اسی سال سوویت یونین جا چکے ہیں۔ آپ نے اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے کہ سوویت یونین کے اندر آرٹ اور کلا کی جتنی قدر آج ہوتی ہے اتنی انقلاب سے پہلے کے روس میں نہیں ہوتی تھی۔ سوویت نے پہلے کبھی بھی اتنی ترقی نہیں دی تھی۔ مزدوروں اور کسانوں نے اپنے اندر سے اچھے سے اچھے ہونہار لوگوں کو چن کر یونیورسٹیوں اور اسی طرح کی دوسری سائنس ہاؤس میں بھیجا۔ جو مزدور اور کسان اپنے کام میں لگے رہے ان میں بھی ملچر نے بہت اتنی دی۔ ہمیں اس کا اہمیان ہے۔ ہمارے دشمن اسے پسند کریں یا نہ کریں سوویت یونین زندہ ہے اور کیول زندہ ہی نہیں ہے، بڑھ رہی ہے اور آگنتی کر رہی ہے۔ ہمارا کاروبار اور ہماری مالی حالت بہت مضبوط ہے، کلچر بڑھ رہی ہے۔ لوگوں کی خوشحالی بھی بڑھتی چلی جا رہی ہے۔

یہ سب ایسی حالت میں ہو رہا ہے جب کہ اس طرح کی شکایاں موجود ہیں جنہیں ہم سے دشمنی ہے، جنہوں نے ابھی تک ہمارے دہش کا کلا گھونٹ کر اسے ختم کر دینے کا وچار چھوڑا نہیں ہے۔ ہمیں مجبور ہو کر اپنے دہش کی رکشا کے لئے اپنی بہت سی شکتی اور اپنا بہت سا دھن سامان خرچ کرنا پڑ رہا ہے۔ جتنا دھن اور سامان ہم ہتھوروں پر خرچ کر رہے ہیں اس سب کو اگر ہم شانتی کے کاموں میں لگا سکتے تو ہمارے دہش کے لوگوں کی خوشحالی اس سے بھی کہیں ادھک بڑھ جاتی، جس کا اندازہ کر سکتا بھی کتنوں ہے۔

ہمارے دشمن اس بات کو سمجھتے ہیں۔ یہی گرن ہے کہ کچھ ردیسی راج نہایت اب ہتھار بندی کی سچی

ہمیں تو اس بات کو سمجھتے ہیں۔ یہی گرن ہے کہ کچھ ردیسی راج نہایت اب ہتھار بندی کی سچی

ہمیں تو اس بات کو سمجھتے ہیں۔ یہی گرن ہے کہ کچھ ردیسی راج نہایت اب ہتھار بندی کی سچی

ہمیں تو اس بات کو سمجھتے ہیں۔ یہی گرن ہے کہ کچھ ردیسی راج نہایت اب ہتھار بندی کی سچی

ہمیں تو اس بات کو سمجھتے ہیں۔ یہی گرن ہے کہ کچھ ردیسی راج نہایت اب ہتھار بندی کی سچی

ہمیں تو اس بات کو سمجھتے ہیں۔ یہی گرن ہے کہ کچھ ردیسی راج نہایت اب ہتھار بندی کی سچی

بات کرنے سے ڈرتے ہیں۔ وہ دیشوں کے مابین کے تنازعوں کو مٹانا نہیں چاہتے۔ انہیں تو ہے کہ روس کا جو دھن اور جو شکتی اس سلسلہ فوجی رکشا کے کاموں میں خرچ ہو رہی ہے اسے ہر ہم بچا کر دیہی کی شانتی میں رچنا کے کاموں میں لگا سکیں گے۔

ہاں چونکہ اس سب کے ہمیں پورا وشواس ہے کہ آجکل کی حالتوں میں بھی یونجی وائی ویسٹا (کپیٹلسٹ سسٹم) اور سماج وائی ویسٹا (سوشلسٹ سسٹم) دونوں اگر شانتی کے ساتھ ساتھ اور دوسروں کو جھٹکے دیں اور ملکر چلیں تو آخر میں ہم جیتیں گے۔ سماج وائی ویسٹا۔

ایک بار کیمین (ماسکو) کے ایک جلسے میں میں نے یہی بات صاف صاف کہہ دی۔ اس پر یونجی وائی ویسٹا کے اخبار والوں نے دنیا بھر میں یہ اعلان کر دیا کہ خرسچینوں نے مارا بھد کھل دیا اور بالشیوکیوں نے اپنی راجکشی پرچندوں کو چھڑا نہیں ہے۔ نہیں، میں نے کوئی بھد نہیں کھولا تھا اور نہ میں نے کوئی بھول کی تھی۔ میں نے وہی بات کہی تھی جو ہم ماننے میں آ رہی تھی۔ آج کل کی گم ہونے کے لیے کہی چھڑا تھا اور نہ ہم کہیں چھڑیں گے۔ یہ وہ راستہ ہے جو مہان لینن نے ہمیں دکھایا ہے۔ اپنا راجکشی پروگرام ہم نے کہیں نہیں چھڑا اور نہ ہم چھڑیں گے۔

ہمارے یہاں کی ایک کہات ہے—”جس کسی کے پاس کوئی اچھی چیز ہے وہ ہر کسی کو دینا چاہتا ہے۔“

ہمارا دیش سیکڑوں برس تک ایک بچھا ہوا دیش رہا ہے۔ بعد جس چیز کی بدولت اس حالت سے نکل کر ان دیشوں کے برابر میں پہنچ گیا ہے۔ چر آدیوگ دھندوں کی نگاہ سے اور آرتھک نگاہ سے سب سے اچھک آنت اور بڑے چھکے ہیں، اس چیز کو ہم کہیں چھڑیں؟ اسے ہم کہیں اور کس چیز کے لئے چھڑیں؟

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ امید کرتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ کہتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ کہتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

ہمارے یہاں کی ایک کہات ہے—”جس کسی کے پاس کوئی اچھی چیز ہے وہ ہر کسی کو دینا چاہتا ہے۔“

ہمارا دیش سیکڑوں برس تک ایک بچھا ہوا دیش رہا ہے۔ بعد جس چیز کی بدولت اس حالت سے نکل کر ان دیشوں کے برابر میں پہنچ گیا ہے۔ چر آدیوگ دھندوں کی نگاہ سے اور آرتھک نگاہ سے سب سے اچھک آنت اور بڑے چھکے ہیں، اس چیز کو ہم کہیں چھڑیں؟ اسے ہم کہیں اور کس چیز کے لئے چھڑیں؟

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ امید کرتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ امید کرتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ امید کرتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ امید کرتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ امید کرتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

اسی لئے ہم ان بڑے مانسوں سے، جو یہ امید کرتے ہیں کہ سوویت یونین اپنا راجکشی پروگرام بدل دیگی، یہ کہتے ہیں کہ آپ اپنی امید کے پورا ہونے کے لئے اس سے تک انتظار کیجئے جب تک کہ مچھلیاں سیلی بچانا نہ شروع کر دیں! اور آپ جانتے ہیں مچھلیاں سیلی بچانا کب شروع کریں گی!

موجود ہے اور مجھے یہ ماننا پڑتا ہے کہ اس دوستی کا وجود دنیا میں ہے۔

لیکن دوسری طرف کے لوگ یہ ماننا ہی نہیں چاہتے کہ سماج وادی دوستی یہی ہے۔ وہ اسے دیکھنا ہی نہیں چاہتے۔ حالانکہ انکے ہم سوویت روس والے ہی نہیں ہیں جنہوں نے اپنے یہاں سماج وادی دوستی قائم کر رکھی ہے۔ اور یہی بہت سے دہش اسی راہ پر چل رہے ہیں۔ ہمارے بڑے دوست مہان چینی راشٹر کے لوگ بھی اپنے یہاں سماج وادی کی رچنا کر رہے ہیں۔ یہ ایک ایسی حالت ہے جسے کوئی آنکھ سے اوجھل نہیں کر سکتا۔ یورپ اور ایشیا کے کئی دیہات جو سوویت یونین کے ساتھ کھڑے ہیں اپنے اپنے یہاں سماج وادی کی رچنا کر رہے ہیں۔ بھارت کے پردھان منتری شری نہرو نے یہی اعلان کر دیا ہے کہ بھارت بھی اسی سماج وادی راہ پر چل رہا ہے۔ یہ بات بہت اچھی ہے۔ یہ الگ بات ہے کہ ہم 'سماج وادی' سے جو کچھ سمجھتے ہیں وہ اور چیز ہے۔ آپ جو سمجھتے ہیں وہ کچھ اور ہے۔ پھر بھی ہم اس اعلان کا اور اس طرح کے رجحان کا स्वागत کرتے ہیں۔

بس سماج وادی دوستی دنیا میں ہے اور اس کے لئے ہمیں کسی کی اجازت لینے کی ضرورت نہیں ہے۔ ہم ہیں کہول اتنا ہی نہیں، بلکہ ہم اپنے وجود کی رکشا کرنے کی بھی اپنے میں شکتی رکھتے ہیں۔ اگر ہم اب تک دوسروں سے یہی پورا نہیں کرتے رہتے کہ ہمیں بھی اپنے ساتھ ساتھ دو تو ہم اب تک کبھی کے مقابلہ کئے ہوتے۔

اور ہمارے دشمن اتنا بھی یہ چاہیں کہ ہم مٹ جاویں مگر ہمیں مٹانا ان کے ہوتے کی چیز نہیں ہے۔ اس کا ارتہ یہ ہے کہ آپ چاہیں یا نہ چاہیں، پسند کریں یا نہ کریں، سماج وادی راج اور پونجی وادی راج دونوں کو اسی دھرتی پر رہنا ہے۔

ہم پونجی وادی دیش سے کہتے ہیں کہ آپ ہمیں پسند نہیں کرتے تو ہمیں اپنے یہاں ہلاکر دعوت نہ دیجئے، لیکن اس کے بنا ہی ہم نایم رہیں گے۔

آج دنیا کی حالت ٹھیک یہی ہے۔ ہم اس طرح سے ساتھ ساتھ رہنا چاہتے ہیں جس سے سب قوموں کی آنتی میں مدد ملے، جس سے سب دیشوں کے آپسی سمبندھ بڑھیں۔ خاصکر ہم سب دیشوں کے ساتھ تجارت کرنے کے پکھ میں ہیں۔ وہ ہم سے چیزیں خریدیں، ہم ان سے چیزیں خریدیں۔

اس سہ تجارت کے معاملے میں وہ لوگ ہم سے بھید بھاؤ برتنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ خاص خاص طرح کی اور کام کی چیزوں میں وہ ہمارے ساتھ تجارت کرنا نہیں چاہتے۔ لیکن ان کی اس کوشش کے باوجود ہمارا دیش بڑھ رہا ہے اور ادھک شکتی شالی ہوتا جا رہا ہے۔

اس سہ تجارت کے معاملے میں وہ لوگ ہم سے بھید بھاؤ برتنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ خاص خاص طرح کی اور کام کی چیزوں میں وہ ہمارے ساتھ تجارت کرنا نہیں چاہتے۔ لیکن ان کی اس کوشش کے باوجود ہمارا دیش بڑھ رہا ہے اور ادھک شکتی شالی ہوتا جا رہا ہے۔

اس سہ تجارت کے معاملے میں وہ لوگ ہم سے بھید بھاؤ برتنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ خاص خاص طرح کی اور کام کی چیزوں میں وہ ہمارے ساتھ تجارت کرنا نہیں چاہتے۔ لیکن ان کی اس کوشش کے باوجود ہمارا دیش بڑھ رہا ہے اور ادھک شکتی شالی ہوتا جا رہا ہے۔

اس سہ تجارت کے معاملے میں وہ لوگ ہم سے بھید بھاؤ برتنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ خاص خاص طرح کی اور کام کی چیزوں میں وہ ہمارے ساتھ تجارت کرنا نہیں چاہتے۔ لیکن ان کی اس کوشش کے باوجود ہمارا دیش بڑھ رہا ہے اور ادھک شکتی شالی ہوتا جا رہا ہے۔

٢٥

ماہلوں میں اپنی کوششوں کو ڈیلا ہونے دینا نہیں چاہیے۔
رہائی پرورک ساتھ ساتھ رہنے کے راستے میں جیتنی ہکا بٹے
ہیں ان سب کو ہمیں دور کرتے رہنا چاہئے اور الگ الگ دیہوں
کے شانتی پرورک ساتھ ساتھ رہنے میں جتنی چیزیں مدد دے
سکتی ہیں انہیں ہمیں مضبوط کرنا چاہئے۔

اس سبب سے ہمیں حال میں جلیو میں چار بڑی شکلیوں
کے وڈیش ملتروں کی جو کانفرنس ہوئی ہے اس سے ہمیں
بہت ہی کم سہلنا ملی ہے یا یوں کہنا چاہئے کہ جو سہلنا ملی
ہے وہ انلی کم ہے کہ اسے دیکھنے کے لئے خوردبین کی ضرورت ہے۔
یہ کانفرنس ابھی حال میں ختم ہوئی ہے۔ پر اس سے جن
نقدجوں کی آشا تھی وہ پیدا نہیں ہوئے۔ لیکن اس سے ہمیں
کوئی خاص دکم بھی نہیں ہے۔ ظاہر ہے کہ ابھی وقت نہیں
آیا۔ ابھی یہ سوال اتنا پک نہیں پایا ہے کہ طے ہو سکے۔ ہمارے
دوسری طرف کے ساتھی ابھی تک یہی چاہتے ہیں کہ "اپنا
ہل دکھاؤ" ہم سے سمجھوتے کی بات چیت کریں۔ انہوں نے
ابھی تک اس وچار کو چھڑا نہیں ہے۔

مجبور ہو کر مجھے پھر ایک بار ان لوگوں کو ساروہان کر دینا
پڑتا ہے کہ جو لوگ "اپنا ہل دکھاؤ" ہم سے بات چیت کرنا
چاہتے ہیں وہ کوئی لاپ نہیں اٹھا سکتے۔

ظاہر ہے کہ جو سوال جلیو کانفرنس کے سامنے پیش
تھے ان سب کے حل ہونے کے لئے ابھی ہمیں کچھ اور انتظار کرنا
پڑے گا۔ اس میں بات ہی کیا ہے؟ ہم انتظار کرنے کو تیار ہیں۔
ہم پر کوئی آفت نہیں آرہی ہے۔ ہم موسم کے ادھک اچھا ہونے
تک انتظار کریں گے۔ ہم اس وقت تک انتظار کریں گے جب تک
کہ ان سب سوالوں کا فیصلہ دنیا کی جنتا کے ہات میں نہ
ہو سکے۔

حال میں بھارت میں رہتے ہوئے میں نے کئی وڈیشی
نیکوہوں کی تقریریں پڑھی ہیں جن میں انہوں نے جلیو
کانفرنس پر اپنی اپنی رائے ظاہر کی ہے۔ مجھے اس بات سے
تسلی ہے کہ جلیو کانفرنس میں جن لوگوں نے حصہ لیا تھا
ان کی تقریروں میں کافی سکیم ہے۔ اس سے یہ بات ظاہر ہے کہ
وہ کوئی اس طرح کے بھاؤ پرگٹ کرنا نہیں چاہتے جن سے
انٹرواشریہ تناؤ کے بڑھنے کا تر ہو۔

اب میں اپنا بھاشن ختم کرنا چاہتا ہوں۔ سب کو ساتھ
ساتھ تو رہنا ہی ہے۔ اس کے لئے نہ ہم کسی سے کوئی مانگ
کرتے ہیں اور نہ کسی سے کوئی درخواست کرتے ہیں۔ ہم دنیا
میں ہیں ویسے ہی جیسے کہ پونجی وادی دیہ میں ہیں۔ کوئی
ہمیں پکڑ کر اس دھرتی سے ملکل نارے میں نہیں بھیج سکتا۔
ابھی تک سائنس والوں نے بھی اس کا کوئی طریقہ نہیں
کالا۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ پونجی وادی دیہ میں یہاں سے

بٹھکر سنگل تارے میں بٹلے جانا نہیں چاہیے۔ اسکا मतलब یہ ہے کہ ہم دونوں کو جیسی دھرتی پر رہنا ہے۔ اور دونوں کے رہنے کا मतलब ہی "ساتھ ساتھ رہنا" ہے۔

ان حالات میں ہمارے لیے کام کےवल یہ ہے کہ جو دیش اپنی شکتی دکھاتے رہتے ہیں انہیں نئی جنگ نہ چھیڑنے دیا جاوے۔

سارے مانو سماج کی کوشش یہی ہونی چاہئے کہ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے اس سوال کو حل ہونے میں مدد ملے۔ جتنا جتنا ہم ایک دوسرے کو ادھک اچھی طرح سمجھنے لگیں گے، جتنا جتنا ہم ملکر کام کریں گے، جتنی جتنی ہم ایک دوسرے کی مدد کریں گے، اتنا اتنا ہی شانتی کی طاقتوں کو بل ملے گا، اور اتنا ہی جتنجیو طاقتوں کی رہنمائی۔ اس طرح کے جتنجیو لوگوں کو جنگ کی چاہ سے مقنا اسبھو ہے۔ لیکن اگر دنیا کی جتنا شانتی بٹائے رکھنے کے لئے عملی کوشش کرتی رہے تو انہیں جنگ چھیڑنے سے روکا جاسکتا ہے اور روک کر رکھا جاسکتا ہے۔

آپ جتنے لوگ یہاں موجود ہیں اور جتنے لوگ پوری لگن کے ساتھ اس مقصد کے لئے کام کرتے ہیں ان سب کی تندرستی کے نام پر میں اپنا پھالہ اونچا کرتا ہوں اور ان کی تندرستی کے لئے دعا کرتا ہوں !

دوستو ! میں دوستی کے لئے اور آپ سب کی تندرستی کے لئے دعا کرتا ہوں ۔

انوادک—سندر لال

ان حالات میں ہمارے لئے کام کیوں یہ ہے کہ جو دیش اپنی شکتی دکھاتے رہتے ہیں انہیں نئی جنگ نہ چھیڑنے دیا جاوے۔

سارے مانو سماج کی کوشش یہی ہونی چاہئے کہ شانتی پوروک ساتھ ساتھ رہنے کے اس سوال کو حل ہونے میں مدد ملے۔ جتنا جتنا ہم ایک دوسرے کو ادھک اچھی طرح سمجھنے لگیں گے، جتنا جتنا ہم ملکر کام کریں گے، جتنی جتنی ہم ایک دوسرے کی مدد کریں گے، اتنا اتنا ہی شانتی کی طاقتوں کو بل ملے گا، اور اتنا ہی جتنجیو طاقتوں کی رہنمائی۔ اس طرح کے جتنجیو لوگوں کو جنگ کی چاہ سے مقنا اسبھو ہے۔ لیکن اگر دنیا کی جتنا شانتی بٹائے رکھنے کے لئے عملی کوشش کرتی رہے تو انہیں جنگ چھیڑنے سے روکا جاسکتا ہے اور روک کر رکھا جاسکتا ہے۔

آپ جتنے لوگ یہاں موجود ہیں اور جتنے لوگ پوری لگن کے ساتھ اس مقصد کے لئے کام کرتے ہیں ان سب کی تندرستی کے نام پر میں اپنا پھالہ اونچا کرتا ہوں اور ان کی تندرستی کے لئے دعا کرتا ہوں !

دوستو ! میں دوستی کے لئے اور آپ سب کی تندرستی کے لئے دعا کرتا ہوں ۔

انوادک—سندر لال

انسان عام طور پر سانپ کو بنا جان سے مارے نہیں چھوڑتا، چاہے وہ زہریلا ہو یا بنا زہر کے، چاہے وہ چوٹ کرے یا نہیں۔ اپنے بھائیوں کی مہت کا سانپ اگر بدلہ لینے پر آمادہ ہو جائے تو وہ کیا نہیں کر سکتا۔ غلیمت ہے کہ انسان اور سانپ الگ الگ رہتے ہیں۔ کہنے کو تو سانپ بدنام ہے مگر آج تو انسان انسان کو دس رہے ہیں۔ سانپ سے تو بچنا ممکن ہے کہونکہ وہ اپنے زہر کو اپنی رکشا کے لئے ہی کام میں لاتا ہے مگر جب انسان اس زہر کو کام میں لائے تو پھر بھوکوں ہی خیر کر سکتا ہے۔

انوادک—سندر لال

انوادک—سندر لال

ہماری ہمارا

ہمارے روسی مہمان

ہمارے روسی مہمان

جس سہ ماہی ہم یہ لکھیں کہ وہ ہیں شری نیکولائی بلانین، شری نیکیتا خروشچیف اور ان کے ساتھیوں کی بھارت یاترا آدھی سے آدھک سمایٹ ہو چکی ہے۔ جگہ جگہ بھارت سرکار اور بھارت کی جنتا دونوں نے جس طرح اپنے پیارے روسی مہمانوں کا سواگت کیا اور ان کے سواگت میں جتنا جوش دکھایا اس نے دنیا بھر میں ایک نہلکے سا سچا دیا ہے۔ ایشیا اور افریقہ کے ادمکتر دیہوں میں اس سواگت سے ایک نیا اُتساہ، نئی آشا اور نئی اُمید پیدا ہو گئی ہے۔ کچھ سامراجی دیہی تھوڑا بہت گھبرا گئے ہیں، اور ان میں سے کچھ تو بولتے کہ اس طرح کی باتیں بھی کر لے لکے ہیں کہ جن سے نہ مانوتا کا مان بڑھ سکتا ہے اور نہ کسی کو کوئی لاہ ہو سکتا ہے۔

کالکٹہ میں تو جنتا کا اُتساہ ہر قدم پر پھیل رہا تھا۔ کم سے کم 20 لاکھ آدمی اپنے پیارے مہمانوں کو دیکھنے کے لیے چاروں طرف سے آمد پڑے۔ ان کی ہاتھ روکے نہ رکے۔ یہاں تک کہ سرکار کو اپنا پروگرام بدلنا پڑا۔ کہا جاتا ہے کہ جنتا کی اتنی بڑی بھیڑ آج تک کسی موقع پر دنیا میں نہیں جمع ہوئی تھی۔ ان کا جوش اور ان کا اُتساہ ہوا یوں ان کی تعداد کو بھی مات کر رہا تھا۔ پھر بھی یہ ایک بڑی بات ہے کہ سویم جواہر لال جی نے جنتا کے جوش کو سراہتے ہوئے یہ کہا کہ اتنی بڑی بھیڑ نے پوری شانتی، شست اور نظم کے انشاں سے کام لیا۔ کسی طرح کی ایک بھی درگھٹنا نہیں ہو پائی۔

ہمارے روسی مہمانوں کے دلوں پر بھی اس سب کا بہت گہرا اثر ہوا۔ روسی مہمانوں میں دو مسلمان تھے، ازبکستان کے بڑے وزیر شری راشد اور وہاں کے کھیتی وزیر شری رسول۔ ان دونوں نے کلکتہ کے سواگت کے بعد اپنے اپنے ساتھیوں کے ہاتھ پر گت کرتے ہوئے کہا کہ ”یہ سواگت کچھ تھوڑے سے آدمیوں یا تھوڑے سے لوگوں

کلمے میں تو جنتا کا اُتساہ حد کو پہنچ گیا۔ کم سے کم 20 لاکھ آدمی اپنے پیارے مہمانوں کو دیکھنے کے لئے چاروں طرف سے آمد پڑے۔ ان کی ہاتھ روکے نہ رکے۔ یہاں تک کہ سرکار کو اپنا پروگرام بدلنا پڑا۔ کہا جاتا ہے کہ جنتا کی اتنی بڑی بھیڑ آج تک کسی موقع پر دنیا میں نہیں جمع ہوئی تھی۔ ان کا جوش اور ان کا اُتساہ ہوا یوں ان کی تعداد کو بھی مات کر رہا تھا۔ پھر بھی یہ ایک بڑی بات ہے کہ سویم جواہر لال جی نے جنتا کے جوش کو سراہتے ہوئے یہ کہا کہ اتنی بڑی بھیڑ نے پوری شانتی، شست اور نظم کے انشاں سے کام لیا۔ کسی طرح کی ایک بھی درگھٹنا نہیں ہو پائی۔

ہمارے روسی مہمانوں کے دلوں پر بھی اس سب کا بہت گہرا اثر ہوا۔ روسی مہمانوں میں دو مسلمان تھے، ازبکستان کے بڑے وزیر شری راشد اور وہاں کے کھیتی وزیر شری رسول۔ ان دونوں نے کلکتہ کے سواگت کے بعد اپنے اپنے ساتھیوں کے ہاتھ پر گت کرتے ہوئے کہا کہ ”یہ سواگت کچھ تھوڑے سے آدمیوں یا تھوڑے سے لوگوں

کی طرف سے نہیں ہے، یہ سواگت بھارت کی جنتا کی طرف سے ہے۔ اُسے دیکھ کر یہ پکا وشواس جم جاتا ہے کہ بھارت اور روس کی دوستی اب کسی کے تیزے ٹوٹ نہیں سکتی!“

اسمیں سدیدہ نہیں شری نیکولائی بولگانین، شری نیکیتا خروشچےف اور ان کے ساتھیوں کے سواگت نے یہ ثابت کر دیا کہ بھارت کی جنتا روس اور روسیوں کے ساتھ نہ کھول سچی اور گہری دوستی ہی رکھتی ہے بلکہ سریم اپنے آگے کے راستے کے لئے بھی تھوڑی یا بہت، روس کی طرف نگاہ لگائے ہوئے ہے۔

’ہندوی بینی باری باری‘ کی آواظ سارے بھارت اور سارے بین میں گونج چکی ہے۔ ہمارے روسی مہمانوں کی اس یاत्रا کے समय ’ہندوی روسی باری باری‘ کی نئی آواظ بڑی اور بھ آواظ بھی دھرنٹ بیجلی کی तरह بھارت اور روس دونوں میں گونج گئی۔

اس سواگت میں نیچے لکھی پانچ باتیں سب سے अधिक بامک بڑی :—

(1) بھ ٹیک ہے کہ بھارت کی جنتا अपनी सरकार کی बिदेशी नीति से सहमत और खुश है. पर बھ स्वागत जिन लोगों ने और जिस तरह किया वह केवल सरकार की बिदेशी नीति से सहमत होने का ही नतीजा नहीं था. सरकार और सरकारों को अलग रखकर वह जنتा के हृदय की उमंग थी. बम्बई के अन्दर उन लोगों ने भी जो—ठीक या बेठीक—किसी बात पर सरकार से काफी असन्तुष्ट थे, उस असन्तोष को और और सब बातों को थोड़ी देर के लिये अलग रखकर, अपने मेहमानों का दिल खोलकर स्वागत किया. कलकत्ते की जنتा भी सब की सब अपने यहां की सरकार से पूरी तरह सन्तुष्ट नहीं है. इस असन्तोष के प्रदर्शन अनेक बार कलकत्ते में हो चुके हैं और सरकार की तरफ से भी उनका कड़ाई के साथ जवाब दिया जा चुका है. बाहिर है कलकत्ते की जنتा का यह अपूर्व उत्साह सरकार की तरफ जنتा के भावों से कोई सम्बन्ध नहीं रखता. यह नतीजा था रुस के साथ जنتा के प्रेम का. सरकारी लोग कहीं कुछ भी समझ बैठें, इस में सدیدह नहीं जنتा सरकार को चलाती है, सरकारें जنتा को नहीं चलातीं. जنتा का बल ही सरकार और सरकारों का एक मात्र बल होता है.

(2) इसमें भी सدیدह नहीं कि हमारे रुसी मेहमान भारत के सच्चे दोस्त होते हुए भी काफी समझदार और जागरूक हैं. शायद हम से सच्चे प्रेम के कारण ही वह इतने अधिक जागरूक हैं. उन्होंने हमारी अच्छाइयों के साथ साथ हमारी कमजोरियों को भी काफी देख लिया. उन्होंने अपने बिचारों को छुपाया भी नहीं. सच्चे प्रेम का यही तकाया था. हमारे इंजीनियरों को जहां कंकरीट से काम चल सकता

की طرف سے نہیں ہے، یہ سواگت بھارت کی جنتا کی طرف سے ہے۔ اُسے دیکھ کر یہ پکا وشواس جم جاتا ہے کہ بھارت اور روس کی دوستی اب کسی کے تیزے ٹوٹ نہیں سکتی!“

اس میں سدیدہ نہیں شری نیکولائی بولگانین، شری نیکیتا خروشچےف اور ان کے ساتھیوں کے سواگت نے یہ ثابت کر دیا کہ بھارت کی جنتا روس اور روسیوں کے ساتھ نہ کھول سچی اور گہری دوستی ہی رکھتی ہے بلکہ سریم اپنے آگے کے راستے کے لئے بھی تھوڑی یا بہت، روس کی طرف نگاہ لگائے ہوئے ہے۔

’ہندی چینی بھائی بھائی‘ کی آواز سارے بھارت اور سارے چین میں گونج چکی ہے۔ ہمارے روسی مہمانوں کی اس یاत्रا کے سلسلے ’ہندی روسی بھائی بھائی‘ کی نئی آواز اُنہی اور یہ آواز بھی ترنت بجلی کی طرح بھارت اور روس دونوں میں گونج گئی۔

اس سواگت میں نیچے لکھی پانچ باتیں سب سے ادھک چمک اُنہیں :—

(1) یہ ٹھیک ہے کہ بھارت کی جنتا اپنی سرکار کی ودیشی نیی سے سہمت اور خوش ہے۔ پر یہ سواگت جن لوگوں نے اور جس طرح کیا وہ کھول سرکار کی ودیشی نیی سے سہمت ہونے کا ہی نتیجہ نہیں تھا۔ سرکار اور سرکاروں کو ایک رک کر وہ جنتا کے ہر دئے کی اسنگ تھی۔ بیٹی کے اندر اُن لوگوں نے بھی جو—ٹھیک یا بے ٹھیک—کسی بات پر سرکار سے کافی استغش تھے، اُس استغش کو اور اور سب بانوں کو تھوڑی دیر کے لئے ایک رک کر، اپنے مہمانوں کا دل کھل کر سواگت کیا۔ کلکتہ کی جنتا بھی سب کی سب اپنے یہاں کی سرکار سے پوری طرح سلتشمت نہیں ہے۔ اُس استغش کے پردرشن انیک بار کلکتہ میں ہو چکے ہیں اور سرکار کی طرف سے بھی اُن کا کوئی کے ساتھ جواب دیا جا چکا ہے۔ ظاہر ہے کلکتہ کی جنتا کا یہ اپورو انساہ سرکار طرف جنتا کے بھاؤں سے کوئی سمدیدہ نہیں رکھتا۔ یہ نتیجہ تھا روس کے ساتھ جنتا کے پریم کا۔ سرکاری لوگ کہیں کچھ بھی سمجھ بیٹھوں، اُس میں سمدیدہ نہیں جنتا سرکار کو چلتی ہے، سرکاریں جنتا کو نہیں چلاتیں۔ جنتا کا بل ہی سرکار اور سرکاروں کا ایک ماتر بل ہوتا ہے۔

(2) اِس میں بھی سمدیدہ نہیں کہ ہمارے روسی مہمان بھارت کے سچے دوست ہوتے ہوئے بھی کافی سمجھدار اور جاگروک ہیں۔ شاید ہم سے سچے پریم کے کارن ہی وہ اِنہ ادھک جاگروک ہیں۔ اُنہوں نے ہماری اچائیوں کے ساتھ ساتھ ہماری کمزوریوں کو بھی کافی دیکھ لیا۔ اُنہوں نے اپنے وچاروں کو چھپایا بھی نہیں۔ سچے پریم کا یہی تقاضا تھا۔ ہمارے انجینیریں کو جہاں کنگریٹ سے کام چل سکتا

یا وہاں کنگریٹ کی جگہ کولاد (سٹیل) استعمال کرتے دیکھ کر وہ کہہ ہی بیٹھے کہ بھارت جیسے غریب دیہی کے لئے یہ طریقہ غلط ہے۔ ہمارے انجینئروں کے سمجھانے بچھانے پر انہوں نے یہ بھی صاف کہا کہ کچھ دنوں پہلے روس کے انجینئرز بھی اپنی سرکار کو اور وہاں کی جنتا کو اسی طرح سمجھا بچھا دیا کرتے تھے۔ پر اب وہاں یہ چیز نہیں چلتی۔ بھارت سرکار کے اس اعلان کا स्वागत کرتے ہوئے بھی کہ بھارت آگے کو سماج وادی و دوستی کی طرف جائیگا، انہوں نے یہ صاف کہہ دیا کہ ہم سماج واد سے جو کچھ سمجھتے ہیں اور وہ سماج واد کا جو کچھ مطلب لیتے ہیں دونوں میں فرق ہے۔ انہوں نے بھارت کو ابھی ان دیہوں میں ہی گنا ہے جن کے ساتھ وہ 'کو-ایگزسٹ' کرنا چاہتے ہیں، یعنی کئی فرق کے ہوتے ہوئے بھی 'ساتھ ساتھ جینا' اور 'ساتھ ساتھ رہنا' چاہتے ہیں۔ ہماری سرکار بھی अधिकतर یہی کہتی رہتی ہے اور اسی پر زور دیتی رہتی ہے۔ پلچ شمل کے اصول پر ایمانداری سے عمل کرتے ہوئے ہمارے روسی دوست ہمارے اندر کے معاملوں میں ہماری اچھا کے درودہ کسی طرح کا دخل دینا نہیں چاہتے۔ پر روسی مہمانوں کی اس باترا کے سببے جنتا کے آئسہ اور اس کے رخ نے ثابت کر دیا کہ جنتا کچھ اور آگے بڑھنا چاہتی ہے اور ہمارے روسی مہمانوں نے بھی یہ دکھا دیا کہ جنتا ہم بڑھنا چاہیں اتنا وہ بھی بڑھنے کو تیار ہیں۔ ہمیں اس میں کوئی سندیہ نہیں کہ اس بڑھنے کے لئے بھی ابھی کافی گنجائش ہے۔

(3) جس دن دلی میں روسی مہمانوں کا آگمن ہوا اس دن ہمارے مہار 'بھارت کے پرانے انقلابی' راجا مہیندر پرتاپ بھی کچھ گھنٹوں کے لئے دلی میں تھے۔ وہ ہمیں ایک چھوٹی سی گھٹنا سناتے تھے کہ ٹھیک جس سے स्वागत کا جلوس نکلم والا تھا دلی کے ایک پل کے نیچے ایک بیمار بھمٹکا ہاتھ پسرے پاس سے نکلم والی موٹروں میں بیٹھے ہوئے لوگوں سے کچھ بھیک لینے کی کوشش کر رہا تھا۔ دلی ایک شاندار شہر ہے، بھارت کی راجدھانی ہے۔ پر لجا اور دلی کے ساتھ یہ ماننا پڑتا ہے کہ دلی میں بھمٹکوں کی تعداد سیکڑوں نہیں ہزاروں ہے۔ स्वागत میں جنتا کا جوش ہمیں بھی بہت اچھا لگا پر سرکار نے स्वागत کی تیاری میں اور مہمانوازی میں جس طرح سے خرچ کیا آئے دیکھ کر اور سن کر ہمیں ایسا لگا کہ ایسے موقعوں پر ہمارے شامک اور نیتا یہ بھول جاتے ہیں کہ جو دھن وہ خرچ کر رہے ہیں وہ ان کا پیدا کیا ہوا ہے نہ کسی یونجی بلی یا سرکاری انس کا پیدا کیا ہوا ہے، وہ ان غریب کسانوں اور مزدوروں کا پیدا کیا ہوا ہے جنہوں نے خون پسینہ ایک کر کے اسے پیدا کیا ہے، اور جن سے اب بھی خرچ کے معاملے میں کوئی

راہ نہیں لی جاتی اور نہ اس ویسٹا میں لی جاسکتی ہے۔ ہم اس معاملہ کو اس سے بڑھانا نہیں چاہتے۔ پر ہمیں وشواس ہے کہ سواگت کا بہت سا خرچ گھٹایا جاسکتا تھا اور اس سے سواگت کی شان بڑھتی ہی گھٹتی نہیں۔

دلی سچ سچ اب سواگتوں، دعوتوں، للچوں، فٹروں اور رسیپشنوں کا شہر بنتا جا رہا ہے۔ باتیں یہ سب اچھی ہیں اور ایک حد تک ضروری بھی ہیں۔ پر یہ راہ بڑی پستلی راہ ہے۔ اس پر سنبھل سکتا ہی خاصکر اُن کے لئے بہت مشکل ہے جن کے پاؤں میں خود کبھی ہوائی نہ پھٹی ہو۔

(4) اُس پہلے بھری باتوں میں ایک خاص بات یہ بھی چمکی کہ ہمارے روسی مہمان کافی ملو پیسے ہیں۔ خاصکر روسی کمیونسٹ پارٹی کے جنرل سیکریٹری شوی نکیتا خروشچےو تو اس معاملے میں رقم ہی نکلتے۔ اُن کی باتوں میں ایک سادگی، صفائی، سچائی اور نازکی تھی جو طبیعت کو کھلکا دیتی تھی۔ کہیں کہیں تو ہمیں تو رہے کہ وہ انٹراشنل راجکاری ششٹاچار کے ٹیموں کا بھی اُلٹھن کر گئے۔ کم سے کم اس میں کوئی شک نہیں انہوں نے کئی باتیں ایسی کہیں جہاں دیش کے کچھ سرکاری درباری یہ ضرور چاہتے تھے کہ وہ نہ کہتے تو لچا تھا۔ ظاہر ہے نوجاگرت روس پرانے ٹیموں اور فارمولوں میں اتنا ادھک بندھکر نہیں رہنا چاہتا۔ ہیں بھی تو وہ کل کے مزدور، درباری ششٹاچار کا انہوں نے اتنا تجربہ بھی کہاں ہے! نمونے کے طور پر ہم شوی نکیتا خروشچےو کی بمبئی کی ایک تقریر ”نیا ہند“ میں دے رہے ہیں۔

(5) آخری چیز جس کی طرف ہمارا دھیان اس باتوں کے کارن اور ادھک زور کے ساتھ جانے لگتا ہے ہمارا اپنا بیوشیہ کا مارگ ہے۔ ہمیں یہ بہت غلط اور ہائیپر خطا ہو گیا ہے کہ دیش کو اوپر اُٹھانے کے لئے ہمیں باہر سے پیسے کی مدد کی ضرورت ہے۔ قدرتی طور پر اس خطا میں پوکھ ہم بار بار باہر کے سامراج وادی دیشوں کی طرف دیکھتے لگتے ہیں۔ بات بالکل غلط ہے۔ جہاں تک دھن کا سوال ہے ہمیں ایک پیسے کی بھی باہر سے ضرورت نہیں ہے۔ سات سال پہلے چین بھی ہم سے کم غریب دیش نہیں تھا۔ اُس نے اپنے سدھار اور ترقی کے لئے کسی سے ایک پیسے ادھار یا دان نہیں لیا۔ روس کے ساتھ اس سببندہ میں چین کا جو کچھ سمجھوتا ہوا ہے وہ بھی کھول واپاری تھنگ کا لین دین ہے۔ جتنی دیر کے لئے روس کا مال چین میں اتکتا ہے یعنی چین اُس کے بدلے کا مال روس نہیں بھیج پاتا اتنی دیر کے لئے چین ایک فیصدی سالانہ سود دیتا ہے جو مال ہی کی شکل میں ادا کیا جاتا ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ گاندھی جی کے وچار بھی اس بارے میں ٹھیک بھی تھے اور بڑے پکے تھے۔ غلطی ہماری نگاہوں،

دلی سچ سچ اب سواگتوں، دعوتوں، للچوں، فٹروں اور رسیپشنوں کا شہر بنتا جا رہا ہے۔ باتیں یہ سب اچھی ہیں اور ایک حد تک ضروری بھی ہیں۔ پر یہ راہ بڑی پستلی راہ ہے۔ اس پر سنبھل سکتا ہی خاصکر اُن کے لئے بہت مشکل ہے جن کے پاؤں میں خود کبھی ہوائی نہ پھٹی ہو۔

(4) اُس پہلے بھری باتوں میں ایک خاص بات یہ بھی چمکی کہ ہمارے روسی مہمان کافی ملو پیسے ہیں۔ خاصکر روسی کمیونسٹ پارٹی کے جنرل سیکریٹری شوی نکیتا خروشچےو تو اس معاملے میں رقم ہی نکلتے۔ اُن کی باتوں میں ایک سادگی، صفائی، سچائی اور نازکی تھی جو طبیعت کو کھلکا دیتی تھی۔ کہیں کہیں تو ہمیں تو رہے کہ وہ انٹراشنل راجکاری ششٹاچار کے ٹیموں کا بھی اُلٹھن کر گئے۔ کم سے کم اس میں کوئی شک نہیں انہوں نے کئی باتیں ایسی کہیں جہاں دیش کے کچھ سرکاری درباری یہ ضرور چاہتے تھے کہ وہ نہ کہتے تو لچا تھا۔ ظاہر ہے نوجاگرت روس پرانے ٹیموں اور فارمولوں میں اتنا ادھک بندھکر نہیں رہنا چاہتا۔ ہیں بھی تو وہ کل کے مزدور، درباری ششٹاچار کا انہوں نے اتنا تجربہ بھی کہاں ہے! نمونے کے طور پر ہم شوی نکیتا خروشچےو کی بمبئی کی ایک تقریر ”نیا ہند“ میں دے رہے ہیں۔

(5) آخری چیز جس کی طرف ہمارا دھیان اس باتوں کے کارن اور ادھک زور کے ساتھ جانے لگتا ہے ہمارا اپنا بیوشیہ کا مارگ ہے۔ ہمیں یہ بہت غلط اور ہائیپر خطا ہو گیا ہے کہ دیش کو اوپر اُٹھانے کے لئے ہمیں باہر سے پیسے کی مدد کی ضرورت ہے۔ قدرتی طور پر اس خطا میں پوکھ ہم بار بار باہر کے سامراج وادی دیشوں کی طرف دیکھتے لگتے ہیں۔ بات بالکل غلط ہے۔ جہاں تک دھن کا سوال ہے ہمیں ایک پیسے کی بھی باہر سے ضرورت نہیں ہے۔ سات سال پہلے چین بھی ہم سے کم غریب دیش نہیں تھا۔ اُس نے اپنے سدھار اور ترقی کے لئے کسی سے ایک پیسے ادھار یا دان نہیں لیا۔ روس کے ساتھ اس سببندہ میں چین کا جو کچھ سمجھوتا ہوا ہے وہ بھی کھول واپاری تھنگ کا لین دین ہے۔ جتنی دیر کے لئے روس کا مال چین میں اتکتا ہے یعنی چین اُس کے بدلے کا مال روس نہیں بھیج پاتا اتنی دیر کے لئے چین ایک فیصدی سالانہ سود دیتا ہے جو مال ہی کی شکل میں ادا کیا جاتا ہے۔ ہمیں معلوم ہے کہ گاندھی جی کے وچار بھی اس بارے میں ٹھیک بھی تھے اور بڑے پکے تھے۔ غلطی ہماری نگاہوں،

ہماری سمجھ، ہمارے तरीکوں اور ہماری योजनाؤں میں ہے۔ اسکے لیے اگر ہم گاندھی جی کے उपदेशों और उनके बिचारों को फिर से कुछ प्रेम और श्रद्धा के साथ पढ़ें، और रूस और चीन जैसे देशों की व्यवस्थाओं और उनके कामों को भी ध्यान से देखें और समझें तो हम बहुत सी मुसीबतों से बच सकते हैं। यदि हमारे रूसी मेहमानों की भारत यात्रा से यह नतीजा भी निकल सके कि हमारा लेन देन, सलाह, मशविरा रूस और चीन जैसे देशों के साथ बढ़े और हमारी निगाहें इस तरह के मामलों में पूँजीपति देशों की तरफ से कुछ हटें, तो इस में हमारा भी भला है, दूसरों का भी भला है और खुद आज के पूँजीपती देशों का भी भला है।

3-12-'55

—सुन्दरलाल

राजकुमारी अमृतकौर के चीन के अनुभव

भारत की हेल्थ मिनिस्टर राजकुमारी अमृतकौर हाल में चीन गई हुई थीं। वहाँ से लौटकर 31 अक्टूबर को दिल्ली में उन्होंने एक प्रेस कानफरेन्स में चीन के अपने अनुभव बयान किये। राजकुमारी अमृतकौर खुद डाक्टर नहीं हैं। लेकिन वह सारे देश के स्वास्थ्य विभाग की वजीर हैं। इसलिये डाक्टरी के काम से उनका गहरा सम्बन्ध है। अधिकतर उसी के सम्बन्ध में वह चीन गई थीं। फिर भी वहाँ के दूसरे आम हालात पर उन्होंने जो बातें कही हैं उनमें से कुछ हम निचे देते हैं।

राजकुमारी ने कहा कि—“जनता की तन्दुरुस्ती के उसूलों के बारे में, देश के अन्दर इस तरह की समाजी हवा पैदा कर देने के बारे में जिमें चोरी और शराब पीकर बدهवासी की घटनाएँ हों, उस देश से लगभग गुम हो गई हैं, और इसी तरह की और बातों में भारत को चीन से बहुत कुछ सीखना है।”

वहाँ की तालीम के बारे में उन्होंने कहा कि—“चीन के अन्दर हर तरह की तालीम मुफ्त दी जाती है। विद्यार्थियों को रहने की जगह भी मुफ्त दी जाती है उन से केवल खाने का खर्च लिया जाता है जो एक विद्यार्थी पर बाईस रुपये माहवार से छब्बीस रुपये माहवार तक पड़ता है। मेडिकल स्कूलों और कालिजों में सरकार औसतन हर विद्यार्थी पर दो हजार रुपया सालाना खर्च करती है।”

“डाक्टरी की तालीम पाने वाले विद्यार्थियों को केवल अपने खाने और कितानों का खर्च देना होता है।”

हमारी समझ, हमारे तरीकوں اور ہماری योजनाؤں میں ہے، اسکے لیے اگر ہم گاندھی جی کے उपदेशों اور उनके बिचारों को फिर से कुछ प्रेम और श्रद्धा के साथ पढ़ें, और रूस और चीन जैसे देशों की व्यवस्थाओं और उनके कामों को भी ध्यान से देखें और समझें तो हम बहुत सी मुसीबतों से बच सकते हैं। यदि हमारे रूसी मेहमानों की भारत यात्रा से यह नतीजा भी निकल सके कि हमारा लेन देन, सलाह, मशविरा रूस और चीन जैसे देशों के साथ बढ़े और हमारी निगाहें इस तरह के मामलों में पूँजीपति देशों की तरफ से कुछ हटें, तो इस में हमारा भी भला है, दूसरों का भी भला है और खुद आज के पूँजीपती देशों का भी भला है।

—सुन्दरलाल

3. 12. '55

राजकुमारी अमृतकौर के चीन के अनुभव

भारत की हेल्थ मिनिस्टर राजकुमारी अमृतकौर हाल में चीन गयी हुयी थीं। वहाँ से लौटकर 31 अक्टूबर को दली में अँहों ने ایک پریس کانفرنس میں چین کے اپنے اَنُभव بیان کئے۔ راجکُمارِی اَمَرت کُور خود ڈاکٹر نہیں ہیں۔ لیکن وہ سارے دیش کے سوسائٹی و ہیاک کی وزیر ہیں۔ اِس لئے ڈاکٹری کے کام سے اُن کا گہرا سمبندھ ہے۔ ادھتر اُسی کے سمبندھ میں وہ چین گئی تھیں۔ پھر بھی وہاں کے دوسرے عام حالات پر اُنہوں نے جو باتیں کہی ہیں اُن میں سے کچھ ہم نیچے دیتے ہیں۔

راجکُمارِی نے کہا کہ—“چین کی نندرسٹی کے اصولوں کے بارے میں، دیش کے اندر اِس طرح کی سماجی هوا پیدا کردونہ کے بارے میں جس میں چوری اور شراب پی کر بدحواسی کی گہنائیں ہوں اُس دیش سے اگ پیگ کم ہوگئی ہیں، اور اِسی طرح کی اور باتوں میں بھارت کو چین سے بہت کچھ سیکھنا ہے۔”

وہاں کی تعلیم کے بارے میں اُنہوں نے کہا کہ :—“چین کے اندر ہر طرح کی تعلیم مفت دی جاتی ہے۔ ودیارتھوں کو رہنے کی جگہ بھی مفت دی جاتی ہے، اُن سے کہول کھانے کا خرچ لیا جاتا ہے جو ایک ودیارتھی پر بائیس روپئے ماہوار سے چوبیس روپئے ماہوار تک پڑتا ہے۔ میڈیکل اسکولوں اور کالجوں میں سرکار اوسطاً ہر ودیارتھی پر دو ہزار روپئے سالانہ خرچ کرتی ہے۔”

“ڈاکٹری کی تعلیم پانے والے ودیارتھوں کو کہول اپنے کھانے اور کتابوں کا خرچ دینا ہوتا ہے۔”

انہوں نے بتایا کہ:—”گوں میں سواستھہ کھلدوں پر اور ماؤں اور بچوں کی تندرستی پر سب سے زیادہ زور دیا جاتا ہے۔ شروع سے لیکر بچوں کی خبرگیری اور اُن کی تندرستی کا خیال چین میں سب سے ضروری کام سمجھا جاتا ہے۔“

پکنگ میں پہلی اکتوبر کو چینی راشنریہ دیوس کے جلسوں میں چھ لاکھ لوگوں نے भाग लिया۔ राजकुमारी ने उन लोगों की शिस्त की बड़ी तारीफ की۔ उनहों ने यह भी कहा कि चीन में सब के रहने के लिये नए मकान जिस तेजी से बनते जा रहे हैं उसे देखकर वह चकित रह गई۔ अच्छी और चौड़ी सड़कों पर वहाँ बहुत जोर दिया जाता है۔ वह यह देखकर खुश हो गई कि खुली जगहों में जंगल लगाने और चारों तरफ दरخت लगाने का चीनियों को कितना जबरदस्त शौक है۔ कोई आदमी बिना इजाजत के कोई दरخت नहीं काट सकता۔ ”खास खास बड़ी बड़ी सड़कों और रास्तों पर चलते हुए बिलकुल यह मालूम होता है कि आदमी दरख्तों के ऊँच में से चला जा रहा है۔ जहाँ पुराने धटिया मकानों को गिराया और साफ किया गया है वहाँ अक्सर बच्चों के लिये बारीचे और खेलने के मैदान बना दिये गए हैं۔“

राजकुमारी का कहना है कि:—”भारत के साथ दोस्ती की इच्छा और शान्ति की इच्छा चीन वालों में सच्ची और साफ चमकती है۔ चीन के लोगों में एकता और जोश उनकी उन्नति के खास कारण हैं۔“

انہوں نے یہ بھی بتایا کہ:—”چین میں ’کیمیلی پلیننگ‘ یعنی بچوں کی پیدائش کو روکنے کا پروگرام نہیں چلتا اور چینی سرکار کو آبادی کے بڑھ جانے کی کوئی چنکا نہیں ہے۔“ اور اُس دیش میں اِس بات پر زور دیا جاتا ہے کہ کوئی ایک سے ادھک شادی نہ کرے۔ داشتہ یا دکھت رکھنے کا پرانا رواج بالکل بند کر دیا گیا ہے۔ کوئی لڑکی اثبارہ برس کی عمر سے پہلے اور کوئی لڑکا ایکس سال کی عمر سے پہلے شادی نہیں کر سکتا۔ عورتوں کی ایک بڑی سلسلتا ہے جس کا نام ’ویمینس ڈیموکریٹک فیڈریشن‘ ہے۔ یہ سلسلتا بہت ہی شکتی شالی اور با اثر سلسلتا ہے۔ وہ دیکھتی رہتی ہے کہ شادی وغیرہ کے بارے میں کوئی اِس طرح کا نیم نہ توڑنے پاوے۔

”چینی لڑکیاں اور چینی استریاں بہت آزاد ہیں اور ساتھ ہی اُن کا سداچار کا ادب (معار) اپنی آبرو اور اُن کا معیار بھی بہت ہی اونچا ہے۔ پرشوں اور استریوں کو برابر کا درجہ دیا جاتا ہے۔ تعلیم دونوں کو ساتھ ساتھ دی جاتی ہے۔ چوری کا چین میں کہیں نام نہیں ہے۔ ہوٹلوں کے کمروں کو کبھی نالہ

انہوں نے یہ بھی بتایا کہ:—”چین میں ’پلیننگ‘ یعنی بچوں کی پیدائش کو روکنے کا پروگرام نہیں چلتا اور چینی سرکار کو آبادی کے بڑھ جانے کی کوئی چنکا نہیں ہے۔“ اور اُس دیش میں اِس بات پر زور دیا جاتا ہے کہ کوئی ایک سے ادھک شادی نہ کرے۔ داشتہ یا دکھت رکھنے کا پرانا رواج بالکل بند کر دیا گیا ہے۔ کوئی لڑکی اثبارہ برس کی عمر سے پہلے اور کوئی لڑکا ایکس سال کی عمر سے پہلے شادی نہیں کر سکتا۔ عورتوں کی ایک بڑی سلسلتا ہے جس کا نام ’ویمینس ڈیموکریٹک فیڈریشن‘ ہے۔ یہ سلسلتا بہت ہی شکتی شالی اور با اثر سلسلتا ہے۔ وہ دیکھتی رہتی ہے کہ شادی وغیرہ کے بارے میں کوئی اِس طرح کا نیم نہ توڑنے پاوے۔

”چینی لڑکیاں اور چینی استریاں بہت آزاد ہیں اور ساتھ ہی اُن کا سداچار کا ادب (معار) اپنی آبرو اور اُن کا معیار بھی بہت ہی اونچا ہے۔ پرشوں اور استریوں کو برابر کا درجہ دیا جاتا ہے۔ تعلیم دونوں کو ساتھ ساتھ دی جاتی ہے۔ چوری کا چین میں کہیں نام نہیں ہے۔ ہوٹلوں کے کمروں کو کبھی نالہ

انہوں نے یہ بھی بتایا کہ:—”چین میں ’پلیننگ‘ یعنی بچوں کی پیدائش کو روکنے کا پروگرام نہیں چلتا اور چینی سرکار کو آبادی کے بڑھ جانے کی کوئی چنکا نہیں ہے۔“ اور اُس دیش میں اِس بات پر زور دیا جاتا ہے کہ کوئی ایک سے ادھک شادی نہ کرے۔ داشتہ یا دکھت رکھنے کا پرانا رواج بالکل بند کر دیا گیا ہے۔ کوئی لڑکی اثبارہ برس کی عمر سے پہلے اور کوئی لڑکا ایکس سال کی عمر سے پہلے شادی نہیں کر سکتا۔ عورتوں کی ایک بڑی سلسلتا ہے جس کا نام ’ویمینس ڈیموکریٹک فیڈریشن‘ ہے۔ یہ سلسلتا بہت ہی شکتی شالی اور با اثر سلسلتا ہے۔ وہ دیکھتی رہتی ہے کہ شادی وغیرہ کے بارے میں کوئی اِس طرح کا نیم نہ توڑنے پاوے۔

”چینی لڑکیاں اور چینی استریاں بہت آزاد ہیں اور ساتھ ہی اُن کا سداچار کا ادب (معار) اپنی آبرو اور اُن کا معیار بھی بہت ہی اونچا ہے۔ پرشوں اور استریوں کو برابر کا درجہ دیا جاتا ہے۔ تعلیم دونوں کو ساتھ ساتھ دی جاتی ہے۔ چوری کا چین میں کہیں نام نہیں ہے۔ ہوٹلوں کے کمروں کو کبھی نالہ

انہوں نے یہ بھی بتایا کہ:—”چین میں ’پلیننگ‘ یعنی بچوں کی پیدائش کو روکنے کا پروگرام نہیں چلتا اور چینی سرکار کو آبادی کے بڑھ جانے کی کوئی چنکا نہیں ہے۔“ اور اُس دیش میں اِس بات پر زور دیا جاتا ہے کہ کوئی ایک سے ادھک شادی نہ کرے۔ داشتہ یا دکھت رکھنے کا پرانا رواج بالکل بند کر دیا گیا ہے۔ کوئی لڑکی اثبارہ برس کی عمر سے پہلے اور کوئی لڑکا ایکس سال کی عمر سے پہلے شادی نہیں کر سکتا۔ عورتوں کی ایک بڑی سلسلتا ہے جس کا نام ’ویمینس ڈیموکریٹک فیڈریشن‘ ہے۔ یہ سلسلتا بہت ہی شکتی شالی اور با اثر سلسلتا ہے۔ وہ دیکھتی رہتی ہے کہ شادی وغیرہ کے بارے میں کوئی اِس طرح کا نیم نہ توڑنے پاوے۔

نہیں لگائے جاتے۔ ہونٹوں وغیرہ میں کہیں کوئی کسی کو انعام یا بخشش نہیں لیتا دیتا۔ شراب ہی کر بدحواس رہا توئی دکھائی نہیں دے سکتا۔ اگر کوئی اس طرح شراب پیئے پایا جاتا ہے تو سماج میں اُس کا بائیکاٹ ہو جاتا ہے۔“

یہاں تک تو ہم نے چین کے بارے میں راجکماری کے عام
نور پر بیان کیا ہے۔ پھر ان کے علاوہ راجکماری امرت کور نے چین
میں نئی قافلی، وہاں کی پرانی ویدک دنیا آدمی کے بارے
میں کئی ایسی باتیں کہی ہیں جن میں سے کچھ کو پتہ کر
میں اچرچ اور دکھ بھی ہوا۔ راجکماری دیہی کی ہلیمہ منسٹر
میں انگریزی علاج، دیسی علاج وغیرہ کے بارے میں راجکماری کے
بچار بھی سب کو معلوم ہوں۔ اس سلسلہ میں چین کی
بابت جو کچھ انہوں نے کہا ہے اس سے اس سچائی کا ثبوت
ملتا ہے کہ جن باتوں میں ہمارے وچار زوروں سے جڑے ہوئے
ہوتے ہیں ان میں ہم اثر وہی دیکھتے ہیں جو ہم دیکھنا چاہتے
ہیں اور وہی سنتے بھی ہیں جو ہم سننا چاہتے ہیں۔ شاید ہم
میں سے کوئی بھی نیکی آنکھوں سے دنیا کو نہیں دیکھ سکتا۔
ہمارے اپنے پہلے سے بلکہ وچاروں، وشواسوں، مانتاؤں اور باتوں
کا چشمہ ہماری آنکھوں پر برابر لگا ہی رہتا ہے، اور اسی چشمے
کے اندر سے ہم دنیا کو دیکھتے ہیں۔ فرق کھول اتنا ہوتا ہے کہ
کسی کے چشمے کا رنگ گہرا ہوتا ہے اور کسی کا ہلکا۔ پھر یہی
راجکماری نے کچھ باتیں ایسی کہی ہیں جن سے کافی غلط فہمی
پیدا ہوتی ہے۔

راجکاری نے کہا ہے کہ بھارت میں ڈانگری تعلیم کا اسٹر
چین کے اسٹر سے اُونچا ہے۔ اور یہاں ڈانگر بھی چین کے
ڈانگروں سے گنتی میں ادھک اور ادھک یوگہ ہیں۔ انہوں
نے بتایا ہے کہ چین کی آبادی ساٹھ کروڑ ہے اور آجکل کی پچھلی
ڈانگری میں یوگتا رکھنے والے ڈانگر وہاں کھل تیس ہزار اور
چالیس ہزار کے بیچ میں ہیں۔ بھارت کی آبادی چھن سے
بہت کم ہے پر یہاں یوگہ ڈانگروں کی تعداد اُن کے اُنھسار
اُس سے لگ بھگ دوگنی ہے۔ اُس سے راجکاری نے شاید یہ
بتانا چاہا ہے کہ جتنا کے سواستہ کی دیکھ ریکھ جتنی بھارت
میں کی جاتی ہے اتنی چھن میں نہیں کی جاتی۔

اس بات کا راجکاری کی نگاہ میں ادھک مہو نہیں ہے کہ نئی چھٹی سرکار پچھمی تآذری کے ان ماہروں کے علاوہ پرانی چھٹی ریدک ودیا کے جانکار اور تجربہ کار حکیموں یا ویدوں سے اپہ اٹھانے کی پوری کوشش کرتی ہے۔ ان کی مدد سے جکہ جکہ گلوں کے اندر سواسمہ کیندر بنے ہوئے ہیں، جہاں کیول روگیوں کا عطب ہی نہیں کیا جانا، اس بات کی بھی کوشش کی جاتی ہے کہ

لوگ "بیمار نہ ہوں۔" یہ پرانے ڈنگ کے چینی حکیم اور وید ادھکتر علاج تو اپنے پرانے سستے طریقوں اور جڑی بوٹیوں سے ہی کرتے ہیں، پر راجکمار ہی کے انوسار سرکار ان سب کو لائبرسٹی اور صفائی کے نئے سے نئے اصول، زخموں کی مرہم پٹی کے نئے سے نئے طریقے اور کچھ سیدھی سستی نئی دواؤں کا استعمال ہی سکھا دیتی ہے۔ راجکمار ہی کے انوسار سرکار کے دواؤں اپناٹہ ہوئے اس طرح کے حکیموں کی تعداد چین میں لگ بھگ تین لاکھ ہے۔

اس کے ساتھ ساتھ بڑے بڑے ڈاکٹروں کے علاوہ چینی سرکار کچھ کم پڑے لکھے لیکن سستے ڈاکٹر بھی تین تین سال کی تعلیم سے کر تیار کر رہی ہے۔ راجکمار ہی کے انوسار اس طرح کے تین سال کے کورس میں پڑھنے والوں کی تعداد اس سے آٹھاون ہزار ہے۔ وہاں کے انٹیس بڑے بڑے مڈیکل کالجوں میں اس سے چونتیس ہزار "یوگہ" ڈاکٹر بھی اور تیار ہو رہے ہیں۔

اس کے ساتھ ساتھ بڑے بڑے ڈاکٹروں کے علاوہ چینی سرکار کچھ کم پڑے لکھے لیکن سستے ڈاکٹر بھی تین تین سال کی تعلیم سے کر تیار کر رہی ہے۔ راجکمار ہی کے انوسار اس طرح کے تین سال کے کورس میں پڑھنے والوں کی تعداد اس سے آٹھاون ہزار ہے۔ وہاں کے انٹیس بڑے بڑے مڈیکل کالجوں میں اس سے چونتیس ہزار "یوگہ" ڈاکٹر بھی اور تیار ہو رہے ہیں۔

بات بڑی سیدھی سی ہے۔ راجکمار اور ان جیسے اونچے طبقے ہوئے لوگوں کو یہ نہیں معلوم کہ ان "یوگہ" پچھمی ڈھنگ کے ڈاکٹروں کا علاج، معمولی غریب آدمیوں کی تو بات ہی کیا ہمارے بیچ کے درجے کے دیہی واسیوں کے لئے بھی کتنا مہنگا اور مصیبت کا ہوتا ہے۔ ہمارے ایک متر کو جنہیں آٹھ سو روپیہ مہنگہ دیتے ہیں ملتا ہے پوسٹ کا آپریشن کرائے کی ضرورت پڑی۔ آپریشن کے خرچ کے علاوہ انہیں کئی ہزار کی اوپر سے استعمال کی پمٹھیت دواؤں خریدنی پڑیں، جن میں سے تین چوتھائی سے ادھک کسی بھی کام نہ آئیں اور پھینکی پڑیں۔ اپنے اس علاج میں انہیں اپنی پتنی کا زہر پیچھا پڑا، یہ کیول ایک مثال نہیں ہے۔ لگ بھگ ہر مذہب، کلاس کے گھر سے اسی طرح کی کہانی سنی جاسکتی ہے۔ ہمارے ادھکتر پچھمی ڈھنگ کے ڈاکٹر پیچھارے آجکل کی حالت میں اس غریب دیہی کے اندر کروڑوں روپیہ کے بدیشی پیٹھنت دواؤں کے منگوائے اور رکھنے والے ایجنٹ بنے ہوئے ہیں اور ہمیں وشواس ہے کہ ان میں سے ادھکتر دواؤں نکسی ہی نہیں ہانیکر بھی ہیں۔ یہ 'ہانیکر' شدہم لے سوچ سنبھکر ابلوگ کیا ہے۔ آٹھ دن کے اپنے تجربوں کو چھوڑ کر کچھ دن ہوئے ہم نے یورپ کے ایک بہت بڑے ڈاکٹر کی، جو چالیس سال تک دنیا کے ایک بہت بڑے اسپتال کے چارج میں رہ چکے تھے، پچھمی دواؤں کی بات یہ رائے پڑھی تھی:—

"If the contents of all the apothecaries' shops could be emptied into the sea, the consequences to the fish may be dangerous, but mankind will be happier and healthier."

"If the contents of all the apothecaries' shops could be emptied into the sea, the consequences to the fish may be dangerous, but mankind will be happier and healthier."

آج—”یہ ڈاکٹری کی سب دکانوں کی ساری شیشیاں سمندر میں اُت کر خالی کر لی جائیں تو نکتہ جانا مصلحتیوں کے لیے خیرینا ہو سکتا ہے لیکن مانو سماج ادھک سہی اور ادھک سوسٹو رہیگا۔“

ہمیں دھیان رکھنا چاہئے کہ اوپر کے واقعہ میں ایلوپیتھک دواؤں کی بات کہی گئی ہے۔ پرانی ویدک یا یونانی جڑی بوٹیوں یا نندی نندی ہومیوپیتھک گولیاؤں کی نہیں۔

ہم نے سنا تھا کہ آجکل جو بہت سے ہمارے ڈیپلکیشن چین اور روس جا رہے ہیں ان میں سے ایک ڈیپلکیشن کے ایک ہلکسٹائی ممبر نے روس کے سوسٹو وزیر سے پوچھا تھا کہ کیا آپ امریکی دوائیں اپنے دیس میں نہیں امپورٹ کرتے سنا ہے روسی نے جواب دیا کہ ہم نہ ان کی دوائیں امپورٹ کرتے ہیں اور نہ ان کی ہماریاں۔ اس جواب میں ادھامتی ضرور تھا پر اس کا ادھا سچ بہت گہرا ہے۔

ہمیں وشواس ہے کہ مہاتما گاندھی اس دیس کے پچھلی تھلک کے ڈاکٹروں کو جب دیس کے دو سب سے خطرناک اور ہائیکر گروہ میں گنا کرتے تھے تو ان کی بات میں بہت بڑی سچائی تھی۔ ہم آجکل پوری نیک نیکی کے ساتھ پر انی ہی پوری نامسچی کے ساتھ اس معاملہ میں اسی خطرے کی طرف قہقہے چلے جا رہے ہیں جس سے گاندھی جی ہمیں بچانا چاہتے تھے۔

چینی شامک اس بارے میں ہم سے کہیں ادھک سچیدار ہیں۔ جہاں تک عام جنتا کا سوال ہے چین آج اتنا غریب دیس نہیں ہے جتنا بھارت۔ پھر بھی وہ ہر سال کروڑوں روپیہ ہمیشی دواؤں پر نہیں کھوتے اور—یہ ایک مانی ہونی چہیز ہے کہ—اپنی جنتا اور اپنے بچوں کو ہم سے کہیں ادھک تندرست، موٹا تازہ اور خوش رکھ رہے ہیں۔

اپنے دیس کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف چینی سرکار کا جو رخ ہے اس کی بابت راجکماری کے بیان سے کافی غلط فہمی پیدا ہو سکتی ہے۔ راجکماری نے کہا کہ چینی سرکار پرانے علاج کے طریقے کو ختم کر دینا اور اس کی جگہ پچھم کی نئی سائنسی ڈاکٹری کو ہی چلانا چاہتی ہے۔ اس پر کسی سماچارپر کے پرتی ندھی نے پوچھا ہی لیا کہ—”چین کی مثال کے خلاف“ کیا بھارت سرکار آجکل ایورید اور دوسرے دیسی علاج کے طریقوں کو الگ طریقوں کی حیثیت سے بڑھاوا نہیں دے رہی ہے؟“ راجکماری نے مانا کہ سرکار بڑھاوا دے رہی ہے پر اسے غلطی سونہار کرتے ہوئے راجکماری نے اس پر دھ پرکٹ کیا! کسی نے انہیں بتایا کہ حال میں یونین کوننگ مینسٹر شری گولجاری لال نندا نے آئیوے

ہمیں دھیان رکھنا چاہئے کہ اوپر کے واقعہ میں ایلوپیتھک دواؤں کی بات کہی گئی ہے۔ پرانی ویدک یا یونانی جڑی بوٹیوں یا نندی نندی ہومیوپیتھک گولیاؤں کی نہیں۔

ہم نے سنا تھا کہ آجکل جو بہت سے ہمارے ڈیپلکیشن چین اور روس جا رہے ہیں ان میں سے ایک ڈیپلکیشن کے ایک ہلکسٹائی ممبر نے روس کے سوسٹو وزیر سے پوچھا تھا کہ کیا آپ امریکی دوائیں اپنے دیس میں نہیں امپورٹ کرتے سنا ہے روسی نے جواب دیا کہ ہم نہ ان کی دوائیں امپورٹ کرتے ہیں اور نہ ان کی ہماریاں۔ اس جواب میں ادھامتی ضرور تھا پر اس کا ادھا سچ بہت گہرا ہے۔

ہمیں وشواس ہے کہ مہاتما گاندھی اس دیس کے پچھلی تھلک کے ڈاکٹروں کو جب دیس کے دو سب سے خطرناک اور ہائیکر گروہ میں گنا کرتے تھے تو ان کی بات میں بہت بڑی سچائی تھی۔ ہم آجکل پوری نیک نیکی کے ساتھ پر انی ہی پوری نامسچی کے ساتھ اس معاملہ میں اسی خطرے کی طرف قہقہے چلے جا رہے ہیں جس سے گاندھی جی ہمیں بچانا چاہتے تھے۔

چینی شامک اس بارے میں ہم سے کہیں ادھک سچیدار ہیں۔ جہاں تک عام جنتا کا سوال ہے چین آج اتنا غریب دیس نہیں ہے جتنا بھارت۔ پھر بھی وہ ہر سال کروڑوں روپیہ ہمیشی دواؤں پر نہیں کھوتے اور—یہ ایک مانی ہونی چہیز ہے کہ—اپنی جنتا اور اپنے بچوں کو ہم سے کہیں ادھک تندرست، موٹا تازہ اور خوش رکھ رہے ہیں۔

اپنے دیس کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف چینی سرکار کا جو رخ ہے اس کی بابت راجکماری کے بیان سے کافی غلط فہمی پیدا ہو سکتی ہے۔ راجکماری نے کہا کہ چینی سرکار پرانے علاج کے طریقے کو ختم کر دینا اور اس کی جگہ پچھم کی نئی سائنسی ڈاکٹری کو ہی چلانا چاہتی ہے۔ اس پر کسی سماچارپر کے پرتی ندھی نے پوچھا ہی لیا کہ—”چین کی مثال کے خلاف“ کیا بھارت سرکار آجکل ایورید اور دوسرے دیسی علاج کے طریقوں کو الگ طریقوں کی حیثیت سے بڑھاوا نہیں دے رہی ہے؟“ راجکماری نے مانا کہ سرکار بڑھاوا دے رہی ہے پر اسے غلطی سونہار کرتے ہوئے راجکماری نے اس پر دھ پرکٹ کیا! کسی نے انہیں بتایا کہ حال میں یونین کوننگ مینسٹر شری گولجاری لال نندا نے آئیوے

اپنے دیس کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف چینی سرکار کا جو رخ ہے اس کی بابت راجکماری کے بیان سے کافی غلط فہمی پیدا ہو سکتی ہے۔ راجکماری نے کہا کہ چینی سرکار پرانے علاج کے طریقے کو ختم کر دینا اور اس کی جگہ پچھم کی نئی سائنسی ڈاکٹری کو ہی چلانا چاہتی ہے۔ اس پر کسی سماچارپر کے پرتی ندھی نے پوچھا ہی لیا کہ—”چین کی مثال کے خلاف“ کیا بھارت سرکار آجکل ایورید اور دوسرے دیسی علاج کے طریقوں کو الگ طریقوں کی حیثیت سے بڑھاوا نہیں دے رہی ہے؟“ راجکماری نے مانا کہ سرکار بڑھاوا دے رہی ہے پر اسے غلطی سونہار کرتے ہوئے راجکماری نے اس پر دھ پرکٹ کیا! کسی نے انہیں بتایا کہ حال میں یونین کوننگ مینسٹر شری گولجاری لال نندا نے آئیوے

اور ہومیوپیتھی کے پکڑ میں رہے اور کہا ہے کہ علاج کے یہ دونوں طریقے ایلوپیتھک طریقے سے سست ہیں اور کارگر ہیں یعنی لوگ ان سے لچے ہوتے ہیں۔ راجکمار نے اس پر صاف کہا: ”میں شری لنڈا کی رائے سے اتفاق نہیں کرتی۔“ ”آپریڈ“ یونانی اور ہومیوپیتھی جیسے علاجوں کو سرکار جو کچھ بھی بڑھاوا یا مدد دے رہی ہے وہ راجکمار کی رائے میں غلط ہے! راجکمار نے اس بات پر بھی دم پرکھت کیا کہ سولسویں کے معاملے میں الگ الگ پرائٹ یا پردیسی چونکہ آزاد ہیں اس لئے یونین سرکار انہیں اس طرح کی فطالیوں سے نہیں روک سکتی! ظاہر ہے ان کا بس چلے تو وہ سارے بھارت کے لئے فرائض جاری کر دیں کہ سوائے ایلوپیتھی کے ان سب اور ’فصلیات‘ کو بند اور ختم کر دیا جائے۔ انہوں نے اس پر بھی استغرضی پرکھت کیا کہ پرائٹوں کی سرکاری کالی بڑی بڑی ڈانخواہیں دیکر سچ سچ ”یوگیہ“ ڈانٹروں کو ”گلوں گلوں“ میں نیکت نہیں کر رہی ہیں!

راجکمار نے اسی طرح کی اور بھی کچھ باتیں نہیں جن پر ہمیں اس سے کہیں ادھک دم ہوا جتنا راجکمار کو شری گزاری لال لنڈا کے بیان پر یا سرکار یا سرکاروں کے ایلوپیتھی کے علاوہ علاج کے دوسرے طریقوں کو بڑھاوا دینے پر ہے۔ ان سب باتوں پر ہم کیوں اتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ ہم راجکمار بہن سے بالکل اسہمت ہیں۔ چین میں وہاں کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف نئی چینی سرکار کا کیا رخ ہے یہ ایک صاف اور سیدھا سوال ہے۔ پیکنگ سے انگریزی بھاشا میں ایک ماسک پتیکا نکلتی ہے ’China Reconstructs‘ اترہات ’نئے چین‘ کی پھر سے تعمیر! اس میں وہاں کی سرکار بڑے گرو کے ساتھ یہ بتاتی ہے کہ وہ اپنے دیہی کی نئے سرے سے تعمیر کس کس طرح کر رہی ہے، اور کیا کیا کر رہی ہے۔ اس پتیکا کا حال کا انک راجکمار کی بات چیت کے ساتھ ساتھ ہمیں ملتا ہے۔ سوہاگتھ سے اس میں چینی ودوان لی تاؤ کا ایک بڑا سنہر لیکم The Story of Chinese Medicine اترہات ’چینی علاج کی کہانی‘ پر ہے۔ ہم اس پورے لیکم کا ہندستانی انواد، ”نیلفنڈ میں دوسری چمکے دے رہے ہیں۔ اس لیکم سے پانچویں کو پتہ چلیگا کہ نئی چینی سرکار اپنے یہاں کے علاج کے پرانے طریقے کی کتنی قدر کرتی ہے، اُسے کتنا بڑھاوا دیتی ہے، اُسے ختم کرنے کے بجائے کس طرح اُسے امر بنانے کی فکر میں ہے، اپنی پرانی ویدک دنیا پر پرانی کتابوں کے لئے ایڈیشن نکال رہی ہے، یونانیوں بنا رہی ہے کہ پرانے علاج کے طریقے دیہی کے میڈیکل کالجوں میں سکھائے جائیں اور ان کی کتابیں سب کو پڑھائی جائیں۔ وہ نئی پچھلی ڈانٹری کو پرانی ویدیک دنیا کی جگہ دینا نہیں چاہتی بلکہ

اور ہومیوپیتھی کے پکڑ میں رہے اور کہا ہے کہ علاج کے یہ دونوں طریقے ایلوپیتھک طریقے سے سست ہیں اور کارگر ہیں یعنی لوگ ان سے لچے ہوتے ہیں۔ راجکمار نے اس پر صاف کہا: ”میں شری لنڈا کی رائے سے اتفاق نہیں کرتی۔“ ”آپریڈ“ یونانی اور ہومیوپیتھی جیسے علاجوں کو سرکار جو کچھ بھی بڑھاوا یا مدد دے رہی ہے وہ راجکمار کی رائے میں غلط ہے! راجکمار نے اس بات پر بھی دم پرکھت کیا کہ سولسویں کے معاملے میں الگ الگ پرائٹ یا پردیسی چونکہ آزاد ہیں اس لئے یونین سرکار انہیں اس طرح کی فطالیوں سے نہیں روک سکتی! ظاہر ہے ان کا بس چلے تو وہ سارے بھارت کے لئے فرائض جاری کر دیں کہ سوائے ایلوپیتھی کے ان سب اور ’فصلیات‘ کو بند اور ختم کر دیا جائے۔ انہوں نے اس پر بھی استغرضی پرکھت کیا کہ پرائٹوں کی سرکاری کالی بڑی بڑی ڈانخواہیں دیکر سچ سچ ”یوگیہ“ ڈانٹروں کو ”گلوں گلوں“ میں نیکت نہیں کر رہی ہیں!

راجکمار نے اسی طرح کی اور بھی کچھ باتیں نہیں جن پر ہمیں اس سے کہیں ادھک دم ہوا جتنا راجکمار کو شری گزاری لال لنڈا کے بیان پر یا سرکار یا سرکاروں کے ایلوپیتھی کے علاوہ علاج کے دوسرے طریقوں کو بڑھاوا دینے پر ہے۔ ان سب باتوں پر ہم کیوں اتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ ہم راجکمار بہن سے بالکل اسہمت ہیں۔ چین میں وہاں کے پرانے علاج کے طریقے کی طرف نئی چینی سرکار کا کیا رخ ہے یہ ایک صاف اور سیدھا سوال ہے۔ پیکنگ سے انگریزی بھاشا میں ایک ماسک پتیکا نکلتی ہے ’China Reconstructs‘ اترہات ’نئے چین‘ کی پھر سے تعمیر! اس میں وہاں کی سرکار بڑے گرو کے ساتھ یہ بتاتی ہے کہ وہ اپنے دیہی کی نئے سرے سے تعمیر کس کس طرح کر رہی ہے، اور کیا کیا کر رہی ہے۔ اس پتیکا کا حال کا انک راجکمار کی بات چیت کے ساتھ ساتھ ہمیں ملتا ہے۔ سوہاگتھ سے اس میں چینی ودوان لی تاؤ کا ایک بڑا سنہر لیکم The Story of Chinese Medicine اترہات ’چینی علاج کی کہانی‘ پر ہے۔ ہم اس پورے لیکم کا ہندستانی انواد، ”نیلفنڈ میں دوسری چمکے دے رہے ہیں۔ اس لیکم سے پانچویں کو پتہ چلیگا کہ نئی چینی سرکار اپنے یہاں کے علاج کے پرانے طریقے کی کتنی قدر کرتی ہے، اُسے کتنا بڑھاوا دیتی ہے، اُسے ختم کرنے کے بجائے کس طرح اُسے امر بنانے کی فکر میں ہے، اپنی پرانی ویدک دنیا پر پرانی کتابوں کے لئے ایڈیشن نکال رہی ہے، یونانیوں بنا رہی ہے کہ پرانے علاج کے طریقے دیہی کے میڈیکل کالجوں میں سکھائے جائیں اور ان کی کتابیں سب کو پڑھائی جائیں۔ وہ نئی پچھلی ڈانٹری کو پرانی ویدیک دنیا کی جگہ دینا نہیں چاہتی بلکہ

دونوں کے میل سے ایک نیا समन्वय या संगम बनाना चाहती है जिससे चीन की सरकार को विश्वास है कि केवल चीन ही के नहीं बल्कि सारी दुनिया के लोगों के स्वास्थ्य को बहुत बड़ा लाभ होगा. उस लेख से पाठकों को यह भी माخूम होगा कि अपने देश के इलाज के पुराने तरीकों की तरफ और एलोपैथी को छोड़कर, दूसरे तरीकों की तरफ राजकुमारी असुतकौर और उनके हम-खयाल शासकों का ठीक बड़ी रुख है जो च्यांग काई शेक के शासन के दिनों में कोमिंगलांग शासकों का चीन के पुराने इलाज के तरीके की तरफ था. नई चीनी सरकार का रुख इस मामले में बिलकुल दूसरा और कहीं अधिक समझदारी का है.

दिल्ली के चीनी दूतावास से भी एक अंग्रेजी सामाचार बुलेटिन निकलता है. उसके दो नम्बर सन् '55 के अंक में मराहूर न्यूज एजेन्सी Hsinhua News की तरफ से एनसेफेलाइटिस (Encephalitis) नाम की बीमारी के बारे में, जिसमें दिमाग के अन्दर सूजन आ जाती है और जिसका ठीक ठीक कारण या इलाज एलोपैथिक डाक्टरों को अभी नहीं सूझा, नीचे लिखी खबर इसी सरनामे के साथ छपी है:—

“एनसेफेलाइटिस के इलाज में कामयाबी”

“चीन के असिस्टेंट मिनिस्टर आफ पब्लिक हेल्थ श्री कोत्जू-हुआ ने 20 अक्टूबर के पेकिंग के सरकारी अखबार “पीपुल्स डेली” में एक खास लेख में बयान किया है कि इस साल जुलाई और अगस्त के महीनों में एनसेफेलाइटिस के रोग के बीस रोगी देखे गए जिनमें नव्वे फ्रीसदी चीन के पुराने इलाज के तरीके से अच्छे हो गए.

“डाक्टरों का एक गिरोह था जिनमें नए हच्छमी ढंग के चीनी डाक्टर और पुराने ढंग के चीनी डाक्टर दोनों शामिल थे. उसके नेता थे, यही जन स्वास्थ्य के नायब वजीर श्री कोत्जू-हुआ. इन लोगों ने पिछले अगस्त के महीने में शिहचिया चुआन के एक अस्पताल में जाकर एनसेफेलाइटिस के इलाज का अध्ययन किया.

“नायब वजीर ने कहा है कि हमने जिन बीस रोगियों को देखा उनकी उमरें छै महीने से लेकर इकसठ साल तक की थीं. इन बीस रोगियों में से केवल तीन मरे. इन तीन में से एक को कुछ दूसरी बीमारियाँ भी थीं. नायब वजीर ने यह भी कहा है कि पिछले साल इस अस्पताल में इसी तरह इकतीस रोगियों का इलाज किया गया था, जिनमें आधे से अधिक की हालत बहुत गम्भीर थी. इस इलाज से सौ फ्रीसदी यानी सब के सब अच्छे हो गए.

“कोत्जू-हुआ ने देखा कि पुरानी चीनी वैद्यक की किताबों में इस बीमारी (एनसेफेलाइटिस) का चिक्र है, और शिहचिया चुआन के अस्पताल में पुराने चीनी ढङ्ग से इस रोग

दोनों के मिल से एक नया समन्वय या संगम बनाना चाहती है जिस से चीन की सरकार को विश्वास है कि केवल चीन ही के नहीं बल्कि सारी दुनिया के लोगों के स्वास्थ्य को बहुत बड़ा लाभ होगा. उस लेख से पाठकों को यह भी माखूम होगा कि अपने देश के इलाज के पुराने तरीकों की तरफ और एलोपैथी को छोड़कर, दूसरे तरीकों की तरफ राजकुमारी असुतकौर और उनके हम-खयाल शासकों का ठीक बड़ी रुख है जो च्यांग काई शेक के शासन के दिनों में कोमिंगलांग शासकों का चीन के पुराने इलाज के तरीके की तरफ था. नई चीनी सरकार का रुख इस मामले में बिलकुल दूसरा और कहीं अधिक समझदारी का है.

दली के चینی دوتاواس سے بھی انگریزی سماچار بولیتن نکلتا ہے. اُس کے دو نمبر سن 55 کے اُنک میں مشہور چینی نیوز ایجنسی Hsinhua News کی طرف سے انسيفلائٹس (Encephalitis) نام کی بیماری کے بارے میں، جس میں دماغ کے اندر سوجن آجاتی ہے اور جس کا ٹھیک ٹھیک کارن یا علاج ایلوپیتھک ڈاکٹروں کو بھی نہیں سوجھا، نیچے لکھی خبر اُسی سرنامہ کے ساتھ چھپی ہے:—

“انسيفلائٹس کے علاج میں کامیابی”

چین کے انسيفلائٹس مسٹر آف پبلک ہیلتھ شری کوٹزو ہووا نے 20 اکتوبر کے پیکنگ کے سرکاری اخبار “پیپلس ڈیلی” میں ایک خاص لکھ میں بیان کیا ہے کہ اس سال جولائی اور اگست کے مہینوں میں انسيفلائٹس کے رُگ کے بیس روگی دیکھے گئے جن میں نوے فیصدی چین کے پرانے علاج کے طریقے سے اچھے ہو گئے.

“ڈاکٹروں کا ایک گروہ تھا جن میں نئی پچھلی قعنگ کے چینی ڈاکٹر اور پرانے قعنگ کے چینی ڈاکٹر دونوں شامل تھے. اُس کے نیٹا تھے جن سواستہ کے نائب وزیر شری کوٹزو ہووا. اُن لوگوں نے پچھلے اگست کے مہینے میں شہی چیا چوان کے ایک اسپتال میں چاکر انسيفلائٹس کے علاج کا ادھن کیا.

“نائب وزیر نے کہا ہے کہ ہم نے جن بیس روگیوں کو دیکھا ان کی عمریں چھ مہینے سے لیکر اکتھ سال تک کی تھیں. ان بیس روگیوں میں سے کھول تھیں مرے. ان تین میں سے ایک کو کچھ دوسری بیماریاں بھی تھیں. نائب وزیر نے یہ بھی کہا ہے کہ پچھلے سال اس اسپتال میں اُسی طرح اکتھس روگیوں کا علاج کیا گیا تھا جن میں آدھے سے ادھک کی حالت بہت گمبیر تھی. اُسی علاج سے سو فیصدی یعنی سب کے سب اچھے ہو گئے.

“کوٹزو ہووا نے دیکھا کہ پرانی چینی ویدک کی کتابوں میں اِس بیماری (انسيفلائٹس) کا ذکر ہے اور شہی چیا چوان کے اسپتال میں پرانے چینی قعنگ سے اُس روگ

کا جو ہلاک کیا گیا وہ اٹھارہویں صدی کے ایک چینی ہکیم یو شیہ-یو کی ایک کتاب کے आधार پر تھا۔

ہم ماننے ہیں کہ پچھم کی ایلوپیتھک ڈاکٹری سے بھی ہم بہت کچھ نائدہ اٹھا سکتے ہیں، ہمیں اٹھانا چاہئے اور چینی بھی اس سے پورا پورا فائدہ اٹھا رہے ہیں۔ نئی اور پرانی ہر چیز سے ہمیں جو لہ مل سکتا ہو لینا چاہئے۔ ہر میں ہندک اور یونانی جیسے اپنے پرانے طریقوں اور ہوسوویتھی، نیچرو پتھی جیسے دوسرے نئے طریقوں کو بھی ہر طرح کا موقع اور بڑھاوا دینا چاہئے اور ان سے پورا لہ اٹھانا چاہئے۔ بھارت جیسے دیہوں کی جنگ کے لئے بھی کلہاں کا مرکز ہے۔ اس کے خلاف پکشتاں سلیمکرتا ہے، ناسمجھی ہے اور دیہی کی کروڑوں غریب جنگ کے ساتھ اور خود ودیا کے ساتھ اٹھاتے ہیں۔

5-11-55

—سندھ لال

—سندھ لال

5.11.55

سمجھ کی خوبی

بڑے دن ہوا مध्यہمہ بھارت کے اتری حصے میں پولیس اور ڈاکوؤں کے ایک گروہ کا مقابلہ ہوا۔ اس میں دونوں طرف کے کئی آدمیوں کی جانیں گئیں، جانے والوں میں ایک ڈاکو بھی ہتایا جاتا تھا جس کی بہت دنوں سے تلاش تھی اور جس کی گرفتاری یا موت کے لئے ہزاروں روپیوں کی بازی لگائی گئی تھی۔

اس گھٹنا کے بعد مرنے والے کی لاش کا ٹولو سرکار کی طرف سے اخباروں میں بھیجا اور چھپایا گیا۔ اس کے بدن پر دسٹیاں باندھی تھیں، اور بھی نشان تھے۔ چہرہ دیکھنے میں کوئی ایسا بھانک تو لگتا نہیں تھا کہ کئی پردیشوں کی سرکاری اس سے تڑا کریں یا پولس والے اس کا پیچھا کرنے سے گھبرایا کریں۔ لیکن کوئی ایسی سندھ چیز بھی نہیں تھی کہ جس کی اچھی یا مٹی چھاپ دیکھنے والے پر پڑتی۔ شاید مध्यہمہ بھارت کی سرکار نے اپنے نظام کا اسے سب سے بڑا کارنامہ سمجھا اور اس کا زیادہ سے زیادہ پروپیگنڈا کرانہ واہی لوٹنے کی کوشش کی۔ آجکل کے دیکھانک زمانے میں، حکومتوں یا سرکاروں کا اس طرح ایک ویمنی پر لگو ہو جانا کوئی زیادہ بھاندی نہیں مانتی جائیگی۔ اور نہ اس میں راجنیک دور - اندیشی ہی ہے۔

لیکن ہمیں زیادہ تعجب تو تب ہوا جب ہم نے مध्यہمہ بھارت کے پولس منسٹر کا ایک بیان پڑھا۔ اس میں انہوں نے کہا کہ میں نے سمجھا تھا کہ اگر ایک سال کے اندر وہ (مرنے والا) نہیں مارا جاتا ہے تو میں منسٹری سے استعفیٰ دے دوں گا۔ میں پتہ نہیں کہ انہوں نے اپنا یہ ارادہ اس گھٹنا کے پہلے ظاہر کیا تھا یا نہیں۔ اگر

لیکن ہمیں زیادہ تعجب تو تب ہوا جب ہم نے مध्यہمہ بھارت کے پولس منسٹر کا ایک بیان پڑھا۔ اس میں انہوں نے کہا کہ میں نے سمجھا تھا کہ اگر ایک سال کے اندر وہ (مرنے والا) نہیں مارا جاتا ہے تو میں منسٹری سے استعفیٰ دے دوں گا۔ میں پتہ نہیں کہ انہوں نے اپنا یہ ارادہ اس گھٹنا کے پہلے ظاہر کیا تھا یا نہیں۔ اگر

آہیر کیا تھا تو انہیں بدھائی کی امید کوئی چلتا اور وہ ہم بھی دے دیتے۔ اگر نہیں ظاہر کیا تھا تو وہ چاہیے کہ 'چند سواروں' میں اُن کا نام بھی درج کر لیا جائے۔ سو ایسا کر لیتے ہیں کسی کا کیا گھٹا جاتا ہے؟ پر منسٹر صاحب اپنی قسم بتا کر ہی نہیں رہ گئے۔ انہوں نے (یا شاید اُن کے کسی کو لیگ نے) یہ بھی کہا کہ آزادی کے بعد مدھیہ بھارت کی یہ سب سے بڑی گھٹنا ہے۔ یہی نہیں 'مدھیہ بھارت'—وشیش کر گوالہر، بھنڈ، موریل اور اُس پلس کے لوگ—اب یہ سچ سچ محسوس کر رہے کہ انہیں آزادی حاصل ہوئی؟

ہمیں نہیں معلوم تھا کہ مدھیہ بھارت میں—منسٹر صاحب کی نگاہ سے—آزادی کا چراغ اب روشن ہوا۔ پر ہم اسے سچ مانے لیتے ہیں۔ اور یہ بھی سچ مانے لیتے ہیں کہ یہ مدھیہ بھارت کی ان کئی برسوں کی سب سے بڑی گھٹنا ہے۔ پر ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ مدھیہ بھارت میں جو 'وکاس' نام سے ایک پوجنا نہیں چل رہی ہیں، تو کیا وہ قبول گھٹ پر ہیں؟ کیا ان پوجناؤں کا کوئی واسطہ مدھیہ بھارت کے جنوں سے نہیں ہے؟ اگر ایک ایک آدمی کی زندگی یا موت پر پورے علاقے کی آزادی یا غلامی منحصر تھی تو ہم جانتا چاہیے کہ اُس کے پیچھے ساری طاقت کیوں نہیں لگا دی گئی؟ اُس وقت تک پوجناؤں کا نائک کرنے کی کوئی ضرورت بھی نہیں تھی۔ اور نہ اب رنگ بھوم میں ضرورت رہ جاتی ہے جب وہ آزادی حاصل ہوگئی جس کے لئے مدھیہ بھارت کے لوگوں کو—اگر منسٹر صاحب کی باتوں پر ہم بڑے اُس کریں—بڑی لالسا تھی۔ منسٹر صاحب نے یہ بھی فرمایا کہ مرنے والے کو زندہ پکڑنا تو اس وجہ سے مشکل تھا کہ اُسے اپنے علاقے کے لوگوں کی ہمدردی حاصل تھی۔ کوئی اُس کا راز بتاتا ہی نہیں تھا۔ تو کیا اس سے ہم یہ سمجھیں کہ اُس علاقے میں سرکار سے زیادہ اثر اُس ایک آدمی کا تھا اور اُس نے عام یا غریب جتنا پر اپنا جادو کر رکھا تھا؟ تب پھر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ اُس کے چلے جانے کے بعد یہ ہوگئے کہ مانو اُس علاقے کے لوگوں کو آزادی حاصل ہوگئی۔ ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ منسٹر صاحب کی سمجھ کی کیا تعریف کریں۔

شاید جانے والے کی موت پر منسٹر صاحب خوشی سے بولے نہ سہائے اور آپ سے باہر ہو گئے۔ ایسے موقع پر تل کا تار کودنا کوئی نئی بات نہیں ہے۔ لیکن جب ایک منسٹر کی ہی بات میں وزن نہ ہوگا تو کون اس کا لحاظ کریگا اور تب کیسے کوئی حکومت تکی رہ سکتی ہے۔ مرنے والا چلا ہی گیا۔ ہمیں اُس سے کوئی واقفیت نہیں تھی۔ نہ ہم بھی جانتے ہیں کہ اُس کا کہل، کیسا

ہمیں نہیں معلوم تھا کہ مدھیہ بھارت میں—منسٹر صاحب کی نگاہ سے—آزادی کا چراغ اب روشن ہوا۔ پر ہم اسے سچ مانے لیتے ہیں۔ اور یہ بھی سچ مانے لیتے ہیں کہ یہ مدھیہ بھارت کی ان کئی برسوں کی سب سے بڑی گھٹنا ہے۔ پر ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ مدھیہ بھارت میں جو 'وکاس' نام سے ایک پوجنا نہیں چل رہی ہیں، تو کیا وہ قبول گھٹ پر ہیں؟ کیا ان پوجناؤں کا کوئی واسطہ مدھیہ بھارت کے جنوں سے نہیں ہے؟ اگر ایک ایک آدمی کی زندگی یا موت پر پورے علاقے کی آزادی یا غلامی منحصر تھی تو ہم جانتا چاہیے کہ اُس کے پیچھے ساری طاقت کیوں نہیں لگا دی گئی؟ اُس وقت تک پوجناؤں کا نائک کرنے کی کوئی ضرورت بھی نہیں تھی۔ اور نہ اب رنگ بھوم میں ضرورت رہ جاتی ہے جب وہ آزادی حاصل ہوگئی جس کے لئے مدھیہ بھارت کے لوگوں کو—اگر منسٹر صاحب کی باتوں پر ہم بڑے اُس کریں—بڑی لالسا تھی۔ منسٹر صاحب نے یہ بھی فرمایا کہ مرنے والے کو زندہ پکڑنا تو اس وجہ سے مشکل تھا کہ اُسے اپنے علاقے کے لوگوں کی ہمدردی حاصل تھی۔ کوئی اُس کا راز بتاتا ہی نہیں تھا۔ تو کیا اس سے ہم یہ سمجھیں کہ اُس علاقے میں سرکار سے زیادہ اثر اُس ایک آدمی کا تھا اور اُس نے عام یا غریب جتنا پر اپنا جادو کر رکھا تھا؟ تب پھر ہم یہ کہہ سکتے ہیں کہ اُس کے چلے جانے کے بعد یہ ہوگئے کہ مانو اُس علاقے کے لوگوں کو آزادی حاصل ہوگئی۔ ہماری سمجھ میں نہیں آتا کہ منسٹر صاحب کی سمجھ کی کیا تعریف کریں۔

شاید جانے والے کی موت پر منسٹر صاحب خوشی سے بولے نہ سہائے اور آپ سے باہر ہو گئے۔ ایسے موقع پر تل کا تار کودنا کوئی نئی بات نہیں ہے۔ لیکن جب ایک منسٹر کی ہی بات میں وزن نہ ہوگا تو کون اس کا لحاظ کریگا اور تب کیسے کوئی حکومت تکی رہ سکتی ہے۔ مرنے والا چلا ہی گیا۔ ہمیں اُس سے کوئی واقفیت نہیں تھی۔ نہ ہم بھی جانتے ہیں کہ اُس کا کہل، کیسا

شاید جانے والے کی موت پر منسٹر صاحب خوشی سے بولے نہ سہائے اور آپ سے باہر ہو گئے۔ ایسے موقع پر تل کا تار کودنا کوئی نئی بات نہیں ہے۔ لیکن جب ایک منسٹر کی ہی بات میں وزن نہ ہوگا تو کون اس کا لحاظ کریگا اور تب کیسے کوئی حکومت تکی رہ سکتی ہے۔ مرنے والا چلا ہی گیا۔ ہمیں اُس سے کوئی واقفیت نہیں تھی۔ نہ ہم بھی جانتے ہیں کہ اُس کا کہل، کیسا

بکسر ہے۔ ہم یہ بھی مان لیتے ہیں کہ اس کا چل جانا بہت اچھا ہوا۔ لیکن اس چیز کو ایک تاریخی مہم دینا اور اس کو اتنی شہرت دینا کسی بھی طرح سے جائز نہیں۔

ایک بات اور بھی ہے۔ مسئلہ مشہور ہے کہ کنجوس کا بیٹا چور۔ تو آج جو ہمارے دیہے میں چوریاں، ڈاکے بڑھ رہے ہیں، کیا اس کے لئے ہمارے یہاں کا آرٹیک اور سماجک تعاونی فمڈار نہیں ہے؟ جب آٹھ دن پرانی دستکاریاں مثالی جائیدادیں، کریکر لوگوں کی روٹی ماری جائیں گی—تب چوریاں اور ڈاکتیاں نہیں بڑھیں گی تو اور کیا ہوگا؟ جب ہمارے یہاں آدیر کی اور نیچے کی تصواہوں میں، آدیر کی اور نیچے کی آمدنیوں میں سینکڑوں اور ہزاروں کا فرق رہے گا، جب سماج میں دھلی کا دھن بڑھیکا اور دھلی کا دھن—تو سرکار اور پرچا میں تلامع بڑھیکا ہی اور آدمی وہ وہ کام کرنے پر مجبور ہوگا جنہیں وہ غلط اور نامناسب سمجھتا ہے۔ اگر ذرا باریک نگاہ سے دیکھیں تو کیا ہمارے ساتھ دیپاری، منسٹر، جج، وکیل اور پروفیسر دن کے ڈاکو یا لٹیرے نہیں ٹھہرائے جاتے۔ یہ تو اتفاقی کی بات ہے کہ دن دھارے کی چوری ڈاکتیاں کو سہیتا، شرافت اور پرجائنتر کا نام دے دیا گیا ہے۔ ان بہادروں کو عزت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے اور جو بیچارے مجبوری سے رات میں اپنی گذر کھوجتے پھرتے ہیں انہیں سماج میں بری نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔ یہ کون کہہ سکتا ہے کہ دن والے اچھے ہیں اور رات والے برے؟

ہمیں یہاں رام کرشن پرم ہنس کی کہی ایک کथा یاد آ رہی ہے۔ ایک بار وہ سناٹے تھے کہ کسی بڑے مندر کے پاس ایک ویشیا رہتی تھی۔ مندر کے پجاری بڑے بھکت مانے جاتے تھے۔ دن رات پوجا پات میں لکے رہتے اور کیرتن گراتے تھے۔ ان کے گھان، ان کے گلے، اور ان کے دھرم نیم کی تعریف بھی بہت تھی۔ ویشیا پجاری کا کہنا ہی تھا، ویشیا ٹھہری۔ کسی طرح دن کاٹتی تھی۔ ہونہار کی بات کہ بڑے پجاری جی اور اس ویشیا کی موت ایک ہی گھڑی میں ہوئی تو دونوں کو لالے ہم راج کے دوت پہنچے۔ پندت نے ان سے پوچھا—”مجھے کہاں جانا ہے؟“ جواب دیا گیا—”نرک جانا ہے۔“ پندت جی فصے میں آکر بولے—”کیا کہا، نرک جانا ہے؟ اور اس چیز (ویشیا) کو کہاں لے جاؤ گے؟“ دونوں نے کہا—”سورگ میں۔“ اب تو پندت جی کا پارہ اور بھی چڑھ گیا اور بولے—”یہ اندھیر نہیں چل سکتا۔ میں جاؤں نرک میں اور وہ ویشیا کی ذات جائے سورگ میں! ضرور تمہارے گنڈوں میں کچھ اندراج غلط ہو گئے ہیں۔ ضرور کہیں دھوکا ہوا ہے۔ جاؤ ٹھیک سے تحقیقات کر کے آؤ کہ کسے کہاں لے جانا ہے۔“

ایک بات اور بھی ہے۔ مسئلہ مشہور ہے کہ کنجوس کا بیٹا چور۔ تو آج جو ہمارے دیہے میں چوریاں، ڈاکے بڑھ رہے ہیں، کیا اس کے لئے ہمارے یہاں کا آرٹیک اور سماجک تعاونی فمڈار نہیں ہے؟ جب آٹھ دن پرانی دستکاریاں مثالی جائیدادیں، کریکر لوگوں کی روٹی ماری جائیں گی—تب چوریاں اور ڈاکتیاں نہیں بڑھیں گی تو اور کیا ہوگا؟ جب ہمارے یہاں آدیر کی اور نیچے کی تصواہوں میں، آدیر کی اور نیچے کی آمدنیوں میں سینکڑوں اور ہزاروں کا فرق رہے گا، جب سماج میں دھلی کا دھن بڑھیکا اور دھلی کا دھن—تو سرکار اور پرچا میں تلامع بڑھیکا ہی اور آدمی وہ وہ کام کرنے پر مجبور ہوگا جنہیں وہ غلط اور نامناسب سمجھتا ہے۔ اگر ذرا باریک نگاہ سے دیکھیں تو کیا ہمارے ساتھ دیپاری، منسٹر، جج، وکیل اور پروفیسر دن کے ڈاکو یا لٹیرے نہیں ٹھہرائے جاتے۔ یہ تو اتفاقی کی بات ہے کہ دن دھارے کی چوری ڈاکتیاں کو سہیتا، شرافت اور پرجائنتر کا نام دے دیا گیا ہے۔ ان بہادروں کو عزت کی نگاہ سے دیکھا جاتا ہے اور جو بیچارے مجبوری سے رات میں اپنی گذر کھوجتے پھرتے ہیں انہیں سماج میں بری نگاہ سے دیکھا جاتا ہے۔ یہ کون کہہ سکتا ہے کہ دن والے اچھے ہیں اور رات والے برے؟

ہمیں یہاں رام کرشن پرم ہنس کی کہی ایک کथा یاد آ رہی ہے۔ ایک بار وہ سناٹے تھے کہ کسی بڑے مندر کے پاس ایک ویشیا رہتی تھی۔ مندر کے پجاری بڑے بھکت مانے جاتے تھے۔ دن رات پوجا پات میں لکے رہتے اور کیرتن گراتے تھے۔ ان کے گھان، ان کے گلے، اور ان کے دھرم نیم کی تعریف بھی بہت تھی۔ ویشیا پجاری کا کہنا ہی تھا، ویشیا ٹھہری۔ کسی طرح دن کاٹتی تھی۔ ہونہار کی بات کہ بڑے پجاری جی اور اس ویشیا کی موت ایک ہی گھڑی میں ہوئی تو دونوں کو لالے ہم راج کے دوت پہنچے۔ پندت نے ان سے پوچھا—”مجھے کہاں جانا ہے؟“ جواب دیا گیا—”نرک جانا ہے۔“ پندت جی فصے میں آکر بولے—”کیا کہا، نرک جانا ہے؟ اور اس چیز (ویشیا) کو کہاں لے جاؤ گے؟“ دونوں نے کہا—”سورگ میں۔“ اب تو پندت جی کا پارہ اور بھی چڑھ گیا اور بولے—”یہ اندھیر نہیں چل سکتا۔ میں جاؤں نرک میں اور وہ ویشیا کی ذات جائے سورگ میں! ضرور تمہارے گنڈوں میں کچھ اندراج غلط ہو گئے ہیں۔ ضرور کہیں دھوکا ہوا ہے۔ جاؤ ٹھیک سے تحقیقات کر کے آؤ کہ کسے کہاں لے جانا ہے۔“

ہمیں یہاں رام کرشن پرم ہنس کی کہی ایک کथा یاد آ رہی ہے۔ ایک بار وہ سناٹے تھے کہ کسی بڑے مندر کے پاس ایک ویشیا رہتی تھی۔ مندر کے پجاری بڑے بھکت مانے جاتے تھے۔ دن رات پوجا پات میں لکے رہتے اور کیرتن گراتے تھے۔ ان کے گھان، ان کے گلے، اور ان کے دھرم نیم کی تعریف بھی بہت تھی۔ ویشیا پجاری کا کہنا ہی تھا، ویشیا ٹھہری۔ کسی طرح دن کاٹتی تھی۔ ہونہار کی بات کہ بڑے پجاری جی اور اس ویشیا کی موت ایک ہی گھڑی میں ہوئی تو دونوں کو لالے ہم راج کے دوت پہنچے۔ پندت نے ان سے پوچھا—”مجھے کہاں جانا ہے؟“ جواب دیا گیا—”نرک جانا ہے۔“ پندت جی فصے میں آکر بولے—”کیا کہا، نرک جانا ہے؟ اور اس چیز (ویشیا) کو کہاں لے جاؤ گے؟“ دونوں نے کہا—”سورگ میں۔“ اب تو پندت جی کا پارہ اور بھی چڑھ گیا اور بولے—”یہ اندھیر نہیں چل سکتا۔ میں جاؤں نرک میں اور وہ ویشیا کی ذات جائے سورگ میں! ضرور تمہارے گنڈوں میں کچھ اندراج غلط ہو گئے ہیں۔ ضرور کہیں دھوکا ہوا ہے۔ جاؤ ٹھیک سے تحقیقات کر کے آؤ کہ کسے کہاں لے جانا ہے۔“

پنڈت جی کے حکم پر دھت یمراراج کے پاس لڑتے اور
سب ہال کھڑے ہونا تھا۔ یمراراج نے انہیں سمجھا دیا کہ
پہلے بالائی کھڑا ہی سہی ہے۔ دھتوں نے فرمان پندت جی
کو سنا دیا۔ پندت جی کے کاٹے تو خون نہیں۔ لہذا
پندت جی جو اٹھتے۔ کیر کیر کی اور بولے کہ، "میری سہیلی
میں نہیں آتا تو لوگوں کی ہرکات کیا ہے۔ آخر کار
بھڑک بھی ہے جو میرے ساتھ بھڑک رہا ہے۔ دنیا
میں میری ہرکات ہے۔ میری اہلیہ کس شام کے ساتھ بڑھتی
نہیں۔ میرا تو یہ حال۔ لہذا اس چوڑے کو
بھڑک لے جائیگا اور یہاں اسے کبھی پھڑکا تک نہیں۔
اس کی لاش کو اٹھانے والا بھی کوئی نہیں۔ کتے اور کونے
کے۔" یہ سنکر دھتوں میں جو سب میں بڑگ تھے انہوں
نے کہا، "پندت جی! آپ صحیح کہہ رہے ہیں۔ دنیا والے
آپ کی بہت بھتی و عزت کرتے ہیں اور اس بیچاری کو نیچے
نگاہ سے دیکھتے ہیں۔ لیکن ان دنیا والوں کو کسی کے دل کے اندر
کا حال کیا معلوم؟ وہ تو باہر کا روپ رنگ دیکھتے ہیں اور اسی
کے ہونے میں رہتے ہیں۔ پر میں آپ سے پوچھتا ہوں۔ آپ
اپنا دل تھل کر دیکھئے۔ آپ ہی کہئے کہ کیا آپ اُس ویشیا کے
جیون پر ایشیا کی نگاہ سے نہیں دیکھتے تھے؟ اُسے دیکھ کر آپ
کے ہر دم میں واسنا کی لہٹ نہیں اُٹھتی تھی؟
آپ بھی چاہتے رہے کہ کہاں پوجا آرئی کے جنجال
میں پڑ گیا۔ ٹھٹھ سے اُس ویشا کی طرح جیون بٹانا اور آند
کرنا۔ لیکن وہ دیکھا پاپ تو کئی تھی مگر مجبوری سے۔ سماج
میں اُس کے لئے دوسرا چارہ نہیں۔ گھر والے اُسے ایسے نہیں
تھے۔ وہ کرتی تو کیا کرتی؟ مگر اُس کی نہی دیکھئے کہ اُسے
ہمیشہ آپ کے جیون سے ایشیا ہوتی تھی۔ وہ من ہی من
بھی کہا کرتی کہ کب مجھے اِس پاپ سے چھٹی ملے اور آپ
(پندت جی) کی طرح بھتی اور پوجا کی زندگی بٹائے۔
دھت میں بھی وہ بھوان کی یاد کرتی پر آپ کو اتنا سمنے کہاں
کہ کسی کو یاد کریں۔" پندت جی کے پاس کوئی جواب
نہیں اور چپ ہو گئے۔

جیسا ہم نے اوپر کہا ہم مدھیہ بھارت سرکار کو اُس کے کارنامے
پر بدھائی دیتے ہیں۔ مگر اُس سے اتنا ضرور عرض کریں
کہ وہ اپنا پبلیس نہ کہئے۔ چڑوں کے اُن کے صحیح و اصلی
رنگ میں دیکھ کر ہی لوگوں کے اُٹے رکھا کرے۔ اور مدھیہ
بھارت کے اندر جو آرتھک اسمان اور غریبی ہے اُسے ہلاد سے دور
کر کے کی کوشش کرے۔

—سوریش رامभाई

—سوریش رام भाई

کو ہندو-بھرا بنائے۔ اس کے پیچھے کبھی کارپس ہو سکتے ہیں—
یا تو خصوصی یا سار्वजनिक. خصوصیات یہ کہ
انہیں وہاں سے بیرونی ہے اور اس لیے انہیں مصری
نیاں ضروری ہو۔ ساروچنگ یہ کہ مصری ضلع دھراویں
میں پڑتا ہے جس کی آبپاشی کی سچی جھوٹی شکایت
پہچان کر پوری والہ کرتے ہیں اور انک پوری کی
مانگ کرتے ہیں۔ اس لیے ان کی اس شکایت کو دور کرنے کے
لئے اور پوری کی تقسیم روکنے کے لئے مصری بھی مکہ
ملتری کو دھنا چاہیئے! ہم نہیں جانتے اصلیت کیا ہے؟ لیکن
ہم اتنا ضرور کہہ سکتے ہیں کہ مکہ ملتری کا مصری کو آپ -
راجدھانی ہلانا سیدھا ہاتھی کو رائے دینا ہے اور جتنا کے جلتے
گھو پر نمک چھونکا ہے۔

اس روشنی میں جب ہم پردھان منتری کی یہ نسیہت
کو دیکھتے ہیں—کہ محلوں میں رہنے کا خیال چھوڑ کر سرکاری
کمرہ میں کو چلتا ہے کھل مل جانا چاہیئے—تو ایسا لگتا ہے
کہ یہ نصیحت عمل کے لئے نہیں ہے۔ بلکہ یہ ایک محض
خیال ہے جسے بڑھیا کاف پر لکھ کر سلہر سلہر سے سجا کر
آلے والی پیڑھوں کو دکھانے کی خاطر سلہا لکر رکھا جائے۔ جس
سورگ کے حکم کو لوگوں کی چاہ ہوگی اور دیہاتوں کا درجہ
اٹھاتا ملہر ہوگا وہ کبھی ایسا نہیں کر سکتی۔

—سوریش رامभाई

—سوریش رام भाई

ہمارے یہاں ملنے والی کچھ اور کتابیں

नोटः—यह किताबें सिर्फ हिन्दी में हैं.

نوٹ:—یہ کتابیں صرف ہندسی میں ہیں۔

نام کتاب	لکھنگ	رقم	লেখক	নাম কিতাব
1. شعر و شاعری	شعری ایروڈھیا پرساد گوتاہ	8 0 0	শ্রী অযোধ্যা প্রসাদ গৌতম	1. শের-অ-শায়েরী
2. شعر و سخن	"	8 0 0	"	2. শের-অ-সুজন
3. گہرے پانی پتہ	"	2 8 0	"	3. گہرے پانی پتہ
4. ہمارے آزادیت	شعری بلارس داس چکرورتی	3 0 0	श्री बनारसीदास चक्रवर्ती	4. ہمارے آزادیت
5. سلسلہ	"	3 0 0	"	5. سلسلہ
6. دو ہزار دہائی پرانی کہانیاں	شعری جگدیش چھن	3 0 0	श्री जगदीशचन्द्र जैन	6. دو ہزار دہائی پرانی کہانیاں
7. گمان گنگا	شعری نارائن پرساد چھن	6 0 0	श्री नारायण साद जैन	7. گمان گنگا
8. پتہ چلے	شعری شانتی پریہ دویڈی	2 0 0	श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी	8. پتہ چلے
9. پہلے پردیپ	شانتی ایم . اے	2 0 0	शान्ति एम. ए.	9. پہلے پردیپ
10. آکھ کے تارے دھرتی کے پھول	شعری کلہمال مشر پرہیاکر	2 0 0	श्री कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर	10. آکھ کے تارے دھرتی کے پھول
11. مکتی دوت	شعری ویریندر کمار چھن ایم . اے	0 0	श्री वीरेन्द्र कुमार जैन एम. ए.	11. مکتی دوت
12. ملن پامنی	شعری بچن	4 0 0	श्री बचन	12. ملن پامنی
13. رجعت رشی	ڈاکٹر رام کمار دوسا	2 8 0	डॉक्टर रामकुमार वर्मा	13. رجعت رشی
14. مہرے باپو	شعری تلسم بھاریا	2 8 0	श्री तन्मय बुहारिया	14. مہرے باپو
15. وشو سنگھ کی اور	پنڈت سندھرال بھگوان داس کھٹا	3 0 0	पंडित सुन्दरलाल भगवानदास केला	15. وشو سنگھ کی اور
16. بھارتیہ ارتھ شاستر	شعری بھگوان داس کھٹا	0 0	श्री भगवानदास केला	16. بھارتیہ ارتھ شاستر
17. بھارتیہ شاسن	"	3 0 0	"	17. بھارتیہ شاسن
18. ناگرک شاستر	"	2 4 0	"	18. ناگرک شاستر
19. سامراج اور ان کا پتہ	"	2 8 0	"	19. سامراج اور ان کا پتہ
20. بھارتیہ स्वाधीनता अन्वोलन	"	1 4 0	"	20. بھارتیہ स्वाधीनता अन्वोलन
21. सर्वोच्च अर्थ व्यवस्था	"	1 8 0	"	21. सर्वोच्च अर्थ व्यवस्था
22. ہماری आदिम जातियाں	شعری بھگوان داس کھٹا اور شری اکھل دتے	3 8 0	श्री भगवानदास केला और श्री अखिल दिनय	22. ہماری آدیام جاتیاں
23. अर्थशास्त्र शब्दावली	شعری دیا شنکر دوتے ایم . اے . ایل ایل . بی . کچادھر پرساد امبھت بھگوان داس کھٹا	2 0 0	श्री दया शंकर दुबे, एम. ए. एल. एल. बी. श्री गजाधर प्रसाद, अम्बिष्ट, श्री भगवानदास केला	23. ارتھ شاستر شبداولی
24. नागरिक शिक्षा	شعری بھگوان داس کھٹا	1 8 0	श्री भगवानदास केला	24. ناگرک شکشا
25. राष्ट्र मंडल शासन	شعری دیا شنکر دوتے	1 8 0	श्री दयाशंकर दुबे	25. راشٹر منڈل شاسن
26. जनानी	مہاتما بھگوان دتین	3 0 0	महात्मा भगवानदास	26. جنانی
27. مارنے کی ہمت !	"	1 0 0	"	27. مارنے کی ہمت !
28. صلواتی صبح	"	0 8 0	"	28. صلواتی صبح
29. میرے ساتھی	"	1 0 0	"	29. میرے ساتھی

मिट्टने का पता—

मैनेजर 'नया दिग्ग' १५

145, मुहूर्तगंज, इलाहाबाद-3.

ملیہ کا پتہ

سیدنی ہجر "نیا ہند"

145 'مفتی نعیم' الہ آباد

सांस्कृतिक साहित्य

सान्स्कृतिक साहित्य

हज़रत मोहम्मद और इस्लाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस्लाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

मेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, कीमत—डेढ़ रुपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फिराक, कीमत—तीन रुपया

मिलने का पता

हिन्दुस्तानी कलचर रोसायन्ट

145 मुट्ठीगंज, इलाहाबाद 145 मंथी कंज, अलहाबाद

हज़रत मोहम्मद और इस्लाम

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—तीन रुपया
इस्लाम के पैगम्बर के सम्बन्ध में भारतीय भाषाओं में इस से
सुन्दर कोई दूसरी पुस्तक नहीं

हज़रत ईसा और ईसाई धर्म

लेखक—पण्डित सुन्दरलाल, मूल्य—डेढ़ रुपया

महात्मा ज़रथुस्त्र और ईरानी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

यहूदी धर्म और सामी संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन मिस्र की सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

मेर बाबुल और असुरिया की प्राचीन संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

प्राचीन यूनानी सभ्यता और संस्कृति

लेखक—विश्वम्भरनाथ पांडे, कीमत—दो रुपया

गंगा से गोमती तक

(प्रगतिशील कहानी संग्रह)

लेखक—श्री मुजीब रिजवी, कीमत—दो रुपया

आग और आँसू

(भावपूर्ण सामाजिक कहानियाँ)

लेखक—डाक्टर अख्तर हुसेन रायपुरी, कीमत—डेढ़ रुपया

कुरान और धार्मिक मतभेद

लेखक—मौलाना अबुलकलाम आज़ाद, कीमत—डेढ़ रुपया

भंकार

(प्रगतिशील कविताओं का संग्रह)

लेखक—रघुपति सहाय फिराक, कीमत—तीन रुपया

हिन्दी घर

ہندی گھر

کلتچر پر ہر तरह کی کتابیں ملنے کا ایک بڑی کےन्द्र—پاٹک ہندی، اردو، انگریزی کی अपनी मन-पसन्द کتابों के लिये हमें लिखें।

کلیچر پر ہر طرح کی کتابیں ملنے کا ایک بڑا کیندر۔۔۔ پاٹھک ہندی، اردو، انگریزی کی من پسند کتابوں کے لئے ہمیں لکھیں۔

हमारी नई کتابें

महात्मा गान्धी की वसीयत

(हिन्दी और उर्दू में)

लेखक— गान्धीवाद के माने जाने

विद्वान : श्री मंत्रार अर्ल, मारवा

सं० 225, कीमत दो रुपये

— : —

गान्धी बाबा

(बच्चों के लिये बहुत दिलचस्प किताब)

लेखिका— कदमिया जैदी

भूमिका— डॉ० एन० जवाहरलाल नेहरू

मोटा कासत्र, मोटा टाइट, बहुत-सी रंगीन तस्वीरें

दाम दो रुपये

— : —

पंडित मुन्दरलाल श्री की लिखी किताब

गोता और कृगन

275 सं०, दाम दारु रुपये

हिन्दू मुसलिम एकता

100 सं०, दाम बारह आने

महात्मा गान्धी के बलिदान से सबक

कीमत बारह आने

पंजाब हमें क्या सिखाता है

कीमत चार आने

बंगाल और उससे सबक

कीमत दो आने

हमारी नئی کتابیں

مہاتما گاندھی کی وصیت

(ہندی اور اردو میں)

لیکھک— گاندھی واں کے مانے جانے

ویدوان : شری منترار ارنل، ماروا

سعدے 225، قیمت دو روپیہ

— : —

گاندھی بابا

(بچوں کے لئے بہت دلچسپ کتاب)

لیکھک— کدیمیا جیدی

بھومیکا— ڈاکٹر۔ ان جواہر لال نہرو

مونا کاسٹر، مونا ٹائٹ، بہت سی رنگین تاسویروں

دایم دو روپیہ

— : —

پندت مندرلال شری کی لکھی کتاب

گیتا اور قرآن

275 سعدے، دایم دو روپیہ

ہندو مسام ایکتا

100 سعدے، دایم بارہ آنے

مہاتما گاندھی کے بلیدایں سے سبق

قیمت بارہ آنے

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

قیمت چار آنے

بنگال اور اُس سے سبق

قیمت دو آنے

हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटी

145 मुट्ठोगंज इलाहाबाद

ہندوستانی کلیچر سوسائٹی

145، منہی گنج ایلہ آباد

